Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

a Samaj Foundation Chennai

BHUGOL 1940 G.K.V.

angri Col

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113726
113726

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-26

Stock Verification 2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

COMPILED

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

मार्च १९४०

६.४.४० पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

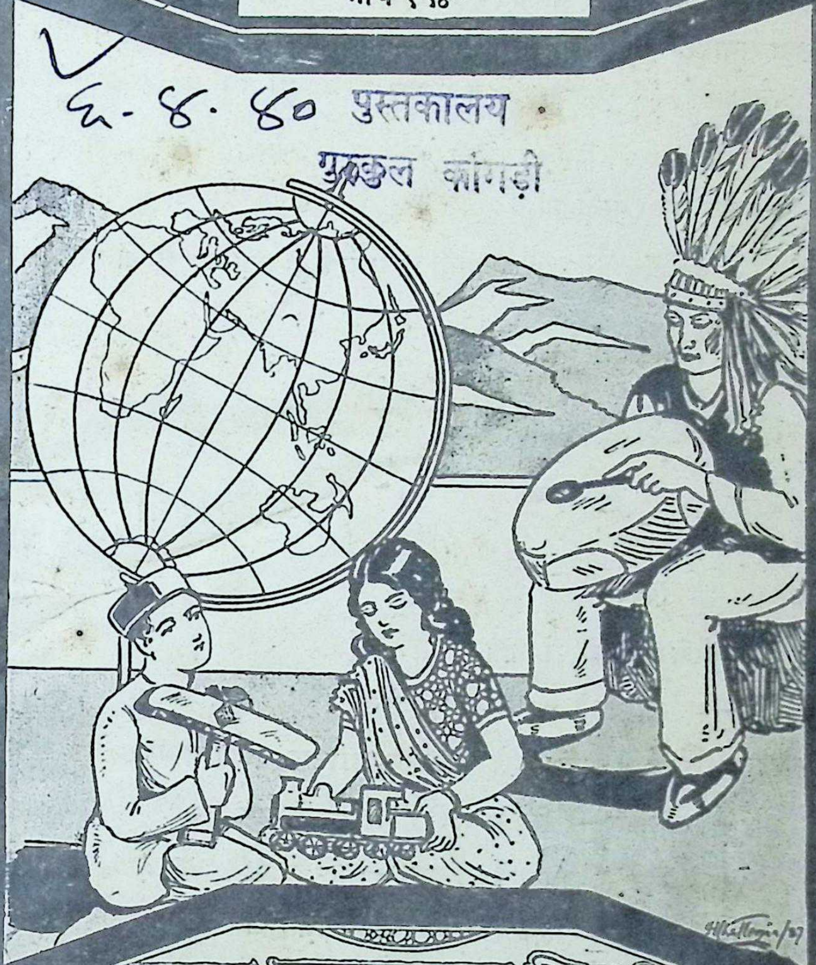

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्य

"भूगोल" के सोलहवें वर्ष का विशेषांक

"भूगोल" के आकार के २४४ पृष्ठ, कई नक़शे और लगभग १०० चित्र

देशी राज्य में भारतवर्ष के प्रधान राज्यों का विस्तृत वर्णन है। भारतवर्ष के छोटे बड़े सभी देशी राज्यों का समावेश है। अन्त के लगभग ४४ पृष्ठों में देशी राज्यों की अकारादि क्रमानुसार अनुक्रमणिका है। इस अनुक्रमणिका में सभी राज्यों का संक्षिप्त परिचय है। सभी बड़े राजाओं के चित्र और प्रधान राज्यों के नक़शे हैं।

देशी राज्य हिन्दी साहित्य में सचमुच अनोखा है। मूल्य केवल २) रु०। ३) रु० भेज कर इस वर्ष के ग्राहक बनने वालों को यह विशाल और अद्वितीय अंक उनके चन्दे ही में मिलेगा।

यह अंक परिमित संख्या में ही छपा है। अतः ग्राहकों को मूल्य भेजने में शीघ्रता करनी चाहिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—मेक्सिको की परेशानी	१
२—स्काटलैण्ड के प्रधान जहाज़ी केन्द्र	६
३—समुद्र से युद्ध—(ले० प्रहलाद नारायण रायज़ादा, एम० ए०, बी० टी०)	९
४—इस्टोनिया—(ले० रामाधीन अग्निहोत्री, बी० ए०)	११
५—रतलाम से गोधरा पैदल यात्रा— ले० गोविन्द शङ्कर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मि० स्कूल, जावद)	१३
६—फिनलैण्ड—(ले० रामाधीन अग्निहोत्री, बी० ए०)	१७
७—ब्रिटेन के प्रसिद्ध मछली मारने वाले केन्द्र	१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113726
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113726

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] फाल्गुन सं० १९९६, मार्च १९४० [अङ्क ११

मैक्सिको की परेशानी

१९१४ ई० में जब योरुप में युद्ध छिड़ा था तो उसका प्रभाव मेक्सिको पर नहीं पड़ा था, क्योंकि मैक्सिको उस समय अपनी भीतरी कठिनाइयों में पड़ा था। डिआज़ काल के अन्त होने पर वहाँ क्रान्ति हो गई थी और महासमर के छिड़ने के कुछ महीने पहले वहाँ के मामलों में संयुक्तराष्ट्र ने अपनी सैनिक शक्ति से रोक टोक की थी। संयुक्त राष्ट्र के प्रभाव के कारण ही वहाँ के प्रेसीडेन्ट जनरल विक्टोरियानो हुएर्टा को पद त्याग करना पड़ा था, जिसके कारण गृह युद्ध होने की आशंका थी। इन्हीं कारणों से मैक्सिको के देश वासियों का ध्यान योरुप की ओर नहीं गया।

उसके २५ वर्षों के बाद जब फिर १९३९ ई० में योरुप में युद्ध की आग सुलगने लगी तो उसका प्रभाव मैक्सिको पर बहुत पड़ा। वहां की पहले की सी दशा १९३९ में न थी। देश में शान्ति थी और २५ सालों में वहाँ बहुत कुछ उथल पुथल हो चुका था। प्रेसीडेन्ट गार्डेन्स की सरकार ने पिट्रौल के कारखानों को गवमेन्ट [illegible] मातहती [illegible] लिया है। पिट्रौल का रोज़गार मैक्सिको का तीसरा बड़ा रोज़गार है। इटली तथा जर्मनी मैक्सिको के पिट्रोल का भाग खरीदते हैं। स्वयम् जर्मनी कुल पिट्रौल का आधा खरीदता है। मैक्सिको को इससे बड़ी परेशानी हुई कि यदि युद्ध के कारण उसका पिट्रौल जर्मनी और इटली न जासका तो दूसरा देश उसका पिट्रौल लेने के लिये तयार न हो जावे।

इस कारण मैक्सिको पर वर्तमान महायुद्ध का प्रभाव बहुत पड़ा है। मैक्सिको संयुक्तराष्ट्र का पड़ोसी है और दूसरे लैटिन अमरीकन पंचायती राज्यों में जनसंख्या के हिसाब से दूसरा बड़ा राज्य है। संयुक्तराष्ट्र तथा मैक्सिको के बहुत से आपसी झगड़े भी हैं। महासमर के कारण उनका बहुत कुछ निबटारा भी हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र मैक्सिको की इस बात में परीक्षा लेना चाहता है कि वह उसका अच्छा पड़ोसी है या नहीं।

सब से प्रथम प्रश्न मिट्टी के तेल का है। पहले मैक्सिको के तेल के अधिकांश भाग संयुक्त राष्ट्र [illegible] था किन्तु बीच में कुछ आपसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़ा होगया जिसके कारण इंगलैण्ड तथा अमरीका ने तेल खरीदना बन्द करदिया। अब यह बड़ा कठिन प्रतीत होता है कि अमरीका तथा इंगलैंड फिर से मैक्सिको का तेल खरीदें।

वर्तमान महासमर के छिड़ते ही अँग्रेज़ों ने जर्मनी का रास्ता बन्द कर दिया जिसके कारण जर्मनी में तेल जाना बन्द हो गया। १९३९ ई० के प्रथम आठ महीनों में और सालों से चार गुना मिट्टी का तेल जर्मनी गया था। पहले मैक्सिको के तेल के कारखाने संयुक्तराष्ट्र वालों तथा अँग्रेज़ों के हाथ में थे, किन्तु अब सारा काम मैक्सिको की सरकार के हाथों में है। इसलिये मैक्सिको सरकार कोई न कोई यत्न अपना तेल बाहर भेजने के लिये सोचने लगी।

जब इटली ने तटस्थ रहने की घोषणा की तो मैक्सिको को बड़ा आनन्द हुआ। वह जानता था कि यदि इटली का भी ब्लाकेड हो जाता तो उसकी योजना पर पानी फिर जाता। मैक्सिको सरकार ने आशा की थी कि इटली और अधिक तेल की मांग देश में करेगा और तटस्थ देशों की मांगें अवश्य ही बढ़ेंगी जब वे बीच में होकर युद्ध के समय काम करने लगेंगे। इटली भी जब अन्त में जर्मनी की ओर से युद्ध में आवेगा तो रूमसागर का मार्ग बन्द हो जाने के कारण मोसूल तथा फारस की खाड़ी का तेल इंगलैण्ड न जा सकेगा और बृटिश या उनकी ओर से दूसरे राष्ट्र मिट्टी के तेल के लिये अवश्य ही उसकी ओर झुकेंगे।

इस कारण जर्मनी के तेल न खरीदने से मैक्सिको को अधिक समय तक हानि पहुँचने की शंका न थी। मैक्सिको से चाँदी बहुत बड़ी मात्रा में विदेश भेजी जाती है। संयुक्तराष्ट्र भी मैक्सिको की चाँदी का बहुत बड़ा भाग खरीदता है। अगस्त के महीने में चाँदी का भाव घट जाने से मैक्सिको के सिक्के का मूल्य कम हो गया। फिर अंतिम अगस्त तथा सितम्बर में फिर कुछ बढ़ा। चाँदी का मूल्य कम होने का मुख्य कारण यह था कि संयुक्तराष्ट्र की कांग्रेस ने विदेशी चाँदी लेना बन्द कर दिया था। किन्तु जब प्रसीडेन्ट रोज़वेल्ट ने फिर कांग्रेस को चांदी खरीदने के लिये समझाया और योरुप में भी युद्ध के कारण चांदी की माँग बढ़ी तो उसकी दर भी बढ़ गया।

पिट्रौल तथा चांदी के अलावा मैक्सिको को आशा थी कि उसके तांबे, सीसे और जस्ते का मूल्य भी बढ़ जावेगा और मांग भी उनकी अधिक होगी। किन्तु इन चीज़ों का रोज़गार विदेशी कम्पनियों के हाथों में था। फिर भी यह आशा थी कि यदि यह चीज़ें अधिक मात्रा में निकाली जावेंगी तो मज़दूर अधिक लगेंगे और मैक्सिको के खरीदने की शक्ति भी बढ़ेगी। सितम्बर के महीने में इन वस्तुओं का मूल्य कुछ अवश्य चढ़ गया किन्तु जहाज़ में ले जाने का व्यय भी दुगुना हो गया इसलिये सिवा तांबे के और कोई चीज़ बाहर न जा सकी। अब मैक्सिको सरकार ने जो चुंगी सोना, चांदी, तांबा, सीसा आदि के ऊपर बाहर भेजने में लगाये थी उसे कम करने तथा माफ करने का प्रयत्न कर रही है।

इस प्रकार मैक्सिको को लाभ के स्थान पर रास्ता बन्द हो जाने के कारण हानि हुई है। जर्मनी में उसका तेल जाना ही केवल नहीं बन्द हुआ वरन् जो तेल जर्मनी जा चुका है उसका मूल्य भी बेचारा जर्मनी से नहीं पा रहा है। जर्मनी तथा मैक्सिको में यह बात तय पाई थी कि जर्मनी उसके तेल का मूल्य उसे सामान देकर चुकायेगा। मैक्सिको को जर्मन राज्य के ऊपर ५०,००,००० शिलिंग पेट्रौल का दाम पड़ा है। ब्रिटिश सरकार की नीति के कारण जर्मनी तटस्थ देशों के जहाजों द्वारा भी अपना माल मैक्सिको नहीं भेज सकता जिससे वह मैक्सिको से उऋण हो सके।

इटली में अब भी मैक्सिको से मिट्टी का तेल जाता है। यद्यपि युद्ध के कारण अब उतना पिट्रौल नहीं जा सकता है जितना कि पहले जाता था। इटली तथा मैक्सिको सरकार में यह बात तै पाई थी कि इटली उसे पिट्रौल के बदले (Rayon yarn) देगा। किन्तु युद्ध के समय जहाज़ों के आने जाने की कठिनाई पड़ने के कारण ठीक समय पर इटली दाम नहीं चुका सकता। साथ ही साथ रोयायार्न इतना कम जाता था, कि मैक्सिको को कपड़े की मिलों को बन्द करना पड़ा है। इटली ने यह भी साफ कर दिया है कि तेल के लिये वह जर्मनी का मध्यस्थ नहीं बन सकता और वह ब्रिटेन फ्रान्स आदि देशों से मेल रखना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त के आखिरी सप्ताह में मैक्सिको की आयल मानोपली ने घोषणा की कि उसके पास जितना मिट्टी का तेल था सब बिक चुका है। अब उसके पास एक बैरल भी शेष नहीं रहा है। किन्तु युद्ध की घोषणा होते ही भयानक स्थिति हो गई जो आर्डर हो चुके थे वे कटवा दिये गये। तेल वाले जहाज युद्ध के कारण योरुप की ओर नहीं जा सके। तीन जर्मन टैन्करों ने युद्ध की घोषणा होने पर मैक्सिको तट पर आकर शरण लिये, छः दूसरे जर्मन जहाज जिनमें दो सवारी वाले जहाज भी थे वे भी मैक्सिको में आकर ठहरे। बहुत से पत्रकारों तथा राजनीतिज्ञों की राय है कि जो दाम मैक्सिको का जर्मनी के यहां पड़ा है वह मेक्सिको इन जहाजों को लेकर चुका ले। मेक्सिको के जर्मन मन्त्री ने भी कहा कि मेक्सिको सरकार जहाजों को अपने अधिकार में ज़मानत के रूप में रख सकती है। शायद इन जहाज़ों को बेचकर मैक्सिको अपना दाम चुकाए यही आशा की जाती है। मैक्सिको सरकार ने इटली के साथ यह भी तै कर लिया है कि वह दाम चुकाने के बदले में तेल ढोने वाले जहाज़ बनाये किन्तु ये जहाज़ मैक्सिको को कहीं १९४० के अन्त तक प्राप्त होंगे और तेल बाहर भेजने की उसे शीघ्र से शीघ्र आवश्यकता है।

मिट्टी के तेल को विदेश भेजने के कारण मैक्सिको का तटस्थ होना कठिन हो रहा था और जर्मन जहाजों का उसके बन्दरगाहों में होना लोगों को शंका दिला रहा था कि वे जहाज कैरीबियन में जाने वाले यू-अबोटों की छिपे रूप से सहायता करते हैं। २९ सितम्बर को मैक्सिको की सरकार ने तटस्थ रहने का कानून बनाया। तबसे जर्मन जहाज़ों की देख भाल की जाने लगी। इस कानून के अनुसार कोई भी जंगी जहाज, पनडुब्बी जहाज, हवाई जहाज ले जाने वाला जहाज या वायुयान वहाँ के बन्दरगाहों पर नहीं जा सकते। एक बार जर्मनी का कोलम्बस जहाज जो वेराक्रूज पर था, स्थान छोड़कर समीपवर्ती सुनसान एक खाड़ी में चला गया। उस पर ६०० आदमी थे। उस जहाज पर यह शंका की गई थी। कि उसके बोट रात को जाकर यू-अबोटों को भोजन सामग्री दे आते हैं, किन्तु यह सत्य नहीं है।

एम्मी फ्रीडरिच नामक जर्मन टैंकर टैम्पीको बन्दरगाह पर था। एक दिन उसके भोजन सामग्री तथा तेल आदि समान लेकर माल्मो जाने को तयार हुआ। यह शंका की गई कि वह ताजा भोजन किसी जर्मन यू-अबोट को देने जा रहा है। उस जहाज की चाल देख कर यह शंका हो रही थी कि वह किस प्रकार बन्द रास्ते को पार करेगा। २० अक्टूबर को उसने टैम्पीको छोड़ा और चार रोज बाद एक ब्रिटिश क्रूशियर से उससे भिड़न्त हो गई। पकड़े जाने के भय से उसके अफ़सरों ने उसे डुबो दिया।

गत महायुद्ध में जर्मनी ने मैक्सिको की भीतरी कमज़ोरी का लाभ उठाया था और उसने मैक्सिको में अपना जंगी जहाज़ी अड्डा बना रक्खा था। इस बार वह फिर ऐसा ही प्रयत्न न करे इसलिये जर्मन जहाज़ों पर बड़ी दृष्टि रक्खी जाती है। मैक्सिको देश के भीतर भी कड़ी दृष्टि रखने की आवश्यकता है क्योंकि जर्मन एजेन्ट देश के भीतर जर्मन प्रचार कर रहे हैं। मैक्सिको नगर में बिना तार के तार द्वारा खबर बर्लिन से आती है। इस बात की बड़ी छान बीन की गई किन्तु इसका कुछ भी ठीक ठीक पता न चला।

एक बार अक्टूबर के अन्तिम दिनों में एक जर्मन जहाज़ हैवलैण्ड मैन्ज़ानील्लो बन्दरगाह में पहुँचा। यह बन्दरगाह प्रशान्त महासागर में है। उसी समय उसी बन्दरगाह में एरी नामक अमरीकन गन बोट भी पहुँचा। इस बात में बड़ी खलबली मच गई। और कहा गया कि एरी क्यों गया। मैक्सिको सरकार ने छान बीन की तो एरी जहाज़ भी मैक्सिको सरकार की आज्ञा से आया था और जर्मन जहाज़ में भी कोई खतरनाक वस्तु न थी। मैक्सिको सरकार ने इस बात को बिल्कुल साफ कर दिया है कि उसके समुद्र में किसी दूसरे देश को छान बीन करने का अधिकार नहीं है। वह स्वयं समय पड़ने पर अपनी तटस्थता की रक्षा कर सकता है।

यद्यपि एरी की घटना एक मामूली घटना थी। तो भी यह बात साफ हो गई है कि मैक्सिको निवासी किसी प्रकार का वैदेशिक दबाव अपने ऊपर नहीं चाहते हैं। यह बात सोची जा सकती है कि यदि महासमर अधिक समय तक चलता रहा तो उसका प्रभाव संयुक्त राष्ट्र तथा मैक्सिको के सम्बन्ध पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी पड़ेगा। पिछले कई सालों से सम्बन्ध मैक्सिको का अधिक से अधिक शुभ चिन्तक रहा है। इस बात पर दूसरे समीपवर्ती राष्ट्र नहीं ध्यान देते। मैक्सिको के राजनैतिक नेता संयुक्त राष्ट्र की नीति को अपने अनुकूल नहीं समझते हैं और वाशिंगटन के नेतागण भी समझते हैं कि वे अपनी उत्तरदायित्व का आनन्द नहीं उठा रहे हैं। किन्तु स्थिति ऐसी है, जो बदली नहीं जा सकती। मैक्सिको की सफलता उसके चांदी से सम्बन्ध रखती है। मैक्सिको से चाँदी ही सब से अधिक मात्रा में बाहर भेजी जाती है। १९३८ ई० में चाँदी द्वारा उसे कुल आयात का २०·४ भाग प्राप्त हुआ इस चाँदी का इस साल ९८·५ फीसदी संयुक्त राष्ट्र गया जहाँ उसको बिल्कुल आवश्यकता न थी। चाँदी से जो दाम प्राप्त हुआ था, वह पिट्रौल वाले का लगभग दोगुना था।

इस प्रकार साफ ज़ाहिर है कि संयुक्त राष्ट्र मैक्सिको की कितनी चाँदी खरीदता है। इस खरीद के कारण वहाँ की आमदनी में वृद्धि हुई है और चाँदी भी अधिक से अधिक मात्रा में निकाली गई है। दुनिया में जो चाँदी का भाव था। उसके महँगे भाव में संयुक्त राष्ट्र चाँदी खरीद रहा था। सन् १९३९ के गर्मी के दिनों में काँग्रेस ने संयुक्त राष्ट्र सरकार के सामने प्रस्ताव रक्खा कि चाँदी खरीदना बन्द कर दिया जाय। यद्यपि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया तो भी ४३ सेन्ट प्रति आउन्स से घटा कर ३५ सेन्ट प्रति आउन्स कर दिया गया। इस प्रकार करने से स्पैनिश डालर (पिसो) का मूल्य घट गया। पिसो के मूल्य घटने के कारण जो डालर मैक्सिको को पिसो के बदले में मिलते थे, उनकी संख्या भी घट गई। मैक्सिको सरकार ने १६ अगस्त सन् १९३९ को जो आयात कर चाँदी पर था उसे माफ कर दिया और दूसरे धातुओं के कर भी कम कर दिये गये।

मैक्सिको के पिट्रोल के प्रधान निर्यात महासमर के कारण रुक जाने से मैक्सिको के कर पर इतना प्रभाव पड़ा है जिसकी आशा नहीं थी। यह अभी नहीं कहा जा सकता कि इस झगड़े के कारण संयुक्त राष्ट्र तथा मैक्सिको के सम्बन्ध और सुगम होंगे अथवा और अधिक कठिन हो जावेंगे। महासमर के छिड़ने के कारण समस्त अमरीका के एक हो जाने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है और इस बात को सफलीभूत बनाने के लिये मैक्सिको तथा संयुक्त राष्ट्र के सम्बन्धों को शीघ्रातिशीघ्र सुलझाने की बड़ी आवश्यकता है।

यह समझौता अधिकतर मिट्टी के तेल वाले प्रश्न से सम्बन्ध रखता है। हल (मंत्री) ने छोटे राज्यों के भूमि प्रश्न को हल करने का प्रयत्न बड़ी सहनशीलता तथा परिश्रम के साथ किया था, किन्तु इसमें कोई खास सफलता नहीं हुई। मैक्सिको सरकार ने कहा था, कि ऐसे प्रश्नों को वहीं की सरकार तै कर सकती है।

जब मैक्सिको की सरकार ने भूमि प्रश्न पर स्वीकृत दी थी तो उसने साफ कह दिया था कि विदेशी लोग जिनकी जायदाद मैक्सिको में है, इनको वे सुविधाएँ नहीं दी जा सकतीं। जो स्वयम् वहाँ के लोगों को प्राप्त नहीं हैं। उन विदेशी लोगों को अपनी सरकार से कभी ऐसे प्रश्नों के सुलझाने की अपील न करनी चाहिये। उन्हें मैक्सिको के कानून के अनुसार ही करना चाहिये और मैक्सिको की अदालतों के निर्णय को ही मानना चाहिये।

यह बात मैक्सिको सरकार की माननीय होती यदि मैक्सिको सरकार इस बात का विश्वास दिलाती कि वहाँ की अदालतें देशी तथा विदेशी दोनों के साथ बराबर न्याय करेंगी। मैक्सिको सरकार ने ऐसा कोई विश्वास नहीं दिलाया है। वर्तमान समय के वहाँ के न्यायालय स्वतंत्र नहीं हैं और सभी जज कार्डेनास के अधिकार में हैं। वहाँ के जजों पर वहाँ के राजनीतिज्ञों का प्रभुत्व है।

मैक्सिको सरकार के ऐसे बुरे प्रभुत्व का ही कारण था जो मैक्सिको तथा वाशिंगटन की काँफ्रेन्स जो मिट्टी के तेल के सम्बन्ध में हुई थी असफल हो गई। कुछ भी हो किन्तु मैक्सिको की आयल कम्पनी संयुक्त राष्ट्र में अपना तेल फिर से बेंचना चाहती है। इसी कारण अभी हाल ही में न्यूयार्क में कम्पनी ने अपने तेल के बेंचने के लिये एक एजेन्सी स्थापित की है। ट्रेड ऐग्रीमेन्ट ऐक्ट १९३४ के अनुसार कर कम होने से मैक्सिको को सुविधा मिली है। और खरीदार मिलते ही मैक्सिको अपना तेल बेंचना आरम्भ कर देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैक्सिको सरकार अपने पुराने तेल के व्यापार को फिर से प्राप्त तो करना चाहती है किन्तु तेल के कम्पनियों के झगड़े के प्रश्न के बारे में किञ्चित-मात्र भी झुकना नहीं चाहती। निस्संदेह ही कोई भी सरकार किसी विदेशी कम्पनी को भूमि वापस नहीं कर सकती है, लेकिन मैक्सिको के प्रेसीडेन्ट ने कम्पनियों को हरजाना देने के प्रश्न को किसी हद तक स्वीकार किया है। इस हर्जाने के चुकाने के लिये २०,००० पौंड का चन्दा इकट्ठा भी किया गया। था। प्रेसीडेन्ट ने अपने पहली सितम्बर सन् १९३९ के भाषण में कहा भी है कि मैक्सिको सरकार हर्जाना देने के लिये पहले ही से रुपया अलग रक्खे हुये हैं और मैक्सिको सरकार अवश्य ही हर्जाना चुका-येगी।

हर्जाना कितना चुकाया जाय और किस किस वस्तु का हर्जाना दिया जाय। इसी प्रश्न पर मैक्सिको सरकार तथा कम्पनियों के बीच झगड़ा है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने मैक्सिको सरकार को कभी भी तेल के खानों को कम्पनियों के हाँथों से ले लेने के प्रश्न पर चुनौती नहीं दे दी, जैसा कि इंगलैंड की सरकार ने १९३८ में दी है। किन्तु संयक्त राष्ट्र की सरकार ने यह अवश्य कहा है कि शीघ्रातिशीघ्र वाजिब कीमत कम्पनियों को दे दी जाय। वाजिव कीमत क्या है यह भी जटिल प्रश्न है। मैक्सिको के प्रेसीडेन्ट का कहना है कि वह जो कुछ देना चाहते हैं वही मूल्य ठीक है। यदि वह उस तेल का मूल्य चुकाना चाहते हैं जो कि खानों के भीतर है तो उसका अनुमान लगाना पड़ेगा और यह अनु-मान ठीक ठीक करना बड़ा कठिन है कि खानों में कितना तेल है। इसके लिये अमरीकन सरकार ने यह राय दी है कि तेल की खानें कम्पनियों को ठीके के रूप में वापस कर दी जाँय और उनके मूल्य का अन्दाज़ कर लिया जाय। ठीके के समय के अन्त होने पर मैक्सिको सरकार फिर अपने खानों को कम्पनियों से वापस ले लेगी।

महासमर ने मैक्सिको तथा संयुक्त राष्ट्र के आपसी नीति को एक नया महत्व दे दिया है। इस लिये संयुक्त राष्ट्र को मैक्सिको के प्रश्नों को सुलझाने तथा उसके प्रति अपनी नीति निर्धारित करने में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र को इस समय दो बातों की बड़ी आवश्यकता है। पहली तो यह कि उसे अपने पड़ोसी देश मैक्सिको पर सख्ती नहीं करना है, दूसरे यह कि उसे लैटिन राज्यों को यह भी दिखाना है कि वह उनके ऊपर किसी विदेशी सरकार का दबाव नहीं देख सकती।

अमरीकन सरकार मैक्सिको के बाम तथा दाँह पक्षी लोगों के कारण और भी परेशान है। और उसका कार्य और अधिक कठिन हो रहा है। दाँह पक्षियों का कहना है कि उनको निरादर न सहना चाहिये और उन्हे लड़ाई के लिये तयार हो जाना चाहिये। बाम पक्ष वाले अपनी सरकार के पक्षपाती हैं और वे समझते हैं कि साम्राज्य वाद तथा पूँजी-वाद का उनके देश से अन्त हो रहा है और कार्ल मार्क्स के मत का सूर्योदय हो रहा है। बाँम पक्षियों का प्रभुत्व कारडेनास (प्रेसीडेन्ट) तथा सरकारी अफ़सरों पर है। वाम पक्षियों का कहना है कि अम-रीका के लोग मंत्री दल की मैक्सिको नीति के पक्षपाती नहीं वरन् विरुद्ध हैं।

महासमर का अन्तिम प्रभाव मैक्सिको तथा संयुक्त राष्ट्र के नीति पर क्या पड़ेगा। यह बात अधिकतर इन दोनों देशों की राजनैतिक स्थिति पर निर्भर है। १९४० में दोनों देशों में प्रेसीडेन्ट का चुनाव होगा। मैक्सिको में प्रेसीडेन्ट के निर्वाचन का आन्दोलन १९३९ से ही चल रहा है। निर्वाचन जौलाई १९४० में होगा। मैक्सिको के आधुनिक विधानानुसार कारडेनास फिर से प्रेसीडेन्ट नहीं हो सकते। इसलिये उनकी पार्टी ने जनरल मैनुअल अवीला कमाचो को प्रेसीडेन्ट के लिये खड़ा किया है। यह पहले कारडेनास सरकार के नैशनल डिफेन्स के मंत्री थे और दूसरी पार्टियों के लोग भी खड़े किये गये हैं। जनरल जुआन, एन्ड्रू अलमजान, मैनुएल अवीला के प्रधान विरोधी है। राजनीतिक दृष्टि से ये दोनों व्यक्ति कारडेनास के दाहने हाँथ हैं। इन दोनों में अलमजान अधिक योग्य हैं। किन्तु उनके विरोधी के चुने जाने की अधिक सम्भावना है। यदि मैनुवेल अवेला का निर्वाचन हुआ तो कारडेनाकी नीति ही पर मैक्सिको अपना भविष्य बनायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचन का आन्दोलन उपरोक्त नीति को स्थायी रखने पर ही चलाया जावेगा, किन्तु महासमर का प्रभाव अवश्य आन्दोलन पर पड़ेगा। मैक्सीकन क्रान्ति दल को तीन स्थानों से शक्ति मिल रही है। (१) सेना (२) मज़दूर संस्थायें (३) कृषक गण। कोएलीशन पार्टी की सब से अधिक शक्तिशाली संस्था कनफेडरेशन आफ मैक्सीकन वर्कर्स (मैक्सिको के मज़दूरों की संस्था) है। इस संस्था का प्रधान नेता सिनोर विसेन्टे लोम्बर्डो टोलेरानो है। यह व्यक्ति प्रेसीडेन्ट कारेडन के बाद मैक्सिको में सब से अधिक शक्तिशाली व्यक्ति माना जाता है। इसने अपना कुछ समय रूस में व्यतीत किया है और स्टैलिन के मत का मानने वाला है। इसने मेक्सिको के कंज़रवेटिव लोगों को हिटलर का साथी कह कर बदनाम कर रक्खा था किन्तु जब से स्टैलिन ने हिटलर से सम्बन्ध कर लिया तब से वह खामोश है। सेना के ऊपर ही प्रेसीडेन्ट का निर्वाचन निर्भर है और उसके नेताओं को सेनोर लोम्बार्डो टोलेडानों के आदर्शों पर बहुत कम विश्वास है।

उपरोक्त कारणों से कहा जा सकता है कि योरुपीय महासमर का प्रभाव मेक्सिको के भीतरी दशा पर अवश्य ही पड़ेगा और फिर उसका प्रभाव संयुक्त राष्ट्र तथा मेक्सिको के सम्बन्ध पर पड़ सकता है। यदि युद्ध अधिक समय तक चला या अधिक नाशकारक हुआ जिस प्रकार कि पिछला महायुद्ध हुआ था तो युद्ध के सामान की अधिक आवश्यकता होगी। युद्ध के सामान तयार करने के लिये कच्चे माल की भी आवश्यकता पड़ेगी। इसलिये चाहे शान्ति का समय हो या युद्ध का समय हर एक दशा में संयुक्तराष्ट्र से मित्रता रखने ही में मेक्सिको का लाभ होगा और संयुक्तराष्ट्र उसकी सहायता कर सकेगा। शान्ति के समय मेक्सिको को धन तथा वैज्ञानिक सहायता भी संयुक्तराष्ट्र ही देगा। यदि महासमर लम्बा हुआ तो पिछले युद्ध की भांति वहां जर्मनी का आन्दोलन होगा। पिछले युद्ध में जर्मनी मेक्सिको को संयुक्त राष्ट्र के विरुद्ध भड़का रहा था और उसे जापान से मैत्री करके संयुक्तराष्ट्र पर आक्रमण करने की सलाह दे रहा था। इस मैत्री के बदले में मेक्सिको को उसके प्राचीन देश जो संयुक्तराष्ट्र के अधिकार में हैं उसे वापस देने का प्रोत्साहन दिया था। इस बार भी वही बात जर्मनी अथवा रूस के प्रचार द्वारा दुहराई जा सकती है क्योंकि इस समय संयुक्त राष्ट्र तथा मेक्सिको दोनों के आपसी सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं।

——:o:——

स्काटलैण्ड के प्रधान जहाज़ी केन्द्र

दो सौ वर्ष पहले ग्लासगो स्काटलैण्ड का एक छोटा सा नगर और समुद्री बन्दरगाह था। उस समय स्काटलैण्ड की राजधानी एडिन्बर्ग थी। उन दिनों क्लाइड में केवल छोटे छोटे वोट चल सकते थे।

आज ग्लासगो वृटिश साम्राज्य के प्रधान नगरों में और संसार के बड़े समुद्री बन्दरगाहों में गिना जाता है। यह एक विशाल नगर है। यहां की सड़कें बहुत चौड़ी हैं और आयताकार चौराहा बनाती हैं। इस नगर में जहाजों के ठहरने के लिये सुन्दर बड़े बड़े घाट तथा स्थान बने हुये हैं।

ग्लास्गो नगर की प्रधानता उसके नागिरकों के परिश्रम और उत्साह के कारण हुई है। ग्लास्गो से डम्बरटन तक क्लाइड नदी को खोदना पड़ा है और कहीं कहीं पर पहाड़ी चट्टानों को बारूद से उड़ाना पड़ा है। आज केवल ग्लासगो नगर की जनसंख्या १० लाख से ऊपर है।

ग्लास्गो नगर का व्यापार सब से पहले तम्बाकू और चीनी से आरम्भ हुआ है। यहां पर प्राचीन समय से ही जहाज बनाने का काम होता आया है और बड़े बड़े दुनिया के प्रसिद्ध समुद्री जहाज यहीं के बने हैं। गुनार्ड स्टीमर ज़ास ने सब से पहले अटलान्टिक पार किया था, वह यहीं बना था। इसके सिवाय वृटैनिया, स्कोशिया, अक्वीटानिया आदि प्रसिद्ध जहाज़ों के सिवा यहां पर हज़ारों की संख्या में लोकोमोटिव बनाए जाते हैं, जो दुनिया भर के रेलवे लाइनों में चला करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लास्गो का प्रथम बन्दरगाह (पोर्टग्लास्गो) डम्बर्टन चट्टान पर स्थित है। इसकी स्थापना १६८८ ई० में हुई थी। यह बन्दरगाह ग्लास्गो नगर से १८ मील की दूरी पर है। ग्लास्गो नगर की व्यापारिक उन्नति ग्लास्गो पोर्ट के कारण ही हुई है, नहीं तो पहले ग्लास्गो केवल केथीड्रल चर्च और क्लाइड नदी के पुल के लिये प्रसिद्ध था।

सेन्ट्रल स्काटलैण्ड (मध्यवर्ती स्काटलैण्ड) के लोहे के कारखानों के उन्नति करने के कारण बन्दरगाह की बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई तो पार्लियामेंट में क्लाइड नदी को ग्लास्गो तक गहरा करने के लिये एक कानून १७५९ ई० में बनाया गया। १७७० ई० में दूसरा कानून बनाया गया, उस समय डम्बक फोर्ड तक जहाज़ नदी में आ सकते थे। १७९० ई० तक फोर्थ और क्लाइड नदी की नहरें बोलिंग स्थान पर क्लाइड नदी से मिलाई गईं।

इसके बनने के कारण कैरन के लोहे के कारखाने और समुद्र के बीच जहाज़ आने जाने लगे, किन्तु बड़े बड़े जहाज़ तब भी न चल सकते थे। उस समय रेलों की भी उन्नति इतनी नहीं हो पाई थी और सड़कें भी सुन्दर समुद्री किनारे पर जाने के लिये नहीं बन सकी थीं।

१८५८ ई० में पार्लियामेन्ट ने एक कानून के अनुसार क्लाइड नेवीगेशन ट्रस्ट स्थापित किया गया। इसके अनुसार क्लाइड नदी और ग्लास्गो पोर्ट तथा ग्लास्गो नगर के बीच के सभी घाटों और बांधों का प्रबन्ध ट्रस्ट के हाथ आ गया।

कठिन परिश्रम करने के बाद ट्रस्ट ने नदी को गहरा १८ मील तक बनाया। ज्वार के समय नदी की गहराई ३६ फुट हो जाती है। अब भी कभी जहाजों के उतारने में कठिनाई हो जाती है, जैसे १९३६ ई० में 'क्वीन मेरी' नामक जहाज़ को क्लाइड बैङ्क पर जान ब्राऊन घाट में पानी में उतारने में बड़ी कठिनाई हुई थी। क्लाइड नदी पर के बने हुये बड़े बड़े जहाज़ अब भी बड़ी कठिनता से नदी में उतारे जाते हैं।

ग्लास्गो का ब्रुमीला घाट संसार भर में प्रसिद्ध है। यह ग्लास्गो नगर के मध्य में स्थित है। यह सेन्ट्रल रेलवे से क्लाइड नदी के किनारों के घाट तक फैला हुआ है। सन् १८१८ ई० में पहले पहल जहाज़ ग्लास्गो नगर की सीमा के भीतर प्रवेश हुआ था।

यद्यपि ब्रूमीला स्थान प्राचीन काल से ही उस स्थान पर मौजूद था, किन्तु उसकी स्थापना १६७८ ई० में हुई थी। यह प्रसिद्ध घाट नगर के केन्द्रीय भाग में स्थित है। लगभग $\frac{3}{4}$ मील तक बड़े बड़े जहाज़ घाटों पर खड़े अपना सामान उतारते चढ़ाते रहते हैं। घाट के इधर उधर बड़े बड़े विशाल भवन बने हैं। ब्रूमीला घाट पर बड़ी बड़ी जहाज़ी लाइनों के अड्डे हैं। ब्लूफनेल लाइन क्लान, बर्न, लेअर्ड और डेविड मेक ब्राइन लाइनों के अड्डे यहां पर हैं।

ब्रूमीला के पश्चिमी सिरे के दूसरी ओर किंग्स्टन डाक है। यह ४$\frac{1}{2}$ एकड़ है। इसके बाँधों की लम्बाई ३३६७ फुट है। यह घाट १८६७ ई० में खोला गया था। यह ग्लास्गो का सर्व प्राचीन घाट है। इसी घाट पर जमीका से उन्नीसवीं शताब्दी में अधिकांश चीनी आती थी। ग्लास्गो नगर के मध्यवर्ती भाग में क्लाइड नदी का प्रसिद्ध जमीका नामक पुल है। यद्यपि इसका नाम पूर्वी है तो भी वह अपनी भीड़, ट्रेमकार तथा मोटरों की अधिकता के कारण पूर्वी द्वीप समूह से बिलकुल भिन्न है।

किंग्स्टन डाक के तेरह साल बाद स्टोबक्रास पर दूसरा क्वीन्स डाक खोला गया। यह ब्रूमीला के सिरे पर सेसनाक के उत्तर की ओर नदी के दूसरी ओर है। क्वीन्स डाक के बांध १०००२ फुट लम्बे हैं।

क्वीन्स डाक के बन जाने के बाद एलडर्सली चट्टान को उड़ाया गया, जिसके साफ करने में ४० हज़ार पौंड (६,००,०००रु०) खर्च हुआ। इसके बाद सेस नाक स्थान पर प्रिन्सेज़ डाक बनाया गया। इस घाट में तीन बेसिन हैं। यह घाट नदी के बांए किनारे पर है। इस घाट के पानी का क्षेत्रफल ३५ एकड़ और बांधों की लम्बाई ११२१२ फुट है।

ब्रूमीला के पूर्व की ओर क्लाइड पर कोई पुल नहीं है। शील्ड हाल और रेनफ्रू के बीच १२४ ई० में घाट बनाने आरम्भ हुये हैं। रेन फ्रू स्थान पर किंग्स जार्ज पञ्चम नामक घाट है। इस घाट में पानी का क्षेत्रफल २० एकड़ और बांध ५२०२ फुट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लास्गो बन्दरगाह के कुल बांधों की लम्बाई १२ मील १८० गज़ है। मेर्कलैण्डस घाट में केवल पशु उतारे चढ़ाए जाते हैं। मेडोसाइड क्वे में अनाज का व्यापार तथा अनाज के गोदाम हैं। यहां का अनाज के एलीवेट्रों (खत्तियों) में २१,००० टन (८,६८,००० मन) अनाज रक्खा जा सकता है। क्वीन्स घाट के उत्तर की ओर कोयला और दूसरे खनिज पदार्थ उतारे चढ़ाये जाते हैं। गोवान पारटिक और एल्डर्सली स्थानों पर ग्रोविंग डाक्स बने हुये हैं। इनमें सब से बड़ा ८८० फुट लम्बा और ८३ फुट चौड़ा है।

ग्लास्गो से लिवरपूल की भांति स्थल में भी भेजा जाता है। लन्दन, मिडलैण्ड और स्काटिश रेलवे, कैलेडोनियन और ग्लास्गो तथा दक्षिणी पश्चिमी रेलवे लाइनों के टर्मिनस क्निन्स्टन डाक पर हैं। नदी के दाहिने किनारे के घाटों का सम्बन्ध एल० एम० एस० और एल० एन० ई० रेलवे लाइनों से है।

सन् १८५८ में २१,२९,७८२ टन (५,९६,३२,८९६ मन), १९१३ में १,३४,६१,०५९ टन (३७,६९,०९,६५२ मन) और १९१४ में १,११,१४,०१८ टन (३०,११,९२,५०४ मन) सामान जहाज़ों पर चढ़ाया तथा उतारा गया था।

स्काटलैण्ड का कारखाने का प्रदेश सेन्ट्रल-लिफ़्ट वैली (मध्यवर्ती रिफ़्ट की घाटी) में स्थित है। सारे कारखाने एडिन्बर्ग और ग्लास्गो के बीच स्थित हैं। यही भाग व्यवसायी केन्द्र है। ग्लास्गो और उसके घाट ही स्काटलैण्ड के केन्द्र हैं। ग्लास्गो नगर अपने जहाज़ों के कारण ही इतनी उन्नति कर गया है।

यदि जलमार्ग द्वारा ग्लास्गो नगर में प्रवेश किया जाय तो सब से बाहर की ओर क्लाकलाइट (प्रकाश घर) है। यह एक ऊंचा स्तम्भ है।

इस को पार करने के पश्चात् यात्री, ग्लासगो के प्रभाव से प्रभावित होने लगता है। कारखाने की चिमनियां क्रेनें और जहाज़ों के बनने के स्थान सामने दिखाई पड़ते हैं। नदी के उत्तरी तट पर घेजेन्डोरन और दक्षिणी पर ग्रीनाक धुँए के कारण अन्धकार छाया रहता है। इस भाग में बड़े ऊँचे विशाल भवन भी बने हुये हैं।

क्लाइड नदी में भांति भांति के जहाज, स्टीमर तथा वोट दिखाइ पड़ते हैं और किलपैट्रिक से ग्लास्गो तक घाट बने हुये हैं। यहाँ पर क्लाइड नदी का दृश्य एक नदी की भांति नहीं रह जाता। दक्षिण की ओर किलपैट्रिक की पहाड़ी है। घाटों पर सभी प्रकार के जहाज़ स्टीमर तथा वोट अगण्य बनते हुए दिखाई पड़ते हैं।

यहां पर दो समुद्री लाइनों के अड्डे हैं। जहाज़ी लाइनों के जहाज़ घाटों पर दिखाई देते हैं। जहाज़ों के बनाने का शब्द अप्रिय तो अवश्य होता है, किन्तु उनका दृश्य देखते ही बनता है।

क्लाइडबैङ्क पर ही क्वीन मैरी नामक प्रसिद्ध जहाज़ तथा और दूसरे बड़े जहाज़ बने थे। जान ब्राऊन के दूसरी ओर कार्ट नदी का मुहाना है, जिसके दोनों ओर सुन्दर हरे भरे मैदान हैं। यद्यपि यह नदी बहुत छोटी तथा व्यर्थ प्रतीत होती है, किन्तु यह बात नहीं है, इसी नदी के सहारे बड़े बड़े जहाज़ पानी में उतारे जाते हैं।

नगर के समीप पहुँच जाने पर शिपयार्ड के बीच बीच में नागरिकों के रहने के महल्ले भी आ जाते हैं। वृक्षों तथा बाटिकाओं के बीच बीच में सुन्दर ऊँची मीनारें दिखाई पड़ती हैं। जैसे जैसे नगर समीप आता जाता है, नदी सकरी होती जाती है। महलों जहाज़ों और मनुष्यों की संख्या भी अधिक होती जाती है।

नगर के समीप आकर क्लाइड नदी एक नदी की भांति नहीं रह जाती, यह एक नहर की भांति भी नहीं मालूम होती। यहां पर यह केवल जहाज़ चलाने के लिये पानी के एक छिछले भाग की तरह प्रतीत होती है। नदी के दूसरे किनारे पर गोवान का घाट है जहां पर जहाज बनाये जाते हैं और लोहे का कारखाना है।

प्रिन्सेज़ तथा क्वीन्स डाक एक दूसरे के सामने स्थित हैं। यहां पर रंग बिरंगे फनल के जहाज दिखाई पड़ते हैं। इसके आगे एक फौलादी गार्डर का पुल है। जिसके ऊपर लोकोमोटिव इञ्जिन वाली गाड़ियां चला करती हैं। इसकें आगे जमीका का पुल और ब्रूमीला का प्रसिद्ध घाट है। इस प्रकार ग्लास्गो नगर बसा है। इस नगर की जनसंख्या १०,८८,४१७ है। लन्दन आदि नगरों की भांति यह नगर दूर तक देहात में फैला नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

✱✱✱✱

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र से युद्ध

(प्रहलाद नारायण रायज़ादा एम० ए०, बी० टी०)

योरुप महाद्वीप से उत्तर-पश्चिम तट पर हालैंड (Holland) एक छोटा सा देश है। क्षेत्रफल के विचार से यह भारतवर्ष में मैसूर (Mysore) राज्य के आधे से भी कम है परन्तु जन-संख्या में उससे कुछ अधिक।

	क्षेत्रफल		जन-संख्या
हालैंड	१२६०० वर्गमील	हालैंड	६०,००,०००
मैसूर	३०,००० "	मैसूर	५६,००,०००

यदि तुम हालैंड में भ्रमण करो तो तुम्हें वहाँ पर कहीं भी अपने देश के पहाड़ों की भाँति कोई पहाड़ नहीं मिलेगा बड़े बड़े पत्थर चट्टानों से बने हुये पर्वत वहाँ देश भर में कोई नहीं हैं। उसके स्थान में तुमको बालू रेत के ऊँचे २ टीले जो पहाड़ों की भांति ऊँचे और बड़े हैं दिखलाई पड़ेंगे। परन्तु ऐसे पहाड़ भी बहुत कम हैं और बहुत अधिक ऊँचे नहीं हैं। हालैण्ड की पृथ्वी का कोई भाग भी समुद्र तल से ८०० फुट से अधिक ऊँचा नहीं है। धरातल का बहुत सा भाग समुद्र तल से केवल एक गज़ अधिक ऊँचा है और हालैण्ड की पृथ्वी का एक चौथाई भाग तो ऐसा है जिसका धरातल समुद्र की सतह से भी नीचा है। ऐसा भाग समुद्र तट पर भी बहुत सा है।

अब तुम्हारा विचार होगा कि जब समुद्र ऊँचा है और उसके पास की ज़मीन नीची है तो समुद्र का पानी देश में घुस आना चाहिये। यह ठीक है परन्तु समुद्र के जल को रोकने के लिये हालैण्ड वालों ने मिट्टी के बड़े २ बाँध बनाये हैं। जिनको डाइक्स (Dykes) कहते हैं। यह (Dykes) लगभग २० फुट से ३० फुट तक ऊँचे हैं। कोई कोई तो ६० ऊँचे हैं।

अँगरेज़ी में एक कहावत है कि 'जो स्वयं अपने पैरों के बल खड़े होते हैं उनकी ईश्वर सहायता करता है'।* डच लोगों के ऐसे कठिन परिश्रम को देख प्रकृति ने भी ऐसे ही बांध बनाये हैं जो ड्यूनस (Dunes) कहलाते हैं। यह डाइक्स की भांति लगभग ३० फुट ऊँचे हैं। कुछ ऐसे भी ड्यूनस हैं जो अधिक ऊँचे हैं। हारलैंम (Haarlam) नगर के पास कुछ ऐसे ड्यूनस हैं जिनकी उँचाई २०० फुट तक है। चौड़ाई भी इनकी बहुत अधिक है। उनकी चोटियों पर गांव भी बसे हुए हैं। जिनमें सड़कें, नहरें बाग बगीचे इत्यादि बने हुये हैं। रेलें चलती हैं नहरों में नावें तैरती हैं। सड़कों पर घोड़ा गाड़ी, साइकिल मोटर इत्यादि दौड़ती हैं। गांवों के रहने वालों के खेत भी वहीं पर हैं और वह खेती करते हैं।

हालैंड का लगभग सम्पूर्ण तट इस प्रकार के बांधों से सुरक्षित हैं। यदि संपूर्ण डाइक्स ड्यूनस की लम्बाई को जोड़ी जाये तो वह २०० मील के लगभग होती है।

एक अद्भुत बात और यह है कि दक्षिण-पश्चिम पछुआ हवाओं (South west Trade winds) के निरन्तर वेग से चलते रहने के कारण इन डायक्स और ड्यूनस की बालू हवा के साथ उड़ती रहती हैं। और उत्तर की ओर दूसरे स्थान पर जमा होती रहती हैं। शनैःशनैः यह विकराल रूप धारण कर लेती है और इस प्रकार बहुत सी बालू एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँच जाती है और नये स्थान पर टीला बना लेती है। बांध के पश्चिमी तट पर से जो समुद्र की ओर हैं बहुत सी मिट्टी हवा में उड़ उड़ कर चली जाती हैं। इसके कारण उनका पश्चिमी ढाल अधिक ढालू हो जाता है और वह कमजोर पड़ जाते हैं। बांधों के कमजोर होने का एक और कारण यह है कि समुद्र की बड़ी बड़ी लहरें उनसे आकर टकराती रहती हैं। और उनकी मिट्टी को गला कर समुद्र में गिरा देती हैं।

इसका उपाय हालैंड वालों ने इस प्रकार किया है कि उन्होंने डायक्स और ड्यूनस के ढालों और चोटियों पर पेड़ लगाये हैं जिनकी बड़ी २ जड़ें बांध की मिट्टी को दृढ़ता से जकड़ लेती हैं और उसको हवा में उड़ने वा पानी में गलकर गिरने से रोकती हैं।

हालैंड में स्थान स्थान पर पृथ्वी इतनी नीची है कि नदियाँ भी उनके समीप की जमीन से अधिक ऊँचाई पर बहती हैं। कहीं कहीं तो नदियां मनुष्यों के मकानों वा शहर की सड़कों से भी ऊँची हैं। यह हमारे देश की नदियों के विपरीत हैं। हिन्दुस्तान की नदियाँ उनके पास की जमीन से नीची हैं। अतएव जब उनमें बाढ़ आती है तो पानी बढ़ कर ऊपर उठता हुआ मकानों तक आ जाता है। परन्तु विचार करो कि यदि हालैण्ड की नदी में जो इतनी ऊँची बहती है। बाढ़ आ जाये तो क्या परिणाम हो और यदि बाढ़ के साथ

* 'God helps those who help themselves.'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ नदी का किनारा भी टूट जावे तो हालैंड वालों को कैसी महान् आपत्ति का सामना करना पड़े। हमारे देश में जब नदी अधिक बढ़ने लगती है तो मकान इत्यादि खाली कर देते हैं। परन्तु हालैंड वालों को जिनकी नदियों में बाढ़ आते ही ऊपर से जल अचानक गिरता है और सारे देश में जल ही जल हो जाता है। उनके मकान इत्यादि खाली करने का अवसर ही नहीं मिलता।

ऐसी महान आपत्ति से बचने के लिये डच लोगों ने नदी के किनारे भी (Dykes) बनाये हैं और इन डायक्स को दृढ़ बनाने के लिये उन पर पेड़ उगाए हैं।

मनुष्य ने अपनी बुद्धी व परिश्रम से कैसे कैसे अद्भुत कार्य किये हैं और प्रकृति पर विजय प्राप्त की है, परन्तु उस महान शक्ति की भूभ्रङ्ग के सम्मुख नत मस्तक करते ही बनता है। उसके जरा से इशारे पर मनुष्य के सम्पूर्ण कार्य एक क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं। जब कभी समुद्र में ज़ोर से तूफ़ान आता है तो समुद्र का जल Dunes बांध को तोड़ देश में घुस आता है और मीलों दूर तक थल की जगह जल ही जल हो जाता है और सड़कें बाज़ार, दूकानें मकान बाग बगीचे सब समुद्र रूपी काल के ग्रास बन जाते हैं।

यदि बाँध में एक छोटा सा छेद हो जाता है तो फिर उसको समुद्र का पानी और चौड़ा बना देता है और बाँध को तोड़ डालता है, एक बार की बात है कि आधी रात के समय एक डच बालक ने देखा कि ड्यूक में एक छोटा सा छेद हो गया था और समुद्र का पानी उसमें से देश के अन्दर आ रहा था। बालक ने वहाँ पर किसी को नहीं पाया जिस से वह यह हाल कहता। उसने पानी को रोकने के लिये अपनी उंगली उस छेद में कर दी और पानी रुक गया। लड़का वहाँ पर खड़ा रहा और कोई मनुष्य उधर से नहीं गुजरा। सर्दी बहुत पड़ रही थी। रात अंधेरी और चारों तरफ सुनसान थी। प्रातः काल लोगों ने देखा कि लड़का छेद को अपनी उंगली से रोके हुये अचेत पड़ा है। ऐसे देश भक्त बालक की सारे देश में बड़ी प्रशंसा हुई और एक बड़ा पद उसे दिया गया। यदि वह उस छेद को छोड़ कर चला जाता तो छेद बड़ा हो जाता और बाँध टूट जाता।

हालैंड के पश्चिम zinder zee जो आजकल एक समुद्र है बारहवीं शताब्दी के आरम्भ तक हालैंड देश में एक झील थी।

बारहवीं शताब्दी के अन्त और तेरहवीं शताब्दी के आरंभ में उत्तरी सागर North sea में बड़े बड़े तूफान आने से बांध टूट गये और समुद्र का जल ज़िण्डर ज़ी तक बढ़ गया। लगभग ३० गांव नष्ट हो गये और सहस्रों मनुष्य कालके ग्रास बन गये। zinder zee का पश्चिमी तट उत्तरी सागर से मिल गया और वह एक सागर में परिवर्तित हो गई। क्रमशः समुद्र ने और कुछ बांध तोड़ ज़िण्डर ज़ी का मुहाना और चौड़ा कर दिया।

परन्तु हालैंड की साहसी वीर धैर्यशाली प्रजा उसकी इस पराजय पर निस्तब्ध हो कर बैठने वाली नहीं है। उसने समुद्र से अपनी लड़ाई जारी रक्खी। वह लोग हवाई चक्की (windmills) द्वारा चलने वाली मशीनों द्वारा बड़े बड़े पम्पों से समुद्र का पानी निकाल देते हैं और पेटे सुखा धरती निकालते हैं। इस प्रकार समुद्र से छीनी हुई जमीन को पोल्डर (Polder) कहते हैं। जब हालैंड की जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी और उन्हें रहने के लिये पर्याप्त स्थान न मिलने लगा तो परिश्रमी डच लोगों ने अपनी पृथवी को जो समुद्र ने उनसे छीन ली है वापिस समुद्र से छीनने के लिये सन् १६१६ ई० से समुद्र से युद्ध छेड़ रक्खा है। उनका इरादा zinderzee को फिर पहिले की भांति एक झील बना देने का है। अतएव उसके मुहाने पर १८ मील लम्बा एक बांध Dykes एक किनारे से दूसरे किनारे तक बांधा है। इस बांध के पूर्ण तथा बन जाने पर zinder zee के अन्दर चार और बांध बनाये जायेंगे। इस प्रकार zinder zee पांच भागों में बट जायेगा। चारों ओर के चार भाग सुखा लिये जायेंगे। केवल मध्य का पांचवा भाग एक झील की भांति रह जायेगा। इस प्रकार ८०,००० एकड़ वाले समुद्र zinder zee २,४०,००० एकड़ क्षेत्रफल वाली झील में परिवर्तित हो जायेगी और ५,५०,००० एकड़ भूमि समुद्र से छीन ली जायेगी।

zinder zee झील के पानी को आवश्यकता से अधिक बढ़ने से रोकने के लिये उसमें कुछ मोरियाँ बनाई जा रही हैं जिनसे हो कर बढ़ा हुआ पानी निकाल दिया जाय। इन मोरियों से नहरें मिला दी जायेंगी जो देश में चारों ओर सिंचाई करती हुई नदियों से मिला दी जायेंगी। इस प्रकार घूम फिरकर समुद्र में पहुँच जायेगा। और इस प्रकार जब कभी भी zinder zee में पानी बढ़ेगा वह निकाल दिया जायगा और बांध सुरक्षित रहेगा। यह कार्य डच लोग बड़े उत्साह और परिश्रम से कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्टोनिया

इस्टोनिया के उत्तर में फिनलैन्ड की खाड़ी, पश्चिम में रीगा की खाड़ी और बाल्टिक सागर तथा पूर्व में सोवियट रूस की सीमा पर पीपसी अथवा पीपस की ५५ मील लम्बी और २७ मील चौड़ी विशालकाय झील तथा दलदल हैं। यह रूस का बाल्टिक द्वार है, अतः रूस की राहुदृष्टि सदैव इस देश पर रही है। और आज भी यह उससे परे नहीं है, सम्प्रति यह एक स्वतंत्र राज्य है, जो स्विटज़रलैन्ड, हालैंड, बेलजियम अथवा डेनमार्क से क्षेत्रफल में बड़ा है। इसका क्षेत्रफल १८,४०० वर्गमील, और यहां की जन-संख्या लगभग ११ लाख है।

इस्टोनिया निवासी अपनी निजी 'इस्टोनियन' भाषा बोलते हैं, पर साथ ही रूसी तथा जर्मन भी। सन् १९१८ ई० तक यह देश रूस का एक बाल्टिक प्रान्त था। सन् १९१७ में रूस में भीषण राज्य क्रान्ति हुई। जिसके फलस्वरूप वहां के शासन की बागडोर बोलशेविकों के हाथ में आ गई। इस नवीन सरकार ने इस्टोनिया की पूर्ण स्वतंत्रा की घोषणा को सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस प्रकार इस्टोनिया सदियों से खोई हुई अपनी आजादी को हासिल कर सका। यहां का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, जिसका आरम्भ ईसा से लगभग ४००० वर्ष पूर्व होता है।

जैसा कि इसके नाम से प्रतीत होता है। इस्टोनिया प्रस्तरमय प्रदेश है। यहाँ आलू प्रचुरमात्रा में पैदा होता है। अतः यह आलू एवं पत्थरों का सुन्दर देश कहलाता है। यहां आलू की उपज इतनी अधिक होती है कि यहां के प्रत्येक निवासो को प्रतिवर्ष एक टन आलू दिया जा सकता है। परन्तु पैदावार का एक बड़ा हिस्सा विदेशों को भेज दिया जाता है। और शेष भाग शराब बनाने में प्रयोग किया जाता है। अभी हाल ही में एक वर्ष १०,००,००० गैलन विशुद्ध शराब वहां के आलुओं से तैयार की गई थी।

इस्टोनिया की अधिकांश सम्पत्ति वहाँ के कोणधारी वन हैं। देश की २० प्रतिशत से अधिक भूमि मूल्यवान जंगलों से आच्छादित है। यह देश का सौभाग्य है कि वहाँ के जंगलों की वार्षिक उपज घरेलू आवश्यकता से अधिक है। इसी कारण लकड़ी तथा जंगल की अन्य पैदावार अधिक मात्रा में विदेशों को भेजी जाती है। देश में लकड़ी चीरने और लकड़ी के बुरादा से काग़ज़ के लिये गूदा तैयार करने की अनेकों मिलें हैं। इन मिलों में विशेषतया कोणधारी वनों की मुलायम लकड़ी की खपत होती है। लकड़ी का सामान तथा तहदार पतले तख्ते विशेषतया birch के काष्ठ से तैयार किये जाते हैं। लकड़ी के सबसे बड़े कारखाने देश की राजधानी टैलिन नगर में केन्द्रित है। गत कुछ वर्षो में दियासलाई के कारखानों की बड़ी उन्नति हुई है। इन कारखानों में Aspen लकड़ी प्रयोग में लाई जाती है। देश में उत्तम सिगरेट बनाने के भी कुछ कारखने हैं।

देश के प्रमुख व्यवसायों में 'Oil shale' का व्यवसाय भी है। इससे एसफाल्ट, मशीनों के पुरजों को चिकना करने वाला तथा उन्हे संचालन करने वाला तेल, और मोटरकारों एवं वायुयानों के लिये Benzine वा Gasoline भी प्राप्त होता है इस व्यवसाय के बृहत् कारखाने सरकारी हैं। शांति के समय आयात और निर्यात का बड़ा व्यापार ग्रेट ब्रिटेन के साथ होता है। लट्ठे, मक्खन, अंडे और शूकरामिष विदेशों को भेजा जाता है। और मशीनें तथा मोटर कारें देश में मँगाई जाती हैं। इस्टोनिया के दो बड़े ग्राहक ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी हैं।

देश के बिनता के कारखानों में प्राचीन इस्टोनियन डिज़ाइनों, मफलर, स्वेटर, बिछौना, दस्तानों आदि नवीन वस्तुओं में पुनः स्थान दिया जा रहा है। विभिन्न राष्ट्रीय वस्त्र आज भी बड़े चाव से धारण किये जाते हैं। परन्तु प्रायः त्यौहारों के समय। हाथ से बने हुये चमड़े का सामान भी अति सुन्दर होता है। इनपर भी प्राचीन डिज़ाइनें सुन्दरता से अंकित रहती हैं। और ये स्कैन्डीनेविया के स्पष्ट प्रभाव का परिचय देती हैं।

गमनागमन के साधन

इस समय सम्पूर्ण देश में ५००० मोटरें हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में सड़कों की अधिक उन्नति की जा रही है। और साथ ही मोटर सवारी का विस्तार भी हो रहा है। किराये पर चलने वाली मोटर लारियां स्वयं सुखदायक होती हैं। और ऊबड़ खाबड़ सड़कों पर चलने के लिये सुदृढ़ बनाई जाती हैं। इन मोटरों को प्रत्येक सड़क पर जाने का अधिकार है। जहाँ कहीं किसान अपने घोड़े गाड़ी को हाँकता हुआ दूर से ही मोटर की घड़घड़ाहट को सुनता है। वहां ही वह निकटवर्ती खाई में अपनी गाड़ी को हांक ले जाता है। और शीघ्रता पूर्वक गाड़ी से कूद कर अपने घोड़े की आंखों को कपड़े से ढक लेता है, और आशा करता है कि इंजिन का कर्कश स्वर उसके सह में हुये। घोड़े को परेशान न कर सकेगा।

बेचारा किसान यह कृत्य विशेषतया तभी करता जब कि उसकी गाड़ी पर शहद तथा अंडों का बोझ लदा होता है।

जल-विद्युत

विशालकाय पीपसी झील का जल लगभग ३३ फुट की ऊँचाई से एक नदी द्वारा नीचे गिरता है। और इसमें जल विद्युत उत्पन्न की जाती है। इस जल शक्ति का कुछ अंश Kreenholm नामक सूती मिल की ४५०,००० तकलियों को संचालित करने में प्रयोग किया जाता है। इस्टोनिया निवासी इस समय ९०,००० अश्व शक्ति में से २५,००० अश्व-शक्ति को काम में लाते हैं। परन्तु पीट (Peat) जलाकर बिजली पैदा करने वाले कारखाने में इस्टोनिया की लगभग ३/४ विद्युत शक्ति उत्पन्न की जाती है।

प्रसिद्ध नगर

(१) टैलिन—यह देश का प्रमुख नगर, मुख्य बन्दरगाह और राजधानी है। यह फिनलैंड खाड़ी पर २५ पूर्व देशान्तर पर है स्थिति है। यह विरोधी तथ्यताओं का नगर है, और इसकी सम्यक तुलना चीन देश की वर्तमान राजधानी 'पीपिंग' से हो सकती है। नगर के सुन्दर और स्वच्छ बाजारों में यहाँ की स्त्रियाँ सुन्दर रूमालों में रखे मक्खन, अंडे, शाक, तथा मिट्टी की बनी हुई छोटी छोटी वस्तुएँ बेचती हुई दृष्टिगत होती हैं। यहां के मकान ऐसे प्रतीत होते हैं कि मानों आश्रय ग्रहण करने के लिये एक दूसरे की ओर झुके हुये हों। सचमुच में ही वह इतनी निकटता से बने हुये हैं, कि उनके छज्जे 'रोमियों' और 'जूलियट' की तरह एक दूसरे का प्रेमालिंगन करते हुए प्रतीत होते हैं। नगर की आज्ञाकारी पत्नियाँ भोजनादि बनाने में अत्यंत कुशल हैं।

(२) पारनू—यह इस्टोनिया का परम सुन्दर नगर है। ग्रीष्मकाल में रहने के लिए अनेकों पुरुष-स्त्री प्रतिवर्ष यहाँ आते हैं। जब यह नगर रूस साम्राज्यान्तर्गत था तब इसका ३० मील लम्बा वृक्षदार मार्ग वास्तव में बनस्पतिशास्त्र का एक विशाल उपवन था। युद्ध के समय यह नगर बुरी तरह बरबाद हो गया था, परन्तु पुनः सरकार ने इसे प्राचीन समृद्धि पर पहुँचा दिया है। ग्रीष्म ऋतु में स्नान करने योग्य यहां का समुद्र नगर का प्रमुख आकर्षण है। यह छोटा नगर अपने विचित्र मृत्तिका स्नान (Mud Baths) के लिए विख्यात है। समुद्र तट पर अनेकों ऐसे स्थान हैं, जहाँ दलदल प्रचुर-मात्रा में पाया जाता है। यह दलदली भूमि प्राचीन पौधों तथा खनिज पदार्थों के सम्मिश्रण से बनी है, और लोगों की ऐसी धारणा है कि इसमें आरोग्यवर्धक प्राकृतिक गुण विद्यमान हैं। यद्यपि यह औषधियुक्त दलदल दुर्गन्धमय है, तथापि इसकी ख्याति प्रतिवर्ष बढ़ती जाती है। अनेकों रोगी मृत्तिका-स्नान द्वारा अपने रोगों से छुटकारा पाने के लिए प्रतिवर्ष विदेशों और विशेषतया स्वेडन से ग्रीष्मकाल में यहां आते हैं।

भारत आदि कृषिप्रधान देशों की भांति इस्टोनिया भी कृषिप्रधान देश है। अतः यह अनेकों विशाल नगरों का गर्व नहीं कर सकता। टैलिन और पारनू के अतिरिक्त टारटू और नारवा (Narwa) दो और प्रसिद्ध नगर हैं। टारटू, एमा (Ema) नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ है। यह एक प्राचीन विश्वविद्यालय का केन्द्र है, जिसकी नीव 'गुस्टवुस अडोल्फस' (Gustavus Adolphus) ने डाली थी। इसी ने १८ वीं शताब्दी के अंत में पत्थरों का एक मेहराबदार पुल बनवाकर नदी के दोनों किनारे मिला दिए थे। नगर का वायुमण्डल ज्ञान और विद्या की चर्चा से परिपूरित रहता है। निकटवर्ती पार्क में अखंड शांति विराजती है जहां छात्रगण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैयक्तिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायों पर प्रेमपूर्वक वाद-विवाद अथवा निस्सीम एकान्तता में उन पर विचार कर सकते हैं। परन्तु यह खेद का विषय है कि विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने प्रवेशिका परीक्षाओं को अत्यधिक दुरूह बनाकर विद्यार्थियों की संख्या ५००० से घटाकर ३,००० कर दी है। औद्योगिक ज्ञान वाले पुरुषों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए हाल ही में एक औद्योगिक विश्वविद्यालय की स्थापना टैलिन नगर में की गई है।

नगर के निकट इस्टोनिया राष्ट्रीय अजायबघर है जहां देश की कला की सर्वोत्कृष्ट निधियां संचित हैं। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा केन्द्रीय सरकारी दफ्तरों में बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित हैं।

नारवा का प्रसिद्ध नगर पूर्वी सीमा पर रूसी दुर्ग 'इवानगारोद' (Ivangorod) के सम्मुख है। इस नगर में पूर्व और पश्चिम का विचित्र समन्वय है जिसके कारण यह शताब्दियों तक लड़ाई का कारण रहा और कई बार अग्नि तथा युद्ध द्वारा बरबाद किया गया। इतना सब कुछ होते हुए यह सदैव अपने पुराने ढांचे पर निर्मित किया जाता रहा। ग्रीष्मकाल में यह नगर विशेष दर्शनीय है, क्योंकि उस समय नाव द्वारा सरलतापूर्वक पहुँचा जा सकता है।

कांटेदार तार रूसी सीमा का परिचय देते हैं। Irboska यहाँ का मुख्य नगर है, जहाँ रूसी दुर्ग तथा गिरजाघर के प्रसिद्ध प्राचीन खंडहर हैं। यहाँ ट्रूवर (Truvor) की समाधि है, जो ९वीं शताब्दी में रूस में आया था और जिसकी गणना रूसी राज्य के संस्थापकों में की जाती है।

रहन-सहन

प्राचीन काल की अपेक्षाकृत वर्तमान समय का जीवन कष्ट साध्य है। निवासियों को प्रत्येक पाई का ध्यान रखना पड़ता है। कुछ वर्ष पूर्व देश में अनेकों कच्चे घर थे, जिनमें दीवाल के लघुछिद्र ही चिमनी का कार्य करते थे। अब ये झोपड़ियां विलीन हो चुकी हैं, और उनका स्थान भव्य भवनों ने ग्रहण कर लिया है। कहीं कहीं अब भी लट्ठों के मकान जिनकी छतें छप्परों से ढकी रहती हैं; दिखाई पड़ती हैं। गर्मी के दिनों में किसान स्त्रियाँ अपने पत्तियों के साथ खेतों में काम करती हैं। जाड़े के दिनों में भी अकर्मण्य नहीं बैठतीं, वरन् सूत कातती व बुनती हैं। बागवानी के कुछ औजार देश के बने होते हैं पर वे सस्ते तथा चलाऊ होते हैं।

रामाधीन अग्निहोत्री, बी० ए०

*****

रतलाम से गोधरा पैदल यात्रा

(गोविंदशंकर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मि० स्कूल, जावद)

कार्तिक मास का अन्तिम दिवस आ चुका है। इसी दिन चन्द्रमा अपनी पूर्ण चन्द्रिका से संसार को प्रज्वलित कर रहा था। इसी समय दिमाग में सनक सवार हुई कि "हिंगलाजतीर्थ" करना चाहिये। यह स्थान बिलोचिस्तान के गर्भ में स्थित करांची से १२५ मील दूर उत्तर-पश्चिम में है। इस स्थान की ख्याति पहिले भी सुन चुका था। वहां मैं भी मजदूरी करके उदर पूर्ति कर रहा था सहारा किसी का था नहीं। मुसीबतों से जो भी ऊब उठा था।

उपरोक्त कारणों से मैंने अपने घर से रात्रि के नौ बजे के करीब बिदा मांग घर से चुपचाप चला था। कोई विशेष सम्भाल लेने वाला नहीं था, इस कारण से किसी के मिल जाने का भय भी नहीं था, बिना टिकिट केसरपुरा स्टेशन से रात्रि के १-३० बजे रेल गाड़ी में सवार हुआ। और बैठक के नीचे जा दुबका, टिकिट चेकर्स आये, परन्तु यात्रियों की सहानुभूति के प्रताप से मैं उन्हें न दीख सका, ठीक सूर्योदय के समय में रतलाम आ पहुँचा इस बीच में कोई दृश्य न देख सका, यहीं से मेरी पैदल यात्रा शुरू होती है।

रतलाम देखने का मेरा पहिला ही अवसर था, चारों दिशाओं से बैलों की आने वाली धड़धड़ाहट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज ने मेरे कान खड़े कर दिये जिधर जाता हूँ उधर रेलवे लाइन, एंजिनों की 'पी०, पी०' और रेलवे महकमे सम्बन्धी नौकरों के सिवाय कुछ नहीं दिखाई देता था। इस समय लोगों की भीड़ इतनी थी कि पार करना मुश्किल था, पुलिस का प्रत्येक जवान मुझ ऐसे निठल्लों की खोज में जहां जहां खड़े थे, मैं हैरान हो गया। जैसे तैसे साहस करके फाटक के पास आ पहुँचा, स्टेशन मास्टर की दयालुता ने मुझे बाहर जाने की अनुमति दी, सराय में पहुँच कर देखता हूँ तो कोई लोग कोटा, सवाई माधोपुर, उज्जैन, नागदा इन्दौर के टिकिट खरीद रहे हैं तो कोई गेट कीपर को अजमेर, उदयपुर, चित्तौड़ तथा दाहौद और अहमदाबाद के टिकिट देकर ताँगों में सवार हो रहे हैं। पता लगा कि यह स्टेशन 'बाम्बे'-बारौदा सेन्ट्रल-इण्डिया रेलवे' की 'ब्रांड, तथा मीटर गांज' का केन्द्र है, यह शहर भील वाड़ तथा मालवे की सरहद पर स्थित एक हिन्दू राजधानी है।

इस स्टेशन पर दूरवर्ती स्थानों से धान्य आदि के बोरे तो आते ही हैं परन्तु लोहे, काँच आदि का सामान विशेष रूप से आता है। इस शहर के पश्चिम में घने जंगलों से ढँके हुये ऊँचे २ पहाड़ आ गये हैं। सो वहाँ की सारी लकड़ी मालवे में इसी स्टेशन पर होकर जाती है। बहुत सी लकड़ी तो यहीं चीरी जाती है और उसका सामान जैसे कुर्सी, टेबल, आलमारी, तथा बड़े २ पाट तैयार किये जाकर अन्य स्थानों को भेजे जाते हैं। यहाँ लकड़ी चीरने तथा उसका सामान बनाने के कई कारखानें हैं।

यहाँ पर एक जीन भी है जहाँ कपड़े बुनने का काम होता है। इसी के पास जावरे का मुख्य शहर है जो नवाब की राजधानी है। यह "बाम्बे- बड़ौदा, सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे की; मीटर गाँज' के 'अजमेर खंडवा लाइन' का शक्कर पैदा करने वाला मुख्य स्टेशन है यहाँ के शक्कर के कारखाने ने ही मालवे के किसानों को गन्ने की विशेष खेती करने का सबक सिखाया है। फलतः किसान मालामाल एवं ऋण से मुक्त भी होने लगे हैं। शीत ऋतु के आरम्भ में अर्थात् नवम्बर दिसम्बर के महीनों में प्रत्येक स्टेशन पर गन्ने की गाड़ियाँ दिखाई देती हैं और कई मजदूर इन गाड़ियों को खाली करते हुये व रेलवे कम्पार्टमेन्ट में गन्ने डालते हुये दिखाई देते हैं। यह कार्य उस वक्त नहीं था जब कि मैं पैदल यात्रा करने निकला था।

रतमाल स्टेशन से भिक्षा वृत्ति करके मैंने पश्चिम की ओर रेलवे लाइन के सहारे पैदल ही प्रस्थान किया। मेरे पास सामान तो क्या परन्तु वस्त्र तक पूरे पहिनने को नहीं थे। तात्पर्य यह कि वजन कुछ भी नहीं था तथा कंगाली का प्रथम आदर्श में ही जँचता था मेरे प्रत्येक अवयव से भिखारीपन झलक रहा था। करीब दो मील गया हूँगा कि जंगल शुरू हो गया। चारों ओर बड़ी बड़ी घास दिखाई देता था कहीं कहीं घास कटैया हँसिया लिये घास काटते हुये दिखाई देते थे। रास्ते में लाइन सुधारक (बारह-मासी) मिले थे परन्तु इनके सिवाय कोई नहीं मिले धीरे धीरे पहाड़ों की तीखी धाराएँ लाइन के आस पास ऊँची उठती हुई दिखाई देने लगी। अब लाइन भी टेढ़ी मेढ़ी अधिक होने लगी सारा मार्ग सुनसान रास्ता टेढ़ा मेढ़ा घने जंगल आदि कारणों से भय विशेष प्रभाव डालने लगा। परन्तु इष्ट तीर्थ के विचारों ने इस भय को विशेष जोड़ नहीं पकड़ने दिया। रास्ते में छोटे छोटे लेकिन गहरे विशेष नालों को अधिकाधिक संख्या बढ़ने लगी। इनमें बहुत कम जल था। यहाँ की चट्टानें गोल मोल लेकिन लाल-पीले-काले रंग की थीं। एक मील और चला हूँगा कि ऊँचे २ पहाड़ शुरू हुये, वैसे ही बड़े बड़े पेड़ भी विशेष दीखने लगे, कहीं कहीं पहाड़ों की तरेटियों में दो दो चार चार घास तथा लकड़ियों की बनी हुई झोपड़ियां दृष्टिगोचर होती थीं। सन्ध्या का समय भी हो चला था। मुझे कहीं सहारा न दिखाई दिया। ऐसी सूरत में मैं इन्हीं झोपड़ियों की ओर चल पड़ा। इनमें भील, मीने निवास करते हैं, जिनकी वेष-भूषा देख कर मनुष्य क्या हिंसक पशु भी भयभीत हो जाते हैं। इनके सिर पर पंच केशी सी जटा जिस पर मैला श्वेत वस्त्र चक्कर दार बँधा हुआ और उस पर लाल कपड़े की धारी लगी हुई, कानों को ऊपरी हिस्से में छोटी छोटी दो दो बलियाँ जिनमें नकली काँच के लाल-पीले मोती लगे हुये हैं। बाकी शरीर वस्त्र रहित है। कटि में एक डोरा बंधा हुई जिसमें चार छः अंगुल चौड़ी या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो ढाई हाथ लम्बी श्वेत वस्त्र की मैली पट्टी अग्रभाग की गुप्तेन्द्रिय को अदृश्य रखने को लगी हुई है। पीछे का भाग गर्दन से पैरों तक नंगा है। शरीर का रंग इतना काला कि मानों कोयले की खदान से चले आ रहे हों। पीठ पर तरकस (तुणीर) पड़ा हुआ है जिसमें कुछ तीर पड़े हुये हैं। तार की डंडी का मध्यभाग बाँस का वह अग्रभाग लोहे के दुधारी फल का है। पीछे के सिरे पर कुछ पंख के से डोरी से मज़बूत बँधे हुये रहते हैं। कमान सारी बाँस की होती है। इसके आस पास भी मज़बूत तार लिपटा रहता है, इसके दोनों सिरों पर किसी जानवर की अँतड़ी बँधी रहती है। यह बनका ऐसा अस्त्र है जो सब जगह काम देता है।

इनके इस रंग ढंग को देख कर रामचन्द्र जी के समय का सारा इतिहास स्मरण हो आता है। हमारे यहाँ के एक सज्जन ने भी यहाँ का तुलनात्मक चित्र कविता रूप में निम्न प्रकार से खींचा है।

"वाली लागे मने या आंवली"

ये अँवली स्थान पर रह आये हैं। आप कहते हैं। मुझे यह बहुत ही प्रिय है क्योंकि :—

जब देखूं सूरंत या साँवली"

अर्थात् रामायण में रामचन्द्र जी के साँवले रंग का वर्णन पढ़ते हैं। और यहाँ की जनता भी साँवली है फिर आप कहते हैं:—

"मीठा खाना तो मालवे में रह गया,
अच्छा खाना उड़ा ले गई काँवली।"

तात्पर्य यह कि मालवे के समान यहाँ अच्छे खाद्य पदार्थ भी पैदा नहीं होते।

ये लोग अव्वल दर्जे के तीरन्दाज व शिकारी होते हैं। ये पहाड़ों पर बड़ी तेज़ी से चढ़ जाते हैं, भागने में भी तेज़ होते हैं। इनका कद साधारण नाटा होता है हिंसक पशु व भोले जानवरों को मार कर खाना, जामुन, बेर, आम आदि फलों का सेवन करना इन का मुख्य उद्यम व खाना है। जंगलों की लकड़ी को काटना तथा स्टेशनों पर ले जाना कोयला तैयार करना जङ्गल के जङ्गल जलाकर गोंद, लाख व शहद इकट्ठा कर के बेचना तथा घास काटना इनके मुख्य धन्धे हैं ये लोग मदिरापान विशेष करते हैं परन्तु अतिथि का सत्कार करने में किसी सभ्य से कम नहीं हैं। अतिथि इनके सद्व्यवहार से इतना प्रभावित हो जाता है कि वह कह ही नहीं सकता कि ये लोग मदिरापान और मांस भक्षण करते होंगे। परन्तु दगाबाज के लिये हिंसक पशु से भी अधिक निर्दयी होते हैं। जान लेने में देर नहीं करते स्वागत करने में ये लोग खाने के लिये सावां, बाजरा, दूध, दही, घी तथा शहद भेंट करते हैं। मैं एक माह तक इनके साथ रहा लेकिन एक भी दिन ऐसा नहीं बीता कि उपरोक्त खाद्य वस्तुओं का उपयोग नहीं किया हो। सेवा करने में इतने सीधे भोले एवं निराभिमानी होते हैं कि पैर तक दबाने लग जाते हैं।

धर्म

ये लोग 'चौथ देवी' का विशेष इष्ट रखते हैं। इसी का सभ्य नाम कालिका हो सकता है। प्रत्येक चतुर्थ को एक पुजारी अपना सारा शरीर कम्पाता है। कहते हैं यह आप ही आप (Automatically) काँपता है इच्छा से नहीं अन्य प्रेक्षक वीर रस के गाने 'मांद' नामक वाद्य के सहारे गाते जाते हैं और नृत्य भी करते जाते हैं। इस वक्त ये लोग सब मदोन्मत्त रहते हैं। रौद्र रूप धारण कर लेते हैं। फिर कुछ प्रश्न देवी के पुजारी को पूछते हैं और उसी के अनुसार ये आगे काम करते हैं। ये लुटेरे अव्वल दर्जे के होते हैं परन्तु बिना देवी की परवानगी के नहीं उस समय सारा जंगल भयावह प्रतीत होता है तिस पर मांदक की घोर आवाज और साथ ही साथ पीतल की थाली का बजाया जाना और उनका भयंकर नृत्य सिद्ध कर देते हैं कि प्रलय के समय रुद्र भगवान इसी प्रकार ताण्डव नृत्य करते हैं। इसके अलावा ये भूत, प्रेत डाकिनी तथा शाकिनियों पर विशेष विश्वास करते हैं। इनके धर्मों की दो तीन शाखाएं भी होती हैं। जो रात के वक्त एकान्त स्थान में मानते हैं। इस वक्त उस स्थान पर इनके धर्मावलम्बियों के सिवाय और कोई नहीं आ सकता चाहे वह पुत्र ही क्यों न हो। इस वक्त ये सब स्त्री अथवा पुरुष एक ही थाली में खाते हैं। भेद भाव नहीं रखते और आपसी वैर त्याग देते हैं। इनके मुख्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म ये हैं :—'दसनामी विश्वासी पंथ, कांचलयापंथ, कुन्डा पंथ, कबीरपंथ, आदि आदि। जब यह धर्मोत्सव मनाया जाता है तब 'तंदूरा' नामक वाद्य बजाते हैं और उसी के सहारे निर्गुणी भजन गाते हैं साथ साथ मञ्जीरे भी बजाते हैं। ये भजन आध्यात्मिक विषय पर होते हैं। इनमें से विशेषकर, गोरख, मछिंदर, नानक, कबीर, मीरा नामदेव, धनजी, भुवानजी जाट आदि के यह होते हैं। उदाहरणार्थ

"सुरत ठहराले ज्ञान धुन हेरो (ढूंढो)
मलसी नकलंग साँई हे"। कबीर

"धरती नहीं जठे धूर्णी धकाई बिना
अगन तप धाया"। गोरख

"मन इच्छा भोजन माने कछुयन भावे हे।
ठंडा टूकड़ा मन राजी"। मीरा

"मानों सन्ता परदेशी यजमान
काले तो जीवड़ो जातो रेला जी"।
नामदेव

इन भजनों को बाणी या पद कहते हैं। इनमें बड़ा रहस्य होता है। इन से बैराग्य बहुत उत्पन्न होता है।

स्त्रियों की वेष भूषा भी बड़ी विचित्र होती है, पैर की टकनी से लगायत घुटने तक पीतल की कड़ियां पहिने रहती हैं और हाथों में भी पहुँची से कोहनी तक पीतल की चूड़ियां होती हैं। कोट के नीचे के भाग में फेंट्या या घाघरा पहिने रहती हैं। जिसके पीछे के भाग का कोना आगे खोंस लेते हैं। इस तरह से वह भी घुटने तक आ जाता है शेष अंग पर लूगड़ या साड़ी पहिनते हैं। परन्तु मेहनत और वीरता किसी पुरुष से कम नहीं होती।

इन लोगों के साथ एक माह बड़े आनन्द से व्यतीत किया। इनकी भाषा मुझे कुछ भी समझ में नहीं आती थी। इशारों से काम लेना पड़ता था। परन्तु स्टेशन के पास वाले स्थानों के लोगों की भाषा समझ में जरूर आ जाती थी। इन्हीं घने जंगलों को इन लोगों के सहयोग से पार कर के दाहोद पहुँचा। जो रतलाम से करीब ७५-१०० मील दूर है। इतनी दूरी के बाद चहल-पहल वाला यही एक नगर दिखाई दिया। यहां स्टेशन पर कोयलों के ढेर और जंगली लकड़ियों के गट्ठर पड़े हुए देखे। गायों के झुंड के झुंड आसपास के पहाड़ी ढालों पर चरते हुए देखे। इन ढोरों का तमाम चमड़ा यहीं पर लाया जाकर रँगा जाता है और फिर दूर दूर विदेशों को भेजा जाता है। यहाँ से चलते चलते गोधरा पहुँचा। यहाँ मुसलमानों की बस्ती बहुत है। इस शहर के चारों ओर शहर पनाह सी मालूम होती है। प्रत्येक गली में मुर्गी तथा बतखों के झुंड के झुंड दिखाई देते हैं। यहाँ के लोग ढोर भी बहुत पालते हैं जिनका दूध, घी तथा मुर्गियों के अंडे दूर दूर भेजे जाते हैं। यहां की पुलिस का प्रबन्ध भी सराहनीय है। गुप्त चोर, बदमाश एवं लुटेरों को पकड़ने का पहिला नाका यही गिना जाता है तथा गुजरात में प्रवेश करने के लिये पहिले इसे ही पार करना पड़ता है। अर्थात् यह गुजरात का फाटक है। यहां से एक रेलवे शाखा डाकोरजी, आनन्द आदि स्थानों पर होती हुई अहमदाबाद जाती है। दूसरी बड़ौदा होती हुई सूरत भड़ोंच और बम्बई को जाती है। यहीं पर मेरी पैदल यात्रा समाप्त होती है।

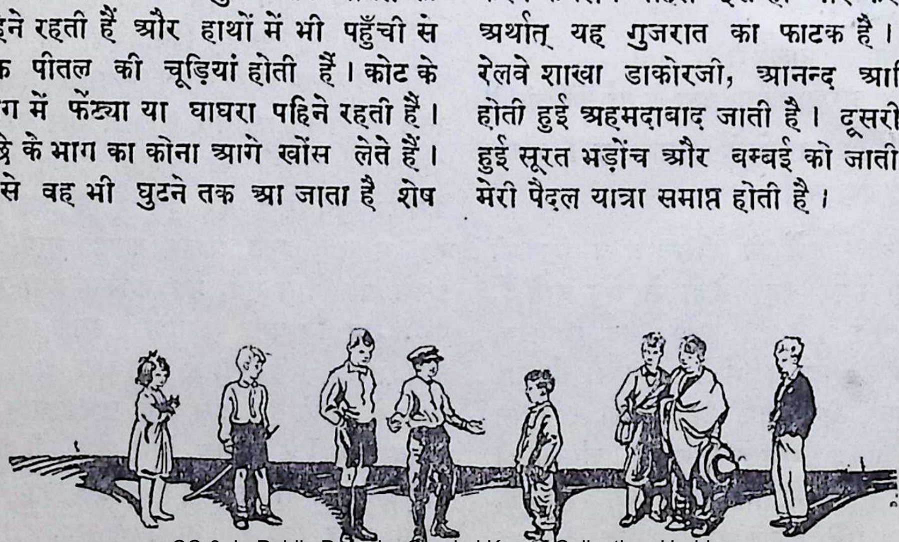

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिनलैंएड

(लेखक—रामाधीन अग्निहोत्री बी० ए०)

स्थिति

फिनलैंड "सहस्र झीलों का भूभाग है"। कुछ काल तक यह देश रूस राज्यान्तर्गत रहा, परन्तु ६ दिसम्बर सन् १९१७ ई० से एक स्वतंत्र राष्ट्र है। यह लगभग ५९° से ७०° अक्षांस उत्तर और १९° से ३२° देशान्तर पूर्व में फैला हुआ है। उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई अधिक से अधिक ७०० मील है। इसके उत्तर में नार्वे का लैपलैंड है, पूर्व में रूस, दक्षिण में फिनलैंड की खाड़ी और पश्चिम में बाथनिया तथा स्वेडन को खाड़ियां हैं। रूसी लैपलैंड का भी कुछ अंश इसमें सम्मिलित है। इसका दक्षिणी-पश्चिमी समुद्री किनारा पहाड़ी आलैंड द्वीपों द्वारा घिरा हुआ है। दोरपट (Dorpat) की १४ अक्टूबर सन् १९२० की सन्धि के अनुसार रूस ने पेटसामों का जिला फिनलैंड को दे दिया था। इसके फलस्वरूप फिनलैंएड को बर्फ से सुरक्षित पेटसामो फियोर्ड और आर्कटिक सागर का खुला मार्ग मिल गया था।

प्राकृतिक बनावट

फिनलैंड का क्षेत्रफल १,४९,५८८ वर्ग मील है। जिसमें ३५ प्रति शत वन, ११ प्रति शत झीलें, ६.६ प्रति शत खेती करने योग्य भूमि, और ५ प्रति शत घास के मैदान हैं। ६,२४,२९ ००० एकड़ भूमि में बन पाए जाते हैं, जिसमें ४० प्रति शत अर्थात् २,४८,३५,००० एकड़ सरकारी बन हैं। यहाँ की विशाल झील लाडागो है, जो योरोप की सब से बड़ी झील है। इस झील का उत्तरी भाग फिनलैंड में है। देश का धरातल पठारी है, जो समुद्र के सतह से ४०० से ६०० फीट ऊँचा है। कहीं कहीं पर इसकी ऊँचाई २००० फीट तक है। समुद्र तट प्रायः निचला है। यहाँ की नदियाँ प्रायः अनुपयोगी हैं। प्राकृतिक बनावट में यह स्कैन्डिनेविया प्रायद्वीप से समानता रखता है।

पैदावार

फिनलैंड में कृषि द्वारा पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ वहाँ की आवश्यकता से कहीं अधिक न्यून हैं। प्रसिद्धता के क्रम से देश की उपज इस प्रकार है :— प्राकृतिक तथा उगाई हुई घास का स्थान सर्वोच्च है, तत्पश्चात् आलू, जई, राई, जौ और गेहूँ आदि का स्थान आता है।

देश में गमनागमन के साधन

अनेकों झीलें जलमार्ग का कार्य सम्पादन करती हैं अतः झीलें छोटी छोटी नहरों द्वारा एक दूसरे से आपस में मिली हुई हैं ताकि वे एक अभिन्न जलमार्ग बना सकें। इन नहरों द्वारा लगभग ६०,००० जलपोत और १५,००० लट्ठों के बेड़े प्रतिवर्ष आते जाते हैं। नहरों की सम्पूर्ण आय लगभग ५०,००,००० मार्क होती है।

सन् १९३६ ई० के अंत में देश में लगभग २०,१६३ मील लम्बी प्रमुख सड़कें और १८,९३९ मील लम्बी सहायक सड़कें थीं। फिनलैंड के रेलों का इतिहास सन् १८६० ई० से प्रारंभ होता है। सर्व प्रथम हेलसिंकी से हेमलीन तक लगभग ८० मील लम्बी रेलवे १८६२ ई० में बनकर तैयार हुई थी। इसके उपरांत प्रतिवर्ष रेलों का जाल बढ़ता ही गया। यहां तक कि सन् १९३६ ई० के अंत में रेलों का जाल ३५८२ मील लम्बा था, जिसमें से केवल १५८ मील को छोड़ कर समस्त रेलें सरकारी थीं। उनकी दो पटरियों के मध्य की चौड़ाई ४.९ फीट है। गत महायुद्ध के समय से फिनलैंड की रेलें स्वेडन की रेलों से भी जोड़ दी गई हैं। पक्की सड़कों तथा रेलों के अतिरिक्त देश भर में डाक तार और टेलीफोन का भी सरकार की ओर से अच्छा प्रबन्ध है। सारे देश में ३४९३ डाकघर तथा २८११ तार घर हैं। टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार क्रमशः २२२६८ मील तथा १२६४ मील लम्बे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-संख्या

सन् १९३० ई० के अंत में फिनलैन्ड की जन-संख्या ३६,६७,०६७ थी, जिनमें पुरुष १८,०९,०६८ और स्त्रियाँ १८,५७,९९९ है। इनमें से केवल २० प्रति शत नगरों में बसते थे और शेष ८० प्रतिशत देहात में रहते थे। प्रचलित भाषाओं के अनुसार इसका वर्गीकरण इस प्रकार है फिनिश ८८.७ प्रति शत, स्वेडिश ११ प्रति शत, अन्य .३ प्रतिशत, धर्मानुसार जनसंख्या का विभाजन यह है—प्रोटेस्टेन्ट ९७ प्रति शत, यूनानी मतावलम्बी १.७ प्रति शत, रोमन कैथलिक .०२ प्रति शत, अन्य १.२८ प्रति शत। व्यवसाय के अनुसार—कृषि ६० प्रति शत, उद्योग-धंधा १७ प्रतिशत, व्यापार ४ प्रति शत, गमनागमन (Transport) ४ प्रति शत, शासन प्रबन्ध २ प्रति शत उच्च व्यवसाय (Profession) २ प्रति शत, अन्य ११ प्रति शत। सन् १९२६ में जन्म तथा मृत्यु संख्या क्रमशः २१.७ और १३.४ प्रति सहस्र थी। अर्थात् प्रतिवर्ष २९,३४९ व्यक्तियों की वृद्धि देश की जनसंख्या में होती थी।

प्रमुख नगर

फिनलैंड का प्रमुख नगर हेलसिंकी (हेलसिंगफोर्स) है। यह दिल्ली की तरह उसीमा प्रान्त तथा समस्त देश की राजधानी है। यह देश का सुविख्यात जलपोताश्रम भी है। यहां की जनसंख्या २८२५९८ है जो संयुक्त प्रान्त के प्रसिद्ध नगर लखनऊ की जनसंख्या के लगभग बराबर है। दूसरा नगर टरकू है, जो टरकू-पोरी प्रान्त की राजधानी तथा विश्वविद्यालय का केन्द्र है। इसकी आबादी ६१,२०८ है।

उद्योग-धन्धा व व्यापार

सन् १९३६ ई० में फिनलैन्ड में ४०७८ बड़े कारखाने थे। इनमें १८४४११ श्रमजीवी काम करके अपनी जीविका कमाते थे। प्रति वर्ष ये कारखाने १६,१२२,०००,००० मार्क मूल्य का माल तैयार करते हैं। सन् १९१७ के पूर्व देश का अधिक व्यापार रूस से होता था। सम्बन्ध विच्छेद के साथ साथ विदेशी व्यापार ने भी पलटा खाया और अब उसके माल की खपत रूस में बहुत कम होती है। वर्तमान समय में देश का व्यापार अधिक मात्रा में इंगलैंड से होता है। फिनलैंड का विदेशी व्यापार उसके व्यापारिक जलपोतों द्वारा होता है। पहली जनवरी सन् १९३७ को इसके पास ३६१३ व्यापारी जहाज थे, जिनका वज़न ५२५,५९६ टन था।

शिक्षा

फिनलैंड में शिक्षा सस्ती और सर्वाङ्गीण है। जर्मनी के आदर्श पर यहां की शिक्षा का ढांचा तैयार किया गया है। देश में त्रिश्वविद्यालय हैं। इनमें प्रमुख टरकू नगर में सन् १६४० ई० में स्थापित किया गया था। लगभग २०० वर्षों के उपरान्त सन् १८२७ ई० में वह विश्वविद्यालय टरकू से हटाकर हेलसिंकी में कर दिया गया। इस विश्वविद्यालय में लड़कियों की संख्या ८३८ है। पुनः सन् १९१९ ई० में टरकू में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई, और तीन वर्ष बाद यह राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में परिणत कर दिया गया। इसके अतिरिक्त हेलसिंकी में एक टेकनिकल हाई स्कूल तथा दो कामर्शियल स्कूल स्थापित कर दिये हैं। सारे देश में १८ माध्यमिक स्कूल हैं, जिनमें शिक्षकों तथा छात्रों की संख्या क्रमशः २९२६ और ४४६४० है। प्रारंभिक शिक्षा में अध्यापकों की संख्या ११,५९७ और विद्यार्थियों की संख्या ४,२६,१६९ है। सन १९२१ ई० में से देश व्यापी अनिवार्य शिक्षा की योजना कार्यान्वित कर दी गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन के प्रसिद्ध मछली मारने वाले केन्द्र

हम्बेर नदी पर हल और ग्रिम्सबी दो प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित हैं। हल का बन्दरगाह यार्कशायर और ग्रिम्सबी का बन्दरगाह लिन्कोलनशायर तट पर स्थित है। ये दोनों बन्दरगाह संसार के सब से बड़े मछली मारने के बन्दरगाह हैं। हल इंगलैन्ड के प्रसिद्ध और प्रधान बन्दरगाहों में से है।

उत्तरी सागर, स्वेत सागर, ग्रीनलैण्ड, आइसलैंड और दूसरे समुद्र के जहाज हम्बर नदी में आया जाया करते हैं। हल और ग्रिम्सबी दोनों नगरों में बड़ी भिन्नता पाई जाती है। हल का सरकारी नाम गिन्सटन-आयल-हल है। यह नगर बड़ा प्राचीन है। यहां पर एक लार्ड मेअर होता है। इस नगर की जन-संख्या ३,१४,००० है। इस नगर की कुछ गलियों के नाम बड़े प्राचीन हैं, उनमें से सब अधिक प्रधान गली लैंड आफ ग्रीन जिंजर है। महाराज एडवर्ड प्रथम ने हल की स्थापना की थी। यह नगर हल नदी और हम्बर नदी के संगम पर बसा है और समुद्र तट से २० मील की दूरी पर है। हल नगर का लार्ड मेअर की पदवी हम्बर के ऐडमिरल की है।

हल नगर के मध्यवर्ती भाग में सुन्दर महल बने हुये हैं। यहां के घाटों पर दुनियां के भिन्न-भिन्न भागों के जहाज दिखाई पड़ते हैं। सवारी तथा व्यापार वाले जहाज एक ही घाटों पर दिखाई पड़ते हैं, उनमें कुछ न कुछ सम्बन्ध भी रहता है किन्तु मछली के शिकार करने वाला स्थान कुछ अलग है। जो यात्री इस भाग को नहीं देखता वह हल नगर की प्रधानता को नहीं समझ सकता।

ग्रिम्सबी नगर को उसका मित्र हितैषी भी सुन्दर नहीं कह सकता। सचमुच ही यह नगर बड़ा भयानक है। इसके अन्दर कुछ भी प्राकृतिक दृश्य नहीं हैं। किन्तु परिश्रम और साहस की बदौलत आज इस नगर में भी घाट बने हैं और वहाँ से खासी आमदनी होती है साथ ही साथ मछलियाँ बहुत पकड़ी जाती है जो भोजन सामग्री का काम देती हैं।

ग्रिम्सबी नगर की जन-संख्या ९२,५०० है। लिंकोलनशायर तट पर यह सब से बड़ा मछली मारने का बन्दरगाह है। इन दोनों नगरों में मछली के शिकार और व्यापार के लिये सदैव होड़ लगी रहती है।

हल नगर में दस घाट (डाक) हैं। ये घाट लन्दन और नार्थ ईस्टर्न रेलवे कम्पनी के अधिकार में हैं। ये कम्पनियाँ इन घाटों को बड़ी सुन्दर तथा आधुनिक दशा में रखती हैं। इन घाटों के पानी का क्षेत्रफल २०० एकड़ है। सामान रखने के लिये ६०० एकड़ खुला स्थान अलग है। यहाँ पर लगभग १२ मील बाँध तथा ७ मील से अधिक नदी का तट है। ऊन, अनाज, बीज और दूसरे सामानों के रखने के लिये जगह जगह पर स्थान बने हुये हैं। सभी घाट तथा बाँध रेलों द्वारा एक दूसरे से मिले हुये हैं।

हल नगर संसार प्रसिद्ध लङ्काशायर, यार्कशायर और मिडलैंड आदि प्रान्तों से मिला हुआ है। लगभग १,२०,००,००० आदमी मछली मारने और दूसरे रोजगार करने में लगे हैं। हल नगर इन लोगों को अपने आदमी बतलाता है। यदि हम कोयला, सूती कपड़ा, लोहा, फौलाद, मोमजामा, रबर, रसाइन, खाद और दूसरे तयार माल के व्यापार की ओर ध्यान दें तो हमें पता चलेगा कि सचमुच हल नगर की ओर से इतने लोग काम कर रहे हैं। ये सभी सामान पश्चिमी तथा दक्षिणी पश्चिमी शायर, नटिंग्यमशायर और डर्बीशायर के बन्दरगाहों से बाहर भेजे जाते हैं।

ऊन, लकड़ी, फल, जमाई हुई मांस, गल्ला, बीज मिट्टी का तेल, धात, मोटर स्पिरिट और प्रत्येक भाँति की शराब आदि वस्तुएँ बाहर से अन्दर आती हैं।

हल बन्दरगाह का व्यापार कम्पनियों और व्यापारियों की सहायता से बढ़ा है। १९१४ की लड़ाई के पहले यहां से लगभग १०० बड़े बड़े बन्दरगाहों से व्यापार होता था। यह उत्तरी इंगलैंड का व्यापारिक केन्द्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े और छोटे जहाजी बेड़े, आस्ट्रेलिया, योरुप, न्यूज़ीलैंड, चीन, जापान, भारतवर्ष, अफ्रीका, उत्तरी अमरीका और कैनाडा आदि देशों से हल को मिलाये हुये हैं। संसार में जहाँ कहीं भी जहाजी व्यापार होता होगा वहाँ हल के जहाज अवश्य दिखाई देंगे।

हल का बन्दरगाह प्राचीन है। यहाँ पर विलसन नामक कम्पनी थी, जो किसी समय दुनिया की सबसे बड़ी व्यापारिक कम्पनी थी। इस कम्पनी के जहाज अमरीका से पशु लाद कर लाते थे, जो लन्दन के कसाई घरों में काटे जाते थे। प्राचीन समय में ह्वेल मछली के व्यापार के लिये भी यह बन्दरगाह बहुत प्रसिद्ध था। यहाँ के निवासी ह्वेल मछली के शिकार करने के बड़े शौकीन थे। वे दूर दूर इसके शिकार के लिये जाते थे। लगभग ३०० साल हुये कि आठ आदमी ग्रीनलैंड ह्वेल के शिकार को गये। जब वे अपने जहाज से उतर कर हिरन आदि के शिकार को गये तो तूफान आ गया और उनका जहाज बह गया। वे नौ महीने तक वहाँ पड़े रहे और किसी न किसी प्रकार अपने प्राणों की रक्षा की। अन्त में हल के कुछ लोग फिर ग्रीनलैंड गये और उन्हें वापस ले आये।

आजकल भी मछली का व्यापार बड़े बड़े जहाजों द्वारा होता है। लोग छोटी छोटी नावों पर शिकार करते हैं और फिर बड़े जहाजों द्वारा वह मछली इंगलैंड लाई जाती है।

६०० साल पहले जब इंगलैंड और फ्रांस से सौ साला युद्ध हुआ था तो हल नगर ने अपने यहाँ से युद्ध के लिये १६ जहाज और ४६१ मल्लाह भेजे थे। तब से आजतक हल का बन्दरगाह उन्नति कर रहा है। यहाँ के घाट बड़े सुन्दर हैं और उनसे बढ़कर दुनिया में और कहीं के घाट नहीं हैं।

प्राचीन घाट नगर के मध्यवर्ती भाग में स्थित हैं और टाउन डाक्स के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके आगे चलकर किंग जार्ज का डाक है। पूर्वी तट के बन्दरगाहों में इस घाट में सबसे अधिक पानी का क्षेत्रफल है। पश्चिमी किनारे पर सेन्ट ऐन्ड्रूज का डाक है। इसके पानी का क्षेत्रफल २७ एकड़ है। यह घाट केवल मछली के व्यापार के लिये है। यह घाट हल नगर की तिहाई जनसंख्या को भोजन देता है। इस घाट का उत्तरी भाग मछली उतारने और बेचने के लिये है।

अलबर्ट और विलियम राइट डाक में दोतल्ले मकान फल रखने के लिये बने हैं। यहाँ पर रेलवे डिब्बों द्वारा सामान जाता और आता है। यहाँ पर एक बड़ा ठंडा गोदाम फल रखने के लिये है। इसके सिवा अनाज और दूसरे सामान रखने के लिये भी अलग अलग स्थान बने हुये हैं।

इस डाक के समीप नदी का बांध है, जिसकी लम्बाई २५,००० फुट और चौड़ाई ८५ से १५० फुट तक है। यहाँ मुसाफिरों, फलों और दूसरे सामानों के उतारने और लादने के लिये अच्छा प्रबन्ध है। यहाँ के बाँध ऐसे हैं कि हर दशा में जहाज उन्हें प्रयोग कर सकते हैं। हल और ग्रिम्सबी के बीच जहाज मुसाफिरों को ले जाते और ले आते हैं।

विक्टोरिया डाक १८५० ई० में बना था। इसके पानी का क्षेत्रफल २४ एकड़ है। इस डाक द्वारा कोयले और लकड़ी का व्यापार होता है। हल और ग्रिम्सबी के बन्दरगाह लकड़ी के व्यापार के लिये प्रसिद्ध हैं।

अलिक्ज़न्डरिया डाक का क्षेत्रफल ४६॥ एकड़ है। इसके घाटों की लम्बाई ६१६० फुट है। इस घाट पर दुनिया के बड़े बड़े जहाज ठहरा करते हैं।

किंग जार्ज और अलिक्ज़न्डरिया डाक में सारा काम बिजली द्वारा होता है। हम्बर नदी द्वारा तयार किया हुआ सामान इन घाटों को आता है। मिट्टी का तेल उतारने के लिये साल्ट एन्ड में नदी पर एल० एन० ई० आर० कम्पनी ने दो गहरे घाट बनाये हैं। वहाँ पर तेल रखने के लिये बहुत सी टंकियाँ बनी हुई हैं। इन टंकियों में जहाज से सीधे ही तेल पम्प किया जा सकता है। इन पम्पों की बनावट और काम देखने योग्य हैं।

हल का बन्दरगाह बनस्पति के तेल के व्यवसाय का प्रधान केन्द्र है। यहाँ शीत घर हैं जिनमें ३,००,००० कुप्पे रक्खे जा सकते हैं।

ग्रिम्सबी नगर की अपनी दुनिया ही अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113726

है। वहाँ के लोग बड़े परिश्रमी और मजबूत हैं। यह उनके कठिन परिश्रम और साहस का ही फल है जो ग्रिम्सबी का बड़ा बन्दरगाह बन गया है। १८५२ ई० में ग्रिम्सबी का राएल डाक बना। इसके दो साल बाद फ़िश डाक नम्बर एक बना। सन् १८७८ ई० में फ़िश डाक नम्बर दो बनाया गया। जैसे जैसे मछली के व्यापार में वृद्धि होती गई वैसे वैसे इन डाकों की भी वृद्धि होती गई। नया फिश डाक १९३० में बना है। ग्रिम्सबी में अलिक्जन्डरिया और यूनियन डाक भी हैं।

धीरे धीरे आज यह बन्दरगाह हल को छोड़ कर दुनिया का सब से बड़ा मछली के व्यापार का बन्दरगाह है। यहां के डाक लगभग १४० एकड़ पानी में फैले हैं। बांधों के ओर से घाट ४५० एकड़ भूमि घेरे हुये हैं। यहां के बांधों की लम्बाई २७,००० फुट है। यहां के घाटों के सामान लादने, उतारने और ढोने, तौलने आदि का सारा काम बिजली द्वारा होता है।

इस बन्दरगाह में हजारों मन मछली हर सप्ताह में आती हैं और प्रति दिन लन्दन और उत्तर-पूर्वी रेलवे लाइनों द्वारा लगभग १५,६०० मन मछली देश के भिन्न-भिन्न भागों के खर्च के लिये भेज दी जाती हैं। इन रेलवे लाइनों ने मछली के व्यापार के लिये अपनी एक्सप्रेस गाड़ियां अलग बना रक्खी हैं।

ये मछली वाली गाड़ियां सवारी गाड़ियों की भांति नियत समय पर छूटा करती हैं और लन्दन तथा और दूसरे नगरों में प्रति दिन नियत समय पर मछली पहुँचाती हैं। ग्रिम्सबी इँगलैन्ड का सब से बड़ा उपयोगी मछली पहुँचाने वाला केन्द्र है।

नये मछली घाट बनाने में लगभग १७,००,००० पौण्ड (२,५५,००,००० रु०) खर्च हुये हैं। इसके पानी का फैलाव ३५ एकड़ है। यहां मछली लाने और ले जाने वाले जहाजों की मरम्मत करने का भी स्थान है। यहां जहाजों के कोयला पानी के लिये भी प्रबन्ध है। मरम्मत वाले स्थान पर एक साथ १० जहाज जा सकते हैं। यहाँ के घाटों का कुल क्षेत्रफल १७५ एकड़ है।

मछली के व्यापार के सिवा यहाँ के बन्दरगाह द्वारा और दूसरे व्यापार भी होते हैं। यहाँ से लोहा लकड़ी और कोयला बाहर को भेजा जाता है।

रायल डाक के पूर्व की ओर बाहर से आया हुआ सामान उतारा और रक्खा जाता है। पश्चिम की ओर एक सुन्दर शानदार शेड १६०,२०० वर्ग फुट का है। जहाँ पर बाहर भेजने वाला सामान रक्खा जाता है। यह शेड इङ्गलैंड के प्रसिद्ध शेडों में से है। इसी के समीप ऊन, रुई, अनाज आदि के रखने के लिये गोदाम हैं।

हल और ग्रिम्सबी के बन्दरगाहों ने धीरे धीरे अच्छी उन्नति की है। इनकी उन्नति देख कर हम कह सकते हैं कि लोग कितनी शीघ्रता के साथ कठिन से कठिन स्थान पर अपने परिश्रम की बदौलत उन्नति कर सकता है।

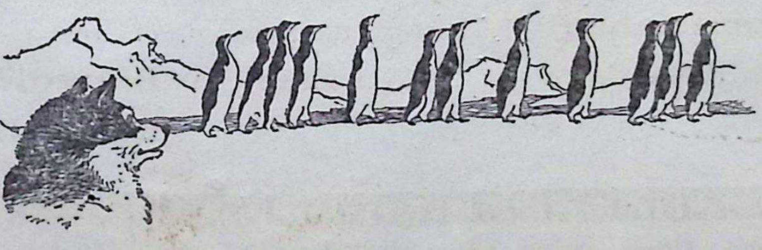

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schoo : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, A.B.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jamuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अप्रैल १९४०

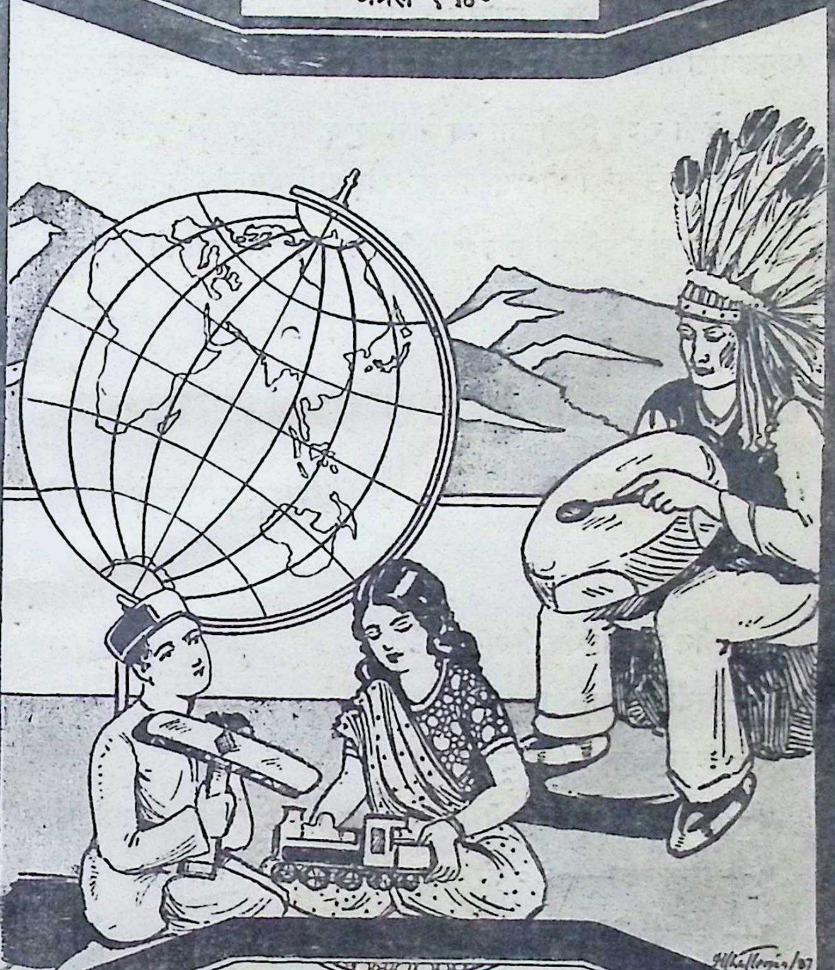

सम्पादकः रामनारायण मिश्र बी०ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्य

"भूगोल" के सोलहवें वर्ष का विशेषांक

"भूगोल" के आकार के २४४ पृष्ठ, कई नक़शे और लगभग १०० चित्र

देशी राज्य में भारतवर्ष के प्रधान राज्यों का विस्तृत वर्णन है। भारतवर्ष के छोटे बड़े सभी देशी राज्यों का समावेश है। अन्त के लगभग ४४ पृष्ठों में देशी राज्यों की अकारादि क्रमानुसार अनुक्रमणिका है। इस अनुक्रमणिका में सभी राज्यों का संक्षिप्त परिचय है। सभी बड़े राजाओं के चित्र और प्रधान राज्यों के नक़शे हैं।

देशी राज्य हिन्दी साहित्य में सचमुच अनोखा है। मूल्य केवल २) रु०। ३) रु० भेज कर इस वर्ष के ग्राहक बनने वालों को यह विशाल और अद्वितीय अंक उनके चन्दे ही में मिलेगा।

यह अंक परिमित संख्या में ही छपा है। अतः ग्राहकों को मूल्य भेजने में शीघ्रता करनी चाहिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—चीन की आर्थिक स्थिति	१
२—सियाटिल वाशिंगटन	५
३—ब्लिट्ज़ क्रीग (विद्युत् युद्ध)...	८
४—रूस जर्मनी की कितनी सहायता कर सकता है और कितनी करेगा ?	१३
५— जिब्राल्टर—(ले० श्री रामनारायण मिश्र, विशारद)	१९
६—एटकामा रेगिस्तान	२[illegible]
७—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जातियाँ	२[illegible]
८—डेनमार्क—(ले० रामाधीन अग्निहोत्री, बी० ए०)	२[illegible]
९—वस्तु मात्र पर भौगोलिक प्रभाव—(ले० गोविन्दशङ्कर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मि० स्कूल, जावद)	२[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] चैत्र सं० १९९७, अप्रैल १९४० [अङ्क १२

चीन की आर्थिक स्थिति

मंचू साम्राज्य का अन्त १९११ ई० में हुआ उसके बाद कुछ वर्ष तक चीन के केन्द्रीय शासन की उन्नति नहीं हो सकी इसका मुख्य कारण यह था कि चीन की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। पेकिंग की सरकार अपनी स्थिति नहीं सुधार सकी वह कमजोर ही बनी रही। और इसी कारण वह सरकारें प्रभुत्वशाली न हो सकीं। १९२७ ई० में राष्ट्रीय सरकार नानकिंग में स्थापित की गई। इस सरकार ने अपनी आर्थिक दशा को बड़ी उन्नति दी। राष्ट्रीय आन्दोलन तथा राष्ट्रीय नेताओं के प्रयत्न से इस सरकार ने अपनी पूर्व स्थिति को फिर से प्राप्त किया। भूत काल की भांति भविष्य में भी हम देखेंगे कि आर्थिक स्थिति ही चीन को उन्नति अथवा अवनति की ओर ले जायगी।

१—उन्नति का प्रथम काल १९२७—३७

चुङ्गी की स्वतंत्रता हो जाने के कारण चीन की आय १९१८-२० के भीतर तिगुनी हो गई। नमक के कर में सुधार होने से नमक कर में भी वृद्धि हुई। तम्बाकू, सूती कपड़ा, आटा, शराब तथा और दूसरे खनिज पदार्थों पर कर लगाने के कारण आय बढ़ गई और इस प्रकार चीन सरकार को चुङ्गी से १९०९ ई० में २७,६७,५०,०००) की और १९३१ में ४६,३५,८०,०००) की आय हुई। चीन की नई सरकार को अपनी भीतरी स्थिति को सुधारने तथा पब्लिक को आर्थिक सहायता देने के लिये भी धन की अत्यन्त आवश्यकता थी। इसलिये बहुत से आधुनिक ढंग के बैंक खोले गये जिनमें से शंघाई का बैंक सबसे बढ़ चढ़ कर है। जो दुनिया के प्रसिद्ध बैंकीय केन्द्रों में गिना जाता है। यद्यपि १९२७ से १९३७ तक चीन के आय व्यय का ब्यौरा समान नहीं हुआ था और प्रत्येक साल कुछ न कुछ घाटा होता था तो भी किसी न किसी तरह काम चल जाता था। १९३७ ई० में भी आय-व्यय का बजट समान नहीं हो पाया था कि वर्तमान युद्ध छिड़ गया।

चीन की स्थिति संतोषजनक बनाने के लिये सिक्के के सुधार करने की बहुत बड़ी आवश्यकता थी, केमेरर कमीशन के कथनानुसार चीन के सिक्के दुनिया भर के सभी देशों से खराब थे। इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदी के डालर और "डालर बैङ्क नोटों" का प्रयोग अधिक बढ़ाने का प्रयत्न किया गया। १९३३ ई० में टेल नामक सिक्के के रोक देने से डालर सारे चीन में चालू हो गया।

१९३५ ई० में चीन सरकार विदेशी सिक्कों के परिवर्तन को ठीक दशा में करने के लिये चीनी डालर को बढ़ाया जो संयुक्त राष्ट्र के २९॥ सेन्ट और १४$\frac{3}{8}$ पेन्स स्टर्लिंग के बराबर है। यह परिवर्तन चीन सरकार के बैङ्कों द्वारा होता है। चांदी को राष्ट्रीयता देने के किसी ऐसे सिक्के को चलाना था जो सब को माननीय हो। साथ ही साथ चीन के केन्द्रीय बैङ्क को केन्द्रीय रिजर्व बैङ्क में भी बदलना था। यह सुधार संयुक्त राष्ट्र अमरीका तथा अँग्रेज सरकार की सहायता द्वारा किया गया। अमरीकन खजाने ने चीन की काफी चाँदी खरीद लिया और अँग्रेज सरकार ने चीन की ब्रिटिश प्रजा को मनाही कर दी कि वे चांदी के सिक्कों का प्रयोग बन्द कर दें और उसमें अपनी देनी न चुकावें। इसी बीच निकिल और तांबे के दशमलव सिक्कों का प्रचार किया गया।

इस प्रकार चीन ने सिक्कों को जापान तथा पश्चिमी देशों के समान परिवर्तित किया। चीन ने दूसरे राष्ट्रों को चांदी देकर उनसे सोना लिया और अपने रिजर्व बैङ्क की पूर्ति की। बहुत से पूर्वी जिलों से चांदी चीन सरकार को छीन लेनी पड़ी।

चीन देश की आर्थिक दशा को सुधारने के लिये विदेशी धन की आवश्यकता थी। इस प्रकार का धन पाना कठिन था जब तक कि पेकिंग का पुराना कर्ज अदा न हो जाता। चीन की राष्ट्रीय सरकार ने इस मामले को अपने हाथों में लिया और १९३७ ई० के जुलाई महीने तक अधिकांश कर्ज का चुकता कर दिया। इस कार्य के होने के कारण विदेशी धन का अभाव न रहा और अधिक से अधिक धन उसे कम से कम सूद पर मिलने लगा। जिसकी चीन को बड़ी आवश्यकता थी।

चीन की सरकार के सुन्दर राज्य प्रबन्ध होने के कारण वहां की दूसरी पार्टियों को काफी संतोष हुआ और किसी ने सरकार को उलट देने का प्रयत्न नहीं किया। जापान ने जब चीन की ऐसी बढ़ती दशा देखी तो १९३७ ई० के ग्रीष्म काल में उसने चीन पर आक्रमण कर दिया।

२—युद्ध के आरम्भ काल के पश्चात् से चीन के सिक्कों की दशा

जब ७ जुलाई सन् १९३६ ई० में उत्तरी चीन में युद्ध छिड़ा तो उस समय चीन के केन्द्रीय बैंक की स्थिति बड़ी अच्छी थी। चीनी डालर की दशा उस समय बड़ी संतोषजनक थी। ७ जुलाई के घटना के कारण चीन के बैंक का रुपया लोग निकालने लगे। यह ५ सप्ताह तक जारी रहा। १३ अगस्त को शंघाई में युद्ध छिड़ा उस समय धन की अधिक माँग होने के कारण बैंक में छुट्टी दे दी गई। बैंक से रुपया निकालने की मनाही सरकार को करनी पड़ी। बैंकों को आज्ञा दी गई कि वह रुपये का परिवर्तन ही करें और नकद रुपया न दें। ये कानून विदेशी बैंकों पर लागू न हो सकते थे। इसलिये उनके साथ समझौता किया गया कि वे कानूनी व्यापार को ही बेचने का प्रयत्न करेंगे और केवल अपने निजी खर्च के लिये ही रुपया निकालेंगे और चीनी सौदागरों के नये हिसाब न खोलेंगे, न पुराने जमा किये हुये रुपये में ही वृद्धि करेंगे। इस प्रकार प्रबन्ध करने के कारण १६ अगस्त सोमवार को बाजार फिर से उसी प्रकार खुल गये। रुपये का बैंक से निकालना भी बन्द हो गया।

शंघाई के युद्ध होने के कारण व्यापार बन्द हो गया था लेकिन जो निर्यात हो चुका था परिवर्तित बाजार में बिक चुके थे और बहुत सा आयात का माल आ चुका था उसके बदले दूसरा माल खरीदने को शेष था।

ऐसी बुरी स्थिति में जापान ने उत्तरी चीन में एक फेडरल रिजर्व बैङ्क स्थापित किया। यह बैङ्क मार्च में खुलने को था और इससे उत्तरी चीन के लिये नोट निकाले जाने वाले थे। चीनी सरकार ने इसके उत्तर में यह तय किया कि वह जनरल एक्सचेन्ज मार्केट को जो सहायता देती है उसे बन्द कर देगी और साप्ताहिक बटवारा विदेशी परिवर्तन के लिये किया करेगी। इस प्रकार पहले तो कुछ समय तक बैङ्कों को रुपया दिया गया किन्तु इसके बाद निजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जियों का निरीक्षण करके कार्य के अनुसार रुपया दिया जाने लगा।

विदेशी बस्ती होने और जापानी युद्ध के कारण चीन की सरकार दूसरे राष्ट्रों की भांति अपनी आर्थिक नीति पूरे अधिकार के साथ नहीं चला सकी। उस समय जो बाजार भाव था वह पहले वाले भाव से ६० प्रतिशत कम हो गया था।

जैसे ही यह बात मालूम हुई कि अब बाजार में रुकावट डालने का समय आ गया है वैसे ही बाजार भाव को धीरे धीरे सुधारने का प्रयत्न किया जाने लगा। १९३९ ई० के बसन्त ऋतु में १५०,०००,००० रु० का एक सीनो-ब्रिटिश स्टैबीलाइजेशन फण्ड खोला गया। इस फण्ड में चीनी तथा अँग्रेज बैङ्कों ने बराबर बराबर रुपया दिया है।

आरम्भ काल से ही इस फण्ड ने बुरी दशाओं का सामना किया। अप्रैल सन् १९३९ ई० में जापान ने शंघाई में "हुआ हसिंग कामर्शल बैंक" खोला, जिसके कारण स्थिति डांवाडोल हो गई, उसके बाद टैनसीन का ब्लाकेड हुआ। जापान ने चीनी सिक्कों को भी रोकने और चीन के रिजर्व चांदी के ले लेने की धमकी दी। इस कारण इक्सचैन्ज में गड़बड़ी पैदा हो गई और लोग अपना रुपया बैङ्कों से निकालने लगे। इसलिये चीनी सरकार ने फिर रुपया बैङ्कों से निकालने की मनाही कर दी। जुलाई मास में स्थिति ऐसी बिगड़ गई कि चीन सरकार ने एक्सचेन्ज के भाव को घटाने की आज्ञा दे दी।

अगस्त के महीने तक में चीन के सिक्कों की दशा खूब सुधर गई। योरुप में युद्ध छिड़ जाने के कारण चीनी फण्ड योरुप से वापस आने लगा और परिवर्तन का भाव भी बहुत घट गया था। इसलिये चीनी डालर का भूल्य बढ़ गया और वह ९ सेन्ट (अमरीकन) तथा ५½ पेन्स स्टार्लिंग के बराबर हो गया।

उत्तरी चीन में जहां जापानियों का अधिकार है वहां चीन के सिक्के नहीं चलते, उनके स्थान पर जापानी बैंक के नोट चलते हैं। इन नोटों का मूल्य कभी चीनी सिक्कों से बढ़ जाता है और कभी उनसे कम हो जाता है। टिन्टसीन में चीनी सिक्के चलते हैं। उत्तर में भी जहां पर जापानी अधिकार नहीं है वहाँ चीनी सिक्के चलते हैं। वहाँ पर जापानी नोटों को चलाने की मनाही है। मध्यवर्ती तथा दक्षिणी चीन में चीनी सिक्के ही चलते हैं किन्तु वहाँ पर कुछ सिक्के तथा नोट ऐसे चलते हैं जिनको जापानी सेना ने जबरदस्ती चलाया है। शंघाई प्रान्त के हाँगक्यू जिले में ३० लाख नोट (६ पेन्स वाले) जापान के चलते हैं।

एक्सचेन्ज का भाव जिस हिसाब से घटा है, उस हिसाब से चीन के सामान का मूल्य नहीं बढ़ा है। तटीय स्थानों पर व्यापार में जापानी रोक होने के कारण तथा कुछ भीतरी प्रान्तों में सरकारी माँग अधिक होने के कारण मूल्य अवश्य ही कुछ सामानों का बढ़ गया है। यद्यपि ठीक ठीक हिसाब नहीं लगाया जा सकता तो भी यह कहा जाता है कि चीन में लगभग ६० प्रतिशत मूल्य बढ़ गया है। भाग्यवश चीन में इधर कई वर्षों से फसल बहुत अच्छी हुई है। इसलिये वहां के निवासियों को जापानी आक्रमण कम कष्ट दे रहा है।

जापानी रोक होते हुये भी चीन में फ्री इक्सचेन्ज होने के कारण व्यापार भली भाँति चल रहा है। जिसके कारण उसका और विदेश वालों का भी लाभ हो रहा है। जापानी लोग जहाँ अधिकार जमाए हैं वहाँ पर जो सिक्कों के सम्बन्ध में उनकी नीति है, उससे उन्हीं के व्यापार की हानि है।

३—प्रजा सम्बन्धी कोष

जापानी आक्रमण होने के कारण चीन के कोष को बड़ी हानि पहुँची है। जापानियों ने जैसे जैसे एक के बाद दूसरे बन्दरगाह पर अपना अधिकार जमाया वैसे वैसे चीनी सरकार की चुंगी सम्बन्धी कर की आय कम होती गई। नमक की उपज वाले प्रान्तों पर आक्रमण होने के कारण नमक से मिलने वाले कर की हानि हो गई है। चूंकि चीन की अधिकांश आय समुद्री तट से थी इसलिये उसे बहुत बड़ा धक्का पहुँचा है।

चीनी सरकार इस हानि को पूरा करने में असमर्थ हो गई है, वह नये टैक्स नहीं लगा सकती इसलिये कि बहुत से चीनी प्रसिद्ध नगर जापानियों के अधिकार में चले गये हैं, और साथ ही साथ चीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने प्रत्यक्ष टैक्स लगाने की नीति में उन्नति नहीं की है, अप्रत्यक्ष टैक्स ही चीन की मुख्य आय के कारण हैं। अभी हाल ही में चीन ने आय—कर और पैतृक धन कर लगाये हैं यद्यपि इन में संतोषजनक वृद्धि युद्ध के कारण की गई है तो भी इनसे प्राप्त की हुई आय से चीन की वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो सकती।

इस प्रकार चीनी सरकार को बहुत धन कर्ज लेना पड़ा है। युद्ध काल के आरम्भ में चीनी लिबरटी लोन ३७,५०,००,००० रुपया लिया गया था, नवम्बर सन् १९३९ ई० तक २,१०,००,००,००० रुपया कर्ज लेने का चीनी सरकार ने निश्चय किया था। चीनी लोग जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका, फिलीपाइन्स, स्ट्रेट्स सेटिलमिन्ट्स आदि में रहते हैं, उन्होंने काफी रूपया दान दिया है और कर्ज भी उन्होंने अपनी अवस्था अनुसार सरकार को दिया है।

बैंकों की सहायता से चीन के कर्ज लेने वाली समस्या की पूर्ति भली भांति हो गई है। आर्थिक नीति का कथन है कि युद्ध काल में कर्ज न लेकर अधिकतर राज्य के आय से ही काम चलाना चाहिये किन्तु यदि आवश्यकता पड़ जाय और आय न हो सके तो फिर क्या करना चाहिये? इसलिये कर्ज पर ही निर्भर किया जा सकता है। कर्ज लेने के कारण चीनी बैंकों के नोट अधिक संख्या में चलने लगे हैं और उनका मूल्य भी दुनिया की दृष्टि में बढ़ गया है। चीनी सरकार के बैंकों द्वारा जो नोट निकाले जाते थे उनकी संख्या १,३२,९०,००,००० रु० से बढ़कर २,१५,००,००,००० रु० हो गई है। यह नोट चांदी तथा सोने के सिक्कों के स्थान पर भी प्रयोग किये जाते हैं।

४—क़र्ज़

ऐसी दुनिया में जहां कि अन्तर्राष्ट्रीय कर्ज पर असंतोष प्रकट किया जा रहा है, वहां चीन की राष्ट्रीय सरकार ने विदेशी कर्ज की ओर संतोषजनक इच्छा प्रकट की है। उसने प्राचीन सरकार के लिये हुए कर्ज को चुकाने का निश्चय किया है। चीनी सरकार ने लगभग २०,००,००,००० रुपये के दे देने का १९३७ ई० तक प्रबन्ध किया था। यदि चीन की वही आर्थिक नीति चली जाती तो कदाचित् पुराना सारा कर्ज अब तक चुका दिया जाता।

चीनी सरकार चुंगी की आय तटस्थ बैंकों में जमा करती थी जिससे वह कर्ज को चुका सके। जब जापानियों ने बन्दरगाहों पर आक्रमण किया और उन्हें अपने अधिकार में किया तो चुंगी का महसूल जापानी निरीक्षण में याकोहामा के जापानी बैंक में जमा किया जाने लगा। टैन्सीन तथा शंघाई आदि बन्दरगाह भी जब जापानियों के अधिकार में गये तो उनकी भी वही दशा हो गई। इस प्रकार कर्ज चुकाया नहीं जा सका। चीनी सरकार ने यह तै करने का निश्चय किया कि जिनका कर्ज चाहिये वे ही चुंगी का सूल किया हुआ रुपया ले लिया करें किन्तु जापानी आक्रमण होने के कारण यह बात तै न हो पाई, सभी लोग जापानी झगड़े से डरते थे।

अँग्रेज़ सरकार ने जो जापान सरकार से १९३८ ई० में चुङ्गी सम्बन्धी समझौता करने का प्रयत्न किया था उसका ध्येय यही था कि चीनी सरकार अपनी चुङ्गी की आय कर्ज की अदायगी के लिये इकट्ठा कर सके। किन्तु जापानी सरकार का कहना था कि सारा चुङ्गी का महसूल जापान के बैंकों में जमा होगा और उसमें से बाक्सर इन्डेम्निटी के कर्ज का रुपया पहले चुका लिया जायेगा। और माहवारी जो रुपया चीनी कर्ज के लिये जमा होगा उससे विदेशी कर्ज चुकाया जावेगा, चीन का कर्ज उससे न चुकाया जावेगा। चीनी सरकार की रजामन्दी आवश्यक थी, किन्तु वह इन बातों को मानने पर तयार नहीं हुई तो भी चीनी सरकार ने कर्ज का रुपया चुकाने का प्रयत्न किया। जनवरी सन् १९३९ तक चीनी केन्द्रीय बैंक द्वारा १२,९१,५०,००० रुपया दिया गया। इसके साथ साथ कर्ज सम्बन्धी जो कुछ भी एक्सचेञ्ज करना पड़ा उसके लिये चीनी सरकार ने रुपया दिया। चीनी सरकार पुराने कर्ज को चुकाने के लिये अब चीन के केन्द्रीय बैंक में रूपया जमा कर रही है। यह चीन के लिये युद्ध काल में एक बहुत बड़ी बात है, इसकी प्रशंसा कर्ज देने वाले देश कर रहे हैं और वे चीन के इस कार्य को कभी भूल नहीं सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—भविष्य

लगभग १० साल की तीव्र उन्नति होने के पश्चात जापानी आक्रमण चीन पर हुआ है। उनका यह कहना कि वे चीन की बिगड़ी दशा को सुधारने के लिये ही आक्रमण किया है बिलकुल गलत है। उनका यह नारा कि "पूर्वी एशिया में नया युग" बिलकुल गलत हैं। जापान स्वयम् अपने लाभ के लिये चीन पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है और पश्चिमी सभ्यता तथा प्रभाव को वह चीन से निकालना चाहता है।

लगभग ढाई साल से युद्ध चल रहा है जिसके कारण जापान तथा चीन दोनों की स्थिति बिगड़ रही है। जितना ही अधिक समय चीन को मिल रहा है उतना ही अधिक लाभ भी उसे है। चीन की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है। उत्तरी चोन में बढ़ियाल से हानि हुई है। जापानी आक्रमण द्वारा जो हानि उसे हुई है उसका अनुमान करना कठिन है चीन के आय व्यय का ब्योरा ठीक नहीं हो रहा है तो भी अचम्भे की बात है कि चीन किस प्रकार अपना कार्य चला रहा है। इसका कारण उसकी वीरता और उसकी उपज है। उसके धन का ठीक ठीक अनुमान करना भी बहुत कठिन है।

चीन को उसके भिन्न राष्ट्रों से काफी सहायता मिली है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १,८६,५०,००० रु० और इंगलैण्ड ने ३६,५०,०० रुपया १९३९ ई० में दिया है। रूस ने भी अपने सामान खरीदने के लिये चोन को काफी रुपया दिया है।

जापान अब चीन के युद्ध को अन्त करने पर तयार है, किन्तु युद्ध के शीघ्र समाप्त होने की कोई सम्भावना नहीं मालूम होती। चीन के पश्चिमी मित्र राष्ट्रों के हित के लिये यह आवश्यक है कि वे चीन की आर्थिक स्थिति को खराब न होने देवें।

सियाटिल वाशिंगटन

यह नगर पहाड़ियों की श्रेणियों के ऊपर बसा हुआ है। इस की जनसंख्या ४,००,००० है। वाशिंगटन की झील २० मील लम्बी और २ मील चौड़ी है। यह झील वाशिंगटन नगर की पूर्वी सीमा बनाती है। नगर के पश्चिम की ओर यूगेट साउन्ड की खाड़ी है और ओलम्पिक पर्वत हैं जो प्रशान्त महासागर की प्रचण्ड हवाओं को आने से रोकता है।

वाशिंगटन नगर इलियट की खाड़ी को घेरे हुये है। इस खाड़ी का पानी नमकीन है। इसमें नगर का हार्बर है और किनारे किनारे जहाजों के ठहरने के लिये घाट बने हुये हैं। प्रशाँत महासागर नगर से १२५ मील की दूरी पर है। पगेट साउन्ड और जुआन डे फूका के जलसंयोजक में होकर प्रशांत महासागर में पहुँचने का मार्ग है।

यूनियन तथा वाशिंगटन की झीलें यूगेट साउण्ड से वाशिंगटन जहाजी नहर द्वारा मिली हुई हैं। इन झीलों में स्वच्छ पानी का एक हार्बर है, जिसका क्षेत्र-फल ५० वर्गमील है। खारी पानी वाले हार्बर में कुल १०१ घाट हैं और स्वच्छ पानी वाले हार्बर में ७५ घाट हैं। इतने अधिकांश जहाज बनाने तथा जहाजों की मरम्मत करने वाले घाट हैं।

सियाटिल उत्तरी-पश्चिमी प्रशान्त महासागर का सब से बड़ा नगर है। व्यापारिक दृष्टि से प्रशान्त महासागर के अमरीकन तट का यह तीसरा बड़ा बन्दरगाह है। यहां ८१ जहाजी लाइनों के ३००० जहाज सालाना आते जाते हैं। ये जहाज इस नगर को संसार के और दूसरे नगरों से मिलाए रखते हैं। जो सामान इन जहाजों द्वारा सालाना जाता है उसका मूल्य ७३४,०००,०० पौंड (११०,१००,०००० रु०) से भी अधिक होता है।

यह नगर पूर्वी राज्यों से चार बड़ी रेलवे लाइनों द्वारा मिला हुआ है। यहां पर हवाई लाइन का स्टेशन है, जो सुदूर दक्षिण से लेकर एलास्का सुदूर उत्तर तक के नगरों को इस नगर से जोड़े हुये है। इस नगर की म्युनिसिपैल्टी का अपना अलग एक नियत बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह में सभी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक सुविधाएँ प्राप्त हैं। घाट, अनाज की खत्तियाँ, गोदाम, ठंडे गोदाम, मछलीघर, तेल की टंकियां क्रेने आदि सभी वस्तुएँ मौजूद हैं।

वाशिंगटन के बन्दरगाह के व्यवसाय तथा कारखानों की उन्नति उसके प्राकृतिक धन के कारण है। यहां पर संसार का सब से सुन्दर और लकड़ी इकट्ठा करने का सब से बड़ा बन्दरगाह है। एलास्का में दुनिया में सब से अधिक सालमन मछलियों का शिकार होता है और सियाटिल मछली के कारखानों का प्रधान केन्द्र है। पश्चिमी वाशिंगटन काठ कवाड़ की वस्तुओं के सिवा फल, तरकारी और डेयरी के सभी सामान बड़ी मात्रा में तयार करता है। यहां पर बहुत सा सामान कारखानों में भी तयार किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र की उपज का एक तिहाई सेव पूर्वी वाशिंगटन में होता है। लगभग ३०,०००,००० संदूक सेव की उपज यहां होती है और उससे लगभग ४०,००,००० बुशल (३००,०००,०० मन) है। राज्य के भीतर लगभग ५० प्रकार की धातें पाई जाती हैं।

लगभग ९ साल पहले सियाटिल एक जङ्गली स्थान था और वहां जङ्गली इंडियन लोग रहा करते थे। समीपवर्ती सभ्य लोग भी सैकड़ों मील दूर इस नगर से थे। यह एक अभी नया नगर है। यह नगर प्राचीन रीति रिवाजों की परवाह नहीं करता और उसे बिना किसी संकोच के तोड़ता हुआ अग्रसर होता चला जाता है। इस नगर के निवासी असाध्य को भी साध्य बनाने का प्रयत्न करते हैं। पहाड़ियों को साफ कर के उनके स्थान पर सुन्दर दूकानें तथा कारखाने स्थापित किये। छिछले पानी वाले स्थानों को पाट कर वहां कारखाने, रेलों के स्टेशन, सड़कें हवाई स्टेशन और जहाजी स्टेशन बनाए। यहां के निवासियों के हृदय में यह भाव जंगल के भीतर ही उत्पन्न हुए और उन्होंने अपने भावों को कार्यरूप में परणित करने का भरसक प्रयत्न भी किया।

सन् १८५१ ई० में प्रथम अँग्रेज लोग एक्जैक्ट नामक जहाज पर अल्की सियाटिल के पश्चिमी भाग में आए। उस जहाज पर ७ मर्द, ५ स्त्रियाँ और १२ बच्चे थे। यह लोग पहाड़ों, मैदानों को पार करते हुए यूगट साउन्ड आए और वहां से नाव पर बैठ कर सियाटिल आये। यह लोग कैलेफोर्निया के सोना खोदने वालों की तरह नहीं आये कि सोना लेकर फिर चम्पत हो जाते वरन् यह लोग अपना घर बना कर सदैव के लिये रहने को आये थे। वह लोग जाड़े का समय अल्की में व्यतीत करने के पश्चात् इलियट की खाड़ी के दूसरी ओर जाकर अपना निवास स्थान बनाया। इन लोगों ने अपने झोपड़े लकड़ी के बनाए थे।

यह लोग लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठों को काट कर बेड़ा बनाना आरम्भ किया। बेड़ा तयार होने पर लट्ठे सैनफ्रान्सिस्को पहुँचाए गये। इस प्रकार यहां का जलमार्ग का व्यवसाय आरम्भ हुआ। धीरे धीरे लोग आने लगे और हेनरी एल-एसलेर ने आकर एक लकड़ी चीरने की मिल खोल दी। उसके बाद इस कारखाने से सड़कें और मार्ग भी जंगल तथा समुद्री किनारे की ओर बनाये गये। सड़क के किनारे धीरे धीरे और दूसरे रोजगारी लोग भी आकर बस गये। यहां पर बसने वाले अधिकांश लोग कैलेफोर्निया और फ्रेजर नदी के सोना ढूँढ़ने वाले अँग्रेज थे।

डाक्टर मैनार्ड नामक व्यक्ति यहां आकर सालमन मछली को नमक मिलाकर डिब्बों में रख सैन फान्सिस्को ले गया, वहां उसकी अच्छी बिक्री हुई, जिससे उसका साहस और बढ़ गया। इसी समय दो भाई सैनफ्रान्सिस्को नदी में मछली पकड़ पकड़ कर पीपों और बालटियों में उन्हें पालने का प्रयोग कर रहे थे। यहीं लोग प्रशान्त महासागर तट के मछली के व्यवसाय के मार्ग प्रदर्शक थे।

धीरे धीरे और दूसरी बस्तियां भी बसने लगीं। तकोना नगर सियाटिल से ३० मील दक्षिण की ओर बसाया गया। इन दोनों नगरों में बहुत समय तक आपस में लागडाट रही।

जान पानेल नामक व्यक्ति का उल्लेख सियाटिल का इतिहास लिखते समय आवश्यक हो जाता है। यद्यपि यह अच्छा मनुष्य न था। इसने बुरे कर्मों द्वारा जिस प्रकार भी हो सकता था रुपया कमाता था, किन्तु यह बात जरूर है कि नगर को धनी बनाने में इसने बहुत बड़ा भाग लिया है। दूर दूर से लोग अपनी छुट्टियां आनन्दपूर्वक बिताने के लिये यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते थे। इस प्रकार नगर में रेलवे लाइन, पक्की सड़कें और जहाज़ी लाइन स्थापित होने लगी। पानेल की स्मृति में उसकी मूर्ति स्थापित की गई है।

१८८९ ई० में सियाटिल नगर में भयानक अग्नि काण्ड हुआ, जिसके कारण सारा नगर जल कर राख हो गया। सहायता के लिये दूर दूर से लोग रुपया भेजने लगे, किन्तु यहां के निवासियों ने कुछ भी परवाह नहीं की और स्वयम् अपने पैरों खड़े होने का निश्चय किया और अपने नगर को फिर से बनाना आरम्भ किया। अब की बार वहां के घर सीमेन्ट और पत्थर के बनाए गये, सड़कें चौड़ी बनाई गई।

सन् १८९७ ई० में सियाटिल की जनसंख्या ४५ हजार थी। उस समय वहाँ का व्यापार अधिकतर तटों पर होता था। बाद ओरियन्ट और ऐलास्का से वहां तक जहाजी लाइनें स्थापित हो गई। सन् १८९७ ई० के लगभग वहाँ सोने की खान मिलने का समाचार दुनिया में फैल गया, जिसके कारण योरुप, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा सभी दिशाओं के लोग सियाटिल की ओर दौड़ पड़े। इस प्रकार सियाटिल संसार का एक बन्दरगाह बन गया। बहुत से लोग जो वापस अपने देशों को न जा सके उन्होंने वहीं अपना स्थान बनाया। १९०० ई० के लगभग वहां की जनसंख्या ८०,००० हो गई। इसी समय प्रेसीडेन्ट थ्योडोर रूज़वेल्ट पनामा नहर को समाप्त करने का प्रयत्न कर रहा था, जिससे सियाटिल को बड़ा लाभ पहुँचने को था।

ओरियन्ट की अपेक्षा सियाटिल संयुक्त राष्ट्र से समीप था। अलास्का के साथ तो पहले से ही व्यापार स्थापित हो चुका था। पनामा नहर के खुल जाने से दक्षिणी अमरीका और दूसरे देशों से व्यापार होना सम्भव था। गेहूँ और मछली का व्यापार योरुप से भली प्रकार किया जा सकता था। पूर्वी वाशिंगटन के जंगल की लकड़ी का व्यापार भी उन्नति करने को था।

सियाटिल के नागरिकों को पोर्ट को उन्नतिशील बनाना था। निजी लोग अपने अधिकार में बहुत सा स्थान किये हुए थे, वे अपनी भूमि किसी को भी देने के लिये तयार न थे, इसलिये एक कानून की आवश्यकता थी।

१०९७ ई० में पोर्ट सम्बन्धी बिल धारा सभा के सामने लाया गया, किन्तु फिर रद्द कर दिया गया। आखिरकार सन् १९११ ई० में क़ानून पास हो गया। उस क़ानून के अनुसार निजी जायदादें भी पोर्ट के अधिकार में चली गईं। १९११ ई० में १०,००,००० पौंड (१,५०,००,००० रु०) पोर्ट बनाने को दिया गया। इस रुपये से पोर्ट के टामनल घाट और दूसरी आवश्यकताएँ पूरी की गईं। आज उसी के कारण सियाटिल एक जगत-प्रसिद्ध बन्दरगाह बन गया है और उसका व्यापार पहले से ४०० प्रति सैकड़ा बढ़ गया है।

हैनफोर्ड स्ट्रीट टर्मिनल पर १५,००,००० बुशल (१२,००,००० मन) अनाज के एलिवेटर बने हैं। स्टैसी स्ट्रीट टर्मिनल पर शराब रखने के लिये पक्की कोठी बनी हुई है। यहां पर पोर्ट के दफ़्तर भी हैं।

स्मिथ को टर्मिनल के ४० और ४१ नम्बर के घाट अपने भाव के संसार में सब से बड़े माने जाते हैं। ये घाट इलियट की खाड़ी में लगभग आध मील तक फैले हुए हैं। पाएर (घाट या स्तम्भ) नम्बर ४० में ७ बड़े बड़े शेड हैं। नम्बर ४१ में क्वीन मैरी जैसे ४ बड़े जहाज़ खड़े हो सकते हैं। इस टर्मिनल मछली के पालने का सब से बड़ा गोदाम है।

पोर्ट का कारखाना वाले प्रदेश में बड़े बड़े कारखाने और दूकानें हैं। सियाटिल में जहाज़ों से हार्बर की सुगमता प्रदान करने के बदले में किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता। सभी जहाज़ी लाइनों को पोर्ट के प्रयोग करने का समान अधिकार प्राप्त है।

स्पोकने स्ट्रीट कोल्ड स्टोरेज के गोदामों में सर्व प्रथम फल तथा तरकारियों को ठंडक में रखने का प्रयोग किया गया था। आज सारे संसार में ऐसी ठंडे स्थानों में फल तथा तरकारियां रक्खी जाती हैं।

स्पोकने स्ट्रीट टर्मिनल पर संयुक्त राष्ट्र का अग्रीकल्चरल ब्यूरो आफ प्लान्ट इन्डस्ट्री की फ्रोजेन पैक लेब्राटरी है, जो अपने रूप की संसार भर में एक ही है।

आधुनिक मछली के गोदामों के बन जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण बहुत कुछ सुविधा हो गई है और मछलियां नष्ट नहीं होतीं। हैनफोर्ड स्ट्रीट से गेहूँ तथा सेब बहुत ज्यादा बाहर को भेजा जाता है।

सियाटिल की गणना संसार के बड़े बन्दरगाहों में होती है। यहां का हार्वर प्राकृतिक तथा अद्भुत है। यहां पर सुन्दर झीलें तथा शानदार पहाड़ियां हैं। यह नगर व्यापार शिक्षा, सभ्यता और जहाज चलाने आदि सभी कलाओं में उन्नति कर रहा है।

ब्लिट्ज़ क्रीग (विद्युत्-युद्ध)

विद्युत्-युद्ध वह युद्ध है जो एक बड़े भारी भयनक तूफ़ान की भांति बिजली जैसी तेज़ी के साथ लड़ा जावे। इस युद्ध के कला-कौशल और दूसरे युद्ध से अलग हैं। जर्मनी ने इस युद्ध-कला का प्रयोग १९१५-१६ ई० में किया था, जब कि पश्चिमी सीमा को तोड़ने में मित्र राष्ट्र या जर्मनी असफल हुए थे। इसका प्रयोग स्पेन में भी गृह-युद्ध छिड़ने के पश्चात् हुआ था।

विद्युत्-युद्ध के तरीक़ों का प्रयोग एथोपिया में किया गया था, किन्तु उसका परिणाम साफ साफ नहीं प्रतीत हुआ, इसलिये कि वहाँ के निवासी सभ्य न थे, उनके पास आधुनिक लड़ाई के हथियार भी न थे जिससे वे इस युद्ध का भरपूर प्रयोग युद्ध-क्षेत्र में किया जा सकता। स्पेन में इस युद्ध का अच्छा परिचय मिला। अलबानिया में इस युद्ध का रियर्सल किया गया और आख़िरकार पोलैंड में यह अन्तिम बार कसौटी पर कसा गया और खरा उतरा।

विद्युत्-युद्ध के नियम अकस्मात् आक्रमण पर निर्भर करते हैं। यह युद्ध उस युद्ध के प्रतिकूल है जो वैरी को अधिक से अधिक सेना तथा सैनिक अस्त्रों से भयभीत करके किया जाता है। इस युद्ध में अचानक धावा बोल कर वैरी की सेना को नष्ट भ्रष्ट कर देना पड़ता है। इस युद्ध का अभिप्राय केवल वैरी की सैनिक (हवाई तथा भूमि) शक्ति का नाश करना है, नागरिकों को नाश करना नहीं है।

युद्ध सम्बन्धी प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि अचानक आक्रमण ने विजय प्राप्त करने में सदा प्रधान भाग लिया है। जब कभी भी दो सेनायें युद्ध-क्षेत्र में एक दूसरे के सन्मुख लड़ी हैं और जिस किसी ने भी विद्युत् युद्ध का आश्रय अपने शक्तिशाली वैरी के प्रतिकूल लिया है, उसी की विजय हुई है।

मोग़लों तथा इसाइयों के बीच जितने युद्ध हुए हैं लगभग सभी युद्धों में ईसाई सेना मोग़लों की अपेक्षा कहीं बड़ी थी किन्तु मोग़लों ने सदैव विद्युत्-युद्ध का प्रयोग किया। पहले मोग़ल लोग वैरी सेना के भीतर गड़बड़ी तथा घबराहट पैदा कर देते थे, उसके बाद अचानक आक्रमण कर देते थे। इसी कारण सदैव मोग़ल विजय सिद्ध हुए।

१९१४ के युद्ध में भी विद्युत् युद्ध का यही परिणाम रहा। मित्र राष्ट्रों की कई एक बैठकें युद्ध के आरम्भ में हुई और उन्होंने वैरी सेना को संख्या में कम जान कर पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण की ओर से आक्रमण करके परास्त करना चाहते थे। मित्र राष्ट्र चारों ओर से एक ही समय आक्रमण करते थे, यह केवल इसी कारण था कि जर्मन सेना संख्या में बहुत कम थी, किन्तु इसका नतीजा अच्छा न हुआ। मित्र राष्ट्र की ओर की बहुत अधिक सेना मारी गई और जर्मन सेना बहुत कम संख्या में काम आई जो मरी हुई मित्र सेना का कोई अंश भी नहीं कही जा सकती।

एक बार मित्र राष्ट्र तथा जर्मनी की ओर से सेना की तयारी में कई दिन लगे, उसके पश्चात् जर्मन सेना के ऊपर बम्ब बरसाए गये, किन्तु जब पैदल सिपाही आगे बढ़े उन्होंने जर्मन मशीन-गनों को गोला बरसाते पाया और बुरी तरह से मारे गये। जितनी भूमि मित्रराष्ट्र वाले अपने अधिकार में करते थे, वह एक छोटी जर्मन सेना द्वारा छीन ली जाती थी, क्योंकि जर्मन सेना भाले की भांति भीतर घुस कर अचानक बम वर्षा करने लग जाती थी। केवल सोम्मे वेर्डन और स्थानों पर ही अत्यधिक सेना के कारण मित्रराष्ट्रों की जीत हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार बार हार जाने के कारण सेनापतियों तथा नेताओं ने युद्धविद्या तथा इस रचना के दूसरे उपाय सोचने लगे। उन्होंने युद्ध कौशल के साथ साथ अचानक आक्रमण की बात सब से अच्छी समझी। इसी कला के कारण वान मैकेन्सेन ने दनाके नदी के किनारे रूसी लाइन को १९१५ में तोड़ दिया था। उसने अपने आगे बढ़ती हुई पैदल सेना की रक्षा बेलनदार तोपखानों के बांधों से की थी। यह प्रथम समय था जब कि ऐसे बांध का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया गया था।

कम्बाई स्थान पर अँग्रेज़ी सेना की विजय केवल इसी लिये हुई थी कि अँग्रेज़ सेना ने टैंकों के साथ बैरी सेना पर अचानक आक्रमण किया था। रीगा लाइन के ऊपर जब जर्मन लोगों ने आक्रमण किया तो वह विद्युत्-युद्ध ही था। लड़ाई की बिलकुल तयारी नहीं की गई थी और एकाएक आक्रमण हो गया था। इसमें आगे की बढ़ती हुई पैदल सेना को पीछे से तोपखाने द्वारा सहायता मिल रही थी। तोपखाने के गोले बैरी सेना को चकना चूर करते जाते थी। जब पैदल सैनिक निकट पहुँच गये तो उन्होंने घूम कर बैरी सेना पर धावा बोल दिया। तोप खाना आगे बढ़ गया। आक्रमणकारी पैदल सैनिकों की सहायता के लिये भी कुछ तोपें रह गईं। यदि बैरी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया तो ठीक है, नहीं तो वह गोलों द्वारा चकना चूर की गई और पैदल सिपाहियों ने अपना मार्ग कम शक्तिशाली भाग की ओर अपना रुख किया। इस प्रकार यह आक्रमण एक बड़े तूफान की भांति हुआ। जिधर जिधर तूफान पहुँचा उधर सफा हो गया।

रीगा की विजय के पश्चात् जर्मन लोगों ने विद्युत-युद्ध द्वारा ही मित्र-सेना का सामना करना आरम्भ किया। १९१८ ई० के मार्च तथा अप्रैल के महीने में ऐसे ही आक्रमण जर्मन सेना ने अँग्रेज़ी सेना पर और मई महीने में फ्रान्सीसी सेना पर किये। इन आक्रमणों में जर्मन सेना को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। यदि जर्मन सेना मित्र-सेना की लाइन तोड़ने में सफल हो जाती तो अवश्य ही उसकी विजय हो जाती किन्तु जर्मनी के पास रिजर्व सेना न थी, इस कारण वह अपने अचानक आक्रमण अधिक समय तक न चला सकी। मित्र राष्ट्रों के पास रिज़र्व सेना थी, इस कारण उन्हें जर्मन आक्रमणों को रोकने में सफलता प्राप्त हुई। जर्मन सेना की उसी समय कमी हुई जब कि कुछ ही मिनटों में मित्र राष्ट्रों की लाइन टूटने वाली थी।

ताः १५ तथा १६ जौलाई सन् १९१८ ई० को जब चैट्यूथीरे से मार्ने तथा रीम्स पर जर्मन सेना का आक्रमण हुआ तो वे विजयी हुए और आगे चम्पेन (Champagne) होते हुए आरगोने वन (Argonne forest) की ओर बढ़े। जर्मनों का यह अंतिम बड़ा आक्रमण था। फ्रान्सीसी तथा अमरीकन सेना एक अमरीकन के कथनानुसार मुश्किल से इस आक्रमण का सामना कर सकी थी। उनके केवल थोड़े से आदमी शेष अगली लाइन पर रह गये थे, इसी प्रकार एक और स्थान पर जर्मन लोग जीतते जीतते अन्तिम मिनट पर पहुँच चुके थे।

ठीक उसी समय चैट्यू थीरी (Chateau Thierry) से स्वाइसेन्स (Soissons) का फ्रान्सीसी-अमरीकन आक्रमण १८ जुलाई को हुआ। यह आक्रमण बड़े जोरों का था। नई फ्रान्सीसी तथा अमरीकन सेना के आ जाने के कारण इस आक्रमण का बेग और अधिक तीव्र हो गया। इसके द्वारा जर्मन सेना के भीतर दूर तक मित्र-सेना घुस गई और १५ तथा १६ ताः की जर्मन विजय का सर्वनाश कर दिया। नई सेना के आ जाने के कारण मित्र सेना ने आर्मिस्टिस दिवस तक बैरी सेना से अपनी रक्षा करती रही।

जो कुछ घटनाएँ १९१४ की लड़ाई में हुईं न तो वे और न जर्मन की हार ही इस बात का प्रमाण है कि विद्युत-युद्ध के नियम में त्रुटि थी। जितना ही अधिक हम इस युद्ध कला कौशल का अध्ययन करते हैं, उतना ही अधिक हमें इसकी उपयोगिता पर सफलता प्राप्त होती दीख पड़ती है, हम इस युद्ध द्वारा सभी स्थानीय घटनाओं का सफलता के साथ सामना करते हैं। इस प्रकार का युद्ध पहले से निर्माण किये हुए कार्यक्रम वाले युद्ध से कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

गैस इंजिन, टैन्क, आर्मडकार तथा वायुयानों का प्रयोग जर्मनों ने अपने आक्रमणों में बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। जर्मनों के पास टैन्क बहुत कम मात्रा में थे, उन्होंने भूमि पर मशीनगनों द्वारा गोले भी सीमित संख्या में वर्साए थे। वायुयानों ने अभी तक आक्रमणों में भरपूर सहायता नहीं दी है।

फ्रान्सीसियों और अँग्रेजों के पास टैंक काफी संख्या में थे। फ्रान्सीसी सेना ने टैंकों का प्रयोग अपनी आगे वाले पैदल सेना की बैरी मशीनगनों से रक्षा करने में प्रयोग किया था। अँग्रेजी सेना ने भी टैंकों का प्रयोग ऐसा ही किया था किन्तु कुछ व्यक्ति टैंकों की सहायता बैरी सैना की लाइन तोड़ने में ली। उनका कहना था कि यह टैंक बैरी सेना पर आक्रमण करके बैरी सेना के बीच होकर अपना मार्ग बनावेंगे। इन लोगों का इरादा बैरी सेना पर टैंकों द्वारा कुचल डालने वाला आक्रमण करने का था।

८ अगस्त सन् १९१८ ई० को टैंकों द्वारा आक्रमण किया गया। आक्रमण में बड़ी सफलता प्राप्त हुई। जर्मन सेना इसका सामना न कर सकी और सभी लोगों को विश्वास हो गया कि टैंक केवल रक्षा करने का ही हथियार नहीं वरन् यह एक लड़ने का प्रमुख हथियार है।

टैंक को एक लड़ाई का हथियार मानने वाले व्यक्तियों का प्रमुख नेता जनरल फुलर था। जनरल फुलर ने स्थल युद्ध में टैंक, आर्मर्डकार और दूसरे मोटरों का प्रयोग बहुत किया है जर्मन लोगों ने अपने विद्युत-युद्ध में बहुत कुछ उसी के नियम की नकल की है। इटैलियन जनरल ज्यूलिओ डाउहेट (Guilio Douhet) ने भी विद्युत-युद्ध की कला में बहुत कुछ सहायता की है।

कुछ लोगों की राय थी कि आक्रमण में वायुयानों का प्रयोग किया जाय क्योंकि जब नागरिकों पर बम की वर्षा होगी तो वह अवश्य ही अपनी सेना के पराजय होने के पहले संधि करने के लिये तयार होंगे। सेना को इकत्रित करने तथा उनको नियत स्थानों पर भेजने में काफी समय लग जाता है।

इथोपिया में जब इटली का आक्रमण हुआ था तो उस समय इटैलियन जनरल ने बहुत सोचने विचारने के पश्चात् तीन बातों का निर्णय किया था। (१) खांई की सहायता से अचानक आक्रमण करना चाहिये, ऐसे आक्रमण में काफी पैदल तथा तोपों की आवश्यकता है। (२) आक्रमण के समय काफी संख्या में टैंक होने चाहिये, जिस से कम से कम स्थानीय युद्ध में पूरी सफलता प्राप्त हो (३) कम से कम समय आक्रमण में लगना चाहिये। जोरदार अचानक हमले के लिये गैस इञ्जिन का प्रयोग बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार के आक्रमण को रोकने के लिये मैगीनेट लाइन तयार की गई है। फ्रान्सीसी लोगों ने सोचा था कि कदाचित ऐसे आक्रमणों द्वारा किलों पर वैरी सेना का अधिकार हो जाय, इसलिये फ्रान्सीसियों ने एक ऐसा फौजी दस्ता तयार किया है जो सदैव किलों की रक्षा करेगा।

इथोपिया के युद्ध से नए नए प्रयोग हुए हैं। पहली बात तो यह कि वायुयानों वाला आक्रमण गोलों से विरोधी सेना को बर्बाद तो अवश्य कर देगा किन्तु उससे कोई विशेष सफलता प्राप्त न होगी। जब वायुयानों का आक्रमण पैदल सेना के साथ साथ होगा तभी पूरी जीत हो सकती है। केवल टैंकों का आक्रमण भी ठीक नहीं होता, क्योंकि पहले तो ऐसे आक्रमण के असफल होने की सम्भावना है, दूसरे टैंक बड़े खतरे में हो जाते हैं और बहुधा जब शत्रु द्वारा घिर जाते हैं तो वे शत्रुओं के अधिकार में चले जाते हैं। जब आक्रमण में टैंक, वायुयान, तोपखाने और पैदल सभी का प्रयोग एक साथ किया जाता है तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

मशीनों का प्रयोग करने से सभी सामान युद्ध स्थल पर शीघ्रातिशीघ्र पहुँचाया जा सकता है, इससे अचानक आक्रमणों की संख्या भी बढ़ गई है। वायुयानों, मोटरों, मशीनों, टैंकों की सहायता द्वारा जो आक्रमण होता है, वह बड़ा भयानक तथा शक्तिशाली होता है और उसका रोकना असम्भव हो जाता है।

इथोपिया के युद्ध में जिस युद्ध कला का प्रयोग किया गया है, वह बिलकुल ठीक नहीं कहा जा सकता इसलिये कि इथोपियन लोगों के पास लड़ाई के आधुनिक हथियार न थे, किन्तु स्पेन युद्ध में इन युद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलाओं का समुचित परिचय किया गया है, जिससे ठीक ठीक फल निकाला जा सकता है।

स्पेन में दो प्रकार की युद्ध कला से काम लिया गया है एक तो यह कि घनघोर युद्ध किया गया दूसरे छोटी छोटी लड़ाइयाँ हुईं। टेरूयल (Teruel) अल्फाम्ब्रा (Alfambra) सरीअन (Sarrion) एब्रो (Ebro) सेग्रे (Segre) के मैदानों में बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। कैसिलन-डे-ला पालना (Castellon-de-la-palna) को अधिकृत करने में बहुत सी छोटी छोटी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। घोर संग्राम करने में सभी प्रकार की युद्ध सम्बन्धी वस्तुओं का अधिक मात्रा में शीघ्र ही पहुँचना आवश्यक था, उसमें अधिक से अधिक सैनिकों के मारे जाने की सम्भावना होती है। यह बात भी बड़ी ही आवश्यक है कि बहुत से ऐसे स्थान पर युद्ध करना पड़ता है जहां सैनिक केवल घोड़ों, खच्चरों का ही प्रयोग कर सकते हैं, वहाँ पर मशीनगनें अथवा टैंक आदि पहुँच ही नहीं सकते या यदि सभी सामान पहुँच भी जाय तो उसका प्रयोग ही नहीं हो सकता।

भागती हुई सेना का पीछा करने में भी बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है। ऐसी दशा में पीछा करने वाली सेना को ऐसा तयार रहना चाहिये जो हर प्रकार की रोक अथवा लड़ाई जो मार्ग में आ जावे उसका सामना कर सकें। ऐसी दशा में उसे मोटर कार, टैंक, तोपखाना, मोटर साइकिल, घोड़सवार तथा पैदल हर एक तरह के लोगों की आवश्यकता होती है।

घनघोर युद्ध के समय मामूली टैंक बिलकुल बेकार सिद्ध हुये हैं, क्योंकि या तो वह बैरी सेना के अधिकार में आ जाते हैं या जला दिये जाते हैं। आमर्ड टैंकों ने भी जब अकेले आक्रमण किया है तो वह भी सफलीभूत नहीं हुये। ऐसे टैंक सफलीभूत तभी होते हैं जब उनके पीछे घुड़सवार तथा पैदल सेना हो और आगे तोपखाने तथा वायुयानों के बम बैरी सेना का क्षय करते जांय। इस प्रकार जनरल फुलर की युद्ध कला सिद्ध होती है कि वह ठीक है।

हवाई आक्रमण ने स्पेन के युद्ध में ऐसी सफलतायें प्राप्त की हैं, जिनका कभी भी किसी को अनुमान भी न था। केवल हवाई आक्रमण भी सफल नहीं हो सकता, जहां कहीं एअर क्रैफ्ट मशीनगनें लगी हैं वहां पर हवाई आक्रमण बिलकुल बेकार हो जाता है। हवाई आक्रमण समाप्त होने के पश्चात् वहां पर शीघ्र ही फिर से बैरी सेना का आगमन हो सकता है और लड़ाई आरम्भ हो सकती है। हवाई आक्रमण द्वारा बम वर्षा करके सब कुछ ठीक ठीक नाश भी नहीं किया जा सकता। किन्तु पीछा करने अथवा आक्रमण करने में जहां हवाई बेड़े की अधिकता होती है, वहां बड़ी सुगमता के साथ विजय प्राप्त होती है. जिस प्रकार कि स्पेन में विजय हुई है।

वायुयान, मशीनगन, तोपखाना, घुड़सवार तथा पैदल सेना के साथ जब बैरी सेना का पीछा किया जाता है, तो उसे सिवा बर्बाद होने के ऐसा अवसर ही नहीं प्राप्त होता कि वह छिप कर फिर से अपने को संगठित करे और लड़ाई आरम्भ करे। इस प्रकार स्पेन युद्ध से हमें शिक्षा मिलती है कि गैस इंजिन अकेले कोई लड़ाई नहीं जीत सकते। वायुयान तथा टैंक और गैस इंजनों को घुड़सवार, तोपखाना पैदल सेना की सहायता द्वारा ही सफलता प्राप्त हो सकती है। जिस सेना के पास हवाई शक्ति नहीं या कम है, तोपखाने की कमी है या टैंक नहीं है। उस सेना पर मामूली मशीन वाली सेना जिसकी सहायता हवाई जहाजों द्वारा होती हो सरलता पूर्वक विजय प्राप्त कर सकती है।

जर्मन तथा इटैलियन सेना वालों ने पिछले प्रयोगों तथा सफलताओं से सीख लिया है कि कहां यह विद्युत्-युद्ध काम कर सकता है और कहां पर इससे सफलता नहीं हो सकती। इसलिये इस युद्ध का प्रयोग मैगीनेट लाइन के तोड़ने में न किया जावेगा और न ऐसे युद्ध में ही किया जावेगा जहां पर बैरी सेना हर प्रकार के वायुयानों, टैंकों और मशीनगनों का जवाब देने को प्रस्तुत होगी।

इटली ने जब अल्बानिया पर अधिकार जमाया था तो उसे मालूम था कि अल्बानिया को अपनी सेना संगठित करने में कितना समय लगेगा उन्हें यह भी मालूम था कि अल्बानिया के पास टैंक, वायुयान आदि बहुत कम हैं। इसलिये उन्होंने केवल २३,००० सैनिक रवाना किये। इस सेना की सहायता के लिये, मशीनगन टैंक और वायुयान भी थे। इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी सुगमता के साथ इटैलियन सेना ने अल्बानिया पर अधिकार जमा लिया। इटैलियन सेना ने इतनी जल्दी अल्बानिया पर अधिकार जमाया था, कि मामूली अल्बानिया को यह बात भी न मालूम हो पाई थी कि उनके देश पर इटैलियन सेना चढ़ आई है और उनकी सेना और इटैलियन सेना से कोई युद्ध हुआ है।

अल्बानिया का तमाशा देख कर यह बात सिद्ध होती है कि विद्युत्-युद्ध की कला काफी बढ़ चुकी है। और उसमें किसी प्रकार के भय की चिंता शेष नहीं रह गई है।

पोलैण्ड की हार यह सिद्ध करती है कि एक संगठित तथा हथियार बन्द सेना सुसज्जित सेना से विद्युत्-युद्ध में हार सकती है। निश्चय ही पोलैण्ड ने अपनी चारों ओर से रक्षा न करने में गलती की है किन्तु यदि वह चारों ओर से अपनी रक्षा करने का प्रयत्न भी करता तो भी उसकी हार होती क्योंकि उसके पास वायुयानों, एन्टीएयर क्रैफ्ट गनों (वायुयानों को गिराने वाली तोपें) और एन्टी-टैंकों की कमी थी। इनके कम होने के कारण वह कभी कभी विद्युत्-युद्ध का सामना कर ही नहीं सकते थे।

पोलैण्ड की पराधीनता का इतिहास विद्युत्-युद्ध के तीन प्रमुख नियमों को बतलाता है।

१—वायुयानों द्वारा सारे वायुयानों तथा हवाई अड्डों पर आक्रमण करना।

२—हवाई जहाजों द्वारा सारे रेलवे स्टेशनों, जंकशनों, पुलों और सभी स्थानों तथा वस्तुओं पर बम वर्षा करना जो कि सेना संगठित करने में सहायक हों।

३—तोपखाने द्वारा बम वर्षा सीमा पर तथा दूसरे मोर्चे वाले स्थानों पर करना और उसके पीछे सवार तथा पैदल सेना द्वारा भूमि पर अधिकार जमाते जाना।

यदि सीमा पर किलेबन्दी न हो तो वायुयानों के आक्रमण के पश्चात ही अचानक पैदल तथा घुड़सवार सेना द्वारा आक्रमण किया जा सकता है।

४—मोटर साइकिल, मशीनगन, आर्मर्ड कार, छोटे टैंक आदि के छोटे छोटे दस्तों द्वारा मार्ग साफ किया जाना।

५—इन छोटे छोटे दस्तों के पश्चात् आर्मर्ड सेना चलनी चाहिये, इसमें एक एक लाइन में ४०० टैंक होने चाहिये। साथ ही साथ वायुयान (बम बर्साने वाले तोपखाने, ऐन्टी एयर क्रैफ्ट गन तथा ऐन्टी टैंक गनों की भी बड़ी आवश्यकता है।

६—इसके पश्चात तोपखाने तथा घुड़सवार और पैदल सेना का नम्बर है।

इटली की सेना में ऐसा इन्तजाम है कि वह पैदल सैनिकों को वायुयानों पर बैठा कर जहां कहीं भी उनकी आवश्यकता होती है वहां पहुँचा सकते हैं।

जर्मनी के पास चार चुनिन्दे हवाई लड़ाकुओं के दस्ते हैं। यह लोग पैदल सेना में सुसज्जित सैनिक का काम करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर शीघ्र ही सभी के सब एक साथ एक ही स्थान पर पहुँचाये जा सकते हैं। यह सेना वैरी सेना के तोपों के गोलों से दूर अपनी सेना के सामने उतारी जाती है जिससे बैरी की सेना उसे बर्बाद न कर सके।

विद्युत्-युद्ध के सैनिक मारकाट करने में अपना समय नहीं बिताते। वे चारों ओर घूम कर धावा बोलते चले जाते हैं और मारने काटने का काम अपने पीछे आती हुई सेना के लिये छोड़ते जाते हैं।

बल्कान देशों अथवा मध्य योरुप के देशों में कोई भी देश पोलैण्ड से अधिक विद्युत-युद्ध का सामना नहीं कर सकता। टर्की भी इस युद्ध का सामना नहीं कर सकता। यदि इस प्रदेश के किसी देश ने जरा भी जर्मनी अथवा इटली के विरुद्ध सिर उठाया तो ये देश उस पर शीघ्र ही अपनी सेनाओं द्वारा आक्रमण कर के अपने अधिकार में कर लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस जर्मनी की कितनी सहायता कर सकता है और कितनी करेगा ?

सोवियट रूस वर्तमान महासमर में जर्मनी की कितनी सहायता कर सकता है और कहां तक करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर ठीक ठीक देना कठिन है। इसका उत्तर तो महासमर आने वाली घटनाएँ और समय ही देंगे। सोवियट रूस की राजनैतिक नीति क्या है यह समझना बड़ा कठिन है। बहुत सी भेद की बातें अभी पर्दे के पीछे हैं जो अप्रकाशित हैं। जर्मनी सोवियट रोजगार तथा उद्यम को फिर से संगठित करने में कितनी कला तथा वैज्ञानिक सहायता दे सकेगा। इन सब प्रश्नों के उत्तर देने के लिये अभी काफी ज्ञान प्राप्त नहीं है तो भी जब तक जर्मनी और रूस एक दूसरे के प्रति विश्वास रखते हैं और अपने सन् १९२९ ई० की संधि की अवहेलना नहीं करते तब तक अधिक चिन्ता की बात नहीं और भविष्य की बातों को सोचना और समझना आसान है। क्योंकि मित्र राष्ट्रों को युद्ध तथा शान्ति नीति को काम में लाने के लिये बोलशेविक-नाज़ी समझौता एक कुंजी का काम करेगा।

जब हम विश्वशान्ति अथवा महासमर का लेखा लगाते हैं तो हमारे सामने बहुत से अनित्य तथा अस्थित बातें आ जाती हैं। हम नहीं अनुमान कर सकते कि युद्ध कितने सालों तक चलेगा—जर्मनी का घेरा केवल घेरा मात्र ही रहेगा अथवा कोई शक्तिशाली आक्रमण होगा, जिस से जर्मनी का फौजी व्यय बढ़ेगा—या राजनीतिक नीति में कोई भारी परिवर्तन होगा अथवा रोमानिया तथा बलकान होकर जर्मनी और रूस का मार्ग बन्द किया जावेगा रूस स्वयम् क्या जर्मनी को विजयी बनाने के लिये अपनी तीसरी पंचवर्षीय योजना का पतन करेगा या पश्चिम राष्ट्रों में कोई भारी धोकाबाज़ी होगी ?

जर्मनी की न्यूनताएँ :—सन् १९३८ ई० में जर्मनी ने कुल ६३०००,००० पौंड (६४५००००००रु०) का सामान विदेश भेजा था। ब्रिटिश सरकार की गणना के अनुसार ब्लाकेड [घेरा] द्वारा यह सारा माल विदेश न जा सकेगा और इसमें ४५ प्रतिशत की कमी हो जावेगी। जर्मनी की प्रधान न्यूनतायें जो ब्लाकेड के कारण उपस्थित हैं वह यह हैं :—

१—भोजन सामग्री

१९३९ ई० में जो उपज जर्मनी में हुई है वह उसके साल भर के भोजन के लिये काफी है। जर्मनी के पास पहले से भी युद्ध के लिये कुछ भोज्य सामग्री इकट्ठा है। वह लगभग १० महीने के लिये है। १९४० में यदि फसल खराब हुई तो इसी से काम लिया जावेगा। जानवरों के भोजन की कमी होने पर भी इसी सामग्री से काम चलाया जा सकता है।

१९३८ ई० में १६७,५०७ टन (३८५०१९६ मन) मांस जिसका आधा दक्षिणी अमरीका से २८९,२९६ टन (६४२०२८८ मन) मछली इँगलैण्ड और स्कॅंडीनेविया से आई थी। युद्ध के कारण मछली का शिकार नहीं हो सकता।

गत महासमर में जर्मनी को सबसे अधिक कमी चर्बी की हुई थी। १९३८ ई० में १२०१६ टन (११,७६,४४८ मन) सुअर की चर्बी, ९२२९१ टन (२५८४१४८ मन) मक्खन बाहर से जर्मनी आया था। मक्खन अधिकतर पास पड़ोस के देशों से आता है, जिस पर ब्लाकेड का प्रभाव पड़ा है। जर्मनी चर्बी के लिये अधिकतर वेजी टेबुल तेल पर निर्भर करता है। इस तेल का आना १९२६ से बराबर घटता चला आ रहा है। जर्मनी में ४७०३८० टन (१३१७५६४३ मन) तेल तयार होता था। अगर मन्चूरिया में सोयाबीन (Soyabean) रूस होकर जर्मन जा सके तो जर्मनी अपनी चर्बी की कमी पूरी कर सकता है। २३५१९०० टन सोया से जर्मनी ४७०३८० टन तेल निकाल सकता है।

२—पशु, खाद्य अथवा चारा की कमी

गत महासमर में चारा की जर्मनी में बड़ी कमी हो गई थी। पिछले सालों में पशुओं के भोजन के लिए बहुत सा अनाज बाहर से जर्मनी मंगाया गया। १९३८ ई० में १८९५,४२१ टन (५२०७१८८८ मन) गल्ला आया इसमें से ९० प्रतिशत संयुक्त राष्ट्र अमरीका और अर्जेन्टाइना से आया था। यदि रूस में जौ तथा राई की फसल अच्छी हो तो वह जर्मनी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आवश्यकता को भी पूरी कर सकता है, किन्तु इसके लिये मास्को की स्टेट प्लानिंग कमीशन को एक साल पहले नोटिस देनी पड़ेगी। हाल ही में जर्मन पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ है कि १० लाख टन (२ करोड़ ८० लाख मन) जौ रूस से आ रहा है। यदि यह सामान आ गया तो जर्मनी की गल्ले की समस्या की पूर्ति हो जाती है।

१९३९ ई० में जर्मनी में आलू की उपज ५ करोड़ ४५ लाख टन (१ अरब ५२ करोड़ ६० लाख मन) की हुई है। इसका केवल एक चौथाई मनुष्यों के काम आता है। आलू सुअरों को खाने के लिये दिया जाता है। इस की शराब भी बनाई जाती है और शराब बनाने से जो आलू की खाद बचती है वह जानवरों को खिलाई जाती है। ब्लाकेड जर्मनी आलू को अपना भोजन अवश्य बनाएगा तो भी उसे चारे की कमी पड़ेगी जो भयानक होगी।

३—तेल

१९३८ ई० में निम्नांकित तेल जर्मनी में आया था।

कच्चा तेल	७,७७,८४० टन (२,१७,७९,५२० मन)
गैसोलिन	१२,५७,१०२ टन (३७,९,९८,८५६ मन)
डीसेल आयल	१४,६७,५६८ टन (४,१०,९१,९०४ मन)
चिकना	३,८८,०३४ टन (१,०८,६४,९५२ मन)
लकड़ी का तेल	४,०५,६९० टन (१,१३,५९,३२० मन)

इसमें से ८० प्रतिशत उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका से, ४,२९,३६२ टन रूमानिया से और ३३,१५४ टन रूस से आता था। जर्मनी में २६ लाख टन (७ करोड़ २८ लाख मन) पैदा होता है। युद्ध के समय जर्मनी को कम से कम १ करोड़ २५ लाख टन (३५ करोड़ मन) तेल की आवश्यकता होगी जिस में उसे लगभग २८ करोड़ मन तेल बाहर से मंगाना होगा। अगर रूमानिया जर्मनी के हाथ आ गया तो लगभग ५ करोड़ ६० लाख मन तेल उसे वहां से मिल जावेगा। शेष १ करोड़ ४० लाख मन तेल कहां से आवेगा ? क्या रूस उसे इतना दे सकेगा ?

गैसोलिन तेल का निजी ब्यौहार प्रायः जर्मनी में बन्द कर दिया गया है। जर्मनी के कारखानों ने डीसेल आयल को अधिक उपयोगी माना है। डीसेल इंजनों में कोयले का तेल प्रयोग किया जाता है। १९११ के कानून के अनुसार गैसोलिन आएल में ३० फीसदी आलू की शराब मिलाई जाती है। इस प्रकार आलू की गणना जर्मनी के तेल में भी की गई है। जर्मनी की रेलें ऐसी बनी हैं जो सीगफोर्ड लाइन पर सभी सामान बराबर पहुँचाती रहेंगी और मोटरों में व्यर्थ तेल खर्च न होगा। वर्तमान युद्ध में मोटरों की अधिक आवश्यकता भी नहीं है। यह बात ठीक से नहीं कही जा सकती कि जर्मनी के पास कितना तेल युद्ध के लिये पहले से जमा है।

४—लोहा

१९३७ ई० में जर्मनी ने २ करोड़ ६ लाख टन (५७ करोड़ ६८ लाख मन) कच्चा लोहा बाहर से मंगाया जिसमें २७ करोड़ ७२ लाख मन पक्का लोहा तयार हुआ। इसके ३९ प्रतिशत पर ब्लाकेड का युद्ध का कुछ भी प्रभुत्व नहीं है। शायद जर्मनी को ३१ लाख ६० हजार मन लोहा नार्वे और यूनान से मिल जावे। स्वीडन से २५,१७,८५,२६८ मन कच्चा लोहा जर्मनी आता था जो नार्विक होकर आता था, किन्तु यह ब्लाकेड में आ गया है। इसलिये बाल्टिक सागर के बन्दरगाहों से यह लोहा जर्मनी आ सकता है जो सरदी के कारण ६ महीने बन्द रहते हैं। आशा है कि इस साल के अन्त तक में बाल्टिक सागर के बन्दरगाहों से स्वीडन का ३ करोड़ ९६ लाख मन लोहा आ सके। जर्मनी में २७ लाख ५९ हजार टन (७ करोड़ ७२ लाख ५२ हजार मन) शुद्ध लोहा तयार होता है। साइलीशिया का लोहा भी जर्मन के हाथ लगा है किन्तु उसी मात्रा में फ्रांस का लोहा बन्द भी हो गया है। पिछले दो सालों में जर्मनी ने अधिक लोहा तथा फौलाद बाहर से मंगाया है। उसे पोलैण्ड जीत के कारण भी काफी मात्रा में प्राप्त हो गया है। जर्मनी १० लाख पौंड (२८ लाख मन) लोहा और फौलाद विदेश को भेजता था, किन्तु ब्लाकेड के कारण वह बाहर जाता दिखाई नहीं पड़ता यह बात ठीक नहीं कही जा सकती कि जर्मनी के पास कितना लोहा पहले का एकत्रित है। अब ... है कि जितना लोहे का माल जर्मनी बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजता था, या तो उसी हिसाब से उतना लोहा बाहर से मंगाना बन्द कर दे या मशीनें तयार करे जो रूस तथा बाल्कान राज्य चाहते हैं।

५—मैगनीज़

१९३८ ई० में जर्मनी ने ४२५७८५ टन (११९, २१,८८० मन) मैगनीज़ बिदेशों से मोल लिया था। जिसमें से ६०९२५ टन (१७०६९०० मन) रूस में आता है,, शेष ब्लाकेड के कारण बन्द हो गया है। कमी का पूरा करने के लिये जर्मनी को १७१६०,००० मन मैगनीज़ रूस से और मँगाना पड़ेगा।

६—दूसरी धातुएँ

सन् १९३८ ई० में जर्मनी ने निम्नांकित धातुएँ बाहर से मंगाई गई थीं।

तांबा	९,२६,३३१ टन (२,५९,३७,२६८ मन)
सीसा	१,१६,६१५,टन (३२,६५,२२० मन)
जस्ता	२,५९,९३८ टन (७२,७८,२६४ मन)
टीन	१८,२३२, टन (५,१०,४९६ मन)
अल्यूमीनियम (आलमोनियम)	
	१४,५२१ टन (४०,६,५८८ मन)
गिलट	३,९८४ टन (१,११,५५२ मन)
रंग	१७६,४०६ टन (४९,३९, ३६८ मन)

लगभग ये सभी धातुएँ ब्लाकेड के कारण जर्मनी में पहुँचनी बन्द हो गई हैं जिसका प्रभाव जर्मनी के लड़ाई के हथियार बनाने वाले कारखानों पर काफी पड़ा है। ये वस्तुएँ रूस जर्मनी को नहीं दे सकता है। जस्ता जर्मनी को पोलैण्ड से मिल सकता है। जूगोस्लैविया से सीसा, यूनान से रंग सम्बन्धी वस्तुएँ मिल सकती हैं। किन्तु ये सभी चीजें काफी मात्रा में जर्मनी को प्राप्त नहीं हो सकतीं। जर्मनी के पास तांबे का खज़ाना काफी है।

७—दूसरी आवश्यकताएँ

उपरोक्त वस्तुओं के सिवाय जर्मनी को और दूसरी चीज़ों की भी आवश्यकता है। १९३८ ई० में २५०,०३७ टन रूई, और ९१,५१८ टन कच्चा रबर बाहर से मंगाया गया था। इनके [illegible] कम पाई जाने वाली धातुएं यूरानियम, मोलिबडीनम, ऐन्टीमनी (सुरमा) और टंग्स्टेन आदि बाहर से आती थीं। ये सभी वस्तुएं ब्लाकेड के कारण रुक गई हैं। दुनिया की ७० प्रतिशत मैगनीज़ आस्ट्रिया और जर्मनी में पाई जाती है।

रूसी शक्ति जो जर्मनी की कमी को पूरा कर सकती है।

जर्मनी की कमी को रूस कहां तक पूरा कर सकेगा इस बात का उत्तर देने के पहले हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी आवश्यक हैं। पहली बात तो यह है कि रूस अपने कारखानों को उन्नति देने के कारण अब अपने देश का खाद्य पदार्थ बाहर बहुत कम भेजता है। वह बाहर से मशीन आदि भी बहुत कम मंगाता है। रूस युद्ध सम्बन्धी सभी वस्तुएँ स्वयं खरीदता है। रूस अपने को अधिकाधिक शक्तिशाली, धनी, उद्योगशील तथा कारखाने वाला प्रदेश बनाना चाहता है।

रूस में १०,००,००,००० टन (२७०,००,००,००० मन) अनाज पैदा होता है किन्तु रूस के पास विदेश भेजने के लिये अनाज शेष नहीं बचता। यदि युद्ध अधिक सालों तक चलता रहा तो रूस अपने खेतों को भी बढ़ा सकता है। पोलैण्ड का गेहूँ जर्मनी को मिलेगा ही। इस प्रकार जर्मनी की आवश्यकता पूरी हो सकती है। किन्तु ऐसा होने की सम्भावना नहीं है। वेजीटेबुल आयल जितना रूस से बाहर जाता है उतना ही बाहर से आता भी है। रूस के पास विदेश भेजने के लिये चारा तथा जानवरों का भोजन भी नहीं है, जिसकी जर्मनी को आवश्यकता है।

लोहा तथा मैगनीज को कहां तक रूस जर्मनी को दे सकता है कहा नहीं जा सकता। तांबा सीसा जस्ता, गिलट, टीन और अल्यूमीनम आदि धातुएँ रूस में स्वयं अपने व्यय से कम होती हैं। फिर वह जर्मनी को कैसे दे सकता है। जर्मनी की लकड़ी तथा काठ कवाड़ की आवश्यकता अवश्य ही रूस पूरी कर सकता है।

यद्यपि रूस में १९३९ ई० में रुई की उपज बहुत हुई है तो भी वहां के कारखानों में ही वहां की रूई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खप जाती है। वह बाहर बहुत कम जा सकती है। रबर की पैदावार रूस में होती ही नहीं।

पिछले साल रूस के पास ३,००,००,००० टन (८१,००,००,००० मन) मिट्टी का तेल था। इसका ९० प्रतिशत आबू तथा एम्बा के तेल के कुओं से प्राप्त हुआ था। कारखानों की उन्नति होने का कारण इसका व्यय रूस में अधिक होने लगा है। इसलिये मिट्टी का तेल अब रूस से अधिक मात्रा में बाहर नहीं भेजा जाता। कलेक्टिव फार्मिङ्ग (एकत्रित खेती) होने के कारण बहुत कम तेल बचेगा जो जर्मनी को भेजा जावेगा।

क्या रूस की उपज बढ़ाई जा सकती है?

उपरोक्त वर्णन से यह भली भांति साफ है कि रूस जर्मनी को लकड़ी, मैगनीज, मिट्टी का तेल और आवश्यकता पड़ने पर लोहे से सहायता कर सकता है। अब प्रश्न यह है कि जर्मन इंजीनियरों की सहायता से रूस के कारखानों का फिर से संगठन करके सामानों की बढ़ती की जाय।

१९३२ ई० में जर्मन इंजीनियरों द्वारा रूसी कारखानों का संगम किया गया था, जिससे रूस की उन्नति हुई किन्तु १९३४ ई० में जर्मन इंजीनियर जर्मनी वापस आये जिससे हिटलर की शक्ति बढ़ी। रुपया भी जर्मनी के हाथ तनख्वाह रूप में लगा। उधर रूस के कारखाने बन्द हो गये। दूसरी ओर युद्ध की तयारी करने के कारण जर्मनी के कारखाने भरसक कार्य कर रहे हैं। रूस और जर्मनी दोनों ही अपने कारखानों को बन्द नहीं कर सकते। हाल के सोवियट जर्मन संधि से तथा मोल्टाव के पत्र से विदित होता है कि रूस फिर से १९३०-३२ वाले संगठन को दोहराना चाहता है और अपने सारे कारखानों को फिर संगठित करना चाहता है। जर्मनी को उसके इंजीनियरों द्वारा रूस से १,०० ००,००० पौंड (१५,००,००,००० रुपया) प्राप्त हुआ था। जर्मन इंजीनियरों की मांग रूस, इटली, बालकन और स्कैन्डीनेविया आदि स्थानों पर हैं।

आने जाने के साधनों को सुगम बनाने में रूस की सहायता

यदि हम यह मान लें कि जर्मन इंजीनियरों की सहायता से रूस ने जर्मनी को युद्ध की मांग को पूर्ण करने के लिये मिट्टी के तेल, लोहा, मैगनीज और लकड़ी में वृद्धि की तो यह सामान जर्मनी किस प्रकार पहुँच सकेगा।

रूस की रेल की सड़कें

सोवियट रेलवे लाइनें अपने भीतरी प्रान्तों में सामान पहुँचाने के लिये बनी हैं, उनसे बन्दरगाहों पर सामान नहीं पहुँचाया जा सकता, जिससे सामान बाहर भेजा जा सके। प्रधान रोजगारी केन्द्रों के बीच ट्रङ्क लाइनों को दोहरी बनाने की कठिन समस्या रूस के सामने है, और साथ ही साथ उसी नई रेलवे लाइनों के बनाने की भी समस्या उसके सामने है।

सोवियट सरकार को ५८,५४९ किलोमीटर रेलवे लाइनें जार सरकार से मिली थीं। १९३८ तक सोवियट सरकार ने इनको बढ़ाकर ८६,५०० किलोमीटर किया। २६,९०० किलोमीटर दो, तीन और चार लाइनें एक साथ सोवियट सरकार ने बनाईं। सारे सामान का ९० प्रतिशत माल रेलों द्वारा जाता है। तृतीय पंचवर्षीय योजना के कारण रूस को ११,००० किलोमीटर नई इकहरी तथा ८,००० दोहरी नई रेलवे लाइन बनानी है। लोकोमोटिव इंजनों तथा बसों द्वारा रूस का बहुत अधिक सामान ढोया जाता है। रूस ने सामान ढोने के साधनों में बहुत बड़ी उन्नति संसार में की है। यह साधन जर्मनी तथा संयुक्त राष्ट्र के साधनों से तिगुने हैं।

मंचूरिया का सोया तथा मैगनीज जर्मनी पहुँचाने के लिये रूस निम्नांकित मार्गों का प्रयोग कर सकता है:—

काकेशियन प्रान्त का मिट्टी का तेल जर्मनी चार मार्गों से जा सकता है—(१) उत्तरी रूस की नहरों से, (२) रूमानिया होकर (३) डैन्यूब होकर (४) रूसी रेलों द्वारा।

नहरों का मार्ग लम्बा तथा घुमावदार है और साल में पांच छः महीने बरफ से जमा रहता है, इसलिये यह मार्ग का प्रयोग सीमित है। रूम सागर होकर रूस का तेल विदेश जाता था, वह मार्ग बन्द है। रूमानिया को दबा कर कुछ तेल इस मार्ग होकर कान्स्टाटा बन्दरगाह से रूमानिया तथा हंगरी रेलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा जर्मनी जा सकता है। आइरन गेट के प्रपातों दिसम्बर से फरवरी तक बरफ पड़ने, मुहाने के पास कम गहराई होने तथा अधिकांश जहाजों के चलने के कारण डैन्यूब के मार्ग का भी ठीक ठीक प्रयोग नहीं हो सकता। इसलिये सोवियट के रेलों पर ही मिट्टी का तेल जर्मनी जाना निर्भर है।

काकेशियन प्रान्त तथा जर्मनी की दूरी ३,५०० किलोमिटर है। जर्मनी को ८०,००,००० टन (२१,६०,००,००० मन) तेल की सालाना आवश्यकता है। इस प्रकार रोजाना २२,००० टन तेल जर्मनी पहुँचाने के लिये २२ ट्रेनों की आवश्यकता है। इन ट्रेनों को मार्ग में २५ दिन लगेंगे। इस प्रकार ५५० ट्रेनों की आवश्यकता है जो २७,५०० टैंक से सदैव लदी हुई चलती रहें। लौटती बार में गाड़ियां खाली आयेंगी इसलिये इनका नम्बर भी दुगना हो जावेगा। और ५५,००० टैङ्क कार्स की आवश्यकता होगी। सोवियट सरकार के पास इसके केवल आधे टैन्क कार्स हैं। शेष आधे की पूर्ति के लिये उन पर व्यय करना कहां तक मुमकिन है, जब कि युद्ध के पश्चात् वे कम हो जावेंगी। जर्मन इन्जीनियरों को केवल दो वर्ष इस कठिनाई को मिटाने के लिये दिये गये हैं। वे क्या कर सकेंगे, यह बात पाठकों को ध्यान से रखने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार मंचूरिया के सोया को जर्मनी पहुँचाने के लिये हिसाब लगाया जा सकता है। मंचूरिया से जर्मनी की दूरी ७००० किलोमिटर है। यह दूरी ५० दिन में तै की जा सकती है। जर्मनी में प्रति दिन ६५०० टन सोया पहुँचाने के लिये ६½ ट्रेनों तथा ३२५ बड़ी मोटरों की प्रति दिन आवश्यकता है कि वे सदैव सोया मंचूरिया से जर्मनी पहुँचाने का काम करती रहें। यह कार्य साइबेरियन रेलवे लाइन के लिये बहुत कठिन है जो सदैव गाड़ियों से भरी रहती है।

मैंगनीज़ का प्रश्न भी इसी प्रकार है। ७२०,००० टन मैंगनीज जर्मनी यूक्रेन से पहुँचाने के लिये २८ रेलगाड़ियों तथा १४४० मोटरों की आवश्यकता पड़ेगी। यूक्रेन तथा जर्मनी का मार्ग २००० किलोमिटर है और १४ दिन में यह मार्ग तै किया जा सकता है।

जो कुछ भी सामान रूस जर्मनी को देगा उसे रूसी, जर्मन सीमा पर अवश्य ही रेलों से उतार कर दूसरी रेलों या मोटरों पर चढ़ाना होगा। इस कार्य को करने के लिये मजदूरों की आवश्यकता है। पोलैंड की रेलों, पुलों आदि का जर्मनी ने तो पहले बमों द्वारा सत्यानाश कर दिया है। अब उसी की बर्बादी उसके बर्बाद का कारण हो रही है और सामान ले जाने में कठिनाई पड़ रही है। जर्मनी की रेलें स्वयं अपने देश की माँग १९३८ में पूरी नहीं कर सकीं।

सोया, मिट्टी का तेल और मैंगनीज यह तीनों वस्तुएँ सोवियट रेलवे रूस जर्मन मांग के अनुसार नहीं पहुँचा सकतीं।

जर्मनी किस प्रकार सामान का दाम चुका सकता है।

१९ अगस्त सन् १९३९ के संधि के अनुसार जर्मनी ने रूस को २०,००,००,००० मार्कस का कर्ज दिया है कि वह दो साल तक जर्मनी सामान खरीद सकता है। इस कर्ज का ९ भाग कच्चा सामान के रूप में चुकाया जा सकता है। रूस जर्मनी से उन्नत शील आधुनिक मशीनें तथा आधुनिक युद्ध के हथियार चाहता है। इस सोवियट मांग की जर्मनी कहां तक पूर्ति कर सकता है। यदि जर्मनी रूस के लिये सामान तयार करेगा तो उसे अवश्य ही अपने युद्ध के सामानों में कुछ काट छांट करनी पड़ेगी। यदि युद्ध इसी प्रकार धीरे धीरे चला और घोर संग्राम न हुआ तो जर्मनी के पास इतना युद्ध सामग्री इक्ट्ठा हो जावेगी कि उसे वह सामान बाहर भेजना पड़ेगा। जर्मनी के पास केवल ५०,००,००,००० मार्कस का खजाना था उस खजाने में कितना रुपया पोलैण्ड में में व्यय हुआ यह पता नहीं।

कुछ उपाय राएच सरकार धन बढ़ाने का कर सकती है। रूस को वह रुपया न दे कर बलगेरिया से आने वाली तम्बाकू को भेज सकता है और तम्बाकू के बदले बिसात खाने का सामान जर्मनी अपने यहां से बलगेरिया भेज सकता है। राएच सरकार तम्बाकू का प्रयोग डिक्री निकाल कर बन्द करा सकती है। किन्तु इस तरह इनके जीवन के साधनों में कमी होती जावेगी और अन्त में प्रजा कहां तक जीवन के साधनों तथा आवश्यकताओं की कमी कर सकेगी कहा नहीं जा सकता। जर्मनी अपनी जर्मन प्रजा के सामान, रुपया, पैसा और जायदाद पर अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार उसके हक़दार न रहने पर कर सकता है। इस प्रकार दूसरे देशों से संधि करके वह वहाँ के जर्मन निवासियों की जायदाद तथा रुपया ले जा सकता है जैसा कि जर्मनी ने जर्मन-एस्टोनियन इक़रारनामे में किया है। इस प्रकार जर्मनी को लगभग ५०,००,००,००,००,००० डालर (१,७५,००,००,००,००,००० रुपया) की आय हो सकती है, जिससे वह अपनी किसी प्रकार की भी आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है और दूसरे देशों से सामान मँगा सकता है।

उपरोक्त बातों से यह निर्णय किया जा सकता है कि :—

१—रूस जर्मनी की चर्बी, लोहा, रबर, रूई तथा कम मिलने वाली धातुओं की मांग को पूरा नहीं कर सकता।

२—रूस जर्मनी की, मैगनीज़, लकड़ी और भोजन के सामानों की मांग पूरी कर सकता है। रूस कितना जौ पैदा करके जर्मनी चारे के लिये भेज सकता है ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता।

३—जर्मनी को युद्ध के लिये रूस काफी मिट्टी का तेल दे सकता है, यदि जर्मनी रूस को मशीनों तथा इंजीनियरों से सोवियट कारखानों को पुनः संगठन करने में सहायता दे तो इस कार्य में दो साल लग जावेंगे।

४—वर्तमान समय में रूस जर्मनी को घोर संग्राम छेड़ने के लिये काफी तेल तथा सोया (चर्बी के लिये) नहीं दे सकता। रूस जर्मनी की इन चीजों की मांग को कुछ अंश तक पूरा कर रहा है। यदि जर्मनी घोर युद्ध छेड़ता है तो उसे अपने युद्ध को तेल के खज़ाने को अवश्य खाली करना पड़ेगा।

५—रूस जो कच्चा सामान जर्मनी को देगा वह उसके बदले या तो रुपया चाहता है या आधुनिक प्रथम श्रेणी वाली मशीनें तथा युद्ध के हथियार आदि सामान चाहता है। जर्मन कारखानों पर पहले से ही युद्ध के कारण काफी टैक्स लगा है। रूस से सामान आने में बहुत व्यय होगा। सामान मंगाने का व्यय सामान के मूल्य का तिगुना चौगुना होगा। जर्मन जहाज रूसी बन्दरगाहों में जाकर भी सामान ला सकते हैं। सब से सरल उपाय दाम चुकाने का यह होगा कि जर्मन सरकार जर्मन विदेशी जायदाद को बेच कर दाम चुकावेगी।

६—यदि युद्ध शीघ्र ही समाप्त होने को हुआ और घोर युद्ध छिड़ा तो रूस जर्मनी को आवश्यकतानुसार सहायता न दे सकेगा और यदि लड़ाई अधिक दिनों तक चला और रूसी कारखानों का पुनः संगठन हुआ तो अवश्य ही रूस सहायता दे सकेगा किन्तु पाठकों को यह भी याद रखने की आवश्यकता है कि यदि जर्मनी का घेरा दो वर्ष तक चलता रहा तो क्या जर्मनी की भीतरी स्थित अच्छी रह सकेगी और क्या रूस अपना देशी आवश्यकताओं का बलिदान जर्मनी के लिये कर सकेगा।

कई सालों से सोवियट सरकार अपने यहां से कच्चा माल तथा भोजन सामग्री बाहर भेज कर मशीनरी तथा रोजगार सम्बन्धी वस्तुएं खरीदता रहा। इसी कारण १९३० ई० में रूस में भोजन सामग्री की कमी होगई थी, किन्तु सोना पाने के कारण अब सोवियट की दशा सुधर गई है। सोवियट सरकार की योजना यह है कि वह अपने देश के कारखानों को उन्नति शील बना कर संसार के धनी देशों को दुनिया के बाजार से निकाल दे।

स्टैलिन ने अपनी योजना में घोषणा की थी कि सोवियट सरकार सभी देशों से व्यापार करेगा। इसलिये रूस अपने को योरुपीय युद्ध से बचाने को कोशिश कर रहा था, किन्तु बाल्टिक सागर की आधीनता तथा कुछ और बातों के कारण फिनलैंड से उसे युद्ध करना पड़ा।

रूस, इंगलैंड, फ्रान्स और हालैंड आदि धनी देशों की हार देखना चाहता है। वह अपने साम्राज्य वाद का प्रचार भी करना चाहता है रूस धनी वाद तथा साम्राज्यवाद का नाश चाहता है, इसलिये यदि जर्मनी ने उसके मत को माना और रूसी सहायता चाही तो अवश्य ही रुस अपने भीतरी योजना का खून करके जर्मनी को हर प्रकार से सहायता देगा, किन्तु यह सहायता रूस तभी देगा जब जर्मनी बोलशेविक राष्ट्रीय साम्राज्यवाद नैशनल सोशलइज्म को अपने देश में स्थान देगा। युद्ध जितने अधिक समय तक चलेगा उतनी ही अधिक सहायता रूस जर्मनी की कर सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिब्राल्टर

जिब्राल्टर दुनिया के महत्व-पूर्ण स्थानों में अपना एक विशेष स्थान रखता है। क्या भौगोलिक, क्या ऐतिहासिक, क्या व्यापारिक, क्या सामरिक, और क्या सांस्कृतिक, सभी दृष्टि कोणों से यह स्थान अपने समकक्ष अन्य स्थानों से कहीं अधिक महत्व शाली है। नहर स्वेज, दर्रे दानियाल, नहर कील और अमरीका की नहर पनामा आदि कोई भी स्थान इसका मुकाविला नहीं कर सकता।

जिब्राल्टर को अँग्रेजी में 'की आफ दी मेडीटरेनियन' "Key of the Meditarranean" अर्थात 'भूमध्य की चाबी' कहते हैं। इसका यह नाम बिलकुल सार्थक है, क्योंकि जिब्राल्टर का जल-डमरूमध्य और दुर्जेयदुर्ग जिसके अधिकार में होता है वही भूमध्य सागर का अधिपति समझा जाता है। आज मुसोलिनी शक्ति-सम्पन्न होता हुआ भी अँग्रेजों से खुल्लमखुल्ला इसी लिये नहीं भिड़ना चाहता कि उसके जल-पोता का गमनागमन भूमध्य सागर पर निर्भर है और भूमध्यसागर की छोटी बड़ी दोनों चाबियां [जिब्राल्टर और स्वेज] अँग्रेजों के हाथ में हैं। इसके अलावा माल्टा आदि टापुओं में अँग्रेजों के सैनिक अड्डे हैं। ऐसी दशा में इटली का अँग्रेजों से किसी प्रकार का लोहा लेना मानों अपने रास्ते में स्वयं काँटे बो लेना है। यह जिब्राल्टर की महत्ता का तात्कालिक प्रमाण है। 'भूगोल' के पाठकों को जिब्राल्टर का भौगोलिक परिचय तो अन्य लेखों और भूगोल की पुस्तकों से हो चुका होगा। आज इस लेख में उसका ऐतिहासिक परिचय देने का यत्किञ्चित् प्रयास किया जायगा। आशा है, सहृदय पाठकों को यह लेख किसी न किसी अंश में अवश्य ही रुचिकर होगा।

इति वृत्तात्मक परिचय—जिब्राल्टर का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है। स्पेन वालों ने मूरों को पराजित कर बड़ी कठिनाई से इसे हस्त-गत किया था। उस समय युद्ध के विचार से इसका इतना महत्त्व न था, जितना कि आज है। स्पेन वाले जिब्राल्टर की स्थिति देखकर वहां अधिक सेना रखने की जरूरत नहीं समझते थे। केवल थोड़े से सिपाही उसकी रक्षा के लिये नियुक्त रहते थे। अठारहवीं शताब्दी की बात है कि एक व्यक्ति ने स्पेन की गद्दी का उत्तराधिकारी होने का दावा किया। एडमिरल रूकी नामक अँग्रेज सेनापति ने स्पेन वालों की पारस्परिक फूट से लाभ उठाने का सुअवसर पाकर (२१ जुलाई १७०४) थोड़े से सिपाही ले कर इस दुर्गम स्थान पर धावा बोल दिया और केवल तीन दिन में जिब्राल्टर के क़िले को अपने अधिकार में कर लिया। इस विजय का घटना-क्रम इस प्रकार है :—

एडमेरल रूकी ने स्पेन के नगर केडिज पर घेरा डाल दिया, यह एक साहसी पुरुष था। अपने जहाज़ से वह जिब्राल्टर के शिखरों को देखा करता था। यहीं से उसके मन में यह महत्वकांक्षा उत्पन्न हुई कि यदि इन चोटियों पर अँग्रेज़ी तोपें रहें तो शत्रु कभी बच कर नहीं निकल सकता। जब उससे इस बात का पता लगा लिया कि जिब्राटर के किले में बहुतही कम फौज रहती है, तो वह मारे खुशी के उछल पड़ा।

रूकी ने अपना विचार अपने दूसरे अफसर एडमिरल वाइङ्ग पर प्रकट किया, परन्तु उसने इसका विरोध किया। रूकी अपने विचार पर डटा रहा। एक दिन उसने सहसा वाइङ्ग को आज्ञा दी कि वह १६ अँग्रेज़ी, ६ डच जहाज़ों की सहायता से जिब्राल्टर पर आक्रमण कर दे।

वाइङ्ग ने आज्ञा का पालन किया। अँग्रेज़ी बेड़ा खाड़ी में घुस गया। स्पेन वालों की ओर से केवल एक बन्दूक छूटने की आवाज़ हुई, लेकिन इससे वाइंग ज़रा भी विचलित न हुआ। एक घंटे के भीतर ही २००० जहाज़ी सैनिक स्थल के उस भाग पर उतरे जहां जिब्राल्टर खुश्की से मिलता है। रणभेरी बजी और सैनिक नगर की ओर चले। तत्कालीन स्पेनिश गवर्नर डान डिगो डो सेलीनस ने भयावनी स्थिति का अनुभव किया। उसके पास केवल ५६ सैनिक थे। जिनमें से ३० छुट्टी पर गये थे। गवर्नर के बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार चेतावनी देने पर भी स्पेनिश सरकार ने उधर ध्यान नहीं दिया, न फ़ौज भेजी, और न कोई लड़ाई का सामान ही भेजा। डान डिगो के सामने बड़ी कठिन समस्या उपस्थित हो गई। फिर भी उसने कुछ नागरिकों की सहायता से अँग्रेज़ एडमिरल का सामना किया। परन्तु उसकी सेना के पैर उखड़ गए। तब वाइङ्ग ने जिब्राल्टर किले के कमांडर डान डिगो के पास किले की कुञ्जी देकर आत्मसमर्पण करने का सन्देश कहला भेजा। राज-भक्त गवर्नर ने मर जाना अच्छा समझा पर किले की कुञ्जियां नहीं दीं।

इससे रुष्ट हो कर रूकी ने अपना जहाज़ी बेड़ा किनारे के निकट लगाकर जोरों से गोलाबारी शुरू कर दी। इसी समय संयोग से किले के मेगजीन में आग लग गई। जिससे ३०० अँग्रेज सिपाही हताहत हुए। यद्यपि इस घटना से अँग्रेज़ मल्लाहों में घबड़ाहट फैल गई पर अन्त में विजय-लक्ष्मी उन्हीं को प्राप्त हुई और जिब्राल्टर पर यूनियन जैक फहराने लगा। स्पेन वालों की असावधानी और उदासीनता से ही यह अजेय दुर्ग अँग्रेज़ों के हाथ लगा और स्पेन के देशभक्त डानडिगो की एक भी न चलने पाई। कुछ ही दिनों में अँग्रेज़ों ने किला बन्दी करके इसे बहुत ही मज़बूत बना लिया यह इतना भयङ्कर स्थान है और इसके पहाड़ी किले और प्राचीर इतने सुदृढ़ हैं कि शत्रु इसे आसानी से नहीं ले सकता और उनके लिए अत्यन्त दुर्गम और दुरारोह स्थान है।

जिब्राल्टर जिस व्यक्ति के नाम पर जीता गया था अँग्रेज़ों के सौभाग्य से वह स्पेन का उत्तराधिकारी न हो सका। अन्यथा यह दुर्जेय स्थान अँग्रेज़ों के हाथ न आता। आज स्पेन की नई सरकार जिब्राल्टर वापस मांगती है, लेकिन अँग्रेज़ ऐसे महत्व शाली स्थान को किसी दशा में भी वापस करने को तैयार नहीं है। यह उनके जहाजी बेड़े का खास अड्डा है। हवाई जहाज़ भी इस स्थान पर काफी संख्या में रहते हैं। अँग्रेज़ों ने इसकी रक्षा की पूरी तैयारी भी कर ली है। यदि कहीं यह स्थान अँग्रेज़ों के हाथ से निकल जाय तो ब्रिटिश साम्राज्य को ऐसी भारी क्षति उठानी पड़े जिस की पूर्ति कठिनाई से हो सकती है।

जिब्राल्टर-विजय की इस छोटी सी ऐतिहासिक घटना में जिस तरह एडमिरल रूकी स्वदेश-भक्ति सराहनीय है, उसी तरह डान डिगो की स्वामि-भक्ति भी श्लाध्य और अनुकरणीय है।

—रामनारायण मिश्र 'विशारद'

एटकामा रेगिस्तान

दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी किनारे पर पायटा ५ दक्षिणी अक्षांश से काल्डेरा-कापियापो, २७ दक्षिणी अक्षांश तक वर्षा का अभाव है। यहां शायद कहीं कभी वर्षों में कभी अनिश्चित वर्षा हुई हो। अत पीरू के दक्षिणी भाग और उत्तरी चिली में १५०० मील तक रेगिस्तान फैला हुआ है। यह रेगिस्तान समुद्र-तट से एंडीज पर्वत १०,००० फुट की ऊँचाई तक चला गया है। अतः इसकी चौड़ाई प्रायः १०० मील है।

एंडीज की पिघली हुई बरफ का पानी वहां लाने वाली छोटी २ कुछ नदियां केवल उत्तरी भाग पीरू में मिलती है। उत्तरी चिली में इन नदियों की कमी है। इसी से पृथ्वी के भीतर भी पानी की कमी है। केवल कहीं कहीं २४० फुट गहरा खोदने पर कुओं में खारा पानी मिला है।

उष्ण कटिबन्ध में स्थित होने पर भी इस रेगिस्तान का ताप क्रम अधिक ऊँचा नहीं है। दक्षिण की ओर से आने वाली हम्बोल्टया पीरू की ठंडी धारा इस किनारे को काफी ठंडा रखती है। जैसे जैसे दक्षिणी पूर्वी ट्रेड हवाएँ ऊपर का ठंडा पानी विषुवत् रेखा की ओर ले जाती हैं वैसे वैसे नीचे का अधिक ठंडा पानी उमड़ कर ऊपर आ जाता है। किनारा एक दम गहरा होने के कारण यह ठंडी धारा एक दम स्थल को छूती हुई आगे बढ़ती है। स्थल गरम होने के कारण समुद्र से आने वाली हवाओं की भाप को पानी या मेंह के रूप में बरसने का अवसर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है। दिन के समय समुद्र की शीतल हवा स्थल की ओर से आने वाली कुछ गरम हवा समुद्र के ठंडे पानी को छूती है। इससे इस तट पर कुछ कुहरा अवश्य हो जाता है।

समुद्र-तल से ८००० फुट की ऊँचाई तक इस रेगिस्तान में वनस्पति का एक दम अभाव है। ८००० फुट से अधिक ऊँचाई पर शीत काल में कभी कभी बादल आकर टिक जाते हैं। इसलिये यहाँ चट्टानों की दरारों में रामबाँस और दूसरे कांटेदार झाड़ मिल जाते हैं।

इस खुश्क प्रदेश की प्रधान सम्पत्ति शोरा और गुवानो चिड़ियों का बीट है। शोरा तटीय पर्वत श्रेणी के पूर्वी भाग में पाया जाता है। कच्चे शोरे केलिची में नमक और रेत मिला रहता है। गरम पानी में पहले इसे धोकर नमक और बालू अलग कर लेते हैं। फिर इसे गरम पानी में उबालते हैं। उबालते २ पानी भाप बन कर उड़ जाता है। सफेद शोरा शेष रह जाता है शोरे के कारबार के लिये सस्ते कोयले, साफ पानी, बोरों और सस्ते मज़दूरों की आवश्यकता होती है। पानी पहले जहाज़ों के पास से नलों के द्वारा लाया जाता था। अब यह एंडीज़ की बर्फीली धाराओं से आता है। कोयला और मज़दूरों के लिये भोजन दक्षिणी चिली से आता है।

कहा जाता है कि जहां इस समय शोरे का प्रदेश है वहाँ पहले समुद्र था। धीरे धीरे ज़मीन ऊँची हुई और अनूप बने। इनमें असंख्यवार खारे पानी के पौधे उगे और नष्ट हुये। अनूपों और दलदलों के सूखने पर सड़े हुये पौधों से नाइट्रेट सोडा और आयोडीन बन गया। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस प्रदेश में अक्सर बिजली के कड़कने से भी शोरा बनने में मदद मिली।

प्राचीन इन्का लोगों को इन शोरे की खानों का पता था। लेकिन उन्होंने इनका प्रयोग करने में कोई उत्साह नहीं दिखलाया। इन खानों के विकास का आरम्भ १८२६ में एक फ्रांसीसी ने किया। १८७० में एक अमरीकन ने इस कारबार से बहुत धन कमाया। अन्त में वह इंगलैण्ड चला गया। इसके बाद इंगलैण्ड वालों ने इस कार बार में बहुत सी पूंजी लगाई। इस समय यहां पचास करोड़ से अधिक रुपया अकेले इंगलैण्ड का लगा हुआ है। दूसरा नम्बर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का है। यहां १०० से ऊपर कम्पनियां काम करती हैं। इनकी अलग अलग छोटी २ रेलवे लाइनें हैं। जगह जगह पर असीना या शोरे के कारखाने हैं। इनमें चिली के कई हज़ार मज़दूरों को काम मिलता है। इनके कर (टैक्स) से चिली सरकार की अधिकांश आमदनी होती है। जहां पहले सुनसान तट था वहां पिसागुआ जूनिन, केलेटा, ब्यूएना इक्वीक, पेटिलोस, टोकोपिला मेज़ीलोन्स, एन्टोफेगस्टा, पपोंसो और टलटल के बन्दरगाह आबाद हो गये हैं। इन बन्दरगाहों से रेलवे लाइनें सपाट पहाड़ों पर चढ़ कर शोरे की खानों तक गई हैं। केलिची या कच्चा शोरा एक फुट से १० फुट की गहराई तक पाया जाता है। पहले एक लड़का इनमें छोटे सूराख करता है। फिर छेदों में बारूद भर कर आग लगा दी जाती है। इसके भीतर के टुकड़े निकल आते हैं। इन्हें छाँट कर मज़दूर खच्चर गाड़ियों में लाद लेते हैं और आफीसीना या कारखानों तक पहुँचाते हैं। वहाँ इन्हें तोड़ कर बारीक पीसते हैं फिर गला कर साफ पीसते हैं।

इस प्रदेश का दृश्य बड़ा वीरान है। डार्विन महाशय का कहना है कि यह अत्यन्त विकराल रेगिस्तान है। यहां थक कर मर जाने वाले बहुत से लद्दू जानवरों की हड्डियाँ और सूखी खालें पड़ी हुई हैं। लाशों को खाने वाले गिद्ध को छोड़ कर मैंने यहाँ किसी, पक्षी, कीड़े मकोड़े या चौपाये को नहीं देखा :—

गुआनो उन स्थानों पर मिलता है जहाँ समुद्री मछलियाँ खाने वाली चिड़ियाँ रात को बसेरा लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जातियाँ

संयुक्तराष्ट्र अमरीका में जो लोग भ्रमण करने के लिये जाते हैं वे वहां के न्यूयार्क, बोस्टन, शिकागो, फिलेडलफिया, क्लीवलैंड, डिट्राइट आदि बड़े नगरों का भ्रमण करते हैं और वहाँ के छोटे नगरों, गाँवों तथा देहात का भ्रमण नहीं करते। वे लोग उत्तर तथा पूर्व की ओर की बातों का अवलोकन करते हैं और यह देखने का प्रयत्न नहीं करते कि संयुक्तराष्ट्र का पश्चिमी तथा दक्षिणी भाग कितना एक दूसरे से अलग है। एक विद्वान अँग्रेज़ का कथन है कि अमरीकन लोगों की उत्पत्ति ऐन्गलो-सैक्सन जाति से है। उसका कहना है कि यदि अँग्रेज़ों की उपज रोमन, नार्मन, ब्रिटेन और डेन्स जातियों से है तो अमरीकन जाति की उत्पत्ति आइरिश, इटैलियन, स्लाव और जर्मन जातियों से है। यह बात अँग्रेजों के लिये बिलकुल ठीक हो सकती है किन्तु अमरीकन जाति के लिये यह सही नहीं है।

१९१० ई० की जन गणना के समय अमरीका के अधिकांश नगरों के निवासी श्वेत जाति से न थे उसके विपरीत अधिकांश नगरों में बीच वाली जातियों के ३/५ लोग थे। छोटे नगरों, गावों और देहात में बीच वाली जाति के ३/५ भाग लोग थे। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह बात उत्तरी संयुक्तराष्ट्र के बारे में है क्योंकि बड़ा कारखाने वाला प्रदेश है और वहाँ अधिकांश विदेशी लोग बसे हैं। एक दूसरे अँग्रेज के कथनानुसार अमरीकन जाति सारे योरुप के जातियों, एशिया की जातियों तथा अफ्रीका की जातियों के संघर्ष से बनी है। अमरीकन सेना के एक सदस्य का कथन है कि अमरीकन जाति के अन्दर लाखों की संख्या में इटैलियन, पोलिश तथा आइरिश और जर्मन जातियों के लोग हैं। जर्मन तथा आइरिश जाति वालों की संख्या अधिक है।

यदि अमरीकन जाति अँग्रेज़ जाति से भिन्न है तो उसका कारण वर्तमान समय के विदेशी लोगों के अमरीका में जाने का नहीं है वरन् यह भिन्नता २०० साल के संघर्ष तथा ऐतिहासिक और स्थानीय प्रभावों के कारण है। जितने लोग इस बात का निर्णय करने के लिये बैठते हैं कि अमरीकन लोग किस जाति के हैं वे इस बात को कदाचित् भूल जाते हैं कि सैकड़ों सालों तक इङ्गलैंड के लोगों का अधिकार अमरीका की भूमि पर रहा और वहां पर अंगरेजी रीति रिवाज प्रचलित रहे। और अंग्रेजी सभ्यता के अनुसार ही अमरीका की सरकारें बनीं और सामाजिक जीवन की बनावट भी उसी के अनुसार ही हुई। विद्या, धर्म, नियम और सभ्यता सभी में अंग्रेज़ जाति का प्रभुत्व रहा। यहां तक कि जो संस्थाएँ अंग्रेज़ जातियों के विरुद्ध स्थापित हुईं उनके ध्येय और नियम अंग्रेज़ों के से रहे। पूर्व के सघन नगरों से लेकर पश्चिम के छोटे से छोटे गांव में भी ३०० साल से अंग्रेज जाति का प्रभाव है। जैसा कि कुछ लोगो का ख्याल है कि धीरे धीरे अंग्रेज़ों का प्रभुत्व कम हो रहा है और अमरीका में उसका अन्त हो जावेगा। यह बात नहीं है और अंग्रेजी प्रभुत्व का सर्वनाश नहीं हो सकता।

अमरीका को देखने वाला कोई भी निश्चिन्त व्यक्ति यह भूल जाता है कि वर्तमान समय के सभी बड़े राष्ट्र कई जातियों के संघर्ष से बने हैं। लार्ड मैकाले ने अंग्रेज़ी इतिहास को लिखते हुये कहा है कि "इंगलैंड में संसार के सभी देशों से अधिक जातीय वैमनस्य रहा है और उस वैमनस्य का प्रभाव भी वहाँ और स्थानों से कहीं अधिक रहा है। प्रोफेसर फ्लयूर (Fleure) ने अपने लेख में वर्णन किया है कि रोमन जाति के पहले रहने वाली जाति का कितना प्रभाव अंग्रेज़ों की रीति रिवाज पर है। रोमन जाति के पहले वाली जाति भी कई जातियों से मिल कर बनी थी। यदि उसका और रोमन जाति का प्रभाव अब तक अंग्रेज़ जाति पर कायम रह सकता है तो अमरीकन जाति पर अंग्रेज जाति का प्रभाव कायम रहना कोई बड़ी बात नहीं है और उसका इतना जल्दी अन्त नहीं हो सकता। उसके लिये हज़ारों वर्ष की आवश्यकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि यही नियम अमरीका के उन भागों पर भी लागू होगा जो अंग्रेज द्वारा बसाये गये हैं। १७९० की जन गणना के हिसाब से संयुक्त राष्ट्र की जन संख्या ४० लाख थी उसमें अंग्रेज जाति की अधिकता थी। ब्रिटेन निवासी, पियूरिटन, कैवेलियर्स, क्वैकर्स, पढ़े लिखे, अजनबी, और जानकार सभी प्रकार के लोग उसमें थे। तो भी यह बात अवश्य ही ठीक है कि पहले पहल जो लोग अमरीका में जाकर बसे वे साधारण मनुष्यों से कहीं बढ़ कर थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पश्चात् डच, जर्मन, स्वीडिश, स्काट, आयरिश हियूजोनाटस और दूसरी छोटी छोटी जातियां आकर बसीं। महटन द्वीप में (जो कि अब महटन बरो है) डच जाति का राज्य उस समय था इसलिये डच जाति की अधिकता थी। डच जाति के साथ ही साथ अँग्रेज हियूजोनार, जर्मन आइरिश और स्विस लोग भी रहते थे। अभी हाल ही में हियूजांनस और वैलून्स लोगों ने इस बात का विरोध किया था कि जब न्यूयार्क की ३०० साल वर्ष गांठ मनाई गई तो उन्हें स्थान नहीं प्रदान किया गया। कहा जाता है कि वर्तमान न्यूयार्क जिस भांति आज अमरीकन है उसी भांति ३०० साल पहले भी था। रूजवेल्ट ने कहा है कि निवासियों अथवा अँग्रेज़ों की संख्या वहीं अधिक रही हो। स्वयं रुज़वेल्ट अपने को अँग्रेज़ खून से नहीं बतलाता यह कहता है कि वह डच, हियूजोनार और आइरिश जातियों के संघर्ष से है। न्यूयार्क के आठ वर्तमान व्यक्तियों के जाति की खोज करने पर मालूम हुआ कि वे सभी दूसरे दूसरे जातियों के हैं। अमरीकन स्वतंत्रता की घोषणा के समय जिन ५६ व्यक्तियों ने गाना गाया था उनमें से १८ व्यक्ति ऐसे थे जो अंग्रेज़ जाति से नहीं थे।

उनके अन्दर स्वेडिश, डेलावेर और वेल्स थे जो फिलेडेलफिया के इधर उधर के निवासी थे। स्काच आइरिश जाति की संख्या इतनी अधिक थी कि जिस समय संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई उस समय उनकी कम से कम ५०० बस्तियाँ थीं। वे चारों ओर फैले हुए थे और खास कर मध्यवर्ती तथा दक्षिणी बस्तियों में थे। जर्मन लोग भी बहुत पहले से जाकर बसे और उनका अमरीका में जाना बहुत समय तक जारी रहा और वे चारों ओर फैल गये। जर्मन लोग पेंन्सिलवेनिया में जाकर बसे जहां पर वे पेंन्सिलवेनिया "डच" के नाम से प्रसिद्ध हैं। न्यूयार्क में पैलेस्टाइन के निकाले लोग भी काफी संख्या में जाकर बसे। जर्मन लोग न्यूजेर्सी मेरीलैण्ड, बरजीनिया, कैरोलिन्स और जार्जिया में जाकर बसे थे।

जिन जातियों का वर्णन ऊपर किया गया है उनमें अंग्रेज़ों को छोड़ कर सभी की संख्या बहुत कम थी किन्तु यदि उनकी औलाद और बाल बच्चों को देखा जाय तो वे बहुत ही आवश्यक जातियों में हो जाते हैं। धीरे धीरे वे काफी संख्या में बढ़ गये हैं। इन जातियों से अमरीका के बड़े २ नेता पैदा हुए। स्काच आइरिश जाति के बहुत से बड़े बड़े नेता हुये हैं और कई एक प्रेसीडेन्ट भी हो चुके हैं। हेनरी कैबोर लाज एक सेनेटर का कथन है कि हियूजोनार संस्था ने अपनी संख्या के अनुसार दूसरे जातियों के मुकाबले में कहीं अधिक योग्य पुरुष पैदा किये हैं। जान जे अलिक्ज़ेन्डर हैमिल्टन, नान टेलर, जेम्स ए० गारफील्ड आदि राजनैतिक नेता तथा माडेर (Maury) डाना और ले कोन्टे, थारियू, लांग फिलो, व्हीटियर आदि आदि विद्वान इसी जाति से हुये हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि अँग्रेज़ और दूसरी योरुपीय जातियां मिल कर एक नई अमरीकन सभ्यता भविष्य में पैदा करेंगी।

१७९० से अमरीकन सिविल वार (गृह युद्ध) तक जो लोग अमरीका में गये। और टिक रहे :—

पहले ३० वर्षों में १७६० से १८२० ई० तक में बाहर से अमरीका जाने वालों में खास अंग्रेज़ जाति थी इनकी संख्या उस समय दो लाख थी। उस समय से आज तक बराबर उस जाति की बढ़ती होती आ रही है। छोटी छोटी जातियां अमरीका में बस जाने के कारण अब काफी बड़ी हो गई हैं।

१८२० ई० के बाद आइरिश तथा जर्मन लोग आने लगे और १८६० तक उनकी संख्या काफी अधिक रही। आलू की उपज न होने के कारण तथा काल पड़ने के कारण १८४० के बाद आइरिश लोग पश्चिम की ओर हटने लगे। १८२० ई० के बाद से आइरिश लोग अमरीका के खेतों में काम करने के लिये लग गये और समाज का काम भी करने लगे। आइरिश लोगों ने ही जंगल काटे, सड़कें तथा रेलें बनाईं, खेती का काम और दूसरे रोज़गार किये। गृह-युद्ध के बाद तक आइरिश लोगों की प्रधानता प्रत्येक कार्य में रही।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, जर्मनी के अन्दर जो राजनैतिक तथा दूसरे आन्दोलन हुये उसके कारण जर्मन लोगों ने अत्याचार से परेशान होकर अपना देश छोड़ दिया और संयुक्त राष्ट्र के उत्तरी भाग में आ बसे इन आने वालों में अधिकाँश लोग दक्षिणी जर्मनी के निवासी थे। यह लोग बड़ी अच्छी प्रकृति वाले तथा ताबेदार कार्यकर्ता थे।

नए आने वाले :—

१८७० ई० के बाद आयरलैण्ड के निवासी अधिक से अधिक संख्या में आने लगे और उनकी संख्या अमरीका के नगरों में बहुत ही गई। आइरिश लोगों ने मज़दूरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम नहीं किया। वे लोग अपने धन तथा विद्या की बदौलत भूमिपति बन गये। उन लोगों ने व्यापार आरम्भ किया, नौकरियां करने लगे और राजनैतिक क्षेत्र में भी घुस पड़े।

१८८० तक जर्मनी से आने वालों की संख्या अधिक रही उसके बाद धीरे धीरे उनका आना बन्द हो गया १८९० के बाद से केवल १० लाख जर्मन लोग अमरीका में जाकर बसे हैं इससे साफ जाहिर है कि कितने जर्मन अमरीका में हैं। कुछ लोगों का कहना कि जर्मनों की संख्या अमरीका में अधिक है जो पुराने जर्मन निवासी थे। यद्यपि उनकी संस्थाएं हैं और वे अपने रीत-रिवाज के अनुसार काम करते हैं तो भी वे अमरीकन सरकार के बड़े ताबेदार हैं। वे लोग अपने को अमरीकन कहना अधिक पसन्द करते हैं।

१९०० से १९१० के बीच अमरीका ने ८० लाख विदेशी अमरीका में आकर बसे। जो मनुष्य स्वस्थ तथा अच्छे चाल चलन वाला होता था। उसे संयुक्त राष्ट्र में जाने की आज्ञा मिल जाती थी। इस कारण लगभग १० लाख लोग सालाना वहां जाने लगे। १९१० ई० में अमरीका में १ भाग विदेशी थे। १० साल के अन्दर ही विदेशियों की संख्या ३० प्रतिशत बढ़ गई। १९२० ई० की गणना के अनुसार नीचे का चार्ट दिया जाता है जिससे पता लगेगा कि कितने विदेशी वहाँ पर थे।

संसार के सभी देशों के लोग		१३,७१२,७५४
उत्तरी पश्चिमी योरुप	,,	३७,६४,५५५
मध्यवर्ती योरुप	,,	४,३६५,१८१
पूर्वी	,,	१,८०६,५७३
दक्षिणी	,,	१,६०२,७८१
कनैडा	,,	१,११७,८७८
मैक्सिको	,,	४७८,३८३

इन संख्याओं से विदित है कि संयुक्त राष्ट्र में विदेशी लोगों की संख्या किस भांति बढ़ी है। यह बात नहीं कही जा सकती कि यदि कोई रोक न लगाई जाती तो विदेशियों की संख्या कितनी अधिक बढ़ जाती। महायुद्ध के होते हुये और अकरीका के अन्दर आने वालों के लिये क़ानून बनते हुये भी १९१०-२० तक में ४ लाख आदमी आये। यह संख्या इससे पहले वाले से बहुत कम थी।

आयरलैण्ड से १८४०-५० के बीच १० लाख आदमी अमरीका में जाकर बसे थे १९१० से १९२० तक में जाने वालों की संख्या घटकर एक लाख पचास हजार हो गई। इटैलियन लोग १८८० के पहले बहुत कम अमरीका में जाते थे। किन्तु १९१०-२० के बीच २० लाख इटैलियन तथा १६ लाख रूसी लोग जाकर बसे।

यदि हमें विदेशी लोगों की ठीक स्थिति जाननी है तो यह आवश्यक है कि कुछ और अधिक छान बीन करें। अमरीका के अधिकांश स्वेत चमड़े वाले लोग ऐसे हैं। जिनके माता पिता दूसरे देशों में पैदा हुये थे। उसके बाद एक बड़ी संख्या मिश्रित लोगों के पश्चात् उनका नम्बर आता है जो ५० साल के भीतर अमरीका में पैदा हुये हैं इन लोगों के दादा और दादी आदि विदेशी रहे होंगे।

मिश्रित तथा विदेशी माता पिता वाले स्वेत मनुष्यों की जन-संख्या १९२० ई० में एक करोड़ ५ लाख थी। यदि इसमें विदेश में पैदा हुये लोगों की संख्या मिला दी जाय तो कुल जोड़ ३ करोड़ हो जाता है इस प्रकार पता चलता है कि अमरीकन लोगों के बीच में अधिकांश भाग विदेशी लोगों का है। अब हमें राष्ट्रीयता के नियमों का अध्यन की आवश्यकता है। उत्तरी और मध्यवर्ती योरुप के अधिचांश लोग जो संयुक्त राष्ट्र में जाकर बसे हैं। वह वहां के प्राचीन निवासियों के भाई हैं। विदेश में पैदा हुये वाले वालों में लगभग १० लाख अंग्रेज़ हैं। २॥ लाख स्काच एक लाख से ऊपर आइरिश १० लाख से अधिक लोग स्कैन्डीनैविया के निवासी और लगभग ५ लाख आदमी बेल्जियम, हालैण्ड, फ्रांस और स्विटज़रलैण्ड के निवासी हैं। जर्मन लोगों की संख्या लगभग ७ लाख है। प्राचीन जर्मन निवासी जो अमरीका में जा बसे हैं उनके औलाद की गणना भी जर्मनों में की जाती है उनकी संख्या काफी है। यह लोग अपने कामों और रहन-सहन के अनुसार जर्मन नहीं वरन् अमरीकन है। १८९० से १९२० तक जर्मन लोगों की संख्या लगभग १३ लाख से घट गई। इसी प्रकार अंग्रेज़ तथा आइरिश लोगों की संख्या भी है।

१७९० की जनगणना के अनुसार आदि अमरीकन लोगों की औलाद की संख्या :—

अमरीकन लोगों की चौथाई संख्या उन लोगों की है जो १८ हज़ार अंग्रेज़ पिटूरियन मसाचसेटस और कनेक्टीकट में १६१८ तथा १६४० के बीच आकर बसे थे। लोगों का कहना है कि आदि अमरीकन लोगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या धीरे धीरे कम हो रही है और उनका नाम मिटने वाला है और विदेशी लोगों की संख्या अमरीका में अधिक से अधिक हो रही है इसलिये वह विदेशियों का निवास स्थान ही रह जायेगा। जान मिस्के के कथनानुसार १६४० ई० में न्यू इङ्गलैण्डर्स की औलाद के दो करोड़ लोग संयुक्त राष्ट्र में थे।

ह्वाइट (श्वेत) आदमियों की उत्पत्ति प्राचीन लोगों और बाद के आने वालों से हुई है। वह लोग उनकी औलाद से हैं जो १७१० ई० में अमरीका में जा बसे थे।

जनसंख्या की गणना के विद्वान लोगों ने अपने हिसाब के अनुसार प्राचीन अमरीकन लोगों की जनसंख्या निम्न-लिखित निकाली है जो अब तक जीवित है।

१६०० की गणना के अनुसार	३,७२,६०,०००
१६१० ,, ,,	४,२४,२०,५००

प्राचीन अमरीकन लोगों की औलाद ४,७३,३०,००० १६२० में थी इसमें यदि व्हाइट आदमियों की संख्या भी जोड़ दी जाय तो संयुक्त राष्ट्र की सम्पूर्ण जनसंख्या की आधी हो जाती है, और यदि इसमें बाद में आने वाले उसी वर्ण वालों की संख्या भी जोड़ दी जाय तो अमरीकन लोगों की संख्या काफी अधिक हो जाती है। प्रत्येक दसवें साल अमरीकन लोगों की संख्या ११ अथवा १२ प्रतिशत के हिसाब से बढ़ती है।

संयुक्त राष्ट्र के भिन्न भिन्न भागों में यह बढ़ती भी भिन्न है। न्यूयार्क, मेसाचूसेट्स (Massachusetts) अथवा उत्तरी भाग में दक्षिणी भाग की अपेक्षा अधिक विदेशी लोगों की जनसंख्या है। दक्षिणी६ राज्यों में बाहर से आने वालों की संख्या इतनी कम है कि व्हाइट लोगों की जितनी संख्या बढ़ी है वह सब वहां के आदि निवासियों की औलाद हैं। उदाहरणार्थ उत्तरी तथा दक्षिणी केरोलीना के राज्य लिये जा सकते हैं। इन दोनों राज्यों की जनसंख्या ४० लाख से अधिक है जिसमें विदेशी लोगों की संख्या १४ हज़ार से भी कम है।

विदेशी जन संख्या का विभाग

विदेशी लोगों की संख्या में उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका में बहुत बड़ा अन्तर है। दक्षिण के राज्यों में विदेशी लोगों की संख्या एक से चार प्रतिशत तक है। इन में ४८ राज्यों में से १६ राजा ऐसे हैं जहाँ विदेशियों की संख्या इसी प्रकार है।

न्यूयार्क नगर की जनसंख्या ८० लाख से अधिक है। यहां पर विदेशी लोग अधिक से अधिक संख्या में आकर बसते हैं। १६०६ ई० में इस नगर में ८,८०,००० आदमी आकर बसे थे। यह विदेशी लोग अपने सम्बन्धियों के पास आकर टिक जाते हैं और धीरे धीरे नगर को बढ़ाते जाते हैं। न्यूयार्क नगर में १६२१ ई० में विदेशी पैदा हुए। जर्मन लोग दो लाख, आयरिश जाति वाले भी लगभग दो लाख, ४ लाख इटैलियन और ५ लाख रूसी थे। १६१०-२० तक में न्यूयार्क नगर में न्यूयार्क की जनसंख्या में विदेशियों की वृद्धि एक लाख की हुई थी। न्यूयार्क नगर तेज़ी के साथ आगे बढ़ रहा है। मैनहाटन द्वीप का भाग सब से प्राचीन है। यह बहुत घना बसा है और नगर का सब से अधिक भयानक भाग है। यहाँ पर १६१० से १६२० तक में तीन लाख विदेशियों की बढ़ती हुई और १६१०-२० तक में एक लाख ६६ हज़ार की कमी हुई।

सचमुच ही न्यूयार्क के २० लाख आदमी विदेशों के पैदा हुए लोग हैं और २० लाख आदमी ऐसे हैं जिनके माता पिता या तो विदेशी हैं या मिश्रत हैं। लगभग १० लाख श्वेत अमरीकन निवासी लोग हैं। इतना होने पर भी यह बात सत्य है कि यह नगर एक आदर्श अमरीकन नगर है।

बोस्टन नगर के मुख्य भाग की जन संख्या लगभग ८ लाख है। इसके तिहाई विदेशी हैं जिनमें आइरिश लोगों की संस्था अधिक है। रूसी-लिथवानियम और इटैलियन लोग बराबर संख्या में पाए जाते हैं।

कैम्ब्रिज नगर चार्ल्स नदी के दूसरे किनारे पर बोस्टन नगर से मिला हुआ नगर है। यहां पर हावर्ड यूनिवर्सिटी है यह नगर भी वर्तमान समय में और दूसरे नगरों की भांति कारखानों में उन्नति कर रहा है। यहां के ३१ प्रति शत आदमी विदेशी हैं।

युटीका नगर में इंगलैण्ड के सनातनी लोग रहते हैं इस नगर में लम्बे लम्बे वृक्ष, पार्क, बगीचे और लोगों के रहने के भवन हैं। १६१० ई० में इस नगर की जन-संख्या ७४,००० थी जिसमें ७००० इटैलियन और २६०० रूसी लोग थे। कुल जनसंख्या का केवल ३४ प्रतिशत भाग श्वेत अमरीकन लोगों का था। अब यहां रूसी लोगों की संख्या कम हो गई है। पोल लोगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या बढ़ गई है। इटैलियन लोगों की संख्या भी अधिक हो गई है।

बफ़ालो नगर में जर्मन, पोल, इटैलियन, रूसी, आइरिश, इङ्गलिश और कनैडियन लोग रहते हैं।

सिनसिन्नाटी नगर में पहले जर्मन लोग अधिक रहते थे अब यहां पर जर्मन लोगों की संख्या घट कर १८ हजार हो गई है। इस नगर की जनसंख्या १९२० के अनुसार ४ लाख थी जिसमें केवल ४३ हजार जर्मन लोग थे।

शिकागो नगर में अधिकांश विदेशी लोग रहते हैं इस नगर के लगभग ८० हजार निवासी विदेशी हैं। रूसी जर्मन और पोल लोगों की संख्या एक एक लाख है।

बाल्टी मोरे नगर में अधिकांश विदेशी लोग रहते हैं अटलान्टा नगर संयुक्तराष्ट्र के सुदूर दक्षिण में है वहां पर केवल चालीसवां भागविदेशियों का है। यह एक बड़ा कारखाने वाला नगर है। बिरमिंघम टेन्नेस्सी की राजधानी है। यह नगर लोहे के कारखाने तथा शिक्षा का केन्द्र है। यहां पर विदेशियों की संख्या बहुत कम है।

लाख ऐञ्जलीस में अधिकांश विदेशी लोग रहते हैं जिसमें मैक्सिको, कनैडा, इंगलैएड, जर्मनी और रूस के लोग रहते हैं। सैनफ्रान्सिस्को नगर में भी विदेशियों की संख्या बहुत है। इटैलियन लोगों की संख्या सब से अधिक उसके बाद जर्मन, आइरिश, अँग्रेज तथा कनैडियन लोगों की है। १९२० ई० में अमरीका का कुल विदेशी निवासियों का ३/४ भाग नगरों में रहा करता था।

नीचे दिये गये टेब्रुल से पता चलता है कि संयुक्त राष्ट्र में कितनी संख्या निगरो जाति की है।

जन्-गणना के साल	निगरो की संख्या	बढ़ती प्रति शत में	कुल जनसंख्या के प्रतिशत
१७९०	७,५७,०००	...	१९·३
१८५०	३,६३८ ०००	२६·६	१५·१
१९२०	१०,४६२,६३१	६·५	९·९

संयुक्तराष्ट्र में स्वेत लोगों की संख्या विदेश से आने वालों के कारण बढ़ गई है। दक्षिण की ओर १९०० से १९२० तक में निगरो लोगों की बढ़ती बहुत कम हुई है। उनके उत्पत्ति में बहुत कमी हो गई है। उनके इस इसका कारण यह है कि निगरो लोग विद्या सीख गये हैं। वे सभ्य हो गये हैं और उनके जीवन के साधन पहले से कहीं अधिक मँहगे हो गये हैं। इसके सिवा नीग्रो बच्चों के मरने की संख्या में भी अधिकता हो गई है। पाँच दक्षिणी राज्यों और कोलम्बिया के ज़िले में निगरो बच्चों के मरने की संख्या इतनी अधिक है कि यदि १०० बच्चे पैदा होते हैं तो ६२ से लेकर १४० बच्चे तक मर जाते हैं। वहां स्वेत लोगों के बच्चों के मरने की दशा यह है कि यदि १०० बच्चे पैदा होते हैं तो उनमें केवल ३९ से लेकर ८१ तक बच्चे तक मरते हैं।

निग्रो लोग अब अधिक से अधिक संख्या में नगरों में बसने लगे हैं जिससे वे अधिक सभ्य हो रहे हैं और इसी कारण उनके पैदा होने वाले बच्चों की संख्या भी घटती जाती है। प्रोफेसर विलनोक्स के कथनानुसार निग्रो लोगों की संख्या १७९० में १/५ और १९२० में १/१० स्वेत लोगों की थी। इस प्रकार २० वीं सदी के अन्त में वह स्वेत लोगों को केवल १/२० हो जावेगी।

कारखानों में आवश्यकता पड़ने के कारण निग्रो लोग अपने दक्षिणी राज्यों से उत्तर के राज्यों में धीरे धीरे चले जा रहे हैं। इस समय लगभग १६ लाख निग्रो दक्षिण राज्यों से बाहर हैं। १९२० ई० में केवल न्यूयार्क नगर मे १॥ लाख निग्रो लोग थे। निग्रो लोग अब सभी प्रकार के कामों में लग गये हैं। वे सभी प्रकार की नौकरियाँ करते हैं और अपनी स्वयम् भूमि खरीद कर वहाँ मकान बना कर रह रहे हैं।

निगरो लोग १९२४ के बाद दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर आने लगे हैं। उन्हें कारखानों में अधिक मज़दूरी मिलती है और उनका जीवन भी अधिक सुखमय हो जाता है।

न्यूयार्क के सिवा फिलाडलफिया और शिकागो नगर में भी निगरो लोगों की संख्या एक लाख हैं। पिठसबर्ग, डेटियाट, क्लीबलैएड, इन्डियन पोलिस कन्साज आदि नगरों में भी कारखानों के कारण निगरो लोग काफी संख्या में आकर बस गये हैं। बाल्टीमोर, वाशिंगटन, सिनसिन्नाटी और सेंट लोइस आदि नगरो में निगरो लोगों की संख्या अधिक है।

विद्या के कारण निगरो जाति ने काफी उन्नति कर ली है। रुपया भी उनके पास हो गया है इसलिये उत्तर और दक्षिण दोनों में ही निगरो जाति ने अपनी स्वय् भूमि पैदा कर ली है। उनके अपने अलग पत्र तथा पत्रिकायें हैं। निगरो जाति तथा स्वेत चमड़े वाले अब एक दूसरे के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनिष्ट सम्बन्ध रखने लगे हैं। उनमें आपस में शादियाँ भी होने लगी हैं। निगरो जाति के अन्दर आत्म सम्मान तथा परस्पर प्रेम का भाव उत्पन्न हो गया है। हाल में उनकी संख्या की घटती बहुत हुई है। यह बात दक्षिणी पांच राज्यों को छोड़ कर और सभी संयुक्त राष्ट्र के भौगोलिक भाग में हुई है।

सारांश में यह बात कही जा सकती है कि निगरों जाति का अन्त नहीं हो सकता वह स्वेत जातियों में मिल-कर खतम नही हो सकती। निगरों लोग सामाजिक बराबरी के उतने इच्छुक नहीं हैं जितना कि वह अपनी निजी स्वतंत्रता के इच्छुक हैं। वह श्वेत जाति की भांति अपने को भी प्रत्येक काम में उन्नतिशील बनाना चाहते हैं, उनके भीतर हिन्सा का भाव कम हो रहा है। स्वेत लोगों के बीच भी उनसे बदला लेने का भाव मिट रहा है निगारो लोगों के बीच सुधार करने वाले नेतागण होने लगे हैं जिससे आशा की जाती है कि स्वेत जाति वालों और उनकी जाति के बीच जो भेद भाव हैं उनका निरीक्षण सरलता पूर्वक हो जावेगा।

---:o:---

डेनमार्क

(ले०—रामाधीन अग्निहोत्री, बी० ए०)

प्राकृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक तथा जातीय दृष्टि से डेनमार्क का दक्षिणी स्कैन्डीनेविया से घनिष्ट सम्बन्ध है। प्राचीन काल में आक्रान्ता ने इसी मार्ग से स्कैन्डीनेविया में प्रविष्ट होकर उस पर विजय प्राप्त की थी। एक समय सम्पूर्ण स्कैन्डीनेविया और डेनमार्क डैनिश, राज्यान्तर्गत था। कालान्तर पाकर पहले स्वेडन और तत्पश्चात् नार्वे स्वतंत्र हो गया। प्राचीन काल में आधुनिक काल की अपेक्षा बाल्टिक सागर की संसार में अधिक ख्याति थी। इस सागर के जल मार्गों का संरक्षक डेनमार्क अत्यन्त प्रसिद्ध देश था और उसके अधिकार में अनेकों उपनिवेश थे।

स्थिति, क्षेत्रफल व जन-संख्या

डेनमार्क ३४'३३ से ५७'४९ अक्षांस उत्तर और ८'४ से १२'४७ देशान्तर पूर्व में फैला हुआ है। समस्त देश का क्षेत्रफल १६५७९ वर्गमील है। उसमें से केवल जेटलैंड प्रायद्वीप का क्षेत्रफल १४०८ वर्ग मील है। बाल्टिक सागर में अनेकों द्वीप हैं, जिनमें सबसे बड़े फ्यूनन और ज़ीलैंएड है। उन दो द्वीपों का क्षेत्रफल ५१६१ वर्ग मील है। फैरो द्वीप का क्षेत्रफल ५४० वर्ग मील है और जन संख्या ३७,०६,३४९ है, जिसमें पुरुष १८,२४,२३३ और स्त्रियां १८,८२,११६ हैं। यहां के निवासो मार्टिन लूथर के चलाये हुये धर्म का पालन करते हैं।

पैदावार

यह छोटा देश प्रकृति के दया-दक्षिण्य से वंचित सा है। देश में न कोयला धातु तथा मकान बनाने योग्य पत्थर पाया जाता है और न कोई विशाल नदी ही है। देश के निचला होने के कारण जलविद्युत भी नहीं उपजाई जा सकती है। यहां की मिट्टी भी उपजाऊ नहीं है और विशाल भूभाग निपट ऊसर है। परन्तु यहां के निवासियों ने अपनी प्रखर बुद्धि तथा अध्यवसाय से अनेकों उन्नतिशील उद्योग धन्धा स्थापित कर लिये हैं जो निश्चय ही अनेकों बड़े देशों के लिये आदर्श हैं और साथ ही स्पर्धा के कारण भी।

देश की विषम जलवायु और अधिकांश भूमि का अनउपजाऊ पन खेती की अपेक्षा चराई के कार्य को अधिक महत्वशाली बना दिया है। बनावटी खादों के प्रयोग द्वारा भूमि यथा सम्भव उर्वरी बना ली गई है। परिश्रम तथा सावधानी से खेतों की जुताई करके यहाँ के कृषक जई, जौ, राई, चुकन्दर, आलू आदि की बड़ी बड़ी फसलें पैदा करते हैं। इतने पर भी देश को आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त अनाज नहीं पैदा होता। अतएव विदेशों से अनाज खरीद कर इस कमी की पूर्ति की जाती है। गेहूँ सबसे अधिक मात्रा में मोल लेना पड़ता है, क्योंकि देश में गेहूँ की उपज न होने के बराबर ही होती है।

उद्योग-धन्धा

डेनमार्क प्रमुखतया अपने पशु पालन तथा दुग्धशालाओं के लिये प्रसिद्ध है। गत ५० वर्षों में उसने यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशातीत उन्नति कर ली है। पशुओं तथा शूकरों की संख्या बहुत बढ़ गई। और इसके साथ ही मक्खन, पनीर और शूकरामिस की पैदावार भी। सम्प्रति देश में ५,२१,००० घोड़ा ३०,७६,००० पशु, ३०,८३,००० सुअर और २,६०,००,००० मुर्गियां हैं।

समस्त देश में १०१९९२ छोटे बड़े कारखाने व दूकानें हैं। कारखानों में काम करके ७३९२०० व्यक्ति जीविकोपार्जन करते हैं। शराब उतारने के चार बड़े कारखाने हैं जिनमें अंगूरी तथा जौ की शराब बनाई जाती है। इन कारखानों में प्रतिवर्ष केवल अंगूरी शराब ही ६,४४१,००० थिटर तैयार होती है देश में शक्कर तैयार करने के ६ कारखाने हैं जिनमें प्रतिवर्ष २१६१५० टन शक्कर चुकन्दर से बनाई जाती है। चर्बी तैयार करने के लिये ११७ कारखाने हैं। जिनमें प्रति वर्ष ७८२०० टन चर्बी तैयार की जाती है।

देश में मछली पकड़ने का पेशा भी अधिक प्रसिद्ध है लीम फियॉर्ड के स्थिर जल में मछलियां अधिक पाई जाती हैं। पश्चिमी तट पर सर्वोत्तम बन्दर एस्बजर्ग मछली पकड़ने का मुख्य केन्द्र है। उपर्युक्त व्यवसायों के अतिरिक्त देश की राजधानी कोपेनहेगन में चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाये जाते हैं। बन्दरगाहों पर जहाज बनाये जाते हैं।

देश में गमना गमन के साधन

देश में प्रमुख सड़कों की लम्बाई ४८७२ मील है। इसके अतिरिक्त लगभग २७,००० मील लम्बी सड़कों की शाखाएँ हैं। रेलों का विस्तार ३२०० मील है। जिनमें से १५४० मील सरकारी है। ३१ मार्च सन् १९३७ तक सरकारी रेलों की कुल लागत १५,६०,००,००० क्रोनर थी (१ । १½ ये) रेलों तथा नौकाओं द्वारा सबसे बृहत् और तीव्रगामी यात्रा एस्बजर्ग से द्वारा स्वेडन के प्रसिद्ध नगरों मालनों और स्टाकहाल्म तक होती है। रेलगाड़ियां तीन स्थानों पर—Little Belt, Great Belt and the Sound—नौकाओं द्वारा एक वाट से दूसरी ओर उतार दी जाती है, और इस प्रकार बिना रेलों के बदले ही एक लम्बी यात्रा शीघ्रता पूर्वक तय कर ली जाती है।

शिक्षा

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही देश में प्रारम्भिक शिक्षा का अत्यधिक प्रसार हुआ है। सन् १८१४ में समस्त देश में यह शिक्षा अनिवार्य कर दी गई थी। अनिवार्य रूप से स्कूल जाने की आयु ७ से १४ वर्ष तक है। सन् १९३६ में डेनमार्क में ४५५१ प्रारम्भिक पाठशालाये थीं। जिनमें ४,६१,००० छात्र विद्योपार्जन करते थे। उसी वर्ष विश्वविद्यालय में १८३१ विद्यार्थी भर्ती किये गये थे। जिनमें से ६३८ लड़कियां थीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि देश की उच्च शिक्षा पाने वाले छात्रों में स्त्रियों की संख्या लगभग ३५ प्रतिशत है।

देश की रक्षा

स्थल सेना तथा रक्षा विभाग के मन्त्री के निरक्षण में रहती हैं। यहां की सेनायें राष्ट्रीय सेनायें हैं। डेनमार्क की प्रत्येक स्वास्थ्य पुरुष प्रजा स्थल सेना अथवा नौ सेना में निश्चत काल के लिये सेवा करने के बाध्य है इस विषय में डेनमार्क में किसी के भी साथ रियायत नहीं की जाती यहां तक कि पादरियों को भी फौज में भर्ती होकर सैनिक शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। और अवसर आने पर देश के लिये युद्ध में सक्रिय भाग लेना पड़ता है। २० वर्ष की आयु से फौज में भर्ती होना पड़ता है। और यह सैनिक सेवा काल १६ वर्ष तक बराबर चलता रहता है। प्रतिवर्ष ६८०० रंगरूट दो जत्थों में सैनिक शिक्षा पाने के लिये बुलाये जाते हैं। देश की हवाई ताकत ६५ वायुयानों में सीमित है।

हर हिटलर के आदेशानुसार जर्मन सेनाध्यक्ष जनरल कापिश (Kaupitsch) विशाल जर्मन सेनाओं के साथ गत ८ अप्रैल को डेनमाक में घुस गया। बात की बात में सम्पूर्ण देश पर अधिकार जमाकर कोपेनहेगेन में जर्मनी का स्वस्तिक झंडा फहरा दिया। डेनमार्क को ७० वर्षीय राजा क्रिश्चियन दशम ने अपनी असहायावस्था में जर्मनी की छत्रछाया में रहना स्वीकार कर लेना ही अपने तथा देश के लिये अधिक श्रेयस्कर समझा। ईश्वर डेनमार्क तथा इसके निवासियों की रक्षा करें। हस शांतिप्रदायिनी वाक्य में अपने जर्जरित हृदय को शान्ति दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तु मात्र पर भौगोलिक प्रभाव

(गोबिन्दशङ्कर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मिडिल स्कूल, जावद)

संसार सृष्टि चक्र बड़ा ही विचित्र है। भिन्न भिन्न जातियों के हृदय पर प्राकृतिक वस्तुओं का भिन्न भिन्न प्रभाव पड़ता है। भारतवर्ष में तथा सभी पुराने देशों में जहां कहीं प्रकृति के ऐसे अलौकिक रूप का प्रादुर्भाव होता है वहां तीर्थ स्थान निर्माण कर धार्मिक मेलों की नींव डाल दी जाती है। इससे न केवल आपसी मिलन ही होता है वरन् जन समुदाय की आवश्यकता भी पूरी हो जाती है। साथ ही साथ व्यापार वृद्धि भी होती जाती है। श्रृष्टि का यह क्रम आज ही से नहीं वरन् परम्परा से चला आया है और प्रत्येक प्राणी को जीवन में अनेक बार नहीं तो भी एक बार तो प्राकृतिक सौन्दर्यता का निरीक्षण कर अपने चित्त को प्रमुदित ही नहीं बल्कि उस सर्वव्यापी कर्तार की अलौकिक कला का स्मरण कर मन को पवित्र और देह को मोक्षगामी बना ले।

इसके लिये हमारे पूर्वजों ने बड़े बड़े तीर्थनामी साधन यत्र तत्र स्थापित कर दिये हैं जिनके प्रभाव से छोटे छोटे मनुष्य भी अच्छी २ पुस्तकों की रचना कर बड़े से बड़े पुरुष बन चुके हैं। उदाहरणार्थ कालीदास, तुलसीदास आदि उन्ही का अनुकरण हम लोग आज दिन तक करते आये हैं। यह तीर्थ स्थान बहुधा पहाड़ों की गुफाओं में समुद्र के किनारों पर अथवा नदियों के तटों पर पाये जाते हैं। प्रत्येक स्थान पर एक ही देव नहीं माना जाता परन्तु देवों की रुचि के अनुसार ही तीर्थ निर्मित हुये हैं। उदाहरणार्थ महादेव जी पहाड़ी हैं। तो गुफाओं में झरनों के किनारे या भयावह जंगलों के बीच महादेव के मन्दिर विशेष बने रहते हैं। कृष्ण हरियाली तथा गायें विशेष पसन्द करते थे। इसलिये उनको वृन्दाबन मथुरा के पास बसाया। भूमिका विशेष न बढ़ जाय इसी भय से मैं अपने इष्ट विषय पर आ जाता हूँ।

भूगोल के मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ते हैं यह प्रश्न जटिल नहीं तो कठिन अवश्य है। हम किसी भी देश का भूगोल प्रारम्भ करते हैं तो सर्व प्रथम हमें प्रकृति का निरीक्षण करना पड़ता है या प्राकृतिक भाग पढ़ना पड़ता है। परन्तु भौगोलिक ज्ञान पूर्णतया प्रदान करने के लिये स्वतः निरीक्षण करना ही सर्वश्रेष्ठ तरीका माना गया है। बहुत से भू-तत्व-वेत्ता यहां अपनी असमर्थता प्रगट करते हैं कि ऐसा प्रत्येक मनुष्य से होना सम्भव नहीं परन्तु यह कथन सर्वथा निर्मूल है। कारण कि यदि मनुष्य अपने घर पर रह कर ही प्रकृति की हर एक बात पर विचार करें तो उसे भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करने में अड़चन नहीं आवेगी। जैसे:—वर्षा प्रारम्भ हुई। हमें विचार करना चाहिये कि अन्य मौसमों में जलवृष्टि न होते हुये इन्हीं दिनो में क्यों हुई। यदि हुई तो किधर से हुई और क्यों। यह वास्तविक बात है कि यदि हम किसी गेंद को दिवाल से दे मारें तो वह गेंद उछल कर फिर उसी दिशा में जायगी जिस दिशा से वह फेंकी गई थी।

वर्षा आरम्भ में हम देखते हैं कि कुछ दिन हवायें दक्षिण पश्चिम से प्रबल वेग से बहती हैं। इन दिनों हम विशेष गर्मी होने से अपने मकानों के बाहर सोते हैं। हमारे कपड़े प्रातः काल आर्द्र (चिकने) हो जाते हैं सो क्यों? विचार करेंगे तो मालूम होगा कि इन हवाओं में वही भाप है जो कुछ दिनों में पानी के रूप में उत्तर पूर्व से आने लगती है। इस सिद्धान्त तक तो हम पहुँच जाते हैं। परन्तु जटिल प्रश्न भाप का आता है कि यह आई कहां से? और इतने दिन कहां छिपी थी? इसको सिद्ध करने के लिये हमें उस हांडी की तरफ दृष्टि दौड़ाना चाहिये, जिसमें दाल बनाने के लिये पानी भर कर चूल्हे पर चढ़ाई गई है। आप देखेंगे कि एक धुँधली हवा उसमें से निकल रही है। यह क्या है इसको सिद्ध करने के लिये ठंडे पानी की कटोरी इस हवा में ले जाइये, देखेंगे कि इसके पेंदे में पानी की बूँदें जम रही हैं।

अब सिद्ध हो चुका कि भाप किसी पानी के कोष में से बनकर आई है परन्तु पर्याप्त गर्मी जब तक न होवे पानी की विशेष भाप नहीं बन सकती। दुनिया को जल प्रदान करने के लिये साधारण हंडा भर पानी की भाप और चूल्हे की गर्मी से काम नहीं चल सकता। इसीलिये प्रकृति ने दुनिया के मान से ही गर्मी का साधन सूर्य और जलकोष का साधन महासागर उत्पन्न कर अपने हाथों से जल सींचना प्रारम्भ किया है। अब हम जान सकते हैं कि हमारे दक्षिण पश्चिम में सागर महासागर, या खाड़ी जरूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और उत्तर पूर्व में इस भाप को रोकने के लिये दिवाल (पहाड़) जरूर है।

अब प्रश्न आता है कि सूर्य जब बारहों मास आकाश में दीखता है तो फिर गर्मी कभी कम कभी विशेष क्यों होती है। इसके लिये हमें प्रति दिन सूर्योदय और सूर्यास्त स्थान देखना चाहिये। अब हम जान सकते हैं कि ये स्थान हमेंशा बदलते रहते हैं। बदलने का कारण क्या? या तो पृथ्वी चलती (घूमती) है या सूर्य के घूमने व चलने से पृथ्वी के सारे अंगों पर एक सी गर्मी या रोशनी नहीं पड़ सकती। पुनः हम इस सिद्धान्त तक पहुँच जाते हैं कि पृथ्वी ही घूमती है। इसको सिद्ध करने के लिये हमें उस घूमते हुये लट्टू की ओर देखना चाहिये जो अपनी दो चालों से काम कर रहा है (धुरी पर घूमना, साथ ही साथ आगे बढ़ते जाना) यदि हम एक जलती हुई चिमनी लट्टू के घूमने के क्षेत्र के बीच रख दें तो पता चलेगा कि लट्टू के सब अंगों पर एक ही साथ प्रकाश नहीं होता। वरन् अग्रभाग पर प्रथम प्रकाश होता है। अन्य अंगों पर समक्ष आने पर प्रकाश होता जाता है। साथ ही साथ सब अंगों पर एक सी गर्मी नहीं होती। कभी कभी पास आने पर विशेष गर्मी और दूर जाने पर कम गर्मी होती है।

अब हमें घास जंगल का विचार करना चाहिये वर्तमान वर्ष में हमारी तरफ विशेष पानी नहीं बरसा। स्कूल खुल गया। काम शुरू हुआ। इस समय यहां के विद्यार्थियों को प्राकृतिक निरीक्षण कराया गया। जिसका वर्णन पढ़कर आप जान सकेंगे कि भूगोल कितना सरल विषय है और किसी खास ऋतु में ही कोई खास वस्तु क्यों पैदा होती है।

तारीख २३-७-३६ का वर्णन है। विद्यार्थी लिखता है कि "आकाश—आज आकाश में सूर्य नहीं निकला कारण यही की बादलों ने आकाश घेर रक्खा है। बादल धीमी गति से दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं"।

"वायु—वायु दक्षिण पश्चिम की ओर से शनैः शनैः आ रही है यहां तक कि पेड़ की पत्ती हिलना ही मुश्किल है"।

"वृक्ष—पानी न बरसने से वृक्ष मुर्झा रहे हैं, कुओं के तले दिखाई पड़ते हैं। ज़मीन बिल्कुल सूखी है। जरा सी हवा से धूल उड़ने लग जाती है।"

"वृक्ष—कबूतर, मयूर और पपीहों की आवाज़ जगह जगह गूंज रही है।"

तारीख १७-८-३६ के रोज का विवरण उपरोक्त विवरण से बिलकुल भिन्न है।

"आकाश—वर्षा काल मेघ नभ छाये। गरजन लागत परम सुहाये॥

"बादल आकाश में घुमड़ रहे हैं। कोई भी बादल किसी एक दिशा की ओर नहीं जा रहे हैं। पानी झिरमिर झिरमिर बरस रहा है। गर्जन हो रही है। बिजली चमक रही है।"

"वायु—वायु की गति बन्द नहीं है।"

"वृक्ष—वर्षा होने से हरे हरे एवं शान्ति खड़े हैं। जमीन हरी चादर से ढकी है।"

"कीड़े, मकोड़े, पक्षी, तितलियां उड़ रही हैं। मकोड़ों और मक्खियों के मारे नाक में दम है। वीरवधूटियां जंगल में पाई जाती हैं। चिड़ियां, कौवे, तोते पेड़ों पर शान्त बैठे हैं परन्तु कभी कभी पङ्ख फड़फड़ाते हैं। मयूर को-को, क्यांओं-क्याओं की समा बांध रहे हैं। पपीहे कभी कभी पी-पी करते हैं। मेंढक टर्रा रहे हैं।"

"फसल—खेतों के कपास, ज्वार, मक्का, उड़द, मूंग तिल्ली आदि लहलहा रहे हैं।"

"लोग—कृषकजन बैलों को खेतों के किनारे किनारे चरा रहे हैं। कम्मल ओढ़े हुये और हाथ में छड़ी लिये बैलों के पीछे पीछे चलते हैं।"

"जमीन—चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ छाया हुआ है। क्षुद्र नाले तेज़ी से बह बह कर तालाबों में, या नदियों में मिलने जा रहे हैं।"

उपरोक्त उदाहरण से आप सोच सकते हैं कि कोई सफल पेड़, घास, धन्धे आदि किसी खास ऋतु में ही क्यों होते हैं। अन्य ऋतु में नहीं। यहां पर हमें कहना ही पड़ता है कि प्रत्येक जड़ जङ्गल वस्तु पर भौगोलिक प्रभाव पड़ता है। अब हमें पशु-पक्षियों का विचार करना चाहिये।

जल वृष्टि होते वक्त हमें हमारे दरवाजे पर खड़े होकर उन चौपायों की ओर देखना चाहिये जो जंगल से चले आ रहे हैं। उनकी चाल पर यदि हम विचार करेंगे तो उनके रहने योग्य जलवायु तथा उनके जन्म-स्थान का पता भली भांति लग सकता है।

"गायें [illegible] दौड़ रही हैं। जगह जगह पेड़ आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने पर उनकी शाखाओं के नीचे खड़े रह कर वर्षा की बौछार से अपने को बचाने का प्रयत्न कर रही हैं। थोड़े समय पश्चात् फिर दौड़ रही हैं।''

"भैंसें मस्त चाल से चल रही हैं। यदि ग्वाला न हाँके तो खड़ी होकर जुगाली करने लगती हैं।''

"भेड़ें तेजी से भागती हुई आ रही हैं। ठंड के मारे कांप भी रही हैं। दांत भी कटकटा रही हैं।'' विचार करना चाहिये कि ऐसा क्यों होता है ?

प्रत्येक प्राणी अथवा वस्तु वहीं मिल सकेगी जहां की आबहवा उसे अनुकूल हो। भैंस ठंडे मुल्क का जानवर है, उसे गर्मी पसन्द नहीं। गाय, सर्द गर्म मुल्क का जानवर है, उसे विशेष गर्मी या सर्दी पसन्द नहीं। भेड़ जल विहीन शुष्क प्रान्त में रहने वाला जानवर है, उसे सर्दी वर्षा विशेष पसन्द नहीं।

गाय और बैल वर्षा वाले प्रान्तों में रहते हैं इसलिये उन्हें बिजली की दमक और कड़क सहन करने की आदत सी पड़ गई है। परन्तु भेड़ें ऐसा नहीं कर सकतीं क्योंकि वे सूखे प्रान्तों में रहती हैं। वहां वर्षा ही नहीं होती तो बिजली की चमक कहां से होगी। यहां एक रोचक उदाहरण याद आया है। उसके लिखने से सिद्ध हो जायगा कि भेड़ें शुष्क एवं जल विहीन प्रान्तों में रहने वाली हैं :—

"मेरे गांव में एक गड़रिये के यहां शादी थी। बरात आई पास ही बाड़े में भेड़ें बन्द की हुई थीं। बरात वालों को ख्याल नहीं रहा। उन्होंने आतिशबाजी शुरू कर दी। बारूद की आवाज और चमक से भेड़ें इतनी भयभीत हुईं कि वे एक दूसरे पर चढ़ गईं और उनका एक कोने में ढेर लग गया। प्रातः काल जब गड़रिया भेड़ों का दूध निकालने गया तो देखता क्या है कि तेरह भेड़ें धराशायी हो परम धाम सिधार गईं।

अब हमें इनके खान पान व इनके तरीकों पर भी विचार करना चाहिये। रात्रि को यदि अपने किसी ढोरों के झुन्ड में पहुँच जांय। तो देखेंगे कि गायें भैंसें जुगाली कर रही हैं। हम लोग तो ऐसा नहीं करते। क्यों ?

जब हम जीविका की खोज में जाते हैं तो जो मिलता है उसे जल्दी ही घर ले आते हैं। क्योंकि चोरों से या दुश्मनों से छिन जाने का भय रहता है। घर पर हम आराम से उसके तरह तरह के स्वादिष्ट वस्तुएँ तैयार करके उपभोग करते हैं। इतना काम जानवर नहीं कर सकते। इनका मुख्य भोजन घास है और घास के मैदानों ही के रहने वाले ये जानवर हैं। परन्तु घास के मैदानों में इनके भक्षक शेर चीता बघेर आदि पाये जाते हैं क्योंकि "जीवो जीवस्य भोजनम्" जो इन्हें मार कर खाते हैं। इन्हीं से मारे जाने के भय से ये जानवर जल्दी २ घास खाकर घर आ जाते हैं। फिर आराम से घास के गोटे पेट में से मुंह में लाकर जुगाली करते हैं। सिद्ध होता है कि किसी खास स्थान पर कोई खास जानवर क्यों पाये जाते हैं और उनका स्वभाव जगह जगह पर के जानवरों से क्यों भिन्न रहता है।

अब इनके फुर्तीलेपन की ओर देखना चाहिये और यह क्योंकर खास खास जानवरों में पाया जाता है इसका विचार करना चाहिये।

बकरियां जल्दी ही तेज़ ढालू पहाड़ों पर चढ़ जाती हैं। परन्तु गायों और भैंसों को चढ़ाया जाय तो पता चल जायगा कि बकरियां पहाड़ों पर रहने वाली हैं और गाय बैल मैदान में। उपरोक्त उदाहरणों से भली भांति जानवरों के स्वभाव, गुण और कार्य का ज्ञान हो सकता है।

अब हमें पुनः जंगलों, मैदानों पर विचार करना आवश्यक है क्योंकि इनका मनुष्य पर, धन्धों पर तथा ब्यापार पर भी प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपने पड़ोस के बगीचे को मैदानी या पहाड़ी जंगलों से तुलना करना चाहिये।

यहाँ विद्यार्थी के भ्रमण वृत्तान्त विवरण को लिखने से हमारा मतलब सिद्ध हो सकेगा :—

"तारीख १०-१०-३९ को हमारा एक दल सुखानन्द नामी स्थान के दर्शनार्थ रवाना हुआ। रास्ते में सड़क के आजू बाजू किसान लोग ज्वार के खेतों में काम कर रहे हैं। गेहूँ, जौ, चने, अलसी, आदि बोये जा रहे हैं।

जंगलों में बबूल, खेजड़े आदि के छोटी छोटी पत्ती वाले पेड़ बढ़ रहे हैं परन्तु अजीब बात यह कि अठाने (जागीर) के बगीचे में बड़े बड़े पत्ते वाले केले, अंजीर आदि के पौधे बढ़ रहे हैं। हम ज्यों ज्यों पहाड़ी भाग के समीप जाते हैं त्यों त्यों लकड़हारे, अपने सिर पर ऊँटों पर गधों पर और पहाड़ों पर लकड़ी के गट्ठर लाद लाद कर जावद की ओर आ रहे हैं।

उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि उपज के हिसाब से ही धन्धे बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम देखते हैं कि किसी किसी पेड़ के पत्ते बड़े बड़े होते हैं तो किसी के बहुत ही छोटे होते हैं। भौगोलिक दृष्टि से विचार करने पर यह प्रश्न भी अति सरल हो सकता है।

कारण इसका यही कि ज्यों ज्यों मनुष्य अपने जीवन सम्बन्धी वस्तुओं में धनाढ्य होता जाता है त्यों त्यों वह अपने हाव-भाव, रंग-ढंग, रहन-सहन आदि बदलता जाता है। इसी तरह पेड़ पौधों का आवश्यक धन जल और खाद है जहां जल बहुत है वहां पेड़-पौधे भी बहुत हैं। और उनके पौधे भी बहुत बड़े होते हैं परन्तु ज्यों ज्यों जलाभाव होता है त्यों त्यों पेड़ पौधों का रंग, ढंग, नाम आदि बदलते जाते हैं। कहावत भी मशहूर है कि "सम्पदा तेरे तीन नाम। परश्या, परशु, परशुराम। अति दीनावस्था में 'परश्या' नाम से मनुष्य पुकारा जाता है। इसी तरह कम पानी लेने वाले पौधे 'झाड़ियां' कहलाते हैं। साधारण धन प्राप्त होने पर वही मनुष्य 'परशु' कहलाता है। और अति धनी हो जाने पर 'परशुराम' कहलाता है इसी तरह साधारण जल वृष्टि वाले पेड़ 'बट्ट, पीपल' आदि के नाम से पुकारे जाते हैं और अति जल वृष्टि वाले पेड़ "टीक साल, सागौन, ढाक, केले" आदि कहलाये जाते हैं।

इन्हीं जंगलों, नदियों, पहाड़ों, मैदानों और गर्मी सर्दी का प्रभाव मनुष्य पर, व्यापार पर तथा उपज धन्धों पर पड़ता है।

मनुष्य—यही एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति में उलट फेर कर सकता है जैसे जङ्गलों को मैदान के रूप में परिवर्तित करना, जन-पद शून्य रेगिस्तान में नहरों का संचार कर नया घना संसार बसा देना, दुर्गम से दुर्गम पर्वतों को काट कर आवागमन के साधन निकालना, भू-गर्भ जनित धातुओं को खोजकर सदुपयोग करना आदि आदि।

परन्तु मनुष्य को जब तक किसी स्थान की भौगोलिक परिस्थिति का ज्ञान न हो वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जैसे कोई वर्षारम्भ में गेहूँ बो दे। पहाड़ पर कुआं खोदे तो उसे सिवाय नुकसान के और कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता जब वह भू-तत्त्व ज्ञानी बन जाय तो वहां वह जायगा और वहां लक्ष्मी उसका स्वागत करने को तैयार रहेगी।

इसी के साथ, जाति, धर्म वर्ण, जनसंख्या और धन्धों का संबन्ध है। जहां जो पैदा होता है उसी के अनुसार वहां धन्धे व व्यापार पाये जाते हैं जैसे:—आसामी चाय के बगीचों में, बंगाली चावल पाट के खेतों में पञ्जाबी गेहूँ के खेतों में और गुजराती कपास के कारखानों में काम करने में दक्ष पाये जाते हैं। इसी के अनुसार जन-संख्या बढ़ती जाती है। जन-संख्या वृद्धि ही से फसलों की किस्में नये आविष्कार, आमदनी आदि बढ़ते हैं। साथ ही साथ व्यापार वृद्धि होती है और देश धनाढ्य बनता है। धन वृद्धि होने पर विदेशियों से समागम बढ़ता है। कई कई नये नये आविष्कार होते हैं। इस तरह देश विज्ञान में, धन में, गुण में, इज्जत में, शासन में, महत्व में, हर बात में अपना सानी आप ही बनता है और नहीं।

पृष्ठ के समक्ष भाग पर दिया हुआ चित्र हमें वर्तमान लेख के शीर्षक का मतलब बड़ी सरलता से ज्ञान करा देगा।

आवश्यक सूचना

भूगोल के पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि भूगोल के सत्रहवें वर्ष के उपलक्ष में आगामी जुलाई सन् १९४० में भूगोल का "महासमर-अङ्क" तीन खंडों में प्रकाशित होगा। यह अप्रैल ४० का अंक प्राप्त होने पर जिन ग्राहकों का वार्षिक मूल्य समाप्त हो गया है उन्हें शीघ्र ही ३) रु० मनीआर्डर से भेज देना चाहिए। मनीआर्डर से चन्दा भेजने में वी० पी० खर्च चार आने की बचत होगी। मनीआर्डर कूपन पर ग्राहक नम्बर लिखना न भूलें। प्रत्येक नाम के आगे ग्राहक नम्बर लिखा रहता है। प्रत्येक वर्ष के तरह मई और जून में भूगोल प्रकाशित न होकर जुलाई में वृहद् विशेषांक "महासमर-अङ्क" प्रकाशित होगा।

—मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर-अंक

"भूगोल" के सत्रहवें वर्ष का विशेषांक

आगामी सन् १९४० के जुलाई मास में 'भूगोल' के सत्रहवें वर्ष के उपलक्ष में मई-जून-जुलाई मास का संयुक्त विशेषांक महासमर-अंक रहेगा। इस वृहदाङ्क में तीन भाग रहेंगे। प्रथम भाग में सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई का वर्णन रहेगा। दूसरे भाग में १९१९ से १९३९ तक प्रमुख घटनाओं का परिचय रहेगा।

तीसरे भाग में वर्तमान युद्ध का जून (१९४०) के अंत तक का संक्षिप्त इतिहास रहेगा। यह अंक लड़ाई के कई नक्शों और चित्रों से सुसज्जित रहेगा। प्रत्येक भाग का पृथक मूल्य ॥) होगा। तीनों भागों का एक साथ पेशगी मूल्य १।) रहेगा। जो सज्जन "भूगोल" का वार्षिक मूल्य अप्रैल १९४० तक भेज देंगे उनको यह विशेषांक उनके वार्षिक चन्दे (३ रु०) में ही मिलेगा। काग़ज़ महँगा होने के कारण यह उपयोगी अङ्क परिमित संख्या में ही छपेगा। अतः ग्राहकों को शीघ्र ही वार्षिक मूल्य ३) भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 143, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

अगस्त १९४०

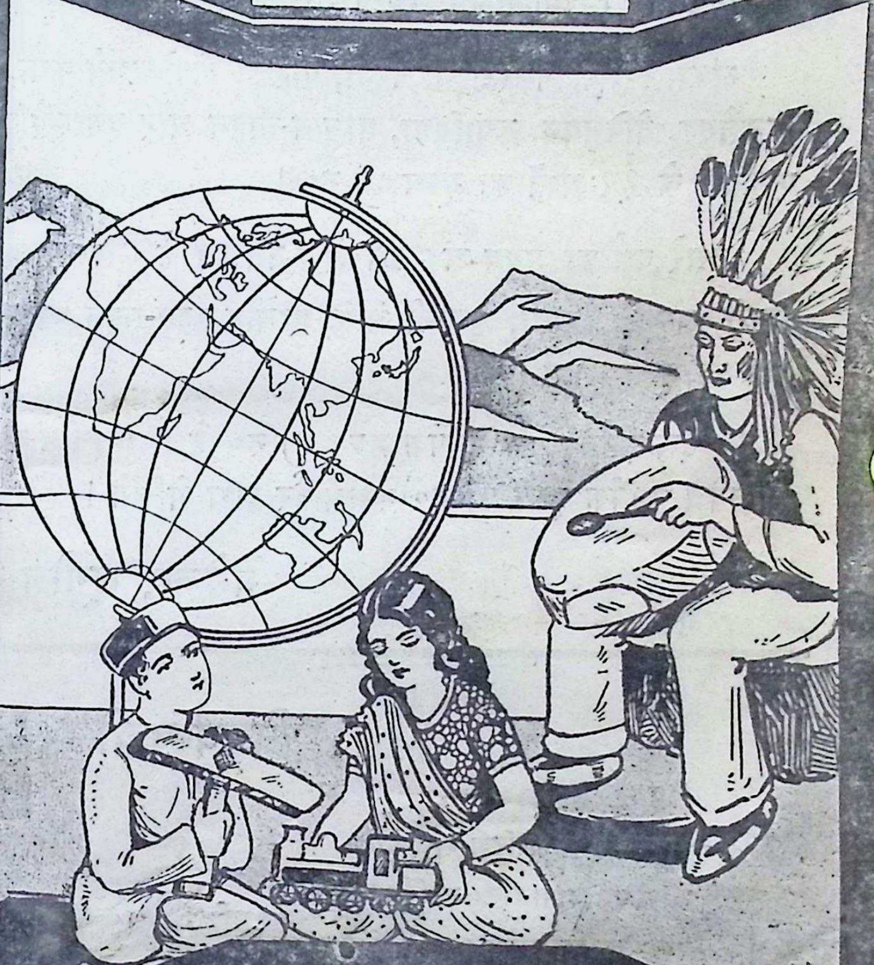

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian: Rs. 3/-
Foreign: Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

हर महीने किसी न किसी एक देश का आँखों देखा सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन पढ़िये। यात्रा के आधार पर लिखा हुआ विवरण होने से प्रत्येक पृष्ठ में सजीवता है। "देश-दर्शन" के प्रत्येक अङ्क आवश्यक चित्रों और नक़शों से सुसज्जित रहते हैं।

अब तक निम्नलिखित अंक प्रकाशित हो चुके हैं :—

लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन और यूगोस्लैविया। प्रत्येक अंक का मूल्य।≈), एक वर्ष के १२ अंकों का मूल्य ४) रु०।

दूसरे वर्ष का प्रथम अंक **प्राचीन-जीवन** है। इसमें आर्य, एसीरियन, बेबिलोनियन, मिस्री, चीनी, ईरानी, यूनानी आदि प्राचीन रहन-सहन पर पूरा प्रकाश डाला गया है। इस अक का मूल्य ।।) है।

"देश-दर्शन" का वार्षिक मूल्य ४) रु० है। 'प्राचीन-जीवन' के लिये ।।) का टिकट भेजिये। वार्षिक मूल्य ४) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—सुदूर पूर्व में ब्रिटिश राजनीति	१
२—चीन पर जापान का आर्थिक आक्रमण	४
३—प्राकृतिक महासमर (ले० गोविंद शंकर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मि० स्कूल, जावद)	१०
४—समय का फेर (ले० प्रहलाद नारायण रायजादा, एम० ए०, बी० टी०	१३
५—फिलीपाइन द्वीप में जापान की कूटनीति	१६
६—साइप्रेस	१८
७—डच ईस्ट इण्डीज़ की डांवाडोल स्थिति	२०
८—आधुनिक तथा प्राचीन माल्टा	२४
९—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] भाद्रपद सं० १९९७, अगस्त, १९४० [संख्या ४

सुदूर पूर्व में ब्रिटिश राजनीति

सुदूर पूर्व देशों में ब्रिटेन ने संधियों द्वारा काम लिया है। १९०२ ई० के बाद ऐंग्लो-जापानीज़ संधि के द्वारा प्रतीत होने लगा कि पूर्वी देशों में किसी प्रकार की भी अशान्ति न उत्पन्न होगी। परन्तु इस संधि के कारण संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इंगलैंड के बीच कुछ मनमोटाव पैदा हो गया। १९१५ ई० में जापान ने चीन से १५ मांगें मांगी। इन दोनों बातों के कारण इङ्गलैंड ने जापान के साथ जो सन्धि हुई थी उसे तोड़ दिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में १९२२ ई० में वाशिंगटन में एक सन्धि हुई उसी सन्धि के अनुसार इङ्गलैंड ने अपनी जापान के साथ जो सन्धि थी तोड़ दिया। नाइन पावर ट्रीटी (नौ-शक्ति-सन्धि) फोर पावर ऐक्ट (चार राष्ट्रों का संधि-नामा) और नैवल लिमिटेशन संधि आदि से ब्रिटिश को किसी प्रकार के हानि होने की सम्भावना न थी फिर भी प्रशांत महासागर में अपने आधीन वाले स्थानों की रक्षा के लिये ब्रिटिश सरकार ने सिंगापुर में हवाई तथा समुद्री अड्डा बनाने का निश्चय किया। यह वाशिंगटन सन्धि का ही कारण था।

वाशिंगटन की संधि का प्रभाव इङ्गलैण्ड तथा जापान के आपसी सम्बन्ध पर बहुत खराब पड़ा। वाशिंगटन की शर्तों को जापान ने असंतुष्टता पूर्वक स्वीकार किया। उसने समझा कि उसके मित्र इङ्गलैंड ने उसे अपना फायदा करने के लिये धोका दिया। समुद्री जहाज़ी संधि में भी जापान के साथ बराबरी का भाव नहीं रखा गया। उसके साथ ही साथ ब्रिटेन ने सिंगापुर में हवाई तथा समुद्री अड्डा बनाने का निश्चय किया। इन कारणों से जापान इंगलैण्ड के बहुत विरुद्ध होगया। नौ-शक्ति-कान्फ्रेन्स से भी कुछ अधिक लाभ जापान को नहीं हुआ। चीन के भीतर राष्ट्रीयता के भाव के उत्पन्न हो जाने के कारण इंगलैण्ड के विरुद्ध कैन्टन, शङ्घाई, हानकांग और दूसरे नगरों में प्रचार होने लगा। जापानी व्यापारी इस प्रचार में सम्मिलित होने लगे और वे ब्रिटिश व्यापारियों को कुचल डालने का प्रयत्न करने लगे।

नानकिंग की चीन के लोगों की यह धारणा देख कर इंगलैण्ड ने उनके कुओमिनटैंग (राष्ट्रीय) सरकार को स्वीकार कर लिया। इस हानकाव, क्यूकियाँग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अँग्रेजों को व्यापार में कुछ सुविधाएँ चीन सरकार ने प्रदान कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने उस समय यह ध्यान नहीं दिया कि ब्रिटेन और जापान का वैमनस्य चतुरता तथा अच्छे भाव रखते हुए भी कम न होगा। जब ब्रिटेन ने अपनी नई नीति का अनुसरण चीन में किया तो जापान और अधिक अप्रसन्न होगया। चीनी सरकार क्वानटंग प्रान्त के ठीके तथा मन्चूरिया प्रान्त के बारे में जापानी नीति का जो विरोध किया है उसके लिये जापान ब्रिटिश सरकार को दोषित करता है। तब से इंगलैण्ड ने चीन तथा जापान के झगड़े से बाहर रहने का प्रयत्न किया किन्तु जब जापान ने सितम्बर सन् १९३१ ई० में मञ्चूरिया पर आक्रमण किया और राष्ट्रसंघों से सहायता मांगी तो इंगलैण्ड ने जापानी नीति का विरोध किया। इंगलैण्ड के लिबरल लेबरों ने भी चीन का पक्ष लिया और चीन के व्यापार को लालच ने भी अँग्रेज सरकार को मजबूर किया कि वह जापानी नीति का विरोध करे।

न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया का जो व्यापार चीनी लोगों के साथ होता था उससे उन राष्ट्रों ने भी चीन का पक्ष लिया। मार्च सन् १९३२ ई० की राष्ट्रसङ्घ की बैठक में कनैडा और दक्षिणी अफ्रीका ने चीन में जापानी नीति का विरोध किया क्योंकि जापान की हार्दिक इच्छा चीन को हड़प जाने की प्रतीत हुई। मार्च २२ सन् १९३९ ई० को कामन्स हाउस की बैठक में सर जान साइमन ने कहा कि इंगलैंड की नीति राष्ट्रसङ्घ के आदेशानुसार है और वह जापान तथा चीन दोनों से मैत्री रखना चाहता है और इसी भाव से वह दोनों के बीच संधि चाहता है।

२७ फरवरी सन् १९३३ ई० में लिटन कमीशन के ३ दिन पश्चात् जापानी प्रतिनिधि राष्ट्रसङ्घ की बैठक से उठकर बाहर निकल गये और एक महीने के पश्चात् जापान ने राष्ट्रसङ्घ को नोटिस द्वारा सूचित किया कि वह राष्ट्रसङ्घ में सम्मिलित होना नहीं चाहता है।

जापान के अलग होने से यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट हो गई कि राष्ट्रसङ्घ मृतक के समान हो गया है और वह संसार के राष्ट्रों को एकत्रित नहीं रख सकता परन्तु फिर भी इंगलैंड ने अपना प्रभाव राष्ट्रसङ्घ पर डाल रखा और उसकी नाक मिटने नहीं दिया। अमरीका ने मञ्चूकुओ प्रश्न पर जापान का विरोध किया और कहा कि राष्ट्रसङ्घ को जापान की नीति का घोर विरोध करना चाहिये। इंगलैंड भी घोर विरोध नहीं कर रहा है। इसी कारण इंगलैंड तथा अमरीका के आपसी सम्बन्ध में भी कुछ अंतर आ गया।

अमरीका मञ्चूको की सरकार को मानने के लिये तयार न था। वह राष्ट्रसङ्घ को भी आदेश देना चाहता था कि वह उसको न माने परन्तु लाख वाशिंगटन में जो छान बीन इस बारे में उस समय हुई उस से साफ स्पष्ट होगया कि यदि जापान का घोर विरोध किया गया तो युद्ध हो जाने की सम्भावना है।

१९२० ई० के पश्चात् जब से अमरीका कानवेन्ट के बाहर हुआ तब से राष्ट्रसङ्घ के सदस्यों को यह आशा दी गई थी कि जो राष्ट्र निर्बल हैं उनपर सबल किसी प्रकार भी अत्याचार न करने पावेंगे। यद्यपि राष्ट्र-सङ्घ किसी भी अत्याचारी पर कोई खास रोक नहीं लगा सकता था तो भी इंगलैंड निराश में भी आशा की झलक देखता रहा और यही प्रयत्न करता रहा कि सबल राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों पर किसी भांति भी अत्याचार न करें।

जब १९३७ ई० में जापान ने चीन पर दोबारा आक्रमण जोरों के साथ किया और चीन ने दोबारा राष्ट्रसङ्घ से सहायता के लिये कहा तो इंगलैंड ने कहा यद्यपि इंगलैंड मैत्री भाव से चीन जापान के मामले को तै करना चाहता है तो भी वह अमरीका की बात मानने को तयार है। मिस्टर चैम्बरलैन तथा एडेम ने अपने भाषणों में कहा कि इंगलैंड चीन जापान के प्रश्न पर अमरीका का साथ देने के लिये हर तरह से तयार है। यदि वह अमरीका से इस प्रश्न पर आगे नहीं बढ़ सकता तो वह किसी भांति भी उस से पीछे नहीं रह सकता।

जापान ने जो नीति चीन में जारी रखी थी उसकी रोक अँग्रेजी भाषा के प्रयोग करने वाले राष्ट्रों के एकत्रित होने से ही हो सकती थी क्योंकि जापान, इटली और जर्मनी एक सूत्र में बंधे थे। जापान ने जिस नीति का अनुसरण किया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन राष्ट्रसङ्घ से जो सहायता चाहता था उसमें यदि हाथ डाला जाता तो युद्ध की अधिक सम्भावना थी। फ्रान्स तथा इंगलैंड दोनों राष्ट्र अवश्य ही बड़ी समुद्री शक्तियां समझी जाती थीं परन्तु वास्तव में यह बात ठीक न थी।

इंगलैण्ड यदि चीन की बात पर ज़ोर डालता तो जापान तथा इङ्गलैंड के बीच दुश्मनी बढ़ जाती। इङ्गलैंड यदि चीन को सहायता देता तो जापान उससे बहुत ज्यादा अप्रसन्न होता क्योंकि वह चीन पर अपना अधिकार जमाना चाहता था।

जापान इङ्गलैण्ड को अपना बैरी समझता है क्योंकि उसने कहा है कि हांगकांग के बन्दरगाह से होकर बहुत ज्यादा लड़ाई का सामान चीन भेजा गया था। यद्यपि उस लड़ाई के सामान में इङ्गलैण्ड का सामान बहुत कम था। जापानी सेना को विदेशी उपनिवेश तथा व्यापार करने वालों के कारण बहुत कठिनाई पड़ती थी। जापान इसी कारण पूर्वी एशिया में नया युग स्थापित नहीं कर सकता था। इसी कारण ब्रिटिश राजदूत पर आक्रमण हुआ और वह मरते मरते बचा। इङ्गलैंड के लड़ाकू जहाज़ों, अँग्रेज़ों की सम्पत्ति, व्यापारी जहाज़ों आदि पर जापान ने बम्ब वर्षा किया। यांगज़े तथा पर्ल नदियों का मार्ग अँग्रेज़ी जहाज़ों के लिये बन्द कर दिया गया। जिन भागों में अँग्रेज़ों का अधिकार था, जो म्यूनिस्पैलटियाँ उनके अधिकार में थीं उनपर भी रोक डाली गई। शङ्घाई के अन्तर्राष्ट्रीय बस्तियों तथा कुलांगस् में जो अधिकार विदेशियों को प्राप्त था उस पर भी जापानियों ने रोक लगा दिया और बम्ब बर्षा किया। टीनसीन में अँग्रेज़ों पर घेरा डाल दिया गया।

ब्रिटेन ने जापान द्वारा किये गये निरादरों को स्वीकार किया और निरादरों का विरोध केवल शब्दों द्वारा किया। यदि इंगलैण्ड चाहता तो वह अपनी नीति की रक्षा सैनिक ढंग से कर सकता था परन्तु वह मैत्री भाव जापान के साथ रखना चाहता था। इस कारण उसने कोई सैनिक प्रदर्शन नहीं किया। इंगलैण्ड के प्रधान मन्त्री मिस्टर चेम्बरलैन ने नवम्बर सन् १९३८ ई० में अपने वक्तव्य में कहा था कि वह मामूली बातों में पड़ कर अपना मैत्री भाव नहीं त्याग सकता इसी कारण टीन्टसिन के चार चीनी सन्देही जापानियों के हाथों अँग्रेज़ों द्वारा सौंप दिये गये थे।

परन्तु इन बातों के करने से इंगलैण्ड ने अपनी संधियों को आदर के साथ पालन करने का प्रयत्न किया। जब जापानी प्रधान मंत्री प्रिन्स कोनोई ने अपनी सुदूर पूर्व नीति को स्पष्ट किया तो ब्रिटिश राजदूत ने १४ जनवरी सन् १९३८ को जापानी राजदूत को पत्र लिख कर साफ कर दिया कि इङ्गलैण्ड नाइन पावर ट्रीटी (नौ राष्ट्रों की संधि) का आदर करना चाहता है और उसकी शर्तों को तनिक भी बदलना नहीं चाहता, वह सैनिक शक्ति द्वारा किये गये परिवर्तनों को भी स्वीकार नहीं करना चाहता है। इंगलैंड के इस नीति का प्रभाव जापान पर अच्छा पड़ा इसलिये मिस्टर चेम्बरलैन ने कहा कि यदि जापान सुदूर पूर्व देशों में इंगलैण्ड के हितों तथा लाभ का ध्यान रखना चाहता है तो अँग्रेज़ जाति भी जापान के साथ वैसा ही भाव दिखाने के लिये तयार है।

उसी समय के बाद से इंगलैंड तथा जापान की आपसी बातचीत टोकियो और लण्डन में होती चली आई है। टीन्टसिन के ब्रिटिश तथा फ्रान्सीसी बस्तियों में ५ करोड़ चीनी डालर रखा था। उस सम्बन्ध में भी इंगलैण्ड तथा जापान की बातचीत हुई। इंगलैंड उस रुपये को चीनी प्रवाह पीड़ितों पर व्यय करना चाहता था और शेष धन वह किसी तटस्थ बैङ्क में रखना चाहता था।

जापानी सरकार ने इस योजना को स्वीकार कर लिया था। फ्रान्स तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकारें भी इसे स्वीकार कर ही लेतीं परन्तु चीन इस योजना के विरुद्ध है।

इसी बीच रूस और जापान के बीच बार्तालाप हो रहा है। इङ्गलैण्ड इस बार्तालाप को ध्यान पूर्वक देख रहा है यह बातचीत आउटर मङ्गोलिया मन्चूको सीमा पर युद्ध का अंत करने के लिये हो रही है। जापान तथा रूस में व्यापार सम्बन्धी बातचीत भी हो रही है। यदि इसमें उन्हें सफलता हुई तो इससे इंगलैंड को सुदूरपूर्व में हानि होने का भय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैंड के कुछ लोगों का कहना है कि रूस जापान संधि होने के पहले ही जापान से संधि क्यों न कर ली जाय परन्तु इंगलैंड प्रजा की राय यह है कि जब तक चीन का युद्ध बन्द न हो जाय किसी प्रकार को संधि जापान से न की जाय।

इंगलैंड सुदूरपूर्व में अब भी नाइन पावर ट्रीटी (नव राष्ट्रों की संधि) की नीति का अनुसरण कर रहा है। वह चीन को मजबूत तथा स्वतंत्र रखना चाहता है पर वह जापान से भी सम्बन्ध तोड़ना नहीं चाहता है। कहां तक ब्रिटेन चीन की सहायता करेगा और जापानी विरोध का सामना करेगा कहा नहीं जा सकता। अभी चीन बर्मा सड़क को ब्रिटिश सरकार ने जापानियों को खुश रखने के लिये बन्द कर दिया है। इस मार्ग से कोई सामान चीन नहीं जा सकता है। जापान ने अपने यहां के कुछ अँग्रेजों को गिरफ्तार कर लिया है जिस पर ब्रिटिश सरकार अप्रसन्न हुई है और उसने जापानी सरकार का इस सम्बन्ध में बड़ा विरोध किया है।

चीन पर जापान का आर्थिक आक्रमण

चीन तथा जापान की लड़ाई का क्या फल निकलेगा, इस सम्बन्ध में लोग कई प्रकार की बातें सोचते हैं। कुछ लोगों का कथन है कि यदि जापान का चीन पर अधिकार हो जावेगा तो भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका के व्यापार को हानि न पहुँचेगी क्योंकि जापान की सेना चीनी लोगों पर अपनी इच्छा नहीं लाद सकती और न चीनी लोग उनकी बातों को स्वीकार ही कर सकते हैं। कुछ का कहना है कि यदि चीन की च्यांग काई शेक की राष्ट्रीय सरकार का अंत भी हो गया तो भी जापान में आर्थिक अथवा रोज़गारी शक्ति इतनी है कि विजय के पश्चात् चीन से पूरा पूरा लाभ उठा सकें। कुछ लोगों का यह कहना है कि जब चीन जापानियों के अधिकार में होगा तो उसकी उन्नति होगी और वहां पर संयुक्त राष्ट्र के व्यापार को अधिक सुविधा होगी। परन्तु यह सारी बातें सत्य नहीं हैं।

यद्यपि चीन की सरकार जापानी सेना को चीन से बाहर नहीं कर सकती और तोपों, गोलों और वायुयानों में ही जापानी सरकार का सामना कर सकती है तो भी यह बात माननीय है कि जापान ने चीन को विजय करने के लिये जो योजना बनाई है वह योजना सफल नहीं हो सकती।

जापानी सेना चीन से उसी दशा में हट सकती है जब कि १—चीन को किसी तीसरी शक्ति की सहायता वर्तमान समय की सहायता से अधिक प्राप्त हो या २—पश्चिमी देशों के कारण जापान आर्थिक संकट में पड़ जाय ३—जापान के लोग स्वयम् इस बात को समझ लें कि उनकी आर्थिक स्थिति युद्ध जारी रखने की नहीं है। यद्यपि पश्चिमी राष्ट्र इन बातों का सम्भावना देखते रहते हैं परन्तु ऐसा परिवर्तन जापान की नीति में होना बड़ा कठिन है। इसके दो कारण हैं, एक तो जापान की सेना का निरादर होगा दूसरे जापान के रोज़गारी नेता जो किसी समय में युद्ध के विरुद्ध थे अब चाहते हैं कि जब तक जापान की विजय न हो तब तक युद्ध जारी रखा जाय। जापान का आर्थिक जीवन चीन पर निर्भर कर रहा है।

जापान को आर्थिक कष्ट सा प्रतीत हो रहा था परन्तु युद्ध के कारण अब उसकी स्थिति में बहुत कुछ सुधार सा दिखाई पड़ रहा है। देहात की आबादी कम हो रही है क्योंकि वह लोग जीते स्थानों को हटाये जा रहे हैं। कुछ लोग रोज़गारी प्रदेशों में जा रहे हैं। बेकारी का प्रश्न तो वहाँ रह ही नहीं गया है। वहाँ पर लोगों के रहन सहन का व्यय तथा चीज़ों का मूल्य बढ़ गया है। परन्तु खर्च उतना अधिक नहीं बढ़ा है जितना कि वहां के लोगों की आय में वृद्धि हुई है। भीतरी ऋण, अधिक कारखानों का हो जाना, अधिक सामान का तयार होना, चीज़ों का सस्ता हो जाना आदि बातें हैं जिसका जापान को खतरा है परन्तु इन खतरों का निबटारा करने के लिए चीन की विजय करनी और भी आवश्यक हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान के फारेन इक्सचेंज की दशा बहुत खराब है। उसे स्टील, पेट्रौल, कच्चा ऊन, रुई, रबर, मशीन बनाने के सामान आदि वस्तुओं की बड़ी आवश्यकता है। यह चीजें उसे अवश्य ही दूसरों से मोल लेनी होंगी। कोरिया, मंचूरिया और उत्तरी चीन में वह सामान भेज सकता है परन्तु वह अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को ठीक नहीं कर सकता। अभी हाल ही में जापान ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बढ़े हुये कुछ धन का चुकता किया है जिससे वहां के सोने का एक अच्छा भाग निकल गया है। जापान के विदेशी व्यापार द्वारा पश्चिमी राष्ट्र उस पर प्रभाव डाल सकते हैं।

यदि पश्चिमी राष्ट्र अपना प्रभाव जापान पर न डालेंगे तो फिर या तो जापान धीरे धीरे सारे चीन पर अधिकार कर लेगा और चीन उसके प्रभुत्व में हो जावेगा या चीन युद्ध को लम्बा होते देख अपने को अकेला पाकर जापान से संधि कर लेगा।

पिछले कुछ महीनों से जापान अपने जीते हुये प्रदेशों को संगठित कर रहा है। जापानी सैनिकों का खर्च अधिक नहीं है। जापानी सेना (जो चीन में है) का ७५ प्रतिशत खर्च से दिया जा रहा है। यह चीन के ऊपर एक बड़ा भारी बोझ है। जापानी सेना चीन में इस कारण से रखी गई है जिससे जापान में बेकारी न बढ़े और देहात में किसी प्रकार का उपद्रव न पैदा होवे।

यदि चीन जापान से युद्ध में हार गया अथवा बिना घोषणा के कोई संधि हो गई या चीन ने जापान की शर्तें मान लीं तो फिर जापान को चीन पर अपनी आर्थिक योजना को पूरा करने के लिये पूरा अवसर मिल जावेगा और फिर वहाँ पर किसी भी राष्ट्र के व्यापार के लिये बहुत कम स्थान रह जावेगा। विदेशी कारबारियों को या तो वहाँ से निकल कर भाग जाना पड़ेगा या उन्हें जापान के कहने अनुसार कार्य करना होगा और भारी हानि उठानी पड़ेगी।

जापान चीन के अन्दर किस आर्थिक नीति का अनुसरण करेगा यह बिलकुल खुली बात है। मन्चूरिया उत्तरी चीन आदि स्थानों में उसने जिस नीति से काम किया है वह उसी नीति का अनुसरण करेगा।

यह बात सत्य है कि जापान के पास धन की कमी है जिसके कारण वह चीन में अपनी आर्थिक नीति का ज़ोरों के साथ संगठित नहीं कर सकता। जापान ने इसको सुलझाने के लिये विदेशों से ऋण मांगा है। यदि उसे विदेशों से ऋण अथवा सामान मिल जावेगा तो उसे अपनी योजना पूरी करने में आसानी होगी परन्तु यदि उसे ऐसी सहायता न मिली तो भी वह अपनी योजना को धीरे धीरे अवश्य जारी रखेगा।

जापान चीन से कुछ कच्चा सामान जापान ले जाना चाहता है। उनमें से खास खास सामान कोयला, कच्चा लोहा, कपास, ऊन और नमक हैं। यद्यपि जापान को आशा थी कि वह इन सामानों को मंचूरिया से ले जावेगा तो भी उसे पूरी सफलता प्राप्त नहीं हुई। मंचूरिया से जापान को केवल नमक मिला है। मन्चूरिया का अधिकांश लोहा खराब है और उसके ले जाने तथा तयार करने में व्यय अधिक पड़ जाता है। यद्यपि जापानियों के आने से मन्चूरिया में लोहा अधिक निकलने लगा है तो भी उसका अधिकाँश भाग मन्चूरिया में खप जाता है। कपास की उपज वहाँ कम होती है और उसकी उपज के लिये कोई खास प्रयत्न भी नहीं हो रहा है। ऊन भी वहाँ अच्छा और अधिक नहीं होता। यदि ऊन की वृद्धि करने का प्रयत्न किया जाय तो उसके लिये कई वर्षों की आवश्यकता है और मन्चूरिया के भेड़ों के रोज़गार को बिलकुल परिवर्तनशील बनाना होगा।

इन वस्तुओं में उत्तरी चीन मन्चूरिया से अधिक धनी है इस कारण जापान वहाँ पर इन वस्तुओं की उपज के लिये काफी कोशिश कर रहा है। लुङ्गयन की लोहे की खान जो चाहर (chahar) और होपह (Hopeh) प्रान्तों के बीच में है। चीन में सभी खानों से अधिक बड़ी है। कहा जाता है कि उसमें १००,००,००,००० टन लोहा पाया जावेगा। यह खान यद्यपि सुपीरियर झील और लारेन से छोटी है तो जापान की खानों से कहीं बड़ी है। लुङ्गयन की खान से १९२८ ई० में ७८००० टन लोहा जापान भेजा गया। यह बात अब भी तै नहीं है कि लुङ्गयन से जापान लोहा ले जाने में बचत होगी या नहीं। मार्ग में लम्बी रेलवे लाइन है। जापानी लोग १९४१ ई० में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० लाख टन लोहा निकालना चाहते हैं और इसीलिये खानों तथा पीपिंग सुइयान (Peping Suiyan) के मध्य रेलवे बनाई जा रही है।

मध्यवर्ती चीन को लोहे की खानों पर भी जापानियों ने अधिकार कर लिया है। ताएह (Tayeh) यांगचे (Yangtze) नदी पर हैनकाव (Honkow) के नीचे हैं वहाँ पर लोहे की खानें हैं। ऊहू (Wuhu) के समीप अनहवी (Anhwei) प्रान्त में भी लोहे की खानें हैं। इन दोनों स्थानों को खानों का लोहा अच्छा होता है और ५५ से ६० फीसदी तक लोहा निकलता है। यहाँ की खानों में लगभग २००,००,००,००० टन लोहा है। जब कि युद्ध याँगचे नदी के तट पर हो रहा था तभी जापान के लोहे के इंजीनियर ऊहू और क्यूकियाँग में मौजूद थे कि जैसे ही लोहे की खानों पर अधिकार हो वैसे ही कार्य आरम्भ कर दिया जावे। ऊहू और इन खानों पर जो लोहा (लगभग २ लाख टन) था वह शीघ्र जापान को भेज दिया गया।

वर्तमान युद्ध के पहले याँगचे की घाटी से जापान को दस लाख टन लोहा मिलता था। अब से लोहे की खानें जापानी अधिकार में है इसलिये अब और अधिक मात्रा में लोहा जापान भेजा जावेगा। अब से दस साल पहले चीन की सरकार ने याँगचे नदी पर लोहे के कारखाने खोलने के बारे में घोषणा किया था क्योंकि वहाँ नई लोहे की खानें मालूम हुई थीं। वह स्थान अब जापान के अधिकार में है। कुआँगटुङ्ग की प्रान्तीय सरकार ने कैंटन के समीप एक कारखाना खोलने के लिये योजना बनाई थी जिसमें वह दक्षिणी चीन के लोहे की खपत करना चाहती थी। इस भाग में भी जापान अपने अधिकारों को समूचित कर रहा है। इस प्रकार चीन की सभी लोहे की खानें जापानियों के अधिकार में चली गई हैं।

जापान में कोयले की भी बहुत कमी है। वहाँ पर खासकर कोकिंग (वह पत्थर का कोयला जो जला कर बुझाया जाता है) कोयले की कमी है। चीन में कोयला बहुत है। अभी हाल ही में एक जापानी ने अनुमान लगाया है कि उत्तरी चीन की खानों में २००,००,००,००,००,००० टन कोयला है। यह सभी खानें (विदेशी अधिकार वाली खानों को छोड़ कर) अब जापान के अधिकार में आ गई हैं। परन्तु अभी अधिक मात्रा में कोयला नहीं निकल रहा है। भागती हुई चीनी सेना ने जिन स्थानों को नष्ट कर दिया था उन के बनाने में कुछ समय लगेगा उत्तरी शांसी (Shansi) में टाटुङ्ग (Tatung) प्रदेश में बहुत कोयला है यद्यपि अधिक से अधिक मात्रा में कोयला निकालने के लिये मशीनें लगा दी गई हैं तो भी कोयले को ले जाने के लिये रेलवे लाइन की कमी है। टाटुङ्ग से टीटसिन (Tating-to-Tientsin) का मार्ग पर्वतीय तथा दुर्गम है जिस से उस पर बहुत खर्च पड़ रहा है।

पिछले कुछ सालों से उत्तरी चीन से जापान को अधिक से अधिक कोयला भेजा जाता है। १९३९ ई० में २०४०,००० टन कोयला जापान को भेजा गया। १९३६ ई० में केवल १० लाख टन भेजा गया था। उत्तरी चीन से मन्चूरिया की अपेक्षा अधिक कोयला जापान को भेजा जाता है और इसमें भी अधिक भेजे जाने की आशा की जाती है। नमक का प्रयोग जापानी विज्ञान शास्त्र में बहुत है इसका प्रयोग केमिकल खानों में बहुत होता है। परन्तु यह जापान में कम पाया जाता है। जापान बहुत दिनों से उत्तरी चीन की नमक की खानों पर दाँत लगाये हुये था। गत महायुद्ध में जब जापान ने शानटुङ्ग पर अधिकार जमाया था तो उसका एक मुख्य कारण वहाँ का नमक भी था। १९३९ ई० में टाँगकू में साफ़ करने के लिये एक कारखाना खोला गया यह जापानी सेना के अधिकार में चल रहा है। अगस्त में उत्तरी चीनी नमक बनाने वाली कम्पनी बनाई गई जिससे चाँगलू और शानटुङ्ग खानों का प्रबन्ध हुआ। जापान को १९३८ ई० में मंचूरिया तथा चीन से ९९३,००० टन नमक भेजा गया। आशा की जाती है कि १९४१ ई०तक में उत्तरीचीन २१००००० टन अकेले नमक तयार कर सकेगा। यह जापान के नमक का चार गुना होगा।

चीन से कच्चा ऊन संसार के सभी देशों को भेजा जाता था। चीन का ऊन मंचूरिया से खराब होता है। चीन का ऊन दरी तथा कालीन बनाने के काम आता है। चीन का ऊन संयुक्त राष्ट्र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी और जापान जाता था। जापानी सौदागर जिनके हाथ में चीन के ऊन का व्यापार था उनसे जापानी सरकार ने ऊन बेचने को कहा परन्तु उन्होंने लालच किया और उसका मूल्य घटा दिया साथ ही साथ ऊन का मूल्य नये स्थापित किये गये फेडरल रिज़र्व बैङ्क के नोटों में किया जिससे व्यापारिक केन्द्रों में जो ऊन था वह तो मिल गया परन्तु बाकी ऊन लोगों ने अपने घरों में रख लिया और बह स्वतंत्र चीन, मङ्गोलिया तथा रूस को भेज दिया गया। संयुक्त राष्ट्र ने ऊन नहीं खरीदा। जापान को भी और सालों से कम ऊन मिला। वर्तमान जापानी योजना के अनुसार जापान को १९१६ ई० में ५ लाख टन ऊन की आवश्यकता है। परन्तु इतना ऊन चीन से मिलना कठिन है क्योंकि जापानी व्यापारियों को विश्वास चीन के लोगों के हृदय से निकल गया है।

जापान को कपास की बड़ी आवश्यकता है वहां के कारखानों में सूत काता जाता है और कपड़ा भी तयार किया जाता है। सूती कपड़ा सूत जापान से बाहर भेजा जाता है। जापान में संयुक्तराष्ट्र अमरीका से भी रुई मंगाई जाती है। कई सालों से जापान कोशिश कर रहा है कि जो भाग उसके अधिकार में है वहां से उसे कपास मिल जाय परन्तु उसे अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हुई है। कोरिया तथा मंचूरिया की जलवायु ऐसी है जहां कपास की उपज अधिक नहीं हो सकती है। चीन में कपास पैदा की जाती है और अधिक उपज होने को सम्भावना भी है। चीन में जो रुई पैदा होती है उससे जापान की मांग की ४० प्रतिशत रुई की उपज होती थी इस उपज का थोड़ा भाग जापान भेजा जाता था। १९३६ ई० में चीन से जापान की मांग की केवल ३ प्रतिशत के लगभग रुई जापान भेजी गई। १९३८ ई० में यह प्रतिशत बढ़ कर १७ हो गई और २१२,००००० पौंड रुई जापान गई। इसका मुख्य कारण यह हुआ कि चीन के किसानों ने रूई की उपज नहीं किया परन्तु यह बात अधिक समय तक नहीं चल सकती। चीनी किसान जापानी दबाव के कारण तथा धनोपार्जन के कारण रूई की उपज के रंग और उत्तरी चीन जापान का उस मांग को काफी हद तक पूरा करेगा जिसे अभी संयुक्तराष्ट्र अमरीका पूरी कर रहा है।

जापान को चीन से अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने के लिये लोहा, कोयला, नमक, ऊन और रूई लेने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जो कुछ अन्दाज़ जापानी सरकार ने इन वस्तुओं की उपज का लगाया है वह ठीक नहीं है तो भी यह मान लेना गलती है कि जापान अपनी योजना को पूरा कर सकेगा। चीन के कच्चे सामान का उपज बढ़ाने में जापान ने अभी काफी उन्नति कर ली है। इस बात की आशा की जाती है कि वह अपने कारखानों की सारी आवश्यकताएँ चीन से पूरी करेगा। उत्तरी चीन में २ लाख जापानी लोग आकर बस गये हैं। और १० हज़ार प्रति मास के हिसाब से लोग आ रहे हैं। चीन में अब भी गरीला युद्ध कौशल के कारण परेशानी है परन्तु मंचूरिया की भांति उत्तरी चीन भी शांत हो जावेगा। चीन के कुछ लोग जापानी सरकार को मानने लगे हैं इसलिये जापानियों को चीन से सस्ते मजदूर मिलने में भी किसी प्रकार की कठिनाई न उठानी पड़ेगी।

जापानी क़ानून के अनुसार उत्तरी चीन के कच्चे सामान को संगठित तथा उसकी वृद्धि के लिये नार्थ चाइना डिवलपमेन्ट कम्पनी बनाई गई है। यह कम्पनी १९३८ ई० में स्थापित की गई थी। इस कम्पनी में ३५,००,००,००० एन* लगा है जिसमें जापानी सरकार १७५,०००००० एन की हिस्सेदार है। उसी समय मध्यवर्ती चीन के लिये सेन्ट्रल चाइना डिवलपमेन्ट कम्पनी बनाई गई थी जिसमें १०००००००० लगाया है। दक्षिणी चीन के लिये साउथ चाइना डेवलपमेन्ट कम्पनी बनाने का प्रस्ताव भी किया गया है। इन कम्पनियों के नीचे और दूसरी कम्पनियाँ भी स्थापित की गई हैं। इन कम्पनियों को जापानी महाजन चीन की प्रावीज़नल सरकार और चीनी महाजन सहायता दे रहे हैं।

चीन के आर्थिक धन्धों तथा उपज आदि में जापानी धन से बड़ा कार्य हो रहा है। मन्चूरिया मिनसुबीशी में जो कम्पनियाँ कुआँगतुङ्ग सेना के अधिकार में खोली गई थी उनसे इन कम्पनियों के

---

*एन (एक जापानी सिक्का है जो १३ आने के बराबर होता है)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाने वालों की नीति सरल है। जापानी महाजनों तथा धनियों को काफी सुविधा मिली है और उन्हें अधिकार भी अधिक दिये गये हैं। वे कम व्यय करके भी कम्पनियों को अधिक उन्नति दे सकते हैं। जापान के कारखाने के मालिकों ने चीन में खाद्य तथा पदार्थ कच्चे सामान को उन्नति देने के लिये पहले से ही प्रबन्ध कर रखा था और उनके कार्यकर्ता तथा सर्वे पार्टियां पहले से ही जापानी सेना के पीछे लगे हुये थे। जैसे जैसे जापानी सेना आगे बढ़ती थी वैसे वैसे जापानी खानों के चतुर ज्ञानी लोग चीनी खानों की खोज करते जाते थे।

जब जापान के व्यापारिक नेता जापान की सरकार की इतनी सहायता कर रहे हैं तो यह नहीं कहा जा सकता कि जापान के व्यापारी जापान की सरकार के नीति के विरुद्ध हैं। यद्यपि कहीं कहीं पर आपस में झगड़े अवश्य हुये हैं परन्तु वह झगड़े लूट के माल के बाटने में हुये हैं।

जापान ने चीन में अपने आदमी कच्चे सामान की उपज करने के लिये रखे हैं। छोटे छोटे कारखाने जो चीनियों के अधिकार में थे उन्हें जापानी व्यापारियों ने खरीद लिये हैं जिन कारखानों में चीन के केन्द्रीय अथवा प्रान्तीय सरकार का कुछ भी भाग था उस जापान ने सरकारी कारखाना समझ कर अपने हाथों में ले लिया है। जो कारखाने चीन के निजी लोगों के थे उन पर जापानी सेना अधिकार कर लेती है और जापानी सेना की आज्ञा द्वारा ही उनमें काम लगाया जाता है। जापानी लोग चीनी लोगों का साथ लेकर कारखाने को चलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। चीनी मालिकों को कहा जाता है कि वह सीनो जापानी कम्पनियां बना कर कार्य करें। इसमें कम्पनी के प्रबन्ध का काम जापानियों के हाथ में रहता है और मजदूरी भी जापानी लोग देते हैं बाकी कम्पनी का खर्च चीनी लोगों को उठाना पड़ता है। चीनी लोगों ने इन शर्तों को स्वीकार कर लिया है। चीन के रेशम के कारखानों को पहले चीनी तथा जापानी मिलकर चला रहे थे और उनका कम्पनी में बराबर बराबर भाग था परन्तु फिर जापान वालों ने कम्पनी को बढ़ाना चाहा और अपना धन लगाकर ३/४ भाग के हिस्सेदार हो गये। अभी कुछ महीने हुये जब मुनाफे की रकम का बटवारा हुआ तो जापानियों ने कहा कि चीनी हिस्सेदारों को जभी मुनाफा दिया जा सकता है जब कि वे अपनी टाइटिलों को कम्पनी को दे दें।

चीनी मिल मालिकों ने जापानियों की नीति को समझ कर ही शङ्घाई के अन्तर्राष्ट्रीय सेटिलमेन्ट अथवा विदेशी रोजगारों में जापानियों का साथ नहीं दिया। बहुत सी मिलें जिनके मालिकों का अंत हो गया है वे जापानियों को चलाने के लिये दे दी गई है। जापानी सेना तथा जापानी लोग चीन के कारखानों और मिलों पर सीधे अथवा टढ़े रूप से अधिकार करना चाहते हैं। वे बहाना करते हैं कि जब तक मिल के मालिक का पता नहीं चलता हम चीनी मजदूरों की सहायता के लिये मिल को चलाते हैं। सन् १९३९ ई० में जापानियों ने घोषणा किया कि बहुत वार्तालाप करने के पश्चात् यूङ्गली केमीकल इन्डस्ट्रीज लिमिटेड ने मान लिया है कि वह अपने टाँगकू और पुकोव के कारखानों को जापानी हित के लिये दे रही है। परन्तु जून के महीने में यूँगलो कम्पनी ने नोटिस निकाली कि टाँगकू और पुकाव के कारखाने उनके हैं और उन्होंने जापानियों के अधिकार का इन्कार किया और कहा कि चीन की वर्तमान बुरी परिस्थिति का वे लोग बेजा लाभ उठा रहे हैं।

बहुधा मिलों पर जापानियों ने अधिकार कर लिया और जब तक कच्चा सामान समाप्त नहीं हुआ चलाते रहे। कुछ कारखानों का सामान उठाकर जापानी कारखानों में पहुँचा दिया गया। बहुत सी मिलों ने अपने नाम विदेशी कम्पनियों को दे कर अपने कारखानों की रक्षा किया। कुछ कारखाने बेकार पड़े हैं क्योंकि उनको जापानी सेना ने बर्बाद कर दिया है। उनके मालिक उन्हें भय से नहीं बनवाते कि जापानी सेना की आज्ञा से ही वे उनके मालिक बन सकते हैं अन्यथा नहीं। बहुत से कारखाने चीन के भीतरी भाग को उठाकर ले जाये गये हैं जो अब भी चीन के अधिकार में है।

जहाँ पर जापानी सेना का अधिकार हो गया है वहाँ पर सारे कारखाने तथा व्यापारिक संस्थाएँ जापानियों के हाथ में हो गये हैं। बिजली घर, तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सड़कें, रेलें आदि की उन्नति जापानियों ने अपने अधिकार में किये हुये स्थानों पर बड़ी शीघ्रता के साथ किया है। बड़ी दूकानें, मिलें और कारखाने सभी जापानियों के अधिकार में हैं। केवल छोटी दूकानें और कुछ स्टोर्स चीनियों के हाथ में हैं। उत्तरी चीन की कोयले की खानें जापानियों को धीरे धीरे दी जा रही हैं। मितसुबीशी, कैजिमा, मितसुई ओकूरा, मीजी माइनिंग और टाटुङ्ग की खानों की खुदाई का प्रबन्ध नार्थ चीनी डिवलपमेन्ट कम्पनी, नार्थ चाइना ट्रान्सपोर्टेशन कम्पनी और दक्षिणी मन्चूरिया रेलवे ने अपने हाथों में लिया है और धन लगाया है। चाइना मरचेन्ट स्टीम नैवीगेशन कम्पनी के सारे जहाज छीन लिये गये हैं। उत्तरी चीन के ५० आटे की मिलों पर चीनी जापानी प्रबन्ध कर दिया गया है। उनमें से कुछ पर तो अब भी सेना का कब्ज़ा है और कुछ जापानी आटे की कम्पनियों को दे दी गई है। चीनी लोग मिल, कलें, घर और सामान का प्रबन्ध करते हैं। जापानी लोग मिलों के चलाने का खर्च चलाते हैं। टीन्टसीन के जापानी कम्पनी ने उत्तरी चीन के एक दियासलाई के कारखाने पर अधिकार कर लिया है और यदि वर्तमान योजना सफल हुई तो उसका अधिकार मध्यवर्ती चीन के दियासलाई के कारखाने पर भी हो जावेगा।

चीन के लगभग सभी लोहे के कारखाने जापानियों के हाथों में चले गये हैं। शिंचिंगशान का लोहा साफ करने का कारखाना जापानियों के अधिकार में है और १५० टन प्रति दिन लोहा तयार होता है। ताएह का कारखाना जापान आइरन मैनूफैक्चरिंग कम्पनी के हाथ में है। चीन के भिन्न भिन्न भागों में सिमेन्ट के कारखाने खोले गये हैं। इनमें से सेचवान Szechwan और क्वांगसी Kwangsi के कारखाने चीनियों के हाथों में हैं। एक शांसी का और कैंटन का कारखाना असानों के अधिकार में है शेष सभी सिमेन्ट के कारखाने चीनी जापानी अधिकार में है।

रूई कातने और सूत बनाने का रोजगार चीन में सब से बड़ा कारबार है और इसमें और रोजगारों की अपेक्षा अधिक चीनी रूपया लगा हुआ है। शंघाई के बाहर कुछ सूती कारखाने चीनियों के अधिकार में हैं। जिन प्रान्तों में जापान का कब्जा हो गया है वहाँ के कारखाने जापानियों को जापानी सेना ने दे दिये हैं। चीन के सूती कारखानों के मालिकों में से केवल एक ही जापानियों के साथ रह कर मिल चलाने पर राज़ी हुआ है। शेष सभी कारखाने मालिकों के बिना पूछे जापानियों को दे दिये गये हैं।

चीनी कारखानों पर अधिकार प्राप्त करने पर भी जापानियों की इच्छा पूरी नहीं हुई इस कारण उन्होंने अपने नये कारखाने खोलने आरम्भ किये हैं। हैहो नदी के किनारे टीन्टसिन के नीचे मीलों जापानियों के नये कारखाने बन गये हैं। ये कारखाने सूती, कागज़, सिगरेट और रसायन बनाने के कारखाने हैं। कनेगाफूची स्पिनिंग तथा वीविंग कम्पनी के प्रेसीडेन्ट ने कहा है कि जापान के सारे सूती कारखाने चीन में स्थापित कर दिये जायँ जिससे चीन की सभी रूई का प्रयोग भली प्रकार हो सके और मजदूरों को वेतन भी कम चुकाना पड़े।

चीन के विदेशी कारखानों की दशा चीनी कारखानों से कुछ अच्छी रही है परन्तु उनके व्यापार को भी कुचलने का प्रयत्न किया गया है। चीनी नदियों का मार्ग विदेशी जहाज़ों के लिये जापानी सरकार ने बन्द कर दिया था। यद्यपि अभी हाल में जापानी सरकार ने विदेशियों से प्रतिज्ञायें की हैं परन्तु फिर भी विदेशी लोगों को चाहिये कि वह जापानी सरकार की रोकों का सामना करने के लिये हरदम तयार रहें।

विदेशी व्यापार पर जापान ने बड़ी बड़ी रोकें लगा दी हैं। बर्तमान समय में विदेशी सामान भेजने की आज्ञा जभी मिलती है जबकि याकोहामा स्पेसी बैंक में मुद्रा का अदल बदल किया जाय। चीन में जो सामान बाहर से आता है उसपर जापान ने अधिक चुङ्गी लगा रखी है।

पूर्वी एशिया में न्यूआर्डर की चर्चा जापानी लोग करते हैं। इसका साफ साफ कोई अर्थ नहीं चलता परन्तु चीन में जो जापानी नीति चल रही है उससे उसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है। जापान ने चीन के काफी भाग पर अधिकार कर लिया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख स्थानों पर जापान ने सरकारें स्थापित कर दी हैं। जापानी लोगों ने सभी आर्थिक व्यवसायों को अपने अधिकार में कर लिया है। विदेश वालों के अधिकारों की परवाह नहीं की जा रही है और विदेशी ब्यापार पर भाँति भाँति की रोकें लगाई जा रही हैं।

प्राकृतिक महासमर

(लेखक—गोविंदशंकर राव नाड़कर्णी, अ० टी० मि० स्कूल, जावद)

गत अप्रैल ४० में आगामी महासमर अंक प्रकाशित होने की सूचना पाते ही मस्तिष्क शिला पर वर्तमान प्राकृतिक महासमर की तरंग सपाटा भरने लगी। वैसे तो समर शब्द ही आधुनिक संसार की प्रगति में महान महत्व रखता है जिसे कि बृहद् एवं मेधावी कवि प्रकृति प्रत्येक वस्तु में अनुसंधान कर रहे हैं। किसी किसी कवि ने तो, 'जाग, रण जाग' शब्दों से स्वागत कर इसका आह्वान किया है। देखिये राम के इतिहास में लंकाकांड एवं लव कुशकांड इसी महत्व पर अवलम्बित है; तो कौरव-पांडव का महाभारत ही महासमर का उपनाम बना है। (कहने के तात्पर्य यह नहीं कि गृह महासमर मचने दो। वह तो फूट कहलावेगी। गृह नाशक होगी। परन्तु समर तो नव पदार्थ जनक है।) उसी के प्रभाव से यह दीन-जन-आश्रय-स्थल भारतवर्ष कहलाया। वह क्यों? केवल इसी ऊसर-भू के प्रभाव से यह भू समस्त जगत की वृहद् एवं महत्व शाली रणस्थली कहलाई। जब हम किसी भी देश का इतिहास उठाते हैं तो ऐतिहासिक प्रमुख पात्र की दृष्टि इसी भारत-तल पर उड़ी हुई पाते हैं। यहाँ तक कि उनको इसी भारत-भूतल पर योद्धारूप में विचरण करते हुये देखते हैं। परन्तु कभी कभी तो उनको स्वत: को यहाँ की अमर संपदा एवं सौंदर्य पर बलि देते हुये देखते हैं।

उदाहरणार्थ, बाबर, तैमूर, सिकन्दर, कोलम्बस आदि आदि।

तो क्या ये सब, समर-संसार-वैभव में सगर्भित हो चुके? नहीं! कदापि नहीं!! बल्कि उनका क्रम आज दिन तक चला आया है और यही कारण है कि वर्तमान-जगत-जनता को महासमर शब्द स्तब्ध कर देता है।

तो क्या महासमर केवल जन-समुदाय ही में होता है? नहीं! बल्कि जड़ एवं जंगम वस्तुमात्र में भी समर अपना स्थान रखता है। वास्तव में समर ही जगत, देश-वस्तु, कला, विज्ञान, भू आदि की उन्नति का प्रथम एवं प्रमुख साधन है।

उदाहरणार्थ, दो पत्थरों में महासमर मचने दीजिये, तो एक नवीन एवं आश्चर्यान्वित आभा दोनों पत्थरों के मध्य देदीप्यमान हो जायगी। यह वह आभा है कि जिसे हम अनल कहते हैं। जो कि भास्कर प्रभु का सर्वेसर्वा है। अर्थात् तुमुल-संग्राम का अर्थ ही यही कि एक नवीन आभा का आविष्कार होने वाला है। यही नवीन-पदार्थ-जनक समर प्रकृति में मच रहा है। इसी महासमर के प्रभाव से जगत, जगत हो रहा है वरन् जन-पद-शून्य गोला है।

वर्तमान वर्ष में जलाभाव के कारण मारवाड़ की जनता का प्रकृति के बीच तुमुल-संग्राम मचा हुआ है। मारवाड़ का बच्चा बच्चा मालवे के गर्भ में आगया है। जनता कीड़े, मकोड़ों की तरह, फैल रही है। प्रत्येक मार्ग धारा-प्रवाही हो रहा है। बैलगाड़ियाँ, गायें, भैंस, भेड़ें आदि जानवर दुर्बल हो गये हैं। उनकी पसलियाँ एकएक करके गिन सकते हैं।

जल एवं उनका खाद्य-पदार्थ (घास) न मिलने से ये चौपाये क्षण क्षण मात्र में पंचत्व प्राप्त कर रहे हैं। नर-नारियों के होश उड़ रहे हैं। वे भी अपना गो-धन विवश हो जगह जगह पर त्याग रहे हैं। मेरा गांव मारवाड़-प्रवेश करने के लिये नाके बन्दी का काम देता है। इसलिये यहाँ जगह जगह मारवाड़े पड़े हुये हैं। वायु भी तीव्र गति से प्रवाहित है जिसके कारण प्रयाण करने में अति कठिनाई पड़ती है। फिर भी प्रकृति की व्यग्र थपेड़ों से व्यथित मारवाड़-वासी इस महासमर में पीठ नहीं दिखाते। ऐसा मालूम होता है मानों इनका स्वभाव ही पड़ गया है और है भी ऐसा ही। कारण कि हर दो तीन साल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्तर ऐसे दिन इन्हें देखने पड़ते हैं। इसी तरह इस साल भी वे अविरल परिश्रम कर रहे हैं। उन्हें भी आशा है कि कभी न कभी प्रकृति पराजित होगी। वा समानता में सम पाकर नतमस्तक हो उसे कहना ही पड़ेगा कि, "बस, ! अब इन्हें अधिक कष्ट न देकर जल प्रदान कर सुख की चरम सीमा पर पहुँचा देना चाहिये।" जैसे कि अकबर ने प्रताप के विषय में कहा था।

इसी प्राकृतिक महासमर के प्रभाव से एक समय यह आया था कि सब पेड़ पौधे पर्णहीन हो नग्न शाखाएँ लिये खड़े थे। इन्हें क्या आशा थी कि ये पुनः सपर्ण एवं हरे वस्त्रालंकार से भूषित किये जाकर प्राकृतिक-प्रसून-इत्र के सागर में स्नान करेंगे ? परन्तु नहीं ? आज तक वे इसी रण प्राङ्गण में डटे रहे तो उन्हें ये हरे दिन देखने पड़े। इसी तरह यद्यपि आज मारवाड़ निवासी इस प्राकृतिक रण-प्राङ्गण में तितर बितर होकर जगह जगह पर ठोकरें खा रहे हैं, परन्तु यह सोच लें कि वे इसी परिस्थिति में सर्वदा के लिये रहेंगे, सो नहीं। उन्हें पुनः आनन्द दिवस देखने पड़ेंगे। यद्यपि प्रकृति ने एक ही जलाभाव नामी अस्त्र फेंका है तौभी मारवाड़ वासी दूसरे शस्त्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं और उसे भी सन्तोष की ढाल पर झेलने के लिये तत्पर हैं। हाँ ! आज इनकी दीनावस्था पर बज्र-हृदयी-व्यक्ति भी सहृदय हो जाता है। इनके जीर्ण वस्त्र सुदामा की, "धोती फटी सी लटी दुपटी" अवस्था का स्मरण करा देते हैं। इनके चेहरे पर मुर्दाई छाई हुई है। दक्षिणी-पश्चिमी गर्म वायु के तेज प्रवाह ने इनके होंठ सुखा दिये हैं। भासान्त प्रभु नभ मंडल मध्य आरूढ़ हो प्रखर-रश्मि-शर छोड़ रहे हैं। पृथ्वी से आग की लपटें धर्र धर्र करती हुई निकल रही हैं। जिनकी व्यग्र चोट कोमल कपोलों पर पड़ने से ये झुलसा रहे हैं। सिर-दाढ़ी पर कचबन फहरा रहा है। इन सब संकटों का एक ही साथ सामना करने पर भी उनके नेत्रों से गम्भीरता टपक रही है। वे शान्त रूप धारण कर सब कष्टों को झेल रहे हैं। आज इनके खरे जीवन-संग्राम का अध्ययन करने को मिलता है। इनकी शारीरिक अवस्था को देखते ही हमारे मुख से बरबस निकल पड़ता है 'अविरल-परिश्रम की ज्वलंत प्रतिमा' यह ही हैं।

इन्हीं को देखने से हम सारे मारवाड़ का भूगोल घर के एक कोने में बैठ कर पढ़ सकते हैं। यह किसकी असीम कृपा से ! केवल एक वही दुर्भिक्ष जिसने मारवाड़ मेवाड़ में त्राहि-त्राहि मचा दिया है।

वैसे तो सारा राजपूताने का मरुस्थल जन-पद-शून्य है ही पर जो कुछ कसर थी उसे वर्तमान दुर्भिक्ष ने पूरा कर दिया। चारों ओर खेत सूखे पड़े हैं। आकाश धूलि-धूसरित हो रहा है। वायु तूफान एक से एक जबरदस्त आ रहे हैं। कभी-कभी इनके प्रभाव से मही-नभ धूल-कणों के स्तंभ से जुड़े हुये दिखते हैं। कुओं में जगह २ सांबलो (लोहे का वह दंड जिससे पत्थर में छेद किया जाता है) की खणण खणण आवाज कर्णगोचर हो रही है। कोई-कोई कुओं के ऊपर से अन्दर के पत्थर निकालते हुये दिखाई देते हैं। कहीं-कहीं कुओं में से, 'कौड़ो तमाम' (खींवो) की आवाज आ रही है। कहने का तात्पर्य यही कि कुएँ सूख गये हैं। खास-खास कुओं पर रातदिन भीड़ लगी हुई दिखाई देती है। बाल्टियों की ठनाठन और भड़भड़ाहट ने रहे सहे पानी को भी कीचड़ कर दिया है। वहाँ पर भी संग्राम रात दिन मचता रहता है। जनता इसी गंदे पानी को घर पर लाकर निथार निथार कर पीती हैं।

ऐसी प्रखरावस्था पर भी कृषक गण हल-बक्खर, फावड़े-कुदाली लेकर प्रकृति का सामना कर रहे हैं। इनके मस्तक से श्वेद-कणों की माला निकल रही है। ये हाँफ रहे हैं। सारे शरीर पर धूल चढ़ रही है। पीठ सूर्य की प्रखर किरणों के प्रभाव से काली पड़ गई है। कहीं कहीं पसीने की श्वेत धाराएं शरीर पर खिंची हुई हैं। परन्तु फिर भी कार्य-प्रवाह में सुस्ती नहीं है। इस अवस्था को देखकर कहना ही पड़ता है ;—

चल रहा सन सनपवन तन से पसीना ढल रहा।
बरसा रहा है रवि अनल भूतल तवा सा जल रहा॥
फिर भी कृषक नहीं मानता, अविरल परिश्रम कर रहा।
सन्तोष की वह मूर्ति बन कर, सृष्टि-तल पर चल रहा॥

यह दशा तो हमारे यहां के कृषकों की है। परन्तु मारवाड़ वासियों की तो इससे भी कष्टमयी अवस्था हो रही है। ठहरने को नियत स्थान नहीं हैं। ढोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर रहे हैं। खाने को अन्न का ठिकाना नहीं है। न आराम तलबियों का सा सामान है। दिन भर चलना, सिर पर गट्ठर को लादे रहना, ढोरों को जल पिलाना, घास खिलाना आदि की चिन्ता रखना, जगह जगह दुत्कारें खाना आदि आदि। इतना कष्ट मय जीवन होते हुये भी आज इनके हृदय क्षेत्र में आशालता लहलहाने लग गई है। चेहरों पर उत्साह झलक रहा है। बड़ी खुशी से ये अपने डेरे उत्तर को ओर आतुरता से लिये जा रहे हैं। क्या कारण होना चाहिये? यही कि उत्तर की ओर से आकाश साफ हो रहा है। बादल-सेना कृष्ण वर्ण धारण करके दक्षिण की ओर चढ़ाई कर रही है।

प्रति दिन प्रातः काल आकाश स्वच्छ, सूर्य तेज, वायु प्रवाह मन्द। परन्तु संध्या के तीन-चार बजे ही से बादलों की गर्जन प्रारम्भ हो जाती है। आकाश अभ्राच्छादित हो जाता है। वायु प्रवाह तेज रहता है। अर्थात् आंधी चलती है। कहीं कहीं जल कण के पर्दे एकदम आकाश से भूतल तक खिंच जाते हैं। सूर्य अदृश्य है। पर हाँ! अर्ध प्रकाश या धुंधलापन जरूर पृथ्वी पर फैलता है। कभी-कभी बिजली अपनी चमक दिखाती है मयूर 'कां, कां' की समां बांध रहे हैं। आम्र-वृक्ष कैरियों से लदे हुये हैं। इन पर बैठकर कोयल (कोकिल) 'कूऊ, कू···ऊ' शब्द उच्चार रही है। यह वसन्त-वर्षा मिश्रित समय मन को निराला ही आनन्द दे रहा है। तुलसी दास जी ने भी कहा है कि—

"लछमण देखहु मोर गण, नाचत वारिद पेखि।"

एक कवि—

"दामिनी दमकि दिखाति, दुरति पुनि दौरत लहरें।
छुटि छबीली छटा छोर छिन छिन छिति छहरें॥"

सूर्यास्त के समय सारे नभ में लालिमा छा जाती है। प्राची दिशा में सप्तरंगी इन्द्रधनुष भी दिखाई देता है।

इन उपरोक्त लक्षणों से मालूम होता है कि इन मारवाड़ मेवाड़ वासियों के संतोष एवं गंभीरता पर मोहित होकर अथवा इनकी दैन्यावस्था पर तरस खाकर वर्षा ऋतु प्राकृतिक महासमर के रण स्थल में मारवाड़-मेवाड़ वासियों के पक्ष में घन-सेना को साथ ले दुर्भिक्षित को जगत खदेड़ देने के लिये आ उतरी है। यही कारण है कि मारवाड़ वासी मददगार को पाकर बड़े उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं। मालूम होता है कि इस साल वर्षारम्भ जल्दी ही होगा। इस प्राकृतिक महासमरान्त के साथ साथ जन महासमर का भी अन्त दिखाई देता है।

बाजार—बाजार में कदम रखने के पहिले अपनी जेब गरम रखना आवश्यक है। कारण कि प्रत्येक वस्तु महँगी है। गेहूँ, जौ, ज्वार, दालें आदि का भाव बढ़ रहा है। खरीददारों की संख्या बढ़ते देख वणिक अपनी मूछों पर अधिकाधिक ताव देते हुये दिखाई पड़ते हैं। घी, दूध, दही का अभाव होने से ये भी दिन प्रति दिन महंगे हो रहे हैं। यही कारण है कि दीन-कृषक जनता ने ऐसे पौष्टिक पदार्थों के उपयोग का बिलकुल निषेध कर दिया है। खाद्य वस्तुयें महँगी होने से जगह जगह डाके, लूट मार आदि होने लग गये हैं। चोर, लम्पटों की संख्या बढ़ रही है। लोगों के पास पैसा न रहने से उन के स्वभाव में नङ्गापन (तुच्छता) विशेष मिश्रित हो गया है। कपट वेश धारी याचकों की संख्या भी अधिक हो रही है। इन्हीं कारणों से सरकारी प्रबन्ध में विशेष सावधानी बढ़ रही है। गांव गांव में पुलिस जवान तैनात किये जा रहे हैं। नये नये नियम बनते जा रहे हैं। कहने का तात्पर्य यही कि प्राकृतिक महासमर ही नये नियमों के आविष्कारों का जनक एवं जन-महा-समर का कर्ता है।

★ ★ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय का फेर

(प्रह्लादनारायण रायज़ादा, एम० ए०, बी० टी०)

हमारी पृथ्वी अपनी कीली पर २४ घंटे में एक चक्कर पूरा करती है। उसकी गोलाई के कारण सूर्य की रोशनी केवल अर्द्ध भाग पर ही पड़ती है। अतएव जिस समय जो अर्द्ध सूर्य के सम्मुख होता है उसमें दिन और दूसरे आधे भाग में रात होती है ठीक जिस स्थान पर जिस समय सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं वहाँ पर मध्यानकाल होता है और उसके ठीक पीछे के भाग में अर्द्ध रात्रि। ज्यों ज्यों पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है पूर्व के स्थानों में दिन ढलता जाता है क्योंकि वहाँ पर दोपहर हो चुका है और पश्चिम के स्थानों में दिन चढ़ता जाता है क्योंकि वहाँ दोपहर अभी होगा।

पृथ्वी के गोले पर चारों ओर उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक ३६० रेखायें खींची गई हैं जिन्हें देशान्तर रेखायें कहते हैं। चूँकि पृथ्वी अपनी कीली पर एक चक्कर २४ घंटे में पूरा करती है अर्थात् ३६०° देशान्तर घूमने में उसे २४ घंटे लगते हैं तो १° देशान्तर घूमने में उसे ४ मिनट लगेंगे।

अतएव दो स्थान जिनके बीच का अन्तर १° देशान्तर है ४ मिनट का अन्तर रखते हैं। जो स्थान पूर्व में होगा उसका समय ४ मिनट आगे और जो पश्चिम में होगा उसका समय ४ मिनट पीछे होगा। यदि ८०° पूर्वी देशान्तर पर दिन के बारह बजे हैं तो ८१° पूर्वी पर १२ बज कर ४ मिनट होंगे और ७९° पूर्वी देशान्तर पर ११ बजकर ५६ मिनट समय होगा। देशान्तर रेखायें लंदन के समीप एक स्थान ग्रीनविच से आरम्भ होती है। ग्रीनविच का देशान्तर ०° है। यदि हम यहाँ से पूर्व की ओर यात्रा करें तो समय अधिकाधिक मिलता जायेगा और यदि पश्चिम की ओर जायें तो समय कम मिलता जायेगा।

यदि हमें दो स्थानों का अन्तर मालूम करना है तो पहले उन दोनों देशों के देशान्तर मालूम करके उनके बीच का अन्तर मालूम करेंगे और फिर उसमें ४ से गुणा करेंगे तो मिनटों में अन्तर आ जायेगा। यदि पूर्व में स्थान का अन्तर दिया है और पश्चिम के स्थान का समय मालूम करना है तो पूर्व के समय में से अन्तर को घटाने से पश्चिम के स्थान अन्तर निकल आयेगा। यदि पश्चिम के स्थान का अन्तर दिया है पूर्व के स्थान का समय पूछा है तो पश्चिम के स्थान के समय में अन्तर को जोड़ देंगे। जैसा कि पहले कहा गया है जो देशान्तर सूर्य के ठीक सामने होगा वहाँ पर मध्यान्हकाल अर्थात् दिन के बारह बजे होंगे। उसके पश्चिम में समय कम होगा और प्रत्येक डिगरी पर समय ४ मिनट कम होगा। यदि दिन के बारह ०° देशान्तर पर बजे हैं तो उस समय १८०° देशान्तर पर रात के बारह बजे होंगे। रात के बारह बजे बाद से दिन के बारह बजे तक के समय को ए० एम० (पूर्वान्ह) और दिन के बारह बजे से रात के बारह बजे तक के समय को पी० एम० (अपरान्ह) कहते हैं। यदि ०° पर ग्यारह पी० एम० समय है तो उसी समय २०° पूर्वी देशान्तर पर १२ घंटे २० मिनट ए० एम० समय होगा।

प्रत्येक स्थान पर रात के बारह बजे बाद तारीख बदल दी जाती है यदि ग्रीनविच में ११ पी० एम० समय तो अलवर में ७८-३० पूर्वी देशान्तर पर है ४ घंटे १० मिनट ए० एम० और क्योंकि रात के बारह बजे बाद तारीख बदल दी जाती है। इसलिये यदि ग्रीनविच में ३१ दिसम्बर है तो अलवर में १ जनवरी होगी। तारीख के साथ साथ दिन अर्थात् वार भी रात के बारह बजे बाद बदल दिया जाता अतएव यदि ग्रीनविच में ३१ दिसम्बर को रविवार होगा तो अलवर में एक जनवरी को सोमवार होगा। महीने की अन्तिम तिथि होने के कारण महीना बदल गया। और वर्ष का अन्तिम होने से वर्ष में बदल जायगा और यदि शताब्दी का अन्तिम वर्ष ग्रीनविच में है तो अलवर में शताब्दी भी बदल जायगी। यदि ग्रीनविच में सन् १८९९ ई० है तो अलवर में सन् १९०० ई० होगा। इस प्रकार बजाय उन्नीसवीं शताब्दी के बीसवीं शताब्दी होगी।

हमारे ज्योतिष के अनुसार दूसरा दिन सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलने पर माना जाता है और इस हिसाब में एक दिन में दो दो तिथि हो जाती हैं। कभी कोई तिथि घट जाती है कभी बढ़ जाती है। परन्तु यह हिसाब पंडितों और ज्योतिषियों के लिये है। समय का अन्तर निकालने में लागू नहीं होता। बोल चाल की भाषा में कभी कभी एक दिन से अभिप्राय एक दिन रात अर्थात् २४ घंटे का भी हो जाता है परन्तु ऐसी भाषा भूगोल के इस प्रकार के प्रश्नों में प्रयोग करना नितान्त अज्ञानता है। इसका पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिये कि रात के बारह बजते ही दूसरा दिन आरम्भ हो जाता है।

समय का अन्तर केवल देशान्तर बदलने से होता ही है अक्षांश से नहीं क्योंकि यदि मान लें कि १०° पूर्व देशान्तर ठीक सूर्य के सामने है अर्थात् यहाँ पर दिन के बारह हैं तो इस देशान्तर पर उत्तर से दक्षिण तक सभी अक्षांशों में वही दिन के बारह बजेंगे। यदि कोई जहाज पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा करता करता है तो स्थानीय समय जानने के लिये प्रत्येक डिगरी पर ४ मिनट घटाने व बढ़ाने पड़ेंगे परन्तु यदि यह उत्तर से दक्षिण या दक्षिण से उत्तर की ओर यात्रा करता है तो उसे सब स्थानों पर एक ही समय मिलेगा।

हम देखते हैं कि प्रत्येक देशान्तर पर ४ मिनट का अन्तर हो जाता है। प्रत्येक देश बहुत सी देशान्तर रेखाओं में फैला होता है। अतएव उस देश में जितने देशान्तर होंगे उतने ही स्थानीय समय होंगे। अब यदि भिन्न भिन्न गांव और नगर जो भिन्न भिन्न देशान्तरों पर स्थित हैं भिन्न भिन्न समय रखें तो बड़ी गड़बड़ी हो जाये। रेल, तार, डाक, रेडियो किस प्रकार समय निश्चित करें। रेलवे टाइम टेबिल प्रत्येक स्टेशन के समय का कैसे विचार रक्खें। रेडियो की खबर प्रत्येक नगर में किस किस समय कहाँ कहाँ पर पहुँचेगी किस प्रकार बतलाया जावे? अतः सुभीते के लिये प्रायः देश के बीचोंबीच वाले देशान्तर को सारे देश का प्रामाणिक समय मान लिया जाता है और रेल, तार, डाक, दफ़्तर आदि सभी जगह वह माना जाता है जिससे कुछ गड़बड़ न हो। भारतवर्ष में मद्रास के समय को प्रामाणिक समय मान लिया है। कुछ देश विस्तार में पूर्व से पश्चिम को इतने अधिक फैले हैं कि उनके पूर्वी और पश्चिमी तटों के स्थानीय समय में बहुत अन्तर होता है जैसे कनाडा में लगभग पांच घंटे का अन्तर है। ऐसे देशों में प्रामाणिक समय को कोई कटिबंध मान लिये जाते हैं जिनमें भिन्न भिन्न समय माना जाता है।

जैसा कि पहले कहा गया है ०° के पूर्व की ओर यात्रा करते समय प्रत्येक देशान्तर के बाद ४ मिनट का समय बढ़ जाता है। इस प्रकार ३६० का चक्कर करने में पूरा एक दिन बढ़ जाता है। उस ही प्रकार पश्चिम की ओर यात्रा करने में पूरा एक दिन घट जाता है। सन् १५२२ ई० में मैजलिन नामी एक यात्री जब प्रथम बार पृथ्वी का चक्कर पूरा करके अपने देश लौटा तो उसने ७ सितम्बर तारीख पाई परन्तु उसके हिसाब से ६ सितम्बर होनी चाहिये थी। वह बड़ा हैरान था कि यह कैसे हुआ। वह ठीक प्रत्येक डिगरी देशान्तर के चार मिनट घटाता जा रहा था। अन्त में उसे एक ज्योतिषी ने बतलाया कि उसका जहाज पश्चिम की ओर से चलना आरम्भ किया था इसलिये एक दिन घट गया।

इस प्रकार की गड़बड़ी को मिटाने के लिये १८०° देशान्तर को अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा स्थापित कर ली है। पूर्व से आने वाले जहाज इस रेखा को पार करते ही अपने कलेन्डर में एक तारीख घटा लेते हैं और पश्चिम से आने वाले जहाज इस लाइन को पार करते ही एक तारीख बढ़ा लेते हैं इस प्रकार उनके कलेन्डर में वही तारीख रहती है जो उस स्थान पर होती है जहाँ जहाज पहुँचता है। यदि एक जहाज दिन में इस लाइन को दस बार पार करता है तो वह दस ही बार तारीख घटाता और बढ़ाता है। मान लो कोई जहाज ग्रीनविच से रात को १२ बजे २६ जून रविवार को रवाना हुआ और पश्चिम की ओर जा रहा है। वह नियमानुसार प्रत्येक १५° देशान्तर के बाद एक घंटा समय कम करता रहता है इस प्रकार १८०° देशान्तर की रेखा के पहुँचने पर दिन के बारह बजेंगे। १५ देशान्तर और आगे बढ़ने पर अर्थात् १६५ पूर्वी देशान्तर पर १ घंटा और कम हो जायेगा इस प्रकार समय ११ ए० एम० हुआ। परन्तु यह ग्यारह ए० एम० उस ही दिन के नहीं वरन् २७ जून सोमवार के होंगे क्योंकि १६५° पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशान्तर ग्रीनविच के पूर्व में है। इसलिये यहाँ समय अधिक होगा और रात के बारह बजे बाद तारीख २६ जून से बदल कर २७ जून हो जायगी। जहाज़ ने जो १८०° की रेखा को पार करते ही एक तारीख बढ़ा ली थी इससे तारीख में कोई गड़बड़ न हुई और उसी देश में वही तारीख मिली जो उसके कलेन्डर में थी।

में समय का अन्तर ५ घंटे १० मिनट है तो डिगरियों में अन्तर $\frac{३१०}{४}^{\circ} = ७७\frac{१}{२}^{\circ}$ होगा। क्योंकि अलवर का में समय अधिक है इसलिये वह ७७°-३०″ पूर्व देशान्तर पर स्थिति है।

मल्लाह लोग समुद्र में अपने जहाज़ की स्थिति का ज्ञान बड़ी आसानी से कर लेते हैं। वह लोग एक प्रकार की घड़ी (क्रानोमीटर) रखते हैं जो ग्रीनविच का

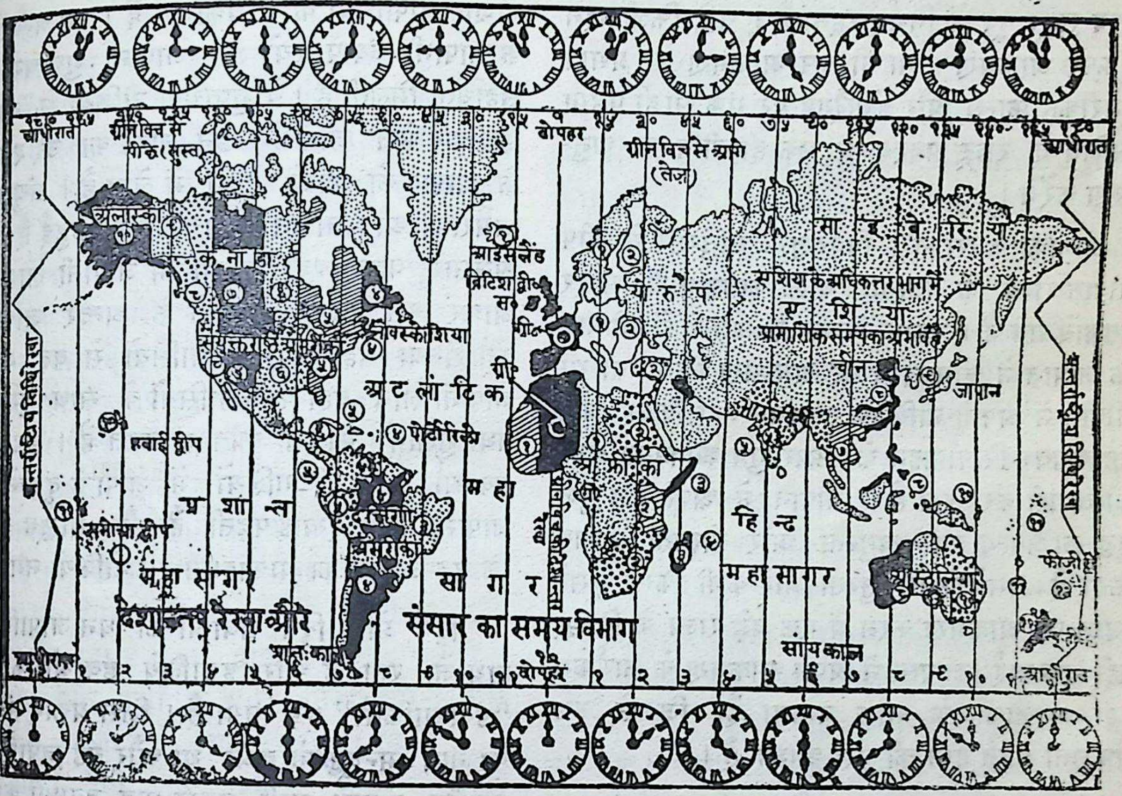

यदि हमें दो स्थानों का समय दिया हुआ है तो हम उन दोनों की दूरी देशान्तरों में मालूम कर सकते हैं और यदि उनमें से एक का देशान्तर दिया हुआ है तो दूसरे का देशान्तह मालूम कर सकते हैं। मान लो कोई खबर ग्रीनविच से रात के ग्यारह बजे भेजी गई और वह दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजकर दस मिनट पर सुनी जाती है तो अलवर का देशान्तर निकाला जा सकता है। हम देखते हैं कि दोनों स्थानों

समय बताती है। ग्रीनविच समय और स्थानीय समय का अन्तर निकाल कर डिगरियों का अन्तर निकाला जा सकता है। अब यदि स्थानीय समय ग्रीनविच समय से ज्यादा है तो स्थान ग्रीनविच के पूर्व में है और यदि स्थानीय स य कम है तो स्थान पश्चिम में है।

इस प्रकार देशान्तर जान कर निर्जन सुमुद्र में मल्लाह लोग अपनी स्थिति का ठीक ठीक पता लगा लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलीपाइन द्वीप में जापान की कूटनीति

फिलीपाइन द्वीपसमूह में ७ हजार से अधिक द्वीप हैं। यह द्वीपसमूह सिंगापुर, हांगकांग और हवाई द्वीपों की कुञ्जी है। पहले यह द्वीप अमरीका की प्रशान्त सागर की नीति के एक प्रधान भाग थे किन्तु अब इन द्वीपों के भाग्य पर ही पश्चिमी राष्ट्रों का भाग्य सुदूर पूर्व में निर्भर रहता है। यदि फिलीपाइन के ऊपर आक्रमण होगा तो उस आक्रमण का प्रभाव अमरीका, फ्रान्स और इंगलैण्ड पर एक सा ही पड़ेगा इसलिये ये राष्ट्र अवश्य ही एक ही नीति का अनुसरण करेंगे।

तनाका के सरकारी विवरण के अनुसार ये द्वीप जापान राज्य के विस्तार वाले कार्यक्रम के अन्दर बतलाये गये हैं। अभी पिछले १० सालों में भी जब कि जापान ने चीन राज्य पर आक्रमण किया तो भी जापान ने अपनी नीति का उल्लंघन नहीं किया और वह बराबर फिलीपाइन के ऊपर गुप्त आक्रमण करने की तयारी कर रहा है। जापान ने अपने इस गुप्त युद्ध का प्रबन्ध बड़ी चतुरता और योग्यता के साथ किया है। उसने ऐसी चतुरता और कभी किसी दूसरे स्थान पर आक्रमण करने में एक बड़े राज्य के विरुद्ध नहीं दिखलाई। जापान ने अपने आक्रमण के कार्यक्रम बड़ी चालाकी के साथ बनाया है, जिससे उसे सफलता प्राप्त होने की पूरी आशा है।

फिलीपाइन द्वीपसमूह का प्रत्येक द्वीप जापानी आन्दोलन तथा गुप्तचरों का शिकार हो बैठा है। इस द्वीप-समूह के प्रधान व्यापारी बन्दरगाह यहां के जापानी निवासियों के आधीन हैं। यहां के जापानी निवासियों को जापान की ओर से जो सहायता मिल रही है उसके कारण उनका प्रभाव अधिक से अधिक बढ़ता जा रहा है।

जापान का यह गुप्त आक्रमण बड़ी चतुरता तथा तेज़ी के साथ हुआ है। जापान ने द्वीपों के भीतर प्रवेश करने में भी बहुत तेज़ी दिखलाई है। सचमुच जापानियों की यह सफलता लोगों को अचम्भित करती है। डवाओ का धनी प्रान्त मिन्डानाओ के द्वीप के दक्षिणी भाग में है। यह प्रान्त जापानियों के अधिकार में है और जापानियों को सफलता का उदाहरण है। इस प्रान्त के उपजाऊ मैदान जिनमें खनिज पदार्थ और अच्छी चरागाह हैं। ९० फीसदी जापानियों के हाथों में है। इसके तटीय भाग में जो बन्दरगाह हैं उनके पशु तथा गल्ले के बाज़ार जापानियों के अधिकार में हैं। इन बन्दरगाहों के जापानी व्यापारियों को जापानी गुप्तचरों द्वारा सहायता मिलती है। ये गुप्तचर टोकियो से साल में एक बार भेजे जाते हैं। इन लोगों का उद्देश्य द्वीप के व्यापार को अपने हाथों में लेना है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका और जापान के बीच जो संधि हुई है उसके अनुसार बहुत बड़ी संख्या में जापानी लोग यहाँ आकर बस रहे हैं। डवाओ के अन्दर जापानियों की संख्या वहाँ के मूल निवासियों से बढ़ गई है। जापानी लोग वहाँ के निवासियों के साथ घृणात्मक तथा गुलामों का सा व्यवहार करते हैं। इस प्रकार डवाओ नगर की गलियों में जापानी दूकानें तथा जापानी भीड़ दिखाई पड़ती है और मालूम होता है कि वह जापान का याकोहामा या टोकियो नगर है।

दिन प्रति दिन डवाओ का धन जापानियों के हाथ जा रहा है और इसीलिये डवाओ का नाम "डवाओकियो" पड़ गया है। जिस प्रकार मंचूरिया का नाम मन्चूकुओ हुआ था और वह जपानियों के आधीन होगया उसी प्रकार अब डवाओ का नाम डवाओकियो हुआ और इसी से डवाओ के भाग्य का निर्माण किया जा सकता है।

जापानी लोग यहां पर ईमानदारी तथा बेईमानी के साथ भूमि को मोल ले रहे हैं। जून सन् १९३६ ई० में फिलीपाइन द्वीप समूह के कामनवेल्थ के सभापति डान मैनुवेल एल क्वीजोन को जापानियों को भूमि प्राप्त करने पर डवाओ जाना पड़ा। सभापति अपने साथ डान यूलोग्वेज़ रोड्रीग्वेज़ व्यवसाय तथा कृषि मंत्री को भी ले गये। यह लोग डवाओ जापानियों द्वारा अनियमानुकूल भूमि खरीद करने की जांच करने गये थे। जब डवाओ के जापानी वाइस काउन्सल को यह बात मालूम हुई तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐलान कर दिया कि गवर्नमेन्ट को जापानियों के विरुद्ध कोई काम न करना चाहिये नहीं तो उससे झगड़ा बढ़ जाने की शंका है। यह बात सभापति के लिये काफी थी। वह वापस लौट आये और उन्होंने पत्रकारों को उत्तर दिया कि डवाओ के बारे में कोई नई बात निर्धारित करनी नहीं है। इस प्रकार जापानियों के आक्रमण को रोकने की अंतिम आशा भी जाती रही और डवाओ की दशा मन्चूकुओ की सी हो गई है।'

फिलीपाइन द्वीप समूह के तटों में बहुत बड़ी संख्या में मछलियां पाई जाती हैं। बहुधा सैनिक जापानी मल्लाह अपने बोटों पर घूमते दिखाई पड़ते हैं। इन मल्लाहों को यदि कोई शिकार करने से रोकता है तो ये मल्लाह उसको गोली मार देते हैं। इसी प्रकार कई तटीय गार्ड मारे जा चुके हैं। फिलीपाइन की सरकार ऐसे मामलों को "गप-सप" कह कर टाल देती है। अभी सरकार ने ७ मल्लाहों को (जो एक फिलीपाइन के कानिस्टिबल को मारने में गिरफ्तार किये गये थे) छोड़ दिया है।

जापान छोटी छोटी संस्थाओं को स्थापित करने तथा आपस में फूट फैलाने की बड़ी अच्छी कूटनीति जानता है। जिस कूटनीति का प्रचार जापान ने चीन में किया था, आज उसी का प्रचार फिलीपाइन द्वीप समूह में हो रहा है। इन द्वीपों के अन्दर अमरीका निवासियों और यहाँ के आदि निवासियों के बीच फूट डालने का जोरों से प्रचार किया जा रहा है।

जापानी लोग फिलीपाइन को जल्दी से जल्दी स्वतंत्रता दिलाना चाहते हैं। वे इसी लिये उनकी स्वतंत्रता की मांग पर बड़ा ज़ोर दे रहे हैं। वहाँ पर "फिलीपाइन फिलीपाइनियों का", "एशिया एशिया निवासियों का" और "साम्यवादी भय" आदि के नारे लगाये जा रहे हैं।

जापान फिलीपाइन को शीघ्र से शीघ्र स्वतंत्रता इसलिये दिलाना चाहता है कि जिस से वह सुगमता के साथ उस पर अधिकार कर ले। यदि स्वतंत्रता देने में देरी हुई तो इसी बीच इंगलैंड और संयुक्त-राष्ट्र अमरीका की शक्ति प्रशान्त महा सागर में बढ़ जाने की शङ्का है जिससे जापान सुगमता पूर्वक फिलीपाइन पर अधिकार न जमा सकेगा।

ऐसी दशा में फिलीपाइन को स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। फिलीपाइन में बहुत से लोग (जो अपनी वर्तमान स्थिति से अप्रसन्न नहीं हैं, वे भी शीघ्रातिशीघ्र स्वतंत्रता चाहते हैं। बहुधा फिलीपाइन में गदर भी हो जाता है। इन गदर करनेवालों को जापान हथियार प्रदान करता है और फिलीपाइन के लोगों को गदर करने के लिये उत्साहित करता है। फिलीपाइन के आदि निवासी जापानियों द्वारा प्रभावित हैं, वे स्वयं अपनी कोई ठीक राय निर्धारित नहीं कर सकते।

जापान ने फिलीपाइन में जो बहुत सी संस्थाएँ स्थापित की हैं, उनमें प्रधान सक्रादिस्त पार्टी है। वह संस्था टोकियो द्वारा दिये गये आदेशों के अनुसार काम करती है। यह संस्था पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के प्रचार के सिवा अमरीकन तथा चीनी लोगों के विरुद्ध भी प्रचार करती है। डानबेनिग्नो आर रामोस इसी सभा का नेता था। उसने टानकूलान में गदर कराया था किन्तु गदर सफल न हुआ तो वह जापान भाग गया और वहां पर जापानी युद्ध मिनिस्ट्री की संरक्षता में जीवन व्यतीत कर रहा है। वह साफ साफ घोषणा करता है कि फिलीपाइन को अमरीका के विरुद्ध लड़ना चाहिये और उससे जापान से सहायता की दरखास्त करनी चाहिये।

उसने प्रेसीडेन्ट क्वीज़ोन से संधि की और उसी संधि के फल स्वरूप वह अपने देश में लौट कर आया। उसके वापस आने पर फिलीपाइन में चीनियों तथा अमरीकनों के विरुद्ध बहुत प्रचार होने लगा। वह अपने पत्र में "एशिया एशिया निवासियों का" नामक विषय पर बड़े बड़े लेख लिखता है, किन्तु मनीला में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये साम्यवाद के विरुद्ध संस्था जापानी कौन्सलर के कथनानुसार स्थापित की है।

जापानी लोग अपने को "बुशीडो" का माननेवाला कहते हैं। उनका कहना है कि वे दूसरों के प्रति बड़े दयावान तथा कोमल प्रकृति वाले होते हैं। चीन के ऊपर जापान ने अपनी इस बुशीडो नीति का कैसा परिचय दिया है। यह दुनिया को प्रतीत हो चुका है तो भी प्रेसीडेन्ट क्वीज़ोन ने डानकामीलो ओसिओ 'बुशीडो' को अध्ययन करने के लिये जापान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाया है। डान कामीलो ओसिओ फिलीपाइन का राजदूत है जो वाशिंगटन में रह चुका है।

डान कामीलो आसिओ के लौटने के पहले ही जापान ने हैनान द्वीप पर अपना अधिकार जमा लिया। हैनान द्वीप फिलीपाइन से २०० मील (समुद्र) की दूरी पर है। यह सुदूर पूर्व के अच्छे बन्दरगाहों में गिना जाता है। यूलिन में अच्छा सैनिक जहाज़ी अड्डा बनाया जा सकता है। इस प्रकार जापान ने फिलीपाइन को घेर लिया है और वह हैनान तथा कैरोलाइन दोनों ओर से फिलीपाइन पर धावा बोल सकता है। ऐसी दशा में फिलीपाइन की रक्षा बड़ी कठिन हो जावेगी। निस्संदेह ही लूज़नद्वीप में कैपाइट स्थान पर सैनिक जहाज़ी अड्डा और मनीला के समीप ओलोनगापों में किला है किन्तु मिन्डानाओ और विसायन के धनी द्वीप बिलकुल असुरक्षित हैं और बड़ी सुगमता से उन पर अधिकार किया जा सकता है।

फिलीपाइन द्वीपों को दक्षिणी एशिया के खज़ाने की कुञ्जी कहा जाता है किन्तु ये द्वीप स्वयं ही खजाने हैं। यहां की चीनी तथा तम्बाकू की उपज सारी दुनिया में प्रसिद्ध है। फिलीपाइन द्वीप से १३० लाख पौंड (१९,५०,०० ००० रु०) सालाना की चीनी बाहर भेजी जाती है। यहाँ पर बहुत सा कच्चा सामान पाया जाता है। लोहा, लकड़ी, तेल, आलमो-नियम आदि वस्तुएँ बहुत बड़ी मात्रा में पाई जाती हैं। इन वस्तुओं की आवश्यकता आजकल लड़ाकू देशों को बहुत होती है।

अगर जापान इन द्वीपों को अपने अधिकार में कर लेता है तो इसका मतलब यह है कि प्रशान्त महासागर में पश्चिमी प्रभाव तथा शक्ति का अन्त हो जावेगा। अँग्रेज़ों को हाँगकाँग और सिंगापुर, अमरीका को गुआम और हवाई, फ्रान्स और हालैण्ड को पूर्वी द्वीप समूह को छोड़ना पड़ेगा। जापान स्वयं अपने साम्राज्य के विस्तार नीति के अनुसार फिलीपाइन पर अवश्य ही आक्रमण करेगा और उसे अपनाएगा।

जब जापान ने हैनान द्वीप पर अधिकार जमाया तो जनरल इसीमो चियाँगकाई शेक ने कहा था कि हैनान मुकडेन है और ऐन टँग फिलीपाइन होगा। अर्थात् जिस प्रकार मन्चूरिया में जापान ने पहले मुकडन पर फिर ऐनटँग पर अधिकार जमाया है उसी प्रकार प्रशांत सागर में जब हैनान पर अधिकार जमाया है तो उसके बाद अब वह फिलीपाइन पर अवश्य ही अधिकार करेगा।

फिलीपाइन के भाग्य पर ही प्रशान्त महासागर के भाग्य सुदूरपूर्व के देशों के भाग्य और चीन के भाग्य का निपटारा है।

साइप्रेस

सन् १८७८ ई० में साइप्रेस द्वीप ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित हुआ। इस द्वीप को टर्की के बादशाह ने अँग्रेज़ों को ठीके पर दिया और कहा कि वे इस पर अपना अधिकार तथा राज्य करें। बर्लिन की काँग्रेस में डिज़रैली और टर्की के बादशाह के बीच यह बात तय पाई थी कि अँग्रेज साइप्रेस में अपना जहाज़ी अड्डा बनावेंगे और टर्की की रक्षा रूस के आक्रमण तथा अत्याचार से करेंगे।

सन् १९१४ ई० तक ब्रिटिश राज्य का सम्बन्ध साइप्रेस द्वीप के साथ जो कुछ रहा उस पर यह दोष अँग्रेज़ों पर लगाया गया कि उन्होने साइप्रेस की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। सच बात तो यह है कि टर्की के बादशाह ने इससे बहुत कुछ लाभ उठाया। डिज़रैली ने आपसी बातचीत में यह कह दिया था कि जो कुछ आमदनी साइप्रेस के खर्च निकालने से होगी वह सालाना टर्की के बादशाह को दी जावेगी।

टर्की के अधिकारियों ने साइप्रेस की आमदनी का अधिक हिसाब लगाया और खर्च का अनुमान भी बहुत कम किया, इस प्रकार ब्रिटिश सरकार को ९२,००० पौंड (१३९५,००० रु०) सालाना की रकम टर्की सरकार को देनी पड़ी। साइप्रेस की आमदनी इतनी न थी कि वहां के शासन का खर्च निकाल कर इतना रुपया सालाना बचाया जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमी को पूरा करने के लिये अँग्रेजी खज़ाने से रुपया देना पड़ा । इससे यह बात साफ स्पष्ट है कि यदि साइप्रेस में अधिक रुपया किसी कार्य में लगाया जाता तो उसका मतलब यह था कि अँग्रेज़ टैक्स देने वालों पर और भी अधिक टैक्स का बोझ लादा जावे । इसी कारण साइप्रेस में आरम्भ काल में अधिक उन्नति नहीं हो सकी। फिर भी वहां के निवासियों की दशा टर्की राज्य से कहीं अधिक सुधर गई । टर्की सुलतान को जो सालाना रक़म देनी पड़ती थी उसका बोझ साइप्रेस की जनता पर बहुत बड़ा पड़ रहा था और इसीलिये वहां की जनता और टर्की राज्य के विपरीतता के भाव बढ़ रहे थे। साइप्रेस में ८० फी सदी यूनानी-ईसाई तथा १५ फी सदी तुर्क मुसलमान थे।

जब सन् १९१४ ई० में टर्की ने अँग्रेजों पर युद्ध का एलान किया तो साइप्रेस ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया । ब्रिटिश सरकार ने उसी साल से टर्की को साइप्रेस की सालाना रक़म देना भी बन्द कर दिया किन्तु ४२००० पौंड (६३०००० रु०) सालाना साइप्रेस की आमदनी से इंगलैंड रुपया जाता है। यह रुपया उस कर्ज़ की अदायगी में लिया जाता है जो आटोमन साम्राज्य ने अँग्रेजों से १८५५ ई० में लिया था । सन् १९२७ ई० में साइप्रेस सरकार ने १०,००० पौंड (१,५०,००० रु० सालाना ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के साधन के लिये मन्जूर किया इस मञ्ज़ूरी पर पहले वाली रक़म का लेना बन्द कर दिया गया ।

अँग्रेज़ों के लिये साइप्रेस कोई अधिक लाभ-दायक न था इसीलिये उन्होंने १९१४ की लड़ाई में यूनान से कहा था कि यदि वह बड़ी लड़ाई में अँग्रेज़ों के साथ रहे तो साइप्रेस उसे दे दिया जाय।

अँग्रेज़ों के सौभाग्य से यूनान ने यह बात न मानी और साइप्रेस लेकर मदद देने से इन्कार किया वायुयानों की उन्नति होने के कारण वर्तमान समय में साइप्रेस का मूल्य बहुत बढ़ गया है । स्वेज कैनाल ब्रिटिश खजाने की सोने की खान कही जाती है, किन्तु साइप्रेस उससे कहीं अधिक मूल्यवान है। अब भी अँग्रेज लोगों ने साइप्रेस के असली तत्व को नहीं समझ पाया है। दुनिया के सभी राष्ट्र इस द्वीप की स्थिति का पूर्वी रूम सागर में बड़े मार्के की बताते हैं। अँग्रेज यदि इसे अपने राज्य में रखना चाहते हैं तो उनको अवश्य ही इस द्वीप में मोर्चा बन्दी वा जहाज़ी अड्डा देना आवश्यक है।

अगर दुनिया के मान चित्र को देखा जाय और लन्दन से डारविन तक एक लाइन खींची जाय तो यह रेखा साइप्रेस, बसरा, बम्बई और पिनांग होकर जावेगी। इसलिये साइप्रेस द्वीप में हवाई जहाज़ी अड्डा अँग्रेजों को बनाना बड़ा आवश्यक है क्योंकि यह ब्रिटिश साम्राज्य के हवाई मार्ग में स्थित है।

साइप्रेस पैलेस्टाइन के तट से ६० मील और एशिया माइनर के तट से ४० मील की दूरी पर है। यदि यहां पर अँग्रेज़ों का हवाई अड्डा रहेगा तो रूमसागर, स्वेज़ नहर, लालसागर, फारस की खाड़ी या भारतवर्ष में आवश्यकता पड़ने पर हवाई जहाज़ पहुँच सकेंगे।

साइप्रेस अँग्रेजों की बसाई हुई बस्ती है वहाँ पर अँग्रेज़ किसी भी समय तक रह सकते हैं। अँग्रेज़ अपनी इच्छानुसार जिसे चाहें रख सकते हैं और जिसे चाहें उसे निकाल सकते हैं। यहाँ पर साल भर बराबर अँग्रेज़ी सेना रखी जा सकती है।

साइप्रेस की जलवायु सैनिकों के लिये बड़ी उपयोगी है। जाड़े के दिनों में जब सैनिकों को ट्रेनिङ्ग दी जाती है तो वहाँ काफी सरदी पड़ती है और गर्मी के अन्तकाल में इतनी अधिक गर्मी पड़ती है कि सैनिकों को ट्रूडोस जाना पड़ता है। ट्रूडोस ५'१०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। वहां पर जुलाई से सितम्बर तक ८० तापक्रम रहता है। रात के समय वहां पर काफी सर्दी पड़ती है और लकड़ी तापना बड़ा अच्छा मालूम होता है। जाड़े में ट्रूडोस और उसके समीपवर्ती स्थान बरफ से ढके रहते हैं।

साइप्रेस में पानी की हमेशा कमी रही है और है, इसका मुख्य कारण यह है कि पानी पैदा करने के लिये रुपया कभी इकट्ठा करके लगाया नहीं गया। यहां की दोनों पहाड़ी श्रेणियों में पानी काफी मात्रा में मिल सकता है। ५०००० गैलन रोजाना का खर्च अधिक से अधिक यहां पर हो सकता है और इतने पानी के प्रबन्ध करने में शायद अधिक रुपये की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डच ईस्ट इण्डीज़ (पूर्वी द्वीपसमूह) की डाँवाँडोल स्थिति

जर्मनी ने हालैंड पर आक्रमण करके उसपर अपना अधिकार कर लिया है। वहां से रानी विल्हेलिमना की सरकार भाग गई है। इन कारणों से डच ईस्ट इँडीज़ को अपने आप पर भरोसा करना पड़ा है। हालैण्ड के व्यापार तथा कोष का केन्द्र इस समय डच ईस्ट इंडीज़ हो बना दिया गया है। निदरलैण्ड्स के प्रधान बैंक और जहाज़ी कम्पनियों ने अपने केन्द्र बटाविया में बना लिये हैं। राजनैतिक मामलों में भी डच ईस्ट इंडीज़ ही हालैंड का केन्द्र हो रहा है। ईस्ट इंडीज़ के गवर्नर जनरल जानखीर त्जार्दा वान स्टार्कैन बर्ग स्टाचौवेर (Gouerner General Jonkheer Tjarda Van Starkenborgh Stachouveer) को स्वतंत्रता प्रदान करदी गई है कि आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी मर्ज़ी से स्वतंत्रता पूर्वक काम कर सकता है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि डचईस्ट-इँडीज़ क्या हालैण्ड का हो कर रह सकता है? इस प्रश्न का उत्तर डच ईस्ट इँडीज़ की व्यापारिक तथा युद्ध कौशल सम्बन्धी स्थिति, उसकी रक्षा के साधन तथा अमरीका की नीति पर (जो वह यहां के आक्रमण के समय आक्रमणकार पक्ष अथवा विपक्ष के समय निर्धारित करेगा) निर्भर है।

१६ अप्रैल सन् १६४० को जापान के विदेशी मंत्री मिस्टर अरीटा ने कहा कि योरुप के युद्ध के कारण डच ईस्ट इँडीज़ के व्यापार आदि में जो परिवर्तन होगा उससे जापान का बहुत बड़ा सम्बन्ध है। यदि किसी प्रकार भी कोई बात ईस्ट इँडीज़ को युद्ध के कारण भड़काने के लिये की जावेगी तो जापान उसे नहीं टाल सकता। इस घोषणा के २ महीने पहले जापान ने निदरलैंड्स से जो संधि किया था उसे तोड़ दिया है। टोकियो की सरकार ने कहा है कि चूंकि राजनैतिक तौर पर हालैण्ड की गणना अब कुछ भी नहीं है इसलिये पुरानी संधि का मूल्य नहीं रह गया है और नई संधि होने की आवश्यकता है। १७ अप्रैल को अमरीकन सेक्रेटरी ने उत्तर दिया कि यदि डच ईस्ट इंडीज़ के भीतरी मामलों में शांति रूप के सिवा और किसी प्रकार से गड़बड़ी पैदा की गई तो सारे प्रशांत महासागर में शान्ति भंग हो जाने की सम्भावना है। जब जर्मनी ने मई में निदरलैंड्स पर आक्रमण किया तो जापान ने फिर घोषणा किया कि जापान डचईस्ट इंडीज़ को डच के सिवा दूसरे के अधिकार में जाना स्वीकार नहीं करेगा। वाशिंगटन में भी संयुक्त राष्ट्र ने फिर अपनी १७ ता० की घोषणा को दोहराया और अमरीकन लड़ाकू जहाज़ों बेड़ा हवाई द्वीप में भेज दिया।

डच ईस्ट इंडीज़ की स्थिति व्यापारिक तथा युद्ध-कौशल नीति के अनुसार बड़े मार्के की है। पूर्वी द्वीप समूह का क्षेत्रफल ७,३४,००० वर्गमील है जो जापान ख़ास से ५ गुना है। वह पश्चिम में हिन्द महासागर से पूर्व में प्रशांत महासागर तक (विश्वत रेखा के पूर्व तथा पश्चिम लगभग ३२०० मील) फैला हुआ है। १६४० की जनगणना के अनुसार वहां की जनसंख्या ६,१०,००,००० है वर्तमान समय में वहां की जन संख्या ७ करोड़ होगी। इसका दो तिहाई भाग जावा में रहता है यद्यपि जावा का क्षेत्रफल कुल का $\frac{1}{15}$ है। बाहरी द्वीप कम बसे हैं और उनका विकास भी कम हुआ है। सुमात्रा के पूर्वी तट पर रबर और तम्बाकू की उपज अवश्य अच्छी होती है। वहां के अधिकाँश निवासी मलय जाति के हैं और मुसलिम धर्म के अनुयायी हैं। वहां पर १२,३३,००० चीनी तथा २,४०,००० योरुपीय अफसर हैं। अफसरों में अमरीकन, जापानी और हालैण्ड के निवासी हैं। १६३० ई० में जापानियों तथा फार्मूसा वालों की संख्या ७ हज़ार थी परन्तु अब वहां इनकी संख्या और अधिक बढ़ गई है। वहाँ पर लगभग ७ हज़ार जर्मन हैं परन्तु इस समय १६ वर्ष से ऊपर वाले लोग क़ैद कर लिये गये हैं।

हालैंड के पूर्वी द्वीप समूह संसार में सब से अधिक धनी हैं। वहां पर रबर, टीन, पिट्रौल, चीनी क़हवा, चाय, तम्बाकू, कोपरा, नारियल आदि की उपज बहुत है। इसके सिवा और भी दूसरी चीज़ें पैदा होती तथा खानों से निकाली जाती हैं। वहां पर कच्चा सामान काफी मात्रा में होता है यद्यपि कुछ प्रकार का लोहा, और कोयला वहाँ नहीं पाया जाता है। वहां पर कपास की उपज भी कम होती है। व्यापारिक संकट के समय वहां पर अधिकांश कच्चे सामान की वृद्धि की गई और चावल देश निवासियों के लिये पैदा किया गया। उस समय वहां से खाने का सामान और कच्चा सामान बाहर बहुत भेजा गया। संकट काल में डच ईस्ट इंडीज़ का व्यापार बहुत घट गया। १६२६ ई० में १,४८,८०,००,००० गिल्डर्स का सामान निर्यात हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और १९३३ ई० में वह घट कर ४९,३०,००,००० का हो गया था परन्तु सन् १९३९ ई० में वह बढ़ कर फिर ७४०,०००,००० का हो गया है। आधुनिक समय में वहां पर कारखानों को बड़ा प्रोत्साहन दिया जा रहा है और छोटे छोटे कारखानों और रोज़गारों के सिवा वहां रसायनिक द्रव्य, अलमोनियम, लोहा और ऐविएशन गैसोलिन (वह गैस जो हवाई जहाज़ उड़ाने के काम आती है) आदि के बड़े कारखाने खुल रहे हैं।

पूर्वी द्वीप समूह का अधिकांश रबर और टीन संयुक्त राष्ट्र अमरीका जाता है। अमरीका के कुछ लोग अपना रुपया वहां पर रबर और तेल के कामों में लगाये हुये हैं। इसलिये अमरीकन लोग डच द्वीपों के विरुद्ध नहीं हो सकते। ब्रिटिश मलय में संसार भर में सब से ज्यादा रबर और टीन होता है। यदि किसी प्रकार की गड़बड़ी डच द्वीपों में होगी तो उसका गहरा प्रभाव उस पर भी पड़ेगा। अमरीकन ने पूर्वी द्वीप समूह से १९३८ ई० में ६८,८००,००० शि० का माल और सन् १९३९ ई० में ९३,०००,००० शि० का माल मोल लिया परन्तु इसके सिवा योरुप तथा मलय द्वीप के बन्दरगाहों से और बहुत सा सामान जाता है। इस लिये ठीक अन्दाज़ लगाना कठिन है कि अमरीका पूर्वी द्वीप समूहों पर कितना निर्भर करता है। १९३९ ई० में डच द्वीपों में ३७२,००० टन रबर की उपज हुई (जो संसार की उपज का ३५ प्रतिशत है। वहां पर ३१२८० टन टीन हुई (जो संसार की उपज का १७ प्रतिशत है)। संयुक्त राष्ट्र को रबर और टीन की आवश्यकता है। यूँ तो यह वस्तुएं वहां सदैव कारखानों में खर्च होती हैं परन्तु आधुनिक समय में अमरीका को अपनी रक्षा के लिये सामान तयार करने के लिये इनकी बड़ी आवश्यकता है। जितना रबर संयुक्त राष्ट्र अमरीका में खपता है उसका $\frac{9}{10}$ भाग डच ईस्ट इंडीज़ और उसके समीपवर्ती ब्रिटिश स्थानों से आता है। संयुक्त राष्ट्र को डच ईस्ट इंडीज़ से कुनैन बहुत जाती है। संसार की कुनैन की उपज का ९० प्रतिशत भाग डच पूर्वी द्वीप समूह में पैदा होता है।

ब्रिटेन और फ्रांस डच पूर्वी द्वीप समूहों की उपज पर निर्भर नहीं करते क्योंकि उनके उपनिवेशों से उन्हें सामान मिलता है। पूर्वी द्वीप समूह की उपज का ५ प्रतिशत ग्रेट ब्रिटेन और पुरी को और ४ प्रतिशत आस्ट्रेलिया को जाता है। पूर्वी द्वीप समूहों का सम्बन्ध ब्रिटिश साम्राज्य से बड़ा घना है। १८१६ ई० में अंग्रेज़ों ने जावा द्वीप हालैंड वालों को लौटाया था तब से आज तक डच पूर्वी द्वीपों की की रक्षा ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े द्वारा होती चली आई है। वहां अँग्रेज़ों ने अपना बहुत अधिक रुपया लगा रक्खा है। रायल डच शेल नामक कम्पनी ने वहां की तेल की ख़ानों में बहुत ज्यादा धन लगा रक्खा है। अधिकाँश डच द्वीप सिंगापुर के समीप हैं जिनकी रक्षा सिंगापुर का समुद्री जहाज़ी अड्डा करता है बोरन्यू का उत्तरी भाग अँग्रेज़ों के अधिकार में है। आस्ट्रेलिया भी युद्ध-कौशल के ध्यान से पूर्वी द्वीप समूहों तथा आस्ट्रेलियन ग्याना पर भरोसा रखता है। आस्ट्रेलियन ग्याना का पूर्वी आधा भाग आस्ट्रेलिया के अधिकार में है। आस्ट्रेलिया की नीति यह है कि कोई भी आक्रमणकारी राज्य ग्याना में पैर न रखने पावे। बाहरी दबाव को हटाने के लिये डच लोग अपने शेष आधे भाग को भी तरक्की दे रहे हैं।

१९३८ ई० में जर्मनी ने २३,७२,५०,०० गिल्डर* का सामान पूर्वी द्वीपसमूहों से लिया और फ्रान्स ने १,१२,००,००० गिल्डर का सामान मँगाया। डच द्वीपसमूहों को उपयोगी जानकर जर्मन वहां गये और व्यापार में लग गये। जर्मन लोग वहां डच सेना तथा राज्य शासन में भी काम करते हैं।

जापान को पूर्वी द्वीपों से बड़ा लाभ है। वहां के रबर और टीन का अधिकांश भाग जापान जाता है। जापान ने वहां पर एक बड़ा पिट्रोल का कारखाना खोल रक्खा है। यदि जापान को ब्रिटेन अथवा अमरीका से तेल और पिट्रौल मिलना बन्द हो जाय। तो पूर्वी द्वीपों के तेल के कुंए जापान के लिये बड़े उपयोगी होंगे। पूर्वी द्वीपों में संसार के समस्त पिट्रौल का $\frac{1}{4}$ पैदा होता है। १९१९ ई० में वहां ६,१५,८०,००० गैरेल (पीपा) पिट्रौल निकाला गया। बोरन्यू के पूर्वी तट पर पिट्रोल की प्रधान खानें हैं। दक्षिणी सुमात्रा की खानों की उन्नति हो रही है। निदरलैण्ड न्यूगिनी पिट्रोलियन कम्पनी में अमरीकन तथा ब्रिटिश धन लगा हुआ है। परन्तु अभी तक उसे विशेष सफलता नहीं प्राप्त हुई है। जिन कुओं से तेल निकलता है। उनमें सुरंगें लगा दी गई हैं और जैसे ही जापानी आक्रमण होगा। वे कुएँ नष्ट कर दिये जावेंगे। हवाई जहाज़ों के लिये पिट्रोल पेलेम बैंग में २ मार्च से तयार किया जाने लगा है।

* हालैण्ड का चाँदी का सिक्का जो १ शि० ८ पें० के बराबर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी द्वीप के लोग सामान बहुत नहीं खरीद सकते परन्तु जापान का सस्ता तयार किया हुआ माल वहां खूब बिकता है। जापानी माल पर चुंगी बढ़ा दी गई। जिससे जापानी आयात कम हो गया है। जापानी लोग कहते हैं कि हालैंड की सरकार बहुत बेजा कर रही है जो वहां सुदूर पूर्व में भी अधिकार जमाये है और वहां ब्यापार करने वाले यहां ब्यापार नहीं कर पाते । पूर्वी व्यापार के अधिकांश भाग के मालिक जापानी होना चाहते हैं। हालैण्ड की सरकार का विरोध है कि जापानी व्यापार के कारण देश के व्यापार की दशा खराब हो रही है।

१९३९ ई० में जापान ने पूर्वी द्वीप समूहों के साथ ८,४१,०८,००० गिल्डर्स का सामान खरीदा। जापानी निर्यात का ३० प्रतिशत पूर्वी द्वीप समूह भेजा गया। और वहां से कुल जापानी आयात का ३.३ प्रतिशत पूर्वी द्वीप समूह से आया। जापान ने पहले की भाँति अब भी डच ईस्ट इंडीज़ का सामान मोल लेने का निश्चय किया है। अँग्रेज़ों और डच लोगों ने वादा किया है कि वे जापानी व्यापार में किसी प्रकार की रुकावट न पैदा करेंगे

जापानी सरकार ने कभी भी डच ईस्टइंडीज पर अधिकार करने के लिये अपनी इच्छा प्रगट नहीं किया। उसने सदैव व्यापारिक सम्बन्धों को दृढ़ करने पर ज़ोर दिया है। इस साल जापान के विदेशी मंत्री ने जापानी डाएट (सभा) में भाषण देते हुये कहा है कि जापानी सरकार दक्षिणी समुद्र के देशों के साथ मेल रखना चाहती है। वह उनके साथ व्यापार करना चाहती है। वह उनके साथ मिल कर रहना चाहती है और उनसे किसी प्रकार भी अलग नहीं होना चाहती। डच लोग भी जापान के प्रति मित्रता भाव दिखाते रहे हैं और कभी भी जापान को अप्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं किया है। जापान ने न्यूगिनी में जापानी बस्ती बसाने और उसे अपने काम में लाने का प्रयत्न किया है। न्यूगिनी जापान का राष्ट्र संघ द्वारा दिये हुये द्वीपों से ४०० मील दूर है। कई सालों से डच न्यूगिनी में यह बात फैली हुई थी कि जापानी लोग न्युगिनी के गुप्तचर हो रहे हैं और वे वहां पर अपना अधिकार चाहते हैं।

व्यापार तथा युद्ध कौशल के ध्यान से डच पूर्वी द्वीप समूहों की स्थिति बड़ी महत्व पूर्ण है क्योंकि वे योरुप, सुदूर पूर्व और आस्ट्रेलिया के समुद्री तथा हवाई मार्ग के चौरास्ते पर पड़ते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड के लिये यह बड़ा आवश्यक है कि यह द्वीप किसी मित्र के हाथों में चले जायँ तो फिर ब्रिटेन के लिये कठिन होगा कि वह सिंगापुर और हाँगकाँग को अपने अधिकार में रख सके और प्रशान्त महासागर के उपनिवेशों और चीन से उसका संसर्ग बन्द हो जाय। यही दशा फ्रांस को भी हो जाय और प्रशान्त महासागर के द्वीपों तथा इन्डोचाइना से फ्रांस का सम्बन्ध टूट जाय। पूर्वी द्वीप समूहों के राजनैतिक भाग्य से संयुक्त राष्ट्र का बड़ा भारी सम्बन्ध है। प्रशान्त महासागर में संयुक्त राष्ट्र साम्य शक्ति रखना चाहता है। वह वहां से टीन और रबर पाता है इसलिये संयुक्त राष्ट्र द्वीपों को अपने मेल में रखना चाहता है जिससे उसे सदैव यह वस्तुएँ मिल सकें। फिलीपाइन द्वीप से संयुक्त राष्ट्र का बड़ा भारी सम्बन्ध है। मैनलिया बटाविया से लगभग १८०० मील है परन्तु बोरन्यू के समीपवर्ती द्वीप मिंडानाव के सामने और समीप हैं। अब फिलीपाइन के पूर्व के सभी (गुवाम को छोड़ कर) द्वीप जापान के अधिकार में हैं। हैनान द्वीप की जापानी लोग किलाबन्दी कर रहे हैं। चीन सागर के द्वीप स्पार्टली पर अब जापान अधिकार जमा रहा है। अब यदि डच ईस्टइंडीज़ जापानियों के पास चला जाता है तो शायद उसके कारण बोरन्यू के पूर्वी तट के सभी ब्रिटिश द्वीप जापान के अधिकार में चले जावेंगे और फिर फिलीपाइन बिलकुल जापान के आधीन हो जावेगा।

व्यापारिक दृष्टि से यदि डच इंडीज जापान के अधिकार में चले जाते हैं तो शायद अमरीका को अधिक हानि न पहुँचे क्योंकि जितना पिट्रौल वहां पैदा होता है उसका केवल कुछ ही भाग जापान खर्च कर सकेगा और शेष संसार के बाजार में बिकेगा जिसका खरीदार संयुक्त राष्ट्र से बढ़ कर और दूसरा कोई न होगा। डच द्वीप समूह की उपज पर अधिकार होने के कारण जापान की शक्ति बढ़ जावेगी और वह संयुक्त राष्ट्र से इन सामग्रियों के बारे में स्वीकृति करा सकता है और वह थोड़े समय के लिये बड़ी महत्व पूर्ण भी होगी। ग्रेट ब्रिटेन के साथ विनिमय होने के कारण संयुक्त राष्ट्र ने रबर और टीन अधिक इकट्ठा कर लेने का विचार किया था परन्तु यह अभी उसके पास बहुत कम हैं। यह हिसाब लगाया जाता है कि जितना रबर और टीन संयुक्त राष्ट्र के पास है वह बर्तमान व्यय के कारण केवल तीन चार महीने तक चल सकेगा। संयुक्त राष्ट्र को इस बारे में बड़ी फिक्र है क्योंकि १९३९ ई० में अमरीका के इतिहास में सब सालों से अधिक रबर आयात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। अब यदि अमरीका युद्ध में फंस जाता है तो उसे मज़बूर होकर रबर के कतरन को प्रयोग करना पड़ेगा। संयुक्त राष्ट्र में संयोगिक रबर की वृद्धि की जा सकती है। दक्षिणी तथा मध्यवर्ती अमरीका की उपज भी बढ़ाई जा सकती है। परन्तु अभी तक इन भागों की उन्नति नहीं की जा सकी जो बर्तमान समय में आवश्यकता की पूर्ति की जा सके।

संयुक्त राष्ट्र की रक्षा के प्रश्न को हल करने के लिये युद्ध-कौशल में परिवर्तन होने के कारण केवल जाँच के तौर पर अन्दाज़ लगाया जा सकता है। जापान की जल-सेना अभी संदेहजनक है। यद्यपि पूर्वी समुद्रों में जापान सबसे अधिक शक्तिशाली है। योरुपीय युद्ध के आरम्भ होने के पहले चीन सागर में चार ब्रिटिश लड़ाकू जहाज़ ईस्टइंडीज में तीन ब्रिटिश लड़ाकू जहाज़, एक आस्ट्रेलियन और दो न्यूज़ीलैण्ड के लड़ाकू जहाज थे। संयुक्त राष्ट्र की जल सेना ही ऐसी है जो जापान का सामना प्रशान्त महासागर में कर सकती है परन्तु जापानी जहाज़ो अड्डों के समीप होने और जापानी द्वीपों के समीप होने के कारण अमरीकन जलसेना के लिये जापान से युद्ध करना कठिन हो जावेगा। गुवाम और फिली पाइन के जहाज़ी अड्डे तथा क़िले बन्दी इतनी शक्तिशाली नहीं है कि जापान का सामना कर सके इसलिये पर्ल हार्बर पर अड्डा बनाना पड़ेगा परन्तु उसकी दूरी बटाविया से ७,००० मील है।

पूर्वी द्वीप समूहों की सेना आक्रमणकारी सेना को परेशान कर सकती है परन्तु वह थोड़े समय तक ही सामना कर सकती है। जब से जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया है। तब से डच लोगों को पूर्वी द्वीप समूह पर आक्रमण का संदेह है परन्तु फिर भी अपनी रक्षा के लिये उन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया। वहां पर कुल ५० हजार सेना है। डच समुद्री सेना में २ लड़ाकू जहाज़ ७ हजार और ६ हजार टन के, दो जहाज ३५०० टन के १२ विध्वंस कारो जहाज़, १८ पनडुब्बे जहाज़ और बहुत से छोटे जहाज हैं। डच लोगों ने समुद्री हवाई जहाजों का बेड़ा अभी तयार किया है। जो संकरे समुद्र में बैरी का सामना करेगा। पूर्वी द्वीप समूह के द्वीप फैले हुये हैं। इसलिये बोरन्यू, न्यूगिनी आदि फैले हुये द्वीपों में उतरना जापानी लोगों के लिये कठिन न होगा। याकोहामा से बोरन्यू तक की दूरी २४०० मील है। जापान के जहाज जापान तथा जापान द्वारा अधिकार किये हुये चीनी स्थानों के सामान ढोने में लगे हुये हैं। यदि जापान दक्षिण की ओर बढ़ता है और संयुक्त राष्ट्र से युद्ध न होगा तो कम से कम उसे अपना व्यापार उत्तरी अमरीका और ब्रिटिश तथा फ्राँसीसी साम्राज्य से कम कर देना होगा सोवियट रूस का दबाव भी उस पर पड़ेगा। चाहे वे राष्ट्रीय चीन की ओर से हो अथवा मंचूकों की ओर से हो। जापान अपने को चीन के युद्ध से मर्यादा के साथ अलग करना चाहता है। अभी हाल में जापान ने इन्डो चाइना को धमकी दिया है और वहां अपने सैनिक तथा समुद्री अड्डे बनाने की मांग की है। वह अपनी सेना इन्डो चीनी रेल द्वारा ले जाना चाहता है। जापान ने स्याम से भी अपनी माँगें पेश किया है। स्याम में वह अपने सैनिक अड्डे बनाना चाहता है। वह स्याम से सामुद्रिक संधि करना चाहता है। यदि उसकी यह शर्तें पूरी हो गईं तो डच द्वीपों की तथा ब्रिटिश स्थानों की दशा बड़ी शोचनीय हो जावेगी।

जापानी आक्रमण होने पर डच द्वीप के निवासियों की क्या दशा होगी। यह ठीक ठीक कहना कठिन है। चीन के साथ द्वीपों का अधिक व्यापारी सम्बन्ध है। डच लोग जापानी साम्राज्य को पसंद नहीं करते परन्तु वे शक्तिशाली संगठित चीन से कहीं अधिक भयभीत हैं। इसी कारण वे चीन के युद्ध को बड़े परिणाम की बाट देख रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक तथा प्राचीन माल्टा

माल्टा द्वीप जिब्राल्टर और स्वेज़ के मध्य में स्थित है। वह सिसली और त्रिपोली के बीच में है और भूमध्यसागर को दो प्रधान बेसिनों में विभाजित करता है। इसकी स्थिति प्राकृतिक समुद्री अड्डे की है। डलमेशिया तट पर बोक कोटार्स्का का बन्दरगाह इसके मुकाबिले का है।

इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसके समुद्री अड्डे को बहुत महत्त्व पूर्ण बना रखा है। जो पहाड़ी सिसली को अफ्रीका के तट से समुद्र के नीचे से मिलाती है यह उसकी चोटी पर स्थित है।

किसी समय योरुप और अफ्रीका के महाद्वीप माल्टा के द्वारा मिले हुये थे। माल्टा एक प्रायः समतल पठार है। दक्षिण और पश्चिम की ओर इसकी पहाड़ी की ऊँचाई ४०० फुट है। इसके पहाड़ों की सब से अधिक ऊँचाई ७०० फुट है। उत्तर के पर्वतीय तट में बहुत सी खाड़ियां हैं जहां उत्तर की शीतकाल की ठंडी हवाएें शीतकाल में चला करती हैं। जून, जुलाई और अगस्त के महीने में माल्टा का तापक्रम ८० फा० हा० रहता है।

माल्टा की खाड़ियां वेलेटा के विशाल बन्दरगाह से उत्तर की ओर मेलोहा को खाड़ी तक फैली हुई हैं। प्राचीन काल में जब माल्टा में मनुष्य जाति का निवास न था तो इन खाड़िये में बोट आकर आश्रयं लिया करते थे। यह खाड़ियां धीरे धीरे बढ़ती गई हैं। समुद्र की लहरें पत्थर की चट्टानों पर आकर टकराती थीं जिसके कारण वहाँ पर पत्थर की तहें पड़ती जाती थीं। यह तहें पाँच हैं और यह प्रत्येक १०० साल में १ फुट नीची हो जाती हैं। इस प्रकार माल्टा में खाड़ियों का विकास हुआ। जब मनुष्य जाति का विकास हुआ और वह संसार के भिन्न भिन्न भागों में फैलने लगी तो माल्टा में पहले फोनीशियन जाति आकर बसी। उसके बाद कार्थेजोनियन, रोमन, अरब और दूसरी लैटिन जातियाँ बारी बारी से आ कर बसीं। जब नेपोलियन माल्टा में निर्वासित हुआ तो वह माल्टा को देख कर बड़ा हर्षित हुआ और उसने कहा कि मेरे बैरी यहाँ न आवें तो अच्छा हो।

माल्टा के निवासियों को माल्टा द्वीप से क्या प्राप्त होता है? इस प्रश्न के उत्तर के बारे में हमें निम्नांकित बातों पर ध्यान देना चाहिये। माल्टा का क्षेत्रफल केवल ९५ वर्गमील है। इसी में गोजो द्वीप का क्षेत्रफल (२६ वर्गमील) भी सम्मिलित है। माल्टा द्वीप की जन संख्या २,५६,००० है। वेलेटा, विटोरीसा और स्लीमा की आबादी बहुत घनी है। वेलेटा और विटोरीसा में व्यापारी लोग रहते हैं। स्लीमा में लोगों के निवास स्थान बने हैं। माल्टा के निवासी बांटने वाले व्यापार में लगे हैं। भूमध्यसागर के द्वीपों के निवासियों का जीवन अदृश्य व्यापार पर व्यतीत होता है। लोग अपना वेतन तथा मज़दूरी सरकार की ओर से पाते हैं।

माल्टा में कुछ भारतीय तथा माल्टीज़ दूकानदार हैं। उनकी दुकानें बड़ी नहीं है और वे किसी सामान का अधिक स्टाक अपने पास नहीं रखते हैं। शिपिंग आफिस और एजन्सियाँ मकानों के निचले भाग में हैं। व्यापार के हिसाब का निरीक्षण करने से पता चलता है कि व्यापारियों को लाभ अधिक होता है। व्यापार में अधिकांश रुपया माल्टा के निवासियों का नहीं लगा हुआ है। वहां के आदि निवासियों के मकान सुन्दर नहीं बने हैं। वे लोग छोटे ग्राम्य गृह बना कर रहते हैं। ग्राम्य गृहों की तुलना वेलेटा के प्राचीन घरों से नहीं की जा सकती।

माल्टा के गृह चूने के पत्थरों के बने हैं। यह पत्थर बड़ा ही नरम होता है और मक्खन की तरह काटा जा सकता है। वहां पर सेंटजान के समय के मध्यकालीन घर बने हैं। सेंटजान के सूरमाओं का प्रभाव माल्टा निवासियों पर बहुत है। उसी के कारण माल्टा के निवासी बहादुर होते हैं।

नाइट लोगों के आने के पहिले माल्टा पर एक के बाद दूसरे विजेता आये जिन्होंने माल्टा में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की। वे माल्टा को राजनैतिक खेल का प्यादा समझा करते थे। पहले वैजनटाइन लोग आये फिर गोथिक आक्रमण हुआ, उसके पश्चात् सरासेन (सिसली वाले) आये। फिर आंजू के चार्ल्स का अधिकार रहा। अरागोन के अल्फोंजो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने १४२० ई० में इसे ३० हज़ार स्वर्ण फ्लोरेन पर गिरो रखा। महाराज चार्ल्स पञ्चम ने १५३० ई० में माल्टा को यरूशलम के सेंट जान के मत वालों को दे दिया क्योंकि तुर्क लोगों ने उन्हें १५२३ ई० में रहोडस से निकाल बाहर किया था। उसके पश्चात् माल्टा का नाम सारे ईसाई देशों में प्रसिद्ध हो गया क्यों वहां के मालिकों ने तुर्कों से लगातार बहुत समय तक युद्ध किया था। माल्टा में फ्रान्स, इटली, स्पेन, बवेरिया और इंगलैंड के धार्मिक संस्थाओं से धन आता था। क्रूसेड काल के पश्चात् माल्टा पर डेकेडेन्स का अधिकार हुआ। उसके बाद नैपोलियानिक युद्ध के समय युद्ध करने वाले राष्ट्र उस पर अपना अधिकार करना चाहते थे।

सब से पहले नैपोलियन बोनापार्ट आया और उसने १७९८ ई० में माल्टा को नाइट्स से जीत लिया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने वेलेटा के फ्रान्सीसी किलों का घेरा २ साल तक लगातार डाल रक्खा। जब १८१४ ई० में पेरिस की संधि हुई तो माल्टा और उसके उपनिवेश अँग्रेजों के हाथ सौंप दिये गये।

ब्रिटिश शासन का स्वागत हुआ। उस समय माल्टा की दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी। वहां कङ्गाली छाई हुई थी और लोग भूकों मर रहे थे। वहां के निवासियों ने ब्रिटिश सरकार से प्रस्ताव किया कि माल्टा में समुद्री जहाज़ों का अड्डा बनाया जावे। इस पर ह्वाइट हाल के सरकारी मन्त्रा माल्टा आये। उनमें अँग्रेज कवि कोलरिज भी था। वह वलेटा के गवर्नर के महल में ठहरा और जब तक वहां रहा १५० सतरों को कविता प्रतिदिन करता रहा।

अब ब्रिटिश सरकार माल्टा के अफसरों की सहायता समय समय पर रुपये के साथ करती रहती है और अच्छी सलाह भी देती रहती है। माल्टा में म्यूनिस्पैलिटी का शासन नहीं है। वहां पर ब्रिटिश सरकार की ओर से एक गवर्नर वलेटा में रहता है और वही वहां का राज्य-प्रबन्ध करता है। माल्टा ब्रिटिश सरकार का एक उपनिवेश है।

वलेटा नगर के बाहर गुवार्डामांगा नामक एक बड़ा स्पताल बनाया गया है जिसमें २,७२,००० पौंड (लगभग ४३,८०,००० रु०) की लागत लगी है। माल्टा में बकरी के दूध का एक बड़ा कारखाना है जहाँ से दूध विभाजित किया जाता है। माल्टा में स्थानीय प्रदर्शनी की जाती है जिससे टोबैको पाइप (तम्बाकू पीने का पम्प) लेस, मलमल, शराब, मिट्टी के बर्तन और बटन आदि को प्रोत्साहन दिया जाता है। अभी हाल ही में वहां पर दक्षिणी अमरीका के कोरोज़ो अखरोट का एक कारखाना खुला है।

माल्टा में आय कर नहीं है और सरकारी सालाना आय १० लाख पौंड (१,५०,००,००० रु०) से कुछ ही अधिक है इसलिये माल्टा में प्रजा के सुधार के लिये बहुत कम काम हो सकता है।

माल्टा में एक स्थानीय नाच घर है। यह नाच घर १८६० ई० में बना था। इसके लिये माल्टा की सरकार को ५० हज़ार पौंड (७,५०,००० रु०) सालाना देना पड़ता है। २६० हज़ार गैस मास्क (गैस से बचने का यन्त्र) सरकारी मालगोदाम में वहाँ के निवासियों के लिये सरकार को अपने व्यय पर रखने पड़ते हैं। घनी आबादी होने के कारण वहाँ के लोगों को बड़ी असुविधाएँ हैं। वहाँ के लोगों को स्थानीय पत्रों पर केवल २ पैसा व्यय करना पड़ता है।

माल्टा में जर्मन, स्पैनी, फ्रान्सीसी, इटैलियन और अँग्रेज़ी भाषाओं का प्रयोग होता था। इटैलियन भाषा का प्रयोग अब भी है। इटैलियन भाषा माल्टा की कोर्ट भाषा थी। स्कूलों में भी इसी का प्रयोग होता था। शिक्षित लोग सैकड़ों वर्ष इटैलियन भाषा का ही प्रयोग करते रहे। १९२१ ई० में इँगलैंड की मजदूर सरकार ने जो राएल कमीशन माल्टा भेजी थी उसने रिपोर्ट किया कि अधिकांश माल्टा निवासी इटैलियन नहीं जानते वे माल्टी भाषा का प्रयोग प्रार्थनाओं, दुकानों, सभाओं, सड़कों और बाज़ारों में करते हैं और माल्टी भाषा के पत्रों की उन्नति हो रही है।

कुछ समय तक इटैलियन और अँग्रेजी दोनों भाषाओं को स्कूलों में विद्यार्थियों को ज़बरदस्ती सिखाने का प्रयत्न किया गया। यह दोनों भाषाएँ उनके लिये नई तथा अजनबी थीं। कचेहरियों में भी जब माल्टा निवासी जाता था तो वह इटैलियन भाषा बिलकुल समझ नहीं पाता था। सन् १९३२ ई० में यह तै किया गया कि स्कूलों में केवल अँग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और माल्टी भाषा की शिक्षा दी जाय और कचेह-रियों में भी अँग्रेज़ी तथा माल्टा वालों का मुकदमा जाति के अनुसार माल्टी अथवा अँग्रेज़ी भाषा में किया जाये।

अब सड़कों, पार्कों और गलियों के नाम भी अँग्रेज़ी अथवा माल्टी भाषा में लिखे जाते हैं। जहाँ पहले "स्ट्राडा", "वाया", "विकोलो" शब्दों का प्रयोग होता था वहां अब "रोड", "अवेन्यू" "लेन" "अले" अथवा "ट्रीक" और "स्काक" शब्दों का प्रयोग होने लगा है। अभी हाल ही में माल्टा के गवर्नर ने अपने विशेषाधिकार से स्ट्राडा माग्री और विकोलो सान टोमासो हैमरन के मध्यवर्ती नई सड़क का नाम बटर-फ़्लाई स्ट्रीट (तितली सड़क) रखा है।

माल्टी भाषा के उद्गम की खोज करने के लिये हमें प्राचीन बातों का अध्ययन करना पड़ता है। इसके विकास के बारे में लोगों का मत भिन्न भिन्न है। किसी समय में माल्टा उत्तरी अफ्रीका से मिला था जिससे माल्टा की भाषा का उत्तरी अफ्रीका की भाषा से सम्बन्ध हो गया था। नार्मन लोगों के आने के (१०९० ई०) पहले माल्टा पर सरासेनिक लोग राज्य करते थे। त्रिपोली और सिकन्दरिया के अरब निवासी अपने पूर्वजों की भाषा (जिसका उद्गम फोनीसी भाषा थी) का प्रयोग करते थे। वह भाषा वर्तमान माल्टी भाषा से मिलती जुलती थी। अरब प्रभाव के कारण उस भाषा का नाम मिट गया।

माल्टी लोगों और उत्तरी अफ्रीका के निवासियों की जाति में किसी प्रकार का मेल नहीं दिखाई पड़ता। माल्टो लोग मोटे और चौड़े बदन के होते हैं जिससे पता चलता है कि वे पाषाण कालीन लोगों की औलाद हैं। प्रोफेसर युगोलिनी के सिद्धान्त के अनु-सार उत्तर पाषाण कालीन संस्कृत का विकास माल्टा से हुआ। इसको १० हज़ार वर्ष व्यतीत हो गये हैं। यह निस्सन्देह क्रेटे के काँसा काल के पहले की बात है। युगोलिनी के अनुसार स्नैड्रा और हजियार कीम के मन्दिर और टारक्सीम तथा हाइपोजियम के खँडहर (जिसमें विशाल शिलाएँ लगी हैं) उसी काल के हैं।

माल्टा द्वीप में पाषाण काल के बहुत से स्मारक हैं। उनमें से बहुत से अच्छी दशा में हैं। यह सभी स्मारक पाषाण काल के हैं। इसके बहुत पश्चात् योरुप में धातु काल का विकास हुआ।

ऐतिहासिक काल के पूर्व से ही माल्टा में लोग खेती बारी करते थे। वे लोग रोज़गार भी करते थे। प्राचीन काल के माल्टा निवासियों ने कृषि में आश्चर्यजनक उन्नति कर ली थी। वहाँ के काम करने वाले मज़दूर, मछली मारने वाले मल्लाह, स्थानीय पादरी और मध्य कालीन उच्च समुदाय के लोग सभी बड़े परिश्रमी हैं। परन्तु यह सभी लोग विदेशों की ओर देखते हैं। विदेशी लोग माल्टा में आकर वहाँ के मेहमान बनते हैं और फिर माल्टा की भौगोलिक स्थिति तथा वहाँ के उपायों से लाभ उठाते हैं।

माल्टा में फल बहुत पैदा होता है। यह फल ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े के लोगों के भोजन के लिये प्रयोग किया जाता है। माल्टा द्वीप में ५० लाख टन (एक टन लगभग २८ मन के बराबर होता है) का सालाना व्यापार होता है। इन व्यापारिक जहाजों को माल्टा फल तथा भोजन सामग्री देता है। खाने पीने से जो ज़ीरा और आलू बच रहता है वह विदेशों को जहाजों द्वारा भेजा जाता है। पहले माल्टा में खेती करने योग्य भूमि (४८ हज़ार एकड़) के एक तिहाई भाग में कपास की खेती होती थी। यह कपास निर्यात होती थी और वलेटा में पाल के लिये इसी रुई से कपड़ा बनाया जाता था। माल्टा में कैरोब, नाशपाती, संतरे, नीबू और अंगूर की उपज होती है। यह फल जनवरी के आरम्भ में पकते हैं।

माल्टा के किसानों का जीवन बड़ा कठिन है उन्हें रविवार को भी काम से छुट्टी नहीं मिलती। माल्टा के किसान पशु बहुत कम पालते हैं क्योंकि वहाँ पर घास के मैदान नहीं हैं और न वृक्ष ही अधिक हैं जिनकी पत्तियाँ पशुओं को खिलाई जा सकें। किसानों को खेती की उपज का कुछ भाग ज़मींदारों को और कुछ भाग चर्च को देना पड़ता है। यह वहाँ के किसानों का प्राचीन काल से रिवाज चला आ रहा है। प्राचीन काल में ज़मींदार किसानों और राजा के बीच तथा पादड़ी किसानों और ईश्वर के बीच के मध्यस्थ माने जाते थे।

यद्यपि अब ऐसे स्थान बहुत कम हो गये हैं जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पादरियों का पहिले की भांति जोर है। तो भी प्रत्येक १०० किसान के पीछे एक पादरी होता है। माल्टा के लोग अपने धार्मिक पादरियों को बहुत मानते हैं। वे बड़े धार्मिक होते हैं और धार्मिक जुलूसों तथा कार्यों में बड़े चाव से भाग लेते हैं। अभी हाल में मुस्टा का डोम गुम्बद) स्वर्ण पत्तियों से सजाया गया था। इस गुम्बद का व्यास सेंटपाल के गुम्बद से १० फुट बड़ा है।

माल्टा में सेंट पाल का सरोवर तथा इनके टूटे हुये जहाज के नाम से एक सराय है। यह सराय सड़क के किनारे है और इसका द्वार सदैव खुला रहता है। सरोवर का पानी अच्छा नहीं है। इसी कारण वहां पर खुदा हुआ है कि पानी पीने योग्य नहीं है। यह सरोवर प्राचीन समय से ही बड़ा पवित्र माना जाता है। यदि आज सेंट पाल जीवित होते और माल्टा द्वीप को देखने जाते तो वहां के धार्मिक किसानों और जहाजी एजन्सियों को देख कर अवश्य ही उन्हें संतोष और सुख होता चाहे अपने सरोवर और सराय को देख कर उन्हें दुख ही होता।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ अगस्त—आर० ए० एफ० के बम्ब वर्षक वायुयानों ने मिसबर्ग एमरिच के तेल साफ करने वाले कारखानों तथा जर्मनी और हालैंड के तट के जहाज़ों पर बम्ब वर्षा किया। एक बमवर्षक लापता हो गया। आस्टेन्ड पर भी बम्ब वर्षा की गई और चार सौ रेल के छकड़ों में आग लगा दी गई जिनमें सामान भरा था। जर्मन वायुयानों ने दक्षिणी पूर्वी नगरों तथा नार्विक पर बम्ब गिराया जिससे कुछ आदमी मरे, कुछ घायल हुये और कुछ मकान गिर गये।

२ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने नार्वे नगर पर धावा मारा और बम्ब वर्षा किया जिससे ५ आदमी मर गये और बहुत से घायल हुये। कई मकान नष्ट हुये। जर्मन वायुयानों ने लण्डन में हज़ारों की संख्या में पर्चे गिराये जिनमें हिटलर का भाषण था। पर्चों का शीर्षक था "इङ्गलैंड के समझदारों से अंतिम अपील"।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के हवाई अड्डों पर धावा मारा और जर्मन तथा डच तटों के जहाज़ों पर बम्ब गिराया। इटैलियन अफ्रीका में भी आर०ए०एफ० ने बम्ब वर्षा कर बड़ी हानि पहुँचाई।

३ अगस्त—जर्मन सेना ने सारे फ्रान्सीसी तट पर गोला फेंकने वाली तोपें लगा दीं। जर्मन वायुयानों ने पथरचक सेना पर आक्रमण किया परन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। अँग्रेज़ वायुयानों ने नार्वे के तट पर धावा मारा और बैरी के बेतार के तार वाले स्टेशन को नष्ट कर डाला तथा एक जहाज जिस पर बैरी सेना के लिये सामान जा रहा था उस पर बम्ब गिराया। लीबिया की सीमा पर इटली की सेना एकत्रित हुई।

४ अगस्त—ब्रिटिश वायुयानों ने कील पर धावा मारा और कील के समुद्री भवन में बम्ब फेंक कर आग लगा दिया। उसके बाद शत्रु के आएल टैंक्स (तेल की टंकियाँ) तथा हवाई अड्डों पर बम्ब गिराया जिससे शत्रु की बड़ी हानि हुई। सारडीनिया द्वीप के गागलियारी नामक इटैलियन हवाई अड्डे पर बम्ब वर्षक वायुयानों ने आक्रमण किया और हवाई भवन को नुक़सान पहुँचाया। जर्मन वायुयानों ने दक्षिणी पूर्वी इङ्गलैंड तथा दक्षिणी पश्चिमी इङ्गलैंड पर धावा मारा।

५ अगस्त—ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने जर्मनी और हालैंड के हवाई अड्डों पर आक्रमण किया और तेल के कारखानों तथा हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा किया। जर्मन वायुयानों ने इङ्गलैंड पर धावा मारा। मेर्सा माइटरूह पर भी बम्ब गिराये गये परन्तु कोई हानि नहीं हुई। केप फिनिस्टेरे नामक ब्रिटिश ट्रालर जहाज पर बम्ब का गोला गिरा जिससे वह इगलिश चैनल में डूब गया। कई शत्रु वायुयान गिराये गये।

माल्टा पर शत्रु ने बम्ब वर्षा किया। डिरेल गोबी में ब्रिटिश वायुयानों और शत्रु वायुयानों में युद्ध हुआ। कई शत्रु वायुयान गिराये गये।

६ अगस्त—शत्रु वायुयानों ने हैफा (पैलेस्टाइन) पर आक्रमण किया और बम्ब वर्षा किया परन्तु सभी बम्ब नगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाहर गिरे और कोई हानि नहीं हुई। लगभग १० नागरिक घायल हुये। जर्मन वायुयानों ने इङ्गलिश चैनल तथा इङ्गलैंड के दक्षिणी पूर्वी तट पर आक्रमण किया और बम्ब बर्षा किया। ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मन सैनिक अड्डों तथा हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा किया।

इटैलियन सेना ने ब्रिटिश सुमालीलैंड पर आक्रमण किया। ब्रिटिश सेना ने डट कर बैरी सेना का सामना किया। स्टोनिया भी सोवियट रूसी साम्राज्य में मिला लिया गया।

७ अगस्त—ब्रिटिश बम्ब बर्षक वायुयानों ने हेम्बर्ग के तेल के कारखाने, शर्टे के रसद गोदाम पर, हाम्बर्न के वायुयान संहारिणी तोपों पर और मोर्स के एक फैक्टरी पर आक्रमण कर भारी हानि पहुँचाई। कुछ ब्रिटिश वायुयानों ने उत्तरी जर्मनी और हालैंड पर बम्ब बर्षा किया।

शत्रु के दो वायुयानों ने नाजी हमला किया किन्तु कोई सफलता उन्हें प्राप्त नहीं हुई। ब्रिटिश वायुयानों ने उनका पीछा किया परन्तु वे बादलों में लुप्त हो गये। इटली मिश्र पर आक्रमण करने की तयारी करने लगा।

हैफा पर शत्रु वायुयानों ने आक्रमण किया। कई बम्ब गिराये गये और लगभग सभी बिना कोई हानि पहुँचाये समुद्र में गिर गये किसी नगर पर बम नहीं गिरा और न कोई सैनिक हानि हुई। १० से कम नागरिक घायल हुये। वायुयान संहारिणी तोपों ने आक्रमणकारियों पर अग्नि वर्षा किया।

८ अगस्त—इटैलियन सेना ने जीला, आडेवीना और हर्जीसा पर अधिकार कर लिया। जर्मन वायुयानों ने इङ्गलैंड के कई नगरों पर बम्ब वर्षा किया। कई खिड़कियां टूट गईं। उत्तरी इङ्गलैंड के एक नगर में कुछ दुकानें नष्ट हो गईं तथा कुछ लोग सड़क पर चलने वाले घायल हुये ६ जर्मन वायुयान गिराये गये। रूम सागर में शत्रु जल सेना तथा ब्रिटिश जल सेना में युद्ध हुआ। जर्मनी ने इङ्गलिश चैनल पर धावा मारा।

९ अगस्त—इङ्गलिश चैनल पर जर्मन वायुयानों ने धावा मारा। जर्मन मोटर बोटों ने इङ्गलिश पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया और ६७ हज़ार टन का सामान डुबो दिया। पथरक्षक सेना के ७ और दूसरे जहाज घायल हुये। तीन जहाज डूब गये। दो जहाज हवाई आक्रमण में डुबाये गये। ६० आक्रमणकारी वायुयान गिराये गये। इङ्गलैंड के कई नगरों पर आक्रमण हुआ जिससे बहुत से मकानों को हानि पहुँची कुछ लोग घायल हुये कुछ जानें गईं। ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मन हवाई तथा जहाज़ी अड्डों पर बम्ब वर्षा किया। जीला में ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब बर्षा कर के शत्रु को हानि पहुँचाया। ब्रिटिश बन्दरगाहों के समीप जर्मन टारपीडो बोटों ने सुरङ्गें लगाईं।

१०—जापानी जल सेना इन्डो चाइना के समीप एकत्रित हुई। विची की सरकार से जापान ने इन्डोचीन में समुद्री तथा हवाई अड्डे बनाने के लिये मांग पेश किया ब्रिटिश शंघाई सेना से हटा ली गई।

इङ्गलिश चैनल पर ४०० जर्मन वायुयानों ने आक्रमण किया। जर्मन बम्ब बर्षकों ने इङ्गलैंड के गावों पर भारी बमों का प्रयोग किया जिससे कुछ लोगों की मृत्यु हो गई। ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने हैम्बर्ग डाक, हैम, सोएस्ट और कलोने के हवाई अड्डों पर दिन में धावा मारा। कुछ वायुयानों ने स्चीपोल, वाल्केनबर्ग, मांचिस्टर पर भी बम्ब गिराया। आटोस नामक स्वीडिश जहाज डुबो दिया गया।

११ अगस्त—इङ्गलैंड पर जर्मन वायुयानों ने सैकड़ों की संख्या में आक्रमण किया। जर्मन वायुयानों ने बड़े बमों का प्रयोग किया, दक्षिणी-पूर्वी तथा दक्षिणी-पश्चिमी इंगलैंड पर धावा हुआ। शत्रु आक्रमण से कई मकान टूट गये और दूकानें नष्ट हुईं। मरे हुए लोगों की संख्या ठीक ठीक ज्ञात नहीं है। ब्रिटिश वायुयान संहारिणी तोपों ने गोले मार कर ब्रिटिश वायुयानों की सहायता से ६५ शत्रु वायुयानों को गिराकर नष्ट कर दिया गया।

आर० ए० एम० के वायुयानों ने जर्मनी के पिट्रोल के साफ करने वाले कारखानों पर धावा मारा। डौटमंड, क्लाकनेर विंटरशाल, कास्टोर राक्शेल और वाने ईकेल के कारखानों पर बम्ब गिरा कर आग लगा दिया।

११ अगस्त—जापान ने इन्डोचीन पर आक्रमण करने की तयारी किया। चीनी सेना सीमा पर जापानी सेना का सामना करने के लिये एकत्रित हुई।

ब्रिटिश सुमाली लैण्ड में ब्रिटिश तथा इटैलियन सेना में युद्ध हुआ। इटैलियन सेना आगे बढ़ी। आर० ए० एफ० ने बम्ब वर्षा किया जिससे बैरी को हानि पहुँची।

सिरिया की सरकार ने आज्ञा निकाली कि कोई अँग्रेज़ न तो सिरिया में घुस सकता है और न सिरिया छोड़ सकता है। ब्रिटिश पनडुब्बा ओडिन कहीं डूब कर गायब हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ अगस्त—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी पर धावा मारा और तेल तथा पिट्रौल वाले स्थानों पर बम्ब गिराकर कारखानों को नष्ट कर दिया। ३ ब्रिटिश वायुयान गिराये गये।

५०० जर्मन वायुयानों ने दक्षिणी पूर्वी, दक्षिणी पश्चिमी और उत्तरी पश्चिमी इङ्गलैण्ड पर धावा मारा जिससे बमों द्वारा इङ्गलैण्ड के कई हवाई अड्डों को हानि पहुँची और दक्षिणी-पूर्वी इङ्गलैण्ड के नगरों की हानि हुई। ६१ जर्मन वायुयान गिराये गये।

१३ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने पोर्ट्स्माउथ पर धावा मारा। वहां पर २७ वायुयान गिराये गये। केन्ट के तट पर जर्मन वायुयानों ने बम्ब बर्षा किया जिससे बहुत से घर नष्ट हो गये। केन्ट के तट पर जहाज़ों पर जर्मन बम्ब वर्षा करने वाले जहाज़ों ने धावा मारा और ६ वायुयान गिराये गये।

१४ अगस्त—इङ्गलैण्ड पर चारों ओर जर्मन वायुयानों द्वारा आक्रमण हुआ। वायुयान ५ या ६ सौ के समूहों में आक्रमण करते थे। वेल्स तथा इङ्गलैण्ड के मध्यवर्ती नगरों पर भी आक्रमण हुआ। ७८ जर्मन वायुयान तथा १० ब्रिटिश लड़ाका वायुयान नष्ट हुये।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के हवाई अड्डों पर धावा मारा और हार्वरों पर बम्ब वर्षा किया। १२ ब्रिटिश जहाज़ नष्ट हुये।

ब्रिटिश विध्वंसकारक जहाज़ों ने तीन जर्मन जहाजों को डुबो दिया। एलिज़बेथ नामक ब्रिटिश सुरंग हटाने वाला जहाज़ डुबाया गया। ट्रांसिलवानिया नामक ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ यू-बोट द्वारा गोला मार कर डुबा दिया गया। इङ्गलिश चैनल में वारिया नामक स्वीडन का जहाज़ डूबा। केन्टन नामक स्टीमर डुबाया गया। कील की खाड़ी से मंगोलिया नामक स्वीडन का जहाज़ डुबाया गया।

१५ अगस्त—इंगलैण्ड के दक्षिणी पूर्वी तट पर ३०० जर्मन वायुयानों ने धावा मारा और केन्ट तट के हवाई स्टेशनों पर भी बैरी जहाज़ गये परन्तु मार भगाये गये। कुल २६ जर्मन वायुयान गिराये गये। बोर्जे के समीप जिरिंडे के तेल तथा पिट्रौल की टंकी में आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आग लगा दिया जिससे सारा सामान जल गया। आग की लपट १४० मील तक दिखाई पड़ती थी।

ब्रिटिश सुमाली लैण्ड में इटैलियन तथा ब्रिटिश सेना में घोर युद्ध हुआ। ब्रिटिश सेना को मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा। इटैलियन सेना बेरबेरा से ७५ मील की दूरी पर है।

१६ अगस्त—एक हज़ार से अधिक जर्मन वायुयानों ने इंगलैन्ड पर धावा मारा। जर्मन वायुयान समूह के समूह चलते थे और बम्ब बर्षा करते थे। आर० ए० एफ० के लड़ाकू वायुयानों ने डट कर सामना किया। १४४ जर्मन वायुयान गिराये गये और २७ आर० ए० एफ० के वायुयान नष्ट हुये।

ब्रिटिश सुमाली लैण्ड में जुगार्गन दर्रे से ब्रिटिश सेना पीछे हट गई। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने उत्तरी इटली पर धावा मारा और ट्यूरिन के फियाट इञ्जिन फैक्टरी, मिलान के कैपरोनी एअर क्राफ्ट के कारखाना और जेनेवा के एक कारखाने पर बम्ब गिराये गये। इटैलियन अफ्रीका में मकाका, एरीट्रिया, जिगजिंगा और डेस्सी में आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मारा।

सिकन्दरिया पर इटैलियन वायुयानों ने दो घंटे तक आक्रमण किया और बम्ब बर्षाया। अदादीह और मिगगिगा में ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया और बहुत हानि पहुँचाया।

लन्दन पर पहले पहल रात के समय जर्मन वायुयानों द्वारा आक्रमण हुआ। लन्दन नगर के दक्षिणी पश्चिमी भाग पर बम्ब गिराये गये जिससे बहुत से लोग मरे। गलियों में मशीन गनों द्वारा वायुयानों ने गोलाबारी किया। जिससे बहुत से मकान नष्ट हो गये।

जापानी सेना ने क्वांग्सी प्रान्त में चनानक्वान में एकत्रित होना शुरू किया। रूमानिया की सरकार ने बलगेरिया की सरकार को सिलिस्ट्रिया और बाल्चिक देना स्वीकार कर लिया।

१७ अगस्त—नाज़ी बम्ब वर्षा करने वाले वायुयानों ने लण्डन तथा वेल्स पर धावा मारा और बम्ब गिराया जिससे बहुत से लोग मरे तथा घर गिर गये। ७१ जर्मन वायुयान गिराये गये।

जर्मनी ने इंगलैंड के चारों ओर सुरंग लगा कर उसका घेरा डाल दिया और तटस्थ राष्ट्रों को सूचित कर दिया कि वे अपने जहाज़ों को इंगलैंड आने जाने से रोक दें। जर्मनी ने घोषणा किया कि ब्रिटिश द्वीप समूह को जो जहाज़ जायेंगे वे डुबा दिये जावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान ने स्याम से मांग पेश की कि वह उसे स्याम में हवाई तथा समुद्री अड्डे बनाने की जगह दे दे।

जर्मनी पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया और रेलवे, हवाई अड्डों और कारखानों पर बम्ब वर्षा किया।

१८ अगस्त—अमरीकन लेजियन ने इंगलैंड के उत्तर की ओर से अपने जहाज ले जाने के लिये कहा। अमरीकन सरकार ने जर्मनी को लिखा कि अमरीकन लिजियन के जहाजों को हानि न पहुँचे।

६०० जर्मन वायुयानों ने तीन समूहों में होकर इङ्गलैंड पर धावा कर लण्डन पर भी आक्रमण किया गया परन्तु हानि कम हुई। १४० जर्मन वायुयान गिराये गये।

ब्रिटिश सुमालीलैंड से ब्रिटिश सेना बेरबेरो की ओर हटी। इटैलियन सेना आगे बढ़ती गई। ब्रिटिश सेना चीनी बन्दरगाह से रवाना हुई। ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने लिबिया के तट पर गोलाबारी किया और बर्दिया तथा कपूजो के किले को भारी हानि हुई।

१९ अगस्त—इंगलैंड पर जर्मन वायुयानों ने आक्रमण किया। वायुयान समूहों में नहीं आये वरन् एक एक करके आये और उन्होंने बम्ब गिराया। चार वायुयान गिराये गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने फ्रांसीसी तट तथा दक्षिणी जर्मनी पर धावा मारा। फ्रांस के तट पर बम्ब गिरने से जो अग्नि प्रकोप होता था वह इंगलैंड के तट से दिखाई पड़ता था। जर्मनी ने संयुक्त राष्ट्र को विश्वास दिलाया कि जर्मनी अमरीकन लिजियन के जहाजों पर आक्रमण न करेगा।

ब्रिटिश सेना ने ब्रिटिश सुमालीलैंड खाली कर दिया। वहां पर इटैलियन सेना का अधिकार हो गया। ब्रिटिश वायुयानों ने उत्तरी इटली के कारखानों पर धावा मारा और बम्ब गिरा कर हानि पहुँचाया।

२० अगस्त—इङ्गलैंड के दक्षिणी पूर्वी तट पर गोलेबारी हुई। जर्मन वायुयानों ने बम्ब गिराया परन्तु अधिक हानि नहीं हुई। ६ वायुयान गिराये गये। इङ्गलैंड के प्रधान मन्त्री ने घोषणा किया कि इङ्गलैंड अपनी रक्षा के लिये सदैव से अधिक तयार है। ब्रिटिश वायुयानों ने कील के जहाजी अड्डे पर बम्ब गिराया और भारी हानि पहुँचाया।

ब्रिटिश सुमालीलैंड की ब्रिटिश सेना अदन पहुँची। अटलांटिक सागर में ब्रिटिश समुद्री सेना ने जर्मन सामान भरे हुये स्वीडन के हेडरन जहाज पर हमला किया और उसे डुबो दिया।

२१ अगस्त—इटली ने तटस्थ राष्ट्रों को घोषणा किया कि उसने अफ्रीका के समस्त ब्रिटिश स्थानों तथा रूमसागर, लालसागर और अदन का घेरा डाल दिया है इसलिये तटस्थ राष्ट्र अपने जहाज इटैलियन युद्ध क्षेत्र से अलग रखें।

जर्मन वायुयानों ने इङ्गलैंड पर धावा मारा और बम्ब वर्षा किया। एक जर्मन वायुयान ने हवाई टारपीडो का प्रयोग किया। इङ्गलैंड के मध्यवर्ती नगरों पर आक्रमण हुआ जिससे बहुत से घर नष्ट हुये। बहुत से लोग जान से मर गये। १२ जर्मन वायुयान गिराये गये।

२२ अगस्त—भारी जर्मन तोपों ने इङ्गलैंड के तट पर फ्रांस के तट से गोलाबारी किया। डोवर तथा ब्रिटिश पथ रक्षक सेना पर भीषण गोलाबारी हुई। ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मन तोप वाले स्थानों पर बम्ब गिरा कर हानि पहुँचाया। ब्रिटिश वायुयानों ने डेर्की के इटैलियन हवाई अड्डे पर भीषण बम्ब वर्षा किया।

२३—ब्रिटिश लारेंज गनों (बड़ी तोपों) ने इङ्गलैंड के तट से फ्रांसीसी तट पर गोलेबारी किया। जिससे कैले के तट को हानि हुई। जर्मनी की बड़ी तोपों ने फ्रांसीसी तट से डोवर तथा इङ्गलैंड के पूर्वी तट पर गोलेबारी किया जिससे समुद्री तट को बड़ी हानि हुई। लंडन पर जर्मन वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया जिससे कई भवन नष्ट हुये वेल्स और स्काटलैंड के नगरों पर भी शत्रु वायुयानों द्वारा आक्रमण हुआ। ६ जर्मन वायुयान गिराये गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने लिबिया के इटैलियन सैनिक अड्डों पर बम्ब वर्षा करके शत्रु को बहुत हानि पहुँचाया। ब्रिटिश वायुयानों ने शत्रु के दो पनडुब्बे जहाज़ों तथा एक विध्वंसकारी जहाज़ को डुबो दिया।

२४ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने लण्डन पर धावा मारा और आग लगाने वाले तथा सीटी देने वाले बमों का प्रयोग किया। बमों द्वारा कुछ मशीनों की छतें तथा खिड़कियां टूट गईं। कुछ लोग घायल हुये और कुछ मर गये। वायुयान संहारिणी तोपों तथा ब्रिटिश वायुयानों ने उन्हें मार भगाया और कई जर्मन वायुयान गिराये गये। ब्रिटिश बम्ब वर्षक वायुयानों ने फ्रांस, हालैंड बेल्जियम तथा राइनलैण्ड के लगभग २० शत्रु सैनिक अड्डों पर आक्रमण किया। बोलोन, डीपे, ब्रेस्ट, बिन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्राउल्ले, (पेरिस के समीप) वानेस सेंट ब्रीयू रोनेस, डिनार्ड, लैन वेश्रोक, पाउम्पिम ज्वीपावास आदि सैनिक अड्डों पर आक्रमण हुआ। तीन ब्रिटिश वायुयान पार लौट कर नहीं आ सके और नष्ट हो गये।

२५ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने इङ्गलैण्ड पर धावा मारा। लण्डन पर रात को आक्रमण हुआ और आग लगाने वाले तथा सीटी देने वाले बम्ब गिराये गये। जिससे नगर में हाहाकार मच गया और आग लग गई। आकाश में लपटें उठ रही थीं। जर्मन बम्ब वर्षक २० हज़ार फुट की ऊँचाई पर उड़ रहे थे। हानि का ठीक ठीक पता नहीं है। ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान लड़ रहे थे। वायुयान संहारिणी तोपें जर्मन वायुयानों पर गोले बर्षा रही थीं। चारों ओर अग्नि और धुवाँ का मंडल छाया हुआ था। पोर्टमाउथ बन्दरगाह पर २० वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया और कुछ मकानों तथा एक सिनेमा भवन को नष्ट किया। कुछ लोग घायल हुये तथा कुछ मारे गये। ४५ जर्मन वायुयान गिराये गये। फ्रांसीसी तट से जर्मन तोपों ने गोलेबारी किया।

२६ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने लन्दन पर धावा मारा और बम्ब वर्षा किया जिसके फल स्वरूप कई स्थानों पर आग लग गई, घर गिर गये और कुछ जानें गईं। उत्तरी-पूर्वी इंगलैंड और स्काटलैंड में बमों के कारण आग लग गई जिससे कुछ दुकानें और कुछ कारखानों का सामान जल गया। पोर्ट स्मथ पर जो आक्रमण हुआ उससे एक सिनेमा घर बर्बाद हुआ और बहुत से लोग मर गये। इङ्गलैंड के उत्तर पश्चिम की ओर बैरी बम्ब बर्षा करने वालों ने धावा मारा जिससे भीषण आग लग गई। जर्मन बम्ब बर्षा करने वालों ने हज़ारों की संख्या में बम्ब गिराये इङ्गलैंड के दक्षिण-पूर्व बम्ब बर्षा के कारण गावों में आग लग गई। यह आग चारों ओर कई मील तक लग गई थी जिससे किसानों के खेत आदि भी जल गये।

इङ्गलिश चैनल पर दोनों ओर से तोपों द्वारा गोला-बारी हुई। क्यूज़ो का किला नष्ट कर दिया गया। माल्टा पर इटली के वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया।

रूमानिया ने डोबरूजा प्रान्त बलगेरिया के लिये खाली कर दिया।

२७ अगस्त—जर्मन बम्ब बर्षक वायुयान इंगलैण्ड पर समस्त रात्रि आक्रमण करते रहे। लगभग ५०० मील के तट पर आक्रमण हुआ। वायुयान संहारिणी तोपों की अग्नि-ज्वाला और ढूढ़ने वाली रोशनी (सर्चलाइट) से लन्दन नगर घिरा हुआ था। हानि का ठीक पता नहीं है। जर्मन बम्ब वर्षकों ने भारी बमों का प्रयोग किया है। इंगलैण्ड के कई नगरों पर आक्रमण हुआ है। ४६ जर्मन वायुयान गिराये गये हैं। १५ ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान नष्ट हुये हैं।

ब्रिटिश बम्ब बर्षक वायुयानों ने बर्लिन पर आक्रमण किया और बम्ब वर्षा किया। लन्दन के प्रधान बाज़ार में जर्मन बम्ब वर्षकों ने बम्ब गिराया। जिससे भीषण आग लग गई। दो पुलीस के आदमी मर गये। सेंट गाइल्स का चर्च बरबाद हो गया। मिल्टन की मूर्ति टूट गई।

इटली के बम्ब बर्षक वायुयानों ने सिकन्दरिया पर धावा मारा जिससे एक आदमी मरा और पांच घायल हुये। ब्रिटिश वायुयानों ने इटैलियन सुमाली लैन्ड पर धावा मारा और बहुत हानि किया। जर्मन सुरंगों द्वारा ब्रिटिश विध्वंस कारक ज़हाज़ होस्टाइल डुबा दिया गया।

२८ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने लण्डन और वेल्स के तीन, दक्षिणी पश्चिमी इँगलैण्ड के दो, दक्षिणी-पूर्वी इँगलैण्ड के पाँच तथा मध्यवर्ती कई नगरों पर बम्ब वर्षा किया। आक्रमण रात के समय हुआ। वायुयान संहारिणी तोपें भीषण गोलेबारी कर रही थीं। दक्षिणी-पूर्वी इँगलैण्ड पर यह सब से बड़ा आक्रमण था। आग लगाने वाले बम्ब गिराये गये थे जिससे आग लग जाती थी। आग बुझाने वाले इंजिन आग बुझाने में लगे थे। एक नगर में इतनी भीषण आग लग गई कि आग की लपट सैकड़ों फुट ऊपर आकाश में उठ रही थी और चारों ओर मीलों तक प्रकाश छाया हुआ था। एक घंटे में आग बुझाई गई। जर्मन वायुयानों ने माल तथा सवारी रेलगाड़ियों पर नीचे आकर मशीनगन द्वारा गोलों की वर्षा किया। एक सवारी रेलगाड़ी जा रही थी। कुछ वायुयान नीचे आये। उन्होंने उस पर गोला बरसाना आरम्भ किया। गोलियां डिब्बों की छत पर गिर रही थीं। रेलगाड़ी बराबर चलती गई और एक सुरंग में जाकर रुकी। जर्मन वायुयानों ने बड़े तथा शक्ति-शाली बमों का प्रयोग किया था। आक्रमण के कारण कुछ लोगों की जानें गईं, कुछ स्त्रियाँ भी मरीं। हानि कम हुई है।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी तथा इटली पर धावा मारा। इटली के ट्यूना के संसार प्रसिद्ध रंग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारखाने पर बम्ब गिराये गये जिससे चारों ओर आग लग गई। ६ भवन अग्निकांड में नष्ट हुए।

रूमानिया और हंग्री के बीच शत्रुता बढ़ रही है। ट्रान्सीलवानिया में रूमानी सेना बढ़ रही है। एक हंगेरियन वायुयान पर मशीनगन से रूमानी सेना ने चोट किया। एक रूमानी तथा एक सोवियट वायुयान झगड़ा हो जाने के कारण गिराये गये।

२६ अगस्त—जर्मन वायुयानों ने इँगलैण्ड के कई स्थानों पर आक्रमण किया। रात भर लगातार बम्ब वर्षा करने के पश्चात् सवेरे ब्रिटिश वायुयानों और जर्मन वायुयानों में भयंकर युद्ध हुआ। केन्ट से थेम्स स्चुअरी तक युद्ध होता रहा। इँगलैण्ड के प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल युद्ध को देखते रहे। उनके सामने ७ जर्मन वायुयान गिराये गये। जब जर्मन वायुयान आये तो उन्होंने आकाश में धुएँ का 'स्वस्तिका' का चिन्ह बनाया। इँगलैण्ड के महाराज और रानी उत्तर की ओर सेना का निरीक्षण करने गये थे, इस कारण उन्होंने वायुयान के आक्रमण के खतरे का घंटा नहीं बजने दिया। ब्रिटिश तथा जर्मन हवाई युद्ध में २४ जर्मन तथा १२ ब्रिटिश वायुयान नष्ट हुए।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने कील के डाक वलियम्सहेविन, केल्टरबाच, इटली के हवाई अड्डों और फ्रान्स तथा जर्मन के जीते हुए देशों के हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा किया। सूडान के सैनिकों ने इटैलियन समीपवर्ती क़िले अदारदेब पर आक्रमण किया और आग लगा दिया। डेरना हार्बर के शत्रु जहाजों पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया और दो जहाज़ों को डुबा दिया। लालसागर में साक्रो द्वीप तथा दरार पर भी बम्ब वर्षा की गई।

वियना में एक सम्मेलन हुआ जिसमें रिबेन ट्राप, सियानो और हंगेरियन तथा रूमानियन विदेशी सचिव उपस्थित थे। रूमानिया ने हंग्री की अधिकृता का प्रश्न सम्मेलन के सामने पेश किया।

३० अगस्त—आर० ए० एफ० के बम्ब-वर्षक वायुयानों ने बर्लिन पर रात में आक्रमण किया। आक्रमण के कारण १० व्यक्ति मरे और २८ घायल हुये। बर्लिन नगर के मध्यवर्ती पूर्वी और उत्तरी भाग में आग लगाने वाले बमों के कारण आग लग गई ब्रिटिश वायुयानों ने हालैंड, जर्मनी और फ्रान्स के सैनिक अड्डों पर बम्ब वर्षा किया। इटली में बोंलोगना के समीप बम्ब द्वारा भीषण धड़ाका हुआ जिससे १० आदमी मरे और १०० घायल हुये।

जर्मन वायुयानों ने लन्दन पर आक्रमण किया और बस्ती पर बम वर्षा किया। जर्मन वायुयानों ने ब्रिटिश रक्षक लाइन को तोड़ने का प्रयत्न किया परन्तु मार भगाये गये। जर्मन वायुयानों तथा ब्रिटिश वायुयानों के बीच युद्ध हुआ जिसमें ६ जर्मन वायुयान तथा ३ ब्रिटिश वायुयान गिराये गये। इङ्गलैंड के और दूसरे भागों पर भी आक्रमण हुआ।

३१ अगस्त—लण्डन पर सवेरे आठ बज कर २७ मिनट पर जर्मन वायुयानों ने आक्रमण किया। दिन भर में लण्डन पर छः बार आक्रमण हुए। तीसरा आक्रमण बड़ा भीषण हुआ। जर्मन वायुयान बहुत नीचे उड़े और उन्होंने बाज़ार के अन्दर दुकान करने वाली स्त्रियों पर मशीनगन से गोलाबारी किया। जर्मन तथा अँग्रेज़ वायुयानों में लण्डन के बाहर घोर संग्राम हुआ जिसके फल स्वरूप ६३ जर्मन वायुयान गिराये गये। तटीय नगरों पर भी जर्मन आक्रमण हुए और कई एक मकान गिर गये।

बर्लिन पर दो घंटे तक लगातार ब्रिटिश वायुयानों का आक्रमण हुआ जिससे शत्रु की बड़ी हानि हुई।

रात को बारह बजे के पश्चात् लण्डन पर फिर आक्रमण हुआ और चार घंटे तक लगातार जारी रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर-अंक

"भूगोल" के सत्रहवें वर्ष का विशेषांक

सन् १६४० के जुलाई मास में 'भूगोल' के सत्रहवें वर्ष के उपलक्ष में मई-जून-जुलाई मास का संयुक्त विशेषांक महासमर-अंक निकला है। इस वृहदाङ्क में तीन भाग हैं। प्रथम भाग में सन् १६१४ की बड़ी लड़ाई का वर्णन तथा दैनिक घटनाओं का विवरण है। दूसरे भाग में १६१६ से १६३६ तक का प्रमुख घटनाओं का परिचय है।

तीसरे भाग में वर्तमान युद्ध का जुलाई के अंत तक का संक्षिप्त इतिहास तथा दैनिक घटनायें हैं यह अंक लड़ाई के कई नक्शों और चित्रों से सुसज्जित है। तीनों भागों का एक साथ पेशगी मूल्य १।) सवा रुपया है। जो सज्जन "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) भेजकर एक साल के ग्राहक हो जायँगे उनको यह विशेषांक उनके वार्षिक चन्दे (३ रु०) में ही मिलेगा काग़ज़ महँगा होने के कारण यह उपयोगी अंक परिमित संख्या में ही छपाया गया है। अतः ग्राहकों को शीघ्र ही वार्षिक मूल्य ३) भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press; 243, Jamuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८.१०.४०

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र
सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

सितम्बर १९४०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy As. 5/-

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी.ए.

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

हर महीने किसी न किसी एक देश का आँखों देखा सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन पढ़िये। यात्रा के आधार पर लिखा हुआ विवरण होने से प्रत्येक पृष्ठ में सजीवता है। "देश-दर्शन" के प्रत्येक अङ्क आवश्यक चित्रों और नक़्शों से सुसज्जित रहते हैं।

अब तक निम्नलिखित अंक प्रकाशित हो चुके हैं :—

लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया और नार्वे। प्रत्येक अंक का मूल्य ।≈), एक वर्ष के १२ अंकों का मूल्य ४) रु०।

दूसरे वर्ष का प्रथम अंक 'प्राचीन-जीवन' है। इसमें आर्य, एसीरियन, बेबिलोनियन, मिस्री, चीनी, ईरानी, यूनानी आदि प्राचीन रहन-सहन पर पूरा प्रकाश डाला गया है। इस अंक का मूल्य ॥) है।

"देश-दर्शन" का वार्षिक मूल्य ४) रु० है। वार्षिक मूल्य ४) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—आइसलैण्ड और ग्रीनलैण्ड	१
२—कराकोरम पर्वत पर १६ मास	५
३—कँगारुओं के विरुद्ध आस्ट्रेलिया का युद्ध	७
४—सुदूर पूर्वी त्रिभुज	१०
५—एस्किमो तथा लैप बालकों के खेल	१६
६—फ्रांस और इसलाम	१७
७—हवाई युद्ध	२२
८—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] आश्विन, सं० १९९७, सितम्बर, १९४० [संख्या ५

आइसलैण्ड और ग्रीनलैण्ड

९ अप्रैल सन् १९४० ई० को जर्मनी ने डेनमार्क पर अधिकार किया। इस अधिकार से ग्रीनलैंड और आइसलैंड के भविष्य का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। इन देशों का भविष्य युद्ध के अंतिम निर्णय पर ही निर्भर है परन्तु इनकी वर्तमान परिस्थिति से कई सरकारों का नाता है जिसमें संयुक्तराष्ट्र अमरीका भी सम्मिलित है। इसी कारण अमरीकन राजदूत रेकजाविक और गोड थाब दोनों स्थानों पर भेज दिये गये हैं। मार्च सन् १९४० में आयात निर्यात बैंक ने १० लाख डालर आइसलैण्ड को ऋण देने के लिये कहा था उसे अमरीका की सरकार ने मान लिया है। अमरीका की रेडक्रास सोसायटी तथा एक व्यक्तिगत कमेटी संकट के समय आइसलैंड को सहायता देने के लिये तयारियां कर रही हैं। ९ मई को ग्रेट ब्रिटेन ने आइसलैंड को युद्ध काल तक के लिये अपनी संरक्षता में कर लिया है। इसलिये वहाँ पर जर्मन समुद्री अथवा हवाई सेना को उतरने से रोकने के लिये वहां पर ब्रिटिश सेना रख दी गई है।

ग्रीनलैण्ड डेनमार्क का उपनिवेश है। वहां पर डेनमार्क के कर्मचारीगण शासन चला रहे हैं। वे उज्वल सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी नीति का अनुसरण कर रहे हैं जिससे वहाँ की जनता को बड़ा लाभ है। केवल ग्रीनलैंड में एस्किमो लोगों की संख्या बढ़ गई है नहीं तो सब कहीं स्वेत शासन में उनकी संख्या घटी है। चूँकि ग्रीनलैण्ड डेनमार्क का उपनिवेश है इसलिये यदि वह चाहे तो ग्रीनलैण्ड को जर्मनी को दे सकता है या वहाँ की डैनिश सरकार की प्रजा चाहे तो अपना अधिकार वहाँ कर सकती है।

आइसलैण्ड की दशा ग्रीनलैंड से कहीं अलग है। ३० नवम्बर १९१८ ई० के यूनियन के कानून के अनुसार आइसलैंड और डेनमार्क की सरकार ने दोनों देशों के सम्बन्ध को अलग कर दिया था। यह नियम डेनमार्क की सरकार तथा आइसलैंड की वैधानिक सभा ने बनाया था। यह कानून सचमुच न तो कोई विधान है और न संधि है। इस नियम के अनुसार आइसलैंड एक राज्य बन गया और डेनमार्क तथा आइसलैंड में एक प्रकार की यूनियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित हो गई। आइसलैंड का विदेशी सम्बन्ध डेनमार्क के हाथ में उस समय तक के लिये रह गया था जब तक आइसलैंड स्वयम् अपने विदेशी सम्बन्धों को अपने हाथ में रखने के उपयुक्त न हो जाय। फिर यह बात तै थी कि डेनमार्क जो भी समझौता दूसरे राष्ट्रों से करता वह आइसलैंड पर लागू होने को था परन्तु उस समझौते में आइसलैंड के सरकार की सम्मति होनी आवश्यक थी। अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि में आइसलैंड और डेनमार्क पृथक पृथक थे। आइसलैंड और डेनमार्क के सम्बन्ध वैसे ही थे जैसे कि इंगलैंड और उसके उपनिवेशों के वेस्टमिनिस्टर के विधान के अनुसार हैं। नियम के अनुसार यदि दोनों देशों में कोई बात झगड़े की उत्पन्न हो और उसका निपटारा वे आपस में कर सकें तो उसके लिये स्वीडन और डेनमार्क की सरकारें मिल कर एक कमेटी बनावें जो उसका निर्णय कर दे।

यूनियन ने यह भी नियम बनाया है कि ३१ दिसम्बर १९४० के पश्चात् दोनों देश कानून के बदलने के लिये बातचीत करने को स्वतंत्र हो जावेंगे और यदि तीन साल के बीच में कोई समझौता न होगा तो पार्लियामेंट को अधिकार होगा कि वह यूनियन को दो तिहाई वोट से मिटा दे। १९१२ ई० के पश्चात् से ही यह बात सांची जा रही है कि क्या आइसलैण्ड १९४० के पश्चात् डेनमार्क से अलग हो जावेगा? आइसलैंड वाले इस मामले में दो मत रखते हैं। एक मत वालों का कहना है कि आइसलैंड का सम्बन्ध डेनमार्क से बिलकुल अलग कर लिया जाय क्योंकि डेनमार्क ने आइसलैण्ड पर बहुत सख्ती की है। दूसरे मत वालों का कहना है कि चूंकि यूनियन से कोई लाभ नहीं है इसलिये आइसलैंड को डेनमार्क से अवश्य अलग हो जाना चाहिये।

१९१८ ई० के अद्भुत नियम के अनुसार आइसलैण्ड के बिलग होने में डेनमार्क तथा आइसलैण्ड की सरकारों तथा वहाँ की प्रजा को भाग लेना चाहिये परन्तु आइसलैंड एक सावेरन स्टेट (स्वाधिकारी राज्य) होते हुये अपनी नियमानुसार बनाई हुई सरकार के कारण अलग हो सकता है। डेनमार्क और आइसलैण्ड के संयुक्त राजा को भी विवश होकर यह आज्ञा दे देनी होगी। सत्य बात तो यह है कि जब डेनमार्क पर जर्मनी ने अधिकार किया तभी आइसलैंड ने घोषणा कर दिया कि "चूंकि उनका राजा अपने कार्यों को करने में असमर्थ है इसलिये उसकी शक्ति आइसलैण्ड के मन्त्री मण्डल को प्रदान की जाती है।" उसने संयुक्त राष्ट्र अमरीका और इंगलैंड में अपने राजदूत भी भेज दिये हैं। आइसलैंड ने १९१८ ई० के कानून के १९ वीं धारा के अनुसार अपने को तटस्थ होने की भी घोषणा कर दिया है।

डेनमार्क से ग्रीनलैण्ड का आर्थिक सम्बन्ध लगभग ५० वर्षों से रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहाँ के एस्किमो जाति की सभ्यता तथा रोजगार को बचाने के लिये उनकी सरकार ने प्रयत्न किया था। एस्किमो लोगों के व्यापार तथा रोजगार से बहुत कम आय है। इसी कारण ग्रीनलैण्ड की सरकार सदैव घाटे में रही है। इस घाटे को पूर्ति डेनमार्क की सरकार करती चली आई है। परन्तु डेनमार्क की सरकार जो वहां के व्यापार में एकाधिकारी रखे हुये थी उसमें उसे लाभ होता रहा है। आइसलैण्ड का व्यापार अच्छा है। वह अपनी उच्च सभ्यता के कारण संसार के साथ व्यापार करता रहा है। सन् १९३० ई० के व्यापारिक संकट के समय ग्रीनलैंड का व्यापार घट गया था। १९३० ई० में आइसलैण्ड ने अपनी निर्यात का ५०·६ प्रतिशत पुर्तगाल, स्पेन और इटली के हाथों बेचा और अपनी आयात का ८१·७ प्रतिशत डेनमार्क ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी और नार्वे से मोल लिया था। १९२७ ई० में जर्मनी, इँगलैंड, नार्वे, पुर्तगाल उसके प्रधान ग्राहक थे। और उसके हाथ बेचने वाले प्रधान विक्रेता ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, डेनमार्क और स्वीडन थे। आइसलैण्ड आर्थिक मामलों में लन्दन पर निर्भर करता है। उसने अपने सारे ऋण का ७० प्रतिशत इंगलैंड से ले रखा है। वह अपने व्यापार तथा रहन सहन को उच्च बनाने के लिये विदेशी धन पर ही निर्भर करता है।

संयुक्तराष्ट्र को ग्रीनलैंड से बहुत कम व्यापारिक लाभ है। आइविगटट की खान की खुदाई एक अमरीकन कम्पनी बहुत वर्षों से कर रही है परन्तु उसमें अधिक लाभ नहीं हुआ है इसी कारण ग्रीन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैंड की और दूसरी धातों की खानों की खुदाई नहीं की जा रही है। १९१६ ई० में ग्रीनलैंड के मन्त्री लैन्सिंग ने डेनमार्क की आधीनता में रहने की इच्छा प्रकट की थी परन्तु उसने यह शर्त लगाई थी कि डेनमार्क संसार के सभी राष्ट्रों को वहां के व्यापार में सम भाव से देखे। डेनमार्क की सरकार ने कहा था कि सारे ग्रीनलैण्ड पर डैनिश अधिकार होने में संयुक्तराष्ट्र सहमत है परन्तु जब यह घोषणा होने के समीप थी तो संयुक्त राष्ट्र समझौते से अलग होगया और उसने ग्रीन लैण्ड के व्यापार की रक्षा करने से इंकार कर दिया।

अमरीका का आइसलैण्ड से भी व्यापारिक सम्बन्ध कम रहा है। साधारणतः दोनों राज्यों के बीच व्यापारिक जहाज नहीं आते जाते। १९१७-१८ ई० के संकट काल में और दिसम्बर सन् १९३९ ई० से दोनों राष्ट्रों के बीच बराबर जहाज आते जाते रहते हैं जिससे अमरीका आइसलैण्ड को विश्वास दिलाना चाहता है कि वह उसे खाद्य पदार्थ और जानवरों के चारे की कमी न होने देगा। संयुक्तराष्ट्र और आइसलैण्ड के बीच सब से बड़ा बन्धन आइसलैण्ड के उपनिवेशों का है जिनमें उत्तरी डकोटा और मनोटोबा प्रधान हैं। यह उपनिवेश आइसलैंड से वहाँ की संस्कृति द्वारा बँधे हैं और इन्होंने उसके व्यापार को उन्नति देने में अच्छा हाथ बटाया है। आइसलैंड और अमरीका के व्यापार की वृद्धि में एक रुकावट होने का प्रधान कारण यह है कि आइसलैंड वहीं सौदा खरीदता है जहां वह बेच सके। आइसलैंड का प्रधान व्यापार मछली का है और अमरीका उसका केवल एक बहुत छोटा भाग मोल लेता है।

पिछले कई सालों में अमरीका का सम्बन्ध आइसलैण्ड तथा ग्रीनलैंड के साथ इस लिये बढ़ गया था कि अमरीका उत्तर की ओर से अटलांटिक सागर को पार करने के लिये हवाई मार्ग बनाना चाहता था उस हवाई मार्ग में यह देश वायुयानों के उतरने का काम देते थे। १९२८ ई० में पैन अमरीकन एअरवेज ने योरुप जाने के लिये उत्तरी मार्ग ढूँढ़ने का कार्य आरम्भ किया। १९३२ ई० में डाक्टर विल्हजलमूर-स्टेफैन्सन को उत्तरी मार्ग के पता लगाने का काम सौंपा गया। पैन अमरीकन कम्पनी ने लिण्डनवर्ग की खोज के लिये १९२३ ई० में धन दिया था। ग्रीनलैंड के हवाई मार्ग के पता लगाने का समय १९३९ ई० में समाप्त हो चुका है। १९३२ ई० में पैन अमरीकन कम्पनी को ट्रान्स अमरीकन एअर लाइन्स कारपोरेशन की ओर से आइसलैंड के हवाई मार्ग पर मताधिकार देने का हक़ प्राप्त हुआ था। इसका समय ३१ दिसम्बर सन् १९३६ ई० को समाप्त हो गया परन्तु कोई भी निश्चित हवाई सर्विस अभी जारी नहीं हुई। उसके पश्चात् फिर से स्वीकृति लेने का प्रयत्न किया गया परन्तु इसी बीच वर्तमान महासमर का आरम्भ हो गया और एक नई जटिल समस्या उत्पन्न हो गई।

सन १९२८ ई० से १९३१ ई० तक जर्मन लुफ्थान्सा ने आइसलैंड के हवाई कम्पनी के साथ मिलकर आइसलैंड में एक स्थानीय हवाई सर्विस चलाया था। जब इस जर्मन आइसलैंडिक कम्पनी का अंत हो गया तो लुफ्थान्सा ने आइसलैंड के प्रधान मंत्री से एक पत्र लिखा लिया था जिससे जर्मन लोग दावा करते थे कि अप्रैल सन् १९४० ई० तक लुफ्थान्सा को वही हवाई अधिकार आइसलैंड में होंगे जो अधिकार वहां की सरकार किसी दूसरे को देगी। १९३९ ई० में इस झगड़े के उत्पन्न होने के कारण आइसलैंड की सरकार ने विदेशी कम्पनियों से समझौते की सारी बातें एक साल के लिये स्थगित कर दिया है।

फरवरी सन् १९४० ई० में स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे और फिनलैंड के हवाई मिशन संयुक्त राष्ट्र गये और उन्होंने वहां पर सरकारी अफसरों तथा हवाई कम्पनियों से बात चीत किया कि आइसलैंड होकर अमरीका तथा उत्तरी योरुप के बीच हवाई मार्ग बनाया जाय परन्तु इसी बीच जर्मनी ने डेनमार्क और नार्वे पर आक्रमण कर दिया जिससे सभों की आशाओं पर पानी फिर गया।

वैज्ञानिक उन्नति होने के कारण न्यूफाउन्डलैंड से आएरलैंड और वरमूदा से अजोरेस व्यापारिक वायुयानों का जाना सम्भव हो गया है।

सावधानी के साथ अध्ययन करने के पश्चात् पता चलता है कि ग्रीनलैंड व्यापारिक हवाई मार्ग के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक नहीं है। ग्रोनलैण्ड का दक्षिणी भाग गरमी में कुहरे के कारण और जाड़े में बरफ के कारण खतरनाक (कण्टकमय) रहता है। पश्चिम की ओर के बन्दरगाह होल्स्टेन्स वर्ग आदि हाइड्रो-वायुयान के उड़ने योग्य गरमी में रहते हैं। ग्रोनलैण्ड की बर्फीली चट्टानों पर वायुयान उतर सकते हैं परन्तु वर्तमान समय में इससे व्यापारिक दृष्टि से लाभ नहीं है। भविष्य में चलकर ग्रोनलैण्ड के बन्दरगाह शायद स्कैन्डीनेविया, रूस और ध्रुव प्रदेश को पार करके जाने वाली हवाई लाइनों के अड्डे हो सकें परन्तु अभी यह सम्भव नहीं है।

आइसलैण्ड के हवाई अड्डे कुहरे के होते हुये भी साल भर बराबर हाइड्रो-वायुयानों द्वारा प्रयोग किये जा सकते हैं। लैंड (भूमि) वायुयानों के लिये भी सुविधाएं दी जा सकती हैं। सैनिक ध्यान से आइसलैंड और ग्रोनलैंड के हवाई मार्ग अधिक आवश्यक हैं। यदि आइसलैंड में कोइ मजबूत हवाई शक्ति हो जावे तो वह अमरीका और योरुप के बीच बड़े वृत्त में हवाई तथा समुद्री दोनों मार्गों के जहाजों का सत्यानाश कर सकती है। इसके सिवा यदि आइसलैंड में हवाई अड्डा हो तो ग्रीनलैंड की रक्षा नहीं की जा सकती। आइसलैंड और ग्रीनलैंड से संयुक्त राष्ट्र और कनैडा दोनों पर हवाई वायुयान बम्ब बर्षा सकते हैं। इसी कारण प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट ने अपने २६ मई सन् १९४० ई० के कांग्रेस के भाषण में कहा है कि ग्रीनलैंड और आइसलैंड की घटनाओं का प्रभाव संयुक्त राष्ट्र और कनैडा दोनों ही पर पड़ता है।

ग्रीनलैंड पश्चिमी गोलार्द्ध में स्थित है। परन्तु आइसलैंड की स्थिति की परिभाषा भली भांति करना कठिन है। नक़शे पर देखने से पता चलता है कि १२ पश्चिमी देशान्तर जो पूर्वी ग्रीनलैंड होकर जाता है वह आइसलैंड के भी पूर्व होकर जाता है। आइसलैण्ड हवाई मार्ग से उत्तरी अमरीका की अपेक्षा ग्रेट ब्रिटेन और स्कैन्डीनैविया से अधिक समीप पड़ता है। वह अपने राजनैतिक सम्बन्धों द्वारा योरुप से मिला है। ग्रीनलैण्ड में संयुक्त राष्ट्र, डेनमार्क के सिवा और किसी दूसरे योरुपीय राज्य का अधिकार नहीं होने देगा। साथ ही साथ यह भी सोचने की बात है कि आइसलैंड में यदि कोई शक्तिशाली राज्य होगा तो आइसलैंड की रक्षा होनी कठिन है।

इस लिये यदि ग्रेट ब्रिटेन युद्ध में विजयी हो तो ग्रीनलैंड डेनमार्क के स्वतंत्र राज्य को दे दिया जाय और आइसलैंड को स्वतंत्रता दे दी। जाय चाहे वह डेनमार्क के साथ रहे अथवा स्वतंत्र होकर रहे या इँगलैंड की संरक्षता में स्वतंत्र रहे या कनैडा से मिल कर रहे। अगर वर्तमान युद्ध में जर्मनी की विजय होती है तो दो प्रश्न उठ खड़े होते हैं (१) क्या अमरीकन सरकार आइसलैंड और ग्रीनलैंड को जर्मनी के अधिकार में जाने देगी। कनैडा की रक्षा का भार लिया है और जर्मनी से कनैडा युद्ध कर रहा है वह कनैडा के विरुद्ध अवश्य होगा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के विरुद्ध भी हो जावेगा (२) क्या संयुक्त राष्ट्र अमरीका जर्मनी जैसे शक्तिशाली राजा के विरुद्ध आइसलैंड की रक्षा कर सकेगा?

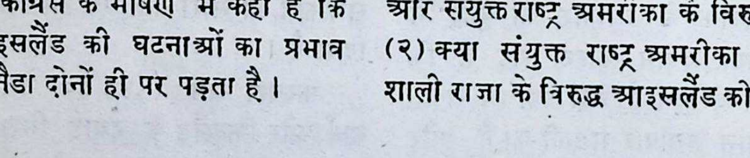

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराकोरम--पर्वत पर १६ मास

कराकोरम की श्रेणी संसार में कदाचित सब से बड़ी है। यह काश्मीर और चीनी तुर्किस्तान के मध्य में स्थित है। साधारणतः इसके पश्चिम की ग्लेशियर और घाटियों का पता लगाया जा चुका है और उनके मानचित्र भी खींचे जा चुके हैं। कराकोरम के इन भागों का पता गाडविन आस्टिन, मार्टिन कानवे, वर्क्स मैन्स एच० आर० एच० श्रब जी के ड्यूक और विसर्स आदि महानुभावों ने लगाया था। उत्तरी भाग में जाना कठिन है और इसलिये उस ओर के अधिकांश भाग की खोज नहीं लगा पाई है। ५० साल पहले यंगहसबेंड ने उत्तरी भाग के बीच होकर पार किया था, वह मुस्ताग़ दर्रे से होकर गया था और उसी ने शाक्सगाम नदी का पता लगाया था। उसके बाद और भी कई आदमी खोज के लिये गये जिनमें मैसन और विसर प्रधान थे परन्तु फिर भी अधिकांश भाग बिना खोज के ही पड़ा रहा।

सन् १९३७ ई० में रायल ज्याग्राफिकल सोसायटी ने जो यात्रा की उसके फल स्वरूप उन्होंने अगिल घाट के चारों ओर के प्रदेश तथा कराकोरम के उत्तर के ग्लेशियर (जो केठ और शिमशाल घाट के बीच में हैं) के नक़शे साफ साफ खींच लिये हैं। कराकोरम के प्रधान भाग का नकशा पूरा करने के लिये अभी अगिल श्रेणी और शिमशाल घाटी के आस पास की खोज शेष रह गई है।

१९३७ ई० के अनुभव से यह भली भांति प्रकट हो चुका था कि जाड़े के दिनों में खोज करनी आसान होगी क्योंकि उस समय नदी तथा कन्दराएँ सभी बरफ से ढकी हुई होंगी। इसलिये १९१८ ई० में ई० ई० शिपटन ने एक पार्टी तयार की जो १६ महीने (एक शीत काल तथा दो ग्रीष्म काल) कराकोरम पर बिताने को थी।

१९३८ ई० की खोज

शीतकाल की खोज में लोगों को वहां के निवासियों, पशुओं और वृक्षों के बारे में बहुत कम बातें ज्ञात हुई। इस बार खोज करने वालों में चार अँग्रेज दो हिंदुस्तानी और ९ शेर्पास थे जो एवरेस्ट की चोटी की खोज कर चुके थे। यह लोग पर्वतीय कठिनाइयों से भली भांति परिचित थे। पिटरमोट नापने वाला था। ई० सी० फाउन्टेन डाक्टरी करने, जानवरों तथा मनुष्य जाति की जांच करने के लिये और स्काट पौदों की पहचान करने के लिये था। फजूल इलाही और इनायत खाँ भारतीय सरकार की ओर से नापने वाले थे। अंटार्के शेरपास पार्टी का अगुवा बना। अंटार्के ई० ई० शिपटन के साथ हिमालय पर्वत की अष्टम खोज में गया था। ए० एफ० बेटर्टन और काम्पबेल खोज के प्रथम कुछ सप्ताहों तक साथ रहे।

खोज करने वालों ने अपने लिये शीत से बचने के लिये रेन्डियर की खाल, सोने के बैग और स्की लिये हुये थे। उनकी योजना थी कि वे १९३९ ई० का ग्रीष्म काल हिस्पार और वियाफरो ग्लेशियरों में बितावेंगे और अक्तूबर के अंतिम काल तक में श्रेणी के उत्तर की ओर चले जावेंगे। गृह सम्बन्धी कामों के लिये, समय का पता लगाने के लिये वे लोग अपने पास एक वाएरलेस रिसीविंग सेट (बे तार के तार द्वारा समाचार पाने वाला यंत्र) भी रखे थे।

बरफ की झील

हिस्पार-वियाफरो ग्लेशियर प्रणाली कराकोरम पर्वतीय श्रेणी के और भागों की अपेक्षा अधिक सुगम थी। परन्तु फिर भी ठीक ठीक ज्ञान उस भाग का नहीं हुआ और जो कुछ मालूम भी हुआ उसके सत्य असत्य का निर्णय करना कठिन है क्योंकि जब सन् १८९२ ई० में सर मार्टिन कान्टवे ने हिसपार घाट को पार किया था तो उसने वियाफरो ग्लेशियर के ऊपर बरफ का एक बड़ा मैदान देखा था जिसका क्षेत्रफल उसने लगभग ३०० वर्गमील के अन्दाज लगाया था। उसने इसका नाम स्नो लेक (बरफ की झील) रखा था। इस के बारे में भांति भांति की कल्पनाएँ की जाती थीं और ख्याल किया जाता था कि ऐसी अद्भुत वस्तु ध्रुव प्रदेश के बाहर होना एक अद्भुत बात थी! अब यह बात मान ली गई है कि शायद उस समय कोई बड़ी बरफ की टोपी रही होगी जिससे सारे कराकोरम के ग्लेशियरों की उत्पत्ति हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब खोज करने वाली पार्टी १९३७ ई० में "स्नो-लेक" के समीप पहुँची तो उसने आइस कैप (बरफ़ की टोपी) के सिद्धान्त को भंग कर दिया परन्तु पार्टी को इतना समय अथवा अवकाश न था कि वह उसका ठीक तौर पर पता लगावे क्योंकि उसे सारे कराकोरम का पता लगाना था।

सर्वे पार्टी ने १६ जून को श्रीनगर छोड़ा और कामरी तथा गिलगिट दर्रों से होती हुई नाजीर पहुँची नाजोर में पार्टी का स्वागत वहां के मीर साहब ने किया और सहायता प्रदान किया।

प्राचीन समय में लद्दाख, बल्तिस्तान, हुञ्ज़ और शिक्यांग के बीच बहुत से ग्लेशियर वाले घाट थे जिन को यात्री लोग प्रयोग करते थे। इन घाटों का प्रयोग व्यापारी लोग भी करते थे। हुँजा और नाजीर के रहने वालों को जिस व्यक्ति ने मुसलमान बनाया वह बल्तिस्तान का रहने वाला था और हिस्पार घाट हो कर आया था। उस समय ऐसे मार्गों में आना एक अद्भुत बात थी क्योंकि इस मार्ग में ८० मील ग्लेशियर पर चलना पड़ता है।

अब इन प्राचीन घाटों का प्रयोग बन्द कर दिया गया है और इनमें से कितनों का पता भी नहीं रह गया है। पार्टी का काम इन घाटों के पता लगाने का भी था और यह भी मालूम करना था कि इन घाटों का प्रयोग क्यों बन्द कर दिया गया है। पार्टी को इन के सम्बन्ध में बहुत सी बातें मीर साहब से मालूम हुईं। मीर साहब ने ग्लेशियरों के परिवर्तन के बारे में भी बहुत सी बातें बतलाईं। नाजीर के समीप पार्टी ने लगभग १५ दिन व्यतीत किये। उन्होंने उस भाग की नाप की और बहुत सी बातों का संग्रह किया। उसके पश्चात् ई० ई० शिपटन और ऐंटार्के एकत्रित किये हुये सामान को हिस्पार ग्लेशियर के ऊपर पहुँचाने में लग गये और रसल, बेटर्टन, फाउन्टेन और सैकार्ड नाशिक ला को पार करके अरन्दू (बल्तिस्तान) पहुँचे। इस घाट को सन् १८९२ ई० में कानवे पार्टी के सदस्यों (ब्रूस और एक्सेन्स्टीन) ने पार किया था। १४९२ ई० के पहले और बाद को भी इस घाट को पार करने का प्रयत्न किया गया था। यह घाट प्राचीन काल में प्रयोग किया जाता था परन्तु स्थानीय रहने वाले पार्टी के प्रार्थना करने पर भी घाट के समीप जाने पर तयार नहीं हुये।

इसी बीच मोट मध्य के बड़े बर्फीले त्रिभुज में काम कर रहा था। उसके साथ में एक वाइल्ड थीओडोलाइट (ऊँचाई और अन्तर नापने का यन्त्र) था। वे दोनों एक दिन एक छोटी पहाड़ी की चोटी से गिर पड़े। थीओडोलाइट तो चकना चूर हो गया परन्तु मोट भाग्यवश बच गया।

हिस्पार घाट को अगस्त के महीने में पार्टी ने पार किया और बरफ की झील में पहुँचे। ई० ई० शिपटन को आशा थी कि नाजीरी के कुली उनके साथ हिस्पार घाट के ऊपर सामान लेकर जावेंगे और वे लोग कुछ कुली अपने साथ रखेंगे परन्तु एक को छोड़ कर सभी कुलियों ने हिस्पार ग्लैशियर के ऊपर जाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने ऊपर न जाने के कई कारण बतलाये परन्तु उन कारणों में मुख्य कारण यह था कि वे लोग उस ऋतु में हिमालय के ऊपरी भाग में जाने से भय रखते थे। इसलिये सारा सामान पार्टी वालों को ऊपर ले जाना पड़ा केवल एक कुली उनके साथ रहा जिसने सारे ग्रीष्म काल तक पार्टी का साथ नहीं छोड़ा।

पार्टी ने पहले से यह संकल्प कर रखा था कि वह बरफ की झील पर दो महीने तक अड्डा जमावेंगे परन्तु नाजीरी कुलियों के न होने के कारण वह अधिक भोजन सामग्री साथ न ले जा सकी जिससे उसे भोजन सामग्री की कमी हो गई। इसलिये पार्टी के तीन भाग हो गये। फजूल इलाही को बरफ की झील में काम करने के लिये छोड़ दिया गया और विमाफो को हिमानी पर काम करने के लिये सौंपा गया। मोट और रसल दक्षिण-पूर्व को ओर भेजे गये। यह भाग बड़ा दुर्गम था परन्तु वे लोग वहां पर भोजन सामग्री पा सकते थे। फाउन्टेन और ई० ई० शिपटन असकोले (बल्तिस्तान) से भोजन सामग्री पाते रहे। यह लोग पनमाह ग्लेशियर (हिमानी) पर गये। जब कि ई० ई० शिपटन नाप रहा था। फाउन्टेन एक घोड़े की काठी जैसे स्थान पर पहुँचा जो नये मुस्ताग दर्रे के नाम से प्रसिद्ध है। इसी घाटी होकर बल्तिस लोग तुर्किस्तान को जाया करते थे।

पनमाह हिमानी प्रणाली के ऊपरी भाग से वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग एक घाट होकर बरफ की झील में पहुँचे। पनमाह हिमाली के ऊपर उन्हें एक ऐसी परम सुन्दर पर्वतीय चोटी मिली जैसी उन्होंने कदाचित कभी न देखा था। उसके बाद फाउन्टेन चोगो लुंगमा हिमानी पर गया। उसके ऊपर उसे एक घाट मिला जिसके द्वारा वह फिर गिलिगट अक्तूबर के महीने में पहुँच गया। ई० ई० शिपटन रसल के साथ हो गया था और इन दोनों ने उत्तरी वाटरशेड की नाप किया और खोज करने पर उन्हें एक घाट मिला जिसके द्वारा वे शिमशाल अपने जाड़े के अड्डे पर पहुँच सकते थे।

सितम्बर के अन्त में उन्हें योरुपीय युद्ध का समाचार वायरलेस (बेतार के तार) से मिला। वे लोग बरफ की झील में कैम्प डाले हुये थे और दुनिया के झगड़ों से बिलकुल अलग थे। वहाँ शान्ति का वास था, चारों ओर सन्नाटा था। इस कारण उन्हें पहले तो युद्ध समाचार झूठा प्रतीत हुआ परन्तु आपस में बातचीत करने के पश्चात् उन्होंने उसे सत्य माना। वे लोग घर लौटने की बात सोचने लगे। यह बात तय करनी बड़ी कठिन थी क्योंकि वे लोग वहां पर एक साल और बिताने वाले थे जो उनके लिये बड़ा ही अलौकिक साल होने वाला था। आखिर कार सबों ने घर लौटने की बात तय किया और वापस चले आये। उन्होंने कुल १६०० वर्गमील की खोज तथा जांच पड़ताल की थी।

कंगारुओं के विरुद्ध आस्ट्रेलिया का युद्ध

कंगारू आस्ट्रेलिया के पशुओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह अजायब घरों में रक्खा जाता है। संसार के जिन लोगों ने कभी भी आस्ट्रेलिया का भ्रमण नहीं किया वे भी करोड़ों की संख्या में हैं जो कंगारू को भली भांति जानते हैं। लगभग दो सौ सालों से आस्ट्रेलिया में इनके विरुद्ध युद्ध छिड़ा है और वहां के निवासी उनका शिकार कर रहे हैं।

जून सन् १७७० ई० में कैप्टन कुक ने कंगारू का पता लगाया था। आस्ट्रेलिया निवासी उन्हें कांगरू कहते हैं। इसका रंग चूहे का सा होता है। यह शिकारी कुत्ते के बराबर होता है और गावदुम होता है। यह बड़ा फुर्तीला जानवर है। इसका शिकार लोग इसके चमड़े के लिये और उनके उपद्रव के कारण करते हैं। केवल क्वीन्स लैण्ड के राज्य में पिछले २० सालों में लगभग एक करोड़ कंगारू मारे गये हैं।

कंगारू घास खाने वाला पशु है। आस्ट्रेलिया के जिन प्रान्तों अथवा ज़िलों में घास की आवश्यकता अधिक है और भेड़ें पाली जाती हैं वहां पर यह जानवर बिलकुल बेकार माना जाता है। कंगारुओं का झुण्ड जब किसी खेत में घुसता है तो उसके सारे पौदे रौंद कर खराब कर देता है।

यद्यपि लगभग सौ सालों से लोग इसका शिकार बराबर कर रहे हैं और लाखों की संख्या में मारे जाने के पश्चात् फिर भी अभी उनकी संख्या घटती हुई दिखाई नहीं पड़ती है। आस्ट्रेलिया के घने बसे हुये प्रदेशों अथवा नगरों के समीप अब यह दिखाई नहीं देते। यह आस्ट्रेलिया के उत्तरी प्रदेशों और भीतरी प्रदेशों में बहुत पाया जाता है और मालूम होता है कि वहां इसकी संख्या बढ़ने के सिवा कभी न घटेगी।

आस्ट्रेलिया के जिन भागों में कंगारू पाये जाते हैं वहाँ ये समूहों में चला करते हैं। यह झाड़ियों के बीच अथवा मैदानों में इधर से उधर घूमते रहते हैं। यह ३० मील प्रति घन्टे की चाल से दौड़ सकता है। जब यह अपनी पूरी चाल से दौड़ता है तो १६ से २० फुट तक की छलाँगें मारता है। यह दौड़ते समय १० फुट ऊँचा बड़ी सरलता पूर्वक उछल जाता है।

आस्ट्रेलिया के कुछ लोग कंगारुओं के शिकार पर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यह लोग कंगारू का चमड़ा दूसरे देशों को भेजते हैं जिससे कम्बल, ओवर कोट और फर तयार किया जाता है।

क्वीन्सलैण्ड के एक भेड़ों के स्टेशन पर एक कंगारू के शिकारों की पार्टी गई थी उसने ६ महीने के भीतर ६० हज़ार कंगारुओं का शिकार किया था।

कंगारू का शिकार कई प्रकार से किया जाता है। कुछ लोग घोड़े और मोटरकार के ऊपर से शिकार करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और कुछ रात के समय उन पर आक्रमण करते हैं जब वे समूह के समूह किसी सरोवर, नदी अथवा झरने पर पानी पीने के लिये आते हैं। अधिकांश शिकारी बन्दूक आदि का प्रयोग नहीं करते और शिकारी कुत्तों की सहायता से कंगारू के सिर पर लोहे के छड़ों से घाव करके उसे मारते हैं। कंगारू का शिकार करने के लिये कुत्तों को खास तौर पर सिखाया जाता है। हालही में क्वीन्सलैण्ड के दो शिकारियों ने ३० शिकारी कुत्तों की सहायता से ८ हज़ार कंगारुओं का शिकार दो महीने में किया है।

परन्तु इस प्रकार शिकार करने में बहुधा धोखा हो जाता है और शिकारी को हानि उठानी पड़ती है। कंगारू जब जलाशय के तट पर होता है तो बड़ा भयानक होता है। यदि शिकारी उसकी पहुँच के भीतर होता है तो वह उस पर अपनी पिछली टांगों से हमला करता है। इसके पंजे बड़े तेज़ और खूंख्वार होते हैं। बहुत से शिकारी इसी प्रकार शिकार करने पर बुरी तरह से घायल हो गये हैं। शिकारी कुत्ते मार डाले गये हैं।

जब कंगारू शिकारी कुत्तों से दूर भागते भागते थक जाता है तो वह किसी जलाशय के पास किसी वृक्ष अथवा चट्टान की आड़ में अपना पिछला भाग करके खड़ा हो जाता है और फिर दर्जनों शिकारी कुत्तों का सामना करता है। कभी कभी कंगारू पानी में चला जाता है और ऐसे स्थान पर खड़ा होता है जहां उसका पीछा करने वाले शिकारी कुत्ते तैर कर उस तक पहुँच सकें। जब कुत्ते उस तक पहुँच कर आक्रमण करने का प्रयत्न करते हैं तो वह उन पर टूट पड़ता है और उन्हें यमलोक को पहुँचा देता है या बुरी तरह घायल कर देता है।

कंगारू दस, बीस, तीस या और अधिक के समूहों में चला करते हैं। प्रत्येक समूह का एक वृद्ध सरदार अथवा राजा होता है। वह आगे आगे मार्ग का निरीक्षण करता चलता है। जब किसी प्रकार का ख़तरा होता है तो वह अपने को ख़तरे में डाल देता है और अपने समूह को भागने का मौक़ा देता है। जब समूह भाग जाता है तो फिर वह अपने बचाव का प्रयत्न करता है।

यह वृद्ध कंगारू बड़े चतुर भयानक और खूंख्वार होते हैं। एक वृद्ध कंगारू आस्ट्रेलिया में रेड टेरर (लाल भय अथवा हव्वा) के नाम से प्रसिद्ध था। वह एक विशाल शरीर वाला लाल रंग का था। वह ६ फुट ऊँचा था और उसके समूह में २० या ३० से अधिक कंगारू थे। वह क्वीन्सलैंड के भेड़ों के स्टेशनों पर हफ़्तों रात को आक्रमण किया करता था।

वह रेड टेरर बड़ा प्रसिद्ध था और उसका भय चारों ओर छाया था। उसके कारण लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ती थी। उसके शिकार के लिये एक प्रसिद्ध शिकारी को अच्छी रक़म इनाम में देने के लिये कहा गया कि वह 'रेड टेरर' का चमड़ा लाकर दे। शिकारी के पास चार बड़े मज़बूत सिखाये हुये शिकारी कुत्ते थे। ये कुत्ते बड़े मूल्यवान थे।

एक दिन शिकारी ने एक वन में खुले हुये मैदान के अन्दर 'रेड टेरर' के समूह को देखा। उस समय समूह के कुछ कंगारू चर रहे थे। कुछ बैठे पागुर कर रहे थे। कुछ लेटे थे और कुछ इधर उधर ताक रहे थे। सवेरे का समय था। सूर्यदेव अपनी छवि की छटा फैला रहे थे। कंगारुओं का समूह मस्ती में था। उसी समय शिकारी ने कुत्तों को ललकारा। कुत्ते ललकार पाते ही लपक कर आगे बढ़े और शिकारी ने उनके पीछे अपना घोड़ा डाल दिया।

देखते देखते सारे कांगरू भाग खड़े हुये। सभी एक कतार में भाग रहे थे और रेड टेरर सब से पीछे था। वह भारी, मोटा और लंगड़ा था। कुत्ते पीछे लगे थे और रेड टेरर ही सब से अधिक ख़तरे में था। यदि वह चाहता तो अपने साथियों से आगे भाग सकता था परन्तु उसने भागने का इरादा नहीं किया और धीरे धीरे अपने साथियों के पीछे कूदता फांदता चला जाता था।

वह दस-दस फुट की छलाँग भरता चला जाता था। जब उसके साथी जंगल में आंख़ल हो गये तो उसने कुत्तों की ओर ध्यान दिया। कुत्ते समीप पहुंच रहे थे। उसने अपने बचाने के लिये विचार किया। वह ख़तरे में था।

भागते भागते वह एक ओर मुड़ कर बेतहाशा ३० फुट की छलाँगें भरता हुआ भागा और कुत्ते भी उसके पीछे लगे रहे।

लगभग आध मील तक वह तेजी से भागा और कुत्ते काफी पीछे छूट गये। इसके बाद वह थक गया और उसकी चाल धीमी हो गई। उसके मुँह से राल (थूक) टपक रही थी। वह फिर एक ओर को मुड़ा और एक झरने की ओर गया। वह कई महीनों से उस जलाशय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने समूह के साथ पानी पीता रहा था। लगभग आध मील की दौड़ के पश्चात् वह जलाशय के समीप पहुँचा और तट पर अपने बैरियों का सामना करने के लिये खड़ा हो गया।

रेड टेरर अपने दुम पर खड़ा था। उसकी दुम मज़बूत मोटी और बालदार थी। वह आगे वाले दो कुत्तों का सामना करने के लिये तयार था।

जब आगे वाले एक कुत्ते ने कांगरू के जबड़े पर आक्रमण किया तो उसने अपने अगले दोनों पैरों में पकड़ कर उसे मसोल कर मार डाला उसी समय दूसरे कुत्ते ने पिछले भाग पर आक्रमण किया तो उसने अपनी पिछली टाँगों से उसे भी दबा कर मार डाला।

जब बाक़ी दो कुत्ते आगे बढ़े तो कांगरू पानी के अन्दर चला गया। वह पानी में खड़ा था। वहां वह खड़ा कुत्तों की बाट जोह रहा था। कुत्ते तैरते हुये उसके समीप जा रहे थे।

जब कुत्ते समीप पहुँचे तो पानी में कुछ खलबलाहट हुई और कांगरू ने अपनी पिछली टांगों में दबा कर उसका काम समाप्त कर दिया। चौथे कुत्ते को उसने अपने आगे के पैरों से पकड़ कर पानी में डुबो कर मारना चाहा।

कुत्ते के पानी में डुबाने से कुछ खलबली पैदा हुई। बुलबुलाहट हुई और ठीक उसी समय शिकारी भी आ पहुँचा। शिकारी ने एक नज़र से सारे मामले पर दृष्टि डाली और अपने अमूल्य कुत्तों की मृत्यु देख घोड़े की पीठ पर से कूद पड़ा और लोहे के छड़ को लेकर रेड टेरर पर आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ा।

परन्तु जैसे ही शिकारी समीप पहुँचा कांगरू ने अधमरे कुत्ते को छोड़ दिया और अपनी पूंछ पर खड़ा हो गया। रेड टेरर ने अपने दोनों पिछली टांगों से शिकारी पर ज़ोरों के साथ हमला किया। शिकारी पीछे हटा और मौत के घाटों लगने से बच तो गया परन्तु उसके सीने से गर्दन तक चोट आई और उसकी दो हड्डियां टूट गईं। शिकारी गिरता पड़ता दर्द से कराहता किसी तरह अपने घोड़े के समीप पहुँचा। वह अपने साथ अपनी बन्दूक न लाने पर पछतावा कर रहा था। इसी बीच रेड टेरर सरोवर के दूसरे तट को बढ़ा और जलाशय से निकलने के बाद धीरे धीरे कूदता फांदता अपने समूह में जा मिला।

उसके बाद फिर कई बार उसके पकड़ने तथा मारने का यत्न किया गया। उसके मारने का प्रबन्ध बंदूक से भी किया गया। परन्तु वह किसी न किसी प्रकार बचता ही चला गया। उसने १४ और दूसरे शिकारी कुत्तों को अपनी मृत्यु के पहले मार डाला।

रेड टेरर को किसी शिकारी ने नहीं मारा बल्कि वह अचानक स्वयम् गिर कर मरा।

एक दिन ८ शिकारी कुत्तों का समूह उसके पीछे पड़ा कुत्ते लगभग तीन मील तक खदेड़ते रहे। रेड टेरर थक गया था। उसने एक बाड़े के तार को डाँकने का प्रयत्न किया। तार का बाड़ा केवल ४ फुट ऊँचा था। बड़ा काँगरू दस बारह फुट ऊँचा बड़ी सरलता पूर्वक डाँक सकता था। परन्तु तीन चार मील के भगदड़ के बाद उसका दम उखड़ गया था और उसमें इतनी शक्ति न रह गई थी कि वह अपने शरीर को संभाल सके इसलिये जैसी ही उसने छलाँग भरी उसका एक पैर तार से अटक गया। वह सिर के बल गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई।

लाल काँगरू को माकरोपस रूफस कहते थे। आस्ट्रेलिया में सात प्रकार के काँगरू पाये जाते हैं। उनमें वह सबसे बड़ा था। उसकी उँचाई छः सात फुट के बीच में थी। प्राचीन समय के काँगरुओं के ढांचे जो आस्ट्रेलिया में मिलते हैं उससे पता चलता है कि प्राचीन समय में काँगरू १२ फुट ऊँचे होते थे और वे १०० फुट ऊँची छलाँग सरलता पूर्वक लगा सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदूर पूर्वी त्रिभुज

१९२१-२२ के वाशिंगटन सम्मेलन के पश्चात् एँग्लो जापानी संधि हुई उसके बाद से संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सुदूर पूर्व नीति का आधार प्रगट रूप से जो रहा है उससे पता चलता है कि चीन में अमरीका और ब्रिटेन का समान हित है इसी कारण वाशिंगटन में यह बात मान ली गई है कि प्राचीन देशों में लन्दन व संयुक्त-राष्ट्र की नीति समानान्तर रहेगी। परन्तु पिछले १८ साल की घटनाओं से पता चलता है कि ब्रिटेन ने बहुधा संयुक्त राष्ट्र के प्रतिकूल नीति का अनुसरण किया है। जिसे संयुक्त राष्ट्र की सरकार नहीं चाहती थी। इसी कारण योरुप की वर्तमान लड़ाई में इंगलैण्ड को संयुक्त-राष्ट्र की सहानभूति प्राप्त नहीं है। फिर भी दुर्भाग्य ऐसा है कि योरुपीय युद्ध के कारण जापान और इंगलैंड की पुनः मैत्री हो रही है।

१९१४ ई० के महासमर के पश्चात् ब्रिटिश जनमत जापानी संधि के बारे में नाना प्रकार का था। अँग्रेज जाति तथा डाउनिंग स्ट्रीट के पदाधिकारी चाहते थे कि एँग्लो-जापानी संधि जीवित रहे। मिस्टर लाएड जार्ज आर्थर बाल्फर लार्ड कर्जन फेअरहम के लार्ड ली का भी यही मत था। १९२१ ई० में लन्दन में साम्राज्य सम्मेलन हुआ तो भारतवर्ष आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ने जापानी संधि तोड़ने के विरुद्ध अपने मत प्रगट किये थे। केवल कनैडा (जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अनुकूल था) ने मत दिया कि जापान से मैत्री तोड़ देनी चाहिये। संयुक्त राष्ट्र अमरीका उस समय किसी न किसी तरह जापान से अपना सम्बन्ध तोड़ देना चाहता था। वाशिंगटन में अमरीकन मन्त्री हूगस ने वाशिंगटन के ब्रिटिश राजदूत से कहा था कि यदि इँगलैंड जापान से मैत्री तोड़ने से इन्कार करेगा। तो संयुक्त राष्ट्र की कांग्रेस आयरलैंड के प्रजातंत्र राज्य को स्वीकार करते हुये इंगलैंड के विरुद्ध प्रस्ताव पास करेगी।

यद्यपि जापानी तथा अँग्रेज सरकार ने अमरीकन सरकार को संतोष दिया कि ऐंग्लो जापानी संधि जब पुनः संशोधित की गई थी तो भी यह बात स्पष्ट कर दी गई थी कि यदि जापान अथवा इंगलैंड में से कोई भी अमरीका के साथ युद्ध करेगा तो वे एक दूसरे का साथ न देंगे। परन्तु इससे संयुक्त राष्ट्र को संतोष नहीं हुआ।

इंगलैंड जर्मन भय होते हुये भी जापान की मैत्री क्यों चाहता? इसका उत्तर यह है कि इंगलैंड को कम्यूनिस्ट क्रान्ति का भय था। अफ़गानिस्तान, भारतवर्ष चीन आदि देशों में इँगलैंड का राज्य है वह अपने राज्य में कम्यूनिस्ट क्रान्ति नहीं देखना चाहता। इसी भय के कारण इंगलैंड जापान का मित्र बना था। इँगलैंड जानता था कि जापान स्वयम् बैरी चीन में बन गया था।

वाशिंगटन के सम्मेलन तक इंगलैंड को आशा थी कि वह जापान से मित्रता रखते हुये उसकी मांग चीन में पूरा कर सकेगा। कनैडा और दक्षिणी अफ्रीका को छोड़ कर इंगलैंड और उसके उपनिवेश चाहते थे कि ऐंग्लो जापानी संधि बनी रहे। उसी आशा को रखते हुये उन राष्ट्रों ने प्रस्ताव किया कि वाशिंगटन सम्मेलन के पहले लायल में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो जिसमें सुदूर पूर्व के जटिल प्रश्नों पर विचार किया जाय। इस योजना को संयुक्त-राष्ट्र ने अस्वीकृत कर दिया और कहा कि यह योजना संधि को बनाये रखने के लिये है। अंत में संयुक्त राष्ट्र की सरकार ने वाशिंगटन में एँग्लो ने जापानी संधि को बनाये रखने के लिये है। अंत में संयुक्त-राष्ट्र की सरकार ने वाशिंगटन में एँग्लो जापानी संधि को छिन्न भिन्न कर दिया और उसके स्थान पर फोर पावर पैस्फिक ट्रीटी (प्रशान्त महासागर के चार राज्यों की संधि) को लागू किया।

एँग्लो जापानी संधि को समाप्त होने से जापान को दुख हुआ। वह इंगलैण्ड का सहारा लेता था, और उसी कारण चीन में उसका प्रभुत्व था।

परन्तु जापानी नीतिज्ञों ने अमरीका के प्रति मित्रता का भाव रक्खा और अपने यहां संयुक्त राष्ट्र के अनुकूल जनमत बनाने का प्रयत्न किया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि वह जानते थे कि गत महायुद्ध के समय इंगलैण्ड की नींव डांवाडोल हो चुकी थी और संयुक्त राष्ट्र संसार का सबसे बड़ा शक्तिशाली राज्य हो गया था। जापान जानता था कि चीन में ब्रिटिश बस्तियां अधिक हैं और चीन से इंगलैण्ड को बहुत लाभ है और अमरीका को अँग्रेज़ों की अपेक्षा वहां लाभ कम है। इसलिये इंगलैण्ड से युद्ध होना सम्भव है, परन्तु संयुक्त राष्ट्र से युद्ध होने की कोई सम्भावना नहीं है। इन्हीं कारणों से जापान इंगलैण्ड से अमरीका को अच्छा समझता है।

जापानी प्रजा को यह बात मालूम नहीं थी कि एँग्लो जापानी संधि का अंत करने में संयुक्त राष्ट्र का कितना हाथ रहा है। उसके विपरीत जापानी प्रजा जानती है कि इंगलैण्ड जितना लाभ उससे उठा सकता था उठा चुका और उसके बाद उसने संधि का अंत कर दिया। इस मत के होने के कारण चीन में अँग्रेज़ों के विरुद्ध जापानी मत हो गया। जिससे अँग्रेज़ों की दशा जटिल हो गई। इंगलैंड को आशा थी, एँग्लो जापानी संधि तोड़ने पर चीन से उसकी मैत्री और अधिक बढ़ जावेगी क्योंकि चीन एँग्लो-जापानी सन्धि के विरुद्ध था। इँगलैण्ड को यह भी आशा थी कि यदि चीन में चीनी सरकार अथवा जापानी सरकार उसका विरोध करेगी तो संयुक्त राष्ट्र उसका सहायक होगा, परन्तु इनमें से कोई भी आशा पूरी नहीं हुई।

१९२५ ई० के आरम्भ में इंगलैंड के विरुद्ध चीन में प्रचार आरम्भ हुआ और १९२६ ई० के संकट काल में चीनी राष्ट्रवादियों को मास्को से आर्थिक सहायता मिल गई और जनरल ब्लूयचर सलाह देने वाला मिल गया। गैलेन, बोरोडिन आदि बोलशेविक नेताओं ने दक्षिणी चीन का भ्रमण किया और अँग्रेज़ी प्रभुत्व से दूर घाटी में आकर बस गये। उन्होंने अँग्रेज़ों के विरुद्ध प्रचार आरम्भ किया। चीनी राष्ट्रवादियों को अँग्रेज़ों के विरुद्ध प्रचार में सफलता प्राप्त हुई क्योंकि चीनी प्रजा को विश्वास दिलाया जाता था कि यदि अँग्रेज़ साम्राज्य का अन्त हो जाय तो चीन की दशा बहुत सुधर जावेगी। इंगलैंड ने जापान और संयुक्त राष्ट्र से सहायता के लिये कहा परन्तु कोई भी सहायता के लिये तयार न हुआ। इसलिये अँग्रेज़ों को चीनी राष्ट्र वादियों के विरुद्ध चुप होना पड़ा।

१८ दिसम्बर सन् १९२६ ई० को इंगलैंड की सरकार ने वाशिंगटन संधि पर हस्ताक्षर करने वाले राज्यों से कहा कि वे चीन के राष्ट्रवादी सरकार के करों को (जो विदेशी व्यापार पर लगाये गये थे) स्वीकार करें। इस प्रस्ताव के फलस्वरूप चीनी राष्ट्रवादियों ने हैनकावक्यू क्यांग में जो अधिकार अँग्रेज़ों को प्राप्त थे उसे छीन लिया। नानकिंग नगर में भी अँग्रेज़ों के विरुद्ध प्रचार हुआ और कई दूकानें तथा निवास स्थान लूट लिये गये। कई एक प्रसिद्ध निवासी मारे गये अथवा बुरी तरह घायल किये गये। ९ मई सन् १९२८ को आस्टिन चैम्बरलैन ने कहा कि चीन की राष्ट्रीय सरकार ने हांगकाऊ के संधि नामे के विरुद्ध किया है और उसने इंगलैंड से मित्रता भाव भी नहीं दिखलाया है। सर आस्टिन ने कहा फिर भी इंगलैंड की सरकार आशा करती है कि चीन की सरकार मैत्री भाव दिखलावेगी क्योंकि वह ब्रिटिश सरकार के कारण विदेशी अत्याचार से स्वतंत्र हो रही है।

चीन में जो ब्रिटिश व्यापारी थे उनका अब तक ख्याल था कि एँग्लो जापानी संधि के कारण जापानी लोगों को लाभ उनकी हानि पर हो रहा था परन्तु जब संधि का अन्त हो गया और फिर भी अँग्रेज़ व्यापारियों को लाभ न हुआ तो वे बड़े परेशान हुये उन्होंने जापानियों से बैर कर लिया था, चीनी लोग उनको बाइकाट कर रहे थे और रेड (रूस के लाल दल वाले) लोग उनके विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। उन्होंने जापानियों से बैर करने की अपनी त्रुटि को समझा और इस बात पर ज़ोर देने लगे कि इंगलैण्ड जापान के प्रति अपनी प्राचीन नीति का अनुसरण करे।

इङ्गलैंड में भी इस मत के समर्थक (खासकर कंजर्वेटिव) थे। यद्यपि इंगलैंड की सरकार वाशिंगटन सम्मेलन के विरुद्ध जाने को तयार न थी फिर भी उसने अपनी दशा संकट में देखी। चीन में जो अमरीकन लोग थे वे ब्रिटिश थे। जब डाउनिंग स्ट्रीट (लण्डन) में यह प्रस्ताव रक्खा गया था कि जो कर चीन की सरकार विदेशी आयात पर लगा रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे मान लिया जाय तो अमरीका में इसका विरोध किया गया था। २६ जनवरी १९२७ ई० को चीन के राज्य सचिव किलोग ने अपने भाषण में कहा था कि चीन की स्वतंत्रता संगठित और धनी होने के लिये आवश्यक है कि अमरीकन लोग चीन को खाली कर दें। उसने यह भी कहा कि संयुक्तराष्ट्र सदैव चीन के प्रश्नों के सम्बन्ध के बारे में बातें करने के लिये तयार है। २५ जुलाई सन् १९२८ को सचिव लोग ने संसार को यह घोषणा करके चकित कर दिया कि संयुक्तराष्ट्र एक संधि के अनुसार चीन को विदेशी व्यापार पर कर लगाने के लिये पूरी स्वतंत्रता प्रदान करता है। इङ्गलैंड चीन की यह बात मानने के लिये तयार नहीं था। चीन तथा संयुक्त राष्ट्र के बीच यह संधि पीपिंग में हुई थी। संयुक्तराष्ट्र की ओर से वी० ए० मूरे ने हस्ताक्षर किया था और चीन की ओर से वहां की राष्ट्रीय सरकार के अर्थ मन्त्री टी० वी० सूङ्ग ने हस्ताक्षर किया था।

गत महायुद्ध के बाद से संयुक्त राष्ट्र और इङ्गलैंड की नीति जापान तथा चीन के प्रति लगभग १५ सालों तक उपरोक्त ढङ्ग पर चलती रही। जब सन् १९३१ ई० में मञ्चूरिया की घटना हुई तो संयुक्त राष्ट्र के राज्य सचिव स्टिमसन ने राष्ट्रसंघ से कहा कि वह जापान के विरुद्ध दृढ़ कदम उठावे। उसने लण्डन से भी इस सम्बन्ध में कई बार अपील किया। अंत में उसने इङ्गलैंड से प्रस्ताव किया कि इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र मिलकर नाइन पावर ट्रीटी (नौ शक्ति सन्धि) को तोड़ दें। क्योंकि मिस्टर स्टिमंसन को विश्वास था कि यदि जापान के ऊपर आर्थिक रोक लगाई जावेगी तो उसकी नस ढीली पड़ जावेगी। मिस्टर स्टिमंसन ने कई बार ब्रिटिश विदेशी मन्त्री मिस्टर साइमन का ध्यान टेलीफोन द्वारा इस ओर आकर्षित किया परन्तु मिस्टर साइमन ने किसी बार भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। आखिरकार मिस्टर स्टिमंसन को अपनी योजना रोकनी पड़ी। इङ्गलैंड के दृष्टिकोण से मञ्चूरिया चीन का एक बाहरी प्रान्त था और उससे ब्रिटेन की कुछ हानि नहीं हो रही थी। ब्रिटिश नीतिज्ञों का अनुमान था कि जापान से मित्रता रखनी आवश्यक है जिस से उनको चीन खाम में हानि न हो।

उसके पश्चात मञ्चूको प्रान्त को संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रकार छोड़ दिया जैसे जाति से निकाले हुये व्यक्ति को छोड़ दिया जाता है। १९३४ ई० में इङ्गलैंड ने एक मिशन मन्चूको भेजा। इस संस्था के नेता लार्ड बार्नबी बनाये गये थे। इस मिशन ने मन्चूको के सम्बन्ध में जो आर्थिक तथा व्यापारिक रिपोर्ट प्रकाशित की उसे जिस किसी ने पढ़ा सभों ने बहुत सम्मान दिया। उसके एक साल पश्चात् संयुक्त राष्ट्र ने भी सुदूर पूर्व में अपना मिशन भेजा। उसने मञ्चूको के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा।

१८ अप्रैल सन् १९३४ ई० को जापान के विदेशी दफ्तर ने घोषणा किया जिसमें उसने मुनरो नीति की नकल किया था। इङ्गलैंड के विदेशी दफ्तर ने उसी का अँग्रेजी में अनुवाद किया था जो अधिक साफ तथा शुद्ध था। उसमें कहा गया था कि चीन को लड़ाका वायुयान देना, चीन में हवाई अड्डे बनाना, सैनिक शिक्षक चीन भेजना, चीन की आर्थिक सहायता राजनैतिक कामों के लिये देना चीन और जापान के बीच बैर बढ़ाना है इससे पूर्व की ओर शान्ति भङ्ग हो जावेगी। जापान ऐसी नीति का घोर विरोध करेगा। जापान ने जिस नीति का पहले अनुसरण किया है वह उसी नीति पर चल रहा है उससे पुनः दुहराने की आवश्यकता नहीं है।

जापान ने यह घोषणा इसलिये की थी कि उसे यह बात मालूम हुई थी कि अमरीकन व्यापारी चीन को लड़ाका जहाज तथा वायुयानों पर लड़ने वाले सैनिक दे रहे हैं। अमरीका वालों को यह भी आज्ञा दी गई है कि वह फूकीन पर हवाई अड्डा बनावें (जो फामूसा से ८० मील की दूरी पर है) फ्रैडक लीथ रास (ब्रिटिश सरकार का आर्थिक सलाही) चीन को आर्थिक सहायता देने की योजना बना रहा है। राष्ट्र संघ ने चीन में कई एक चतुर तथा ज्ञानी लोगों को यह पता लगाने के लिये भेजा है कि वह किस प्रकार चीन की सहायता कर सकता है।

३० अप्रैल को मिस्टर हल ने अपना वक्तव्य प्रकाशित किया जिस में उन्होंने बतलाया कि अमरीकन प्रजा तथा अमरीकन सरकार की राय में कोई भी राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र पर उसके मर्जी के विरुद्ध अपनी बात लगा नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ मई सन् १९३४ ई० को सर जान साइमन ने प्रजा परिषद् में भाषण देते हुये कहा कि नाइन पावर ट्रीटी में यह बात नहीं लिखी है कि इंगलैंड चीन की भूमि की रक्षा करे और न यही बात ठीक है कि इङ्गलैण्ड ने कभी चीन के साथ किसी संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर के बीड़ा ही उठाया है कि मञ्चूरिया और चीन की रक्षा अपनी समस्त शक्ति से करेगा। इङ्गलैंड में सर फ्रेड्रिक की बातों को भी वह मानने के लिये तयार नहीं है और जब तक चीन जापान में मित्रता नहीं हो जाती इङ्गलैंड चीन को आर्थिक सहायता देने के लिये भी तयार नहीं है।

इससे मालूम होता है कि ऐंग्लो-जापानी संधि के अंत होने पर इङ्गलैण्ड ने अपनी प्राचीन नीति को जापान के प्रति नहीं बदला। चीन-जापान युद्ध होने के पश्चात् ब्रिटिश नीति की परीक्षा जुलाई १९३७ ई० में पूरे तौर पर हुई। जापान ने ब्रिटिश गन बोट लेडी बर्ड को डुबो दिया जिस मोटर कार पर ब्रिटिश चीनी राजदूत जा रहे थे उसपर बम फेंका गया और टियन्टसिन में अँग्रेज़ी सत्ता पर घेरा डाला गया तो ४ अगस्त को चैम्बरलैन ने हाउस आफ कामन्स में कहा कि "चीन में जो हो रहा है उसे सुन और पढ़ कर खून खौल उठता है"। इतना होने पर भी यह बात कही गई कि इङ्गलैंड अपनी प्राचीन नीति का ही अनुसरण करेगा और जापान से संधि करेगा।

नवम्बर सन् १९२७ ई० में ब्रसेलस में सम्मेलन हुआ जिसमें मिस्टर एडेन ब्रिटिश विदेशी सचिव ने भाग लिया। इस सम्मेलन में प्रस्ताव किया गया कि चीन के साथ जापान जो अत्याचार कर रहा है उसका विरोध कियां जाय। यह कार्य अमरीकन प्रतिनिधियों का था। परन्तु जापान ने इसे इङ्गलैंड का कार्य समझा। योरुप की स्थिति जैसे जैसे बिगड़ती गई जापान इङ्गलैण्ड को और अधिक दोषी बनाता गया।

१५ जुलाई सन् १९३९ को टोकियो के ब्रिटिश राजदूत ने जापान के विदेश-सचिव मिस्टर हाचिरो एरीटा से बातचीत आरम्भ की। टियन्टसिन के पदाधिकारियों ने जापान की उस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया था जिससे उसने कहा था कि चार चीनी हत्यारे (जिन्होंने टियन्टसिन के चुङ्गी सुपरिन्टेण्डेन्ट की हत्या की) स्थानीय चीनी कोर्ट को वापस दे दिये जांये। उसके उत्तर में जापान ने टियन्टसिन का घेरा डाला था। इङ्गलैंड को आशा थी कि टियन्टसिन के मामले में संधि हो जाने से जापान और इङ्गलैंड के सम्बन्ध सीमाप्रान्त पर भी ठीक हो जावेंगे।

२४ जुलाई को जापान तथा इङ्गलैंड के बीच एक संधि हुई जिसमें टियन्टसिन ही नहीं वरन् सारे चीन के बारे में इङ्गलैंड की सरकार ने मान लिया कि जापान अपने जीते हुये प्रान्त तथा अपने आदमियों की रक्षा के लिये सेना रख सकता है और प्रबन्ध कर सकता है। इङ्गलैंड जापान के मामले में दखल न देगा और वह चीन में रहने वाले अँग्रेज़ों को भी मना कर देगा कि वह चीन-जापान के मामले में हाथ न डालें।

जब यह बात संसार को विदित की गई तो वाशिंगटन में खलबली मच गई। परन्तु संयुक्तराष्ट्र के स्टेट डिपार्टमेन्ट में शान्ति बनी रही। इसके दो दिन बाद २६ जुलाई को संयुक्त राष्ट्र ने जापानी राजदूत को सूचित किया कि संयुक्तराष्ट्र ने जो व्यापारिक संधि १९११ में जापान के साथ की है उसे वह रद्द कर रहा है। जब यह समाचार टोकियो में पहुँचा तो जापान की सरकार ने अमरीकन राजदूत से पूछा कि इतनी जल्दी यह क्यों किया गया है? अमरीकन राजदूत ने उत्तर दिया इसका मुख्य कारण ऐंगलो-ज़ापानी बातचीत है जो टोकियो में चीन के सम्बन्ध में हुई है।

उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने जो बातचीत उसके और जापान के बीच तै पाई थी उसे वाशिंगटन भेजा और कहा कि इङ्गलैंड अमरीका के साथ किसी प्रकार का विरोध नहीं रखता। वह सदैव उसके साथ मित्रता रखना चाहता है और उसी के साथ मिलकर काम करना चाहता है परन्तु वह योरुप की वर्तमान स्थिति के कारण विवश है और अमरीका की नीति के समान वह अपनी नीति चीन में नहीं चला सकता। मिस्टर चैम्बरलैन ने हाउस आफ कामन्स में भाषण देते हुये कहा कि "अमरीका और इङ्गलैंड के बीच बड़ा अन्तर है। अमरीका योरुप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं दूर है। इङ्गलैंड को योरुप की स्थिति देखते हुये जापान के प्रश्नों को बातचीत द्वारा ही तै करना है। जापान इङ्गलैंड के विरुद्ध जो भी कर रहा है वह उस शंका के कारण जो उसे चीन के अँग्रेजों की ओर से है और फिर कुछ हो सप्ताहों में हमें इससे कहीं अधिक जटिल प्रश्नों पर ध्यान देना होगा।"

अगस्त सन् १९३९ ई० में इङ्गलैंड को केवल जर्मनी का भय नहीं था वरन् उसे यह भी भय था कि कहीं जापान, जर्मनी और इटली तीनों एक न हो जायँ। जर्मनी तथा इटली इस बात को चाहते थे कि चीन शीघ्रातिशीघ्र अपना निर्णय इङ्गलैंड से कर ले। इङ्गलैंड को भय था कि यदि वह जापान से मित्रता न करेगा तो जापान जर्मनी और इटली के साथ हो जावेगा। वह प्रशान्त महासागर में युद्ध छेड़ देगा और पूर्व की ओर से अँग्रेजी सत्ता हटाने का प्रबन्ध करेगा। ऐसी दशा में ब्रिटेन के हाँगकाँग की दशा क्या होगी जो रुपया ब्रिटेन ने चीन में लगा रखा है उसका क्या हाल होगा ? यदि अँग्रेजों को एशिया से निकालने का प्रश्न उठेगा तो भारतवर्ष की क्या स्थिति हो जावेगी ? जापानी जल सेना आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड पर आक्रमण न कर बैठे इन जटिल प्रश्नों को सोचते हुये इङ्गलैंड ने जापान से मित्रता रखना अधिक ठीक समझा।

हिटलर और स्टैलिन में संधि हो जाने से योरुप की परिस्थिति और अधिक जटिल हो गई। हिटलर ने जापान पर दबाव डाला कि वह रूस से मित्रता कर ले जिससे राइन प्रान्त से प्रशान्त महासागर तक एक सूत्र में बँध जाय। उसी समय अमरीका ने जापान से व्यापारिक संधि भंग किया था। इतिहास में बहुत सी घटनाएँ ऐसी घटी हैं जब कि अमरीका के कारण जापान ने रूस से मित्रता की है। इसी कारण १९११ ई० में रूसी-जापानी कनवेन्शन (इक़रारनामा) हुआ था। चीनो-जापानी संधि के समय जब अमरीका ने विरोध किया था तो १९१६ ई० में टोकियो-मास्को के बीच संधि हुई थी। १९२४ ई० में जब अमरीका ने अपने यहाँ विदेशियों के न बसने देने का नियम बनाया था और जापानी लोग निकाल बाहर किये गये थे तो भी जापान ने रूस के सोवियट राज्य को स्वीकार किया था।

जुलाई सन् १९३९ ई० में ब्रिटेन टियन्टसिन के चार चीनी हत्यारों को स्थानीय पुलीस को सौंपने पर राजी हो गया था इसके सिवा उनमें टियन्टसिन के जापानी राजकर्मचारियों और ब्रिटिश पुलीस में भी कुछ समझौता हो गया था। अब यह बात तै होने को रह गई है कि ८० लाख पौंड (जो ब्रिटिश कन्सेशन के राष्ट्रीय बैंक में है) जापान को दिया जाय और कन्सेशन वाले स्थानों में चियाँक काई शेक के समय के सिक्के का चलना बन्द कर दिया जाय।

२८ मार्च सन् १९४० ई० को ब्रिटिश राजदूत सर राबर्ट ने कहा कि जापान तथा इंगलैंड के भाव मित्रवत रहेंगे। जापान और इँगलैंड प्रशान्त महासागर में दो प्रमुख राष्ट्र हैं। दोनों को चाहिये कि वे आपस में स्थाई मित्रता को प्राप्त करें। यह बात दोनों राष्ट्रों के राजनीतिज्ञों के लिये कठिन नहीं है क्योंकि दोनों राष्ट्र शान्ति स्थापित रखने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं।

इस समाचार को सुन कर जापानी तथा अमरीकन दोनों प्रकार के नागरिकों को बड़ा विस्मय हुआ और वाशिंगटन में फिर खलबली उत्पन्न हो गई।

वांग चिंग-वी की सरकार की स्थापना होने पर अमरीका के सचिव दल ने घोर विरोध किया परन्तु इँगलैंड इस सम्बन्ध में बिलकुल शान्त रहा। इसी से अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि सीनो-जापानी परिस्थिति में वाशिंगटन तथा लण्डन में कितना अन्तर है।

आज जब कि संयुक्त राष्ट्र जापान के जहाज़ों के आने जाने में रोक डालना चाहता है इंगलैंड उसके साथ अपना व्यापार बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। एँग्लो-आइरेनियन कम्पनी (जिसका अधिकांश तेल अँग्रेज़ों के अधिकार में है) जापानियों के हाथ १० लाख पीपे तेल बेचने पर राजी हो गई है। इस प्रकार के समझौते के बढ़ जाने की भी आशा है। इंगलैंड अमरीका तथा जापान की व्यापारिक संधि भंग होने से लाभ उठा रहा है, वह जापान तथा चीन से अधिक से अधिक व्यापार करना चाहता है। यह बात सम्भव है कि इंगलैंड जापान से भोजन सामग्री खरीदे और उसके बदले में जो जापानी सामान भारत आता है उस पर चुंगी घटा दे और जापान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों से रुई, तेल, मशीन और दूसरे सामान खरीदने की आज्ञा दे दें।

इंगलैंड की इस नीति से कुछ अमरीकन लोगों को खेद हो रहा है। वे समझते हैं कि इंगलैंड ने अमरीकन के साथ रहने का जो वादा किया है उसे वह तोड़ रहा है। वे समझते थे कि चीन में अमरीका और इंगलैंड का बराबर हित है। परन्तु यदि चीन के अँग्रेजी हित तथा संसार के और दूसरे भागों के हित से तुलना की जाय और योरुप की परिस्थिति पर ध्यान दिया जाय तो पता चलेगा कि इँगलैण्ड की दशा अमरीका से कहीं भिन्न है। अमरीका अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण योरुपीय युद्ध से बिलकुल अलग है और वह अपना सारा ध्यान सुदूर पूर्व में लगा सकता है परन्तु यह बात इंगलैंड के लिये सम्भव नहीं है।

पूर्वी एशिया में फिलीपाइन और चीन के सिवा और कहीं अमरीका का सम्बन्ध नहीं है। वह इन स्थानों में जापान का घोर विरोध बिना अधिक हानि उठाये कर सकता है परन्तु इंगलैंड जापान का चीन में घोर विरोध नहीं कर सकता क्योंकि उसके लिये बड़ा भारी खतरा है। अमरीका को फिलीपाइन अथवा चीन से कोई बड़ा भारी लाभ नहीं है।

दोनों, जापान तथा वाँग-चिंग-वी की सरकार ने वादा किया है कि वे चीन में किसी भी तीसरे राष्ट्र के सच्चे अधिकार का अपहरण न करेंगी। अब प्रश्न यह है कि वहां पर विदेशियों के अधिकार सच्चे अधिकार हैं या नहीं। यदि अधिकार सच्चे भी नहीं हैं तो भी उन्हें वहां की सरकार न मिटावेगी वरन् उन्हें ठीक करने का समय देगी। इंगलैंड का ख्याल है कि चीन में उसका हित जापान से मित्रता रखने पर ही रह सकता है। यांगचे नदी के व्यापार के प्रश्न को ही यदि देखा जाय तो उसमें ६८ हजार टन का व्यापार अँग्रेजों का, ३५,००० टन का जापान का और ८,४०० टन का अमरीका का होता था। जापान ने उसे रोक दिया। इंगलैंड ने उसका इतना घोर विरोध नहीं किया जितना कि अमरीका ने किया है। १२ दिसम्बर १९३७ को याँगचे नदी पर जापानी बम्ब वर्षा करने वालों ने संयुक्त राष्ट्र के व्यापार को जो हानि पहुँचाई थी उसके बदले में जापान ने अमरीका से क्षमा याचना किया और २२,१४,००० शि० का चेक भेजा। उसी समय लेडोबर्ड नामक अँग्रेज जहाज भी डुबाया गया था परन्तु अभी उसके सम्बन्ध में कोई भी बात इंगलैंड और फ्रान्स के बीच तै नहीं पाई है।

जापान इस समय ब्रिटिश दृष्टिकोण की प्रशंसा करता है क्योंकि उसे अमरीका से मित्रतापूर्ण नीति के स्थाई रखने में असफलता प्राप्त हुई है और हानि उठानी पड़ी है। व्यापार तथा और दूसरे कारणों से जापान अमरीकन के सद्भावों को अँग्रेजों के विचारों से अच्छा समझता है। जब से चीन का युद्ध छिड़ा है जापान ने जहाँ तक सम्भव हो सकता है अमरीकन के अधिकार तथा जान व माल का सदैव आदर किया है यद्यपि उसने ऐसी बात अँग्रेजों के साथ नहीं की है। अब वह अपने मार्ग से विचलित होने पर विवश किया जा रहा है। यदि अब उसके सम्बन्ध इंगलैंड से अच्छे हो जाते हैं तो वह चीन में अँग्रेजों के हित का अधिक ध्यान अवश्य देगा। इंगलैंड ने चीनी रेलवे में जो धन लगाया है और वह बेकार हो गया है, यदि वह जापानी सहायता से संकट से बच जाता है तो वह धन फिर से जीवित हो जावेगा। मंचूरिया में जापान ने मुकडेन-शानहैवान रेलवे के सम्बन्ध में जो कुछ किया है उससे इंगलैंड को संतोष हुआ है। जापानी संरक्षता के पहले मञ्चूरिया की स्थानीय सरकार ने अँग्रेजों को इस रेलवे की आय से कुछ नहीं दिया था और न उन्होंने इँगलैंड के धन डूबने की ही परवाह की थी। जब से मंचूरिया जापान की संरक्षता में आया है अँग्रेजों का सारा पिछला व्याज चुका दिया गया है और हर साल बराबर चुकाया जा रहा है।

यद्यपि जापान अमरीका की ओर से निराश हो गया है फिर भी वह सचिव दल के ३० मार्च के भाषण में कुछ आशा की झलक देख रहा है। अमरीका ने चीन के द्वारा सभी राष्ट्रों के व्यापार के लिये मार्ग खोल रखा है। अमरीका की यह नीति पहले ही चली आ रही है। जापान को भी इससे लाभ है। इस लिये यदि समय काफी दिया जायगा तो जापान तथा अमरीका में समझौता हो जाने की आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्किमो तथा लैप बालकों के खेल

जब लैप बालक पैदा होते हैं तो उन्हें बरफ पर लुढ़काया जाता है जिससे उन्हें उसका अभ्यास हो जाय। यही लैप बालकों का प्रथम खेल कहा जा सकता है।

उसके बाद वे बालक खाल के बने हुये कम्बलों पर लिटाये जाते हैं। जिसमें वे हाथ पैर फेंक फेंक कर खेलते हैं। लैप बच्चों को कपड़ा नहीं पहनाया जाता। उनकी माता उन्हें बाहर ले जाना चाहती है। तो वह उन्हें एक चमड़े के झोले में बन्द करके पीठ पर लाद लेती है। जब बच्चे चलने फिरने लगते हैं तो उन्हें दो सूट बनवाये जाते हैं। वे बालक दोनों सूट साथ साथ पहना करते हैं। एक सूट का बाहरी भाग भीतर की ओर और दूसरे का भीतरी भाग बाहर की ओर करके पहना जाता है। छोटे बच्चे अपने बड़े भाइयों के साथ खेलने जाते हैं। वे पहले पहाड़ी पर से नीचे फिसलना सीखते हैं।

जब वे पहाड़ी से नीचे फिसलना सीखते हैं तो उनके बड़े भाई दोनों ओर से उनके हाथ पकड़े रहते हैं। उसके पश्चात् उन्हें रेन्डियर का खेल सिखाया जाता है। इस खेल में मारे हुये रेन्डियरों के सींग पहाड़ी के नीचे थोड़ी थोड़ी दूर पर गाड़ दिये जाते हैं। बरफ के ठेकों पर बालक तेज़ी के साथ गड़े हुए सींगों के मध्य में होकर इस प्रकार फिसलते हैं कि सींगों से छू न जांय।

जब बच्चे चार साल के हो जाते हैं तो उन्हें आर्क्टिक सागर के दरियाई हाथी के दाँत की 'स्लेज' गाड़ी खेलने को दे दी जाती है। गाड़ी में कुछ कुत्ते जोत दिये जाते हैं। और बालक उन्हें चलाते हैं। १२ साल की अवस्था तक एस्किमो बालक इसी गाड़ी का खेल खेलते हैं!

१२ साल की अवस्था के बाद यह बालक धनुष बाण चलाना सीखते हैं और टर्मीगन (एक प्रकार की चिड़िया) का शिकार करते हैं। वे ईडर बतखों का भी शिकार किया करते हैं।

लैप बालक फुट बाल का खेल भी खेला करते हैं। परन्तु उनका खेल हमारे यहां के फुटबाल के खेल से कुछ भिन्न होता है। वे फुटबाल को केवल पैर से खेलते समय छूते हैं। उनके फुटबाल के खेल को देखने के लिये दर्शक नहीं इकट्ठा होते हैं और न खेल में तालियां ही बजती हैं। वहां पर इतना अधिक जाड़ा पड़ता है कि लोग खेल देखने के लिये न तो एकत्रित ही हो सकते हैं और न तालियां ही बजा सकते हैं। जो कोई भी घर के बाहर जाता है उसे शीत के कारण शीघ्र घर लौटना पड़ता है।

गरमी के दिनों में लोग दक्षिण की ओर चले जाते हैं। दक्षिण की ओर उनकी भेंट गोरे लोगों से होती है। गोरे लोग सील मछली की खाल तथा फर एस्किमो से मोल लेते हैं और उसके स्थान पर तम्बाकू तथा और दूसरी चीज़ें देते हैं।

लैप बालक डॉमीनोस का खेल भी खेलते हैं। इसीलिये वे डोमीनोस का संदूक गोरे लोगों से ले लेते हैं।

रात को व्यापारी लोग आग के समीप बैठ कर कहानियां कहा करते हैं। वे तम्बाकू भी पीते हैं। लैप बालकों को गोरे लोग अपने देश को भी ले जाते हैं परन्तु वे अपने देश को इतना प्यार करते हैं कि उसे छोड़ना नहीं चाहते हैं। वे अपने देश को संसार के सभी देशों से अच्छा समझते हैं। एस्किमो देश में और उत्तर की ओर उत्तरी प्रकाश का अद्भुत दृश्य देखने में आता है।

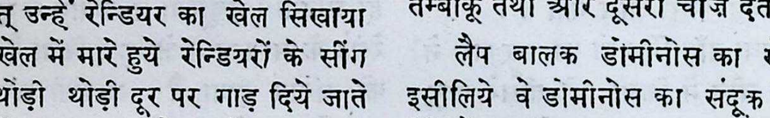

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस और इसलाम

सन् १८३० ई० में फ्रान्स ने अलजीरिया पर अधिकार किया। थोड़े समय के पश्चात् ही उसे ज्ञात हुआ कि उत्तरी अफ्रीका में गरम देशों की उपज नहीं हो सकती है और न वहाँ पर फ्रान्सीसी लोग बसाये ही जा सकते हैं। वहाँ के मूल निवासियों का अन्त करना या उन्हें गुलाम बनाना भी कठिन था। वे समझते थे कि वहाँ के निवासी (मुसलमान) अपनी संस्कृति और धर्म की रक्षा अपनी पूरी शक्ति के साथ करेंगे। फ्रान्स मुसलमानी देशों का राज्य करने के योग्य न था। अलजीरिया में धीरे धीरे फ्रान्स की शक्ति बढ़ गई और उसने १८८१ ई० में ट्यूनीसिया और १९१२ ई० में मोरक्को को विजय किया। आज भी फ्रान्स इस योग्य नहीं है कि वह अपने मुसलमानी उपनिवेशों में अपनी नीति चला सके।

उत्तरी अफ्रीका में अरब आबादी नहीं है। वहाँ पर बेरबेर लोग बसे हैं जो अरब संस्कृति में रँग गये हैं। मुसलमानों ने जब उसे जीता तो उन्हें वहाँ पर मुसलिम धर्म चलाने तथा अपनी सभ्यता का प्रचार करने में लगभग ५०० साल लग गये थे। वहाँ के बेरबेर निवासी किसी भी सभ्यता को ग्रहण करने में उसका भरसक विरोध करते हैं। वे लोग अरब, तुर्क, फोनीशियन, रोमन, वन्डल और फ्रान्सीसी लोगों की सैनिक शक्ति के कारण उनके अधिकार में आये थे। इतना होते हुए भी उन्होंने अब भी अपनी सभ्यता को बचा रखा है। वे सभी सैनिकों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब वहाँ पर उनकी समाज का सुधार हो रहा है और उनके अन्दर राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है।

पिछले कई सौ वर्षों तक वहाँ के लोग विदेशी धर्म अथवा मत का विरोध इसलिये करते थे कि उनके देश का कोई न कोई साधु विदेशी प्रभाव का विरोध अवश्यं करता था, इसलिये फ्रान्सीसी सरकार ने उनके गुज़ारे के लिये उन्हें ज़मीन दे दिया है या पेंशिन बांध दिया है। इसलिये वहाँ की प्रजा धार्मिक नेता न पाकर अपने यहाँ राष्ट्रीयता का प्रचार करने लगी और अरब लोगों के प्रति प्रेम प्रकट करने लगी।

फ्रान्सीसी विजय के पहले उत्तरी अफ्रीका में मोरक्को के सिवा और कहीं भी राष्ट्रीयता का प्रचार नहीं था। वहाँ पर बेरबेर जाति ही वहाँ के लोगों की स्थायी सामाजिक राजनैतिक संस्था थी। बीच बीच में वहाँ की स्थानीय जातियों ने अपना संगठन किया परन्तु फिर भी वे राष्ट्र न बन सकीं। फ्रान्सीसी विजय के पश्चात् भी उत्तरी अफ्रीका तीन भागों में बँटा था। अल्जीरिया में आजकल वहाँ के मन्त्री मण्डल का राज्य है। ट्यूनीशिया और मोरक्को में क्बायडीओर्स का विदेशी मन्त्री मण्डल का शासन है। यद्यपि वहाँ पर वहाँ के राजे नाम मात्र के लिये बने हैं। यह दोनों राज्य एक दूसरे से द्वेष भाव रखते हैं और इसी कारण उनका शासन प्रबन्ध भी अलग अलग है। इस प्रकार अल्जीरिया, ट्यूनीशिया और मोरक्को के राजा अलग अलग हैं। वहाँ पर फ्रान्स ने राष्ट्रीयता का प्रचार किया है। पूर्व के मुसलमान राष्ट्रों ने भी वहाँ के राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रोत्साहन दिया है। उत्तरी अफ्रीका को अरब लो ा मघरेब कहते हैं। इसलाम ने मघरेब के निवासियों पर प्रभाव डाला है। इसलिये वहाँ के शिक्षित लोगों का कहना है कि अरबी भाषा के सभी प्रयोग करने वाले एक हो जावें।

उन्नीसवीं शताब्दी में अरब संगठन के प्रचार के लिये जो आन्दोलन चला उसके कर्ता धर्ता जमील उद्दीनुल अफ़ग़ानी और शेख मुहम्मद अब्दो थे। अफ़ग़ानी की दो मांगें थीं। वह कहता था कि सारे अरब देश एक सूत्र में एक खलीफ़ा की संरक्षता में बँध जावें जिससे वे उन्नति कर सकें और अपने को योरुपीय साम्राज्यवाद से बचा सकें। उसका चेला शेख अब्दू मिस्र का रहने वाला था। वह कहता था कि मुसलमानों को चाहिये कि वह विज्ञान सीखें जिससे वे योरुपीय अस्त्र शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकें और साथ ही साथ अपने धर्म को भी बनाये रक्खें। इन दोनों आदमियों की शिक्षा के कारण लीग आफ दी अरब फादरलैंड (अरबी लोगों के देश को संघ) की स्थापना पेरिस में हुई। उसके पश्चात् १९१३ के बाद से अरब कांग्रेस होती चली आई जो इतिहास, जाति और भाषा पर अधिक ज़ोर डालती रही है।

शिक्षित संस्थाओं तथा शिक्षित लोगों की सहायता से वर्तमान समय में चलने वाली अरबी भाषा की बनावट हुई है। नई भाषा द्वारा सभी प्रकार के वैज्ञानिक, राजनैतिक तथा सामाजिक प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। मिस्री पत्रों के प्रभाव के कारण अरबी भाषा मुसलिम संसार "लिंगुआ फ्रेंका" (अन्तर्राष्ट्रीय भाषा) बन रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां की स्थानीय लिपि का धीरे धीरे नाश हो रहा है, अरबी भाषा मुसलिम राज्य की भाषा होगी और यह आदर्श संगठन करने में सहायक होगी।

मुसलिम संसार बनाने का ख्याल बर्तमान समय में कठिन है। यह बात तर्क शास्त्र के विरुद्ध है। संसार की भिन्न जातियों के लोग जो मुसलमान हो गये हैं उनमें नैतिक संगठन होना बहुत कठिन है। बहुत से लोगों ने ऐसी एकता की सम्भावना के बारे में कल्पित संसार की रचना कर डाली है। बे खबर लोग जो मुसलमान हो गये हैं उनका कहना है कि वे विजयी अरबों की औलाद हैं और उन्होंने अपनी वंशावली भी बना ली है। आज उसी जातीय जादू के कारण अफ्रीका के मुसलमान एशिया के मुसलमानों से योरुप के विरुद्ध मिल रहे हैं। प्रत्येक मुसलमान समझता है कि वह एक बड़े पितृ-भूमि (इसलाम) का सच्चा पुत्र है। बचपन से ही उसे शिक्षा मिलती है कि अरब राष्ट्रों की अवनति उनकी स्वतंत्रता चले जाने के कारण हुई है और जब उन्हें स्वतंत्रता मिल जायगी तभी उमय्यद और अब्बासी लोगों का सुखी समय आ जावेगा। मुसलमान लोगों को अपने प्राचीन इतिहास पर गुमान है और भविश्य पर विश्वास है।

गत महायुद्ध के कारण अरब संगठन को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। फिसल के राज्य की स्थापना न हो सकी। पैलेस्टाइन में ज़ियनिस्ट लोगों के हाथ राज्य की बागडोर दी गई। इराक, सीरिया, लेबानन, ट्रान्सजर्डन और पैलेस्टाइन में फ्रान्सीसियों तथा अँग्रेज़ों की संरक्षता में राज्य स्थापित किये गये। खास अरब में इब्नसऊद ने वहाबी शक्ति को बढ़ा लिया। इतने बन्धन पर भी अरब मत का ज़ोर रहा। पिछले २० सालों में फारस की खाड़ी से अटलांटिक सागर तक के मुसलमानी राज्य के निवासी अपनी सभ्यता, एकता और ईमान पर अभिज्ञ हैं। प्रत्येक मुसलिम राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न कर रहा है और पश्चिमी प्रभाव से पूर्व को बचाने का यत्न कर रहा है।

अरब पुनरुत्थान का भाव उत्तरी अफ्रीका में पुस्तकों, सम्बाद पत्रों, तीर्थ यात्रियों और मिस्र तथा सीरिया के विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों द्वारा लाया गया था। मुसलिम संसार का कहना था कि मगरेब (उत्तरी अफ्रीका) उसका एक भाग है। जेरूशिलम में १९३१ ई० में जो मुसलिम कॉंग्रेस हुई थी उसमें उत्तरी अफ्रीका के सदस्य सम्मिलित थे। उत्तरी अफ्रीका में अरब प्रचार करने वाले आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता लेबानी के अमीर शेकिब अर्सलान थे। यह एक बड़े राजनैतिक कार्यकर्ता थे। यह कुस्तुनतुनिया के तुर्की पार्लियामेन्ट में बीरुट के प्रतिनिधि होकर गये थे और गत महायुद्ध के समय तुर्की मिशन में होकर जर्मनी गये थे। बहुत सालों तक इन्होंने बाल्कन और त्रिपोलियन में मुसलिम प्रभाव की विशेषता के लिये काम किया। आप अरब भाषा के बड़े भारी पंडित हैं और दमिश्क के अरब एकेडमी के १९३८ ई० में सभापति बनाये गये थे। अपनी योग्यता, संस्कृति और और विशाल राजनैतिक जीवन के कारण आप प्राकृतिक नेता बन गये हैं।

गत महायुद्ध के बाद केरो में सीरो पैलेस्टाइनियन कमेटी की स्थापना हुई। अमीर इस कमेटी के स्थाई प्रतिनिधि जिनेवा के लिये बनाये गये। जिनेवा में उनका कार्य यह था कि वे राष्ट्र संघ पर प्रभाव डालें। वहां पर उनका निवास स्थान सारे मुसलिम सरकार का केन्द्र बन गया। वहाँ से समस्त मुसलिम संसार के बारे में समाचार मिल सकता था। अमीर की जान पहचान केवल मुसलमानी नेताओं से ही नहीं वरन् योरुप के प्रधान नेताओं से भी हो गई। उसमें मुसोलिनी से मित्रता हो गई। स्थानीय अरब दलों को वह आदेश दिया करते थे और उनके लिये कार्य-क्रम बनाया करते थे।

वह मुसलमान नेताओं तथा दलों के आपसी झगड़े का भी निपटारा करते थे। सितम्बर सन् १९३९ ई० में वह बर्लिन गया और अपने प्रभाव को जर्मनी की सेवा में अर्पण कर दिया।

वह उत्तरी अफ्रीका की राजनीति से भली भाँति परिचित था। इसलिये जिनेवा में ट्यूनिस और मोरक्को के लोग उसे घेरे रहते थे। वह युवक विद्वानों का धार्मिक नेता और मगरेब में जागृति उत्पन्न करने का नेता बन गया। वह स्थानीय राष्ट्रीय को प्रोत्साहन नहीं देता था और चाहता था कि अल्जीरिया ट्यूनिस और मोरक्को एक बड़े मुसलमानी जाति के एक भाग हैं।

जेरूसिलम सम्मेलन ने अरब पैक्ट पास किया था। इस पैक्ट द्वारा यह घोषणा की गई कि समस्त अरब देश एक सूत्र में बँध जाय। वे सभी एक आदर्श की ओर काम कर रहे थे और वे साम्राज्यवाद के विरुद्ध काम कर रहे थे। वे उपनिवेश वाले राज्यों का सामना करना चाहते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि उत्तरी अफरीका की राष्ट्रीय संस्था इस बात पर चलती तो फ्रांस की सरकार और उसमें झगड़ा होने का भय था। इस कारण उत्तरी अफ्रीका के सदस्यों ने अमीर से सलाह लेकर एक घोषणा निकाला कि उत्तरी अफ्रीका को फ्रांस की सहायता से स्वतंत्रता की ओर चलना चाहिये इस सहायता के बदले फ्रान्स को उत्तरी अफ्रीका की स्थाई मैत्री मिल जावेगी। उत्तरी अफ्रीका के राष्ट्र वादियों ने फ्रान्सीसी सरकार से प्रार्थना किया कि वह उन्हें स्वराज्य देकर अपनी उदारता का परिचय दे दें।

१९३४ ई० में उत्तरी अफ्रीका के विद्यार्थियों की एक सभा हुई जिसमें स्कूलों से प्रार्थना की गई कि वे स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच में संगठन के भाव को उत्पन्न करें। यह संगठन धर्म की एकता दृष्टिकोण को एकता सामान्य भाव पर निर्भर होना चाहिये। उसके पश्चात् ट्यूनिस, अल्जीरिया और मोरक्को की राष्ट्रीय संस्थाएँ एक दूसरे से मिलने लगीं और अपने कार्य क्रम भी एक होकर करने लगीं।

उत्तरी अफ्रीका का यह राष्ट्रीय आन्दोलन अरब आन्दोलन का एक भाग है। यद्यपि उत्तरी अफ्रीका के निवासियों को अभी सफलता प्राप्त नहीं हुई है क्योंकि वहां पर विदेशियों का राज्य है और फिर वहाँ की प्रजा अपने यहाँ के स्थायी लोगों की स्वामिभक्त बनी है।

अल्जीरिया अपने दोनों पड़ोसी राज्यों से कई बातों में भिन्न है। फ्रान्सीसी सरकार ने उसे कई भागों में बांट दिया है। प्रत्येक भाग के प्रतिनिधि पेरिस की पार्लियामेन्ट में जाते हैं। यहाँ की कुल जन संख्या ७२,३४६,८४ है। वहाँ के पढ़े लिखे लोग सदैव यह माँग पेश करते रहे हैं। कि उन्हें फ्रान्सीसियों के बराबर अधिकार प्रदान किये जांय। वे ट्यूनिस तथा मोरक्को की भांति स्वतंत्रता नहीं चाहते वरन् वे फ्राँसीसी नागरिक होना चाहते हैं। वे मुसलमान होकर रहना चाहते हैं।

यह आन्दोलन उत्तरी अफ्रीका में अद्वितीय है। यह आन्दोलन और भी अधिक उन्नति कर जाता यदि वहाँ की सरकार उस पर सख्ती न करती और मुसलमानों की तटस्था को निरुत्साह न करती। जिन लोगों ने वहाँ पर फ्राँस की समस्त नीति को सहायता दिया वे वहाँ के पदाधिकारी गए थे। उन्होंने सम्मेलनों में और प्रजा के बीच प्रचार किया। उलमा लोगों और अफ्रीकन स्टार संस्था का प्रचार भी हो रहा था। सरकारी मत वालों और विरोधी दलों में झगड़ा हो गया।

उलमा लोग मुसलमान धर्म के नियमों के अधिकारी हैं। वे इसलाम को मार अबाउटस से बचाना चाहते हैं। और उत्तरी अफ्रीका को योरुपीय रंग में रँगने से अलग रखना चाहते हैं। उलमाओं की संस्था १९३१ ई० में बनी थी। इसका प्रधान नेता कान्स्टैनटाइन का शेख बन बदीस है। यह मुसलिम धर्म का एक बड़ा विद्वान तथा उत्तरी अफ्रीका में सबसे अधिक शक्तिशाली पुरुष है। उसने किसी भी फ्रान्सीसी दल के साथ काम करने से इंकार कर दिया है। वह फ्रान्स के सामान्य नीति पर विश्वास नहीं करता है और उसका विश्वास है कि यदि अफ्रीका निवासी फ्रांसीसी नागरिक बन जाते हैं तो फिर वे अपना धर्म त्याग देंगे।

उत्तरी अफ्रीकन स्टार संस्था ने भी सामान्य नीति का विरोध किया है। यह एक राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी संस्था है और १९२६ ई० में स्थापित की गई है। इसका नेता मेसाली हाज था। वह पहले शेकिब अर्सलान का मित्र था। मेसाली ने अपनी और दूसरी माँगों के सिवा एक माँग यह भी पेश की है कि अल्जीरिया को स्वतंत्रता प्रदान की जाय। अफ्रीकन स्टार संस्था पेरिस के कारखानों में काम करने वाले अल्जीरिया निवासियों के बीच से उत्पन्न हुई थी। १९२९ ई० में वह भंग हो गई थी परन्तु १९३३ ई० में वह फिर से स्थापित हुई और उसी साल फिर छिन्न भिन्न कर दी गई। मैसाली ने जिनेवा में भाग कर अपनी जान की रक्षा किया।

जब फ्रांस में ब्लम की सरकार की स्थापना हुई तो वह पेरिस गया। वह अल्जीरिया में लौट कर आया और काम करने लगा परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् उसे दो साल का कारागार मिला और उससे नागरिक तथा राजनैतिक अधिकार छीन लिये गये। परन्तु फिर भी वहां की प्रजा उसका आदर करती रही।

फ्रान्स अल्जीरिया के राजनैतिक तथा धार्मिक उन्नति को नहीं रोक सकता इस बात को सोचते हुये मिस्टर ब्लन ने एक बिल बनाया जिससे २२ हज़ार अल्जीरियन को फ्रान्सीसी नागरिकों के अधिकार मिलने थे। परन्तु अल्जीरिया के फ्रान्सीसियों ने इसका इतना घोर विरोध किया कि ब्लन के पश्चात् जो सरकार फ्रान्स में स्थापित हुई उसे उस बिल को चैम्बर में पेश करने का साहस ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हुआ । मेसाली को इससे बड़ी खुशी हुई क्योंकि वह पहले से ही कहता था कि फ्रान्सीसियों के बचन का कदापि विश्वास नहीं है । फ्रान्सीसी सरकार ने वहां पर आर्थिक सुधार करके अपनी राजनैतिक झेंप को मिटाना चाहा परन्तु इससे कुछ अधिक लाभ नहीं हुआ ।

ट्यूनिस का शासन बे (Bay) और मोरक्को का शासन सुल्तान के हाथ में है । यह दोनों शासक फ्रान्स की संरक्षता में शासन करते हैं । इस प्रकार के शासन को बनाने वालों ने पहले ही यह सोच लिया था इन देशों का शासन इस प्रकार किया जाय कि उन पर किसी प्रकार का उत्तरदायित्व और जिम्मेदारी भी न हो और राज्य की बागडोर उन्हीं के हाथों में रहे । यही हाल ट्यूनिस तथा मोरक्को का है । वहां के फ्रांसीसी बड़े अफसरों ने वहां के मंत्रियों का कार्य अपने हाथों में ले लिया है । छोटे अफसर नौकर चाकर और फ्रांसीसी प्रजा ने भी वैसा ही किया है । इस प्रकार कहने को तो इन देशों पर बे और सुल्तान का शासन है परन्तु सचमुच यहां पर फ्रान्सीसी साम्राज्य का शासन है ।

इसी कारण ट्यूनिस के शिक्षित लोगों ने फ्रान्स की संरक्षता के बारे में प्रश्न करना आरम्भ कर दिये हैं वे उसका एकदम विरोध करने लगते हैं और कहते हैं कि बार्डो और ला मार्सा की संधियों के अनुसार फ्रान्स पर इस बात का भार है कि वह ट्यूनिस में शिक्षा का प्रचार अधिक करें और वहां के बहुमत वालों को वहाँ के शासन करने के लिये तयार करें ।

गत महासमर के पश्चात् ट्यूनिस में एक आन्दोलन वहां के विधान के लिये आरम्भ हुआ । इस आन्दोलन के नेताओं ने १९१९ ई० में एक प्रार्थना प्रेसीडेन्ट बिल्सन के पास भेजी । प्रार्थना में कहा गया था । कि वह ट्यूनिस को फिर पहले की दशा में देखना बर्तमान दशा से कहीं अच्छा समझते हैं । १९२० ई० में वहां पर डेस्टाऊ की स्थापना हुई । उस पार्टी ने अपना कार्य-क्रम बनाया और ट्यूनिस के निवासियों से अपील किया कि वे गुलामी की जंजीर से बाहर निकलने का प्रयत्न करें और एक ऐसा विधान तयार करें जिससे वहां का राज्य शासन बे और उसके परिवार वालों के हाथ में चला जाय । उसके पश्चात् फ्रान्स के प्रतिकूल प्रचार आरम्भ हुआ । फ्रान्स की सरकार ने आखिरकार १९२२ ई० में वहां के लिये विधान बनाया जिसके अनुसार धारा सभाओं की स्थापना हुई और प्रजा के चुने हुये सदस्य सभा में जाने लगे ।

उसके पश्चात् डस्टाऊर संस्था के दो भाग हो गये । १९३३ ई० से १९३६ ई० तक वहाँ पर फ्रान्स का दमन चक्र चलता रहा । इस दमन चक्र में नई डस्टाऊर संस्था को ही कष्ट उठाना पड़ा ।

१९३६ ई० में फ्रान्स में पापुलर फ्रांस सरकार की स्थापना हुई तो कारागारों के द्वार खुल गये । देश निकाले हुये लोग वापस बुलाये गये और उन्हें अपने स्वतंत्र मत को बतलाने की आज्ञा प्रदान की गई । एम० पीरे, चीनट के हाथ में मोरक्को और ट्यूनिस का भार सौंपा गया । परन्तु कोई विशेष सुधार न हुआ ।

ब्लम मन्त्री मण्डल के अन्त होने पर वहां पर फिर आन्दोलन ज़ोरों से आरम्भ हुआ । इसी बीच में पुरानी और नई डस्टाअर संस्था में झगड़ा हो गया । सारे देश में झगड़ा होने लगा । परन्तु जब नई संस्था ने देखा कि उसे पुरानी के सामने सफलता नहीं प्राप्त हो रही है तो उसे सरकार के दमन नीति का विरोध करने के लिये हड़ताल सारे देश में कराया । उसने मुसलमानों के संगठन पर भी ज़ोर दिया । पुरानी संस्था को उखाड़ देने के लिये उसके नेता बोरघीबा ने कहा कि फ्रान्स की संरक्षता का विरोध करना चाहिये और उसके लिये जान निछावर कर देनी चाहिये । उसने प्रजा को कर देने और सैनिक नौकरी करने से भी मना कर दिया ।

जब हिटलर ने आस्ट्रिया को धर दबोचा तो नई संस्था ने सोचा कि फ्रान्स की शक्ति हीन हो गई है इसलिये उसने ९ अप्रैल सन् १९३८ ई० को पुलीस पर आक्रमण किया । पुलीस ने गोली चलादी जिससे लगभग बीस आदमी मर गये और बहुत से घायल हुये । थोड़ी देर में सरकार ने बोरघीबा और उसके साथियों को कारागर में डाल दिया । संस्था गैर कानूनी बनाकर भंग कर दी गई ।

सच्ची बात तो यह है नाज़ी त्रास तथा इटली की मांगों के कारण ट्यूनिस में शांति हुई है । जब म्यूनिक का समाचार ट्यूनिस को मिला तो वहां बिलकुल शान्ति थी । वहां की प्रजा उस समय पहले से कहीं अधिक इस बात को समझ रही थी कि फ्रांस की संरक्षता में होने से उसे क्या लाभ है । जब दिसम्बर में मुसोलिनी ने लावेल की संधि को भङ्ग किया और फैसिस्ट पत्रों ने ट्यूनिस को इटैलियन साम्राज्य में सम्मिलित करने के लिये आवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाया तो व्यूनिस वालों को ज्ञान हुआ कि उनके साथी कौन हैं। पहले व्यूनिस वाले फैसिस्ट दल को बहुत अच्छा समझते थे और उसका स्वागत करने पर तयार थे परन्तु जब लीबिया इटैलियन राज्य में सम्मिलित कर लिया गया और वहाँ पर २० हज़ार इटैलियन बसने को भेज दिये गये। जब इटली ने घोषणा किया कि और भी इटैलियन मुसलिम स्थानों में रहने के लिये भेजे जावेंगे तो मुसलमान देशों का बड़ा शोक पहुँचा। यहां तक कि शेख अर्सलाम (जो मुसोलिनी को बहुत अच्छा समझते थे) उन्होंने भी इटली के अधिकता का विरोध किया।

मोरक्को में भी व्यूनिस की भांति राष्ट्रीय आन्दोलन बहुत शीघ्र जोर पकड़ गया। वहां के विद्यार्थी पेरिस विद्याध्ययन करने के लिये गये और वहां पर उन्होंने प्रजातांत्रिक नियमों को वहां के वाम पक्षियों से सीखा। वहाँ के वामपक्ष वाले नेता पूंजीवाद के विरुद्ध थे। मोरक्को लौट कर उन विद्यार्थियों ने वहां पर राष्ट्रीय आन्दोलन का संगठन किया। यह आन्दोलन फ्रान्स के आदर्शों और नारों पर निर्भर करता था। यद्यपि राष्ट्रवादियों की संख्या बहुत कम थी तो भी वे बड़े काम करने वाले थे। उनके परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि पुराने अंध-विश्वासियों के भी वे नेता बन गये। १९२५ ई० में अब्दुलकरीम ने राष्ट्रीय आन्दोलन छेड़ते हुये मोरक्को की सरकार के विरुद्ध बगावत किया। यह फेज के द्वार तक पहुँचा और उसने मोरक्को वालों को दिखा दिया कि वर्तमान युद्ध-शस्त्रों के न होने के कारण ही मोरक्को की स्वतंत्रता प्राप्त होने में कठिनाई हो रही है।

रिफ युद्ध के आरम्भ होने से मोरक्को के राष्ट्रीय आन्दोलन का अंत हो गया। १६ मई सन् १९३० ई० में उनके आन्दोलन ने फिर ज़ोर पकड़ा। वे अपने इस्लामिक कानूनों के अनुसार ही अपने मुकदमों की कार्रवाई कराना चाहते थे। वहां की सरकार उसके विरुद्ध कर रही थी। इसी कारण यह आन्दोलन छिड़ा। जेरूसिलम में इस आन्दोलन की बड़ी प्रशंसा की गई।

वहाँ के नवयुवक शिक्षित जो आन्दोलन का संचालन कर रहे थे उन्होंने अपने कार्यक्रम के निर्माण करने में अपने देश के प्राचीन मुसलिम रिवाजों, अंध विश्वासों तथा फारस के क्रान्तिकारियों के नियमों का भी विचार किया था। १९३४ ई० में उन्होंने मोरक्को सुधार की योजना को तयार करके पेरिस के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के सामने रख दिया। यह योजना केरो के पत्रों में भी छाप दी गई। उसके पश्चात् अगस्त १९३७ ई० में मोरक्को के निवासियों ने हिंसात्मक आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरूप बहुत सी जानें गईं और फ्रांसीसी सरकार ने वहां के लोगों को बहुत बड़ी संख्या में कारागार में ठोंस दिया। जनरल नोग्गवीस उस समय वहां का रेज़ीडेन्ट था। उसने युवकों की कुछ मांगों को स्वीकार कर लिया और कैद किये हुये लोगों को अधिकांश संख्या में छोड़ दिया।

इस प्रकार फ्रांस की सरकार ने जो नीति उत्तरी अफ्रीका में निर्धारित किया है उससे उसे अधिक लाभ नहीं हुआ, केवल मोरक्को में उसे कुछ सफलता हुई परन्तु अल्जीरिया और व्यूनिस में उसे बिल्कुल सफलता प्राप्त नहीं हुई।

फ्रांस की सरकार उत्तरी अफ्रीका की शीघ्र बदलती दशा का सामना नहीं कर सकी उसी प्रकार वह लेवन्त, सीरिया और लेवनान में भी नहीं कर सकी। सीरिया में उसे पढ़ेलिखे आदमियों का सामना करना पड़ा जो तुर्की राज्य के समय उच्च पदों पर थे। लेबनान के अधिकांश निवासी ईसाई थे। शिक्षा के कारण अन पढ़ों की संख्या वहां केवल १६ प्रतिशत हो गई थी। वहां के फ्रांसीसी अफसरों को वहां के राजनैतिक क्षेत्र में बढ़े हुये प्रान्तों में शासन करने का अभ्यास न था।

पेरिस की सरकार और मैनडेट प्रान्त के फ्रांसीसी अफसर यह नहीं जानते थे कि लेवेनटाइन राज्यों के शासन करने का क्या रहस्य है। कुछ लोगों का ख्याल था कि उसे उसकी स्वतंत्रता की ओर ले जाने का भार फ्रांस पर है। कुछ का ख्याल था कि फ्रांस उसे सैनिक, राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में उन्नति देना चाहता है। जेबेल-ड्रस, दमिश्क और माउन्ट हर्मन और दक्षिणी लेबन में गदर हो गया। १९२५ ई० में जेबेल ड्रूसे माउन्ट, हेरमन और दक्षिणी लेबनान में गदर हो गया। इस गदर को शान्त करने के पश्चात् फ्रान्स की सरकार किसी भी स्पष्ट नीति का अनुसरण नहीं कर सकी। फ्रांस की सरकार ने वहां की प्रजा पर बहुत अत्याचार किया। फ्रांसीसी सरकार ने जब देखा कि देश में शान्ति स्थापित नहीं हुई तो उसने जून सन् १९३१ ई० में पैरामाउन्ट मैनडेट कमीशन के फ्रांसीसी प्रतिनिधियों ने घोषणा किया कि लेबनान और सीरिया के मैनडेट का अंत शीघ्र ही हो जावेगा। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस घोषणा के सुनने और इराक के स्वतंत्र होने से यहां के लोग किसी प्रकार भी संधि करने पर राजी नहीं होते थे।

१० जनवरी सन् १९३६ ई० को वहां के निवासियों ने अपने आन्दोलन को आरम्भ किया। बाज़ार १८ जनवरी से १४ फरवरी तक बन्द रखे गये। विदेशी कम्पनियों का बायकाट किया गया। दमिश्क, होम्स, अलेपो और डीरेज़ोर में बलवा होगया जिसके कारण ६० आदमी मारे गये और हज़ारों की संख्या में घायल हुये। १ मार्च को फ्रान्स ने प्रतिज्ञा किया कि वह सीरिया को वही अधिकार देगी जो ब्रिटेन ने इराक को प्रदान किये हैं।

३ सितम्बर को एम० वीनट ने सीरियन प्रतिनिधियों के प्रधान हशीम-बे-उल-अत्तासी के साथ एक मूल पत्र पर हस्ताक्षर किया। १३ नवम्बर को लेबनान के साथ और २२ दिसम्बर को सीरिया के साथ संधि हुई। लेबनान सीरिया से अलग कर दिया गया और प्रत्येक की सरकारें अलग अलग बनाई गईं। सीरिया के तीन वर्ष के भीतर स्वतंत्रता मिलने को थी उसके बदले में सीरिया ने फ्रांस से २५ साल के लिये संधि किया और कुछ सैनिक आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी शर्तों को पालन करने का बचन दिया।

कुछ समय तक सीरिया में शान्ति रही और मालूम हुआ कि वहां के अफसरों और राष्ट्रवादियों में मेल हो गया है परन्तु फ्रांस की सरकार ने जब संधि का पार्लियामेन्ट के सामने पेश करने में बिलम्ब किया और अल्पमत वालों की मांगों को अधिक जोर दिया गया तो सीरिया वालों ने सोचा कि फ्रांस उनकी संधि को कुचल डालना चाहता है। ऐसी दशा में अग्रगामी राष्ट्रीय दल ने फ्रांसीसी सरकार के विरुद्ध 'जेहाद' (पवित्र युद्ध) करने का संकल्प किया। जिससे फ्रान्स उनकी मांगों को स्वीकार करने पर मजबूर हो जावे।

ऐसी बुरी परिस्थिति में जमील मर्दन बे सीरिया का प्रधान मन्त्री पेरिस समझौते की बातें करने के लिये गया। और फ्रांस के विदेशी मन्त्री बोनेट से उससे बातें हुईं और दोनों के बीच समझौता होगया। परन्तु जमील मर्दन बे लौट कर घर भी न पहुँचा था कि बेनेट ने घोषणा किया कि इस समय कुछ कारणों से संधि चैम्बर के सामने स्वीकृति के लिये नहीं लाई जा सकती है। जमील मर्दन ने स्तीफा दे दिया। उसके बाद दो सरकारें और बनीं और कुछ ही सप्ताह में उनका भी अंत हो गया आखिर वहां के हाई कमिशनर ने पुलीस के अधिकार अपने हाथ में ले लिया और दमिश्क पर अधिकार कर लिया। उसने कुछ अधिकार अल्प संख्यक लोगों को प्रदान किया जिससे हशीम बे-उल-अत्तासी ने पद त्याग दिया।

हाई कमिश्नर को मज़बूर होकर वहाँ के विधान को रोकना पड़ा। धारा सभाएँ भंग कर दी गईं और उससे सारी शक्तियां अपने चुने हुये लोगों के हाथों में दे दी।

वर्तमान महासमर के आरम्भ में सीरिया को गदर करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ था परन्तु उसने गदर करने के बजाय मित्र राष्ट्रों का साथ देने का संकल्प किया है। दमिश्क, ट्युनिस, अल्जीरिया और फेज़ सभी स्थानों पर हिटलर का विरोध किया गया। सभी लोग फैसिस्ट के विरुद्ध थे।

स्पेन (जनरल फ्रैंको) इटली (मुसोलिनी) जर्मनी (हिटलर) सभी फैसिस्ट हैं और अरब नीति के विरुद्ध हैं। वे अरबों को हर प्रकार हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। मुसोलनी ने १९३७ ई० में इस्लाम प्रोटेक्टर बनाया परन्तु उसने इथोपिया और लिबिया में जिस नीति का अनुसरण किया है उससे साफ ज़ाहिर है कि वह अरबों के विरुद्ध है।

रूमसागर में अरब लोग जो भाग लेंगे वह बड़े महत्व का होगा। रूम सागर में इँगलैण्ड, फ्रान्स, इटली और स्पेन सभी का बराबर लाभ है।

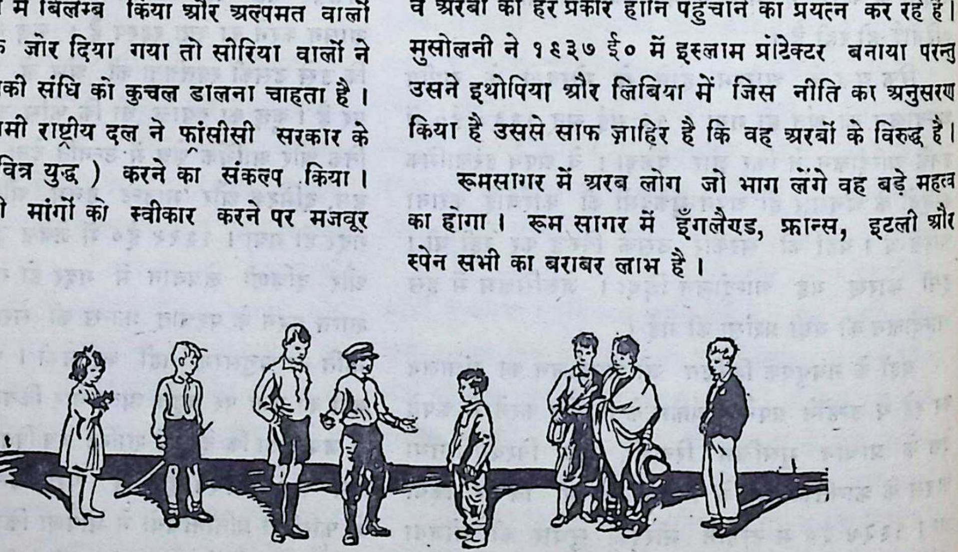

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई युद्ध

अब तक वायुयानों द्वारा जो युद्ध हुआ है वह बड़ा ही अद्भुत हुआ है। लोग आशा करते थे कि विद्युत्-युद्ध का पूरा प्रकोप पश्चिम के राष्ट्रों में होगा किन्तु अब तक वैसी कोई बात नहीं हुई है। पोलैंड में इसका अच्छा प्रदर्शन हुआ है और वह इसके द्वारा बिलकुल पीस डाला गया है। वायुयानों से समुद्र में भी बहुत कुछ खतरा था और कहा जाता था कि जहाज पर बम बर्षा कर के जहाज़ तोड़ डाले जावेंगे किन्तु उसके विपरीत हुआ और पनडुब्बों ने अधिक हानि पहुँचाई है। अँग्रेज़ों ने अपने वायुयानों द्वारा अवश्य कुछ पनडुब्बों पर बम बर्षा कर उन्हें तोड़ दिया है।

हवाई वायुयानों पर विश्वास रखने वालों की प्रतिज्ञा जर्मन वायुयानों ने पोलैण्ड में पूरी कर दिखाई है। जर्मन वायुयानों को पृथ्वी पर के मशीन वाले हथियारों से बहुत सहायता मिली है। पोलैंड का युद्ध सचमुच प्राचीन तथा वर्तमान युद्ध कौशल का प्रदर्शन था। पोलैंड की सेना १९:वीं शताब्दी की एक बहादुर सेना को भांति सुसज्जित थी, जर्मनी सेना तो २०वीं शताब्दी की सेना थी ही। पोलिश सेना जर्मन सेना के सामने मांस का एक लोथड़ा थी। २०वीं शताब्दी वाली सेना को सब कहीं युद्ध में विजय प्राप्त हुई। पोलैण्ड की हार एक दुखान्त नाटक की भांति हुई है।

पोलैंड में हवाई युद्ध का निर्णय सचमुच केवल १ दिन में हुआ है। पहले पहल दिन (पहली सितम्बर को) ही जर्मन वायुयानों ने पोलैंड के हवाई अड्डों तथा रेलवे जङ्कशनों और मोर्चे वाले स्थानों पर अचानक गोलों की वर्षा करके उन्हें नष्ट कर डाला। उस समय पोलैंड की सेना लड़ने को तयार न थी। पोलैंड को समझौते की आशा बनी हुई थी। जर्मनी की शक्ति पोलैंड से कहीं अधिक बढ़ी चढ़ी थी।

जर्मनी ने जिस चतुर्ता के साथ युद्ध जीता है वह सचमुच घटनाओं से कहीं विपरीत है। हिटलर ने पहली सितम्बर को राइस्टैग में घोषणा की थी कि वह स्त्रियों तथा बच्चों के विरुद्ध युद्ध नहीं करेगा किन्तु इस घोषणा के ४ हफ्ते के भीतर ही खून किया और जर्मन सेना ने पोलिश स्त्रियों और बच्चों की बुरी तरह हत्या की। हिटलर ने प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट की अपील के उत्तर में भी कहा था कि "मैंने अपनी हवाई सेना को मनाही कर दी है कि वह नागरिकों पर आक्रमण न करे। मेरी आज्ञानुसार मेरी हवाई सेना का आक्रमण केवल सेना तथा सैनिक अड्डों पर ही होगा।"

युद्ध के आरम्भ में जर्मन वायुयानों ने सचमुच ही हिटलर के कथनानुसार सैनिक अड्डों तथा सैनिक स्थानों पर ही गोलों की बर्षा की थी। इस बात का समर्थन मिस्टर एच० सी० ग्रीन लन्दन दैनिक टेलीग्राफ के सम्बाददाता तथा मिस्टर बटलर ने भी किया है। मिस्टर बटलर ने ६ तारीख के बयान में कहा है कि "जर्मन वायुयानों ने पुलों, सड़कों तथा हवाई अड्डों पर बम बर्षाए हैं और उन्हें कुछ हानि भी हुई है किन्तु उसी के बाद यह सम्वाद प्रकाशित हुआ कि जर्मन लोग पोलैंड के नागरिकों पर भी बम बर्षा कर उन्हें भयभीत कर रहे हैं।"

जो रिपोर्ट युद्ध करने वाले दलों से हमें प्राप्त होती हैं, उन्हें बहुत छान बीन करने के पश्चात् मानना पड़ता है, क्योंकि ऐसी रिपोर्टें अधिकांश प्रचारार्थ प्रकाशित की जाती हैं। पत्रकार या सम्बाददाताओं को भी युद्ध क्षेत्र में जो कुछ बतलाया जाता है वे उसी से प्रभावित हो जाते हैं और इसीलिये ठीक ठीक युद्ध का समाचार प्रकाशित नहीं हो सकता। जर्मन सेना तथा वायुयानों के अत्याचार के बारे में पोलैंड की जो बातें प्रकाशित हुई हैं उनमें बहुत कम सत्यता है। ये समाचार जर्मन के विरुद्ध प्रचार फैलाने के लिये बढ़ा कर प्रकाशित किये गये हैं। दूसरी सितम्बर के समाचार में यह प्रकाशित किया था कि जर्मन वायुयानों ने वहां के किसानों तथा खेतों पर बम बर्षा की है। यह बात असम्भव सी प्रतीत होती है। फिर जर्मन वायुयानों के बारे में कहा गया है कि वे स्त्री बच्चों के ऊपर बम बर्षा कर उनकी हत्या बड़ी निर्दयता के साथ कर रहे हैं, यह बात भी असम्भव मालूम होती है।

बेशक बहुत से ऐसे स्थानों पर बम वर्षा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है जो युद्ध क्षेत्र नहीं थे और न वहाँ पर सेना का अड्डा ही था। उन्हीं स्थानों में से एक टोमास्जाऊ नामक गाँव था, जहाँ पर बुरी तरह बम बर्षा की गई। यह टाइम्स के सम्बाददाता द्वारा ज्ञात हुआ है जो पोलिश सीमा पर युद्ध के समय मौजूद था। डाक्टर आस्कर (हँगेरियन आफीसर) ने बुडापेस्ट के एक पत्र में प्रकाशित कराया था कि जर्मन वायुयानों ने नगर के ऊपर कई बार बमों द्वारा आक्रमण किया यह सभी आक्रमण आम जनता पर हुये हैं जिनसे सेना से कोई सम्बन्ध न था। मिस्टर बिडिल अमरीकन ऐम्बेसेडर जो पोलैंड में थे उन्होंने काफी समाचार वहां के बतलाये हैं। उनके कथनानुसार जर्मन बम बरसाने वालों ने उनके निवास स्थान, गाँव, हास्पिटल, सैनेटोरियम आदि जो वारसा के समीप थे सभी पर बम वर्षाये। उनका कहना है कि वे जब अपने स्थान से एक दूसरे गाँव में गये तो वहाँ भो बम बर्षा की गई। उनका यह भी कहना है कि जर्मन लोग स्वयम् नहीं समझ सकते थे कि वे वहां और किस पर बम गिरा रहे हैं। मिस्टर बिडिल के कथन का समर्थन पोलैंड के ब्रिटिश राजदूत ने भी किया है।

निस्संदेह ही जर्मन वायुयानों ने बहुत से गावों पर आक्रमण किया और बम बर्षा की। वारसा में वेलवेड्रे लैजीन्की महल, पार्लियामेन्ट भवन, सोवियट तथा रोमानियन राजदूतों के घर लैटवियन लिगेशन और बहुत से हास्पिटल तथा चर्चों पर बम बर्षा करके ढा दिये गये। जब पोलैंड वालों ने आत्मसमर्पण कर दिया तो उसके पश्चात् डेनमार्क का एक सम्वाददाता वारसा गया। उसके कथनानुसार बहुत से नगरों पर बम बर्षा हुई और उनके एक भी मकान समूचा बाकी नहीं रहा। प्राग नगर के चारों ओर बम बर्षा कर उसे बिलकुल जमीन से मिला दिया गया। नागरिक लोगों की बम बर्षा से बहुत ज्यादा हानि हुई है। यह बर्बादी तोपों के गोलों के कारण भी हुई है किन्तु उसमें जर्मन वायुयानों का भी एक बड़ा भाग था।

जर्मन हाई कमान्ड द्वारा २५ सितम्बर को यह रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी कि "वारसा के सैनिक अड्डों पर सफलता पूर्वक आक्रमण हुआ है" जब २७ सितम्बर को वारसा में आर्मिस्टिस दिवस की मांग हुई तो १६००० सैनिक तथा २००० नागरिक स्पताल में पड़े थे। निस्संदेह ही वारसा बम द्वारा उड़ाया गया है। यह बात या तो जर्मन लोगों ने भय भीत करने के लिये किया है या अपनी प्रकृति के अनुसार किया हो। यह बात जर्मन सेना के लिये कोई नई बात न थी। १८७०-७१ के फ्रैंको जर्मन युद्ध के समय स्ट्रासबर्ग नगर भी गोलों द्वारा ढाया गया था ताकि नागरिक लोग गवर्नर को किला देने पर मजबूर कर दें पर उसके विपरीत बात हुई और नागरिक लड़ने पर तयार हो गये।

वही बात ७० साल बाद फिर वारसा नगर में दुहराई गई और उसका वही परिणाम हुआ जो पहले हुआ था। नागरिक सामना करने पर तयार हो गये और उन्होंने युद्ध किया, भोजन न मिलने पर मजबूर होकर उन्होंने आत्म समर्पण किया। हर हिटलर ने १९ सितम्बर के भाषण में यह घोषणा की कि यदि इंगलैंड जर्मनी का ब्लाकेड करेगा तो हम ऐसे अस्त्र का प्रयोग करेंगे, जिससे हम दूसरे को मारेंगे और दूसरा उसे हमारे मारने के लिये प्रयोग नहीं कर सकेगा। उसका मतलब गुप्त अस्त्र से है चाहे जहरीली गैस का हो अथवा और कोई दूसरी चीज हो जो वायुयानों द्वारा प्रयोग की जा सके।

जो सफलता जर्मन वायुयानों को पोलैण्ड में हुई है वह सफलता उसे पश्चिमी सीमा पर नहीं हो सकती। पोलैंड की हवाई शक्ति जर्मन हवाई शक्ति से कहीं कम थी और वह जर्मन का सामना कर ही नहीं सकता था। पश्चिमी सीमा की दशा पोलैंड के अनुसार बिलकुल विपरीत होगी। यहां पर जर्मन के वायुयान संख्या तथा विशेषता दोनों में फ्रैन्को-ब्रिटिश वायुयानों से बढ़ कर न होंगे। पोलैंड पर जर्मनी ने ३००० वायुयानों से आक्रमण किया था, पश्चिमी सीमा पर उसके चार हजार अथवा इससे भी अधिक हो सकते हैं किन्तु मित्र राष्ट्रों के वायुयान संख्या में उनसे कम न होंगे। निस्संदेह ही जर्मनी के हीनकेल, जंकर्स, डोरनीर, हेन्सचेल आदि हवाई जहाज बहादुर तथा शक्तिशाली बम बरसाने वाले हैं किन्तु विलिंगडन, ब्लेनहीम्स आमिस्ट्रांग्स, ल्वाएर-एट-ओलीवोर्स आदि जहाज उनके मुकाबले के दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी हैं। जर्मनी का कोई भी बम बरसाने वाला वायुयान फ्रांस के वायुयानों के बराबर बम नहीं ले जा सकता फ्रान्स के आधुनिक वायुयान फारमैन २२३ फ्रेन्चमारेन ४०६ सी ब्लाच १५१ बम अपने पास रख सकते हैं। ब्रिटिश ग्वाइट फाएर तथा हाकर वायुयान प्रथम श्रेणी में गिने जाते हैं। सर किंग्स्लेवुड ने अपने १० अक्तूबर के भाषण में कहा है कि अँग्रेज़ी हवाई लड़ाकू वायुयान जर्मन लड़ाकू वायुयानों से कहीं अच्छे हैं।

फ्रान्स के नये वायुयानों की मशीनें बिलकुल आधुनिक हैं। म्यूनिच समझौते के समय फ्रान्स के पास हवाई शक्ति न थी अब फ्रान्स के पास एक शक्तिशाली और अच्छी हवाई शक्ति हो गई है। वहाँ के कारखाने नई नई मशीनों को तयार कर रहे हैं, अमरीका भी उसे जहाज़ों द्वारा सहायता दे रहा है।

जो युद्ध हो चुके हैं उनसे पता चलता है कि लड़ाकू वायुयान बाम्बर तथा प्राथमिक आक्रमण करने वाले वायुयानों के मास्टर होते हैं। जिन लोगों ने स्पेन के युद्ध को देखा है, वे इस बात को अच्छी प्रकार जानते हैं कि बम बरसाने वाली मशीन अपनी रक्षा नहीं कर सकती। वर्तमान समय के बम बरसाने वाले वायुयान लड़ाकू वायुयानों का मुकाबला नहीं कर सकते। जब हेलगोलैण्डब्राइट में ब्रिटिश बम बरसाने वाले वायुयानों ने २५ सितम्बर को जर्मन लड़ाकू जहाज़ों पर आक्रमण किया था तो ६ वायुयानों में से ५ गिरा लिये गये थे। यह बात अँग्रेज़ों ने भी स्वीकार की है। जर्मन आक्रमण करने वाले जहाज़ों में से अधिकांश गिराये गये हैं। स्पेन तथा पोलैंड के युद्धों से सिद्ध हो चुका है कि आक्रमण को सफलीभूत बनाने के लिये वायुयानों का आक्रमण आवश्यक है। साथ ही साथ यह बात भी माननीय है कि एन्टी-एअर-क्रेफ्ट गनें बर्तमान युद्ध में बड़ी सहायक सिद्ध हुई हैं। इनके सामने बम वर्षा करने वाले वायुयानों की दाल नहीं गलती। गत महायुद्ध में उड़ाके 'आर्की' (गोला मारने वाली मशीन) का मज़ाक उड़ाते थे किन्तु अब यह बात नहीं है। सर सेमुअल होर के कहने के अनुसार इंगलैंड के पास सब से अच्छी तथा शक्ति-शाली ऐन्टी-एअर क्रैफ्ट गन है।

समुद्री तोपें जो वायुयानों को गोलों द्वारा गिराती हैं वे अब काफी शक्तिशाली हो गई हैं। जब उत्तरी सागर में जर्मन वायुयानों ने २६ सितम्बर को अँग्रेज़ समुद्री जहाज़ के अड्डे पर बम बरसाया तो उसके फल स्वरूप वायुयान गिराने वाली तोपों का प्रयोग किया गया, जिससे २ वायुयान गिरे किन्तु अँग्रेज़ों की कोई हानि नहीं हुई। यही दशा ९ अक्तूबर वाले जर्मन आक्रमणकारी जहाज़ों की भी हुई है।

रक्षक यन्त्रों से बृद्धि तथा शक्तिशाली हो जाने के कारण आक्रमणकारियों का प्रश्न बड़ा जटिल हो गया है। इसी कारण बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा आक्रमण नहीं हो रहा है। दिन में यह आक्रमण होना बड़ा ही कठिन तथा असम्भव है क्योंकि आक्रमण कारियों को बहुत बड़ी हानि की सम्भावना है। बदली तथा कुहरे वाले दिन अथवा रात के समय कुछ सफलता आवश्य ही प्राप्त हो सकती है, किन्तु उस दशा में भी ऊपर से बम गिराने वाले वायुयानों को ठीक ठीक नियत स्थान का पता नहीं चल सकता यदि वे १०० बम गिरावेंगे तो कहीं उनका १ बम ठीक नियत स्थान पर गिरेगा और मकानों को हानि पहुँचावेंगे बाकी ९९ बेकार हो जावेंगे। बम बड़े बहुमूल्य होते हैं इसलिये वे बेकार नहीं फेंके जा सकते फिर ऐन्टी एअर क्रैफ्ट तोपें बम फेंकने वाले वायुयानों का शिकार कर लेंगी। बाहरी भीतरी तथा बीच वाली तोपों की बौछार का सहन करना भी कोई आसान बात नहीं है। इसी कारण जर्मनी का साहस आक्रमण करने का नहीं हो रहा है।

एकाएक बम बर्षा करने का साहस न तो जर्मनी कर रहा है और न फ्रान्स अथवा इंगलैण्ड ही का साहस होता है। इसके कई कारण हैं। पहला यह कि जो कोई भी इसे आरम्भ करेगा उसके विरुद्ध तटस्थ देश हो जावेंगे। विपरीत दल भयभीत होने के बजाय नष्ट होने अथवा नष्ट कर देने पर तयार हो जावेंगे। फिर दोनों दल (जर्मनी तथा मित्र राष्ट्र) हवाई शक्ति में लगभग बराबर हैं, इसलिये आक्रमणकारी को यह भय लग रहा है कि कहीं उसका विपरीत दल उसके आक्रमण के त्रुटि से लाभ उठा कर और अधिक शक्तिशाली आक्रमण न कर बैठे। उस समय फिर सैनिक स्थानों पर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रमण सीमित न रह कर और दूसरे स्थानों पर भी फैल जावेगा। जो कुछ भी मुख्य कारण है दोनों दल वायुयानों द्वारा बम बर्षा युद्ध क्षेत्र से दूर देश के भीतर वाली चीज़ों पर करने के लिये तयार नहीं है।

देश के भीतर घुस कर आक्रमण हुये हैं किन्तु वे आक्रमण केवल प्रचारार्थ हुये हैं। उन वायुयानों ने केवल नोटिस वायुयानों द्वारा गिराई हैं। ब्रिटिश वायुयानों ने पहले पहल यही कार्य किया है, इस पर लोगों को कुछ थोड़ा अचम्भा भी हुआ है, किन्तु यह बात अचम्भे की नहीं है। जर्मन वायुयानों ने गत महायुद्ध में हिन्दुस्तानी सेना के बीच पर्चे गिराये थे और उन्हें गदर करने के लिये बहकाया था। १९१५ ई० में जर्मन-टर्किश वायुयानों ने गाल्लीपोली में सेनेगाली सेना के बीच पर्चे गिराए थे। फ्रान्स के हवाई जहाजों ने जर्मन सेना के बीच ऐसे ही पर्चे गिराकर उन्हें बताया था कि इटली मित्र-राष्ट्रों की ओर से युद्ध में आ गया है। अमरीका का युद्ध में सम्मिलित होना भी इसी प्रकार बताया गया था। प्रेसीडेन्ट विलसन ने १९१२ में जो घोषणा की थी उसका प्रचार भी इसी प्रकार हुआ था।

अभी वर्तमान समय में राएल एअर फोर्स जो पर्चे जर्मनी में गिराये हैं, वे एक ईंट की शकल में गिराये गये थे वे पर्चे मार्ग में चारों ओर तितर बितर हो गये थे। मामूली लोग इस को केवल एक मज़ाक समझते हैं किन्तु ऐसी बात नहीं है। जर्मन ने इन पर्चों के पढ़ने वालों को बहुत कुछ भय दिखाया है। इन पर्चों का प्रभाव उतने ही वज़न वाले बम से किसी भांति कम नहीं है। इस के सिवा अँग्रेज वायुयानों ने जर्मनी के अन्दर उड़कर दिखा दिया कि उत्तरी-पश्चिमी तथा मध्यवर्ती जर्मनी अँग्रेजी वायुयानों की सीमा के अन्दर है क्योंकि फील्ड मार्शल गोरिंग ने कहा कि अगर कोई वैरी हवाई जहाज़ जर्मन सीमा को पार करेगा तो वह शीघ्र ही गिरा दिया जावेगा।

इंगलैंड को पहले ही से शक था कि जर्मनी के वायुयान वहाँ आक्रमण करेंगे। इसी कारण वहाँ हर एक तरह की तयारी पहले ही से कर ली गई थी। खतरे वाले स्थान बिलकुल खाली कर दिये गये थे। हवाई आक्रमण से घायल लोगों की मरहम पट्टी के लिये हज़ारों स्पताली चारपाइयां बनवा ली गई थीं। डाक्टर, नर्स, हवाई आक्रमण के वार्डेन, आक्रमणकारियों का सामना करने वाले ये सभी बिलकुल तयार खड़े थे कि आवश्यकता पड़ने पर शीघ्र ही सहायता दें। किन्तु कुछ न हुआ। लाग प्रश्न करने लगे कि क्या कुछ न होगा? इस प्रश्न का उत्तर अभी तक नहीं मिला है। यह उत्तर किसी समय भी मिल सकता है। जर्मन लोगों के आक्रमण न होने के कारण ही अँग्रेज वायुयान जर्मनी के भीतर गये नहीं तो वे कभी भी भीतर न जाते। इंगलैंड पर यह आक्रमण एक के बाद दूसरा बराबर कुछ समय तक मैगीनेट लाइन को तोड़ने के लिये होगा जिससे सभी अस्त्र-शस्त्र वहीं आ जांय। यदि मैगीनेट लाइन शक्तिशाली बमों द्वारा बराबर की जावेगी और बड़े देव रूपी टैन्कों से धावा बोलेंगे तो ऐसे आक्रमण को रोकने के लिये मित्र राष्ट्र को अपनी सारी शक्ति लगा देनी पड़ेगी तब कहीं जा कर वे जर्मनी का सामना कर सकेंगे।

चाहे आक्रमणकारी लन्दन पेरिस तक पहुँचे या न पहुँचे वे चाहे आक्रमण द्वारा देश का तहसा-नहस करे अथवा छोड़ दें किन्तु इन सब बातों से हार जीत का निपटारा नहीं हो सकता। जो दल समुद्री शक्ति में अधिक शक्तिशाली होगा उसी की विजय होगी एडमिरल माहन का यह कथन फिर से कदाचित् सत्य हो। हवाई शक्ति समुद्री शक्ति का सामना नहीं कर सकती।

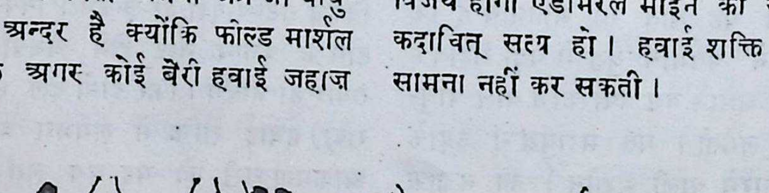

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिनलैण्ड ने संधि क्यों की ?

फिनिश लोग रूस से लड़ना नहीं चाहते थे। चेक लोगों की भांति उन लोगों से यह बात कभी भी नहीं कही गई। "यह करो नहीं तो हम आक्रमण करेंगे" उन पर एकाएक आक्रमण किया गया। वे लड़े और हार गये।

फिनिश लोगों ने बहादुरी के साथ सामना किया और खूब लड़े किन्तु इससे किसी प्रकार का भी कोई अच्छा प्रभाव नहीं हुआ। उन्हें किसी प्रकार की भी चेतावनी रूस की ओर से नहीं दी गई। स्टैलिन ने आक्रमण करने के पहले अंतिम समय में कोई भी ऐसा प्रयत्न नहीं किया जिससे बिना युद्ध के जो चाहता था ले सकता था।

२९ नवम्बर को सोवियट के राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ दिये गये। हां कहा जाता है कि कोई घटना सीमा पर अवश्य हुई थी। इस घटना को फिनिश लोगों ने एक मामूली घटना समझा था। उसके दूसरे दिन ही रूसी बम वर्षा करने वाले जहाज एकाएक हेलिसंकी के ऊपर उड़ते हुये दिखाई पड़े। रात को आक्रमण हुआ और बम वर्षा से लगभग ६० व्यक्ति मारे गये।

फिनिश मन्त्री मंडल प्रथम आक्रमण तक धोके में पड़ी रही और यह नहीं समझ सकी कि युद्ध करना होगा। उन्होंने प्रथम आक्रमण के पश्चात् तीन दिन तक अपने स्कूलों को खोल रक्खा था।

हेलिसंकी के बहुत से लोगों का कहना है कि यदि सोवियट अपनी शर्तें फिनलैंड के सामने अंतिम समय पर पेश करता तो शायद युद्ध के बिना ही उसकी शर्तें फिनलैंड स्वीकार कर लेता। फिनिश एक सूरमा जाति है किन्तु वह बेवकूफ जाति नहीं है। वह स्वयम् इस बात को जानती थी कि वह अकेली रूस का सामना नहीं कर सकती थी। पहली दिसम्बर को जो फिनिश सरकार एम० रीटी की अध्यक्षता में बनी उसने शीघ्र ही स्वीडन के द्वारा रूस से बात चीत आरम्भ कर दी किन्तु रूस ने उसकी तनिक भी परवाह नहीं किया।

फिनलैंड ने अपनी रक्षा करने का भरसक प्रयत्न किया जिससे उन्हें रूसियों के साथ ऐसी संधि न करनी पड़े जिसमें उनका अनादर हो। उन्होंने हैंगो अथवा स्थमस को बचाने के लिये युद्ध नहीं किया वरन् वह अपनी सत्ता के लिये युद्ध कर रहे थे।

उत्तर की ओर रूसी आक्रमण को सफलता प्राप्त नहीं हुई। एक के बाद दूसरा आक्रमणकारी रूसी जत्था आया और पीछे हटा दिया गया।

स्थमस की रक्षा होती रही। रूसी सेना को मालूम हो गया कि स्थमस की रक्षा अनुमान से कहीं अधिक हो रही है। उसी समय अँग्रेजों ने फिनलैंड को सहायता पहुँचाने के लिये कहा।

अँग्रेजों की सहायता लेने से फिनलैंड के राजनितिज्ञ उतनी ही डरे जितना कि उन्हें उत्साह मिला। उनका विश्वास था और स्वीडन भी उनके कान भर रहा था कि यदि अँग्रेज़ और फ्रान्सीसी उसकी सहायता के लिये आये तो फिनलैंड जर्मनी और मित्र राष्ट्रों का युद्ध क्षेत्र बन जावेगा।

जब आल्टमार्क की घटना हुई तो स्वीडन चिल्ला उठा। सारे स्कैंडोनैविया प्रान्त को भय प्रतीत हुआ स्वीडन के लोग चिल्ला उठे और उन्होंने संधि कराने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न किया। इसलिये आल्टमार्क जहाज के जाने की घटना संधि का एक अंग बन गई।

दूसरा कारण संधि करने का यह हुआ कि फिनलैंड वाले डरते थे कि यदि गरमी के दिन आ गये तो रूसी बम बर्षाने वाले जहाज बम वर्षा करके उनके जंगलों में आग लगा देंगे और उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो जावेगी। फिनलैंड के जंगल को ठीक तौर पर तयार होने में चालीस साल लगते हैं। जंगल ही उसका मुख्य धन है। यदि जून मास तक युद्ध चलता तो रूसी बाम्बर्स अवश्य ही जंगलों में आग लगा देते और फिनलैंड की सम्पत्ति का सत्या नाश कर देते।

तीन महीने के घमासान युद्ध के बाद २ लाख रूसी सैनिक खेत रहे और रूस को संधि में वही हुआ जो उसे विना युद्ध के पहले रूस ने अंतिम चेतावनी क्यों नहीं दी यह एक बड़े भारी भेद की बात है और यह सोवियट राजनीतिज्ञों की बड़ी भारी भूल हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि सीमावर्ती रूसी अफसरों ने फिनिश आक्रमण को तोड़ने तथा फिनिश सेना को दबाने के लिये यह कार्य आरम्भ किया था। किन्तु सचमुच बात तो यह है कि न तो शेरेनोव का कार्य था और न लैनिनग्रेड के सैनिक जिले का वरन् युद्ध तथा आक्रमण की आज्ञा मास्को से दी गई थी।

मालूम होता है कि जब इटैलियन का मस्तिष्क युद्ध के सम्बन्ध में डांवाडोल में पड़ा था उसी समय शैडनाव और लैनिन ग्रेड के जनरलों और कूसीनेन ने स्टैलिन को विश्वास दिलाया कि आक्रमण करने में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो जावेगी। और फ़िनलैंड में शिघ्रही कम्यूनिष्ट आन्दोलन छिड़ जावेगा।

रूसी जनरलों ने इटैलियन को यह भी विश्वास दिलाया कि यदि आक्रमण में शीघ्रता न की गई तो शायद उसका परिणाम रूस को भयानक सिद्ध हो। इसके सिवा जब इटैलियन ने एक बार आज्ञा दे दी। और प्रथम हवाई आक्रमण हेल्सिंकी पर हो गया। तो फिर पीछे पांव हटाना भी बड़ा कठिन कार्य था।

जब फिनिश जनरलों को मालूम हुआ कि सचमुच रूसी आक्रमण हो रहा है तो उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ।

लीक्सा के जनरल ने पहले पहल आक्रमण की रिपोर्ट फिनिश सैनिक अफसरों से की थी।

३० नवम्बर को रूसी सेना ने इनारी स्थान पर फिनिश सोमा को पार किया। उस समय लीक्सा के जनरल ने टेलीफोन द्वारा फिनिश सैनिक रेड को सूचित किया कि रूसी आक्रमण हो रहा है। वहां के अफसर को विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा कि "क्या यह बात सच है" कर्नल ने उत्तर दिया "बेशक ५ रूसी टैन्क जहां से मैं फोन कर रहा हूँ वहां से आते दिखाई पड़ रहे हैं।" उसके बाद युद्ध आरम्भ हो गया।

कूसैनेन को कम्यूनिस्ट आन्दोलन छेड़ने का मौका भी नहीं मिला। स्टैलिन को भी वहां अपनी गलती मालूम हुई। उसने साफ तौर पर ४ दिसम्बर को लीग को विश्वास दिलाया कि वह टेरीजोकी की सरकार को मानता है। स्टैलिन ने कूसिनेन को मार्च के महीने में अलग कर दिया और उसका परवाह न करते हुये रायटो की सरकार से संधि कर ली।

युद्ध के आदि से अंत तक कम्यूनिस्ट आन्दोलन का किंचित् मात्र भी भय फिनलैंड में नहीं था। युद्ध के पहले कम्यूनिस्ट पार्टी फिनलैंड में एक गैर कनूनी संस्था थी और उसमें लगभग ५०० सदस्य थे। अलेक्सी, आल्टोनेन जो १९१८ ई० में लाल सेना के अफसर और अब फिनिश सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी के मन्त्री हैं उनका कहना है कि कम्यूनिस्ट संस्था के कई हज़ार साथी थे।

५०० सदस्यों में से अधिकांश गिरफ़तार कर लिये गये और कम्यूनिस्ट दल से सहमत होने वालों की संख्या धीरे धीरे कम हो गई। सोवियट बम्ब वर्षाने वाले जहाज़ों ने अपने बम तथा नोटिसों की वर्षा की। नोटिसों में कहा गया कि रूसी लोग आ गये और वे अपने साथ शान्ति तथा प्रजातंत्र लाये हैं।

हेलसिन्की में दो बार कुछ उपद्रव अवश्य कम्यूनिस्ट दल की ओर से हुआ किन्तु बाद में शान्ति हो गई। रूसी वायुयानों ने अवश्य हा कम्यूनिस्ट पैराचयूट्स उतारे। उनमें से एक फिनलैंड का निवासी था जिसको देश निकालने की सज़ा दी गई थी और वह लेनिनग्रैड में रहता था। वह वाईपुरी के समीप उतारा गया था। जब उसे गिरफ़तार करने का प्रयत्न किया गया तो उसने अपने आप को स्वयम् गोली मारली।

फिनिश सेना ने संधि को शान्ति पूर्वक स्वीकार कर लिया। वे प्राकृतिक रूप से धीरे धीरे काम करने वाले होते हैं। जब उन्हें संधि की सूचना मिली तो वह नगरों को ख़ाली करने में लगे हुये थे।

समावर्ती स्थानों में संधि की सूचना होते ही युद्ध बन्द हो गया किन्तु और दूसरे स्थानों की दशा देखने से अनुमान होता है कि फिनिश सेना फिर भी लड़ने को तयार थी।

कुहरों में सारी फिनिश कम्पनियों ने रूसी सेना पर अंतिम समय में भयानक धावा मारा था।

वाईपुरी में एक बरफ तोड़ने वाला जहाज संधि हो जाने पर भी अपने काम में लगा रहा। रूसी सेना ने उस पर गोलियां चलाईं और ७२ आदमियों को मार डाला।

वाईपुरी नगर में रूसी सेना ने निश्चित समय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ घंटे पहले प्रवेश किया। बृहस्पतिवार को ग्यारह बजे संधि की गई। उस समय ५/८ मील फिनिश सेना हट गई। जिससे ५/८ मील की दूरी उनके तथा लाल सेना के मध्य हो जाय। फिनिश सेना पहले ही से नगर के बाहर थी ५/८ मील और पीछे हटने पर नगर का अधिकांश भाग नोमैन्स लैंड, (जो किसी आदमी की भूमि न हो) गया। इतने में संधि के विरुद्ध लाल सेना नगर में घुस पड़ी। इस प्रकार उसके हाथ बहुत सा लूट का सामान लग गया। निजी सामान, गहने, आभूषण, चाँदी आदि सामान जर्मन सेना ने लूट लिया। लाल सेना के प्रवेश कर देने के कारण वाईपुरी की रेलगाड़ी वाईपुरी के निवासियों को लेकर नगर के बाहर भगी और जो लोग नगर के बाहर थे वह अपना सामान लेने के लिये भीतर आ रहे थे। बाहर ही रोक दिये गये।

संध्या को ६ बजे शाम को रेडियो द्वारा फिनलैंड निवासियों को संधि की सूचना दी गई थी। जब सूचना आई तो लोग अपने पैरों के पंजों पर खड़े होकर सुनने लगे थे। रेडियो द्वारा सुनाई पड़ा कि लड़ाई का अंत हो गया है। सीज फायर (गोली चलानी बन्द करें) शब्द होने के ठीक पहले रूसी वायुयानों ने रोवानीमी तथा कीमतर्जी पर बम्ब बर्साये थे और तीन नागरिकों को मारा था। इस घोषणा के बाद लड़ाई का अंत हो गया।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ सितम्बर—शत्रु बम बर्षक वायुयानों ने दो बार इंगलैंड पर धावा मारा। आक्रमण होते ही वायुयान संहारिणी तोपें गोले बरसाने लगीं और ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान ने उन पर आक्रमण करके उन्हें तितर बितर कर दिया। कुछ वायुयान भीतर क्रामडन तक घुसने में सफल हुये। सवेरे केन्ट पर आक्रमण हुआ कई स्थानों पर बम गिराये गये। कारखाने वाले प्रदेश और बाज़ार में बमों के गिरने से हानि हुई। कुछ लोग मर भी गये और कुछ घायल हुये। दूसरा आक्रमण दोपहर के पश्चात् हुआ परन्तु वायुयान संहारिणी तोपों तथा ब्रिटिश वायुयानों ने उन्हें मार भगाया और वे तट से भीतर नहीं घुस पाये। २१ शत्रु वायुयान तथा १५ ब्रिटिश वायुयान नष्ट हुये।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने लीबिया के हवाई अड्डों पर धावा मारा और शत्रु को हानि पहुँचाया। कनाडा जाता हुआ एक बच्चों को ले जाने वाला जहाज यू-बोट द्वारा डुबाया गया परन्तु अधिक हानि नहीं हुई। जर्मन वायुयानों ने रैम्सगेट पर आक्रमण किया। उन्होंने लगभग ५०० भारी बम गिराये जिससे लगभग एक हज़ार मकान तथा दुकानें नष्ट हुईं।

३ सितम्बर—वाशिंगटन में इङ्गलैंड और संयुक्त राष्ट्र के बीच सामुद्रिक संधि हुई। संयुक्त राष्ट्र को न्यूफाउन्डलैंड, बरमूदा, बहमस, जमैका, सेन्टलूसिया ट्रिनिडाड, अनिटगुवा और ब्रिटिश गायना के जहाजी तथा हवाई अड्डे अँग्रेज़ों द्वारा संयुक्त राष्ट्र को ९९ साल के लिये ठीके पर दिये गये है। संयुक्त राष्ट्र से किसी प्रकार का लगान न लिया जायेगा। केवल निजी मालिकों को संयुक्त राष्ट्र दाम चुकायेगा। संयुक्त राष्ट्र ने ५० विध्वंसकारक जहाज़ इङ्गलैंड को प्रदान किये।

कैले पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम वर्षाया। शत्रु वायुयानों ने इङ्गलैंड पर धावा मारा और १३ नगर पर बम गिराया जिससे मकानों और कारखानों का हानि पहुँची। कुछ लाग मरे और कुछ घायल हुये। ५५ शत्रु वायुयान गिराये गये। पानी की कमी के कारण बूना (कीनिया की सीमा पर) से ब्रिटिश सेना हटा ली गई है। माल्टा पर शत्रु-वायुयानों ने आक्रमण किया।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी तथा इटली पर धावा मारा और शत्रु को हानि पहुँचाया।

रूमानिया के रूसी सीमा पर जर्मन स्थल सेना उसकी रक्षा करने के लिये भेजी गई।

४ सितम्बर—आर० ए० एफ० के बम बर्षक वायुयानों ने बर्लिन तथा जर्मनी, फ्रांस, हालैंड, बेल्जियम आदि के हवाई तथा सैनिक अड्डों पर बम वर्षा किया। उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी के ओबेर हार्ज़ नामक पर्वत के जंगल में एक बड़ा जर्मन कारखाना सैनिक हथियारों के बनाने के लिये था। वहाँ पर बम बर्षा कर आग लगा दी गई। आग की प्रचंड ज्वाला सैकड़ों मील तक दिखाई देती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन वायुयानों ने लण्डन पर धावा मारा और बम बर्षा किया। इङ्गलैंड के कई नगरों पर आक्रमण हुआ लण्डन पर साढ़े नौ बजे रात को आक्रमण हुआ। नगर के चारों ओर वायुयान संहारिणी तोपें अग्नि वर्षा कर रही थीं। वायुयान नगर पर बम गिरा रहे थे। हानि का ठीक ठीक पता नहीं है। आक्रमण में ५४ जर्मन और ११ ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान नष्ट हुये।

हिटलर ने भाषण दिया और कहा कि पश्चिम की ओर के राष्ट्रों को अबतक युद्ध में हार प्राप्त हुई है। ब्रिटेन अपनी भौगोलिक स्थिति और ब्रिटिश सेना को शीघ्र ही पीछे हटा लेने के कारण अभी बच रहा है परन्तु उसे भी उसी घाट उतरना पड़ेगा। हिटलर ने कहा कि वह जब तक युद्ध का अन्त न हो जाय लड़ना चाहते हैं।

हंग्री और सोवियट के मध्य व्यापारिक संधि हुई। रायन्नो नामक ट्रालर जहाज़ जर्मन सुरंग द्वारा डुबा दिया गया।

जापान ने इन्डोचीन के तट का अपनी जल सेना द्वारा घेरा डाल दिया।

५ सितम्बर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने लिबिया के सैनिक अड्डों पर बम बर्षा किया। अदन पर शत्रु ने असफल आक्रमण किया। माल्टा पर हवाई आक्रमण हुआ। भूमध्य सागर में ब्रिटिश जल सेना और शत्रु जल सेना में युद्ध हुआ।

जर्मन वायुयानों ने लन्डन पर आक्रमण किया और सीटी बजाने वाले बम तथा आग लगाने वाले बम गिराये गये जिससे बड़े ज़ोरों का धड़ाका हुआ। शत्रु वायुयानों से फ़्लेअर (चमक, दमक, धमक) गिराये गये। जिससे कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुये। शत्रु वायुयानों ने "मालोटोव ब्रेड बास्केट" (मोल्टोव के रोटी की टोकरी) लण्डन में गिराया। ३९ जर्मन वायुयान गिराये गये।

रूमानिया के राजा कैरोल ने गद्दी छोड़ दिया। वहाँ का उत्तराधिकारी राजकुमार मिकेल रूमानिया का डिक्टेटर बनाया गया है। पहले के मन्त्री गिरफ़्तार कर लिये गये हैं। ट्रान्सीलवानिया के दिये हुये भाग में हँगेरियन सेना पहुँच गई।

६ सितम्बर—जर्मन वायुयानों ने लण्डन पर हमला किया। बम गिरने के कारण लण्डन के तीन बंश बेघर बार के हो गये। लण्डन के ऊपर जर्मन तथा ब्रिटिश वायुयानों में घोर युद्ध हुआ। आर० ए० एफ० के बम वर्षक वायुयान इटली, जर्मनी और इटैलियन अफ्रीका में उड़े और बर्लिन, यूनिक बाल्टिक तट और कालेबन युद्ध सामग्री वाले कारखाने पर बम वर्षा करके बहुत हानि पहुँचाया। अदन पर शत्रु वायुयानों ने बम बर्षा किया

७ सितम्बर—१०० शत्रु वायुयान लन्दन पर उड़े आर० ए० एफ० के वायुयानों ने उनका सामना किया और उनकी पंक्तियों को कई स्थानों पर तोड़ दिया। शत्रु वायुयानों ने कारखानों पर बम बर्षा किया जिससे कई स्थानों में आग लग गई और बड़ी हानि हुई। लंदन के भीतरी भाग में इस प्रकार बम बर्षा हुई कि लोगों ने नालियों के भीतर छिप कर अपने प्राण बचाये। वायुयान संहारिणी तोपों और ब्रिटिश वायुयानों ने डट कर सामना किया जिस से ६५ शत्रु वायुयान गिराये गये।

इंडोचीन में होकर जापानी सेना को जाने की आज्ञा मिल गई। हवाई अड्डे इंडोचीन में बनाने की आज्ञा नहीं दी गई। बर्लिन पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने भीषण बम वर्षा किया जिससे कोलाहल मच गया। सैनिक अड्डों पर बम वर्षा की गई।

८ सितम्बर—८०० शत्रु वायुयानों ने लन्दन नगर पर आक्रमण किया। संध्या से लेकर सूर्योदय तक लगातार आक्रमण होता रहा जिसके फलस्वरूप समुद्री घाटों के समीप पूर्वी लन्दन में भीषण बम बर्षा हुई। लगभग ४०० आदमी मरे और १४०० घायल हुये। ८८ शत्रु वायुयान तथा २२ अंग्रेज़ वायुयान गिराये गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ब्रिटिश चैनल के जर्मन बन्दरगाहों पर धावा मारा जिससे बहुत से जर्मन जहाज़ डुबाये गये और युद्ध-सामग्री में आग लगा दी गई। मिस्र के लिये अँग्रेज़ी सेना भेजी गई जो वहां सुरक्षित पहुँच गई।

९ सितम्बर—जर्मन आक्रमण पहले की भांति भीषण नहीं हुआ, फिर भी शत्रु वायुयानों ने काफी बम बर्षा किया सबेरे लोग जब नगर में हानि का निरीक्षण करने गये तो वे बम बर्षक वायुयानों द्वारा घेर लिये गये। ब्रिटिश वायुयानों और वायुयान संहारिणी तोपों द्वारा ८ शत्रु वायुयान गिराये गये।

११ सितम्बर—२ बजे संध्या से आधीरात तक शत्रु वायुयानों ने लन्दन पर आक्रमण किया। ब्रिटिश वायुयानों ने नगर की रक्षा के लिये नगर को चारों ओर से घेर लिया था। लगभग १५० मील लम्बे मैदान में शत्रु वायुयान उड़ रहे थे परन्तु बहुत कम वायुयान अपने ध्येय वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानों तक पहुँच सके। लन्डन के ऊपर शत्रु तथा मित्र वायुयानों में आधी रात को भीषण युद्ध हुआ। दोपहर के बाद जो आक्रमण हुआ उसमें टेम्स नदी के ऊपर तथा पूर्वी तट पर कुछ हानि हुई और कुछ जानें भी गईं। ब्रिटिश वायुयानों और वायुयान संहारिणी तोपों ने लन्दन को इस प्रकार घेर रक्खा था कि शत्रु वायुयानों का कहीं पता भी रात को न चलता था। तोपों की आवाज से नगर गूँज रहा था।

बकिंघम महल के एक सरोवर के समीप एक बम गिरा जो गिरते ही नहीं फटा वरन् कुछ समय के पश्चात् फटा जिससे सरोवर का पूर्वी भाग तथा महल का कुछ उत्तरी भाग और खिड़कियां आदि उड़ गईं। इसी भाग में इङ्गलैण्ड के राजा को निमन्त्रण दिया जाता था। यह भाग बड़ा ही सुन्दर था। डोवर पर बमों तथा गोलों की वर्षा हुई। केन्ट के तट पर भी बम वर्षा की गई। जब बकिंघम महल पर बम गिरा तो राजा टहल रहा था।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने अपने भाषण में कहा कि "शत्रु इङ्गलैण्ड पर आक्रमण करने के लिये भीषण तयारी कर रहा है। छोटे छोटे जर्मन जहाज हजारों की संख्या में जर्मन और हालैण्ड के बन्दरगाहों से ब्रेस्ट तथा बिस्के की खाड़ी तक घूम रहे हैं। जर्मनों ने फ्रांसीसी तट पर नई बैटरियां लगाई हैं उनकी रक्षा में जर्मन व्यापारिक जहाज तथा और दूसरे जहाज डावर प्रान्त और चैनल में घूम रहे हैं। जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम और हालैण्ड के हार्बरों पर बहुत बड़ी संख्या में जहाज एकत्रित हैं। नार्वे के हार्बरों से आक्रमण करने के लिये सेना इङ्गलैण्ड पहुँचाने के लिये भी जहाजों की तयारी है।

जहाजों के जमघट के पीछे शत्रु सेना बहुत बड़ी संख्या में आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है। यह कहना कठिन है कि आक्रमण कब होगा परन्तु हमें अन्धे होकर न बैठना चाहिये वे निश्चय ही आक्रमण करेंगे, वे स्काटलैण्ड आयरलैण्ड और इङ्गलैण्ड पर एक साथ ही आक्रमण करेंगे। यदि यह आक्रमण होगा तो शीघ्र ही होगा इसमें अधिक देर न लगेगी। क्योंकि अधिक समय तक शत्रु अपनी सेना इस प्रकार एकत्रित नहीं रख सकता जब कि आर० ए० एफ० के वायुयान उसे विध्वंस कर रहे हैं। ६० जर्मन वायुयान आज की तारीख में गिराये गये।

१२ सितम्बर—पूर्वी लिबिया पर शत्रु वायुयानों ने भीषण बम वर्षा किया। मिस्री लीबिया की सीमा पर इटली की सेना एक बड़ी संख्या में एकत्रित हुई। अरब और यहूदी लोगों ने बम वर्षा के सम्बन्ध में दुख प्रकट किया है।

अच्छे मजबूत घेरे के कारण नाज़ी बम वर्षक लन्दन सीमा में प्रवेश नहीं कर सके। सेंट पाल कैथीड्रल में एक बम पड़ा था वह फटा नहीं था उसे वहां से हटा दिया गया और किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।

ब्रिटिश वायुयानों ने बर्लिन के हवाई स्टेशन पर बम गिराया। बर्लिन नगर के मध्यवर्ती भाग में बहुत हानि की गई। कैले में आर० ए० एफ० के बमों द्वारा भीषण अग्निकांड हुआ।

१३ सितम्बर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने फ्रान्स और बेल्जियम के तटीय हार्बरों पर बम बर्षा किया जिसके कारण एकत्रित शत्रु जहाजों को बड़ी हानि उठानी पड़ी। बोलोन, कैले, डन्किर्क आस्टेंड, एंटवर्प आदि बन्दरगाहों के समुद्री घाटों पर बम द्वारा आग लगा दी गई। ज़ीब्रूगे के पथ रक्षक टैंक वाले शत्रु जहाज़ों पर भी आक्रमण किया गया जिससे एक जहाज बम के धड़ाके द्वारा फट गया। शत्रु वायुयानों ने लन्दन पर आक्रमण किया और कई स्थानों पर बम वर्षा किया।

१४ सितम्बर—लगभग ३०० शत्रु वायुयानों ने लन्दन पर धावा मारा और नगर में प्रवेश करने का प्रयत्न किया परन्तु ब्रिटिश वायुयानों ने उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया। बादलों के ऊपर शत्रु तथा ब्रिटिश वायुयानों में घोर संग्राम हुआ। लन्दन का दक्षिणी अफ्रीका भवन तथा कचहरियों का बम द्वारा काफी हानि शत्रु ने पहुँचाई।

लिस्बन के ७०० मील पश्चिम की ओर ब्रिटेन का सामान ले जाने वाला सेंट अगनेस जहाज डूब गया। उसके ६४ मलाह अमरीका जहाज द्वारा बचाये गये।

१५ सितम्बर—लन्दन पर शत्रु वायुयानों ने ५ आक्रमण किये। बकिंघम महल पर फिर बम गिरा। रानी का ड्राइङ्ग रूम नष्ट हो गया। इटली की सेना ने मिस्र में प्रवेश किया और सोलम तथा मुसैद पर अधिकार कर लिया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने नाज़ी सैनिक अड्डों पर भीषण आक्रमण किया और बम वर्षा किया। फ्रांस के समुद्री तट पर ब्रिटिश तोपों ने लगातार गोलेबारी किया। शत्रु वायुयानों ने ब्रिटिश वायुयानों का सामना किया किन्तु वे इधर उधर भगा दिये गये।

उत्तरी अफ्रीका से मारसेलस आता हुआ फ्रान्सीसी जहाज भूमध्य सागर में सुरंग द्वारा डुबा दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ सितम्बर—मार्शल गोरिंग वायुयान द्वारा लण्डन पर उड़ा। डोवर शत्रु तोपों ने भीषण गोलेबारी किया। थेम्स नदी में आकलैंड नामक ब्रिटिश जहाज़ ने एक शत्रु वायुयान को गोला मारकर गिरा दिया। ब्रिटेन पर आक्रमण आरम्भ होने से अब तक में कुल २,१४६ शत्रु वायुयान गिराये गये हैं।

१७ सितम्बर—इटली की सेना मिस्र में बगबग स्थान तक पहुँच गई माल्टा पर शत्रु सेना ने आक्रमण किया और बम वर्षा किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के आक्रमण करने वाले सैनिक अड्डों पर आक्रमण किया और आस्टेंड बन्दरगाह के डाक में आग लगा दिया। हैमबर्ग, विलियम्स माउथ, ऐंट वर्प, फ्लशिंग, डन्किर्क, कैले, बोलोन आदि बन्दरगाहों पर भी आक्रमण हुआ।

लण्डन पर पांच आक्रमण हुये। अंतिम दो आक्रमण भीषण थे और १० घंटे तक जारी रहे। लण्डन के मध्यवर्ती भाग पर बम गिराये गये। इंगलैंड के दो मध्यवर्ती नगरों पर भी आक्रमण हुआ। लण्डन में आक्रमण के कारण कुछ लोग मरे कुछ घायल हुये और कुछ घर गिर गये।

१८ सितम्बर—लण्डन पर १० घन्टे तक शत्रु आक्रमण हुआ। कुछ बम वेस्ट-एंड के बड़े स्टोरों पर गिराये गये। ग्लास्गो पर भी हवाई आक्रमण हुआ। इटली की सेना मिस्र में आगे बढ़ी और सीदी बरानी पर सीनर सुनर ने हिटलर से भेंट किया जिससे अनुमान होता है कि स्पेन भी युद्ध में आ जावेगा।

१९ सितम्बर—३०० जर्मन वायुयानों ने लण्डन पर आक्रमण किया। आक्रमण १० घन्टे का था। कहा जाता है कि यह सब से बड़ा और लम्बा आक्रमण था।

थेम्स स्चूअरी पर शत्रु तथा ब्रिटिश वायुयानों में युद्ध हुआ। युद्ध बहुत ऊँचे स्थान पर हो रहा था जो नीचे से दिखाई नहीं पड़ता था। जर्मनों हवाई लड़ाकुओं के वायुयानों में दो दो इञ्जिन लगे हुये थे। जर्मन आक्रमण के कारण लंडन के ६० आदमी मरे और लगभग ३०० घायल हुये। लण्डन आक्रमण में ४६ जर्मन वायुयान गिराये गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने नाज़ी बन्दरगाहों पर आक्रमण किया और बोलोन, कैले, चेरबर्ग, आस्टेंड, ज़ीब्रूगे, फ्लशिंग और ऐंटवर्प के हवाई तथा समुद्री अड्डों पर बम वर्षा किया। बम वर्षा से शत्रु की बड़ी हानि हुई और दो सामान पहुँचाने वाले शत्रु जहाज़ डुबाये गये।

माल्टा पर आक्रमण हुआ और तीन शत्रु वायुयान गिराये गये।

इंगलिश चैनल के जर्मन बन्दरगाहों पर आक्रमण करने वाले ७ ब्रिटिश वायुयान गिराये गये। यह दिन लण्डन के लिये शान्ति का दिन था। ७ सितम्बर के बाद आज के दिन लण्डन में कुछ शान्ति स्थापित रही। दिन में केवल एक बार आक्रमण की सूचना मिली। लण्डन के इधर उधर के फैले हुये भागों में शत्रु वायुयानों ने बम वर्षा किया जिससे काउन्टी हाल समरसेट हाउस और दूसरे भवन नष्ट हुये।

२० सितम्बर—इटली की बढ़ती हुई सेना रोक दी गई। समुद्री सेना ने शत्रु सेना पर आक्रमण किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने डाडे के नाज़ी द्वीप पर बम वर्षा किया। जापान ने इंडोचीन को ७२ घंटे की अंतिम चेतावनी दी है।

जर्मनी के आक्रमण करने वाले बन्दरगाहों पर ब्रिटिश वायुयानों ने धावा मार कर बम वर्षा किया। केन्ट के ऊपर जर्मन तथा ब्रिटिश वायुयानों ने घोर युद्ध किया। शत्रु वायुयान लण्डन नहीं पहुँच सके। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने राइनलैंड प्रदेश पर आक्रमण किया। बेंगाजो, हार्बर पर इटली के एक जहाज़ में ब्रिटिश बम वर्षकों ने आग लगा दिया।

२१ सितम्बर—जापानियों ने अपनी मांगों को कम कर दिया है जिससे आशा है कि इंडोचीन और जापान के बीच समझौता हो जावेगा। चीन की कम्पेन कमेटी ने इंगलैण्ड की सरकार से प्रार्थना किया है कि बर्मा सड़क फिर खोल दिया जाय।

२२ सितम्बर—ब्रिटिश वायुयानों ने शत्रु बन्दरगाहों, सैनिक अड्डों और समुद्री जहाज़ों पर आक्रमण किया और बम वर्षा किया जिसके फल स्वरूप जर्मनी के सैनिक अड्डों को हानि पहुँची। दो सामान ले जाने वाले जहाज़ नष्ट किये गये। लड़ाई के अस्त्र तयार करने वाले कारखानों को भीषण हानि पहुँची। बम फटने और मकानों तथा तटीय स्थानों के प्रचण्ड अग्नि की ज्वाला दूर दूर तक दिखाई पड़ती थी। लण्डन पर आक्रमण करने वाले शत्रु वायुयान लण्डन के मध्यवर्ती भाग तक नहीं पहुँच सके। पूर्वी लण्डन पर बम गिराये गये।

इण्डोचीन में जापानी तथा इण्डोचीनी सेना में कुछ मुठभेड़ हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ सितम्बर—जापानी तथा इन्डोचीनी फ्रान्सीसी सेना में दो घंटे तक युद्ध हुआ उसके पश्चात् युद्ध रोक दिया गया और संधि की बातचीत हुई। जापान अपनी सेना इन्डोचीन होकर ले जाना चाहता है।

इटैलियन सेना ने सिकन्दरिया, हैफा और माल्टा पर वायुयानों द्वारा आक्रमण करके बम वर्षा किया। एक ब्रिटिश जहाज़ जो बच्चों को कनाडा ले जा रहा था मार्ग में गोला मार कर डुबो दिया गया जिससे लगभग २८४ व्यक्ति डूब गये। इटैलियन पनडुब्बे जहाज ने एक स्पेन के ट्रालर जहाज को डुबो दिया।

२५ सितम्बर—लन्दन पर शत्रु वायुयानों ने रात में आक्रमण किया और तटीय स्थानों पर बम गिराया जिससे बहुत से मकान गिर गये और कुछ आदमी मर गये। जर्मन राजधानी बर्लिन पर बमों की वर्षा हुई। आर० ए० एफ० के वायुयान सारी रात आक्रमण करते रहे। रेलवे स्थान, पावर स्टेशन और हवाई अड्डों पर बम गिरने से भीषण अग्निकांड हुआ जिससे बहुत हानि हुई। जिब्राल्टर पर १०० बम शत्रु वायुयानों ने गिराये। डाकर (फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका) में डी गाले की सेना के उतरने पर फ्रान्स की सरकार ने उन पर आक्रमण करने की आज्ञा दिया और युद्ध हुआ। तोबरक पर आक्रमण हुआ। जापानी सेना ने इन्डोचीन में फ्रान्सीसी सेना को हराया।

२६ सितम्बर—डाकर से ब्रिटिश सेना हटा ली गई क्योंकि ब्रिटिश सरकार यह नहीं चाहती थी कि वह फ्रान्सीसी प्रजा को हताहत करे। लन्दन पर १९ बार रात में शत्रु वायुयानों ने आक्रमण किया। वायुयान संहारिणी तोपों तथा ब्रिटिश लड़ाकू वायुयानों ने उनका सामना किया और २६ जर्मन वायुयानों को मार गिराया। इन्डोचीन में डांगडैंग स्थान पर जो झगड़ा इन्डोचीनी तथा जापानी सेना में हो गया था वह शान्त कर दिया गया। जापान और इन्डोचीन में संधि हो गई। जिब्राल्टर पर १०० फ्रान्सीसी वायुयानों ने धावा मारा और बम वर्षा किया। जिससे वहां बहुत हानि हुई है। माल्टा पर बम गिराये गये। ब्रिटिश वायुयानों ने तोबरक पर बम वर्षा किया।

२७ सितम्बर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ९ घंटे तक बर्लिन पर बम वर्षा किया। ब्रिटिश पनडुब्बे जहाजों ने शत्रु के सामान ले जाने वाले जहाजों पर आक्रमण किया और एक को डुबो दिया तथा दो दूसरे जहाजों को हानि पहुँचाया। ऐंटवर्प, फ्लशिंग, आस्टेन्ड, डंकर्क, कैले और बेलोन आदि स्थानों पर बम गिराये गये। डोवर प्रान्त पर गोलेबारी हुई। ब्रिटेन के नगरों तथा तटीय स्थानों पर आक्रमण हुआ जिससे ३१ शत्रु वायुयान गिराये गये।

जापानी सेना समुद्री जहाज़ों द्वारा हैफोंग (इन्डोचीन) में उतरी। बर्लिन में जर्मनी, जापान और इटली के बीच १० साल के लिये सैनिक, राजनैतिक और आर्थिक संधि हुई है। जापान ने योरुप में जर्मनी तथा इटली का नेत्रित्व स्वीकार किया और पूर्वी एशिया में इटली और जर्मनी ने जापान का नेत्रित्व स्वीकार किया है।

२८ सितम्बर—जर्मन बम बर्षक वायुयानों ने लन्दन पर धावा मारा और भीषण बम बर्षा किया। बृटिश लड़ाकू हवाई वायुयानों तथा वायुयान संहारिणी तोपों ने उनका डट कर सामना जिसके कारण १३३ जर्मन तथा ३४ बृटिश वायुयान नष्ट हुये।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने कील और ले हावरे के बन्दरगाहों पर बम वर्षा किया जिससे वहां के घाटों पर भीषण आग लग गई।

२९ सितम्बर—लगभग सौ से अधिक शत्रु वायुयानों ने लन्दन में प्रवेश करने का प्रयत्न किया। जब कि वे केन्ट और ससेक्स तटों को पार कर रहे थे तो बृटिश लड़ाकू जहाज उनका सामना करने पहुँच गये और उनके बीच घोर संग्राम हुआ। युद्ध में ६ जर्मन तथा ७ ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान नष्ट हुये।

ब्रिटेन में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के भेजे हुये विध्वंस-कारक जहाज़ पहुँचे।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बर्लिन (जर्मन राजधानी) पर लगातार कई बार आक्रमण करके बम बर्षा किया। आक्रमण करने वाले बन्दरगाहों के डाकों और कारखानों पर आक्रमण हुआ जिससे जर्मनों को बड़ी हानि हुई।

३० सितम्बर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बन्दरगाहों, कारखानों और सैनिक अड्डों तथा हवाई केन्द्रों पर आक्रमण करके बम बर्षा किया। बृटिश वायुयान जर्मनी के मध्यवर्ती भागों तक उड़े और उन्होंने बर्लिन के आस पास भी बम गिराया।

इङ्गलैण्ड पर शत्रु वायुयानों ने जो आक्रमण किया उसमें ४७ नाज़ी वायुयान नष्ट हुये। केन्ट, ससेक्स डोर सेट और टेम्स की घाटी के स्थानों पर बम गिराये गये जिससे कुछ मकानों को हानि पहुँची और कुछ लोगों की जान गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jamuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
८-११-४०

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र
सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अक्तूबर-नवम्बर १९४०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy As. 5/-

सम्पादक-रामनारायण मिश्र बी०ए०

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल के पाठकों से नम्र निवेदन

हमें खेद है कि इधर दो महीने से कई अनिवार्य कारणों से प्रयत्न करने पर भी 'भूगोल' का प्रकाशन समय पर नहीं हो सका। भूगोल का प्रस्तुत अंक अक्तूबर और नवम्बर १९४० दोनों मास का संयुक्तांक है। भविष्य में हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि भूगोल नियमित रूप से समय पर आप की सेवा में भेजा जायगा। हमें पूर्ण आशा है कि इस बार आप विलम्ब के लिये क्षमा प्रदान करेंगे।

भवदीय
रामनारायण मिश्र
सम्पादक

विषय-सूची

विषय ... पृष्ठ

१—जर्मनी तथा रूस की दो सन्धियाँ १
२—फिनलैण्ड युद्ध के कुछ भीतरी रहस्य ६
३—च्यांग काई शेक के गुण ८
४—टर्की और उसके मित्र-राष्ट्र ९
५—निदरलैण्ड की सेना १२
६—जर्मन-युद्ध-कौशल १४
७—युद्ध और आयरलैण्ड १५
८—चीन का अभिशाप १८
९—क्या स्टैलिन चीन को बेच देगा? १९
१०—सिडनी का प्रसिद्ध बन्दरगाह २४
११—वर्तमान युद्ध की प्रमुख घटनायें २७
१२—वेलिंगटन (न्यूज़ीलैण्ड) ३१
१३—हाथ का बनाया हुआ कागज ३५
१४—भूमध्यसागर के द्वीप ३७
१५—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें ३८
१६—विविध विषय ४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्डर-फार्म

ता०..............१६४

मैनेजर "भूगोल"
इलाहाबाद

प्रिय महाशय जी :—

कृपया मेरा नाम "भूगोल" के ग्राहकों की श्रेणी में लिख लीजिये और इस वर्ष का प्रथम अंक सवा तीन ३।) रु० की वी० पी० द्वारा भेजकर वसूल कर लीजिये। इसके बाद एक वर्ष तक "भूगोल" बराबर भेजते रहिये।

भवदीय

हस्ताक्षर ______________________

पता ______________________

____

अग्रिम चन्दा

१	वर्ष का	३।) रु०
२	,,	५॥) ,,
३	,,	८) ,,
४	,,	१०) ,,

नोट :—कृपया खुले लिफाफे में दो पैसे का टिकट लगा कर इस आर्डर फार्म को रख कर भेज दें।

त तथा ग्वालियर, जैपुर,
ग्रौर मिडिल स्कूलों में

[संख्या ६

ाँ

। समस्त संसार की क्रान्ति की
खते हुये मध्य योरुपीय प्रतिनि-
। प्राचीन रूस का उस समय
और सोवियट रूस का जन्म हो
और होहेन्जलरन साम्राज्य को
शिखर पर थी, जिसका अन्त
शाली केवल एक जागी हुई
सकती थी। इस भावना को
मी प्रतिनिधि वादाविवाद कर
ं अपनी चतुरता का परिचय दे
स के समय को बढ़ाना चाहता
ग्र से शीघ्र उसे समाप्त करना

करने की शीघ्रता इस कारण
सरहद पर फ्रान्स तथा इंगलैण्ड
ा। वह पूर्व की ओर और
ही साथ युद्ध करने में असमर्थ
श्चिम की ओर अन्तिम युद्ध

उस समय रूसी प्रतिनिधि अपनी राजनैतिक करना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल के पाठकों से नम्र निवेदन

हमें खेद है कि इ
'भूगोल' का प्रकाशन सम
१९४० दोनों मास का सं
नियमित रूप से समय पर
आप विलम्ब के लिये क्षम

विषय

१—जर्मनी तथा रूस की
२—फिनलैण्ड युद्ध के कु
३—च्यांग काई शेक के
४—टर्की और उसके मि
५—निदरलैण्ड की सेना
६—जर्मन-युद्ध-कौशल
७—युद्ध और आयरलैण
८—चीन का अभिशाप
९—क्या स्टैलिन चीन के
१०—सिडनी का प्रसिद्ध ब
११—वर्तमान युद्ध की प्र
१२—वेलिंगटन (न्यूज़ीलै
१३—हाथ का बनाया हुआ
१४—भूमध्यसागर के द्वीप
१५—वर्तमान महासमर
१६—विविध विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] कार्तिक, सं० १९९७, अक्टूबर, १९४० [संख्या ६

जर्मनी तथा रूस की दो संधियाँ

सोवियट रूस तथा जर्मनी के बीच दो समझौते हुये हैं। पहला समझौता सन् १९१८ ई० में हुआ था और दूसरा उसके २० वर्ष पश्चात् सन् १९३९ ई० में हुआ है। यह दोनों संधियां ब्रेस्ट लिटौव्स्क स्थान पर हुई हैं। ये दोनों संधियां बड़ी ही मनोरंजक तथा भयानक हैं। इन दोनों संधियों में सभी बातें पाई जाती हैं। किन्तु सत्यता का भास इनमें नहीं है।

दिसम्बर सन् १९१७ ई० की पराजित रूस, थका मांदा आस्ट्रिया स्वाभिमानी जर्मनी ब्रेस्ट लिटोव्स्क स्थान पर एकत्रित हुये। इन तीनों देशों के प्रतिनिधियों के परामर्श तथा वाद विवाद से ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि की उत्पत्ति हुई। यह सन्धि वर्सलाई की संधि से कम निर्लज्ज तथा निर्दयी न थी। इस संधि का प्रभाव योरुपीय देशों पर बहुत गहरा पड़ा है। इस सन्धि का प्रभाव इसके लिखे जाने के समय से ही पड़ना आरम्भ हुआ है और इसका अन्तिम प्रभाव क्या होगा यह अब भी नहीं कहा जा सकता।

उस समय रूसी प्रतिनिधि अपनी राजनैतिक हार समझते हुये तथा समस्त संसार की क्रान्ति की भावना और आशा रखते हुये मध्य योरुपीय प्रतिनिधियों के सामने बैठे थे। प्राचीन रूस का उस समय अन्त हो चुका था और सोवियट रूस का जन्म हो रहा था। हैप्सबर्ग और होहेन्जलरन साम्राज्य की सैनिक शक्ति उन्नति के शिखर पर थी, जिसका अन्त उससे बढ़ कर शक्ति शाली केवल एक जागी हुई गरीब प्रजा ही कर सकती थी। इस भावना को हृदय में रखते हुये रूसी प्रतिनिधि वादाविवाद कर रहे थे। तीनों शक्तियां अपनी चतुरता का परिचय दे रही थीं। रूस कांफ्रेन्स के समय को बढ़ाना चाहता था, किन्तु जर्मनी शीघ्र से शीघ्र उसे समाप्त करना चाहता था।

जर्मनी को सन्धि करने की शीघ्रता इस कारण थी कि उसे पश्चिमी सरहद पर फ्रान्स तथा इंगलैण्ड का सामना करना था। वह पूर्व की ओर और पश्चिम की ओर साथ ही साथ युद्ध करने में असमर्थ हो रहा था। वह पश्चिम की ओर अन्तिम युद्ध करना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी रूस के साथ सन्धि करने का इच्छुक तो था किन्तु वह स्वयम् अपनी शर्तें रूस से मनवाना चाहता था। जर्मनी के अधिकार में बाल्टिक प्रान्त पोलैंड उपनिवेश थे। लूडेन डार्फ तथा हिंडनबर्ग की आंखें यूक्रेन तथा रूमानिया की ओर लगी हुई थीं। जर्मनी रूस को केवल अपने उपनिवेश देशों से ही घेरना नहीं चाहता था, वरन् वह रूस को छिन्न भिन्न करके टुकड़े टुकड़े कर देना चाहता था; जिससे जर्मनी को उसकी ओर से कोई खतरा शेष न रहे।

जर्मनी दूसरे देशों से बोलशेविक मत को निकालना चाहता था, इसी कारण जब फरवरी सन् १९१८ में उसकी सेनायें रूस को घेरने के लिये बढ़ी थीं तो जर्मन सेनापति ने घोषणा की थी कि वह लिथवोनियन, लेट और इस्टोनियन जातियों को अपने अधिकार में करने के लिये उनके देशों में नहीं जा रहा था। वरन् वह उन्हें बोलशेविक रूस के हाथों से बचाने के लिये जा रहा था।

१९१८ ई० में जर्मनी का मतलब यह था कि पोलैंड का प्राचीन राज्य स्थापित करे। लिथवानिया तथा बाल्टिक राज्यों को बोलशेविक के कष्टों से बचावे। इसी बात को ध्यान में रखते हुये ही जर्मनी ने ३ मार्च सन् १९१८ ई० ने ब्रेस्ट लिटोव्स्क की सन्धि रूस के साथ की। उस सन्धि के अनुसार रूस ने उपरोक्त देश जर्मनी को कार्स, बातूम और अर्धान के जिले टर्की को दिये। रूस, फिनलैंड, यूक्रेन और जार्जिया की स्वतंत्रता भी मान ली। इसलिये जर्मनी ने रूस को काला सागर से बिलकुल ही और बाल्टिक सागर से भी निकाल बाहर किया था।

इस संधि पर बोलशेविकों ने मजबूर होकर अपनी मर्जी के विरुद्ध अपने हस्ताक्षर किये। रूसी सरदारों ने कोप के आवेश में आकर सन्धि के बारे में बहुत कुछ कह डाला। काल राडेक ने जनरल होफमान के मुँह पर ही उत्तर दिया कि यह अभी आप का दिन है। लेकिन अन्त में राष्ट्रसंघ ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि तुम्हारे ऊपर लाद देगा।

साल भर के पश्चात् ही राडेक और आकाश वाणी सत्य हो गई। जर्मनी जोकि बोलशेविक नीति का खून करना चाहता था उस नीति के कारण ही जर्मनी के अन्दर फूट हो गई। मास्को के प्रभाव के कारण ही जर्मनी अन्तिम युद्ध में हारा। १९१८ की जर्मनी की क्रान्ति ने होडेन्जलरन तथा हैब्सबर्ग घराने का मटियामेट कर दिया। और वर्सलीज की संधि द्वारा जर्मनी बिलकुल छिन्न भिन्न हो गया और उसकी बड़ी बेइज्जती हुई किन्तु तो भी वर्सलीज की संधि ब्रेस्ट लिटोव्स्क तथा बुखारेस्ट के सधियों के बराबर कड़ी न थी। यदि जर्मनी विजयी होता है। तो वह इससे कहीं अधिक सख्त संधि की शर्तें मित्र राष्टों पर लादता। जैसा कि एक जर्मन अफसर ने रूमानिया डिलीगेशन को इसके प्रोटेस्ट पर उत्तर दिया था। जर्मन अफसर ने कहा था "सख्त संधि" तुम इसे सख्त संधि कहते हो। धैर्य करो और देखना कि हम फ्रांस तथा इङ्गलैंड के लिये क्या तयार कर रहे हैं।

जर्मनी तथा रूस दोनों देशों ने अपने राजों से छुट्टी ले ली थी। योरुप के इन दोनों राष्ट्रों ने अपने को ही केवल आउट ला (बागी) पाया। इसलिये इन दोनों देशों ने आपस में भाई चारा के भाव की उत्तेजना उत्पन्न की।

महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी दो वर्गों में बँट गया था। कुछ लोग रूस से मित्रता करना चाहते थे और कुछ इंगलैंड से मित्रता करना चाहते थे। जर्मनी के अन्दर यह दो वर्ग केवल बोलशेविक मत के कारण ही हुये थे।

जनरल होफमैन तथा जनरल ग्रोनेर मित्र राष्ट्रों से मित्रता भाव तथा सोवियट रूस से बैर भाव रखना चाहते थे। दूसरी ओर जनरल वान हैन्स सीक्ट (राएच का संस्थापक) रूस से मित्रता करना चाहता था। उसका मत था कि रूस पर वर्सलीज की संधि का कुछ भी प्रभुत्व नहीं है। इसलिये वह स्वतंत्रता पूर्वक सभी लड़ाई के सामान बना सकता है, जो जर्मनी नहीं कर सकता। उसने रूसी सैनिकों का युद्ध भी देखा था, कि वे अच्छे सैनिक होते हैं। लाल सेना में केवल संगठन की कमी उसे प्रतीत हुई। यद्यपि सोवियट राष्ट्र की मित्रता खतरनाक थी, तो भी कोई भी मित्र न होने से किसी (रूस) मित्र का होना अधिक अच्छा था।

यह भावना उत्पन्न होने के कारण दो साल के भीतर ही ब्रेस्ट लिटोव्स्क की सारी बातें भुला दी गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२० ई० में जब मित्र राष्ट्रों ने कैसर तथा दूसरे प्राचीन जर्मन सेना के नेताओं को अपने अधिकार में करने को मांगा तो सीक्ट ने इसका विरोध किया और अपने मित्रों तथा देश वासियों से कहा कि यदि राएच इनको मित्र राष्ट्रों को सौंपने पर राज़ी हो गया तो हमें उसके विरुद्ध युद्ध करना चाहिये और जब तक हमारी सेनाऐं पश्चिम की ओर लड़ती लड़ती सीमा तक जावेंगी तब तक पूर्व की ओर हम पोलैंड को लाल सेना की सहायता से खतम करके पश्चिम की ओर आ जावेंगे और फ्रान्स तथा ब्रिटेन का सामना करेंगे

बैरोन वान माल्टज़ान जर्मनी के वैदेशिक मन्त्री के प्रयत्न से अप्रैल सन् १९२२ ई० के जर्मनी तथा रूस के बीच समझौता हुआ। रूस तथा जर्मन के बीच छिपे रूप में एक सैनिक समझौता भी किया गया जिसके अनुसार जर्मनी से कुछ सैनिक अफसर रूसी लाल सेना को संगठित करने तथा ट्रेनिंग देने के लिये भेजे जाने लगे। यह अफसर स जाकर बड़े बड़े टैन्कों, आर्मर्ड कारों और दूसरे बड़े बड़े फौजी हथियारों के चलाने का अभ्यास करते थे, जो बर्सलीज़ की संधि के अनुसार उन्हें अपने देश में करने की आज्ञा न थी। काउन्ट ब्राकडोर्फ रान्तज़ाऊ जब मास्को अम्बसेडर बना कर भेजे गये तो उनके प्रयत्न से सोवियट यूनियन तथा जर्मनी के बीच तटस्थ तथा एक दूसरे पर आक्रमण न करने की संधि १९२६ ई० में हुई।

जनवरी सन् १९३३ ई० में वाइमर विधान का अंत हुआ और हिटलर तथा नाज़ी पार्टी का ज़ोर हुआ। तो जर्मनी ने अलफ्रेड रोज़ेनबर्ग तथा फ्युहरर की नीति का अनुकरण किया और कमीशन के विरुद्ध कार्रवाइयां होने लगीं। बाल्टिक प्रान्तों तथा यूक्रेन के प्रति भी जर्मनी ने वही प्राचीन नीति ग्रहण की।

इसके पश्चात् रूस फिर योरुप की ओर फिरा और १९३४ ई० रूमानिया तथा चेकोस्लोवेकिया ने सोवियट यूनियन को रूस की सरकार मान लिया। उसी साल सोवियट सरकार लीग आफ नेशन्स (अन्तर्राष्ट्रीय सभा) में भी सम्मिलित हो गया। इसके पश्चात् सोवियट सरकार तथा फ्रान्स और चेकोस्लोवेकिया के बीच १९३५ में संधि हुई कि वे नाज़ी जर्मनी की बढ़ती हुई तथा भयानक शक्ति को रोकने का योरुप से प्रयत्न करेंगे। इस पर इसके उत्तर में जर्मनी ने जापान, इटली, स्पेन, मंचूकुवो और हंग्री से संधियां १९२६ में की कि वे कम्यूनिस्ट इन्टरनैशनलिज़्म के बढ़ते हुये अत्याचार तथा भयानकता को रोकने का प्रयत्न करेंगे।

इसके बाद १९३३ से १९३८ तक के बीच जर्मनी में सैकड़ों आदमियों को कम्यूनिज़्म का दोष लगा कर कैद किया गया और बहुतों को फांसी दे दी गई। रूस में ऐसा ही हुआ और हज़ारों की संख्या में फैसिस्ट के नाम पर लोग जेल में डाल दिये गये और को प्राणदण्ड दिये गये।

इतना होते हुये भी जर्मनी में बहुत से लोग (जनरल वान हैमरस्टीन इक्वोर्ड जनरल फ्राटिस्च तथा फ्यूहरर) आदि) प्रयत्न कर रहे थे कि रूस से फिर वैसी ही संधि हो जाय जैसी पहले थी। रूस में भी यही प्रयत्न हो रहा था और पुराने बोलशेविक नेता मार्शल टकहेचवस्की उसके ६ साथी और कार्ल रेडक इत्यादि को इसी बात में सजाऐं दी गईं कि वे यूक्रेन देकर जर्मनी से और मैरीटाहम प्रान्त देकर जापान से संधि करना चाहते थे।

तब से सोवियट की नीति में कोई अन्तर नहीं आया। सितम्बर सन् १९३८ ई० में चेकोस्लोवेकिया की दशा बहुत बिगड़ गई और जर्मनी ने उसे घर दबाया। इस पर म्यूनिच की संधि हुई जिसमें रूस निमन्त्रित नहीं किया गया। तो रूस ने भी अपने नीति कोण को बदल दिया और जब कि दोनों ओर के लोग उसकी सहायता चाहें तब तक स्टैलिन चुपचाप महायुद्ध का समय देखता बैठा रहा।

स्टैलिन को अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी और मार्च सन् १९३९ ई० में जर्मनी ने बोहेमिया तथा मोराविया पर भी अधिकार जमा बैठा। इंगलैंड तथा फ्रान्स ने कोई चारा न देख जर्मनी की बढ़ती शक्ति रोकने का संगठन किया उन्होंने पोलैंड को विश्वास दिलाया कि वे जर्मनी को अवश्य ही आगे न बढ़ने देंगे। इन देशों ने योरुप में जर्मनी के विरुद्ध एक पीस ब्लाक स्थापित करने की चेष्टा की और उसमें रूस को बुलाया।

स्टैलिन ने अब मौका पाया उसने मित्र राष्ट्रों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि वह बाल्टिक राष्ट्रों में अपनी स्वतंत्र नीति चाहता है। बाल्टिक सागर के देशों को पहले से ही ब्रिटेन तथा फ्रान्स वादा कर चुके थे कि उन पर किसी प्रकार का आक्रमण नहीं हो सकता इसलिये उन लोगों ने अपने को तटस्थ बतलाया और रूस को उपनिवेश बनाने से इन्कार किया। पोलैंड तथा रूमानिया जिनकी सहायता के लिये रूस से सहायता माँगी जा रही थी। उन्होंने लाल सेना को अपने देश में होकर चलने की आज्ञा न दी। इस पर स्टैलिन चुप हो बैठा और दूसरी ओर से मांग की प्रतीक्षा करने लगा।

यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि किस बात पर सोवियट-जर्मनी समझौता हुआ है किन्तु इस बात का प्रयत्न दोनों देशों के बीच १९३६ से ही हो रहा था। मई सन् १९३९ में लिटविनाव ने स्तीफा दे दिया उसके पश्चात् सीरोवी चेक नेता की सहायता से मास्को बर्लिन के बीच बातें आरम्भ हुईं। इसके पश्चात् एकाएक जूलाई में हर वान पेपन मास्को गये और इस प्रकार रूस-जर्मन समझौते की निराशा आशा में परिणित हो गई।

दोनों देशों को इस समझौते के करने में अपने अपने राष्ट्र के प्रधान नीति को तिलाञ्जलि देनी पड़ी है। 'मीन कैम्प" नामक पुस्तक के अनुसार जर्मनी बाल्टिक सागर तथा यूक्रेन में अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता था। वह रोम बर्लिन को भी मिलाना चाहता था। उसने 'पीपुल्स फ्रन्ट' के सामने सिर झुका दिया और अपने सारे आदर्शों को खो बैठा। औपनिवेशिक समवृद्धि की लालसा में जर्मनी ने अपने आदर्शों का चकना चूर कर दिया।

रूस स्वयम् योरुपियन युद्ध के शुभागमन की प्रतीक्षा में था, उसने भी अपने समाजवाद के आदर्शों को तिलाञ्जलि दे दी और अपनी प्राचीन (जार-शाही अथवा बालशेविक) तृष्णा को बुझाने के लिये तयार हो उठा। उसे बाल्टिक सागर के बन्दरगाह तथा काला सागर के पोर्टों की झलक दिखाई देने लगी। उसको बाल्टिक सागर तथा बलकान प्रान्त में औपनिवेशिक समवृद्धि का अच्छा मौका दिखाई दिया।

जर्मनी के सामने १९३८ ई० में भी वही जटिल समस्या उपस्थित थी जो उसके सामने ब्रेस्टलिटोव्स्क में १९१८ में थी। वह उस समय की भांति इस समय भी पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओर युद्ध नहीं करना चाहता था। वह अपनी पूरी शक्ति पश्चिम की ओर लगाना चाहता था। वह इंगलैंड तथा फ्रान्स को भयभीत भी करना चाहता था कि उसने किस भांति रूस को मिला लिया और पोलैंड को कितनी जल्दी हड़प कर गया।

मीन कैम्फ नामक पुस्तक में हिटलर ने कहा था कि रूस-जर्मन समझौता होने पर युद्ध का होना आवश्यक है और उसका परिणाम जर्मनी का अन्त होगा। किन्तु फिर भी जर्मनी ने परवाह न की।

बर्लिन में जून के महीने में यह बात प्रकाशित हुई कि रूस को नाजियों ने बाल्टिक प्रान्त तथा पोलैंड में हिस्सा देना स्वीकार कर लिया है।

१६ अगस्त को जर्मन गृह मन्त्री ने ब्रिटिश राजदूत को बतलाया कि रूस पोलैंड का हिस्सा बटाने के लिये तयार है। एक सप्ताह के बाद ही अनहोनी बात हो गई और रूस तथा जर्मनी में समझौता हो गया। पहली सितम्बर सन् १९२९ को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया। १७ सितम्बर को सोवियट सेना भी पोलैंड में आ घुसी। इस प्रकार जर्मनी और रूस फिर ब्रेस्टलिटोव्स्क स्थान पर १८ सितम्बर सन् १८३८ में मिले किन्तु इस समय ३ मार्च सन् ९१८ वाली समस्या के बिलकुल विरुद्ध समस्या थी।

उस समय जर्मनी विजयी था और रूस हारा हुआ था। इस समय जर्मनी सोवियट की सहायता चाहता था। उस बार हैफमैन तथा कुहल्मान ने रूस से बाल्टिक सागर के राज्य पोलैंड, यूक्रेन तथा रूमानिया छीन लिये थे। आज हिटलर ने स्वयम् ही सोवियट को यूक्रेन, बाल्टिक राज्य और रूमानिया दे दिये अब जर्मनी के लिये यह कठिन है कि वह यूक्रेन या रूमानिया पर अधिकार जमा सके। जर्मनी ने अपने साम्राज्यवाद तथा प्रजावाद दोनों से हाथ धोया और उसे आकर डिक्टेटर शिप में शरण लेनी पड़ी।

रिबेनट्राप-मोल्टाव 'समझौता १९ सितम्बर को हुआ। इसके अनुसार ... रूसी तथा यूक्रेनियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त रूस को पोलैंड के ज़िले जिनमें पोल तथा जर्मन बस्ती थी जर्मनी को दिये गये जर्मन-रूसी सीमा विस्चुला नदी होकर है और वार्सा नगर के बीच होकर जाती है।

इस प्रकार सोवियट सरकार ने अपनी सीमा २०० मील पश्चिम मध्ययोरुप की ओर बढ़ा ली। अब सोवियट रूस की सीमा लिथुआनिया, पूर्वी प्रशा, हंग्री और रूमानिया की सीमाओं से मिलती है। सोवियट ने अपने नए प्रान्तों को रूसी बनाना आरम्भ कर दिया है। वर्तमान समय में सोवियट तथा जर्मनी के आर्थिक ब्योहार बहुत अच्छे हैं। जर्मनी रूस को मशीनें, मशीन बनाने वाले तथा सैनिक अफसर प्रदान करता है, रूस जर्मनी की सहायता कच्चे माल के साथ करता है। रूस तथा जर्मनी मिल कर बाल्टिक प्रान्तों तथा स्कैन्डीनैविया पर दवाव डाल सकते हैं कि वे इंगलैंड के साथ व्यापार न करें। यह दोनों देश मिल कर टर्की को भी हड़प कर सकते हैं। रूस जर्मन की सहायता किस हद तक कर सकता है इसका निर्माण करना बहुत कठिन है।

सोवियट रूस के बाल्टिक प्रान्त में आक्रमण होने के कारण जर्मन सभ्यता का नाश हो रहा है। जर्मन प्रजा जो बाल्टिक प्रान्तों में बसी थी और प्रथम तथा मध्य श्रेणी बनाये हुई थी अब वह जर्मनी वापस आ रही है। उसे ऐसी स्थिति पर बड़ा अचम्भा तथा परेशानी हो रही है किन्तु फिर भी वह जर्मनी की आज्ञा मानने वाला है।

सोवियट का ध्येय ठीक ठीक समझ में नहीं आता। वह बाल्टिक सागर में अपना जहाजी अड्डा बनाना चाहता था। फिनलैण्ड के आक्रमण से प्रतीत होता है कि वह नार्वे के पश्चिमी बन्दरगाहों तक जाना चाहता है और नार्वे को जर्मन का प्रोटेक्टरेट बनाना चाहता है।

बलकान प्रदेश की ओर रूमानिया को जर्मन आक्रमण का भय पोलैंड होकर होने का जाता रहा है इस पर हो सकता है कि रूमानिया में खुशी लोगों को हुई हो, किन्तु इसका मतलब यह भी है कि रूमानिया रूस के आधिपत्य में आ चुका है और जब कभी उसका बटवारा होगा तो वह बर्लिन में न होकर मास्को में होगा।

इंगलैंड, फ्रान्स और टर्की के समझौते से प्रतीत होता है कि उसे रूस का भय है। टर्की रूस से मैत्री रखना चाहता है क्योंकि वह उसका पड़ोसी है और काला सागर में उसका मुकाबला करने वाला है। टर्की, बर्लिन तथा मास्को से भयभीत होकर दूसरा पोलैंड भी बन सकता है क्योंकि रूस कार्स तथा आर्डाहन के ज़िले वापस मांग रहा है जो उससे ब्रेस्टलिटोव्स्क की संधि में ले लिये गये थे।

सन् १९१८ के समझौते के समय जब रूस से यूक्रेन तथा रूमानिया अलग किये गये थे तो जर्मनी को लगभग एक लाख सेना पूर्व की ओर रखनी पड़ी थी, जिससे किसी प्रकार का भय न रहे। यदि उस समय यही सेना जर्मनी पश्चिम की ओर रखता तो कदाचित् जर्मन का इतिहास कुछ और ही होता। आज भी जर्मनी को वही करना पड़ रहा है। हिटलर समझता था कि रूस को मिला कर उसे शान्ति मिलेगी और वह पश्चिम की ओर भली भांति लड़ सकेगा किन्तु उसे पोलैंड में शान्ति स्थापित रखने तथा शासन करने के लिये फौज पोलैंड में रखनी पड़ रही है।

१९१८ ई० में जर्मनी को तो केवल बोलशेविक मत का ही मुकाबला करना था किन्तु आज उसे बोलशेविक तथा पैनस्लैविक दोनों का सामना करना पड़ रहा है।

जर्मनी के भीतर की दशा को देखने हुये पता चलता है कि जिस प्रकार १९१८ ई० में जर्मनी में क्रान्ति हुई थी उससे भी भारी क्रान्ति फिर होगी और जर्मनी किसी काम का बाकी न रहेगा। जर्मनी ने राष्ट्रीय समाजवाद से कदम राष्ट्रीय बोलशेविक मत की ओर उठाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिनलैण्ड युद्ध के कुछ भीतरी रहस्य

फिनलैंड के युद्ध में दो मुख्य भूलों का प्रभाव सब से अधिक पड़ा है। पहली बड़ी भूल रूस वालों ने की। उन्होंने जब युद्ध आरम्भ किया तो वे समझ रहे थे कि फिन लोगों को हराना बहुत सरल कार्य है। सोवियट रूस को ख्याल था कि जब बड़ी लाल सेना चलेगी तो उसके सामने फिनलैंड की सेना भाग जावेगी और वहां के गरीब तथा मज़दूर लोग अपनी सरकार के विरुद्ध बलवा कर देंगे।

फिन लोगों का ख्याल था कि रूसी सेना मैनरहीम लाइन को न तोड़ सकेगी। इसी कारण उन्होंने मित्र राष्ट्रों से सेना नहीं मांगी। उन्होंने कहा सेना की आवश्यकता अप्रैल में होगी उस समय ३० हज़ार सेना उन्होंने मांगी थी। फिन लोगों ने यह अनुमान जनवरी में लगाया था। किन्तु फरवरी में लाल सेना ने सम्मा पर आक्रमण किया और मैनरहीम सीमा को तोड़ कर देश के भीतर प्रवेश कर गई। इस कारण युद्ध समस्या बिलकुल बदल गई। फिनलैंड को उस समय शीघ्र ही सेना की आवश्यकता पड़ी जो उसे ठीक समय पर मिल नहीं सकती थी।

फील्ड मार्शल मैनरहीम ने जनवरी में जो हिसाब लगाया था उसका मुख्य कारण यह था कि रूसी सेना को जनवरी महीने में केमी नदी, साऊ मस्सालमी, तोलवीजेरबी और लीक्सा में हार हुई थी।

लाल सेना के सेना नायकों की गल्ती से हार हुई। हवाई आक्रमण लगातार होने लगे। रूसी सेना को भोजन सामग्री तथा लड़ाई का सामान ठीक से नहीं पहुँच सका फिन लोगों ने हिसाब लगाया कि रूसी लोग मैनरहीम सीमा के विरुद्ध कोई बड़ा धावा नहीं मार सकते क्योंकि सारी युद्ध सामग्री का ठीक समय पर पहुँचाना कठिन होगा।

फिन लोगों को मालूम था कि किसी भी बड़ी सेना को युद्ध सामग्री पहुँचाने के लिये प्रत्येक २० मिनट के पश्चात् एक रेलगाड़ी की आवश्यकता है!

स्थलसंयोजक (इस्थमस) पर केवल दो रेलवे लाइनें तथा ४ सड़कें थीं जिन्हें रूसी लोग काम में ला सकते थे। यद्यपि लेनिनग्रेड सीमा से केवल २४ मील की दूरी पर था। वहां पर ६ रूसी सेना पड़ी थी। कोई बड़ा आक्रमण करना अच्छे सेनानायकों के लिये भी एक बड़ा कठिन कार्य था। साथ ही साथ लोगों को यह भी निश्चय था कि उस समय वहां पर कोई भी अच्छा सेनानायक रूसियों के बीच मौजूद नहीं था।

मास्को में जो विदेशी राजदूत थे उनका ख्याल था कि लाल सेना अँग्रेज़ी सेना का केवल ६० प्रतिशत सामान तयार कर सकती है और ६० प्रतिशत सामान भी पश्चिमी सीमा पर भेज सकती है। किन्तु लाल सेना इस भविष्य वाणी से कहीं अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई।

मैनरहीम ने मामूली ढंग पर होने वाली ऋतु का अनुमान लगाया था। उसने समझा था कि फरवरी के महीने के बरफ के तूफानों के कारण लाल सेना का आक्रमण करना कठिन होगा। मार्च के महीने की गरमी के कारण वीपुरी की खाड़ी तथा विवोक्सी नदी की बरफ पिघल जावेगी इस कारण उसने जल्दी करना अच्छा नहीं समझा।

लाल सेना ने पहली फरवरी को भीषण आक्रमण ३ लाख सेना के साथ किया और यह आक्रमण ४६ दिन तक लगातार जारी रहा जब तक युद्ध का अन्त नहीं हो गया।

फिन लोगों का अनुमान था कि आक्रमण में सामान के ले आने, ले जाने की कठिनाइयों के कारण रुकावट अवश्य होगी किन्तु यह रुकावट बिलकुल नहीं हुई।

सोवियट सेना ने सम्मा पर मैनरहीम सीमा को तोड़ दिया और आगे बढ़ी। उसके बाद वीपुरी की बरफ से जमी खाड़ी को उन्होंने पार किया। ऋतु ने भी उनका साथ दिया और इस प्रकार उन्हें सफलता प्राप्त हुई।

इस युद्ध काल में फिनलैंड का शीतकाल बहुत ठंडा था। ऐसी शीत वहां १८८८ के बाद कभी नहीं हुई। इस शीत के कारण पहले फिन लोगों को बड़ी सहायता मिली थी। इसी के कारण उत्तर में हज़ारों की संख्या में लाल सेना मर गई थी।

किन्तु फरवरी के बाद से ऋतु ने स्टेलिन का साथ दिया। फरवरी में एक भी बर्फीला तूफान नहीं आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विपरीत दिन साफ रहता था जिससे रूसी बम्ब वर्षा करने वालों को सहायता मिलती थी।

अधिक शीत के कारण विवोक्सी नदी तथा वीपुरी खाड़ी में बर्फीली चट्टानें बहुत कड़ी हो गईं और उन पर लाल सेना के टैङ्क सरलता पूर्वक चल सके। वहां पर बरफ की चौड़ाई ३२ फुट थी। इसके कारण फिनिश सेना की कठिनाई और भी अधिक हो गई।

ऐसे आक्रमणों के कारण फिन लोगों के मरने की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। अभी ठीक ठीक पता नहीं चला कि कितने लोग युद्ध में मारे गये।

हेल्सेन्की में जो विदेशी सैनिक अनुमानी थे उनके अनुसार ३० हज़ार फिनिश सेना मारी गई और ५० या ६० हज़ार सेना घायल हुई। फिनिश सेना की मुख्य संख्या ४ लाख है। जिसमें लगभग एक लाख मारे गये। अथवा घायल हुये।

लड़ाई के अंतिम काल में फिन जनता को १५ दिन की ट्रेनिंग (शिक्षा) हुई। लड़कों को भी फौजी सामान दिया गया। सम्मा में वास्सा ज़िला की स्थाई सेना की हार हुई जिसमें अधिकांश सैनिक अधिक आयु वाले थे। समुद्री सेना के लोग समुद्र से बुलाकर खाइयों में लड़ने के लिये रखे गये थे। इस सेना में कुछ व्यापारी लोग भी थे जो आस्ट्रेलिया से योरुप को गल्ले का व्यापार करते थे। स्थल सेना की कमी हो जाने से फिन लोगों को सभी प्रकार के आदमियों को सेना में रखना पड़ा।

फिन सेना को पूरी तौर पर किसी में हार नहीं माननी पड़ी। अंतिम समय पर फिन सेना के लिये एक बड़ा अनुपम मौका मिला था। फिन सेना को चाहिये था कि वह मैनरहीम सीमा को छोड़ कर बाहर मैदान में निकल आती और फिर गुरिल्ला (छिप छिप कर लड़ना) ढंग से लड़ाई करते।

ऐसा युद्ध करने में शायद उन्हें दक्षिणी फिनलैंड को छोड़ना पड़ता। लडोगा झील के उत्तर का भाग भी उन्हें छोड़ना पड़ता। बहुत बड़ी संख्या में नागरिकों को उन्हें हटाना पड़ता। युद्ध अधिक समय तक चलता तो भी रूस को पता चल जाता कि फिनलैंड भी उसके बगल में एक बहुत बड़ा कांटा है और इस प्रकार मजबूर होकर स्टैलिन को संधि करनी पड़ती और वह संधि इस संधि से कहीं अधिक उत्तम होती।

इस योजना से बहुत से फिनिश जनरल सहमत थे। जनरल एच० वी० ओएस्टमैन भी इसी पक्ष का था। यह शान्त समय में प्रधान सेनापति था तथा मैनरहीम सीमा का नेतृत्व इसी के हाथों में था।

किन्तु जनरल मैनरहीम इसके विरुद्ध था। मैनरहीम लाइन उसी की बनाई हुई लाइन थी उसे विश्वास था कि मैनरहीम सीमा पर या तो फिनलैण्ड को विजय प्राप्त होगी या हार माननी पड़ेगी।

इसी कारण सर ओस्टरमैन मैनरहीम सीमा से हटा दिया गया उसके स्थान पर जनरल ओएस्थ को नियुक्त किया गया। ओएस्थ जनरलों के स्टाफ का प्रधान था। उसके स्थान पर कर्नल आहरो की नियुक्ति की गई। आहरो का विश्वास था कि मैनरहीम सीमा पर ही विजय अथवा पराजय होगी।

जनरल के० एम० वालेनियस को उत्तर से दक्षिण कर दिया गया। वालेनियस ने दिसम्बर में सैल्प सीमा पर घोर युद्ध किया था। उसके स्थान पर जनरल लिंडर की नियुक्ति की गई। लिंडर स्वीडन के वालन्टियरों का प्रधान था।

वालेनियस को स्थमस पर रखा गया। वह यकायक हेलसिंकी पहुँचा। वहां उसके जाने का कोई विशेष कारण न था। उसके भेष से मालूम पड़ता था कि वह जनरल है। वह जानोवी होटल के द्वार पर टहल रहा था। वह ब्रीचेज तथा ऊँचे बूट पहने था। जनरल स्टाफ की दोहरी लाल पट्टी उस पर लगी थी। वह सफेद फर (एक प्रकार का चमड़ा) का कोट पहने था।

वह समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों से बहुत प्रसन्न रहता था। वह स्वयं युद्ध का संवाददाता था। लोग कहते थे कि वह अपनी खोई हुई शक्ति को फिर से प्राप्त करना चाहता था। वह लड़ाइयों की कहानियाँ समझता था और उसी प्रकार उनका वर्णन करता था। वह युद्ध समाचार इतनी सफाई के साथ बतलाता था कि उसी की बदौलत वालेनियस तथा मार्शल मैनरहीम भी उस पर कुछ रुष्ट थे

युद्ध के अन्तिम दिनों में जब वह कैम्प के होटल में था तो किसी संवाद दाता ने पूछा कि प्रधान मंत्री रीटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्को में हैं और रूस से संधि करने की बात चला दी है। उसने उत्तर दिया "असम्भव! अभी हम लोग दो साल तक और लड़ेंगे"। यह कहता हुआ और अपने पिस्तौल को देखता हुआ वह कमरे के बाहर चला गया।

युद्ध क्षेत्र में ही युद्ध अथवा संधि समस्या हल नहीं हुई वरन् राजनीतिज्ञों ने इसमें बहुत बड़ा भाग लिया है।

फिनिश मंत्रिमंडल अपने स्थान पर बैठा हुआ फील्ड मर्शाल मैनरहीम से सलाह लेता रहता था। मैनरहीम का दफ्तर लड़ाई के मैदान में था। राज्य की बागडोर मंत्री मंडल तथा मैनरहीम के हाथों में थी।

फिन मन्त्रि-मंडल के कुछ सदस्य ऐसे हैं जो आरम्भ से ही सोवियट रूस के साथ संधि करने से सहमत थे। जब कभी भी संधि हो जाती वे कर लेते।

लोगों का कहना है कि स्टैलिन जो कुछ चाहता था वह उसे बिना युद्ध किये ही मिल जाता फिर भी उसने युद्ध की शरण क्यों लिया? इसका भेद ठीक ठीक मालूम नहीं है।

च्यांगकाईशेक के गुण

क्यांगसी प्रान्त की दीवारों से घिरी हुई नानचांग नगरी (राजधानी) में घुटे हुये सिर और तिरछी आंख वाले च्यांगकाई शेक ने चीन में सुधार का आन्दोलन आरम्भ किया। इसमें उनकी धर्म पत्नी श्रीमती च्यांग ने उनका पूरा साथ दिया। श्रीमती एक धनी घराने में पली हुई हैं और वेलेज़्ली के स्कूल में शिक्षा पाई हुई हैं।

सिपाहियाना सादी पोशाक पहिने हुये च्याँग कांई शेक ने कागज़ के बने हुये गुलाब के बगीचों में च्यांग ने एक भाषण दिया। उनके सामने पीतल के ढांचे में बड़ा माइक्रोफोन (लाउडस्पीकर) टंगा था। उनके इर्द गिर्द उनकी सेना के सिपाही खड़े थे। इस प्रकार चीन में नव-जीवन-आन्दोलन आरम्भ हुआ। चीन देश के ४० करोड़ निवासियों की गिरी हुई दशा से पूर्ण परिचित च्याँग ने चार बातों पर अधिक ज़ोर दिया। चीनी भाषा में इन्हें १ ली, २ ई, ३ ल्येन और ४ चिः कहते हैं। इनका अर्थ है १ नम्रता या शिष्टाचार, २ जन-सेवा, ३ ईमानदारी और दूसरों के अधिकारों का आदर और ४ उच्च भावना। च्याँग कार्ई शेक ने इन आदर्शों को सर्व साधारण और दैनिक जीवन में प्रयोग करने का आदेश दिया। भोजन वस्त्र, घर और कारबार में इनका प्रयोग होने लगा।

पहले ९०० पुराने नानचाँग शहर के निवासियों ने जड़ों की बनी हुई झाड़ू लेकर शहर की २२ मील लम्बी चार दीवारी के भीतर की नालियों को साफ किया। लेकिन यह आन्दोलन दूसरे शहरों में भी तेज़ी से फैला। नानकिंग पेपिंग और दूसरे शहरों में सरकारी नौकर और पुलिस मैन सदियों की धूल हँस हँस कर साफ करने लगे। सफाई की टोलियाँ बैंड बजा कर और झंडा लेकर अपने अपने काम में लग गई।

सफेद वस्त्र पहिने हुई नई व्याही हुई स्त्रियाँ और काले गाडन वाले विद्यार्थी इसमें हाथ बटाने लगे।

सड़कों पर कूड़ा करकट डालने की बात तो दूर रही सिगरेट पीना भी बुरा समझा जाने लगा। सार्वजनिक स्थानों में थूकने वालों पर डाट पड़ने लगी। रिशवत खोरी एकदम उड़ गई। जुआघर बन्द हो गये अफीम पीना कम हो गया। लोगों में नई आशा और खुशी झलकने लगी।

पहले एक बार तुंकान के स्टेशनमास्टर ने एक बड़े सरकारी नौकर से दूसरी गाड़ी के छूटने का समय पूछा। स्टेशन मास्टर ने कहा कि गाड़ी आने और जाने का कोई समय नियत नहीं है। लेकिन नये आन्दोलन के बाद चीन की गाड़ियाँ समय पर आने जाने लगीं।

सकड़ों नये ढंग के सस्ते लेकिन अच्छे स्कूल खुल गये। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ गई। लड़कियों के जीवन में सादगी आ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्की और उसके मित्र-राष्ट्र

इसमें संशय नहीं है कि संसार के सभी मध्य-श्रेणी तथा सीधे साधे लोगों का विचार एक ही सा होता है। हाँ उनके विचार में भौगोलिक स्थिति और राष्ट्रीय अवेक्षण के कारण कुछ अन्तर अवश्य हो होता है।

टर्की के निवासी ऐंग्लो-टर्की संधि से बड़े खुश हैं। वहां का प्रत्येक व्यक्ति संधि समाचार पाकर प्रसन्न हुआ है। टर्की के बैरी बड़े बड़े राष्ट्र हैं और प्रत्येक बड़े युद्ध में किसी न किसी ने टर्की पर आक्रमण अवश्य किया है। जो लोग टर्की को हड़प जाना चाहते हैं वे अब अंग्रेजी और फ्रान्सीसियों के बैरी हैं। तुर्क लोगों को अपनी देश की रक्षा करने के लिये सदैव तयार रहना पड़ता है। तुर्क लोग बोती हुई बातों को भूल जाते हैं।

यूनान और टर्की की मित्रता है। उनके मित्रता का एक मुख्य कारण तो यह है कि दोनों राष्ट्र सदैव विदेशी आक्रमण से डरते रहते हैं इसलिये दोनों को एक दूसरे के सहायता की आवश्यकता होती है। वे दोनों राष्ट्र अब भी क्रीमियन युद्ध का स्मरण करते हैं और उसकी याद उन्हें नहीं भूलती। यद्यपि विदेशी प्रचारकों टर्की में अँग्रेजों तथा फ्रान्सीसियों के विरुद्ध असंख्य पर्चे बांटे और उनकी कुटिल नीति को बतलाया है। उन्होंने यह भी याद दिलाई है कि मित्र-राष्ट्रों ने टर्की के साथ १९१४ के युद्ध में कैसा वर्ताव किये थे। जर्मन प्रचारकों का कहना है कि यदि टर्की उनके साथ हो गया होता तो उसे बड़ा लाभ होता। परन्तु टर्की के निवासी प्रचारकों के कहने की तनिक भी परवाह नहीं करते और अस्मत इनानू की नीति को ही ठीक समझते हैं।

तुर्क बात के बड़े पक्के होते हैं। वे बात देकर फिर मुकरना नहीं जानते हैं। जब कभी भी वे किसी को कुछ प्रतिज्ञा दे देते हैं तो उसे कभी नहा तोड़ते। लोगों का कहना है कि राजनीति में धोका देना सत्य है और इसी से सफलता भी प्राप्त होती है। परन्तु कुछ लोगों का कहना यह भी है कि मनुष्य को ठीक मार्ग पर चलना चाहिये और अपने शब्द का पालन करना चाहिए। तुर्क लोग इसी दूसरे मार्ग के चलने वाले हैं। वे सदैव अपने शब्द का आदर करते हैं। चाहे वे लिखे हों अथवा बे लिखे हों।

तुर्क लोग लड़ाकू होते हुये भो शांति चाहते हैं। वे ऐसी शान्ति चाहते हैं जो बहुत समय तक चल सके। परन्तु बर्तमान दुनिया में उन्हें इस प्रकार की शान्ति मिलना कठिन है क्योंकि आज यह कहना कठिन है कि कल किस देश के परतंत्रता की बारी है? तुर्क लोगों को ऐसी शान्ति पाने के लिये उन राष्ट्रों की सहायता करनी चाहिये जो अपनी रक्षा करना चाहते हों परन्तु किसी पर आक्रमण करना न चाहते हों।

ऐंग्लो-तुर्की संधि के विरुद्ध प्रचार करने वाले तुर्क लोगों से कहते हैं कि यदि तुम जर्मनी अथवा रूस से संधि करते तो तुम युद्ध से अलग रह सकते थे परन्तु अब युद्ध से अलग होना तुम्हारे लिये बहुत कठिन है। ऐसे प्रश्नों के उत्तर में तुर्क लोग कहते हैं कि जर्मनी ने चेकोस्लोवेकिया के साथ क्या किया। सुडेटन प्रान्त (जो जर्मनी का था) को चेकोस्लोवेकिया ने जर्मनी को दे दिया परन्तु फिर भी जर्मनी ने चेकोस्लोवेकिया के साथ किस प्रकार का बर्ताव किया है। अर्थात् उसे हड़प कर गया है। तुर्क लोगों का कहना है कि उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है उन्हें तो आवश्यकता केवल जो कुछ उनके पास है उसकी रक्षा करने के लिये है।

उपरोक्त बातें टर्की के आम प्रजा के बारे में कही गई हैं। अब हम यहां पर टर्की के सरकारी अफसरों के बारे में लिखते हैं जो दूसरे राष्ट्रों से संधि अथवा झगड़ा कर सकते हैं और देश का भाग्य उन्हीं लोगों के हाथों में है।

गत महायुद्ध में टर्की को बड़ी हानि तथा कष्ट उठाने पड़े हैं परन्तु उन्हीं कष्टों के कारण उनके अन्दर नये जीवन-शक्ति का संचार हुआ है। उसी चेतनत्व के कारण टर्की ने अपने राष्ट्र को १६ साल के अल्प काल में ही बिलकुल नया देश बना लिया है। टर्की के बनाने में प्रत्येक तुर्क ने कुछ न कुछ भाग बंटाया है जिसका उसे बहुत बड़ा गर्व है। इसलिये यह तुर्क लोगों के लिये प्राकृतिक बात है कि वे शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रेमी हों। टर्की ने ऐसे मार्ग का अनुसरण किया है जिसके वह अपनी प्रजा तथा सभ्यता दोनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर सके। टर्की केवल अपने लिये ही नहीं वरन् अपने पड़ोसी तथा अपने मित्र राष्ट्रों के लिये भी अमनचैन और शान्ति चाहता है। बल्कान तथा सैदाबाद की संधियां जो टर्की, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और इराक़ के बीच हुई हैं उनका मुख्य उद्देश्य यही था। प्रत्येक राष्ट्र जो दूसरों के अधिकारों का आदर करता है और शान्ति का प्रेमी है वह टर्की (प्रजातंत्रराज्य) का प्राकृतिक मित्र तथा साथी है। उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र जो टर्की को आक्रमण करने की धमकी देना चाहे वह अपने हृदय में भली भांति समझ ले कि तुर्क जो अपने देश के प्रेमी हैं अपने देश के लिये मर मिटेंगे।

यदि हम वर्तमान संकट के उपस्थित होने का कारण ढूँढ़ें तो हमको पता चलता है कि यद्यपि बीसवीं शताब्दी को आरम्भ हुये चालीस साल व्यतीत हो गये तो भी १९१४ ई० में जो संकट उसे मिला है उससे वह पुनः चंगी नहीं हुई है।

देहवाद, अहंवाद, बर्गवाद शिष्टाचार, शान्तवाद और रहस्यवाद आदि का प्रचार इतना अधिक हो गया है और उनका मेल ऐसा विलक्षण हुआ है कि जिससे संसार में बर्तमान दैवागत विपत्ति उत्पन्न हो गई है। अनात्मवाद का प्रचार निजी तथा राष्ट्रीय दोनों भावों से किया गया है जिससे उसकी इतनी अधिकता हो गई है कि उसी से अहंवाद का उत्पत्ति हो गई है। अहं मैंने संसार में इतना अधिक स्थान घेर लिया है कि और किसी दूसरे के लिये स्थान शेष नहीं रह गया है। इसी कारण संसार में बहुत से एकाधिपतियों की उत्पत्ति हुई है जो अपने को देवता समझते हैं और सारे बसे हुये संसार पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। बर्गवाद का अनुसरण करने वाली जाति अपने को सब से ऊँचा समझती है और वह प्रत्येक मनुष्य को जो उसके भीतर पैदा नहीं है भयभीत करती है। प्रजातंत्र राज्यों में शिष्टाचार तथा आनन्द वाद का बड़ा प्रचार है। वहां पर आपस के वैमनस्य तथा मैल भाव की वृद्धि बहुत हुई है क्योंकि शिष्टाचारी आनन्द वादी पुरुष शान्ति का बड़ा भारी बैरी होता है। जो कोई भी अपने जीवन के बहुमूल्य सुखों के बिना नहीं अपने जीवन के त्याग के बिना शान्ति को चाहता है उसे शान्ति की प्राप्ति कभी हो ही नहीं सकती। वातोन्माद, रहस्यवाद का प्रचार इतना बढ़ गया कि उसे प्रत्येक समाज तथा संस्था ने घर घरौंदा समझ लिया है। इस प्रकार की त्रुटियां तथा बुराइयां संसार में बढ़ती चली गईं जिनका कोई अंत न रह गया। ज्ञानी तथा विद्यवान पुरुष जो इन बुराइयों के खतरों को भली भांति समझते थे उन्होंने गरम कमरों में बैठकर काव्य भाषा में वादाविवाद किया। किसी ने भी आने वाले खतरों की परिभाषा नहीं की और न सत्य रूप में काम करने के लिये आगे पग उठाया। जब बीमारी अधिक बढ़ जाती है और मनुष्य के शरीर के पुर्जे जवाब दे देते हैं तो फिर उसका सत्यानाश हो जाता है। ठीक यही दशा योरुप की हो गई थी। वहां की दशा इतनी संकट मय हो गई थी कि उसका सुधरना कठिन था।

१९३ ई० में पश्चिमी सभ्यता की यही दशा प्रतीत होती थी मालूम हो रहा था कि संसार में फिर घोर अंधकार युग का आरम्भ होगा परन्तु १९४० ई० में कुछ लहर ऐसी पैदा होती प्रतीत हुई है जिससे पता चलता कि शायद लोग खतरों का सामना बहादुरी के साथ करने का साहस करें और संसार को ठीक मार्ग पर लगावें।

बर्तमान संकट में टर्की का लक्ष्य क्या है? उसके उद्देश्य क्या हैं? इसकी कुछ झलक "टर्की फेसेज बेस्ट" नामक पुस्तक में है। उसमें जिन उद्देश्यों का उल्लेख है वे लेखक के निजी अनुभव और ऐतिहासिक ज्ञान का परिणाम है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ काल से ही टर्की को पश्चिमी सभ्यता तथा देशों का सामना करना पड़ा है। भाग्यवश टर्की की गणना पश्चिमी देशों में हो गई है। लगभग १०० सालों तक टर्की को प्राचीन सभ्यता से युद्ध करना पड़ा है। आज तुर्क लोगों की लड़ाई प्राचीन संस्कृत से नहीं है। वरन् उसे नवीन सभ्यता की बुराइयों और भलाइयों को अलग करके उनका निरीक्षण करना है।

टर्की को पश्चिमी सभ्यता में रंगने के लिये तीन बार घोर प्रयत्न किया गया। यह प्रयत्न १८२६,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८३९ और १९०८ में किये गये थे। १८७६ से १९०८ तक टर्की पश्चिमी सभ्यता के मार्ग पर चला। इस समय में अब्दुल हमीद टर्की का राजा था। लावसाने के में नवीन टर्की की स्थापना हुई और प्रजातंत्र राज्य वहाँ स्थापित किया गया। अतातुर्क और इस्मत हनानू के हाथ में है। किसी भी देश की उन्नति उसकी संस्कृत तथा इतिहास पर निर्भर करती है। टर्की का मुख्य लक्ष प्रजातांत्रिक है। टर्की प्रजातंत्र राज्यों की रक्षा में हाथ बटाना चाहता है। यदि युद्ध का अंत काल हो जाय तो टर्की संसार में शान्ति स्थापित करने और स्वतंत्रता प्रदान करने में हाथ बटावेगा।

टर्की के प्रधान मंत्री रफीक़ सैदम ने १८ जनवरी सन् १९४० के भाषण में कहा है कि टर्की का राज वैधानिक नियमों पर कायम है। टर्की सभी लोगों की स्वतंत्रता का आदर करना चाहता है। परन्तु वह स्वतंत्रता के उन नियमों को मानना चाहता है जिन नियमों के कारण राज्य शासन में राज्य करने वाले अपनी प्रजा के उत्तर दायित्व हों और सदैव अपनी जिम्मेदारी का अनुभव करें। इसलिये टर्की प्रजा तंत्रीय शासन को अधिक उपयोगी मानता है।

रफीक सैदाम ने जो कुछ कहा है वह उसके १६ साल के राज्य शासन के अनुभव का परिणाम है। टर्की अब अपने अवस्थान्तर में काफी आगे बढ़ चुका है। शिक्षा, समाज अर्थ शास्त्र और दूसरे मार्गों में जो उन्नति हुई है। उसमें सबल होने की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि चतुरता, दूरदर्शिता और सहनशीलता की है। इटली प्रजातंत्रीय शासन की ओर उतना ही अग्रगामी हो सकता है जितना कि वहां की दशा अग्रगामी बनने दे। परन्तु इस्मत इनानू और रफीक सैदाम को काफी अनुभव है कि वे टर्की को इस संकट से बचा सकेंगे।

किसी देश की भी वैदेशिक नीति वहाँ के राष्ट्रीय हितों मानसिक झुकाव और संस्कृत पर निर्भर करती है।

टर्की की रक्षा के लिये आवश्यक है कि टर्की बाल्कान राज्यों से आर्थिक तथा आत्म रक्षक संधियां करे। यह संधियाँ बल्कान राष्ट्रों की रक्षा के लिये आवश्यक हैं। इसी कारण टर्की और बल्कान राष्ट्रों में संधि हुई है। टर्की कभी भी संधियों को तोड़कर युद्ध को पूर्व की ओर लाने का प्रयत्न न करेगा।

इटली भूमध्य सागर को अपना राष्ट्रीय समुद्र बतलाता है। वह तुर्की तट और तटीय नगरों पर अधिकार करना चाहता है परन्तु यह बात इँगलैण्ड और फ्रान्स के टालमटोल करने और रूस तथा जर्मनी की सहायता के बिना पूर्ण नहीं हो सकती जब इटली इंगलैंड का साथी था उस समय भी वह रूम सागर पर इटली का अधिक अधिकार नहीं देखना चाहता था तो फिर अब मान लेना चाहिये कि जर्मनी जिस भाग को अपना समझता है उसे दूसरे को कदापि नहीं दे सकता।

पिछले २० सालों से टर्की और रूस के आपसी सम्बन्ध बहुत अच्छे रहे हैं। आधुनिक रूस ने इटली के ऐतिहासिक संकट के समय में उसकी सहायता किया है। वे एक दूसरे के प्रति सच्चे रहे हैं। रूस के वर्तमान शासन काल की वैदेशिक नीति शान्ति नीति है। उसने विदेशों के लिये यह एक अच्छी मिसाल पेश कर दी है। परन्तु जर्मनी के साथ सन्धि करने के बाद से रूस की नीति में कुछ अन्तर उत्पन्न हो गया है। इसी कारण उसने पोलैंड और फिनलैंड पर धावा मारा। अभाग्यवश रूस शायद फिर अपने ज़ार वाले काल को लौट जाना चाहता है। और साम्राज्यवाद की स्थापना करना चाहता है। यदि वह टर्की पर आक्रमण करने की सोच रहा है तो फिर उसे भली भांति समझ लेना चाहिये कि जब तक टर्की का बच्चा २ मर न जावेगा टर्की पर अधिकार करना बहुत कठिन है। जर्मनी रूस को बहका रहा है कि वह टर्की पर आक्रमण करे। मगर वह स्वयम् रूस पर ताक लगाये बैठा है और समय की प्रतीक्षा कर रहा है। इसलिये टर्की के लिये आवश्यक है कि वह इँगलैंड और फ्रांस के साथ सन्धि करे।

टर्की का जर्मनी के साथ गत महायुद्ध से मैत्री सम्बन्ध था। टर्की का ५० प्रतिशत आयात और निर्यात जर्मनी के हाथ होता था। परन्तु अभाग्यवश जर्मनी पूर्व की ओर (बल्कान) और टर्की में कुछ भाग लेना चाहता है। ऐसी दशा में टर्की को इंगलैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फ्रान्स के सिवा और कोई मित्र दिखाई नहीं पड़ा। इँगलैंड और फ्रान्स ही जर्मनी तथा रूस के साम्राज्यवादी फैलाव में रोक लगा सकते हैं।

अतातुर्क कमाल पाशा ने अपने सुधारों को शान्ति पूर्वक समाप्त किया और उस समय युद्ध की कुछ भी सम्भावना न थी। परन्तु आज जब इस्मत इनानू ने टर्की की बागडोर अपने हाथ में ली है तो चारों ओर युद्ध के बादल उमड़ते हुये दिखाई पड़ते हैं। सारे संसार में एक भीषण परिवर्तन होने वाला है। ऐसी दशा में इस्मत इनानु से बढ़ कर कोई भी शक्ति नहीं है जो टर्की की बागडोर संभाल सके और उसे ठीक मार्ग पर चला सके। इस्मत इनानू सीधे साधे तुर्क लोगों का सच्चा प्रतिनिधि है। वह राजनैतिक क्षेत्र की त्रुटियाँ तथ अच्छाइयाँ दोनों को अच्छी प्रकार जानता है उसके कारण टर्की में राष्ट्रीय एकता है विदेशों में अपनी चतुरता अनुभव और मानसिक अच्छाइयों के कारण उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति में ऊँचा है।

निदरलैण्ड की सेना

निदर लैण्ड में दो प्रकार की सेना है। एक सेना देश के अन्दर रहती है और दूसरी देश के बाहर रहती है। देशी सेना में स्थाई सैनिक और मिलीशिया सैनिक हैं।

विदेश में रहने वाली सेना में भी दो प्रकार के सैनिक हैं। एक तो वे हैं जो स्थाई सैनिक हैं और दूसरे वे हैं जो युद्ध के समय युद्ध करने पर मजबूर किये जाते हैं। ऐसे सैनिकों की संख्या बहुत कम है।

१९२२ ई० के नियमानुसार निदरलैण्ड के लोगों को स्वयमसेवक के रूप में और जबरिया तौर पर भी सेना में काम करना पड़ता है। प्रत्येक हालैण्ड निवासी को १९ साल से चालीस साल की अवस्था तक में सेना (जल अथवा स्थल) में अवश्य काम करना पड़ता है।

निदरलैण्ड को सेना में ४ बड़े बड़े सैनिक दस्ते, एक तेज छोटा कारखाना तथा पैदलों का जत्था, ८ पैदल सैनिकों का जत्था, ४ तोप खाने के जत्थे २५ पैदल रेजीमेन्ट, दो घोड़सवार रेजीमेन्ट, ८ युद्ध क्षेत्र तोपों की रेजीमेन्ट, एक तटीय रेजीमेन्ट, एक मोटर रेजीमेन्ट और एक इंजीनियरों की रेजीमेन्ट है। १९३८ ई० में निदरलैण्ड देश की सेना में १ ०० सैनिक थे। समुद्र के ऊपर और देश के बाहर ४० हजार सेना थी।

परेड के समय देश की सेना की संख्या १ लाख १४ हजार और रिजर्व सेना को मिला कर २ लाख ७० हजार हो जाती है।

निदरलैण्ड के पैदल सैनिकों के पास मैन्नलिचेर मैगज़ीन वाली ९५ माडल की रायफिलें हैं और घोड़ सवार तथा इंजीनियर सैनिकों के पास मैन्नलिचेर कराबीन (राइफल) हैं। तोपखाने वाले सैनिकों तथा घोड़सवारों के पास ७·५ सेन्टीमीटर वाली बन्दूकें हैं।

१८ साल की अवस्था के हो जाने पर निदरलैण्ड के लोगों को फौजी सेवा करनी पड़ती है। किसी खास दशा में लोगों को फौजी सेना से छुट्टी मिल जाती है परन्तु उन्हें फौज सम्बन्धी कोई दूसरा कार्य करना पड़ता है। सैनिकों को ८ से १५ महीने तक की ट्रेनिंग दी जाती है।

निदरलैण्ड में एक स्वयमसेवक लैण्डस्टान नामक संस्था है जिसकी संख्या १९३६ ई० में ५४ हजार थी। इसमें मोटर चलाने वाले, रेल में काम करने वाले और हवाई आक्रमण की सूचना देने वाले सैनिक हैं। इन्हें "स्पेशल वालेंटियर" (खास स्वयम्सेवक) कहा जाता है।

देश के बाहर रहने वाली सेना में डच की योरुपीय प्रजा को जबरदस्ती फौजी सेवा करनी पड़ती है। समुद्री सेना में डच तथा योरुपीय लोग हैं। १९३७ ई० में समुद्र के ऊपर रहने वाली सेना में ३२,५२० सैनिक थे जिसमें १०६२ अफसर थे।

समुद्री सेना

समुद्री सेना के सैनिकों को २८० दिन की ट्रेनिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी जाती है। २४० दिन तक सभी सैनिकों को ट्रेनिंग मिलती है। उसके बाद ४० दिनों तक रिज़र्व सैनिकों को ट्रेनिंग मिलती हैं जब सेना में कुल ११७५० सैनिक हैं। इसमें लड़ने वाले सैनिक मल्लाह अफसर आदि सभी सम्मिलत हैं। इस संख्या को बढ़ा कर १५ हज़ार करने का प्रबन्ध हो रहा है। डच पूर्वी द्वीप समूह के जल सेना के सैनिकों की गणना भी इसी में शामिल है।

३ लड़ाकू जहाज़ हैं जो लड़ाई और सिखाने का दोनों काम करते हैं। इनका वजन १०,६१६ पौंड है। इन पर ११,९.४२.९ और तीन इंच वाली तोपें हैं। इनके सिवा १२ डिस्ट्राएर, ४४ टारपिडो बोट और २० सबमरीन (पनडुब्बे जहाज) हैं। इनके अलावा सुरंग लगाने तथा उखाड़ने वाले जहाज़, गन बोट और स्कार जहाज हैं। नदियों में चलने वाले जहाज भी बहुत से हैं।

डच पूर्वी द्वीपसमूह में दो डिस्ट्राएर ७ सबमरीन (पनडुबे और मोटर टारपीडो बोट और ७ सुरंग उखाड़ने वाले जहाज काम कर रहे हैं दो डिस्ट्राएर तथा ६ सबमरीन जहाज़ पूर्वी डच द्वीप समूह के लिये बन रहे हैं। "लाएड रजिस्टर" के अनुसार निदरलैण्ड के पास कुल १४८२ जहाज़ हैं जो वज़न में २८,५५,३२२ टन हैं।

देश रक्षक सेना के लिये १९३९ ई० में १३४ ८५८,००० फलोरिन (लगभग २० करोड़ रुपया) का बजट रक्खा गया था।

निदरलैण्ड का क्षेत्रफल लगभग २१२५० वर्गमील और जन-संख्या ८६,५१,००० है। जन संख्या प्रति वर्गमील २५४४ है। बेल्जियम के बीच की सीमा २३८ मील और जर्मनी तथा हालैण्ड के बीच की सीमा ३२५ मील है।

हालैण्ड के उपनिवेशों में डच, पूर्वी द्वीपसमूह, सूरीनाम और कुराकाव हैं। इन सब का क्षेत्रफल मिला कर १२,८४,३५० वर्गमील और जन-संख्या ६,०९,८७,००० है।

लक्सेमबर्ग

वर्सलीज़ की संधि के अनुसार लक्सेमबर्ग स्वतंत्र कर दिया गया था। इस ग्रेंड डची में एक सेना जेंडार्मसं और दूसरी स्वयम् सेवकों की है।

जेंडर्मर भीतर शान्ति रखने के लिये और स्वयम् सेवक फौजी सेवा और लक्सेमबर्ग के किले की रक्षा करने के लिये हैं।

ग्रैन्ड डची का क्षेत्रफल १६२५ वर्गमील और जन-संख्या २,९९,००० है।

हालैंड की रक्षा जल द्वारा सदैव से होती चली आई है अभी हाल में जर्मनी ने जो आक्रमण हालैंड पर किया है उसके बचाव के लिये हालैंड वालों ने बाँधों को काट कर समुद्र के पानी को भीतर भर लिया है। इस प्रकार पानी की बाढ़ द्वारा हालैंड निवासी एम्सटर्डम, हेग, राटर्डम आदि बड़े नगरों को अपनी पूर्वी सीमा से अलग करना चाहते हैं। जर्मन लोगों को बाढ़ वाले प्रदेश में पहुँचने के पहले कई एक पानी की छोटी छोटी धाराओं को पार करना पड़ा है।

सारी हालैंड सीमा में पानी भरने वाली नहरें बनी हुई हैं। निजमेजेन स्थान के उत्तर की ओर पानी भरने के लिये जो नहर है। उसका पार करना सरल कार्य नहीं है। वहां पर चारों ओर किले बन्दी है। उसके बाद अर्धव्यासाकार बाढ़ लाने वाली बड़ी नहर है जो ज्वेडर जी समुद्र को म्यूज़ नदी के मुहाने से मिलाती है।

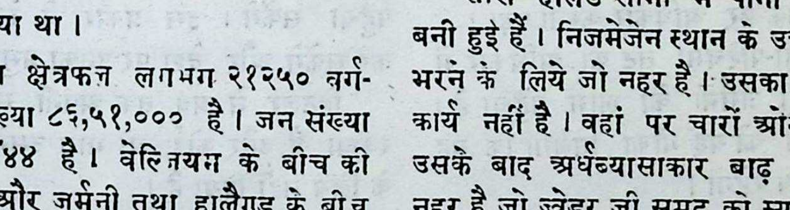

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन युद्ध-कौशल

नाज़ी पार्टी के शक्ति में आने और जर्मन जल सेना की बढ़ती हो जाने के कारण १९१४-१९ के जर्मन युद्ध कौशल का खण्डन किया गया और भावी युद्ध के लिये युद्ध कौशल का निर्माण किया गया। जर्मन युद्ध कौशल की योजना दो बातों पर निर्भर है (१) छोटे छोटे राज्यों की तटस्थता से अधिकाधिक लाभ उठाना (२) उन राज्यों पर समय आ जाने पर एकाएक धावा मार कर अधिकार कर लेना।

इसी युद्ध कौशल वाले नियम के अनुसार जर्मनी तटस्थ राज्यों से माल खरीदता रहा और उनके हाथों अपने देश का माल भेजता रहा। इतना ही नहीं वरन् जर्मनी ने उनके समुद्रों का प्रयोग इतने बुरे ढंग से किया जो मित्र राष्ट्रों के लिये हानिकारक सिद्ध हुआ।

नाज़ी सरकार को यह पहले से ही मालूम था कि किसी समय घेरा अधिक शक्तिशाली अवश्य होगा। उन्हें यह बात भी प्रगट हो गई कि वे घेरे का विरोध करने में समर्थ हो रहे हैं। इसी कारण उन्होंने अपनी वर्तमान कला कौशल की नीति के दूसरे भाग का पालन किया।

यद्यपि डेनमार्क पर अधिकार जमाने से जर्मनी को कोई युद्ध सम्बन्धी लाभ नहीं हुआ तो भी उसे मजबूर होकर डेनमार्क पर अधिकार करना पड़ा।

नार्वे के दक्षिणी-पश्चिमी तट को अधिकार में करने से अवश्य ही जर्मनी को लाभ पहुँचा है। इसके कारण जर्मनी को यह मौका मिलेगा कि वह अँग्रेज़ी घेरे के समीप रहेगा।

यदि जर्मनी इस योजना में पूरे तौर पर सफल हो गया तो जर्मनी इङ्गलैण्ड के विरुद्ध उसकी जल सेना का सामना कर सकेगा और पनडुब्बे जहाज़ अपने काम सफलतापूर्वक कर सकेंगे। जर्मनों को यह मौका होगा कि वह इंगलैण्ड की जल सेना जो उत्तरी इंगलैंड से आइसलैंड तक फैली है। उसका सामना कर सकेगा और उसे पश्चिम की ओर हटा सकेगा। जर्मन जल सेना घेरे वाले स्थानों में प्रवेश कर सकेगी और घेरे को आसानी से तोड़ सकेगी।

इस योजना से नार्वे स्वीडन के ७ लाख पौंड के जहाज़ जर्मनी के अधिकार में आ सकेंगे। यह जहाज़ इंगलैंड का काम कर रहे हैं।

डेनमार्क पर आक्रमण होने के कारण इंगलैंड को मौका मिल गया है कि वह आइसलैण्ड तथा फैरो द्वीप समूहों में अड्डे बना सकते हैं और घेरे का दृढ़ बना सकते हैं। अब तक आइसलैण्ड की तटस्थता मानी जाती थी किन्तु डेनमार्क के आक्रमण के कारण आइसलैण्ड इंगलैंड की रक्षा के लिये अवश्य ही तयार होगा।

जर्मन जल सेना अधिकारियों ने यह सोच लिया है कि पतले समुद्र तथा खाड़ियों, स्कागरक कट्टेगट आदि में वही सफलता प्राप्त कर सकेगा जिसके हाथों में समुद्र का तटीय भाग होगा और उसके वायुयानों की शक्ति दृढ़ होगी। जर्मन लोगों का कहना है कि ऐसे स्थानों में वे बड़े से बड़े शक्तिशाली जहाज़ी बेड़े को भी भाग जाने पर मजबूर कर देंगे।

जर्मन लोगों ने यह भी सोच लिया था कि अचानक आक्रमण करने से वे अपनी अधिक से अधिक सेना ओसलो तथा और दूसरे प्रधान स्थानों पर पहुँचा सकेंगे। इस प्रकार वे रेलों पर अधिकार कर सकेंगे और देश पर उनका प्रभुत्व जम जावेगा।

हिटलर ने अब तक अपनी सेना को एकत्रित रक्खा है और कोई भी भाग उसने सीधे आक्रमण के लिये नहीं दिया है।

जर्मनों ने शीघ्रता में बहुत ज्यादा जर्मन सेना नार्वे में भेज दी। उसका वहां रहना कठिन हो जावेगा और फिर वह शीघ्रता के साथ वहां से सुरक्षित उन्हें निकाल भी नहीं सकेगा।

हिटलर ने पहले पहल ही यह नीति चली है कि अपने सैनिकों द्वारा ही भयानक आक्रमण कराया जिसमें उसे भारी हानि की शंका थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध और आयरलैण्ड

ब्रिटिश कामन वेल्थ में आयरलैण्ड ही एक ऐसा देश है जिसने इङ्गलैण्ड का अनुकरण जर्मनी से युद्ध घोषणा करने में नहीं किया है। इसका प्रभाव इँगलैण्ड तथा आयरलैण्ड के आपसी सम्बन्ध पर बहुत पड़ेगा। आयर-आयरलैण्ड की तटस्थता से युद्ध पर काफी प्रभाव पड़ेगा। आयर-लैंड की स्थिति इङ्गलैंड के लिये बड़े मार्के की है और इङ्गलैंड के प्रधान सामुद्रिक मार्ग एरी होकर ही हैं। इसलिये इङ्ग-लैण्ड के राजनीतिज्ञों का यह एक जटिल समस्या पैदा कर देगा जो उसके सामने कभी भी नहीं आई थी।

आयरलैण्ड दो भागों में बँटा है, २६ काउन्टिया एरी में और ७ उत्तरी आयरलैण्ड में हैं। ये ६ काउन्टिया (ज़िले) इङ्गलैण्ड में शामिल हैं और इन्होंने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी है। वहां पर सेना के अन्दर लोग भरती हो रहे हैं। दो प्रधान रेजीमेन्टों का वहाँ पर केन्द्र है, तीसरी नार्थ आइरिश हार्स (उत्तरी आइरिश घोड़े) के नाम से एक रेजीमेन्ट फिर से तयार का जा रही है। यहाँ से इङ्गलैण्ड को सभी प्रकार के सामान बिना चुंगी के आते जाते हैं। फिर भी एक अन्तर अवश्य है, वह यह कि अनिवार्य सैनिक सेवा का भार उस पर बेलफास्ट की पार्लियामेन्ट की सम्मति के बिना नहीं लादा जा सकता। कानूनी तौर पर राजकीय सभा को पूरा अधिकार इस को लादने को है परन्तु कार्य रूप में वह ऐसा नहीं करना चाहती। बेलफास्ट की पार्लियामेन्ट भी इस को आयरलैण्ड पर लादना नहीं चाहती। क्योंकि वह समझती है कि वहां के ४,००,००० कैथलिक निवासी अवश्य ही उसका अपनी पूरी शक्ति के साथ विरोध करेंगे। यद्यपि यह कैथलिक लोग अँग्रेज़ों की भांति हिटलर और नाज़ी पंथियों से घृणा करते हैं तो भी कैथलिक लोगों ने तटस्थ रहने का निश्चय कर लिया है।

आइरिश टाइम्स नामक पत्रिका (जो डबलिन की एक प्रधान पत्रिका है) ने लिखा है कि 'एरी अपनी इच्छा से ब्रिटिश कामनवेल्थ का सदस्य बना हुआ है। उसे अपनी सदस्यता के लिये कुछ देना नहीं पड़ता। वह और दूसरे डोमिनियनों की भाँति अधिकार प्राप्त है, किन्तु उन डोमि-नियनों ने उन अधिकारों का लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया है। जनरल हर्टज़ोग दक्षिणी अफ्रीका से प्रधान मंत्री ने अपने मंत्रित्व की दशा में प्रस्ताव किया था कि दक्षिणी अफ्रीका को तटस्थ रहना चाहिये, किन्तु पार्लियामेन्ट ने उसकी सलाह नहीं मानी, इसलिये आज उसके स्थान पर जनरल स्मटस हैं। स्मटस साहब की सहायता कर्नल रीज़ करते हैं। यह उन आदमियों में से है जो ४० साल पहले अँग्रेजों से भयानक युद्ध कर चुका है। वहां के डच सदस्य अँग्रेज़ों के प्रभाव के हैं। सचमुच ही वहां के सभी निवासी भयभीत हैं कि कहीं तटस्थ होने से हमारी आज़ादी न चली जाय। और हम अपने को संगठित भी न कर सकें। कर्नल रीज़ जो कि एक सैनिक है उसने अपने भाषण में कहा कि बोअर की पूरी विजय होने पर अँग्रेजों ने उनके साथ बड़ी मेहरबानी की थी इसलिये वहां के निवासियों का फर्ज़ है कि वे अपनी सेवा से उसका बदला चुकायें।

१९२१ की संधि के बाद से इङ्गलैंड ने आयरलैंड के साथ साउथ अफ्रीका की भांति ही प्रेम का प्रदर्शन किया है। डी वेलरा ने अपनी बुद्धि का जैसा प्रदर्शन जिनेवा में किया, उसके कारण उसकी गणना जनरल हर्टज़ोग की श्रेणी में हो गई है। मिस्टर डी वेलरा ने अँग्रेज़ों के हितों से विपरीत रहने का संकल्प किया है। कर्नल रीज़ की भांति वहाँ के लोग भी अँग्रेज़ों के पक्षपाती हो सकते थे किंतु किसी ने ऐसा करने का साहस नहीं किया। क्योंकि यदि कोई ऐसा करता तो उसके ऊपर बदनामी का यह टोकरा रक्खा जाता कि वह इङ्गलैंड का आयरलैंड से अधिक हितैषी है। इसलिये राष्ट्रवादी आयरलैण्ड ने तटस्थ रहने का संकल्प कर लिया।

मिस्टर डी वेलरा ने स्वयं अपने पार्लियामेन्ट वाले भाषण में कहा है कि आयरलैंड के कुछ लोग ग्रेट ब्रिटेन के साथी होकर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना चाहते हैं। उन्होंने ऐसे दो प्रधान (सर जान कीने और मैकडेर मोट) व्यक्तियों का नाम भी बतलाया है। यह दोनो सदस्य आयरलैंड में धनी श्रेणी के गिने जाते हैं और पिछली लड़ाई में लड़ चुके हैं। पिछले युद्ध में आयरलैंड से कितने लोग भेजे गये इसकी गणना तो ठीक रूप से नहीं मालूम किन्तु यह बात मालूम है कि लगभग ५०,००० व्यक्ति उस लड़ाई में काम आये थे। मरे हुए लोगों की संख्या से अनुमान किया जाता है कि लगभग २ लाख आदमी सेना में भरती हुये होंगे। इसी से हम इस बात का अनुमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं कि आयरलैंड में कितने लोग जर्मनी के विरुद्ध और इङ्गलैंड के अनुकूल होंगे।

मिस्टर डी वेलरा ने अपनी इस बात पर ज़ोर दिया है कि आयरलैंड में एक वर्ग ऐसा है जो कि हिटलर से घृणा करता है तो भी इङ्गलैण्ड को अपना प्राचीन बैरी समझते हुये समय आने पर उसे परेशान करने का पक्षपाती है। आइरिश रिपब्लिकन सेना ने इसका प्रमाण अभी हाल ही में दिया है। १९३८ ई० में मिस्टर डी वेलरा ने जब चैम्बरलेन सरकार से संधि की थी तो उसने कहा था कि इङ्गलैण्ड और आयरलैण्ड के बीच मैत्री नहीं हो सकती जब तक कि आयरलैण्ड को एक नहीं कर दिया जाता। डी वेलरा के मतानुसार आयरलैण्ड का बँटवारा अँग्रेज़ों ने किया है और उस बटवारे को वे ही चला रहे हैं और वे उसका अंत भी कर सकते हैं। उसने एरी को उत्तरी आयरलैण्ड से मिलाने में सैनिक शक्ति का प्रयोग करने की बात नहीं मानी। उसका और उसके साथियों का कहना है कि इङ्गलैण्ड को चाहिये कि वह पहले वहाँ से अपनी सेना हटा ले, उसके पश्चात् वह जो वहां की सहायता करता है वह सहायता बन्द कर दे। उसने साफ साफ यह घोषणा की कि जब तक अँग्रेज़ सरकार इन बातों को पूरा नहीं करती तब तक आयरलैण्ड इङ्गलैण्ड की भली भांति सहायता नहीं कर सकता है।

आयरलैण्ड के स्त्री तथा पुरुष स्वतंत्रता पूर्वक ग्रेट ब्रिटेन में जाकर सरकारी तथा निजी नौकरियाँ कर सकते हैं। ऐसे लोग हज़ारों की संख्या में नौकरियाँ कर रहे हैं। ६ काउन्टियां छोड़ कर आयरलैंड में और कहीं फौजी भर्ती नहीं हो सकती। एरी के भीतर कोई भी ब्रिटिश सैनिक अपनी वर्दी में नहीं जा सकता, किन्तु काफी समय से आयरलैंड-के निवासी इङ्गलिश नेवी और सेना में जाकर भर्ती होते चले आये हैं। यह लोग बड़ी प्रसन्नता के साथ सेना में भर्ती किये जाते थे। आयरलैण्ड की सरकार ने भी इस भर्ती को रोकने के लिये अबतक कोई प्रयत्न नहीं किया है। क्या आयरलैंड की तटस्थता ऐसी नागरिक स्वतंत्रता का एक भाव है?

जो आयरलैंड निवासी ग्रेट ब्रिटेन में नौकर थे और अनिवार्य सैनिक सेवा के लिये बाध्य थे उन्हें उनके देश वापस चले जाने की आज्ञा मिल गई है। इन लोगों के वापस चले जाने से बेकारी का भार आयरलैण्ड में और अधिक बढ़ गया है। आयरलैंड के निवासी अपने सूर्माओं के सच्चरित्र सुन कर बड़े प्रसन्न हुये होंगे और कदाचित् ही कोई व्यक्ति अप्रसन्न हुआ हो। ऐक्टिंग प्लाइट लेफ्टिनेन्ट केन्नेथ डोरन को युद्ध के आरम्भ में ही युद्ध करने में 'फ़्लाईंग क्रास" का पुरस्कार प्रदान किया है। उसने आइरिश लोगों का नाम पैदा किया है। इसके सिवा और भी दूसरे आइरिश लोगों का नाम युद्ध में आया है।

आयरलैण्ड के तट पर आइरिश सैनिकों का पहरा है। यह पहरेदार केवल जर्मन जहाजों को ही किनारे पर आने से नहीं रोकते हैं वरन् अँग्रेज़ जहाज़ों को भी रोकते हैं। और उस पर अधिकार जमा लेते हैं अथवा वापस कर देते हैं। इन सैनिकों का कितनी सहायता वहां के नागरिकों से मिलती होगी यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि कहा जाता है कि जब एक ब्रिटिश वायुयान पिट्रौल के कमी के कारण नीचे उतरा तो नागरिकों ने उसे घेर लिया और सहायता करने की चाह प्रकट की। उसको पिट्रौल नागरिकों द्वारा दिया गया और वह जब तक आकाश में उड़ नहीं गया तब तक किसी सरकारी कर्मचारी को बात मालूम नहीं हुई। वहां की पुलिस भी अँग्रेज़ी सामान का अधिक रोकना पसंद नहीं करती। अँग्रेज़ लोग आयरलैण्ड में घृणा की दृष्टि से भी नहीं देखे जाते हैं। आई० आर० ए० के सदस्य भी शायद अँग्रेज़ी जहाज़ को कदाचित् डुबाना पसंद न करेंगे।

कहा जाता है कि गत महायुद्ध में जर्मन पनडुब्बों को आयरलैंड के पश्चिमी किनारे पर पेट्रौल तथा और दूसरे सामान भी दिये जाते थे। उस समय ऐसी घटनाओं का रोकना अँग्रेज़ सैनिकों का काम था किन्तु आज वही काम आइरिश सैनिकों का है। ६ काउन्टीज़ के बन्दरगाहों को छोड़ कर अँग्रेज़ी जहाज़ी बेड़ा आयरलैंड के तट पर नहीं जा सकता। उत्तरी आयरलैंड में ३ जहाज़ी अड्डे हैं। यह अड्डे बड़े उपयोगी हैं। इसी कारण १९२१ ई० की संधि में भी इङ्गलैंड ने इनको नहीं छोड़ा और अब तक इनको अपने अधिकार में लिये हुये हैं। ये लफ स्वीली, बेरे हेविन और क्वीन्सटाऊन के हार्बर हैं। इन तीनों को "जिब्राल्टर्स" के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ पर आधुनिक किले बने हैं और इनकी रक्षा सुसज्जित सेना तथा तोप गोलों से की जाती है। इन हार्बरों को "जिब्राल्टर्स" के नाम से पुकारा जाता है।

पिछले साल चैम्बरलेन और मिस्टर डी वेलरा के आपसी समझौते के अनुसार ये जहाजी अड्डे आयरलैंड को वापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिये गये हैं। गत युद्ध में यह अड्डे अँग्रेज़ जल सेना के लिये कितने उपयोगी थे और इस युद्ध में ये कितने विघ्नकारक होंगे कहा नहीं जा सकता। आयरलैंड के व्यवसाय की रक्षा अँग्रेज़-जल सेना द्वारा होती थी। स्वयं आयरलैंड अपनी सामुद्रिक रक्षा नहीं कर सकता। इसलिये उसके व्यवसाय में कुछ न कुछ बाधा अवश्य ही पड़ेगी।

जैसी जटिल परिस्थिति इस समय इन अड्डों के वापस करने से है, यदि वे वापस न किये जाते तो दशा और अधिक जटिल तथा शोचनीय होती क्योंकि अपने जहाज़ी अड्डों तथा जहाजों की रक्षा के लिये अँग्रेजों को अपनी सेना काफी संख्या में रखनी पड़ती सब कहीं अँग्रेज सैनिकों का पहरा रखना पड़ता। अँग्रेज सेना की चाल तथा पहरे को देख कर आयरलैंड वालों को भ्रम होता था कि कहीं उनका देश फिर न जीत लिया जाय, इसलिये आयरलैंड और इङ्गलैंड के बीच युद्ध अवश्य छिड़ जाता।

आशा की जाती है कि वर्तमान युद्ध के कारण इङ्गलैंड तथा आयरलैंड के आपसी सम्बन्ध और अधिक खराब न होंगे और आयरलैंड अलस्टर होकर अथवा सीधे इङ्गलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न न करेगा।

ऐरी, अलस्टर, संयुक्त राष्ट्र और ग्रेट ब्रिटेन में कुछ लोग ऐसे अवश्य हैं जो आई० आर० ए० के कार्यों की प्रशंसा करते हैं और अपनी योजना तथा दलील के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति को तोड़ कर आयरिश प्रजातन्त्र की घोषणा करना चाहते हैं यह ऊपद्रवी दल भुलाने योग्य नहीं है, क्योंकि इस दल में ऐसे सदस्य हैं जो खुशी के साथ कड़े से कड़ा दण्ड सहने के लिये तयार रहते हैं। कुछ समय से इस दल के कारनामे गुम हो गये हैं क्योंकि मिस्टर डी वेलरा ने इसके कुछ आइरिश नेताओं को पकड़ कर जेल में डाल दिया है। उन पर यह अभियोग लगाया गया है कि वे एक ऐसी संस्था के सदस्य हैं जो राज्य के लिये खतरनाक है। कवेन्ट्री के बाज़ार में जो बम काण्ड हुआ है और उसमें जितनी निरपराध जानें गई हैं, उसके कारण इस दल के मानने वालों की संख्या कम हो गई है। इस संस्था के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक नहीं है और जब से मिस्टर डी वेलरा ने इस संस्था को गैर कानूनी करार दे दिया है तब से आई० आर० ए० ने डी वेलरा के इस कार्य का विरोध भी नहीं किया है। अब केवल भय यह है कि कहीं इङ्गलैंड आयरलैंड की तटस्थता के कारण कुछ ऐसा कार्य न कर बैठे जिससे आयरलैंड को मौका मिल जाये और वह अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दे। ऐसी दशा में आई० आर ए० को प्रचार करने के लिये अच्छा मौका मिल जावेगा और आयरलैंड के नेताओं से अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये अपील करेंगे।

सौभाग्यवश ऐसा समय आने की बहुत कम आशा है आयरलैंड यदि चाहे भी तो जर्मनी को अधिक सहायता नहीं कर सकता। आयरलैंड के पास केवल थोड़े से जहाज़ हैं और वे भी ब्रिटिश पिट्रौलिंग वृत्त के भीतर ही आ जाते हैं। आयरलैंड को इङ्गलैंड के बीच जहाज़ी लाइनों द्वारा आना जाना तथा व्यापार होता है। इनमें से दो लाइनें आइरिश झंडे की हैं। इन दोनों लाइनों में युद्ध के आरम्भ होते ही मल्लाहों ने हड़ताल कर दी। मल्लाहों का कहना था कि जहाज़ों पर इङ्गलैंड का झंडा होना चाहिये। उनका विश्वास था कि यदि जहाज डूब जावे तो इसी तरह वे अपने लड़के बच्चों के भोजन इत्यादि का निश्चित निर्णय कर सकेंगे। आयरलैंड तथा इङ्गलैंड के बीच समुद्र का खुला रहना आयरलैंड के लिये बड़ा लाभकारी है। अभी हाल ही में मि० डी वेलरा ने आयरिश पार्लियामेन्ट को बतलाया है कि आयरलैंड की आयात का आधा इङ्गलैंड से आता है और निर्यात का $\frac{9}{10}$ इङ्गलैंड जाता है। इसलिये आयरलैंड को धनी तथा सुखमय बनाने के लिये इङ्गलैंड को सुखयम रखना आवश्यक है।

आयरलैंड एक तटस्थ राष्ट्र होते हुये भी उन्हीं झंझटों में पड़ा है जिनमें इङ्गलैंड पड़ा है। अब उसके ऊपर पहले से कहीं अधिक झंझटें हैं। गत महायुद्ध में आयरिश काश्तकारों ने खूब रुपया पैदा किया था। वर्तमान युद्ध में मांस, मक्खन तथा और दूसरे भोजन के सामान आयरलैंड से ही क्यों मंगाये जावें, डेनमार्क से क्यों न मँगाया जाय, तो भी दोनों राष्ट्रों का व्यापार अँग्रेजी झंडे के नीचे ही होता है।

आयरलैंड के सामने प्रश्न यह है कि क्या वह अपने भोजन के लिये अपने यहां प्रबन्ध कर सकता है? इङ्गलैंड तथा आयरलैंड दोनों देशों में गेहूँ तथा मक्का अमरीका से आता है। मि० डी वेलरा ने अपने गेहूँ के उपज को बढ़ाने का प्रयत्न किया है, किन्तु आयरलैंड में गेहूँ की उपज करने में अधिक व्यय हो जाता है और उससे कम व्यय में दूसरे देशों में उससे अच्छा और अधिक गेहूँ पैदा हो सकता है। फल आदि भी आयरलैंड में पैदा होते हैं, किन्तु घास की उपज वहाँ बहुत होती है, जिसके कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ पशु तथा घोड़ों की अधिकता है परन्तु कृषि के उन्नति की आशा बहुत कम है।

मिस्टर डी वेलरा ने आयरलैंड के बेकार लोगों को नौकरी देने का बहुत कुछ प्रयत्न किया है जिसके कारण उन्हें बड़ा सख़्त नौकरी सम्बन्धी कानून बनाना पड़ा है। इस कानून के कारण सभी बस्तुयें (जो किसानों को ख़रीदने की जरूरत पड़ती है) मँहगी हो गई हैं। इस के साथ ही साथ वहाँ की आर्थिक दशा भी खराब हो गई और मि० डी वेलरा ने इङ्गलैंड को कर देने से इन्कार कर दिया। इङ्गलैंड ने आयात पर अधिक कर लगा कर उसे वसूल करने का प्रयत्न किया। आयरलैंड ने भी अपने यहां के आयात पर कर लगा दिया जिसके कारण दोनों देशों को हानि पहुँची। आयरलैंड में पशुओं की संख्या घट गई है और किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है। आज अलस्टर के किसान बाकी २६ काउन्टियों के किसानों से कहीं अच्छी दशा में हैं। मि० डी वेलरा ने सभी किसानों पर यह बात लागू कर दी है कि उन्हें अपने भूमि का १२॥ फ़ीसदी अवश्य ही जोतना पड़ेगा। उनका यह भी कहना है कि गेहूँ तथा ईख की खेती अधिक की जाय। इन चीजों की अच्छी उपज वहां कभी भी होने की आशा नहीं है। मि० डी वेलरा ने बेकारी दूर करने के लिये कारखाने खोलने का प्रयत्न किया है। इन कारखानों को कच्चे सामान की आवश्यकता होगी। यह कच्चा सामान आयरलैंड को कहां से मिलेगा। आयरलैंड मांस तथा मक्खन इङ्गलैंड को काफी भेज सकता है। जानवर भी वह काफी भेज सकता है। इसलिये इनके उन्नति की आशा वहां पर अवश्य है।

आयरलैंड वाले प्रजातन्त्र राज्यों की ओर अधिक झुके हैं। आई० आर० ए० इसका भली भांति प्रतिनिधित्व कर रहा है। मिस्टर डी वेलरा इन लोगों को और दूसरों से अधिक कब्ज़े में रख सकते हैं। आयरलैंड के बड़े तथा प्राचीन नेता मर चुके हैं। मिस्टर कास्ग्रेव और उसके साथी आयरलैंड के नेता नहीं हैं। वहां की पार्लियामेन्ट में भी अधिक शिक्षित, धनी और बुद्धिमान लोग नहीं हैं। मिस्टर डी वेलरा ही सब कुछ हैं, यह अपने को इङ्गलैंड से बिलकुल अलग रखना चाहते हैं। इनकी बुद्धिमत्ता तथा विद्वत्ता पर किसी को ज़रा भी शक नहीं हो सकता है। वे किस मार्ग का अनुकरण आगे करेंगे कहा नहीं जा सकता, क्योंकि उनका समझना सरल नहीं। जिनेवा में उन्होंने लीग आफ नेशन्स की बैठक में सभापति की दशा में चैम्बरलेन के शान्ति प्रस्ताव की सराहना की थी और उन्होंने म्यूनिच समझौते का भी समर्थन किया था। आशा है कि वर्तमान युद्ध के कारण आयरलैंड तथा इङ्गलैंड के बिरोध और अधिक न बढ़कर कम हो जावेंगे।

वर्तमान समय में आयरलैंड में एक राष्ट्रीय सरकार को बड़ी आवश्यकता है। इसलिये मिस्टर कास्ग्रेव अथवा उन्हीं के किसी और दूसरे पार्टी वाले को आयरलैंड की बागडोर अपने हाथ में ले लेनी चाहिये। मि० डी वेलरा अपनी तटस्थता को और भी अधिक जहाँ तक हो सके बढ़ाना चाहते हैं।

चीन का अभिशाप

जापानी आक्रमण से भी अधिक भीषण चीन देश का अकाल है। गत मार्च महीने में सेचुआन प्रान्त के सवा पाँच करोड़ निवासी अकाल से पीड़ित थे। हजारों नंगे भूखे दुर्बल मनुष्य इस प्रान्त के राजधानी चुंग क्यांग की ओर आ रहे थे। लेकिन यहाँ उनको अन्न मिलने की कोई आशा न रही जो अन्न यहाँ सरकार की ओर से भेजा जा रहा था उसको रास्ते में ही अधिक बलवान भूखों ने छीन लिया। इस प्रान्त में पिछली बार फसल तो काफी अच्छी हुई थी लेकिन कर्ज से लदे हुये किसानों को अपनी फसल बेचनी पड़ी। महाजनों और ज़मीदारों ने इस अनाज को मँहगा बेचने के लिये अपने घरों में रोक लिया।

होनान प्रान्त में भी विकराल अकाल पड़ा। ६००० गाँव खाली हो गये। उनमें ऐसा सन्नाटा छा गया कि कहीं कुत्ते का भूंकना या गाय का रंभाना भी न सुनाई दिया। गाल बैठे हुये भूखे बालकों की जीभ ऐसी सूख गई थी कि उनसे आवाज़ नहीं निकलती थी। लोग एक एक दाने को तरस रहे थे। उन्होंने जड़ और पत्तों को चबा डाला था। कुछ अपने बच्चे को मिट्टी खिलाते थे। कुछ उन्हें बेचने को तयार थे। कुछ लोगों को १८८७-१८८८ का अकाल आ रहा था जब ९० लाख मनुष्य भूख से तड़पड़ा कर मर गये थे। लेकिन वहाँ के लड़ाका गवर्नरों ने १९८५ तक का कर वसूल कर लिया था। यदि चीनी किसानों को अवसर मिले तो वे शीघ्र ही अपनी दशा सुधार सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या स्टैलिन चीन को बेच देगा ?

मास्को-बर्लिन की अक्ष-रेखा की रचना होने और उसके पश्चात् पोलैंड की पराजय तथा फिनलैंड पर आक्रमण होने के कारण एशिया के राष्ट्रों तथा प्रशान्त महासागर की समुद्री शक्तियों में एक प्रकार का परिवर्तन हो गया है। चीन के युद्ध का भाग्य योरुप के भाग्य के साथ बँध गया है। यद्यपि सोवियट-नाज़ी पैक्ट ने जापान को चञ्चल प्रकृति वाले हिटलर के मैत्री से अलग रखा है तो भी उसने फ्रांस तथा ब्रिटेन को अचल बना दिया है अगस्त सन् १९३९ की कूटनीतिज्ञ क्रान्ति ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को भी एक नये संकट में डाल दिया है और उस पर बड़ी ज़िम्मेदारी डाल दी है।

चीन के लिये सबसे बड़ा प्रश्न यह उठ खड़ा हुआ है कि क्या स्टैलिन चीन को बेच देगा ? चीनी लोगों को भय है कि कहीं रूस और जापान में उनके विरुद्ध कोई संधि न हो जाय। यदि ऐसी कोई संधि हो जाती है तो उससे संयुक्त-राष्ट्र को बड़ी हानि पहुँचने का भय है।

योरुपियन युद्ध के कारण फ्रान्स अथवा इङ्गलैंड पूर्वी एशिया में जापान को चुनौती देने के योग्य नहीं रह गये हैं। समुद्री मार्गों से संयुक्त राष्ट्र ही ऐसी शक्ति है जो जापान को भयभीत कर सकता है। यदि रूस-चीन और संयुक्त राष्ट्र वर्तमान समय में मिल जांय तो शायद जापान को नीचा दिखाने में समर्थ हो सकें। परन्तु ऐसा होना बहुत कठिन है इसी कारण से जापानी लोग बेपरवाह हैं।

मिस्टर चेम्बरलैन ने पार्लियामेन्ट में स्वीकार किया है कि ब्रिटेन पूर्वी समुद्रों में जापान के विरुद्ध कोई भी कार्रवाई नहीं कर सकता क्योंकि वह ऐसा करने में अपने को कमज़ोर समझ रहा है उस समय के बाद से ब्रिटिश फ्रेंच और निदरलैण्डस की अवस्था ओरियन्ट (प्राचीन देशों) में और भी अधिक खराब हो गई है। जर्मन जापानी मेल के कारण जापान जर्मनी तथा मित्र राष्ट्रों के युद्ध से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहता है। यदि अब भी फ्रांस और इङ्गलैण्ड चाहें तो जापान के विरुद्ध कार्रवाई कर सकते हैं परन्तु ऐसी दशा में संयुक्त राष्ट्र को पहले पग उठाना पड़ेगा। परन्तु यदि ऐसा न हुआ तो जो बातें आज मित्र राष्ट्रों को जापान प्रार्थना रूप में मना रहा है उसे वह आज्ञा रूप में मनावेगा।

जापान ने अभी हाल में जो क्वांग्सी पर आक्रमण किया है उससे दक्षिणी तट के अंतिम बन्दरगाह को भी उसने बन्द कर दिया है। उसने वहां पर पहले पहल स्थली अड्डा बनाया है जो फ्रान्स के सबसे धनी उपनिवेश के समीप हैं। क्वांग्सी से जापानी लोग चीन के मार्गों को अपने अधिकार किये और इंडोचीन से चीन को जो रेलवे लाइन मिलाती है उस पर भी अधिकार किये हुये हैं। फ्रान्स ने बस और रेलवे लाइन पर कुछ रोक सामान के ले आने ले जाने पर लगा दिया था परन्तु जापान की मनसा है कि रेलवे लाइन बिलकुल सामान ढोने के लिये बन्द कर दी जाय। इसी कारण जापानियों ने भयभीत करके अपनी इच्छा पूर्ति करने के लिये फरवरी में रेलवे पर भीषण बम-बाजी किया था। टोकियो में जो फ्रान्सीसी राजदूत था उसने चियांगकाई शेक को मनाने का प्रयत्न किया कि वह संधि करके चीन-जापान के युद्ध को सदैव के लिये समाप्त कर दें। इङ्गलैण्ड ने भी बरमा की सड़क जो यूनान को जाती थी उसे बन्द कर दिया है। इस प्रकार पश्चिमी राष्ट्र अब चीन को किसी मार्ग से भी अधिक सामान नहीं पहुँचा सकते। हां वे उसको आर्थिक सहायता अवश्य ही कर सकते हैं। दक्षिणी मार्गों का प्रयोग पहले-ही से बन्द हो चुका है। जुलाई सन् १९३९ से युद्ध सम्बन्धी लड़ाई का जो सामान चीन को समुद्री मार्ग से जाता था उसमें ६० प्रतिशत की कमी हो गई है। चीनी लोग सोचते हैं कि अगले बसंत काल तक में उनके लिये चुंगकिंग से योरुप के लिये केवल एक ही मार्ग रह जावेगा। यह सड़क २५०० मील लम्बी है और पश्चिमी पर्वतीय प्रदेशों, घास के मैदानों और मरुस्थल होकर चीनी तुर्किस्तान होती हुई रूसी मध्य एशिया को जाती है।

इन बातों तथा जर्मन रूसी संधि के कारण रूस के पूर्वी एशिया के युद्ध-सम्बन्धी स्थान बड़े मज़बूत हो गये हैं। यहाँ पर भी योरुप की भांति स्टैलिन के हाथों में शक्ति की तराजू है। क्रेमलिन यदि चाहे तो वह चीन की सहायता कर सकता है। वह जापान के साथ मैत्री तोड़ सकता है और इस प्रकार चुंगकिंग को युद्ध जारी रखने में सहायता कर सकता है।

यदि यह न हो सके तो चीन और जापान की संधि कराकर पश्चिमी राष्ट्रों (जर्मनी और रूस) के विरुद्ध कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे या चीन और जापान के साथ ऐसी संधि करा दे जिससे वे एक दूसरे पर आक्रमण न करें और फिर वह अपनी स्वतंत्र नीति जापान और चीन के सम्बन्ध में रखे या वह जापान से मिल जावे और मिल कर पूर्वी राजनीति को संदेहजनक बनाये रखे।

रूसो-जर्मन संधि होने के पश्चात् चीन के कम्यूनिस्ट लोगों का ख्याल था कि जापान तथा रूस में संधि होना कठिन नहीं है। नोमोनहन की संधि द्वारा मंगोलिया के युद्ध का जो अंत हुआ उसके कारण उन लोगों का विश्वास और भी अधिक बढ़ गया। चीन, मंचूरिया और मंगोलिया के कम्यूनिस्ट अपने प्रधान नेता माओट से टुँग की ओर प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उन्हें मार्ग दिखावे।

माओ सोवियट की योरुपीय नीति को सर्वथा ठीक नहीं ख्याल करता। उसका ख्याल है कि जर्मनी स्टैलिन की जेब में आगया है अर्थात् उसके अधिकार में है और कहीं जापान की दशा भी वैसी ही अथवा उससे खराब न हो जाय क्योंकि उसका कहना है कि रूसो-जापानी संधि होना मुमकिन है यह बात लेनिन के नीति के विरुद्ध नहीं है।

इसलिये जब अक्तूबर में मोल्टाव ने जापानियों के सम्बन्ध में कुछ मिलाने वाली बातें कहीं और टोकियो को अपना नया राजदूत (स्मेटानिन) को भेजा तो चीन की लाल सेना को आश्चर्य नहीं हुआ। उसके पश्चात् रूस तथा जापान ने मछली मारने के अपने अधिकारों तथा चायनीज-ईस्टर्न रेलवे के लेनदेन के सम्बन्ध में बातें किया। उसी समय हाँग काँग के एक ब्रिटिश अफसर ने कहा "अमरीका जो जापान के साथ मैत्री भाव नहीं रख रहा है उसके कारण जापान स्टैलिन के हाथों में चला जा रहा है। इससे ब्रिटेन- को हानि पहुँचने का भय है। अमरीका को चाहिये कि वह शीघ्रता से कोई कार्रवाई करे अथवा अलग हो जाय जिससे हम (ब्रिटिश) जापान के साथ संधि कर सकें"।

सोवियट रूस जिस नीति का अनुसरण कर रहा है उसका अंत एक ही तरह हो सकता है जब कि सारे साम्राज्यवादी राष्ट्र एक हो जायँ और सोवियट रूस से युद्ध करें। सोवियट रूस संसार क्रान्ति का केन्द्र बनना चाहता है वह सभी राष्ट्रों में समाजवाद की स्थापना करना चाहता है।

स्टैलिन इस नीति का अनुसरण सत्य रूप में कर रहा है दूसरे राष्ट्रों के क्रान्तकारी दलों के स्वार्थ सम्बन्धी जो नियम हैं उन्हें मास्को के विदेशी नीति के अधिकार में कर देना होगा। ऐसी नीति स्थानीय थी। संसार के मज़दूरों का सवाल सभी स्थानों पर एक सा है इसलिये सभी राष्ट्रों के मज़दूर दल अपना अड्डा सोवियट रूस को बनाना चाहते हैं। सोवियट-जर्मन संधि होने से फ्रान्स तथा इंगलैण्ड के कम्यूनिस्ट दल का अंत हो गया है। १९२७ ई० के पश्चात् रूस ने अन्त: राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने का निष्कपट रूप से प्रयत्न किया है। शान्ति-काल में धनी और निर्धन लोगों के आपसी झगड़े चलते रहे। धनी तथा निर्धन के झगड़ों के अधिक बढ़ जाने से सोवियट अजय हो गया।

कम्यूनिस्ट लोगों का कहना है कि मध्यम श्रेणी वाले राष्ट्रों में चाहे वहां सैनिक आदेश का राज्य हो चाहे पार्लियामेन्ट द्वारा प्रजातंत्र राज्य हो, चाहे फैसिज़्म हो और चाहे नाज़ीमत हो परन्तु उनके बीच में कोई प्रधान अन्तर नहीं पड़ता है। कमिनटन लोग अधिक प्रभावशाली तथा कम प्रभाव वाले राष्ट्रों को दो भाग में विभाजित करते हैं जिससे उनमें से एक के साथ रूस हो जावे और उनकी शक्ति को बराबर कर के साम्राज्यवादी युद्ध को दूसरे राज्यों की ओर हटा दे। दो साम्राज्य शाही राष्ट्रों में युद्ध होते देख स्टैलिन को कुछ भी आपत्ति नहीं है। क्योंकि स्टैलिन ने पिछले मार्च में कहा है कि साम्राज्यवादो युद्ध से दूसरे राष्ट्रों के क्रान्तियों को विजय प्राप्त होगी इसलिये कमिन्टर्न लोगों का कर्तव्य है कि वह साम्राज्यवादी युद्ध को गृह युद्ध में बदल दें और सोवियट राष्ट्र की रक्षा वैधानिक तथा अवैधानिक रूप से की जाय जिससे वह शक्तिहीन न हो।

सांसारिक क्रान्ति की सफलता के लिये अंतिम बात यह कही जाती है कि साम्राज्यवादी राष्ट्र साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रों से युद्ध कर के अपनी शक्ति को नष्ट कर डालेंगे और फिर शक्तिहीन हो जावेंगे और धनी राज्यों की संस्कृत को छोड़ देंगे। उनके भीतर क्रान्ति होगी उसके पश्चात् जब वे रूस से युद्ध करेंगे तो एकदम नष्ट हो जावेंगे।

स्टैलिन के मत को मानने वाले स्टैलिन की इन दलीलों पर भली प्रकार विश्वास करते हैं। जर्मन-सोवियट संधि इन्हीं दलीलों का भाग है। यदि नर्मदल वाले, विज्ञान वादी तथा कम्यूनिस्ट लोगों को कुछ दुखं इस संधि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है तो इसका अर्थ यह है कि उन्होंने स्टैलिन की नीति को भली भांति कभी नहीं समझ पाया।

नर्मदल वालों को स्टैलिन की नीति पर कुछ आश्चर्य सा हुआ है कि वह अपनी नीति के विरुद्ध जा रहा है परन्तु यह बात नहीं है। स्टैलिन की नीति अब भी वही है जो पहले थी अन्तर केवल यह है कि स्टैलिन संसार की वर्तमान परिस्थिति से लाभ उठा रहा है और बिना युद्ध के जहाँ कहीं सम्भव हो रहा है अधिकार करता जा रहा है।

जुलाई सन् १९३९ ई० के पहिले यदि छोटे राष्ट्र रूस का विरोध करने के लिये तयार नहीं हो सकते थे परन्तु आज जब कि रूस छोटे राष्ट्रों पर अधिकार जमा रहा है तो छोटे राष्ट्र भी उसके विरुद्ध हो रहे हैं। इस कारण यह सम्भव हो सकता कि फ्रान्स तथा इङ्गलैण्ड छोटे राष्ट्रों को मिला कर रूस का विरोध करें।

पूर्वी राष्ट्रों में भी रूस के लिये यही भय है। रूसो-जापानी संधि से रूस को निम्नलिखित लाभ हो सके हैं। (१) प्रशान्त महासागर में रूस के विरुद्ध राष्ट्रों का संग्रह नहीं हो सकता जिसके लिये रूस भयभीत हो रहा है। (२) इस संधि के कारण स्टैलिन योरुप में स्वतंत्रता पूर्वक काम कर सकेगा। (३) इस संधि के कारण जापान तथा चीन के कुछ लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कदाचित ब्रिटेन विरुद्ध वे आक्रमण करें। (४) इसके कारण संयुक्त राष्ट्र और जापान में युद्ध हो सकता है जिसकी प्रतीक्षा मास्को में बहुत समय से की जा रही है। (५) यदि रूस और इङ्गलैण्ड से युद्ध छिड़ जाय तो मंचूको और साइबेरिया के मध्यवर्ती सीमा पर शान्ति होने के कारण रूस अपनी सेना को भारतीय सीमा पर,संगठित रूप से रख सकेगा। (६) यदि जापान पश्चिमी प्रशान्त सागर पर शक्तिशाली बना रहेगा तो उससे भी रूस को लाभ होगा।

जापान को इंगलैण्ड, फ्रांस और संयुक्त राष्ट्र के विरुद्ध रूस जो सहायता देने का बचन देगा और सोना-जापानी युद्ध में जो रूस मैत्री भाव से बीच में पड़कर काम करेगा। उसके बदले में जापान रूस के विरुद्ध आवाज़ उठानी बन्द कर देगा और अपने पड़ोसी चीनी लाल लोगों को रहने देगा और किसी प्रकार का कष्ट न देगा।

जापान को भी रूस के साथ संधि करने से जापान को अमरीकन व्यापार का भय कम हो जावेगा। उसे साइबेरिया के पिट्रोल, फौलाद, लोहे और कोयले का अधिकांश भाग मिलेगा। उसे साइबेरिया के ओर से आक्रमण होने का भी भय न रह जावेगा और वह अपनी सेना को अपनी पाई हुई भूमि पर रख सकेगा। चीन के प्रश्न के हल हो जाने की भी आशा है जिससे जापानी सेना को छुट्टी मिल जावेगी और जापान दक्षिण की ओर अपना फैलाव अपने कार्य क्रम के अनुसार कर सकेगा। परन्तु यदि जापान उपरोक्त बातें करेगा तो उससे रूस को ही लाभ पहुँचेगा।

रूस के साथ संधि होने से इङ्गलैण्ड और अमरीका की समुद्री सेना एक हो सकती है। इस बात को जापान टालना चाहता है। क्योंकि इसके कारण जापान का बाज़ार तथा व्यापार नष्ट हो जावेगा। और इङ्गलैण्ड तथा अमरीका को जो विश्वास जापान की ओर से है उसका अंत हो जावेगा यदि जापान को इङ्गलैण्ड तथा संयुक्त राष्ट्र से युद्ध करना पड़े तो जापान को सन्देह है कि रूस उसकी सहायता अंत तक करे। जापान देख रहा है कि हिटलर स्टैलिन के जेब के अन्दर हो गया है वह स्वयम् अपने को स्टैलिन के जेब के भीतर जाने से बचाना चाहते हैं।

स्टैलिन को भी जापान पर पूरा विश्वास नहीं है। वह साइबेरिया की सीमा पर रूसो-जापानी संधि होने के पश्चात् भी उतनी सी सेना रखेगा जितनी वह आज यूक्रेन की सीमा पर रूसो-जर्मन संधि के पश्चात् रख रहा है फिर यदि रूसो-जापानी संधि हुई तो हो सकता है कि संयुक्त राष्ट्र और इङ्गलैण्ड मिल कर रूस का सामना करें ऐसी दशा में जापान रूस से अलग हो जावेगा।

जब तक चीन जापान से युद्ध कर रहा है रूस को जापान से युद्ध करने की सम्भावना कम है साथ ही साथ जापान भी साइबेरिया पर आक्रमण करने की बात अब नहीं सोचता है। चीन के युद्ध होने के कारण धनी राष्ट्रों का घेरा पूर्व अथवा पश्चिम में समाप्त नहीं है। चीन के पूर्वी तट पर युद्ध होने के कारण रूस की कोई हानि नहीं है। उससे इङ्गलैंड और अमरीका को ही हानि हो रही है चीन के करोड़ों लोग रूस के मित्र हैं जिससे रूस को भविष्य में लाभ होगा। यदि रूस चीन को जापान के हाथों बेच देगा तो उसकी बड़ी भारी हानि होगी।

चीन ही एक ऐसा देश है जहाँ पर रूस के सशस्त्र मित्र हैं। चीन की लाल सेना जो चीन की राष्ट्रीय सरकार की अध्यक्षता में युद्ध कर रही है। वह सचमुच चीन के कम्युनिस्ट पार्टी की सेना है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अमरीका और योरुप की कम्युनिस्ट पार्टी से अलग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टैलिन को चीन कम्यूनिस्ट दल की ओर से पूर्ण विश्वास नहीं है। लेनिन की नीति के अनुसार जापान और रूस से सन्धि हो सकती है परन्तु चीन के कम्यूनिस्ट लोग बहुत प्राचीन हैं। उन्होंने अपना मत अलग ही बना रखा है। चीन के कम्यूनिस्ट दल की स्थापना हुये बहुत दिन हो गये हैं। वह बड़ा अनुभवशाली है। उसने अपने सैनिक अनुभव की बदौलत ही लड़ाइयां लड़ीं, सैनिक संस्था की स्थापना किया, पुस्तकें लिखा और अपने को चीन के अन्दर सबसे अधिक शक्तिशाली बनाया। उसे स्टैलिन की ओर से बहुत अधिक सहायता नहीं मिली है। यह दल रूस के कम्यूनिस्ट दल से अलग तथा स्वतंत्र है। इस दल पर चीन के एक बड़े भाग के रक्षा की जिम्मेदारी है। मओ-ट्से टँग तथा और दूसरे चीनी कम्यूनिस्ट नेताओं ने अपने सत्कार्यों के कारण ही अपने बहुत से साथी बनाये। उनके भीतर राष्ट्रीयता का भाव पैदा हो गया। वह अपने इस भाव का त्याग नहीं कर सकते और न अपने मित्रों को ही छोड़ कर अपना आदर कम कर सकते हैं।

कुछ भी हो यह बात अभी निश्चय रूप से नहीं कही जा सकती कि रूस ने चीन को सहायता देना बन्द कर दिया है। रूस चीन को संयुक्त राष्ट्र से कहीं अधिक सहायता दे रहा है। यदि कोई चीन के उत्तरी पश्चिमी जन मार्ग में भ्रमण करे और सिनक्यांग को जावे तो उसे वहां पर रूसी-चिन्ह मिलेंगे। इन चिन्हों के सहारे सैकड़ों की संख्या में रूसी ट्रक्स तुर्किस्तान से बाम्ब्स टारपिडोज़ और शेलस लेकर रेगिस्तान को पार करके रूसी तोपों तथा वायुयानों को पहुँचाते हैं। इस मार्ग का बनाना आसान कार्य न था। इसके बनाने में बहुत खर्च पड़ा, बड़े बड़े प्रबन्ध करने पड़े और बड़ा परिश्रम करना पड़ा। अब यह मार्ग स्थाई प्रतीत हो रहा है। इसके किनारे किनारे मरम्मत करने वाले स्थान, सामान एकत्रित करने के घर, सराएँ और सैनिक सामान रखने के लिये स्थान बनाये गये हैं।

चेंगटू के समीप तिब्बत की सीमा पर रूसी लोग चीनियों की सहायता एक हवाई अड्डे के बनाने में कर रहे हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर लानचाव में भी रूसी बाम्बर ट्रेनिंग देने वाले आदि लोग हैं वहाँ पर इस बात की तयारी की जा रही थी कि प्रत्येक भांति के २५० रूसी वायुयान रखे जावेंगे।

हवाई सैनिकों के सिवा रूस के सैनिक उपदेशक, अध्यापक और युद्ध-कला के विशेष जानने वाले लोग चीन में हैं। चंगकिंग के सैनिक स्कूलों में रूसी सैनिक शिक्षक कार्य कर रहे हैं। चीन की सेना में प्रत्येक स्थान पर लाल सेना के शिक्षित सोवियट उपदेशक हैं।

चीन को रूस युद्ध सामग्री भी काफी मात्रा में दे रहा है। चियांग काई शेक चीनी युद्ध का मुख्य व्यक्ति है उसने रूस की सामग्री चीनी कम्यूनिस्टों के मध्य भेजी जाने से मनाही कर दी थी परन्तु मास्को ने इसकी कुछ भी परवाह नहीं किया और सारा रूसी सामान केन्द्रीय अधिकारियों के हाथ में दे दिया गया था। चीन रूस को सामग्री का मूल्य युद्ध के पहिले वाले डालरों में ही कर रहा है।

सितम्बर के पश्चात् जब चियांग काई शेक मास्को की सहायता पर ही अधिक निर्भर हो गया तो उसने चीन के लाल सेना वालों को चीन की सेना बराबर सैनिक तथा राजनैतिक अधिकार प्रदान कर दिये। उसके पश्चात् रूस की सहायता से चीन के कम्यूनिस्ट ने चीन की सरकार पर आक्षेप लगाने लगे। वहां के कम्यूनिस्ट अपने ऊपर लगे हुये सारे बन्धनों का अन्त देखना चाहते हैं। माओत्से टंग (चीन का कम्यूनिस्ट नेता) चाहता है कि चीन के अन्दर एकाधिपत का अंत होकर निर्वाचित लोगों की सरकार हो और उसमें कम्यूनिस्ट लोगों को भी अधिकार दिये जांय।

चियांग ने कम्यूनिस्ट लोगों को मिलाने के लिये नवम्बर में चीनी कुओमिन्टैंग बैठक बुलाया उसमें प्रस्ताव रक्खा गया कि १६४० में एक कनवेनशन बनाया जाय जिससे चीन की केन्द्रीय सरकार चीन के प्रतिनिधियों की सरकार बनाई जाय। यह प्रस्ताव चियांग के कहने के अनुसार पास हो गया। चीन के सोवियट लोगों का कथन है कि चूंकि चीन के अन्दर राजनैतिक सुधारों की कमी है इसी कारण रूस भली भांति सहायता नहीं दे रहा है।

रूसी तुर्किस्तान के राजनीति में रूस का बहुत बड़ा हाथ है। रूस चियांग काई शेक को परेशान करके किसी भाग पर अधिकार नहीं करना चाहता और न अपने विरुद्ध करके जापान से चीन की संधि ही कराना चाहता है जिसके लिये इंगलैण्ड और फ्रान्स प्रयत्न कर रहे थे। जापान ने अपनी गलती से पूर्वी एशिया में अशान्ति फैला रखी है परन्तु स्टैलिन ने अपनी चतुरता के कारण पश्चिम की ओर शान्ति स्थापित कर रखा है।

रूस के लिये चीन में काफी स्थान है वह चीन से बहुत कुछ आशा कर सकता है जब तक कि जापान रूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कुछ और अधिक लालसा देकर मिला न ले। जब तक जापान से सुलह नहीं होती तब तक रूसी नीति में एकाएक कोई परिवर्तन नहीं होगा। परन्तु यह कहना कि परिवर्तन होगा ही नहीं यह बात ठीक नहीं है परिवर्तन का होना अनिवार्य है परन्तु जो कुछ भी परिवर्तन होंगे वह निम्न-लिखित बातों पर निर्भर होंगे (१) एँग्लो-सोवियट युद्ध (२) चंगकिंग में ब्रिटेन तथा अमरीका की सहायता से कम्यूनिस्ट के विरुद्ध झगड़ा, जिससे कि वहां पर जापान का अधिकार हो (३) जापान तथा इंगलैण्ड की संधि जो रूस के विरुद्ध होगी। (४) एँग्लो-जापानी अथवा जापानी-अमरीकन युद्ध।

पश्चिमी प्रशान्त महासागर में संयुक्त राष्ट्र की नीति इस समय स्थिर नहीं बरन् बल सम्बन्धी है। अमरीकन प्रजा चाहे जो समझे परन्तु जापान अमरीका को तटस्थ नहीं समझ रहा है। अमरीका जापानी आक्रमण को रोकने के लिये स्फूर्ति मान उद्योग कर रहा है। अमरीका ऐसे राष्ट्र के लिये आवश्यक है कि जब उसने एक बार किसी रुख में पग उठाया है तो उसे सभी संकटों का सामना करते हुये उसी मार्ग पर गमन करना होगा। अर्थात् संयुक्त राष्ट्र प्रशान्त महासागर में शक्ति के लिये जापान से युद्ध करना चाहता है। वह अभी ऐसे प्रयत्न कर रहा है जिससे जापान को रूस से वे सहायतायें न मिल सकें जिसके कारण जापान संयुक्त राष्ट्र से युद्ध के करने के लिये तयार है।

चीन के साथ जो संधियाँ संयुक्तराष्ट्र ने की हैं उनकी पुष्टता के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र ने कई बार अपने बिचार प्रकट कर दिये हैं। कहा जाता है कि चीन की सरकार और संयुक्त राष्ट्र की सरकार के बीच में जो मैत्री है वह संकट पड़ने पर भी वैसी ही बनी रहेगी और किंचित् मात्र भी बैर भाव उत्पन्न न होगा। यह बात ठीक है परन्तु यदि संयुक्त राष्ट्र चीन को युद्ध सम्बन्ध प्रकट रूप में सहायता दे तो उसे अवश्य ही जापान से युद्ध लेना पड़ेगा।

सुदूर पूर्व में कुछ अँग्रेज़ जापान के साथ सौदा करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि जापान ने चीन में जो विजय प्राप्त की है उसे इङ्गलैंड स्वीकार कर ले। क्रैजी-अरीटा संधि नामा जो अंग्रेज़ों तथा जापानियों के बीच हुआ है उससे इङ्गलैण्ड ने चीन में जापानी सेना के कार्य में रोक न डालने की प्रतिज्ञा की है। यदि इङ्गलैंड के लिये योरुप में अधिक संकट का समय आ जायगा तो वह जापान के साथ अवश्य सौदा कर लेगा।

संयुक्त राष्ट्र प्रशान्त महासागर में जापान और रूस के पहुँचने से जो वातावरण उत्पन्न होगा उसे झूठा बनाने का प्रयत्न करेगा। अमरीका का रूस से बर्तमान समय में कोई खास झगड़ा नहीं है। वे दोनों किसी भूमि की लालच के कारण भी यह काम नहीं कर रहे हैं अमरीका के निवासी स्टैलिन और उसकी नीति के विरुद्ध हैं। इस लिये संयुक्त राष्ट्र के लिये रूस के सम्बन्ध में साफ साफ नीति का निर्धारित करना कुछ कठिन हो रहा है।

यदि रूस और संयुक्त राष्ट्र के बीच प्रशांत महासागर के सम्बन्ध में मित्रता हो जावे तो उसका प्रभाव पूर्वी देशों पर बहुत अच्छा पड़ेगा। ऐसी संधि का प्रभाव आश्चर्यजनक होगा। यदि संधि की बातें आरम्भ की जाँय तो जापान को परेशानी हो जावेगी और वह शीघ्र ही अपना दूत वाशिंगटन वार्तालाप करने के लिये भेजेगा।

संयुक्त राष्ट्र के निवासी फिनलैंड पर रूसी आक्रमण होने के कारण रूस के बहुत विरुद्ध हो गये हैं इस लिये वे रूस के साथ संधि करना पसंद न करेंगे परन्तु शायद उनके इस कोप के कारण जापान और रूस में संधि हो जाय जो अमरीका के विरुद्ध हो और अमरीका को उससे भारी हानि उठानी पड़े अथवा युद्ध करना पड़ जाय। योरुप और एशिया के युद्ध जो हो रहे हैं वे तो अभी आरम्भ कालीन हैं आगे क्या होगा कोई बतला नहीं सकता। संसार परिवर्तन शील है और शीघ्रतातिशीघ्र परिवर्तन हो रहे हैं। इस समय संयुक्त राष्ट्र की नैतिक शिक्षा को संसार नहीं समझ सकता। ऐसे संकट काल में संयुक्त राष्ट्र को अपनी कूटनीति को स्थिर रखना चाहिये और किसी भी मार्ग को बन्द न करना चाहिये जब तक कि उसकी छान बीन ठीक तौर पर न हो जाय।

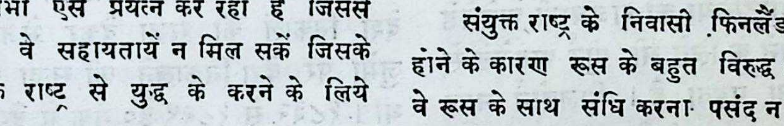

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिडनी का प्रसिद्ध बन्दरगाह

सिडनी का बन्दरगाह आस्ट्रेलिया के पूर्वी किनारे पर स्थित है। यहां के निवासी इसे संसार का सबसे अधिक सुन्दर बन्दरगाह मानते हैं। यहां पर एक बड़ा सुन्दर पुल है। जिसके नीचे होकर जहाज आते जाते हैं। सिडनी का बन्दरगाह ब्रिटिश साम्राज्य का तीसरा बड़ा नगर है। यहां का प्रातःकाल का दृश्य अवर्णीय होता है इसे भुलाया नहीं जा सकता।

सिडनी का बन्दरगाह अपनी निजी विशेषताओं के कारण और दूसरे बन्दरगाहों से भिन्न है। लन्दन से स्वेज नहर होकर आने वाले सारे जहाज यहाँ लंगर डालते हैं। यद्यपि ब्रिस्बेन (क्वीन्स लैंड) में ब्रिटिश साम्राज्य के जहाज़ी लाइनों के जहाज़ ठहरते हैं। तो भी सिडनी का बन्दरगाह आस्ट्रेलिया के बन्दरगाहों का राजा माना जाता है।

आस्ट्रेलिया से आने वाले जहाज पहले पहल फ्रेमैन्टाइल बन्दरगाह पर रुकते हैं। यहाँ से पर्थ नगर को देखने के लिये बस या रेल द्वारा जाना पड़ता है। पर्थ नगर पश्चिमी आस्ट्रेलिया की राजधानी है। दक्षिणी आस्ट्रेलिया की राजधानी अडेलेडे है इस नगर को देखने के लिये भी पोर्ट अडलेडे से स्थल मार्ग होकर जाना पड़ता है। मिलबोर्न नगर विक्टोरिया प्रान्त की राजधानी है। यह एक बड़ा सुन्दर बन्दरगाह है। ब्रिस्बेन क्वीन्सलैंड की राजधानी है। यह नगर ब्रिस्बेन नदी के मोड़ पर स्थित है। यहां नदी के ऊपर पुल बने हुये हैं। नगर से कुछ दूरी पर चल.कर नये जाहाजी घाट बनाये गये हैं।

आस्ट्रेलिया के पाँच प्रधान नगरों में सिडनी ही एक ऐसा नगर है। जहाँ ब्रिटिश लाइनर, प्रशान्त महासागरी जहाज आदि नगर के केन्द्रीय भाग में आकर ठहरते हैं। यहाँ का हार्बर जहाजों, स्टीमरों, नावों और बोटों से भरा रहता है। जिस प्रकार किसी बड़े नगर के प्रधान बाजार में भीड़ लगी रहती है, वैसेही वहाँ के हार्बर में भी भीड़ लगी रहती है। तैरने, डुबकी लगाने, जलविहार कराने आदि समुद्री जीवन का जो सुख चाहते हैं, उनके लिये सिडनी का हार्बर संसार में सर्वोत्तम है।

खाड़ियों, कोलों, खोहों और अंतरीपों की इतनी अधिकता है कि विस्तार रूप से उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। कैप्टेन कुक जब सिडनी गया था तो उसने केवल प्रधान हेड्स (शीर्षों) के मध्यवर्ती खाड़ियों को ही देखा था। उसने छोटी छोटी खाड़ियों के अन्दर जाकर पता नहीं लगाया था। उसने सिडनी का नाम पोर्ट जैकिन्सन रक्खा था।

पोर्ट जैकिन्सन के दक्षिण की ओर बोयनी की खाड़ी है। और दक्षिण-पश्चिम को चलकर सिडनी की खाड़ी है। इस भाग में पहुँच कर जो बस्ती बसाई गई थी, उसी का नाम विस्काउन्ट सिडनी के नाम पर सिडनी रक्खा गया था। यह नाम फिलिप नामक गवर्नर ने रक्खा था। गवर्नर फिलिप का जहाज़ी बेड़ा २६ जनवरी सन् १७८८ ई० को बोटानी की खाड़ी में पहुँचा था, इसलिये अब भी सिडनी नगर २६ जनवरी को अपना वार्षिकोत्सव मनाता है।

जब आस्ट्रेलिया बसाया जा रहा था, तो ब्रिटिश सरकार अँग्रेज मर्द, स्त्री और बच्चों को आस्ट्रेलिया देश निकालें की सजा देकर भेजते थे। मामूली जुर्मों पर देश निकालने की सज़ा प्रदान की जाती थी। १८३२ से १८२९ ई० तक में इँगलैंड से २२००० मर्द ४००० और आस्ट्रेलिया निर्वासित किये गये। इन कैदियों में एक स्त्री को एक बाइबिल की पुस्तक के चुराने पर ७ साल के लिये निर्वासित किया गया था। एक लड़के को थोड़ा मक्खन चुराने में ७ साल के निर्वासन की सजा हुई थी। एक १४ साल की लड़की को एक रूमाल (जिसके कोने में सिक्स पेनी का एक सिक्का बंधा था) चुराने में १४ साल का कठिन दंड दिया गया था वह भी आस्ट्रेलिया को निर्वासित की गई थी।

ये कैदी लोहे के पिंजड़ों में बन्द कर जहाजों पर भेजे जाते थे। बहुतों के प्राण पखेरू तो मार्ग ही उड़ जाते थे। इन कैदियों को आस्ट्रेलिया ले जाने वाले जहाज के मालिकों को २० से ३० पौंड प्रति व्यक्ति के हिसाब से व्यय दिया जाता था। इसलिये ये लोग अधिक से अधिक कैदियों को जहाज़ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठूँस कर जहाज में भर लेते थे। १७९० ई० में इँगलैंड दो कैदियों के जहाज आस्ट्रेलिया को भेजे गये। पहले जहाज में ५०२ और दूसरे में ३०० कैदी थे। आस्ट्रेलिया पहुँचते पहुँचते पहले जहाज के १५८ और दूसरे के ९५ कैदी भूक प्यास और दूसरे कष्टों के कारण मर गये। ब्रिटिश सरकार साल में कम से कम ऐसे दो कैदियों के जहाज भेजा करती थी।

सिडनी नगर समस्त आस्ट्रेलिया की जन्म भूमि है। जब फिलिप सिडनी में उसे बसाने के लिये पहुँचा था उस समय आस्ट्रेलिया में एक भी घर नाम रखने के लिये नहीं था। सिडनी हार्बर से ही लोग आस्ट्रेलिया के और भागों में जाकर नये नगर वसाये अँग्रेजों के जाने के पहले वहाँ केवल कुछ हजार असभ्य लोग रहा करते थे। अब वहाँ के निवासी सभ्य हो गये हैं और जन-संख्या भी काफी बढ़ गई है।

सिडनी हार्बर के उत्तरी तथा दक्षिणी अंतरीप के बीच की दूरी एक मील है। वहाँ के समुद्र की गहराई लगभग ८० फुट है। प्राचीन समय में इस भाग में जहाज बहुत फट कर डूबा करते थे। किन्तु अब यहाँ पर एक प्रकाश घर है। मध्यवर्ती अंतरीप (मिडिल हेड) जैकिन्सन बन्दरगाह के बीच में उसी के सामने स्थित है। हार्बर का दक्षिणी भाग अधिक उपयोगी नहीं है। हार्बर के दक्षिणी भाग में सिडनी के घाट और बाँध हैं। यह प्रवेश द्वार से लगभग ४ मील पर स्थित है। पूर्व तथा पश्चिम की ओर खाड़ियां हैं। यह खाड़ियां आध मील लम्बी ७०० फुट चौड़ी और ४० फुट गहरी हैं। इस भाग में ५ फुट ऊँचा ज्वार आता है। पानी की गहराई तथा तट के लम्बाकार होने के कारण तटों के सुधार करने में १२०,००,००० पौ० (१८,००,००,००० रु०) खर्च हुआ है।

कहीं कहीं पर सामने का समुद्री किनारा इतना खड़ा गहरा है कि वहां पर लम्बे लम्बे खम्बे सहारे के लिये लगाये गये हैं। एक खाड़ी में पानी की गहराई ५० फुट है और उसके सहारे के लिये १३५ फुट लम्बा एक खम्भा लगाना पड़ा है।

यह हार्बर भीतर की ओर लगभग १३ मील बढ़ा हुआ है परन्तु किनारा इस प्रकार दन्दानेदार है कि उसकी लम्बाई १८८ मील और पानी का क्षेत्र-फल २२ मील है। दोनों चैनलों के पश्चात् नगर के घाटों तक पानी की गहराई ४० अथवा ५० फुट है। नगर के जनरल पोस्टआफिस से सभी समुद्र के घाट एक मील की दूरी पर हैं। घाटों में २६६ जहाज के ठहरने वाले कमरे हैं। इन कमरों की कुल लम्बाई २५ मील है। लगभग १५ मील के लम्बे घाट विदेशी जहाजों के लिये हैं। न्यु साउथ वेल्स की मैरी टाइम्स सर्विसिस बोर्ड ने कुछ घाटों को कम्पनियों को ठीके पर दे रखा है। ऊलूमूलू सिडनी और बालश की खाडियां डेअरिंग हार्बर, पीरमोन्ट और ग्लेबे द्वीप में प्रसिद्ध घाट हैं।

सिडनी हार्बर का पुल सन् १९३२ ई० में खोला गया जिससे नदी पार आने जाने वालों पर इस बात का प्रभाव अच्छा नहीं पड़ा। लोगों की भीड़ सर्कुलर तथा सिडनी कोव के घाटों पर लगी रहती है। सिडनी हार्बर पुल के एक ओर दावेस प्वाइंट और दूसरी ओर मिलसन्स प्वाइंट है। बड़े बड़े जहाजों के निकलने के लिये इस स्थान पर १६५० फुट लम्बा एक मेहराब बना है। यह मेहराब पानी से १७२ फुट ऊँचा है। इस पुल के बन जाने से स्टीमरों तथा बोटों पर आने जाने वालों की संख्या लगभग आधी हो गई है। हार्बर की यात्रा करने के लिये यात्री लोग बोटों का ही प्रयोग किया करते हैं। इस नगर में बोट मोटर बसों का काम करते हैं। बोट बहुत सुन्दर तथा आनन्द दायक बने होते हैं।

ऊलूमूलू की खाड़ी में ग्रेट ब्रिटेन आदि स्थानों से जहाज आकर ठहरा करते हैं। यह खाड़ी सिडनी नगर के मध्यवर्ती भाग से अलग है। डार्लिङ्ग हार्बर, पोरमोन्ट और ग्लेबे द्वीप सिडनी कोव के पश्चिम की ओर हैं। फार्म कोव, सिडनी कोव और ऊलूमूलू खाड़ी के मध्य में है। यहां पर सुन्दर स्थान बने हैं और यहीं पर लड़ाकू जहाज आकर ठहरा करते हैं।

सिडनी का बन्दरगाह मल्लाहों का स्वर्ग है। वहां का पानी, घाट और खाड़ियां ऐसी हैं जिन में घूमने वाले छोटे जहाज, स्टीमर और बजड़े सरलता पूर्वक बिना किसी संकट के मनमानी घूमते हैं। संसार के और दूसरे बन्दरगाहों में कीचड़ होती है, पानी साफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होता परन्तु सिडनी के बन्दरगाह का पानी बिल्कुल साफ है और कीचड़ बिल्कुल नहीं है।

दक्षिणी गोलार्द्ध में जहाजों की मरम्मत करने के लिये यहां सब से अधिक सुगमता है। यहां पर जहाज और घाट बनाने का भी प्रबन्ध है। सिडनी हार्बर के पश्चिम की ओर काकटू द्वीप है। इस द्वीप पर ब्रिटेन ने १९१३ ई० में अधिकार जमाया। यह पर काकटू डाक्स और इञ्जीनियरिंग कम्पनी की राजधानी है। समुद्री लड़ाकू तथा व्यापारिक जहाज यहाँ बनते हैं। यहाँ पर प्रत्येक भांति के लड़ाकू जहाज, सबमरीन, पनडुब्बे गोताखोर जहाज, व्यापारिक जहाज, पैसेञ्जर जहाज, लाइनर, सामान ले जाने वाले जहाज आदि बनाये जाते हैं। यहाँ हर एक प्रकार के डाक भी बनते हैं। यहाँ पर आस्ट्रेलियन समुद्र का भारी से भारी जहाज ठहर सकता है।

काकटू द्वीप के सदरलैंड डाक की भीतरी लम्बाई ६९० फुट और चौड़ाई ८८ फुट है। फिजराय डाक ४७४ फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है। मोर्ट्स की खाड़ी का मोर्ट्स डाक ६४१ फुट लम्बा और ६९ फुट चौड़ा है। अलविच डाक की लम्बाई ८५० फुट और चौड़ाई ८३ फुट है। वाटह वियु खाड़ी में १९५ फुट और १६० फुट लम्बे तैरते हुये घाट हैं, ड्रमोईने में एक तीसरा घाट १५० फुट लम्बा है। काकटू में जहाज उतरने के लिये तीन घाट हैं, एक में लड़ाकू जहाज उतारे जाते हैं और दो में विध्वंसकारक जहाज उतारे जाते हैं। जहाज उतारने की सब से बड़ी स्लिप २७० फुट लम्बी मोर्ट की खाड़ी में है। सिडनी बन्दरगाह में सब से बड़ी क्रेन १५० टन की है। यह तैरने वाली है और बिजली द्वारा काम में लाई जाती है। इसके सिवा और बहुत सी बिजली तथा भाप वाली क्रेनें हैं। सन् १९३५ ई० में सिडनी के बन्दरगाह में १,७५,८६,१६४ टन (४९,२४,१२,५९२ मन) का व्यापार हुआ।

सिडनी बन्दरगाह से तीन प्रकार का व्यापार होता है। (१) वह व्यापार जो दूसरे देशों के साथ होता है, (२) वह जो कामनवेल्थ के राज्यों के साथ होता है, (३) वह जो न्यू साउथ वेल्स के बन्दरगाहों के साथ होता है। सिडनी के बन्दरगाह में छोटे तथा बड़े दोनों प्रकार के जहाज़ आया जाया करते हैं। यहाँ पर पी० और ओ०, ओरियन्ट, कामनवेल्थ, डोमियन, अमरीकन और जापानी कम्पनियों के जहाज़ आया जाया करते हैं।

पहले आस्ट्रेलिया के जहाजों पर ही यात्री आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड के बन्दरगाहों का भ्रमण कर सकते थे परन्तु अब यह नियम तोड़ दिया गया है। आस्ट्रेलिया के जहाज जो पश्चिमी आस्ट्रेलिया और क्वीन्सलैंड के बीच सवारी ढोते हैं उनमें से कुछ जहाज १० हजार टन के हैं और १८ नाट की चाल से चलते हैं।

सिडनी के जहाजों में कोयला ही अधिक जलाया जाता है। यह कोयला न्युकैसिल और दूसरे बन्दरगाहों से आता है। तटीय व्यापार में पाल वाले जहाजों का प्रयोग नहीं किया जाता है। पहले पाल द्वारा अधिक जहाज चलते थे परन्तु अब धीरे धीरे उसका अन्त हो गया है।

सिडनी संसार का एक प्रधान ऊन का व्यापारिक स्थान है। यह ऊन के निर्यात का केन्द्र हैं। यहां से सन् १९१५ ई० में ११,४७,७७६ गट्ठर बाहर भेजा गया था।

सन् १९३६ ई० में न्यू साउथ वेल्स के मैरी टाइम सर्विस बोर्ड ने सिडनी बन्दरगाह को सिडनी हार्बर ट्रस्ट के हाथ से ले लिया। सिडनी के हार्बर का प्रबन्ध १९०१ ई० से सिडनी हार्बर ट्रस्ट के हाथ में था। इस काल में सिडनी हार्बर की बड़ी उन्नति हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनाएँ

१ अक्तूबर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मन आक्रमणकारी बन्दरगाहों पर आक्रमण किया जिससे नाज़ी रेडियो स्टेशन नष्ट कर दिये गये और युद्ध सामग्री ले जाने वाली रेलगाड़ी में बम द्वारा आग लगा दी गई। आस्टेंड बन्दरगाह पर बम द्वारा भीषण अग्नि प्रकोप हुआ। लण्डन पर नाज़ी आक्रमणकारी वायुयानों ने आक्रमण किया जिससे नागरिकों को हानि हुई चार नाज़ी वायुयान गिराये गये। इटैलियन सबमरीन ने मोन्टेमोन कायो नामक स्पेनी जहाज को डुबो दिया।

२ अक्तूबर—ब्रिटिश वायुयानों ने बर्लिन नगर पर आक्रमण किया जिससे कारखाने वाले प्रदेश को बड़ी हानि हुई। पोलैण्ड की सीमा पर नाज़ी सेना एकत्रित की गई। फ्रान्स के तट पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया जिससे तटीय बन्दरगाहों को बड़ी हानि पहुँची।

३ अक्तूबर—हिटलर से मिलने के लिये मुसोलनी रवाना हुये। बेविन और उड युद्ध मिनिस्ट्री में सम्मिलित किये गये। मिस्टर ऐन्डर्सन काउन्सिल के लार्ड प्रेसीडेन्ट बनाये गये। मिस्टर चैम्बरलैन ने अपनी बीमारी के कारण मिनिस्ट्री से स्तीफ़ा दे दिया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मन बन्दरगाहों पर आक्रमण किया और पिट्रौल तथा तेल के कारखानों पर बम वर्षा किया। पूर्वी अफ्रीका की इटैलियन सेना पर भी ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया। बरनर घाट में हिटलर मुसोलनी सम्मेलन होने को था। हिटलर की रेलगाड़ो म्यूनिच होकर गई।

४ अक्तूबर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ब्रिटिश चैनल के शत्रु बन्दरगाहों पर आक्रमण किया और नाज़ी पथरत्तक जहाजों तथा सेना पर बम वर्षा कर के उसे भीषण हानि पहुँचाया। एड्रियाटिक सागर में इटैलियन विध्वंसकारी जहाज डुबाया गया। जर्मन की दूर गोला फेंकने वाली तोपों ने फ्रान्सीसी तट से ब्रिटिश पथरत्तक सेना पर गोलेबारी किया। वी० हाय० वो द्वीप में ६ जापानी विध्वंसकारक जहाज तथा एक लड़ाकू छोटा जहाज पहुँचा। नाज़ी वायुयानों ने लण्डन तथा इँगलैण्ड के तटीय नगरों पर धावा मारा जिससे बहुत हानि हुई। जर्मन वायुयानों ने लगभग ३१ स्थानों पर बम वर्षा किया। जर्मन वायुयानों ने लण्डन के गांवों के स्कूलों पर बम गिराया जिससे कुछ लड़कों की मृत्यु हो गई। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने डच तट पर आक्रमण किया और नार्वे के तट पर शत्रु जहाजों पर बम वर्षा किया। एरीट्रिया और अबीसीनिया पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया जिससे रेलवे लाइन नष्ट हो गई।

५ अक्तूबर—जापानी सेना ने उधेक्कोंग, हैनान और हाँगकाँग नामक बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया।

७० जर्मन वायुयानों ने केन्ट तट को पार किया। आर० ए० एफ० और शत्रु वायुयानों में तीन घंटा तक लगातार युद्ध हुआ। २३ नाज़ी वायुयान तथा ६ ब्रिटिश वायुयान गिराये गये। जर्मन आक्रमण के कारण कुछ जानें गईं और कुछ घर ढा गये।

६ अक्तूबर—इँगलैण्ड पर कुछ नाज़ी वायुयानों ने धावा किया परन्तु वायुयान संहारिणी तोपों और ब्रिटिश लड़ाकू वायुयानों के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी लन्दन पर बम वर्षा हुई जिसमें से एक बम ट्रैमगाड़ी के समीप गिरा जिससे ड्राइवर की मृत्यु हो गई और कई व्यक्ति घायल हो गये। हनोई के हवाई स्टेशन पर जापानी वायुयान उतरे। लिबिया के इटैलियन हवाई अड्डों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने धावा मारा और उन्हें बड़ी हानि पहुँचाया।

७ अक्तूबर—लगभग ४५० जर्मन वायुयानों ने इँगलैंड पर आक्रमण किया। लन्दन पर ९ बार आक्रमण हुआ। केन्ट तट पर जर्मन तथा ब्रिटिश वायुयानों में भीषण युद्ध हुआ। २८ नाज़ी तथा 14 ब्रिटिश वायुयान गिराये गये। बमों द्वारा कई मकान गिर गये, कुछ लोग मरे और कुछ लोग पत्थर तथा ईंटों के नीचे दब गये। ईस्टबोर्न डोवर और केन्ट आदि नगरों को हानि हुई।

मिस्टर मैक्डानलड स्वास्थ मंत्री ने सारे लन्दन नगर को खाली करने की योजना की घोषणा कर दी है। रूमानिया को जर्मन सेना भेजी गई। जर्मन तथा इटैलियन सेना कालासागर की ओर बढ़ रही है। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने चैनल के बन्दरगाहों पर आक्रमण किया। बर्लिन के गोदामों पर बम गिराये गये।

८ अक्तूबर—ब्रिटिश बम वर्षक वायुयानों ने बर्लिन पर ४ घंटे तक आक्रमण किया और भीषण धड़ाके वाले तथा आग लगाने वाले बम गिराया। बम वर्षा के कारण रेलवे और बिजली घरों को हानि हुई। कुछ लोगों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु हो गई और कुछ घायल हुये। लोरियन्ट गुटर्डम ग्रेव लाइन्स आदि नगरों पर बम वर्षा की गई। कैले से बलोने बन्दरगाह तक अग्नि की ज्वाला धधक रही थी।

रूमानिया को हंग्री होकर जर्मन सेना गई और बहुत ज्यादा युद्ध सामग्री भेजी गई। लन्दन पर दो बार आक्रमण हुआ। एक बम एक भीड़ वाली सड़क पर गिरा और दूसरा एक मोटर बस पर गिरा जिससे बहुत से आदमी घायल हुये कुछ लोग मर भी गये। शीघ्र ही ज़र्मन वायुयानों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों तथा ब्रिटिश वायुयान संहारिणी तोपों द्वारा आक्रमण हुआ। एक रूसी राजकुमारी कैथरिन गलिटज़ाइन जो केन्ट के डचेज की मित्र और सम्बन्धी थी हवाई आक्रमण में मारी गई! वह इँगलैंड में रूसी राजसी गार्डों के साथ २० साल से रहा करती थी।

इँगलिश चैनल में ब्रिटिश पथ रक्षक सेना पर जर्मन तोपों ने गोलेबारी किया। एक ब्रिटिश टैंकर डूब गया।

९ अक्तूबर—जर्मन सेना हँगरी होकर रूमानिया में प्रवेश किया। ४५०० सैनिकों से भरी हुई दो गाड़ियां रूमानिया पहुँची। युद्ध सामग्री भी बहुत बड़ी मात्रा में भेजी गई। आर० ए० एफ० के वायुयान जर्मन भूमि में उड़े और उन्होंने सैनिक अड्डों पर बम वर्षा किया जिससे काफी हानि हुई है। जर्मन वायुयान भी पूर्वी दक्षिणी तथा मध्यवर्ती इँगलैण्ड पर उड़े और बम गिराया जिससे कई मकानों की छतें टूट गईं और कुछ लोग घायल हुये।

१२ अक्तूबर—आर ए० एफ० के वायुयानों ने लीबिया के इटैलियन बन्दरगाहों पर आक्रमण किया। सूडान में ब्रिटिश तथा इटैलियन सेना में झगड़ा हो गया जिसके कारण १८ इटैलियन सैनिक मारे गये। २० हज़ार जर्मन सैनिक रूमानिया में पहुँचे। वाइट द्वीप के समीप ब्रिटिश विध्वंसकारी जहाज़ों तथा जर्मन-यू-बोटों में युद्ध हुआ। जिसके कारण कुछ विध्वंसकारी जहाज़ तथा टारपिडो बोट डुबाये गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मन सैनिक अड्डों पर आक्रमण करके बम वर्षा किया। जर्मन वायुयानों लन्दन ससेक्स और केन्ट में अधिक ऊँचाई से बम वर्षा किया जिसके कारण कुछ जानें गई और कुछ मकानों को हानि पहुँची।

१३—अक्तूबर जापानी वायुयानों ने कुनमिंग पर बम वर्षा किया जिससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका, इँगलैंड और जर्मन काउन्सिल भवनों को हानि हुई। बम वर्षा के बाद नगर के ऊपर चारों ओर धुवें का गहरा बादल छा गया था। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने तोबरक (अफ्रीका) में बम वर्षा किया। सीदी बरानी पर ब्रिटिश तोपों ने गोलाबारी किया। बरदिया पर भी आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बम गिराया। अदन पर शत्रु के एक वायुयान ने धावा मार कर बम गिराया परन्तु कोई हानि नहीं हुई। लन्दन, केन्ट, मध्यवर्ती तथा पूर्वी इँगलैण्ड पर जर्मन वायुयानों ने बम वर्षा किया। कुछ लोगों की बमों द्वारा मृत्यु हो गई कुछ घायल हुये। बमों के भीषण धड़ाके के कारण कुछ मकान नष्ट हो गये हैं। आर० ए० एफ० के वायुयानों इंगलिश चैनल के जर्मन सैनिक अड्डों पर आक्रमण किया बमों द्वारा बड़ी हानि हुई है।

१४ अक्तूबर—रूस की एक बड़ी सेना बसारेबिया को रवाना की गई। अंफई और चेक्यांग प्रान्त में मांटिसी और चीनटांग नदियों के बीच १८० मील की लम्बाई में नया जापानी आक्रमण चीन प्रान्त में हुआ।

आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बर्लिन पर आक्रमण किया और बिजली घर, गैस के कारखाने और सामान रखने वाले गोदाम पर बम गिराया। एसेन के कल के कारखाने पर दो घंटे तक बम वर्षा की गई। बर्लिन पर कई टनों के बम गिराये गये। बर्लिन में बम वर्षा के कारण घबड़ाहट पैदा हो गई। जर्मन सामान ले जाने वाला जहाज़ बम द्वारा घायल किया गया। लोरियन्स में दो जर्मन जहाज़ डुबाये गये। लन्दन में ३६ स्थानों पर जर्मन वायुयानों ने बम वर्षा किया। दक्षिणी-पूर्वी नगर के मेअर उनकी स्त्री और उनके पुत्र की मृत्यु बम वर्षा द्वारा हो गई। लन्दन के तहखाने वाले एक स्टेशन पर बम गिराया गया जिससे कुछ हानि हो गई है।

माल्टा के समीप ब्रिटिश तथा इटैलियन समुद्री सेना में युद्ध हुआ जिसके फल स्वरूप इटैलियन विध्वंसकारी जहाज़ और दो टारपिडो बोट नष्ट हुये। अदन और माल्टा पर आक्रमण हुआ। आर० ए० एफ० के वायुयान ने तोबरक पर आक्रमण किया।

१५ अक्तूबर—सिसली के समीप अँग्रेज़ी तथा इटैलियन समुद्री सेना में युद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप इटली के दो जहाज़ डूब गये एक विध्वंसकारी जहाज़ नष्ट हुआ जो बाद में डूब गया। लीबिया के बन्दरगाहों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बम बर्षा किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने बर्लिन के कई स्थानों तथा ओबलेन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोथा, मैगडेबर्ग, नोसबर्ग, लाहैरवरे, हैम्बर्ग, एम्डेन इनहेल्डर कर्टिजन, लिंगेन और हनोवर आदि स्थानों पर बम वर्षा किया जिससे भीषण हानि हुई।

१६ अक्तूबर—जर्मन वायुयानों ने लन्दन पर आक्रमण किया। मध्यवर्ती दक्षिणी-पूर्वी और दक्षिणी-पश्चिमी इँगलैण्ड के नगरों पर भी आक्रमण हुआ। आक्रमण के कारण एक बहुत प्राचीन चर्च ढा दिया गया। ६ जर्मन वायुयान गिराये गये। आकाश में २ हज़ार फुट की ऊँचाई पर हवाई युद्ध हुआ। रूमानिया को ब्रिटिश प्रजा ने छोड़ दिया, चूंकि रूमानिया पर जर्मन प्रभुत्व बढ़ रहा है इसलिये इँगलैण्ड ने उससे व्यापारिक नाता तोड़ दिया है। चीन अमरीकन प्रजा को संयुक्त राष्ट्र ने आज्ञा दी है कि वह चीन छोड़ कर घर वापस चले जांय। मिस्टर ऐडेन मिस्र पहुँचे और उन्होंने जनरल बटवेन से बातें किया।

१७ अक्तूबर—लन्दन तथा इँगलैण्ड के और कई नगरों पर जर्मन ने भीषण बम वर्षा किया जिसके कारण कुछ घर गिर गये। और कुछ लोग जान से मर गये। ३ जर्मन वायुयान गिराये गये। तीन जर्मन जहाज़ों पर युद्ध सामग्री जा रही थी। जर्मन पथ रक्षक सेना उसके साथ थी। उस पर ब्रिटिश सेना ने जल और वायु से आक्रमण किया जिससे जर्मन पथ रक्षक जहाज़ों को नष्ट कर दिया गया। ब्रिटिश जहाज़ों ने डान्किर्क पर बम वर्षा किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मनी के २० भिन्न भिन्न रेलवे केन्द्रों पर आक्रमण करके बम वर्षा किया। रूम सागर में एक ब्रिटिश लड़ाकू जहाज़ को शत्रु सेना ने चोट पहुँचा कर नष्ट कर दिया। आर० ए० एफ० के वायुयान जर्मन डाकों और समुद्री जहाज़ों पर आक्रमण करके उन्हें भीषण हानि पहुँचाया। अफ्रीका के इटैलियन सैनिक अड्डों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने आक्रमण करके भीषण हानि पहुँचाया।

बरमा सड़क के खुलने की प्रतीक्षा में ट्रक तथा मोटर लारियां हथियारों से लदी द्वार पर खड़ी हैं और खुलने के समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

१८ अक्तूबर—बर्मा सड़क हथियारों को ले जाने के लिये खोल दी गई। जापान ने बरमा रोड पर बम वर्षा करने की धमकी दिया। तीन अँग्रेज़ जहाज़ शत्रु द्वारा डुबा दिये गये। व्रेस्ट के समुद्री स्थानों पर आर० ए० एफ० के वायुयानों ने भीषण बम वर्षा किया। हांग कांग बन्दरगाह से भी बिना रोक टोक युद्ध सामग्री जा सकती है। जर्मन सेना बाल्कन प्रान्तों की ओर जा रही है। जर्मन राजधानी पर बम वर्षा की गई जिन्होंने युद्ध के कारखाने व्यवसायी केन्द्र, रेलवे और नावों आदि के स्थानों पर बम वर्षा किया।

१९ अक्तूबर—बरमा सड़क को जापानी वायुयानों ने कहीं कहीं बम वर्षा करके नष्ट कर दिया। ब्रिटिश बड़े तोपों ने फ्रांसीसी तट पर गोलाबारी किया। चैनल में जर्मनी तथा इँगलैंड की सेना में युद्ध हुआ।

२० अक्तूबर—सीदी बरानी से इटैलियन सेना १० मील आगे बढ़ी। बहरीन द्वीप और साउदी अरेबिया पर इटली के बम वर्षक वायुयानों ने डीरेवादा डोडोकेनीज़ द्वीप समूह बेगाज़ी आदि स्थानों पर आक्रमण करके बम गिराये ब्रिटिश वायुयानों ने फ्रान्सीसी तट और कैप ग्रीसनेज़ पर बम वर्षा किया। ब्रिटिश वायुयानों के बम वर्षा द्वारा ९ रैडियो स्टेशन नष्ट किये गये। चिनियों ने अपने कई नगरों पर फिर अधिकार कर लिया।

२१ अक्तूबर—बरमा सड़क पर जापानियों ने बम वर्षा किया। और जमन वायुयान लन्दन नगर पर उड़े और बम गिराये जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एम्बैसे भवन नष्ट हुआ और वाई एम० सी० ए० का भवन भी बम के भीषण धड़ाके से गिर गया। आर० ए० एफ० का भवन भी बम के धड़ाके से गिर गया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जमन स्थानों पर बम गिराया।

२२ अक्तूबर—आर० ए० एफ० के वायुयानों ने ब्रिटिश पथ-रक्षक जहाजों पर आक्रमण किया और बेलोन पर धावा मार कर बम बर्षा किया जिसमें जर्मन सामग्री की बड़ी हानि हुई।

लन्दन पर जर्मन वायुयानों के आक्रमण के कारण ब्रिटिश तथा जर्मन वायुयानों में युद्ध हुआ जिसके कारण ३ जर्मन और ६ ब्रिटिश वायुयान नष्ट हुये। डोवर प्रान्त पर तोपों द्वारा गोलाबारी की गई।

२३ अक्तूबर—प्रशान्त महासागर के नये ज़हाज़ी तथा हवाई अड्डे अमरीका को प्राप्त हुये जिसमें हवाई द्वीप समूह का पर्ल हार्बर सबसे अधिक उपयोगी है। ब्रिटेन निवासियों को सलाह दी गई कि सुदूरपूर्व की परिस्थिति गड़बड़ होने के कारण वे जापान छोड़ दें। हिटलर विची सरकार को इंगलैंड पर युद्ध घोषणा करने के लिये विवश करने के लिये फ्रांस गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल सागर में इटैलियन तथा ब्रिटिश जहाजों के बीच संघर्ष हुआ जिसके कारण इटली का विध्वंसकारी जहाज़ जला दिया गया दो रखवाली करने वाले जहाज अंग्रेजों के डुबाये गये। केरो पर इटली के वायुयानों ने बम गिराया जिससे ६ आदमी मर गये।

२४ अक्टूबर—सैन-सेबस्चियन स्थान पर फ्रैंको और हिटलर से भेंट हुई। फ्रान्स की विची सरकार के सामने नई शर्तें पेश करने का प्रस्ताव हुआ। सूडान के इटैलियन मार्ग पर ब्रिटिश सेना ने आक्रमण किया जिससे शत्रु सेना के कुछ लोग मारे गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने टेसेनी तथा कसाला प्रान्तों के इटैलियन सैनिक अड्डों पर धावा मार कर बम वर्षा किया जिससे शत्रु की बड़ी हानि हुई। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने उत्तरी सागर में दो जर्मन सामग्री ले जाने वाले जहाज़ों को गोला मार कर डुबो दिया। बर्लिन पर दो घंटे तक ब्रिटिश वायुयानों ने बम वर्षा किया। दो ब्रिटिश ट्रालर जहाज़ जर्मनी द्वारा डुबाये गये। लन्दन, केन्ट, और हेम्पशायर पर जर्मन वायुयानों ने आक्रमण किया। आक्रमण के कारण कुछ निवास स्थान, कारखाने नष्ट हुये। कुछ लोग घायल भी हुये हैं। हानि का ठीक पता नहीं है। सी० एस० बी० ब्लाउन्ट ब्रिटिश हवाई वाइस मार्शल की वायुयान गिरने के कारण मृत्यु हो गई। डरनोर १७ नामक ब्रिटिश वायुयान गोला मार कर गिरा दिया गया।

२५ अक्तूबर—हिटलर तथा मार्शल पिंटन से भेंट हुई। भेंट के समय वान रिबेन ट्राप और एम० लावेल उपस्थित थे।

थाईलैण्ड की सीमा पर एक हज़ार इन्डोचीनी सेना भेजी गई। इन्डोचीन के गवरनर जनरल पर एक फ्रान्सीसी अफसर ने पिस्तौल द्वारा आक्रमण किया परन्तु निशाना चूक गया और गवर्नर जनरल महोदय बाल बाल बच गये। हिटलर-फ्रैंको सम्मेलन कई घंटे तक हुआ जिसमें हिटलर ने फ्रैंको को युद्ध में उतरने के लिये सलाह दिया।

वेनेशिया नामक ब्रिटिश जहाज़ शत्रु की सुरंग द्वारा डुबा दिया गया। विची सरकार ने हिटलर की शर्तों को स्वीकार किया। निम्नांकित प्रधान शर्तें हैं। (१) अल्सेस लारेन जर्मनी को दिया जाय (२) रिवेनिया प्रान्त का नीस तक का भाग इटली को दिया जाय। ट्यूनीशिया पर फ्रांस और इटली मिल कर शासन करें। (४) मोराको का शासन फ्रांस और स्पेन मिल कर करें (५) सीरिया और

उत्तरी अफ्रीका की फ्रान्सीसी सेना इटली की सेना की रक्षा करे और मिस्र के विजय करने में उसकी सहायता करे। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने हैम्बर्ग के जहाज़ी घाटों पर बम गिराये। बर्लिन पर तीन घंटे तक बम वर्षा की गई।

२६ अक्टूबर—इटली और जर्मनी के वायुयानों ने पूर्वी इङ्गलैंड पर आक्रमण किया। दक्षिणी-पूर्वी भाग के पथ रक्षक समुद्री सेना पर लगभग ३० बम गिराये गये परन्तु विशेष हानि नहीं हुई। लन्दन नगरपर जर्मन वायुयानों ने बम गिराया। जर्मन तथा ब्रिटिश वायुयानों में भीषण संघर्ष हुआ जिसके कारण १२ जर्मन तथा ८ ब्रिटिश वायुयान गिराये गये। जर्मन पथ रक्षक सेना पर ब्रिटिश तोपों ने गोलाबारी किया। आर० ए० एफ० के वायुयानों ने जर्मन सैनिक अड्डों पर बम वर्षा किया।

२७ अक्तूबर—पिटेन-हिटलर सम्मेलन के कारण फ्रांस की सरकार ने जर्मनी के साथ युद्ध में हाथ बटाने का निश्चय किया। जर्मन वायुयान ने लन्दन तथा दक्षिणी पूर्वी इँगलैण्ड पर विद्युत-आक्रमण करके बम वर्षा किया। एक बम बाज़ार में गिराया गया जिससे ६ आदमी मरे। मकानों की छतों के टूट जाने से लोग उसके नीचे दब गये। आर० ए० एफ० के वायुयानों तथा वायुयान संहारिणी तोपों ने जर्मन वायुयानों का डट कर सामना किया। युद्ध में ४ जर्मन और दो ब्रिटिश वायुयान नष्ट हुए।

२८ अक्तूबर—हिटलर मुसोलिनी सम्मेलन प्लाजो वेचिओ (फ़्लोरेन्स) नामक स्थान पर हुआ सम्मेलन में काउन्ट सियानों और वान रिबेनट्राप भी उपस्थित थे। इटैलियन सेना ने यूनान पर एकाएक आक्रमण किया। इम्प्रेस आफ ब्रिटेन नामक जहाज़ पर जर्मन वायुयानों ने बम गिराया जिसके कारण जहाज़ में भीषण आग लग गई। जहाज़ का वज़न ४२ हज़ार टन था। जहाज़ जलकर डूब गया। जहाज़ पर ६४३ आदमी थे जिसमें से ५५२ आदमी बचा लिए गये। यूनान की मांग पर जनरल मैंटाक्सा को ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने सूचित किया है कि शीघ्रातिशीघ्र सहायता पहुँचाई जावेगी।

२९ अक्तूबर—मैसिडोनिया प्रान्त में इटली की सेना ने कोस्टर पर अधिकार कर लिया है। यूनानी सीमा पर युद्ध हो रहा है। इटली के वायुयानों ने पतरस नगर पर बम वर्षा किया जिससे २० मनुष्यों की मृत्यु हुई और १०० घायल हुये। यूनान के राजा जार्ज ने हवाई-जल तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थल सेना की समस्त बागडोर अपने हाथों में ले लिया है। जल, स्थल और वायु में इटली तथा यूनान की सेना में युद्ध हुआ। एथेन्स पर कई हवाई आक्रमण हुये।

कोर्फू द्वीप में इटैलियन सेना ने उतरने का प्रयत्न किया तो इटैलियन तथा यूनानी जल-सेना में घोर युद्ध हुआ इटली की सेना सबसे पहले स्लोनी को लेने का प्रयत्न कर रही है। इटली एपीसस की ओर भी बढ़ना चाहती है। अलबानिया के अन्दर एक लाख अस्सी इटैलियन सेना है। सेना के साथ २५० टैंक और ४०० मैदानी तोपें हैं।

३० अक्तूबर—इटैलियन हवाई जहाज़ों ने यूनान की राजधानी एथेन्सन और पटास पर बम्ब वर्षा की। ११० मनुष्य मरे। और ३०० घायल हुये। इटैलियन फौज ग्रीस देश में ९ मील भीतर घुस गई। ब्रिटिश समुद्री जहाज़ों ने सहायता देने के लिये (यूनान के) पड़ोस वाले समुद्र में माइन बम वाले जाल बिछा दिये।

जर्मन हवाई जहाज़ों ने लन्दन और दक्षिणी-पूर्वी इँगलैंड पर हमले किये।

३१ अक्तूबर—टर्की ने तटस्थ रहने का निश्चय किया। जर्मन हवाई जहाज़ों ने दक्षिणी वेल्स, मिडलैण्ड और लन्दन के लीसेस्टर स्कैर पर बम गिराये।

वेलिंगटन न्यूज़ीलैण्ड

वेलिंगटन, न्यूज़ीलैण्ड का शानदार हार्वर निकोलसन का बन्दरगाह कहलाता है। पश्चिमी किनारे पर वेलिंगटन का नगर स्थित है। इस हार्वर का क्षेत्रफल २०,००० एकड़ है। यह बहुत ही सुरक्षित है। यहाँ पर एक जहाज़ी बेड़े के ठहरने के लिये काफी स्थान है। इस बन्दरगाह के समुद्र की गहराई भी यथेष्ट है।

लगभग १०० साल के भीतर वेलिंगटन ने बड़ी उन्नति की। यह वर्तमान समय में न्यूज़ीलैण्ड का प्रधान नगर, राजधानी तथा प्रधान बन्दरगाह है। आकलैण्ड का बन्दरगाह वेलिंगटन से लगभग ५५० मील उत्तर की ओर है। इस नगर की जन संख्या वेलिंगटन से अधिक है और यहां पर लगभग उतना ही ब्यापार होता है, जितना कि वेलिगटन में होता है। सन् १९३४ ई० में वेलिंगटन बन्दरगाह से १७५८३१ टन (लगभग ४७७ ५६,२६८ मन) और आकलैण्ड बन्दरगाह से १,६२४,०७० टन लगभग (४५,४७३,९६० मन) ब्यापार हुआ। वेलिंगटन का बन्दरगाह सिडनी, आस्ट्रेलिया और पनामा के समीपवर्ती बन्दरगाह है। पनामा नहर द्वारा यहां से लिवरपुल जाने में १५६४ मील की कमी पड़ जाती है।

वेलिंगटन उत्तरी द्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित है। कुक की जल संयोजक उत्तरी द्वीप को दक्षिणी द्वीप से अलग करती है। वेलिंगटन का बन्दरगाह और दूसरे बन्दरगाहों के मध्यवर्ती भाग में स्थित है, इस लिये यहां पर दूसरे (उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप के) बन्दरगाहों से सामान आता और जाता है।

वेलिंगटन का बन्दरगाह इङ्गलैण्ड से १२,००० मील की दूरी पर स्थित है। न्यूज़ीलैण्ड का मक्खन, पनीर, फल और मांस वेलिंगटन बन्दरगाह द्वारा इङ्गलैण्ड भेजा जाता है और वहां से पक्का सामान इन सामानों के बदले वहां से आता है।

न्यूज़ीलैंड में चारागाहें बहुत हैं और वहां पर लोग भेड़ तथा बकरियां बहुत पालते हैं। इसलिये यहां से इङ्गलैंड को भोजन सामग्री तथा ऊन बहुत बड़ी मात्रा में भेजा जाता है और इंगलैण्ड से वहां के कारखानों का बना हुआ सामान आता है।

पहले लोग इङ्गलैंड से न्यूज़ीलैंड पाल वाले जहाजों पर गये और वहां जाकर बसे किन्तु जब भाप वाले जहाज चलने लगे तो उन्हें कुछ कष्ट हुआ क्योंकि उनके वे जहाज (जो उनको न्यूज़ीलैंड ले गये थे और उन्हें प्यारे थे) भाप से चलने वाले जहाजों के सामने बेकार हो गये। कुछ समय के पश्चात् इन भापों से चलने वाले जहाजों का मूल्य उन्हें मालूम हुआ और ये जहाज वहां का ऊपज इङ्गलैंड पहुंचाने लगे और वहां से उसके बदले कारखानों का बना सामान न्यूज़ीलैंड पहुंचाने लगे।

इँगलैंड से वेलिंगटन जाने वाली यात्री भाप तथा मोटर से चलने वाले लाइनरों (जहाजों) से जाते हैं।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जहाज यद्यपि अटलांटिक सागर के जहाजों की तुलना नहीं कर सकते तो भी बड़े आराम वाले तथा अच्छे हैं। जहाज़ी लाइनो प्रतिद्वन्दिता होने के कारण किराया बहुत कम हो गया है। और साथ ही साथ होटलों आदि से जहाजों के ऊपर भोजन में भी कम खर्च पड़ता है। इस लिये लोग यात्रा करना अधिक उपयोगी समझते हैं।

इङ्गलैंड से वेलिंगटन जाने के लिये चार मार्ग हैं। पनामा नहर होकर जो मार्ग है, वह सब से छोटा मार्ग है। प्लेमाउथ से वेलिंगटन की दूरी ११०६३ मील (समुद्री) है। इस मार्ग के विपरीत वाला मार्ग जो स्वेज़ नहर होकर है, वह मार्ग आस्ट्रेलिया के बन्दरगाहों होकर जाता है। और उसकी लम्बाई १२२१३ मील है। केप आफ गुडहोप होकर जाने वाले मार्ग की दूरी १२८५२ मील है और केपहार्न होकर जाने वाले मार्ग की लम्बाई ११६६६ मील है। यात्री लोग प्रथम दो मार्गों में होकर यात्रा करते हैं। जो यात्री कनैडा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की भी यात्रा करना चाहते हैं, उनके लिये जहाजी लाइने तथा रेलवे कम्पनियां अलग प्रबन्ध करती हैं। ये यात्री अटलांटिक पार करके न्यूयार्क बोस्टन, क्यूवेक और मान्ट्रियाल आदि बन्दरगाहों में होकर जाते हैं और फिर इन बन्दरगाहों से वेनकूवर, ब्रिटिश कोलम्बिया और सैन फ्रान्सिसको रेल द्वारा जाते हैं। आकलैंड को जाने वाले यात्री वेनकूवर में उतरते हैं और होनोलूलू तथा सूवा हो कर जाते हैं। सैंफ्रान्सिस्को से वेलिंगटन जाने वाले यात्रियों को टहीटी और रारार्टोगा होकर जाना पड़ता है कुछ यात्री सिंगापुर और जावा होकर भी जाते हैं, किन्तु यह मार्ग सीधा नहीं है।

न्यूज़ीलैंड और इङ्गलैंड के बीच चलने वाली जहाजी लाइनो में सब से प्राचीन शा, साविल और अल्बियन लाइने हैं। ११००० टन से १५००० टन तक वाले स्टीमर लन्दन से सामान लादते हैं और साउथ हैम्पटम पर सवारी उतार कर आकलैंड तथा वेलिंगटन को रवाना होते हैं। यह जहाज पनामा नहर होकर यात्रा करते हैं। ताइनुई, तमारोआ, मतारोआ और अकारोआ नामक जहाज इन लाइनों के प्रसिद्ध जहाज है। इन जहाजों का वज़न ६६६५, १२४०५, १२३६० और १५१२८ टन क्रमशः है।

न्यूज़ीलैंड जहाजी कम्पनी के जहाज ११००० से १७००० टन तक के है। रंजीतीकी नामक जहाज का वज़न १६६६८ टन है। यह मोटर लाइनर जहाज है। रँजीताता नामक जहाज १६७३१ टन, और रँजीटेने १६७१२ टन है। तेल से चलने वाला रुआहाइन जहाज का वज़न १०८७० टन, रूमूएरा ११३८३ टन और रोटोरुवा १०८६० टन है। यह सभी जहाज लन्दन से पनामा नहर होकर जाते हैं।

वेंकूवर से आकलैण्ड को राएल मेल का आवोरँजी तथा कनैडा आस्ट्रेलियन लाइन के आर० एम० एस० न्याग्रा नामक जहाज चलते हैं। इन का वज़न क्रमशः १७४६१ टन और १३४१५ है। आकलैंड से यह जहाज सिडनी को जाते हैं। इस लिये आकलैंड से वेलिङ्गटन जाने वाले यात्री रेल द्वारा यात्रा करते हैं। अब यूनियन लाइन का मकूरा और माउंगानुई नामक जहाज सैंन फ्रान्सिस्को से वेलिंगटन सीधे यात्रा करते हैं।

यह जहाज प्रशांत महासागर के प्रसिद्ध जहाज हैं और तहीटी तथा रारार्टोगा ब्रिटिश द्वीपों में ठहरते हैं। वेलिंगटन से यह जहाज सिडनी जाते है और वहां से फिर वापस होते हैं।

पपीटे नामक बन्दरगाह तहीटी द्वीप में स्थित है। यह फ्रान्स के अधिकार में है। फ्रन्सिस्को से हर महीने शनीवार को यहां जहाज आता है। और उसी के बाद सोमवार को जहाज वेलिंगटन से आता है। इसलिये तहीटी के सभी फ्रान्सीसी अमरीकन, अँग्रेज़ वहाँ के पोस्ट आफिस में अपने पत्रों की पतीक्षा में इकट्ठा होते हैं। वे अपने पत्र लेकर वापस जाते हैं और फिर रविवार को उत्तर लिख कर सोमवार को वेलिंगटन से आने वाले जहाज द्वारा उत्तर रवाना कर देते हैं।

सैन फ्रान्सिस्को से वेलिंगटन की दूरी ६५०० मील है। पोर्ट लाइन के जहाज सीधे पनामा होकर लन्दन से जाते हैं।

प्रशांत महासागर को पार करके वेलिङ्गटन की यात्रा बड़ी अनुभव शील होती है। आजकल भी जब कि यात्रा मोटर तथा भाप वाले जहाजों द्वारा होती है तो भी ऐसे बड़े समुद्रों में होकर जाना बड़ा भयानक तथा खतरनाक प्रतीत होता है। जहाज इस मार्ग में समुद्री सिवार को चीरता हुआ जाता है। जब जहाज न्यूज़ीलैण्ड के उत्तरी द्वीप के समीप पहुंचता है तो यात्री लोग डेक पर खड़े होकर बड़ी उत्सुकता से तट की ओर देखते है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रियों को देखते देखते ही उनका जहाज कुक के जलडमरू मध्य में दाखिल होता है। ताग्रोराकीरा हेड के पार करने के बाद जहाज बारिंग हेड पहुंचता है। यहां पर १८३५ ई० में एक प्रकाश घर बनाया गया है जिसकी प्रकाश २३ मील तक जाता है। पेनकारो हेड से जहाज पूर्व की ओर घूमता है। लैम्बटन हार्बर के पीछे की ओर सरकारी दफ्तर तथा नगर व्यापारी तथा रोजगारी स्थान बने हैं। इनके पीछे एक के पश्चात् दूसरी नगर के विशाल महलों की क़तारें हैं। यहीं पर तिनाकोरी की पर्वतीय श्रेणियां हैं, जिसके ऊपर बेतार के तार स्टेशन है।

वेलिंगटन की जलवायु शुद्ध, साफ और ठंडी है। क्वीन्सव्हार्फ के सिगनल द्वारा भीतर आने वाले जहाज को संकेत किया जाता है कि उसे कहां ठहरना है यहां पर बांध से १० व्हार्फ कोणों पर बने हुये हैं।

वेलिंगटन में समतल मैदान की बड़ी कमी है। यहां पर सभी सड़कें पहाड़ की ओर जाती हैं। इसी कारण हार्बर के इंजीनियरों को सदैव भूमि की घाटों तथा मकानों के बनाने के लिये पड़ी है।

भूकम्प के कारण यहां पर बहुत ऊँचे मकान नहीं बनाए जाते हैं, तो भी यहां के मकान बड़े और सुन्दर हैं। न्यूज़ीलैण्ड के पारलियामेन्ट भवन न्यूज़ीलैण्ड के संगमरमर के बने हैं। यह भवन बड़े विशाल तथा सुन्दर है। इन के सामने सुन्दर घास के मैदान तथा पुष्प वाटिकाएं हैं, पारलियामेन्ट भवन के पीछे की ओर पहाड़ियां हैं, जिनके ऊपर सुन्दर हरे बन हैं। यहां का अजायबघर भी देखने योग्य है।

यहां का हार्बर बड़ा सुन्दर है, कुछ लोग यहां के हार्बर को इटली की झीलों से मुक़ाबला करते हैं, इसलिये यहां के हार्बर का पानी नीला है। किन्तु योरुप और यहां की जलवायु रहन सहन, स्थान तथा दृश्यों में बड़ा अन्तर है। जहाजों के ऊपर से यहां के विशाल भवन खिलौने के सामान प्रतीत होते हैं और यदि हम सारे बन्दरगाह को अपनी दृष्टि के सामने रक्खें तो बड़े से बड़ा जहाज भी हमें एक खिलौने के भांति ही प्रतीत होगा।

यहां पर एच० एम० एस० हुड नामक जंगी जहाज (४२१०० टन) और इससे बड़े बड़े जहाज भी आकर ठहरते हैं। कोसमोस नामक जहाज जो १७८०१ टन का है और १६ फुट पानी खींचता है वह भी यहां आकर ठहरा था। वह जहाज इतना बड़ा था कि उसके साथ वाले दूसरे ह्वेल मछली पकड़ने वाले जहाज छोटे छोटे बच्चों की भांति मालूम होते थे।

१०० साल पहले यह स्थान (जहां पर बन्दरगाह है) किसी को मालूम भी नहीं था। कैप्टन कुक ने इस स्थान को पता नहीं लगाया। पहली बार तो वह यहां गया ही नहीं दूसरी बार उसकी दृष्टि इस पर अवश्य पड़ी किन्तु उसी समय हवा उसके मुआफिक हो गई और वह बिना ठीक ठीक पड़ताल किये ही वापस लौट आया था।

उसके बाद लगभग ५० साल तक कोई जहाज इस खाड़ी में नहीं आया। १८२६ ई० में यहां दो जहाज रोसन्ना और लैम्बटन आए। यह दोनों जहाज अँग्रेज़ जहाज थे और इनके कैप्टन जेम्सहर्ड तथा कैप्टन बारनेट थे। कैप्टन हर्डने इस खाड़ी का नाम निकोलसन पोर्ट रक्खा। कैप्टन निकोलसन राएल नेवी का कैप्टन था और हर्ड को उसने शिक्षा प्रदान की थी, इस लिये उसका नाम जीवित करने के लिये उसने इस पोर्ट का नाम निकोलसन रक्खा। नगर के सामने वाले समुद्री भाग का नाम कैप्टेन बरनेट के जहाज के नाम पर लैम्बटन रक्खा गया।

१८३५ ई० तक पेनकैराव हेड में प्रकाश घर था। यह प्रकाश पानी से ३२२ फुट की ऊँचाई पर था और जब दिन साफ नहीं होता था तो प्रकाश नीचे बहुत कम पहुँच पाता था इस लिये ३२ फुट की ऊँचाई पर एक दूसरी बत्ती लगाई गई और उसका नाम लो लाइट (नीची बत्ती) रक्खा गया। इस ओर कैमेरन पर्वत की ऊँचाई ८२७ फुट है। प्रवेश करने वाले मार्ग का पश्चिमी भाग इतना ऊँचा नहीं है। इसके दक्षिणी सिरे पर पामर हेड स्थित है। बीकन पहाड़ी पर सिगनल स्टेशन हैं।

प्रवेश करने वाले स्थान के दोनों किनारों के बीच में बैरेट रीफ है। यह चैनल को दो भागों में बांट देती है। बैरेट रीफ और पेनकारों के मध्यवर्ती मार्ग होकर बड़े बड़े जहाज जाते हैं। छोटे जहाज चैफ़र्स मार्ग होकर जाते हैं जो बैरेट रीफ और पश्चिमी किनारे के मध्य होकर है। एक किनारे से दूसरे किनारे तक की चौड़ाई ३६०० फुट है। गहरी चैनल की चौड़ाई १२०० फुट और गहराई २८ से ३८ फुट तक है। यहां के पानी की धार लगभग ३ मील प्रतिघंटा है। यहां पर २ फुट से ४ फुट तक उतार आता है।

प्रवेश करने वाले स्थान के समीप ही वार्ड द्वीप है। इससे दो मील की दूरी पर सम्स का द्वीप है। यहां पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनारे पर आने जाने की रोक लगाने वाला स्टेशन है। यह लगभग खाड़ी के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इस खाड़ी के उत्तर पूर्वी कोने पर हट नदी आकर समुद्र में प्रवेश करती है। यहां पर समुद्र तट घोमकर लैम्बटन का हार्बर बनाता हैं। इसके आगे समुद्र तट दक्षिण की ओर फिर उत्तर की ओर मुड़ता हुआ इवान्स की खाड़ी बनते बनते है। इसके आगे पामर हेड है।

इवान्स की खाड़ी के समीप ही लायल की खाड़ी है। कुछ और पश्चिम की ओर चल कर आईलैण्ड की खाड़ी है। वेलिङ्गटन नगर के निवासी इस भाग में आनन्द करने तथा मछली का शिकार करने आते हैं। वेलिङ्गटन नगर बिजली के ट्रामवे द्वारा अपने आस पास के दूसरे भागों से मिला है।

लैम्बटन हार्बर के सिटी व्हार्फों (घाटों) की लम्बाई २०,९९९ फुट हैं। सुबर्बन घाटों की लम्बाई ४,३०५ फुट है।

सिटी घाटों के सामने २ मील लम्बा समुद्र है। उत्तर से दक्षिण तक (जो १० सिटी) घाट बने है, उनके नाम ये हैं। (१) पिपीटी, (२) किंग्स (३) ग्लासगो (४) रेलवे (५) लिटिलटन फेरी (६) हार्वर (४) टग (८) क्वीन्स (९) तारानाकी स्ट्रीट (१०) क्लाइड क्वे।

वेलिङ्गटन में सब से बड़ी तैरने वाली क्रेन हिकीटिया है। यह क्रेन ८० टन (२२४० मन) बोझ उठाती है। इससे छोटी क्रेन ३५ टन (९८० मन) का बोझ उठाती है। इनके सिवा और भी २० टन तथा १० टन के बोझ उठाने वाली क्रेने हैं। यहां पर लगभग १०७ छोटी छोटी क्रेने हैं। इसके सिवा २२५ घसीटने तथा खींचने वाले यंत्र और ३ अस्थितर क्रेने हैं।

इस बन्दरगाह में शीत स्थान बने हैं जहां पर फल तथा मक्खन इकट्ठा किये जाते हैं। यहाँ पर ३५,००० मक्खन के डिब्बे और ६५००० सेव की टोकरियां रक्खी जा सकती हैं। घाट पर एक ओर ये सामान रेलों द्वारा लाकर रक्खे जाते हैं और दूसरी ओर जहाजों द्वारा दूसरे देशों को भेजे जाते हैं।

लैम्बटन हार्ब के आगे तैरता हुआ घाट है, जो १७००० टन तक के जहाज उठा सकता है। यह घाट १९३१ ई० में टीने से वेलिङ्गटन लाया गया है। अप्रैल सन् १९३२ ई० में इसकी परीक्षा वेलिङ्गटन में की गई थी। ११२०० टन का भार वाला रुवाहाइन्न नामक जहाज पहले पहले इस पर उतारा गया था। इस घाट की लम्बाई ५३३ फुट और चौड़ाई ८७ फुट है।

इस घाट पर लगभग सभी प्रकार के जहाजों की मरम्मत हो सकती है। यहां पर मरीन इंजनों की भी मरम्मत हो सकती है। टोइया नामक टग (खींचने वाला जहाज) का वज़न ४२२ टन है। यह १३५ फुट लम्बा और २९ फुट चौड़ा है। इसकी चाल १२ नाट की है। अग्नि को बुझाने के लिये यह हर समय तैयार खड़ा रहता है इस जहाज का सालवेज (डूबने से बचाने वाला) पम्प १ मिनट में ३५०० गैलन पानी फेंकता है और आग बुझाने वाला पम्प एक मिनट में २००० गैलन पानी फेंकता है।

इस बड़े बन्दरगाह में छोटे छोटे बोटों के ठहरने के लिये भी प्रबन्ध है। इन बोटों के का स्थान ६ एकड़ है। यहां पर बोटों के ठहरने के लिये अच्छा प्रबन्ध है।

यहां के किराये पर चलने वाले जहाज भी बड़े आवश्यक हैं। ये जहाज जहाज़ों के ऊपर सामान तथा सवारी लादने में सहायता करते हैं और तटीय बन्दरगाहों पर भी यात्रा करते हैं। न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलिया के बीच भी यह जहाज चला कहते हैं।

वेलिङ्गटन और लीटलटन की बीच की दूरी १७३ मील है। इन दानों बन्दरगाहों के बीच यूनियन स्टीम शिप लाइन के जहाज चलते हैं। यह जहाज रोज़ाना आते जाते हैं। यूनियन स्टीम शिप लाइन का वेहीन नामक जहाज ४४३६ टन का है। यह जहाज बहुत पुराना है। १९३० ई० में वेलिङ्गटन हार्वर में इस जहाज की ५० साला जुबली मनाई गई थी।

वेलिंगटन पोर्ट का इतिहास १८३९ से आरम्भ होता है। १८३९ ई० में टोरी जहाज आया और कर्नल एडवर्ड जिवन वेकफील्ड न्यूज़ीलैण्ड कम्पनी की ओर हार्बर के लिये स्थान चुनने को आया। उसके आने के तीन साल के भीतर ही इस बन्दरगाह में ३४० जहाज आये। इन जहाजों में प्रथम आने वाले कूबा, आरोरा, ओरियन्टल, डयूक आफ एक्सबर्ग बंगाल मर्चेन्ट, ग्लेन बर्वी, बोस्टन और अडेलेड आदि जहाज थे। अडेलेडे इन में सब से बड़ा जहाज था, जिसका वज़न ६४० टन था।

सन् १८६२ ई० में क्वीन्स व्हार्फ का बनना आरम्भ हुआ, जहां पर जहाज़ आकर ठहरने लगे।

उस समय इङ्गलैंड और न्यूज़ीलैंड के बीच कोई खास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा आने जाने वाली लाइनें न थीं। पहले डाक यहां से मेलबोर्न जाती थी और फिर पी० और ओ० जहाज़ों से सिंगापुर जाती थी। फिर वहां से इण्डियन मेल सर्विस का जहाज़ उसे स्वेज़ ले जाता था, और फिर स्वेज़ से इङ्गलैंड डाक जाती थी।

डाक की इस कठिनता को दूर करने के लिये पनामा, आस्ट्रेलियन और न्यूज़ीलैंड रायल मेल के जहाज़ चलने लगे। यह मेल सिडनी और न्यूज़ीलैंड से प्रशांत महासागर पार करके पनामा जाती थी। वहां से अटलांटिक के बन्दरगाहों के रेल द्वारा भेजी जाती थी और फिर जहाज़ों द्वारा यह डाक योरप भेजी जाती थी।

जब यह सर्विस बन्द हुई तो आस्ट्रेलियन स्टीम नैवीगेशन कम्पनी ने अपनी सर्विस आरम्भ किया। यह कम्पनी सिडनी से वोंगा और मिलबोर्न की डाक ले जाती थी। ये जहाज़ डाक विलिंगडटन में लेते थे। इसी प्रकार और दूसरी कम्पनियों ने डाक ले जाने का प्रयत्न किया किन्तु एक के बाद दूसरी सभी बैठती गई अन्त में यूनियन स्टीम शिप कम्पनी ने डाक अपने जहाज़ों द्वारा विलिंगटन से सैनफ्रान्सिस्को को भेजना आरम्भ किया।

न्यूज़ीलैंड के निवासी समुद्री जीवन को बहुत पसंद करते हैं। न्यूज़ीलैंड के जहाज़ अधिकतर ब्रिटिश साम्राज्य के देशों में आते जाते हैं।

हाथ का बनाया हुआ कागज़

भारत में प्राचीन काल में कागज़ बनाया जाता रहा है। भारतवर्ष में मशीनों के आने के पहले कई प्रान्तों में कागज बनाने के केन्द्र थे। भारत के कुछ लोगों का मुख्य व्यवसाय ही कागज़ बनाना था। परन्तु हाल में इस रोज़गार की अवनति हो गई हैं क्योंकि हाथ के बने हुये कागज़ से होड़ करनी पड़ती थी।

आजकल यह रोज़गार बड़ी मात्रा में नहीं किया जा रहा है परन्तु इस रोज़गार को प्रान्तीय सरकारों का सहयोग मिला और सहायता प्राप्त हुई है। संयुक्त प्रान्त की सरकार ने कागज़ के बनाने की सरल रीति की खोज में धन लगाया है। इस खोज का काम देहरादून के फारेस्ट रिसर्च इंस्टीच्यूट, हरकोर्टबटलर टेकनालाजिकल संस्था कानपुर और बनारस हिन्दी विश्वविद्यालय में हो रहा है। उन्नति के लिये प्रस्ताव भी किये गये हैं। काल्पी और मथुरा में प्राचीन कारखानों को प्रोत्साहन देने के लिये कक्षायें खोली गई हैं। कागज़ तयार करने के लिये जन-मत लिया और भिन्न भिन्न स्थानों पर खोज के कारण आशा जनक उन्नति हुई है। इससे आशा की जाती है कि भारत में कागज़ का व्यवसाय घरेलू धन्धे के रूप में अधिक उन्नति कर सकेगा।

कागज़ बनाने की विधि प्राचीन है और वह भी भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न प्रकार की है। कागज़ बनाने के लिये रद्दी कागज़, फटे पुराने कपड़े, सन, पटुआ आदि वस्तुओं का प्रयोग होता है। रद्दी कागज़ से कागज़ बनाना सब से आसान है क्योंकि उसे केवल पानी में भिगो कर गूँधने के पश्चात् लुब्दी की ही आवश्यकता पड़ती है। पाट और सन के रेशों को सड़ाने की आवश्यकता होती है।

हाथ का बना हुआ कागज़ खासकर लिखने के लिये और कुछ सोख़्ता के लिये तयार किया जाता है। हाथ से बने हुये कागज़ों की लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई और रंग में अभी समानता नहीं है। हैदराबाद राज्य का लिखने का कागज़ बड़ा सुन्दर होता है। उस पर छपाई का काम भी अच्छा हो सकता है। वहाँ के बने हुये कागज़ की मांग बम्बई में भी होती है। हैदराबाद राज्य में ८४ घराने के लोग हाथ से कागज़ तयार करने के व्यवसाय में लगे हुये हैं। यह रोजगार हैदराबाद राज्य में औरंगजेब बादशाह के समय में आरम्भ किया गया था। जूट और पटुये का प्रयोग ४० और ६० के अनुपात से किया जाता है। जिससे सुन्दर कागज़ तयार होता है।

कुछ लोगों का यह प्रस्ताव है कि अच्छा कागज़ तयार करने के लिये मशीन द्वारा बनी हुई लुब्दी लोगों को दी जाय परन्तु इसका विरोध लोगों ने किया है। विरोधी लोगों का कहना है कि मशीन द्वारा बनी लुब्दी तयार की जायेगी उससे अच्छा कागज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तयार नहीं हो सकता है, कदाचित विरोधी लोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि रद्दी कागज़ जो लुब्दी तयार करने में प्रयोग किया जाता है वह मशीन द्वारा ही तयार कियां हुआ है और यह भी अधिकतर विदेशी मशीनों का तयार किया हुआ होता है।

काश्मीर—जैनुल आब्दीन ने १४२० से १४७० ई० तक काशमीर में राज्य किया था। उसने समरकन्द से कागज़ तयार करने वालों को अपने यहाँ बुलाया था और काशमीर में कागज़ तयार करने का कारखाना खोला था जो अब भी वहां चल रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। वहाँ पर प्राचीन ढंग पर ही काम होता है।

पुराने कपड़े, रद्दी रुई, चिथड़ा, लत्ता और कुछ पटुये को सोडे में मिला कर गरम किया जाता है। चिथड़े और लत्तों को मुलायम करने के लिये कुछ नीबू भी मिलाया जाता है। रंगीन कागज़ बनाने के लिये कच्ची फिटकिरी मिलाई जाती है और लसदार तथा चिकना करने के लिये चावल का मांड़ मिलाया जाता है। कागज़ को बराबर करते समय उसकी धुलाई भी की जाती है।

लुब्दी तयार करने तथा लुब्दी की घोटाई का काम ओखली अथवा कुलही में होता है। ओखली में लोहे का एक मूसल होता है। चिथड़े और लत्ते हाथ द्वारा चरखो में डाले जाते है मूसल का सिर वर्गाकार होता है। जिसमें काटने के लिये चार सीधे फल लगे रहते हैं। यह ओखली के बगल में होते हैं। इस प्रकार लत्ते तथा चिथड़े मूसल के नीचे जाकर चकना चूर हो जाते हैं लत्तों को पानी में भिगो लिया जाता है। थोड़ी थोड़ी देर में नीबू तथा साजी ओखली में डाले जाते हैं। इस प्रकार चार बार पिसाई होती है जिससे पानी के अन्दर समस्त रेशे अलग अलग होकर तैरने लगते हैं प्रत्येक बार लुब्दी की गर्द को साफ करने के लिये कपड़े से उसे छान लेते हैं जिससे गर्द पानी में छन जाती है। उसके बाद लुब्दी को निकाल कर दबाया जाता है और फिर धूप में सूखने के लिये डाल दिया जाता है। रंगाई सफाई और बराबर करने के पश्चात् कागज़ किसी पालिशदार वस्तु से चिकना किया जाता है। यह कागज़ सचमुच अच्छा तयार होता है इसमें चिकनाहट भी काफी होती है।

बम्बई प्रान्त में पुराने नोट-बही तथा प्रेस के रद्दी कागज़ बम्बई और अहमदाबाद में कुण्डों में डाल कर लगभग तीन दिन तक सड़ाया जाता है उसके बाद एक पीपों में डालकर पैर से कुचल कर लुब्दी तयार की जाती है। उसके पश्चात् लुब्दी को साफ तथा उज्जवल किया जाता है। फिर उसे पानी के साथ एक आयताकार लटकते हुये स्थान पर डाला जाता है। यह आयताकार वस्तु बांस की चटाई के बने हुये ढांचे के भीतर होकर आती जाती है। बांस को पतली पटरियों की सहायता से पानी बाहर निकाल दिया जाता है पानी निकल जाने के पश्चात पतली झिल्ली रह जाती है। यह झिल्ली आयताकार स्थान से उठाकर दीवार पर सूखने के लिये डाल दी जाती है और फिर उससे रफ (खुरदरा) कागज़ तयार हो जाता है। उसके पश्चात् फिटकिरी और आटा मिलाकर कागज़ का आकार तयार किया जाता है। उसे सुखाने के पश्चात् स्त्रियाँ चिकने पत्थर के टुकड़ो से कागज़ की सफाई करती हैं।

मद्रास प्रान्त में अमनजीकारई स्थान में कागज़ बनाने का केन्द्र है। वहां पर खुरदरा कागज़, किताबों की जिल्द बनाने का कागज़ और प्राइमरी स्कूलों में प्रयोग करने का मामूली कागज़ तयार किया जाता है। कागज़ बनाने में रद्दी कागज़ का प्रयोग किया जाता है।

मनीपुर राज्य में मजबूत तथा टिकाऊ कागज़ तयार किया जाता है और वह पवित्र तथा बहुमूल्य प्रमाणपत्रों में प्रयोग किया जाता है। मनीपुर राज्य के हाथ से बने हुये कागज़ में मुख्यतः शू; अरस, सन और चूट के रेशों का प्रयोग होता है। सन को पकने के पहले काट कर पानी में सड़ाया जाता है। उसके पश्चात् कूट पछाड़ कर साफ किया जाता है। फिर पानी मे मिलाकर लुब्दी को पतला करते हैं। बांस अथवा लकड़ी के सांचे पर कपड़ा बिछाकर पानी के अन्दर डुबाया जाता है। पानी कम से कम आधा इञ्च सांचे से ऊपर रहता है। उस पर ऊपर से लुब्दी डाली जाती हैं। उसके पश्चात् सांचों को निकाल कर बाहर सुखाया जाता है। सूखने के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागज निकाल कर बराबर किया जाता है। उसके बाद फिटकिरी के पानी से सफाई की जाती है।

शान राज्य—शान राज्य में थाले वृक्ष के छाल से कागज़ तयार किया जाता है। जब यह वृक्ष १५ फुट ऊँचा तथा ६ या ८ इञ्च मोटा हो जाता है तो काट कर गिरा दिया जाता है। इस प्रकार के वृक्ष की छाल से बड़ा सुन्दर स्वेत कागज तयार होता है। पत्तियों के झड़ने के पहले ही वृक्ष गिराया जाता है नहीं तो वृक्ष की छाल नहीं निकल सकती है।

गाँवों के अन्दर यह छाल पानी तथा लकड़ी की राख में पकाई जाती है जब वह लुब्दी तयार करने योग्य मुलायम हो जाती है तो उतार ली जाती हैं। मेजाली के वृक्ष की राख इस कार्य के लिये सर्वोत्तम होती है परन्तु न्ययुङ्ग और तनख्याल वृक्षों के लकड़ी की राख का भी प्रयोग होता हैं। स्वच्छ पानी लुब्दी साफ करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है। सांचों पर पतला रेशमी कपड़ा बिछा कर उस पर लुब्दी डाली जाती है फिर उसे पानी में डुबोया जाता है। पानी के भीतर लुब्दी को कपड़े के ऊपर हाथ से खूब बराबर कर के सांचों को पानी से बाहर निकाल लिया जाता है और धूप में सूखने के लिये रख दिया जाता है। सूखने पर कागज कपड़े के ऊपर से अलग कर लिया जाता है।

इस प्रकार शान राज्य में कई स्थानों पर हाथ से कागज तयार किया जाता है परन्तु यह कागज मशीन द्वारा बने हुये कागज से बहुत खराब होता है। इसलिये यह बाजार में मशीन द्वारा तयार किये हुये कागज का सामना नहीं कर सकता है। यह कागज टिकाऊ अवश्य होता है। भारत एक ऐसा देश है जहां अधिकांश निवासियों को रोजगार की आवश्यकता है इसलिये यह घरेलू धन्धे उनके लिये बड़ा ही उपयोगी है। अकाल अथवा युद्ध के समय इस प्रकार का कागज मामूली कामों के लिये बड़ा ही उपयोगी हो सकता है।

भूमध्यसागर के द्वीप

भूमध्य सागर की स्थिति बड़ी जटिल है। भूमध्य सागर में कई द्वीप समूह हैं। भूमध्यसागर के समुद्री मार्गों की रक्षा किले-बन्दी द्वीपों से हो रही है। इन द्वीपों में युद्ध करने वाले राष्ट्रों की सेनाओं का अधिकार है। माल्टा और साइप्रस के द्वीप बहुत छोटे हैं। यह अँग्रेजों के अधिकार में है। इन द्वीपों पर इटली की आंखें लगी हुई हैं।

माल्टा

माल्टा द्वीप पर अँग्रेजों का अधिकार १८०० ई० में हुआ। इस द्वीप ने भूमध्य सागर में ब्रिटिश शक्ति बढ़ाने में बड़ी सहायता दी है। यह स्थान सिसली द्वीप के समीप है और यहां पर बम गिराने वाले वायुयान २० मिनट में पहुँच सकते हैं। इसके कारण भूमध्य सागरी ब्रिटिश जहाजी बेड़े के प्रबन्ध में परिवर्तन करना पड़ा है। आज माल्टा द्वीप पर बम वर्षा करने का प्रभाव सैनिक दृष्टि से कम है परन्तु माल्टा द्वारा इटली पर सुगमता पूर्वक आक्रमण हो सकता है। यह इटली और बेगाजी ट्रिपौली के मार्ग के मध्य में स्थित है। बेगाजी और ट्रिपौली लिबिया के तट के बन्दरगाह हैं। भावी भूमध्य सागरी युद्ध में माल्टा निश्चय ही एक प्रधान भाग लेगा।

माल्टा द्वीप एक ऊँचे स्थान पर स्थित है। यह अपनी स्थिति और पहाड़ियों के कारण एक प्राकृतिक दुर्ग बना हुआ है। माल्टा के अधिकांश निवासी अँग्रेजों के राजभक्त हैं।

साईप्रस

इस द्वीप पर डिसरैलो ने अधिकार जमाया था। यह उसकी एक बड़ी दूरदर्शिता थी। उसने इसे रूस के विरुद्ध एक बड़ी दीवार और स्वेज नहर के लिये एक सुन्दर चादर समझा था। साइप्रस द्वीप को एक सुन्दर हवाई तथा समुद्री अड्डे बनने का सौभाग्य प्राप्त है। साईप्रस के १० हजार से अधिक लोगों ने अपने को सैनिक सेना के लिये स्वयंसेवक के रूप में अर्पण किया है। यहां के निवासी ही साम्राज्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम सैनिक थे जो समुद्र में युद्ध के लिये सर्वप्रथम भेजे गये हैं और साईप्रस आक्रमण के समय रक्षा के लिये दृढ़ता पूर्वक सामना करने के लिये तयार है।

भावी युद्ध में सिसली और ट्युनिस के बीच का संकरा भूमध्यसागरी भाग बड़ा जटिल होगा। पेंटेलारिया का द्वीप सिसली और अफ्रीका के ठीक बीच में है। कुछ साल पहले मुसोलिनी ने इसे एक दुर्ग बना दिया है। पहले यहां पर फैसिस्ट मत के विरोधी कैदी रहा करते थे। इटली के लोग इसे "एक नया जिब्राल्टर" कहते हैं। इसकी स्थिति को देखते हुये यह बात किसी हद तक ठीक है। इस संकरे मार्ग के पानी में सुरंगे लगाई जा सकती हैं और पथ की रक्षा भली भांति की जा सकती है। इटली पिछले कई वर्षों से भूमध्य सागर में क़िले बन्दी करने में अधिक से अधिक रुपया व्यय कर रहा था। ६ वर्ष बीतते होंगे कि उसने भूमध्य सागर के मध्यवर्ती भाग पर अपना अधिकार करने की तयारी करना आरम्भ किया था। इटली भूमध्य सागर को एक रोमन झील मानता है। आज उस नाम को सत्य करने का समय मिला है।

अपनी इच्छा को पूर्ति करने के लिये इटली ने डोडेकेनीज द्वीप समूह को ओर अधिक ध्यान दिया है रहोडेस, लेरोस, कारपथोस और द्वीप समूह के दूसरे स्थानों पर इटली के सुदृढ़ दुर्ग तथा जहाज तथा हवाई अड्डे बने हैं। डोडेकनीज़ द्वीप डाडनलस के मार्ग को बन्द कर पाता है और टर्की पर आक्रमण करने के लिये अड्डे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

कोस द्वीप समूह का दूसरा बड़ा द्वीप है। यह टर्की से १० मील की दूरी पर है। लेरास द्वीप में सब से अधिक क़िलेबन्दो है और वह टर्की से २५ मील की दूरी पर है। सिकन्दरिया में अँग्रेजी जहाजी बेड़ा है जिसका भय डोडेकनीज़ द्वीपों को है और इनके तथा इटली के मार्ग को काट देना कोई कठिन कार्य नहीं है। साथ ही इटली वहाँ के सबमरीनों का अड्डा बना कर अँग्रेजों को हैरान कर सकता है।

क्रीट

क्रीट द्वीप पर यूनान का अधिकार है। इस द्वीप की स्थिति भी बड़े मार्के की है और इसमें कई राष्ट्रों के हितों का संघर्ष है यह द्वीप डोडेकनीज़ को इटली से अलग करता है और सेलोनिका तथा सिकन्दरिया के मध्य में एक सुन्दर अड्डे का काम देगा। यह डोडेकनीज़ के इटैलियन ज़हाजी बेड़े के मार्ग को रोक सकता है।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनाएँ

१ नवम्बर—यूनानी और इटैलियन लड़ाका जहाज़ों में घमासान युद्ध हुआ। इटैलियन सेना यूनान में आगे बढ़ी। और काला मास नदी के किनारे स्थानों पर पहुँच गई। पट्रास और मेटज़ावो दर्रे के पास लेपान्टी पर इटैलियन हवाई जहाज़ों ने बम्ब गिराये। इटली से पास ग्रीस की अपेक्षा चलती फिरती तोपों (मोबायल गन) की अधिकता है।

पश्चिमी रेगिस्तान में दक्षिण की ओर से अचानक आने वाली धूलभरी आंधियां इटैलियन सेना के मार्ग में बाधा डाल रही हैं। इन से तो और सामान की लारियों को हर पन्द्रह मिनट बाद रुक जाना पड़ता है। इन आंधियों की उँचाई १५०फुट होती है। इसलिये हवाई जहाज़ फिर भी चल सकते हैं।

२ नवम्बर—एथेन्स, सेलोनिका, कार्फ और लारिसा पर इटली ने हवाई हमले किये। जान पर खेलने वाली एक यूनानी क्रैक सेना ने इटली की सेना को रोक कर एक पहाड़ी पर अधिकार कर लिया। फ्रांसीसी तट पर लगी हुई जर्मन तोपों ने ब्रिटिश जहाज़ों पर गोले गिराये। जर्मन और इटैलियन हवाई जहाज़ों ने ब्रिटेन पर हमले किये। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने नेपिल्स पर बम्ब गिराये।

३ नवम्बर—इटली ने यूनान के १५ नगरों पर बम्ब गिराये ... मरे और २०६ घायल हुये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ब्रिटिश फौजी मिशन यूनान पहुँचा।

हाल के हवाई हमलों से केन्सिंग्टन महल (जहां महारानी विक्टोरिया पैदा हुई थीं) को बड़ी हानि हुई।

ब्रिटिश फौज ग्रीस में उत्तरी द्वीप की सहायता के लिये लन्दन से ३ करोड़ पौंड (४५ करोड़ रु०) भेजे गये। विची की फ्रांसीसी सरकार ने ब्रिटिश रेडियो का सुनना बन्द करवा दिया है।

ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ कार्फू से ३६ मील दूर ल्यूका द्वीप के पास आइओनियन द्वीप में पहुँच गये।

इटेलियन हवाई जहाज़ों ने माल्टा पर और दक्षिणी अफ्रीका के हवाई जहाज़ों ने माल्टा पर गोले गिराये।

४ नवम्बर—इटेलियन मंत्री ग्रीस (यूनान) से लौट रहे हैं।

५ नवम्बर—यूनानी लोगों ने इटेलियन रसद के केन्द्र (अलबेनिया) कोरिट्ज़ा नगर पर हमला किया। दो अंग्रेज़ी सशस्त्र जहाज़ डुबा दिये।

६ नवम्बर—ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने इटली के ब्रिण्डिसी बन्दरगाह पर हमला किया।

७ नवम्बर—अटलांटिक महासागर के बीच में ग्राफस्पी के समान शत्रु के एक जहाज ने ब्रिटिश जहाज़ पर गोले बरसाये। जर्मनी के जिन भागों में ब्रिटिश हवाई हमलों से हानि हुई उनकी मरम्मत करने के लिये ४०,००० डच लोग भेजे गये हैं।

पूर्वी स्काटलैंड में जर्मन हवाई जहाज़ों ने गोले गिराये।

८ नवम्बर—इटेलियन फौजों ने कालामास नदी को पार कर लिया। यूनानी फौजें उत्तरी पश्चिमी ग्रीस से पीछे लौटीं।

डोवर पर फ्रांसीसी तट से गोले छोड़े गये। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने जर्मनों के बन्दरगाहों पर बम गिराये। ब्रिटिश हवाई जहाजों ने ब्रिण्डिसी (इटली के बन्दरगाह) पर गोले गिराये।

९ नवम्बर—फ्लेयनिट्ज़ा प्रदेश की ओर यूनानी लोग कुछ आगे बढ़े।

जिब्राल्टर पर स्थल मार्ग से शत्रु अचानक हमला न कर सके। इसलिये एक नहर खोद कर इसे द्वीप बना लिया गया है। नहर अधिक चौड़ी नहीं है। लेकिन टैंकों के मार्ग में रुकावट डालने के लिये काफी है।

१० नवम्बर—पिंडस के प्रदेश में इटेलियन कैक सेना को अऊफ नदी की बाढ़, भालू और भेड़ियों से भारी हानि हुई।

११ नवम्बर—केण्ट और इसेक्स के नगरों पर हवाई हमले हुये। ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने ब्रिंडिसी पर फिर गोले गिराये।

१२ नवम्बर—पिंडस के पड़ोस में इटली की फौजों को भारी हानि उठानी पड़ी। ब्रिटिश हवाई जहाजों ने डेंज़िग में बम गिराये। सार्डिनिया के ग्लियारी नगर पर भी बम्ब गिराये गये।

रूस के मालोटोव अपने ३२ विशेषज्ञों के साथ बर्लिन पहुँचे। जर्मनी इस प्रयत्न में है कि उसे रूस की प्रचुर प्राकृतिक सम्पत्ति से उसी प्रकार की सहायता मिल सके जैसी ब्रिटेन को संयुक्त राष्ट्र अमरीका से मिल रही है।

संधि दिवस के मौन समय जर्मन हवाई जहाजों ने लन्दन पर बम्ब गिराये। रात को भी गोले गिराये गये।

१३ नवम्बर—गत सप्ताह ब्रिटेन के १८ जहाज डुबाये गये जो सब मिल कर ७२००० टन के थे।

एक ब्रिटिश क्रूजर (जार्विस बे) जर्मन पाकेट बैटिल शिप से लड़ता हुआ डूब गया। मध्य पिंडस में यूनानी फौजों ने इटली की एक टोली को हराया और कुछ फौजी सामान छीन लिया।

१४ नवम्बर—ब्रिटिश रायल नेवी (जल सेना) ने इटली के दो बड़े बड़े जहाजों को इतनी गहरी हानि पहुँचाई कि इटली की जलसेना बड़ी कमज़ोर हो गई।

१५ नवम्बर—एक जर्मन सेना (डिविजन) सादी पोशाक में स्पेन पहुँच गई। इससे जिब्राल्टर पर शीघ्र ही हमला होने वाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध-विषय

१८४३ ई० से अब तक टिड्डी दलों ने पंजाब में १८ हमले किये हैं। वर्तमान हमला अठारहवां है। इस बार वहां के कृषि विभाग ने पंजाबी किसानों को सलाह दी है कि दिन के समय ढोल और खाली कनस्तर बजाकर और सफेद कपड़ा उड़ा कर टिड्डियों को ऐसा डरावें कि वे फसल पर बैठने न पावें। रात को टिड्डियाँ जलाकर मार डाली जावें। आधी रात के बाद टिड्डियों को ऐसी ठंड लगती है कि वे चलने में असमर्थ हो जाती हैं।

❀ ❀ ❀

अगर १ इंच पानी बरसता है तो एक एकड़ में वह १०० टन और एक मील में ६९,००० टन के बराबर होता है।

किसी किसी में दो तीन बिलियन टन पानी बरस जाता है।

रेगिस्तान में जब कभी पानी बरसता है तो बड़े जोर से बरसता है।

❀ ❀ ❀

सूर्य प्रति मिनट जमीन पर इतनी गरमी पहुँचाता है जितनी गरमी १०,००,००,००० टन कोयला जलाने से पैदा हो सकती है। यदि वायुमंडल न हो और बिना रोक टोक के यह गरमी पृथिवी के धरातल पर पड़े तो फसलों और पेड़ों से लपटें (ज्वालायें) निकलने लगें और समुद्र खौलकर सूख जावें उनका सब पानी भाप बन जावे। धूप कई प्रकार की किरणों के मिश्रण (मिलने) का परिणाम है।

❀ ❀ ❀

अजीज़िया (इटेलियन उत्तरी अफ्रीका) का तापक्रम एक बार १२६·४ अंश निकला।

वर्खोयान्स्क (साइबेरिया) का तापक्रम शून्य अंश से भी १०० अंश नीचे रहता है।

मास्को के प्रसिद्ध वैज्ञानिक चीजोव्स्की का अनुमान है कि जब सूर्य-कलंक (धब्बे) दिखाई देते हैं तब साधारण वर्षों की अपेक्षा पृथिवी पर अधिक गरमी पड़ती है और मनुष्य युद्ध करने के लिये उत्तेजित हो जाते हैं। इस प्रकार इनके अनुसार सूर्य-कलङ्कों और संसार के महायुद्धों में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

❀ ❀ ❀

आसमानी बिजली की साधारण चमक में १०,००,००,००० वोल्ट बिजली रहती है। इसकी लम्बाई आध मील से ५ मील तक होती है।

बिजली के चमकने और कड़कने में यदि ५ सेकेंड अन्तर हो तो बिजली १ मील की दूरी समझना चाहिये। १० सेकेंड अन्तर हो तो २ मील और १५ सेकेंड अन्तर हो ३ मील समझनी चाहिये। यदि बिजली का कड़कना सुनाई देगा तो साधारण संकट हो गया समझना चाहिये।

❀ ❀ ❀

धरातल से पचास साठ मील की उँचाई पर हवा की बहुत ही पतली शून्य (वेकुअम) के समान तह है। इसी के द्वारा रेडिओ समाचार भेजा जाता है। इसका पता आलिवर हेवीसाइड महाशय ने लगाया था। इसलिये इसको हेवीसाइड लेअर भी कहते हैं। दिन की अपेक्षा रात के समय यह तह कई मील अधिक उँचाई पर मिलती है। इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा शीतकाल में यह अधिक उँचाई पर होती है।

जो रेडियो की लहरें भेजी जाती हैं वे पहले ऊँची उठती हैं और फिर हेवीसाइड तह तक पहुँच कर पृथिवी का पूरा या आधा चक्कर लगाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर परिशिष्टांक

"भूगोल" का महासमर अंक लोगों को कैसा पसन्द आया यह आपको विदित हो गया होगा। इस विशाल अंक के निकल जाने के वाद भी समर क्षेत्र में तरह तरह के परिवर्तन हुये हैं। जिन स्थानों को पहले बहुत कम लोग जानते थे उन्हें लड़ाई ने अपूर्व ख्याति दे दी। फिर भी अपने हिन्दी भाषा-भाषियों को उनका ठीक ठीक ज्ञान न हो सका क्योंकि ये नाम शायद ही किसी पुरानी एटलस या भूगोल की पाठ्य पुस्तक में मिलते हैं।

इसी से जनवरी १९४१ में भूगोल का **महासमर परिशिष्टांक** निकाला जा रहा है। इसमें आकारादि क्रम से प्रायः सभी स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख वर्तमान लड़ाई के सम्बन्ध में आया है।

यू बोट आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका समझना साधारण पाठकों के लिये कठिन है। इन अज्ञात नामों पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी आपको अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद लेख मिलेंगे। आवश्यक चित्र और नकशे भी दिये गये हैं। इस अंक का मूल्य केवल ।।) है। भूगोल के वर्तमान ग्राहकों को यह उनके चन्दे में ही मिलेगा।

जो सज्जन ३१ दिसम्बर १९४९ तक "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० भेजकर चालू वर्ष के ग्राहक बन जायँगे उनको भी यह अंक उसी चन्दे में मिलेगा। फुटकर अंक चाहने वालों को भी ८ आने के टिकट अथवा मनीआर्डर ३१ दिसम्बर १९४० तक भेज देना चाहिये।

निवेदक—

रामनारायण मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press; 243, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिंदी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

दिसम्बर १९४०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy As. 5/-

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर परिशिष्टांक

"भूगोल" का महासमर अंक लोगों को कैसा पसन्द आया यह आपको विदित हो गया होगा। इस विशाल अंक के निकल जाने के बाद भी समर क्षेत्र में तरह तरह के परिवर्तन हुये हैं। जिन स्थानों को पहले बहुत कम लोग जानते थे उन्हें लड़ाई ने अपूर्व ख्याति दे दी। फिर भी अपने हिन्दी भाषा भाषियों को उनका ठीक ठीक ज्ञान न हो सका क्योंकि ये नाम शायद ही किसी पुरानी एटलस या भूगोल की पाठ्य पुस्तक में मिलते हैं।

इसी से जनवरी १९४१ में भूगोल का **'महासमर परिशिष्टांक'** निकाला जा रहा है। इसमें आकारादि क्रम से प्रायः सभी स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख वर्तमान लड़ाई के सम्बन्ध में आया है।

यू बोट आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका समझना साधारण पाठकों के लिये कठिन है। इन अज्ञात नामों पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी आपको अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद लेख मिलेंगे। आवश्यक चित्र और नकशे भी दिये गये हैं। इस अंक का मूल्य केवल ।।) है। भूगोल के वर्तमान ग्राहकों को यह उनके चन्दे में ही मिलेगा।

जो सज्जन ३१ दिसम्बर १९४० तक "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० भेजकर चालू वर्ष के ग्राहक बन जायँगे उनको भी यह अंक उसी चन्दे में मिलेगा। फुटकर अंक चाहने वालों को भी आठ आने के टिकट अथवा मनीआर्डर ३१ दिसम्बर १९४० तक भेज देना चाहिये।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—मेरी नार्वे-यात्रा	१
२—सिंगापुर का बड़ा बन्दरगाह	५
३—भारतवर्ष की उत्पादक शक्ति	१०
४—संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जनसंख्या का विभाजन	१२
५—पनडुब्बों का पहनाव	१८
६—स्पञ्ज (समुद्रसोख) निकालने की प्राचीन कला	१९
७—पानी के भीतर तार का लगाया जाना	१९
८—बरमा सड़क	२१
९—पेंगविन पक्षी	२३
१०—अफ्रीका के शेर	२४
११—संसार की प्रसिद्ध लाटें	२६
१२—हवाई हमले और उनसे बचने का उपाय	३०
१३—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, विहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७] पौष, सं० १९९७, दिसम्बर, १९४० [अङ्क ८

मेरी नार्वे-यात्रा

नार्वे देश में मुझे दो बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली बार बर्लिन से गया था। जिस रेलगाड़ी पर मैं बर्लिन में सवार हुआ उसी में कुछ डब्बे ओस्लो नगर के लगे थे। बाल्टिक सागर को ये डब्बे किस प्रकार पार करेंगे यह प्रश्न मन में बार बार उठ रहा था। अन्त में स्थल भाग की यात्रा समाप्त हुई और समुद्र सामने दिखाई देने लगा। जहाज़ इस प्रकार लगता था कि वह स्थल की रेल की पटरियों को छूने लगा। फिर जहाज़ पर बिछी हुई रेल की पटरियां स्थल से मिल गईं। इसके बाद जिस गाड़ी के डब्बे में मैं बैठा था वह जहाज़ पर चढ़ गया। मुझे गाड़ी से उतर कर जहाज़ पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं हुई। इस प्रकार मैं रेलगाड़ी पर सवार था और मेरी रेलगाड़ी जहाज़ पर सवार थी। कुछ ही घण्टों में यह यात्रा समाप्त हो गई। दूसरी ओर स्थल के इंजिन ने रेल के डब्बे को उतार लिया।

पहले स्वेडन देश में हो कर गुजरना पड़ा। गोटा या गोटेन बर्ग में काफी देर तक रेलगाड़ी ठहरी। रेलवे स्टेशन से शहर का कुछ भाग और विशेष कर बिजली का कारखाना भलीभांति दिखाई देता था। रास्ते का दृश्य बड़ा सुन्दर था। धूल का कहीं नाम न था। ज़मीन अक्सर पथरीली थी लेकिन फिर भी देवदारू और दूसरे पेड़ थे। ओस्लो के पड़ोस में पेड़ और घने हो गये। ओस्लो का स्टेशन बहुत बड़ा नहीं है। भीड़ भी रहती है। अधिकतर यात्री सीधे जलमार्ग से आते हैं। गरमी की ऋतु में यात्रियों की संख्या और अधिक बढ़ जाती है। यात्रियों की अधिकता से पास वाले होटल में स्थान न था। इसलिये मुझे कुछ दूर वाले होटल में ठहरना पड़ा।

होटल का प्रबन्ध एक महिला के हाथ में था। उसका प्रबन्ध बहुत अच्छा था। वह आगन्तुक के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करती थी। इससे अच्छा ही हुआ कि पास वाले होटल में भीड़ के कारण मुझे जगह न मिल सकी। उस होटल का प्रबन्ध करने वाली महिलायें कुछ बाज़ारू स्त्रियों की तरह मालूम पड़ती थीं। लेकिन इस होटल के पड़ोस में शराबियों का अड्डा था। इस लिये सावधानी के लिये कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मार्ग से और कभी दूसरे मार्ग से इधर आता जाता था।

दूसरे दिन शौचादि से निवृत्त हो समुद्र स्नान के लिये गया। स्नान के घाट पर पहुँचने के लिये स्टीमर का बहुत थोड़ा किराया लगता था। घाट पर कुछ फीस देने पर कपड़े रखने के लिये एक अलमारी

रोंगटे खड़े हो जाते हैं और स्नान करने वाला कांपने लगता है।

यहां का अजायबघर ध्रुवों की सामग्री के लिये संसार प्रसिद्ध है। नार्वे ने ध्रुवों के यात्री और अन्वेषक तयार किये। वीर नानसेन और एमण्डसेन की स्मृति दिलाने वाली उनकी स्लेज गाड़ियां और कई

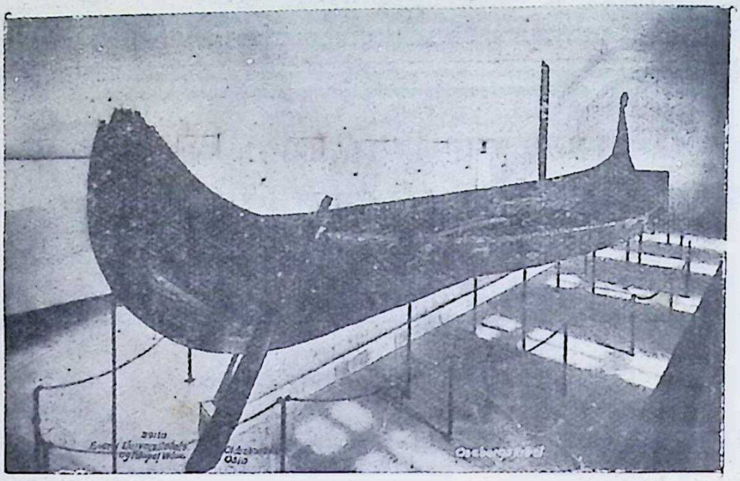

ओस्लो के अजायबघर में रक्खी हुई एक स्की बोट। यह बरफ और पानी दोनों पर चल सकती है।

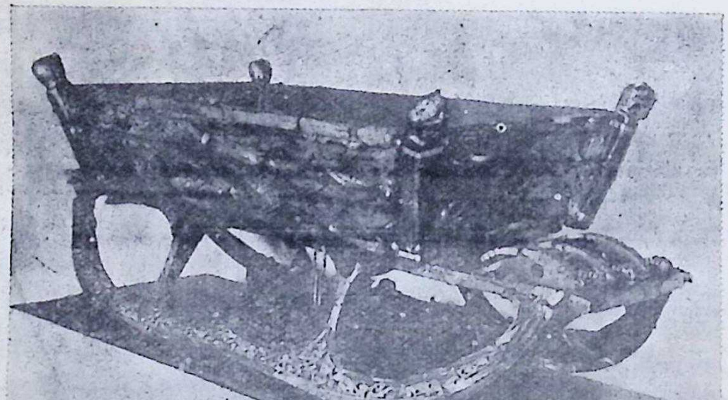

ओस्लो के अजायबघर की एक पुरानी स्लेज गाड़ी। पहिये न होने पर भी यह बरफ पर चलती थी।

और पहनने के लिये जांघिया मिलता है। यहां गरमी की ऋतु में भी बड़ा जाड़ा पड़ता है और हवा में नमी होने के कारण कपड़ा बहुत देर में सूखता है। इसलिये कोई नहाने वाला अपना कपड़ा भिगोना पसन्द नहीं करता है। कुछ ही देर स्नान करने पर

दूसरी चीजें रक्खी हुई हैं। आधा दिन ओस्लो के उस पार एक पुराने गिरजे और ग्राम्य जीवन के देखने में बिताया गया। लकड़ी से घिरा हुआ बाड़ा देवदारू का बन और शान्त वायु मंडल अपने गढ़वाल के पहाड़ी गांव की याद दिलाता है। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां की हृष्ट पुष्ट गायें, पढ़े लिखे और स्वाधीन किसान, बिजली से प्रकाशित स्वच्छ घर अपने देश के पहाड़ी भागों में बहुत कम देखने को मिलते हैं।

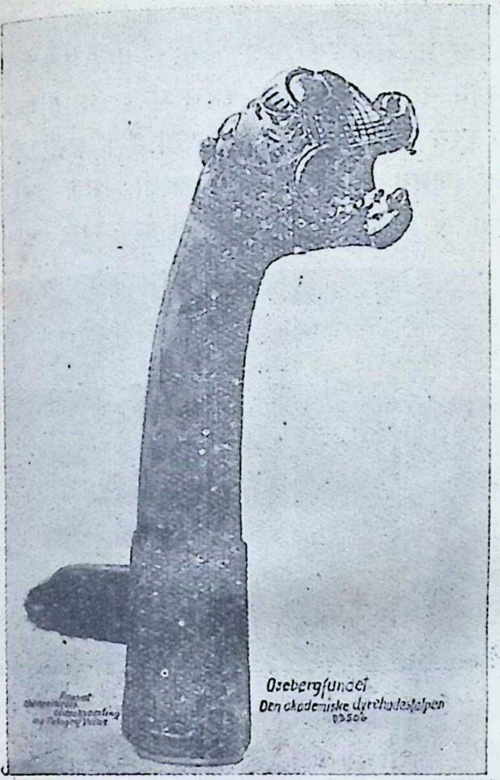

ओस्लो अजायबघर का एक विचित्र नमूना

ओस्लो का राष्ट्रीय भवन

ओस्लो के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद तीसरे दिन वर्गेन के लिये प्रस्थान किया। रेल के टिकट के अतिरिक्त यहां स्थान के लिये अलग टिकट लेना पड़ता है। जो लोग खिड़की के पास बैठते हैं उन्हें कुछ अधिक किराया देना पड़ता है। इस यात्रा के अद्भुत दृश्यों को देखने के लिये मैंने खिड़की के पास वाली ही जगह (सीट) ली। वह भी उस डब्बे में जहां सिगरेट पीने वाले न थे। यहां सिगरेट पीने वालों और न पीने वालों के लिये अलग अलग डब्बे रहते हैं।

ओस्लो में राष्ट्रीय भवन के सामने का दृश्य

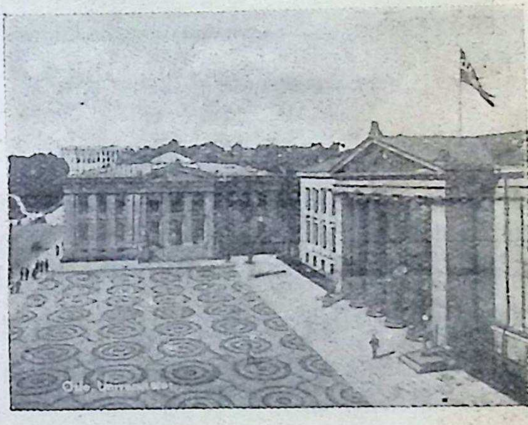

ओस्लो का विश्वविद्यालय

खिड़की के पास बड़ा लम्बा चौड़ा एक शीशा लगा था। इससे बाहर का एक दृश्य साफ दिखाई देता था। धूल से मुक्त स्वच्छ वायु मंडल में यहां की नङ्गी चट्टानें, हिमागार जंगली हिरण, लटकती हुई नदियाँ और हरे चरागाह बड़े सुहावने लगते थे। पहले गाड़ी चढ़ती गई। कुछ समय के बाद प्रायः समतल पठार मिला। स्टेशनों पर स्थानीय सुन्दर दृश्यों के चित्र बिकते थे। कहीं कहीं पर बरफ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेग को रोकने के लिये रेल की पटरी के दोनों ओर लकड़ी का विचित्र ढांचा बना हुआ था। शाम के समय गाड़ी बर्गेन के निकट पहुँची। लेकिन यहाँ की शाम कहीं दस बजे रात को होती है। बर्गेन के निकट फिर हरियाली का दृश्य मिला। एक अच्छे होटल का पता रास्ते में ही एक अँग्रेजी जानने वाली महिला ने बता दिया।

होटल में बड़ा आराम था। लेकिन रात के १२ बजे तक यहां नाच और गाना होता रहा। आज तैरने वालों का एक विशेष उत्सव था। तैरने के

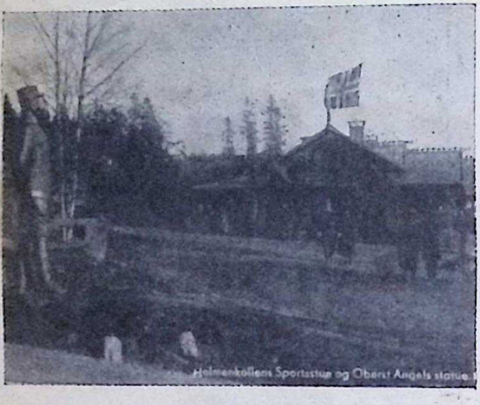

खेल का क्लब घर और स्टैचू (विशाल मूर्ति)

क्लब में लड़के और लड़कियाँ दोनों ही शामिल थे। बर्गेन नगर भी कई भागों में बसा है। समुद्र के पास वाले भाग में मछली का बाजार है। ऊपरी भाग में फर (नमदे) की दुकानें हैं। नमदे बड़े महँगे थे। लेकिन नमूने के लिये सील की खाल का बना हुआ जूता मैंने भी मोल लिया। दोपहर को यहाँ के पहाड़ी ट्रैम कार की यात्रा की।

ट्रैमगाड़ी के डब्बे मोटे मोटे फौलादी रस्सों से सधे रहते हैं और बिजली के जोर से चलते हैं। आने जाने के रास्ते एक हैं। जब एक ट्रैमगाड़ी ऊपर चढ़ती है तभी दूसरी गाड़ी नीचे उतरती है। नये लोगों को ऊपर चढ़ते समय डर लगता रहता है। जरा भूल हो तो डब्बा चकनाचूर हो जावे। लेकिन चलाने वाले बड़े अनुभवी होते हैं। ऊपर पहुँच कर ड्राइवर ने मेरा एक चित्र लिया। यहाँ एक छोटी सी दुकान भी है। चोटी से बर्गेन शहर और बन्दरगाह का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। इसी यात्रा में कुछ जर्मन और इटेलियन यात्री मिले जो उत्तरी भाग के निशाथ (आधी रात के) सूर्य को देखने

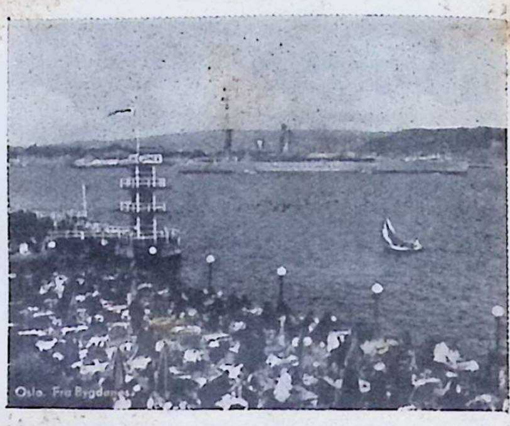

ओस्लो का समुद्र-तट

जा रहे थे। कौन जानता है कि ऐसे ही लोगों ने नार्वे के फौजी भेद बाहर पहुँचाये हैं। कुछ बुड्ढे अँग्रेज मछली पकड़ने और सैर करने आये थे। नार्वे देश में मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों की अधिकता है। बहुत सी लड़कियों का ब्याह नहीं हो पाता है। उन्हें अविवाहित जीवन बिताना पड़ता है। पर वे शिक्षा से सम्पन्न होती हैं।

तीसरे दिन स्टीमर द्वारा बर्गेन से न्यूकासेल (ब्रिटेन) के लिये प्रस्थान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंगापुर का बड़ा बन्दरगाह

एशिया के दक्षिणी सिरे पर स्थित होने के कारण सिंगापुर संसार का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र हो गया है। यह समुद्री मार्गों का चौराहा है। इस बन्दरगाह से दक्षिणी-पूर्वी एशिया डच पूर्वी द्वीपसमूह स्याम, फ्रान्सीसी, इण्डो चीन और बोरन्यू द्वीप की उपज दूसरे देशों को भेजी जाती है। इस बड़े बन्दरगाह पर भांति भांति के जहाज दिखाई पड़ते हैं। भारतवर्ष, योरुप, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान और अमरीका को जाने वाले बड़े जहाज इस बन्दरगाह पर ठहरा करते हैं। मछली मारने वाले और दूसरे छोटे जहाज भी बहुत बड़ी संख्या में यहाँ रहते हैं।

सिंगापुर का बन्दरगाह समुद्री द्वीपों से घिरा हुआ है। यह संसार के सर्वप्रसिद्ध तथा सुन्दर बन्दरगाहों में गिना जाता है। यहाँ आने वाला माल प्रधान घाटों पर जाने के पहले ही उतार लिया जाता है और तब सामान ले जाने वाले स्टीमरों तथा बोटों से गोदामों को पहुँचाया जाता है। सिंगापुर की नदी सिंगापुर नगर के बीच होकर बहती है, इसलिये छोटे बोटों तथा स्टीमरों द्वारा सामान जहाजों पर लादा उतारा जाता है। गोदाम में पहुँचाने और वहां से सामान लाने का काम सामान ढोने वाले स्टीमरों से ही लिया जाता है।

सिंगापुर बन्दरगाह का समुद्र काफी गहरा है, इसलिये ४० हजार टन (११,२०,००० मन) तक के जहाज प्रधान घाटों तक सुगमता पूर्वक जा सकते हैं। यहाँ ज्वारभाटा केवल ९ फुट ऊँचा आता है, इसलिये सभी समय जहाज घाटों को आ जा सकते हैं। ड्राई डाकों (सूखे घाटों) पर ही जाने के लिये जहाजों को नियत द्वार में होकर जाने की कठिनाई उठानी पड़ती है।

सिंगापुर का बन्दरगाह अपने नाम के द्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। यहाँ टेबराऊ नामक जलसंयोजक द्वारा मलय प्रायद्वीप से अलग है। जोहोर स्थान पर इस जलसंयोजक में पुल बना हुआ है। इस पुल द्वारा एक रेलवे लाइन तथा पक्की सड़क मलय प्रायद्वीप को जाती है।

सिंगापुर और उसके चारों ओर के द्वीपों का क्षेत्रफल मिला कर २१७ वर्गमील है। सिंगापुर के उत्तर-पूर्व की ओर मलक्का जल-संयोजक है। मलक्का जलसंयोजक प्रायद्वीप को सुमात्रा द्वीप से अलग करती है। पश्चिम की ओर हिन्द महासागर को चीन सागर से मिलाते हैं। सिंगापुर के दक्षिण की ओर बहुत से छोटे छोटे द्वीप तथा सुमात्रा द्वीप समूह हैं।

जब से स्टीमशिप जहाज चलने लगे और जापान चीन के कारखाने खुल गये, तब से सिंगापुर का स्वेज नहर के सुगम मार्ग ने भी इस में सहायता दी। पूर्वी द्वीप समूह का भी बहुत सा व्यापार यहां हो कर जाता है

चीन सागर तथा प्रशान्त महासागर में हिन्द महासागर होकर जाने वाले सभी जहाज सिंगापुर हो कर जाते हैं। सुन्दर जहाजी सुविधा होने के कारण सिंगापुर पूर्वी द्वीप समूह के सामान को बाहर भेजने का केन्द्र बन गया है।

छोटे छोटे द्वीपों चट्टानों की अधिकता और संकरे मार्गों के होने के कारण छोटे छोटे बोटों द्वारा पूर्वी द्वीप समूह का सामान एकत्रित किया जाता है और फिर स्टीमरों द्वारा सिंगापुर पहुँचाया जाता है।

प्राचीन समय में सिंगापुर का बन्दरगाह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था किन्तु जावा निवासियों ने इसे बर्बाद कर डाला, जो लोग शेष बच रहे उन्होंने जा कर मलक्का का द्वीप बसाया। पश्चिमी लोगों में पुर्तगाली लोग पहले पहल पूर्वी द्वीप समूह में आये और उन्होंने सिंगापुर बन्दरगाह पर अपना अधिकार जमाया।

उसके पश्चात् डच और अँग्रेज मलक्का में आये। मलक्का कभी तो अंग्रेजों के और कभी डच लोगों के अधिकार में रहा। जब अँग्रेजों और डच में संधि हो गई तो मलक्का डच लोगों को मिला। इस पर सर स्टैम्पोर्ड रैफिल्स ने ठीके पर सिंगापुर नदी पर जगह बन्दरगाह बनाने के लिये लिया जिससे उसका विचार चारों ओर के व्यापार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने हाथ में करने का था। इस प्रकार रैफिल्स ने १८१९ ई० में सिंगापुर के आधुनिक बन्दरगाह की नींव डाली।

रैफिल्स ने सिंगापुर को एक स्वतंत्र बन्दरगाह बनाया जिसके कारण हर एक प्रकार के व्यापारी शीघ्र ही यहाँ इकट्ठा हो गये। व्यापार की स्वतंत्रता होने के कारण यह बन्दरगाह शीघ्र ही उन्नति करने लगा। इसके उन्नति करने से डच लोगों को बहुत धक्का पहुँचा और रोहियो आर्चीपेलागो का बन्दरगाह नष्ट हो गया। १८५७ तक यह बन्दरगाह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ रहा। १८५७ के भारतीय ग़दर के बाद यह बन्दरगाह भारतीय सरकार के हाथ चला गया। इसके बाद यह अँग्रेजों की कालोनी बना लिया गया। यहाँ रैफिल्स के आने के पहले लुटेरे जहाज तथा मल्लाह रहते थे और वे व्यापारिक जहाजों को लूट लिया करते थे। बाद को वे डाकू जंगलों की ओर चले गये और लूट पाट बन्द हो गई।

सिंगापुर द्वीप की जन संख्या ५,६७,००० है। इसके तिहाई लोग चीनी हैं। मलय लोग कुल जनसंख्या के केवल आठवें भाग हैं,८२०० लोग योरुपीय हैं। लगभग मलय लोगों के बराबर हिन्दुस्तानी हैं। इसके अलावा अरब, जापानी, यूरेशियन और दूसरे लोग हैं।

यहां के मलय लोग मुसलमानी धर्म को मानते हैं, इसलिये अधिकतर यात्री सिंगापुर से जिद्दा बन्दरगाह को जाते हैं और वहाँ से हज्ज करने के लिये मक्का मदीना जाते हैं। इनके सिवा हिन्दुस्तानी, चीनी, जापानी और पूर्वी द्वीप समूह के निवासियों की भीड़ सिंगापुर के जहाजों में रहती है।

सिंगापुर में सब से पहला जहाज १८४० ई० में केप आफ गुड होप हो कर आया था। १८४५ ई० में पोस्ट आफिस वाला जहाज आया। सिंगापुर के जहाजी घाट टैंजोंग पागर डाक कम्पनी के बनाये हुये हैं। यह कम्पनी १८६३ ई० में स्थापित हुई थी। १९०५ ई० में ब्रिटिश सरकार ने डाकों का प्रबन्ध अपने हाथ में लेकर सिंगापुर हार्बर बोर्ड को दे दिया।

सिंगापुर हार्बर का क्षेत्रफल ३६ वर्ग मील, बाहरी हार्बर ११.८ वर्गमील और पश्चिमी ऐंकरेज २०.४ वर्ग मील है। भीतरी हार्बर को बचाने के लिये १ मील लम्बा एक टीला है। यह टीला पूर्व से बहने वाली प्रचण्ड वायु को बन्दरगाह में आने से रोकता है। इस टीले में १५० फुट से ३०० फुट लम्बे ४० जहाजों के रहने के लिये स्थान बने हैं।

पश्चिम की ओर द्वीपों में तेल रखने की टंकियां और दूसरे सामान रखने के लिये गोदाम बने हैं। इसी भाग से पिट्रौल दूसरे देशों को भेजा जाता है। वेस्ट सेन्ट जान द्वीप में कैरेन टाइन (रोके जाने वाले जहाज) स्टेशन है। हार्बर के पूर्व की ओर समुद्री तथा हवाई वायुयानों के ठहरने का सिविल एरोड्रोम (हवाई स्टेशन) है।

सिंगापुर के दक्षिण की ओर सिंगापुर नदी पर ऐन्डर्सन तथा और दूसरे पुल बने हुये हैं। इन पुलों में होकर लोग सिंगापुर जाते हैं। जहाजों पर आने वाले मुसाफिर बोटों द्वारा जान्स्टन पाएर और कोलरे घाटों को आते हैं। इसके दक्षिण की ओर घाट तथा बेसिन हैं। पश्चिम की ओर चलने पर केपेल हार्बर है। यह हार्बर द्वीपों से घिरा हुआ है। इसमें टंजोंग पागर का प्रधान घाट, पश्चिमी घाट, जार्डिन घाट और दूसरे घाट हैं। इसके सिवा सूखे घाट (ड्राई डाक) हैं जो भीतरी हार्बर तक फैले हुये हैं।

१९३६ ई० में इन घाटों की लम्बाई ११११९ फुट थी। घाटों को और बढ़ाने का काम चल रहा है। मेन (प्रधान) तथा पश्चिमी घाटों के पानी की गहराई शान्त दशा में ३३ फुट रहती है। इनमें ४४१२ फुट लम्बे बांध बने हैं। प्रधान और पश्चिमी घाट के बीच में होकर एम्पायर घाट को जाने का मार्ग है। इस घाट का क्षेत्रफल २५ एकड़ और गहराई ३० फुट है।

कारखाने वाले देशों के दूर स्थित होने के कारण सिंगापुर में ड्राई डाक (सूखे घाट) काफी और अच्छे और सुन्दर हैं। यहां जहाजों की मरम्मत करने का भी अच्छा प्रबन्ध है।

सूखे डाकों में किंग्स डाक सबसे बड़ा है, इसकी लम्बाई ८७९ फुट है। यह द्वार पर १०० फुट चौड़ा और ३४ फुट गहरा है। यह घाट दो भागों में बंटा है। पहला भाग ४६६ फुट और दूसरा ३२५ फुट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे ३० टन (८४०मन) की बिजली से चलने वाली एक क्रेन है। दूसरे चार ड्राई डाकों की लम्बाई २९६ फु० ६ इञ्च, ४६३ फुट, ४८४ फुट ९ इञ्च और ४६६ फुट ७ इञ्च है।

योरुप की भांति यहाँ क्रेनों का प्रयोग नहीं होता क्योंकि यहाँ के कुली शीघ्र ही सस्ते दामों में जहाजों का सामान लाद उतार सकते हैं। यहां पर लम्बवत् ठेले पाये जाते हैं जो ६० टन (१६८० मन) बोझ उठा सकते हैं। इसके अलावा स्टीम, पिट्रौल और बिजली से चलने वाली क्रेनें हैं जो १५ टन (४२० मन) बोझ उठा सकती हैं।

यहाँ के बन्दरगाह में कोयला ही ऐसा है जो अधिक उतारा और चढ़ाया जाता है। इसे कुली लोग उतारते और चढ़ाते हैं। दो कुली १६० पौंड कोयले की टोकरी बहंगी के सहारे ले जाते हैं। इस प्रकार शीघ्र ही थोड़े खर्च से कोयले का काम हो जाता है और जहाज को लंगर डालने की आवश्यकता भी नहीं होती।

सामान को उतारने और चढ़ाने वाले बोट ५० से १०० टन (१४०० से २८०० मन) तक बोझ ले जा सकते हैं। इसके सिवा भाप तथा मोटर बोट भी हैं। डूबते हुये जहाजों के बचाने के लिये भी बोट हैं जो समय पर काम देते हैं। इनमें वरूना और टूंडा प्रसिद्ध स्टीमर हैं जो आग बुझाने का काम करते हैं। वरूना ६०० टन (१६८००मन) और टूंडा ३०० टन (८४०० मन) प्रति घंटा पानी फेंक सकते हैं।

सभी घाटों पर पम्प बिछे हुये हैं, जिनके द्वारा गरी का तेल और दूसरे तेल जहाज में भरे तथा उतारे जाते हैं।

भिन्न भिन्न प्रकार का सामान इतना अधिक सिंगापुर में आता है, कि उसको अलग करने के लिये अलग नियमित स्थान बनाया गया है। भारतवर्ष, बर्मा और चीन से मटर सिंगापुर आती है और फिर वहां से सुमात्रा भेजी जाती है। सेंवई और खली चीन से आती है और डच पूर्वी द्वीप समूह में भेजी जाती है। चीनी लोगों के लिये एचिनोडेमे (एक समुद्री जीव) फिलीपाइन से और शार्क मछली भारतवर्ष से चीनी लोगों के खाने के लिये आती हैं। चीन और भारतवर्ष से सूखे फल आते हैं और डच पूर्वी द्वीप समूह और स्याम को भेजे जाते हैं। मिस्र से अचार आता है और सुमात्रा भेजा जाता है। जेंज़ीबार से लौंग आती है और चीन तथा स्याम भेजी जाती है। मोरक्को से धनिया आती है और वह जावा भेजी जाती है। चावल फ्रान्सीसी इन्डो-चीन से, टीन स्याम से, पिट्रौल, रबर और टीन डच पूर्वी द्वीप समूह से बहुत बड़ी मात्रा में आते हैं और बाहर को भेजे जाते हैं।

मलाया का पिट्रौल, टीन, मोटर कार, सूती कपड़े लोहा, फौलाद, टायर और रसायन आदि भी काफी संख्या में बाहर भेजी जाती हैं।

सिंगापुर में स्ट्रेटस स्टीमशिप कम्पनी के समुद्री तटीय जहाजों का बड़ा बेड़ा है। ये जहाज ५० टन २००० टन तक के हैं। इस बेड़े का 'केदाह' नामक जहाज़ २४९९ टन का है। यह पिनांग को जाता है और लगभग २० घंटे में यात्रा समाप्त करता है।

वर्तमान परिस्थिति में लोगों का स्वाभाव हो गया है कि वह ब्रिटिश साम्राज्य के बेधनीय बिन्दों की चर्चा बहुत करते हैं। पूर्वी संसार में सिंगापुर की चर्चा बहुधा की जाती है। यह स्थान प्रशान्त तथा हिन्द महासागर के व्यापारिक मार्गों को अपने अधिकार में किये हुये है। यहाँ की रक्षा के लिये अँग्रेज़ों ने सभी प्रकार के प्रबन्ध किये हैं और भारतीय सैनिकों की मोर्चा बन्दी की है। सिंगापुर पर किसी प्रकार का आक्रमण क्यों नहीं हो रहा है इस का उत्तर संक्षिप्त रूप से इस लेख में दिया जा रहा है।

१९१४-१८ ई० का महासमर "सभ्यता" के लिये लड़ गया था। वर्तमान महासमर संसार की बची हुई स्वतंत्रता, स्वधीनता, अधिकार और सत्यता के लिये लड़ा जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय ठक लोग उन राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं जो संसार के प्राणी मात्र के बीच में शान्ति स्थापित रखना चाहते हैं। इंगलैण्ड ने दबाये हुये राष्ट्रों की ओर से युद्ध में हथियार उठाया है।

साम्राज्य के बेधनीय बिन्दों के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। इस लेख में हम उसका अध्ययन साधारण रूप में करते हैं। आर्थिक हानि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवा अँग्रेजी साम्राज्य के मध्यवर्ती भाग पर सामने से एक प्रधान आक्रमण किया जा सकता है अथवा साम्राज्य के किसी बगली हिस्से पर आक्रमण हो सकता है जिससे साम्राज्य को खण्ड-खण्ड कर देने की सम्भावना हो सकती है।

मध्यवर्ती भाग पर सामने की ओर से प्रधान आक्रमण करने की सम्भावना कम है क्योंकि इस प्रकार के आक्रमण में शत्रु को बड़ी भारी हानि उठानी पड़ेगी और शत्रु के विजय की आशा भी बहुत कम है इसलिये ऐसा आक्रमण करने के लिये कोई भी चतुर सेनापति तयार नहीं हो सकता। अँग्रेज लोग सारे प्रशान्त महासागर पर अधिकार जमाये हुये हैं। अँग्रेजी हवाई बेड़ा की वृद्धि भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है। वायुयान संहारिणी तोपों और दूसरे रक्षक अस्त्रों के सामने ऐसे आक्रमण का सफल होना कठिन है।

दूसरे प्रकार के आक्रमण के बारे में यह विचारणीय बात है कि यह आक्रमण किस स्थान पर किया जा सकता है। इसके लिये साधारण रूप से तीन स्थान माल्टा, जिब्राल्टर और मिस्र की गणना होती है। इन तीनों स्थानों में से किसी एक के निकल जाने से कुछ गड़बड़ी अवश्य ही पड़ सकती है परन्तु साम्राज्य छिन्न-भिन्न नहीं हो सकता। इस प्रकार के आक्रमण की सफलता में अँग्रेजों का समस्त समुद्र पर जो अधिकार है उससे रुकावट पड़ सकती है परन्तु अधिक हानि नहीं हो सकती तो फिर बगली आक्रमण कहां हो सकता है, शायद ऐसा आक्रमण सिंगापुर पर किया जाय।

पूर्वी जिब्राल्टर

सर स्टेम्फोर्ड रैफिल्स ने १८१६ ई० में लार्ड मिन्टो को लिखा था कि सिंगापुर पूर्व का द्वार है और यह एक बड़ा आवश्यक क़िला होगा। परन्तु आज १०० वर्षों के पश्चात् सिंगापुर एक प्रधान क़िला बना है।

आज नाज़ी जर्मनी ने ब्रिटेन की सामुद्रिक शक्ति का सामना करने के लिये बीड़ा उठाया है। सिंगापुर ब्रिटिश साम्राज्य का एक प्रधान स्थान है। यदि प्रशान्त महासागर और सुदूर पूर्व का अध्यन किया जाय तो मालूम होगा कि प्रशान्त महासागर से हिन्द-महासागर के समस्त व्यापारी मार्ग मलक्का के जलसंयोजक हो कर जाते हैं। दूसरे मार्ग अधिक लम्बे तथा ख़तरनाक हैं इसलिये व्यापारी लोग उनका प्रयोग नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार रूम सागर में घुसने से पश्चिम की ओर जिब्राल्टर रखवाली करता है उसी प्रकार पूर्व की ओर सिंगापुर रखवाली करता है।

युद्ध घोषणा के पश्चात् से अन्तर-राष्ट्रीय सम्बन्ध का काया पलट हो गया है। अँग्रेजों का सम्बन्ध जापान से युद्ध के पहले अधिक तना हुआ था परन्तु अब वह ढीला पड़ गया है। रूस की भविष्य नीति का अन्दाज़ अभी नहीं लगाया जा सकता है। वह आगे चल कर किस मार्ग का अनुसरण करेगा यह निश्चय करना कठिन है। रूस तथा जर्मनी एक दूसरे से समान रूप से भय खाते हैं और उन्होंने रूमानिया की सीमा पर अधिकार जमा लिया है।

यदि रूस और इँगलैण्ड से शत्रुता बढ़ गई तो रूस मिस्र अथवा पेलेस्टाइन पर आक्रमण करेगा। इस सम्बन्ध में बाल्कन राज्यों और टर्की का रूख जिधर होगा उसी ओर की विजय होनी सम्भव है यद्यपि युद्ध में बड़ी कठिनाई का सामना करना होगा।

कहा जाता है कि रूस का आक्रमण भारत पर भी हो सकता है परन्तु भारतीय सीमा की प्राकृतिक रूप से रक्षा है इसलिये उसपर आक्रमण करने वाले को भाषण कठिनाई का सामना करना होगा और बहुत अधिक हानि उठानी पड़ेगी। इसलिये भारत पर रूसी आक्रमण की सम्भावना हो ही नहीं सकती।

जापान ही पूर्वी परिस्थिति को सुलझाने के लिये शेष रह जाता है। यदि वह तटस्थता को त्याग देता है और युद्ध में कूद पड़ता है जिसकी सम्भावना बढ़ने के सिवा कम हो रही है।

यह बात मामूली तौर पर मानी जाती है कि वर्तमान समय में जापान सुदूर पूर्व के समुद्रों में अधिक शक्तिशाली बना हुआ है। उसके समुद्री जहाज़ों की संख्या तथा तोपों की शक्ति अधिक है। इस शक्ति के कारण ही जापान ने चीन सागर पर अधिकार जमा लिया परन्तु उसका यह अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी समय अँग्रेज़ों द्वारा सरलता पूर्वक छीना जा सकता है।

यदि संयुक्त राष्ट्र अमरीका मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में कूद पड़ता है तो फिर अँग्रेज़ों की धाक प्रशान्त महासागर में जम जावेगी और अँग्रेज़ों की सामुद्रिक कठिनाई का प्रश्न हल हो जावेगा! यदि सिंगापुर में आक्रमण होता है और उस पर जापानी अधिकार हो जाता है तो इस कार्य में जापान को अवश्य ही किसी दूसरे की सहायता लेनी पड़ेगी और चीनसागर में जापान का अधिकार फिर अधिक समय तक रहेगा।

इस समय उपमा के रूप में यह बात देखनी आवश्यक है कि किन कारणों से १९१४ ई० में जापान ने टसिंगटाव पर अधिकार जमाया था।

यह स्थान जर्मनी के अधिकार में था। जर्मनी ने इस पर १८९८ ई० में अधिकार जमाया था। जर्मनी ने अपने प्रशान्त महासागर के जहाज़ी बेड़े का अड्डा इसे बना रक्खा था। वह इसे उत्तरी चीन में जर्मन प्रचार करने के लिये भी प्रयोग करता था। कहा जाता है कि जर्मनी ने टसिंगटाव के किले तथा अड्डे के बनाने में ८०,०००,००० पौंड (लगभग १,२००,०००,००० रु०) व्यय किया था। यह स्थान सुदृढ़ तथा सुरक्षित था और सभी वर्तमान रक्षक यंत्र वहां पर बर्तमान थे तो भी जापानी तथा अँग्रेज़ी सेना ने मेजर जनरल एफ० पी० नोस वर्थी, डी० एस० ओ०, एम० सी० की संरक्षता में उस पर अधिकार जमा लिया था।

इस क़िले पर रक्षा के लिये चार प्राकृतिक लाइनें थीं। क़िले में ५२ बड़ी तोपें ७७ छोटी तोपें और ४७ मशीनगनें लगी हुई थीं। कुल जर्मन सैनिकों की संख्या ६ हज़ार थी।

जापानी लोगों ने टसिंगटाव की दशा का भली भांति परिचय ले लिया था उन्हें यह बखूबी मालूम था कि उन्हें किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। ५० हजार सैनिक १२ हज़ार घोड़े, १०२ बड़ी तोपें, ४२ मैदान तथा पर्वत वाली तोपों के साथ जापानी आक्रमण हुआ। इस बड़ी सेना की सहायता के लिये ७० जहाजों का जापानी बेड़ा था। यह जहाजी बेड़ा तीन भागों में आक्रमण करने के लिये बांट दिया गया था। क़िले पर अधिकार करने में ७५ दिन लगे थे।

इस उदाहरण से हमारा मतलब यह है कि तटीय स्थानों की रक्षा किस प्रकार हो सकती है और उस पर विजय प्राप्त करना कितना कठिन होता है। सिंगापुर का बन्दरगाह सिंगटाव से कहीं अधिक सुदृढ़, मजबूत और सुरक्षित है।

१९१४ ई० में चीन सागर में जापान का पूरा अधिकार था। जापान की शक्ति जर्मन शक्ति की १२ गुनी थी। जापानी तोपें जर्मन तोपों से कहीं अधिक अच्छी थीं तो भी क़िले पर अधिकार करने में ७५ दिन लग गये थे और बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। आज जापान चीनी-युद्ध के कारण शक्तिहीन हो रहा है। वह चीन सागर का पूर्ण रूप से मालिक भी नहीं है। इसलिये कोई भी चतुर-सुजान सेनापति सिंगापुर विजय करने के लिये तय्यार न होगा। इस प्रकार सिंगापुर भारत की रक्षा के लिये एक प्रधान रक्षक है।

यदि अँग्रेज़ों का मलक्का जलसंयोजक से अधिकार हट गया तो फिर अवश्य ही भारत पर भयानक खतरा हो जावेगा और पैन-नियम नीति एक अत्याचारी के रूप में प्रकट होगी।

हमारा कहना है कि जब तक इंगलैंड की समुद्री शक्ति का नाश नहीं होता तब तक सिंगापुर पर किसी भी विदेशी राज्य का अधिकार नहीं हो सकता।

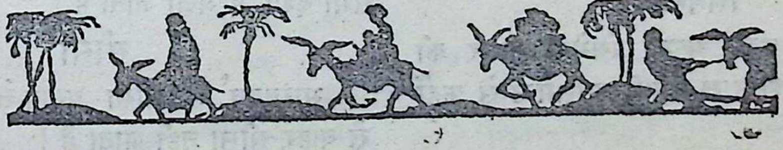

CG-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की उत्पादक शक्ति

भारतवर्ष में मूङ्गफली, तिल, जूट-पाट और तेलहन की वस्तुएं बहुत पैदा होती हैं। भारत में जूट संसार भर के समस्त देशों से अधिक होता है। चावल, चाय और ईख की उपज में भारत का नम्बर संसार में सर्व प्रथम तथा रूई, तम्बाकू और मैगनीज़ में दूसरा नम्बर है। अल्सी की उपज में भारत का तीसरा स्थान है।

संसार में जितनी उपज होती है उसका ९ प्रतिशत गेहूँ, ४३ प्रतिशत चावल, ३० प्रतिशत पशु, ५ प्रतिशत भेड़, ७ प्रतिशत मछली और ३१ प्रतिशत रुई भारत में होती है। मैगनीज़ की उपज में रूस के पश्चात् भारत का ही स्थान है। जस्ते की उपज में भारत को ग्यारहवां स्थान है। पिट्रोल के निर्यात में भारत का तेरहवां और लकड़ी की उपज में पन्द्रहवां स्थान है। कोयले की उपज में भारत का स्थान नवां, बुझे हुये पत्थर के कोयले में ग्यारहवां, कच्चे लोहे में आठवाँ, फौलाद तयार करने में ग्यारहवां, रबर में सातवां, सोने में ग्यारहवां और चांदी की उपज में नवां भाग है।

ब्रिटिश साम्राज्य में भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयम् कर सकता है।

सुरमा

भारत में सुरमा तयार करने के लिये कच्चा सामान इतना नहीं है जिसका अर्थशास्त्र की दृष्टि से महत्व हो सके। बरमा और स्याम की सीमा में एक छोटी सुरमा की खान है।

आस्बेस्टास

भारत में भारतीय सिमेन्ट और विदेशी अस्बेटास से आस्बेस्टास सिमेन्ट के टुकड़े तथा खपड़े आदि तंयार किये जाते हैं।

सिमेन्ट

भारतवर्ष में बड़ी अच्छी सिमेन्ट तयार की जाती है। यह ब्रिटिश द्वारा प्रमाणित सिमेन्ट से कहीं अच्छी होती है।

रसायन

कास्टिक सोडा और सज्जी तयार करने के लिये कारखाने खोले जा रहे हैं।

नारियल की जटा तथा सन

नारियल की जटा और पटसन की रस्सियाँ, चटाइयाँ, जाल आदि भारत में बहुत तयार किये जाते हैं और अधिक मात्रा में तयार किये जा सकते हैं।

तांबा

भारत में तांबे की एक खान तथा कारखाना है। कारखाने में भारतीय तांबा तयार किया जाता है। इस कारखाने का अधिकांश ताँबा घरेलू बर्तनों में प्रयोग किया जाता है।

बिजली बल्ब

भारतवर्ष में भी गैस तथा बिजली के सभा प्रकार के बल्ब तयार किये जा सकते हैं।

बिजली के तार

इस प्रकार के तार के तयार करने के लिये भारत में एक कारखाना है परन्तु तांबे का तार बाहर से आता है। कपड़े, कागज और रबर में भी इस कारखाने में तार तयार किया जाता है।

इन्सुलेटर (अलग करने वाली वस्तु)

इन्सुलेटर और दूसरे प्रकार के मिट्टी के सामान भारत में तयार किये जा सकते हैं। बहुत से कारखाने में किरणवक्रता की वस्तुएं बनाई जाती हैं।

कपोक

कपोक के स्थान पर एक दूसरी वस्तु भारत में प्रयोग करने के लिये तयार की जाती है।

लाह या लाख

भारतवर्ष में लाह बहुत होती है और संसार के सभी देशों में भेजी जाती है।

सीसा

भारतवर्ष में सीसा बरमा से आता है। भारत से बाहर सीसा नहीं जाता है।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैगनीज़

भारतवर्ष में मैगनीज़ बहुत ज्यादा पाई जाती है।

तेल के इंजिन

भारत में मिट्टी के तेल से चलने वाले इंजिनों के बनाने का एक कारखाना है। एक दूसरी कम्पनी और इंजिनों के तयार करने के लिये खुल रही है।

लेप और वारनिश

भारत में इन वस्तुओं के तयार करने की बड़ी शक्ति है परन्तु यह शक्ति आयात वाली वस्तुओं पर निर्भर है।

नल तथा ट्यूब

लोहे के नल भारत में बहुत ज्यादा तयार किये जा सकते हैं। बिजली वाले तथा फौलाद के नल भी भारत में कुछ तयार किये जाते हैं।

गन्धक तथा गन्धकी तेज़ाब

गन्धक से गन्धकी तेजाब भारत में खूब तयार किया जा सकता है।

राल

भारत में भारतीय सामान से कई प्रकार की राल तयार की जा सकती है।

लकड़ी

गत (१९१४) महायुद्ध में भारत ने मैसोपोटामिया, मिस्र, पैलेस्टाइन, सेलोनीका आदि स्थानों की आवश्यकताओं को अपनी लकड़ी से पूरा किया था। बरमा में सख्त लकड़ी बहुत पाई जाती है। इस प्रकार की लकड़ी दक्षिणी भारत और अंडमान द्वीप में भी पाई जाती है।

टीन

स्ट्रेट सेटिलमेन्ट्स के ऊपर भारत टीन के लिये निर्भर करता है। वहां से मिलने पर भारत टीन का सामान तयार करता है।

भारतवर्ष को योरुप के व्यापार में बहुत बड़ा धक्का पहुँचा है भीषण हानि उठानी पड़ी है। भारतीय व्यापार की व्याख्या करने पर पता चलता है कि भारत को निर्यात में जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, इटली और चेकोस्लोवेकिया से हानि पहुँची है क्योंकि वह वर्तमान योरुपीय महासमर के कारण इन देशों को सामान नहीं भेज सका है। भारत को जर्मनी हालैण्ड, बेल्जियम, इटली, चेकोस्लोवेकिया और आस्ट्रिया से सामान मँगाने की भी हानि हुई है क्योंकि वहाँ से युद्ध के कारण सामान नहीं आ सका है। युद्ध के कारण कच्चा जूट, जूट का सामान, तेलहन, चमड़ा, चावल, चाय, खली आदि वस्तुएँ बाहर जानी बिलकुल बन्द हो गई हैं।

भारतीय सामान का अप्रैल से अगस्त तक का निर्यात

		सन् १९३९	१९४०	कमी
१	चाय	८४१ लाख	७२१ लाख	१२० लाख
२	चावल	१२५ ,,	११५ ,,	१० ,,
३	मैगनीज़	७२ ,,	५६ ,,	१६ ,,
४	खली	८१ ,,	४१ ,,	४० ,,
५	मूङ्गफली	३९२ ,,	२१२ ,,	१८० ,,
६	कच्चा जूट	४७० ,,	४४६ ,,	२४ ,,
७	कच्चा ऊन	१२९ ,,	६६ ,,	६३ ,,
८	चमड़ा (कच्चा)	३७ ,,	३५ ,,	२ ,,
९	पक्का चमड़ा	१११ ,,	७९ ,,	३२ ,,
१०	ऊनी दरी (कालीन)	४३ ,,	३७ ,,	६ ,,
११	नारियल की जटा	५२ ,,	३६ ,,	१६ ,,
		२३५३ लाख	१८४४ लाख	५०९ लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल से अगस्त तक का भारतीय आयात

	सन् १९३९	१९४०	कमी
१—तेल आदि और दूसरे सामान	७१ लाख	६८ लाख	३ लाख
२—मादक वस्तुयें तथा दवायें	१०७ ,,	९९ ,,	८ ,,
३—चाकू तथा दूसरे औज़ार	२४६ ,,	२०३ ,,	४३ ,,
४—शीशी तथा मिट्टी के बर्तन आदि	६५ ,,	५५ ,,	१० ,,
५—प्राइम मूवर्स (बिजली के छोड़ कर)	९० ,,	४४ ,,	४६ ,,
६—बिजली की कलें	१२४ ,,	८४ ,,	४० ,,
७—सूती कपड़े	१३५ ,,	१०४ ,,	३१ ,,
८—कागज़ तथा बिसातखाने का सामान आदि	१५४ ,,	१४९ ,,	५ ,,
९—गाड़ियाँ	११० ,,	७७ ,,	३३ ,,
	११०२ लाख	८८३ लाख	२१९ लाख

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जनसंख्या का विभाजन

सर्व प्रथम जनसंख्या की गणना संयुक्त-राष्ट्र को सन् १८९० में हुई उस समय वहां की जनसंख्या ४,०००००० से कुछ ही कम थी। १९२० ई० में जनसंख्या १०६,०००,००० हो गई थी। वहाँ की जनसंख्या जिस प्रकार बढ़ी है वह नीचे दिये टेबुल से साफ साफ स्पष्ट है।

साल	जनसंख्या	बढ़ती
१७९०	३,९२९,२१४	...
१८००	५,३०८,४८३	३५'१
१८१०	७,२३९,८८१	३६'४
१८२०	९,६३८,४५३	३३'१
१८३०	१२,८६६,०२०	३३'५
१८४०	१७,०६९,४५३	३२ ७
१८५०	२३,१९१,८७६	३५'९
१८६०	३१,४४३.३२१	३५'६
१८७०	३८,५८८,३७१	२२'६
१८८०	५०,१५५,७८३	३०'१
१८९०	६२,९४७,७१४	२५'५
१९००	७५,९९४,५७५	२०'७
१९१०	९१,९७२,२६६	२१'०
१९२०	१०५,७१०,३२०	१४'९

ऊपर के नकशे से पता चलता है कि ६० वर्ष के पश्चात् १८५० ई० में संयुक्त राष्ट्र की जन संख्या लगभग २३,०००,००० थी और जनसंख्या इस काल में ६ गुना बढ़ी। १९०० ई० में जनसंख्या ७६,०००,००० हो गई थी जिससे पता चलता है कि ५० साल के भीतर ही ३ गुने से अधिक जनसंख्या की बढ़ती हुई। उसके बाद २० साल के भीतर ही ३ करोड़ की वृद्धि हुई। उस समय १७९० ई० में वहाँ ४ लाख वर्ग मील में ४० लाख जनसंख्या थी। अब वहाँ ४ लाख वर्ग मील में ४ करोड़ ५० लाख लोग रहते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका की शेष भूमि जो १७९० के पश्चात् हुई है वह २,६८८,००० वर्ग मील है और इसमें ६ करोड़ लोग रहते हैं।

जनगणना के देखने से यह प्रतीत होता है कि कुल जोड़ पर जितनी अधिक वृद्धि हुई है उतनी वृद्धि प्रति सैकड़े पर नहीं हुई है। जैसे जैसे जनसंख्या प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक संख्या में बढ़ती है उतनी ही जनसंख्या प्रतिशत में कम वृद्धि होती जाती है।

१८६० ई० तक जिस प्रकार जनसंख्या की वृद्धि हुई है उसी हिसाब से लोगों ने ख्याल किया था कि जनसंख्या बढ़ती जावेगी। इब्राहीम लिंकन ने अपने जीवन के अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सालों में संयुक्तराष्ट्र की कांग्रेस में कहा था कि १९३० ई० में संयुक्तराष्ट्र की जनसंख्या १८७,०००,००० होगी। और दूसरे लोगों ने भी इसी प्रकार हिसाब लगाया था। उन लोगों ने इस बात का ध्यान नहीं दिया। वृद्धि तो अवश्य होगी किन्तु उसमें कमी प्रत्येक जनगणना में होती जावेगी। इस समय भूमि भी बहुत हो गई है और कहीं भी भूमि खाली नहीं है। संयुक्तराष्ट्र में मशीनों के कारण उपज में वृद्धि हुई है और लोगों के रहन सहन में भी उन्नति होगई है।

सब से पहले जनसंख्या की बढ़ती में कमी १८७०ई० में गृहक्रान्ति के समय हुई थी, उसके पश्चात् १८८० से १९०० तक जो कमी हुई थी वह पूरी हो गई। १९०० से १९१० ई० तक जनसंख्या में खास वृद्धि इसलिये हुई कि अधिक संख्या में लोग बाहर से आकर बस गये। जिन दस सालों में महायुद्ध हुआ था उसमें घटती को जनसंख्या अधिक हो गई थी। इसका मुख्य कारण यह भी था कि संयुक्त राष्ट्र में लोग युद्ध के कारण न जा सके थे। योरुप के निवासी अपने देशों की स्वतंत्रता के लिये वहीं युद्ध के लिये रुके थे और जो लोग दूसरे देशों या अमरीका में भी थे वे भी घर वापस बुला लिये गये थे। युद्ध के पश्चात् विदेशी निवासियों को अमरीका में जाकर रहने पर रोक लगा दी गई थी। संयुक्तराष्ट्र उस समय अपनी स्थिति और आगे जो उसकी जनसंख्या होगी उसका हिसाब लगा रहा था, जिससे वह अपनी दशा को सदैव अच्छी तरह कायम रख सके।

महायुद्ध में अमरीका के बहुत कम लोग मारे गये थे और देश में दूसरे कारणों से भी बहुत कम लोग मरे थे। तो भी युद्ध के व्यय के कारण और ४० लाख सेना तयार करने और उसमें से २० लाख लड़ाई पर भेज देने के कारण पैदा होने वालों की संख्या में कमी हो गई थी।

जनसंख्या का विभाजन

जिन कारणों से लोग किसी स्थान पर रहना पसन्द करते हैं उनमें से कुछ तो बिलकुल साफ तथा खुले हुए हैं किन्तु सभी कारणों का जानना असम्भव है और न उनका कोई अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। भूमि, जलवायु प्राकृतिक दशा, खनिज सम्पत्ति, सामान तयार करने तथा आवागमन के साधन, जाति वर्ण और ऐतिहासिक घटनाएं आदि कारण स्पष्ट हैं जिनके कारण लोग किसी एक स्थान पर जाकर बसे हैं अथवा बस जाते हैं।

संयुक्तराष्ट्र के घने बसे प्रदेशों तथा कम बसे प्रदेशों की जनसंख्या में बहुत बड़ा अन्तर है। संयुक्तराष्ट्र की जनसंख्या का ९ भाग वर्षा वाले प्रदेशों में और दसवां भाग सूखे प्रदेश में बसा है। वर्षा वाले प्रदेश निचले तथा गर्म अधिक हैं वहां पर लोहे और कोयले की खानें भी बहुत हैं। इन भागों में बहुत पहले से ही लोग जाकर बस गये हैं और यह भाग योरुप के बहुत समीप है। मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर घने प्रदेश का $\frac{३}{१०}$ भाग है जिससे $\frac{७}{१०}$ जन संख्या का भाग बसा है। इस भाग से १७०० मील की दूरी पर प्रशांत महासागर के तट पर केवल १५ आदमी एक वर्गमील में निवास करते हैं।

मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर की उत्तरी रियास्तों की जनसंख्या सारे संयुक्तराष्ट्र की जन संख्या के आधी है किन्तु वहां का क्षेत्रफल कुल का केवल $\frac{१}{७}$ है। मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर दक्षिणी रियासतों की जनसंख्या कुल का $\frac{१}{७}$ और क्षेत्रफल $\frac{१}{२}$ है। मिसीसिपी के पश्चिम की ओर भूमि का $\frac{२}{३}$ भाग और जनसंख्या का $\frac{१}{३}$ भाग से भी कम है। पश्चिमी राज्य जो पहाड़ी तथा प्रशान्त महासागर के राज्य हैं वहां क्षेत्रफल $\frac{२}{५}$ है और जनसंख्या $\frac{१}{१८}$ है। पहाड़ी राज्यों की संख्या ८ है और क्षेत्रफल संयुक्तराष्ट्र का लगभग $\frac{१}{३}$ है किन्तु जनसंख्या केवल कुल का $\frac{१}{३१}$ है।

१९२१ ई० की जनगणना के हिसाब से सारे ग्रेटब्रिटेन में ३८९ आदमी प्रति बर्गमील और अमरीका में ३५५ आदमी प्रति बर्गमील में रहते थे। इंगलैण्ड में १९२१ ई० में एक बर्गमील में ७०१ आदमी और अमरीका के सबसे घने बसे राज्य रोडेद्वीप में प्रतिवर्ग मील में ५९६ आदमी रहते थे। १९२१ ई० में स्काटलैंड में १६० आदमी प्रति बर्गमील रहते थे। मध्यवर्ती अटलांटिक राज्यों की जनसंख्या उस समय २२२ मनुष्य प्रतिवर्ग मील थी।

१९२१ में वेल्स में २९५ आदमी प्रति वर्गमील में रहा करते थे। उस समय संयुक्तराष्ट्र में केवल ४ राज्य ऐसे थे जिनकी जनसंख्या वेल्स की जनसंख्या के हिसाब से थी। न्यूयार्क, बफ्फालो फिलाडेलफिया, पिट्सबर्ग और लगभग १२ राज्यों की जनसंख्या एक लाख से ५ लाख तक है।

संयुक्तराष्ट्र के पश्चिमी दो तिहाई भाग की जनसंख्या इनवर्नेस, रास और क्रोमार्टी की जनसंख्या में बहुत कम है। स्काटलैंड के यह भाग संयुक्तराष्ट्र के पहाड़ी राज्यों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल १/५ हैं। नवादा राज्य में सबसे अधिक बिखरे लोग बसे हैं। वहां का क्षेत्रफल १०६००० वर्ग मील है और जनसंख्या ८० हजार है जो यूटीका, फोर्टवेने, या ओकलेहोमा या बोर्नमाउथ आदि नगरों की जनसंख्या से भी कम है। यह राज्य संयुक्तराष्ट्र के गृहयुद्ध के समय कांग्रेस की संख्या बढ़ाने के लिये सम्मिलित किया गया था। वहां पर सिंचाई के लिये पानी की बहुत कमी है। वहां की जनसंख्या वैसे की वैसी ही बनी रही या कारखानों की उन्नति तथा अवनति के साथ साथ घटती बढ़ती रही है। केवल ८ राज्यों की जनसंख्या ६० प्रति वर्गमील से अधिक है। इसमें दक्षिणी इँगलैण्ड, मध्य अटलांटिक राज्य, ओहियो, इलीनोएस आदि राज्य सम्मिलित हैं। इन भागों में अमरीका के अधिकांश कारखाने वाले प्रदेश हैं। शेष अधिकांश राज्य जो मिसीसिपी के पूर्व है वहां की जनसंख्या ४५ से ६० प्रतिवर्ग मील के हिसाब से है। टेक्साज़ राज्य की जनसंख्या का हिसाब १८ मनुष्य प्रति वर्गमील के हिसाब से है और वहां की जनसंख्या का जोड़ लगेरिया अथवा यूनान के बराबर है। कोलोरैडो को छोड़ कर सभी पहाड़ी राज्यों की जनसंख्या बहुत कम है और प्रति वर्गमील में केवल ६ आदमी रहते हैं।

शहरी तथा देहाती जनसंख्या

जनगणना के हिसाब से जहां २५०० से अधिक लोग रहते है वे नगर कारखाने वाले नगर गिने जाते हैं। नागरिकों में से बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अपनी जीविका खेती पर व्यतीत करते हैं। १७६० ई० में फिलाडेल्फिया नगर अमरीका का सब से बड़ा नगर था और वहां की जनसंख्या ४२,००० थी। उस समय अधिकांश लोग देहात में रहा करते थे किन्तु अब अधिकांश लोग नगरों में वास करते हैं। आवा-गमन के साधनों तथा कारखानों की उन्नति होने के कारण नगरों की जनसंख्या बढ़ गई हैं। यह बात १८८० ई० के पश्चात् हुई है।

१८८० ई०	२६·६ प्रतिशत शहरी
१६१० ई०	४५·८ ,, ,,
१६२० ई०	५१·४ ,, ,,

अब अमरीका निवासी अधिकतर नगरों में निवास करते हैं। सभी राज्यों में देहात की संख्या या तो घट रही है या उसमें बहुत धीरे धीरे वृद्धि हो रही है। इस कारण अमरीका में देहात में वापस जाकर रहने वाले आन्दोलन का जोर हो रहा है। देहात के अन्दर लोगों की सुविधाओं के लिये रैडियो, टेलीफोन, अच्छी सड़कों, गाड़ियों का अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया है। मशीन से चलने वाली गाड़ियों तथा मशीनों के प्रयोग करने के कारण देहात में अब लोगों को बहुत कम परिश्रम करना पड़ता है। लोगों को कृषि विभाग में ट्रेनिंग दी जाती है जिसके कारण लोगों ने खेती करने का पेशा फिर करना आरम्भ कर दिया है किन्तु खेती में मशीनों का प्रयोग होने से मजदूरों की बहुत कम आवश्यकता रह गई है। दक्षिणी प्रान्तों में लोग देहाती जीवन की लालसा से रहते हैं। जो लोग नगरों को नहीं त्यागना चाहते वे अपने समर हाउस (गरमी के घर) देहातों में बनाते हैं और वहां जाकर अपना गर्मी का समय व्यतीत करते हैं।

राज्यों की स्थापना होने तथा भूमि की कमी हो जाने के कारण अब लोग पहले से कम पश्चिमी प्रान्तों में जा कर बसे।

१६०० ई० के पश्चात् बहुत से स्थान खाली कर दिये गये और उनके स्थान पर नए स्थान बस गये हैं। यह परिवर्तन खेती की उन्नति तथा कारखानों के उन्नति के कारण हुआ है। ओकहामा की बस्ती का बसाया जाना, दक्षिण पश्चिम में मिट्टी के तेल के निकालने का काम होना, फ्लोरीडा की खोज, बरमिङ्घम नगर का लोहे का केन्द्र बनना आदि बातें उदाहरण के रूप हैं जिसके कारण लोगों ने अपने निवास स्थान बदल दिये हैं।

नागरिक लोगों ने उत्तर की ओर अधिक संख्या में अपने निवास-स्थान का परिवर्तन किया है। इसका कारण यह है कि इस भाग में रेलों का जाल बिछा है, कारखाने बहुत हैं और नगरों में भी खेती का काम मशीनों द्वारा होता है। इस प्रदेश के आधे से अधिक नगरों की संख्या १ लाख से अधिक है और लगभग २/३ हिस्से वाले नगरों की जनसंख्या २५ हज़ार से १ लाख तक है। उत्तर की ओर मज़दूरों की आवश्यकता पड़ जाने के कारण निगरो लोग उत्तर की ओर चले गये हैं। इस प्रकार निगरो लोग भी नगरों के निवासी हो गये हैं।

मेसेचुसेट्स राज्य बड़ा ही उन्नति शील तथा कारखाने वाला राज्य है। वहां की जनसंख्या ४० लाख है जिसमें मुश्किल से बीसवां भाग देहात में रहता है। २० साल के भीतर ही वहां के नगरों की जनसंख्या १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख से अधिक हो गई जब कि देहाती जनसंख्या में बई हज़ार की कमी हो गई थी। रोडे आइलैण्ड में देहात में केवल चालीसवें भाग के लोग रहते हैं। न्यूयार्क की जन-संख्या एक करोड़ से अधिक है जिसमें से ८० लाख आदमी नगर में रहते हैं। बीस सालों के अन्दर नगरों की जन-संख्या में ३० लाख की वृद्धि और देहात में एक लाख पचहत्तर हज़ार की कमी हुई है। इस २० साल के समय में १ हज़ार नगरों में ३ नगरों की जनसंख्या कम हो गई है। न्यूयार्क नया होने के कारण अधिक उन्नति कर गया है। वहाँ की जनसंख्या बढ़ती गई क्योंकि वहां पर योरुप तथा इंगलैण्ड से लोग आकर बसते गये। न्यूयार्क के उन्नति का प्रभाव उत्तरी राज्यों के नगरों पर बहुत कम पड़ा है।

इल्लीनाइस (Illinois) राज्य को एक देहाती राज्य कहा जा सकता है, किन्तु वहां भी एक बहुत बड़ा नगर है और बहुत से कारखाने वाले केन्द्र हैं। वहाँ के नगरों की जन-संख्या देहात से दुगुनी है। आयोवा राज्य में कोई बड़ा नगर नहीं है। इस राज्य में कृषि का काम बहुत होता है और कोई भी राज्य इसका सामना खेती में नहीं कर सकता। यहाँ अधिकतर लोग देहात में रहते हैं। किन्तु पिछले २० सालों में, यहां के देहात की आबादी भी घट गई है।

उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों की तुलना दिखाने के लिये हम यहां पाठकों के सामने दो राज्यों की तुलना करते हैं। जार्जिया एक प्राचीन राज्य है। यह प्रथम १३ राज्यों में से एक राज्य है। वहां के प्रधान नगर की जन संख्या लगभग २½ लाख है और राज्य की ¾ आबादी देहात में है। पिछले २० साल में इस राज्य के नगरों की जन-संख्या दुगुनी और देहात की जन संख्या में भी कुछ वृद्धि हुई है। मिसीसिपी राज्य में नगर बहुत कम हैं और वह भी छोटे हैं उसमें राज्य की जन-संख्या का ⁶⁄₇ भाग देहात में रहता है। देहात की जन-संख्या वहां भी बढ़ रही है किन्तु नगरों की जन-संख्या १९२० के बाद पहले से जार्जिया राज्य की भांति वहाँ भी दुगुनी हो गई है।

कैलेफोर्निया राज्य के शहरी निवासियों की संख्या देहाती निवासियों से दुगुनी है। नगरों तथा देहात दोनों स्थानों में जन-संख्या में वृद्धि हुई है। देहात की जन-संख्या १९०० से १९२० तक ४०% प्रतिशत बढ़ गई है। इस राज्य में लोग स्थानों से अच्छी जलवायु, फल-फूल, दनदाने दार समुद्री तट, ऊँचे पर्वत तथा रोजगार के कारण आकर बस गये हैं। इस राज्य में लोग काम करने, अधिक परिश्रम से बचने, शराब पीने, आमोद प्रमोद करने के कारण देहात से नगरों में और नगरों से देहात में आकर बसे हैं। ओरेगान और वाशिंगटन राज्यों की दशा भी कैलेफोर्निया की भांति ही है।

केवल पहाड़ी राज्यों में ही देहात की जन-संख्या नगरों के मुकाबले अधिक बढ़ी है। पहाड़ी राज्य समुद्र से दूर हैं और कारखाने वाले नगरों से बहुत दूर हैं। उनमें और दूसरे राज्यों की अपेक्षा कम व्यापार भी होता है।

बड़े नगर

संयुक्त-राष्ट्र के अन्दर १९२० ई० में २५ नगर ऐसे थे जिनकी जन-संख्या २½ लाख से अधिक है किन्तु अब नगरों की संख्या सैकड़ों तक पहुँच चुकी होगी।

ये बड़े नगर नदियों, झीलों अथवा समुद्र के तटों पर स्थित हैं। अटलांटिक सागर के तट पर बोस्टन, न्यूयार्क जेरसी, नेवार्क फिलाडलफिया, बाल्टीमोर आदि नगर हैं। न्यूआर्लियन्स नगर खाड़ी से लगभग १०० मील पर स्थित है तो भी उसे खाड़ी वाला नगर कहा जाता है। प्रशान्त महासागर के तट पर लोस ऐंजलीस, सैनफ्रांसिस्को पोर्टलैंड नगर है। सीटले नगर नदी के किनारे बसा है।

न्यूयार्क नगर अपने सुन्दर हार्बर वाली स्थिति के कारण इतनी उन्नति कर गया है। नेमार्क और जर्सी नगर न्यूयार्क के एक भाग से है किन्तु सरकारी तौर पर यह नगर न्यूयार्क से प्राकृतिक सीमा होने के कारण अलग हैं। हडसन नगर और अपलेचियन पर्वत के दर्रे वाले नगर संयुक्त राष्ट्र के मध्यवर्ती भाग को चारों ओर से किले बन्दी किये हुये हैं। पेन्सिलवानिया नगर फिलाडेलफिया राज्य का एक प्रधान नगर है और सारे राज्य का भोजन देने का परिश्रम उठाता है। पेन्सिलवानिया रेलवे द्वारा संयुक्त राष्ट्र के भीतरी प्रदेश का अधिकतर व्यापार होता है। बाल्टीमोर नगर यद्यपि उत्तरी सीमा के समीप है तो भी वह दक्षिणी नगर कहा जाता है। यह नगर रेलों द्वारा ओहियो तथा मिसीसिपी की घाटियों से मिला हुआ है। पश्चिमी नगरों को पूर्वी नगरों से जो रेलवे लाइनें अथवा जलमार्ग मिलाते हैं उनके द्वारा संयुक्तराष्ट्र के मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भाग का माल योरुप को भेजा जाता है। न्यू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्लियन्स नगर के स्थानीय व्यापारिक मार्ग अच्छी उन्नति पर हैं और वह अपनी स्थिति के कारण ही मिसीसिपी नदी और उसके आस पास के मैदानों को सामान भेजने का द्वार बन जावेगा। प्रशान्त महासागर के तट के बन्दरगाह प्राचीन देशों से व्यापार करने में पूर्वी बन्दरगाहों का सामना करते हैं क्योंकि उत्तर की ओर वाले बन्दरगाह एशिया के बहुत समीप पड़ते हैं।

सीहले नगर एलासका के प्रधान मार्ग पर स्थित है। रहोडे आइलैंड का प्राविडेन्स नगर तथा कैलीफोर्निया का ओकलैंड नगर भी किसी समय में इसी प्रकार के बन्दरगाह हो जावेंगे।

अमरीका की बड़ी झीलों पर वहाँ के प्रधान नगरों में से ६ नगर स्थित हैं। ओंटारियो झील पर दक्षिण की ओर कोई नगर नहीं है इसका मुख्य कारण न्याग्रा प्रपात है। जो हडसन नदी को काट देता है। ह्यूरन की झील अमरीका की बड़ी झील वाले मार्ग में स्थित है तो भी वहां पर कोई प्रधान नगर नहीं हैं। सुपीरियर झील पर डियूलूथ नगर स्थित है। यह दुनिया के बड़े बन्दरगाहों में गिना जाता है। एरी झील पर तीन प्रधान नगर स्थित हैं। बफ़्फालो नगर झील के पूर्वी तट पर, टोलेडो पश्चिमी तट पर और क्लाइवलैंड दक्षिणी तट पर है। इन बन्दरगाहों से होकर उत्तर तथा दक्षिण की ओर कोयला और लोहा आता जाता है। यह नगर न्यूयार्क और शिकागो से जल तथा स्थल दोनों मार्गों द्वारा मिले हुये हैं। बफ़ालो नगर में बिजली न्याग्रा प्रपात से पहुँचाई जाती है। डेट्राएट नगर एक छोटी नदी पर बसा है जो दो झीलों को मिलाती है। यह नगर व्यापारिक मार्गों के चौराहे पर स्थित है। यहां पर बड़ी झीलों का जल मार्ग तथा सारे अमरीका में जाने वाले मार्ग को काटता है। यह नगर अपने रोजगार के कारण अमरीका के बड़े नगरों में गिना जाने लगा है।

मिलवाकी (Milwaukee) नगर मिशीगन झील पर बसा है। यह नगर उत्तरी पश्चिमी तथा पूर्वी प्रान्तों को मिलाता है। शिकागो नगर की स्थिति भी मिशीगन झील पर है। यह नगर एक ऐसे स्थान पर बसा है जहां पर होकर पूर्व तथा पश्चिम को जाने वाला सामान अवश्य होकर गुजरता है। यह नगर जल तथा स्थल मार्गों द्वारा देश के धनी तथा उपजाऊ प्रान्तों से मिला हुआ है।

राचेस्टर नगर न्यूयार्क राज्य में जेनेसी नदी पर बसा है। न्याग्रा प्रपात के कारण यह नगर उन्नति कर गया है। कोलम्बस तथा इन्डियन अपोलिस नगर छोटी छोटी नदियों पर स्थित हैं। यह नगर अपनी मध्यवर्ती स्थिति तथा राज्यों की राजधानियां होने के कारण प्रसिद्ध हैं। मीनियापोलीस और सेन्ट पाल नगर मिसीसिपी नदी पर स्थित हैं। यह नगर नदी पर बसे होने के कारण प्रसिद्ध नहीं हुये हैं। पानी के गिरने से जो बिजली तयार होती है उसके तथा मिन्नेसोटा से मिलने और गेहूँ के व्यापार करने तथा योरुप के समीप होने के कारण यह नगर उन्नति कर गये हैं।

पिट्सबर्ग, सिन सिन्नाटी और लूईस विल्ले नगर ओहियो नदी पर स्थित हैं। सेन्ट लूइस और कानसाज़ नगर भी नदी पर बसे हैं और पूर्व का माल पश्चिम तथा पश्चिम का माल पूर्व की ओर भेजने के कारण यह नगर बड़े तथा धनी हो गये हैं। डेनबर नगर नदी के किनारे पर बसा है। यह नगर अमरीका के बड़े पहाड़ों का द्वार है। यह नगर मिसौरी नदी और प्रशान्त महासागर के तटीय बन्दरगाहों के बीच में सब से बड़ा नगर तथा व्यापारिक केन्द्र है।

वाशिङ्गटन नगर एक ज्वार चढ़ने वाली नदी पर बसा है। इस नगर में कोई बड़ा कारखाना नहीं है। यह नगर कोई बड़ा व्यापारिक नगर भी नहीं है। यह नगर केवल फैडरल (संघशासन) सरकार का प्रधान नगर है और संयुक्तराष्ट्र की राजधानी है। आजकल यह नगर संसार की प्रधान राजधानियों में गिना जाता है।

प्रथम श्रेणी वाले नगरों में दो तिहाई नगर उत्तरी राज्यों में बसे हैं। एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले ५० नगर और हैं जिनमें से ३० नगर उत्तरी राज्यों में हैं।

मेट्रोपोलिटन प्रान्त

कितने ही नगर ऐसे हैं जो बड़े तथा प्रसिद्ध नगर हैं किन्तु उनकी गणना सरकारी तौर पर नहीं है। यह नागरिक भाग बड़े बड़े नगरों से मिले हुए दूर तक बसे हैं और सुबर्बन नगर कहे जा सकते हैं। न्यूयार्क, बोस्टन पिट्सबर्ग या सेनफ्रान्सिस्को आदि नगर ऐसे हैं जिन से मिले हुए नगर देहात के अन्दर दूर तक फैले हुए हैं और घने बसे हैं। इस प्रकार के सभी नगरों की गणना (जो बड़े नगर से १० मील के अन्दर है) मैट्रोपोलिटन प्रान्तों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग गिने जाते हैं। १९२०ई० में बोस्टन नगर की जनसंख्या ७५००० थी। उस समय बोस्टन के मेट्रोपोलिटन प्रान्त की जन-संख्या १७,७२,००० थी। सरकारी बोस्टन नगर से बाहर की जनसंख्या १० लाख से अधिक है। वहां के नागरिकों की जीविका बोस्टन नगर पर ही निर्भर है। बोस्टन नगर में लगभग ५० भाग हैं जो बोस्टन के केन्द्रीय भाग से बाहर की ओर फैले हुए हैं। इनमें लगभग ३० भागों की जनसंख्या १० हज़ार से एक लाख तक है। बोस्टन नगर के सभी निवासी वहां के असंख्य पुतलीघरों तथा कारखानों में काम करते तथा अपनी जीविका चलाते हैं। बोस्टन हार्बर के समीप काम करने वाले लोगों का भाग है।

बोस्टन की भांति ही न्यूयार्क नगर की जनसंख्या लगभग ६० लाख है। मैट्रोपोलिटन प्रान्त हडसन नदी, लॉंग आइलैण्ड और न्यूजेरस तक फैला हुआ है। राज्य की सीमा होने के कारण न्यजेरसी न्यूयार्क की म्युनिसिपैलिटी में सम्मिलित नहीं हो सकता उससे दो नेवार्क और जेर्सी प्रथम श्रेणी के नगर हैं। इनके सिवा और भी कितने नगर तथा कसबे हैं। इनके रहने वाले निवासी अपने न्यूयार्क का निवासी ही समझते हैं और न्यूयार्क नगर पर ही अपनी जीविका चलाते हैं। न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन प्रान्त की जनसंख्या लगभग ८,५००,००० है।

मुख्य फिलाडेलफिया की जनसंख्या १,८००,००० है। और वहां के मैट्रोपोलिटन प्रान्स की जनसंख्या २४ लाख है। पिटसबर्ग में नगर के अन्दर से बाहर अधिक लोग रहते हैं और इस प्रकार वहां की जनसंख्या १२ लाख है। शिकागो के पड़ोस की जनसंख्या ५ लाख है। डेट्रियार की जनसंख्या वहां के कारखानों तथा रोजगारों के सहित की जाय तो वह १० लाख से कहीं अधिक बढ़ जावेगी। प्राविडेन्स नगर की जनसंख्या इसी भांति लगभग ५ लाख है।

कैलीफार्निया में लास एंजलीस नगर समुद्र से १५ मील दूरी पर था किन्तु वह नहर काट कर समुद्र से मिला दिया गया है और वहाँ पर एक सुन्दर हार्बर बन गया है। नगर के भीतरी भाग की जनसंख्या ६ लाख और बाहरी भाग की ३ लाख है। सैन्फ्रान्सिस्को, ओकलैण्ड और गोल्डगेट आदि नगर भी ऐसे ही हैं जहां की भीतरी तथा बाहरी जनसंख्या लाखों में है।

अमरीका के २० प्रथम श्रेणी वाले नगरों में जिनकी जनसंख्या भली भांति बढ़ रही है। अमरीका की जनसंख्या बढ़ने पर वहां के निवासियों को कोई अभिमान नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि शहरी आबादी बढ़ने के कारण अमरीका का जीवन अधिक संकटमय अथवा सुखी होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनडुब्बों का पहनाव

पनडुब्बों के पहनने के वस्त्र दो प्रकार के होते हैं। एक तो रबर का बना हुआ सूट होता है और दूसरा "शेल" (खोल) सूट होता है। सौ वर्ष से अधिक हुये प्रथम रबर का सूट अगस्टस सीबे ने तयार किया था। शेल सूट १९२३ ई० में तयार किया गया था।

पनडुब्बों का सूट रबर और टुविल कपड़े से बनाया जाता है। यह पनडुब्बे को सिर से पैर तक समूचा ढके रहता है। पनडुब्बे का सिर लोहे के टोप में बन्द रहता है और कसे हुये रबर के कफ पानी को बांह के छिद्रों से अलग रखते हैं। सूट के भीतर हवा एक भीतरी द्वार द्वारा लोहे के टोप में पम्प की जाती है। लोहे के टोप में एक नली सांस ली हुई हवा को बाहर निकालने के लिये भी लगी रहती है। यदि हेलमेट में बाहर से हवा जाने वाली नली न लगी रहे तो भीतरी दबाव अधिक हो जावे। उससे भीतरी दबाव हल्का हो जाता है। सूट का ऊपरी भाग हवा से सदैव भरा रहता है क्योंकि पनडुब्बे के सीने के ऊपर का भार बाहर के पानी के भार के बराबर रखना आवश्यक है। लोहे के टोप में बाहर हवा निकलने के लिये जो नली लगी रहती है उससे पनडुब्बे को काम करते हुये झुकने, बैठने और लेटने में सहायता मिलती है। यदि यह लोहे के टोप के सिवा और किसी दूसरे स्थान पर लगाई जाती तो इससे खतरे का भय अधिक होता।

यह बाहर हवा निकालने वाली नली इस प्रकार बनी रहती है कि पनडुब्बे उसे अपनी इच्छा के अनुसार ठीक कर सकते हैं। जब पनडुब्बा पानी के भीतर द्बी हवा में सांस लेता है तो उसे विवश होकर मामूली तौर से अधिक हवा सांस द्वारा खींचनी पड़ती है। उसे अधिक से अधिक आक्सीजन (प्राणप्रद) और नाइट्रोजन (विशेषतत्व) शरीर के अन्दर खींचना पड़ता है। अधिक दबाव में पनडुब्बा अधिक नाइट्रोजन नहीं पचा सकता इसलिये वह उसके खून में मिलकर समस्त शरीर में फैल जाती है। यदि पनडुब्बा पानी के भीतर अधिक समय तक नहीं रहता तो उसका प्रभाव नहीं मालूम पड़ता परन्तु अधिक समय तक पानी के भीतर रहने पर उसका प्रभाव भयङ्कर होता है। जब पनडुब्बा बाहर आता है तो नाइट्रोजन उसके शरीर से शीघ्र ही बाहर जाने का प्रयत्न करती है वह उसके खून में शीघ्रता से पचाई नहीं जा सकती है। यदि नाइट्रोजन गैस मनुष्य के खून में प्रवेश करके दिल में पहुँच जाती है तो मनुष्य मर जाता है। यदि नाइट्रोजन मेरुदंड में चली जाती है तो पनडुब्बे को पक्षाघात की बीमारी हो जाती है। और यदि यह शरीर के जोड़ों में प्रवेश कर जाती है तो गठिया की बीमारी हो जाती है और शरीर के जोड़ों में भीषण पीड़ा उत्पन्न हो जाती है।

इसी कारण नाइट्रोजन को बाहर निकालने के लिये हवा को बाहर निकालने वाली नली लगी रहती है परन्तु यदि पनडुब्बा शीघ्र ही पानी के बाहर आ जाता है तो यह नली पनडुब्बे को खतरे से बचाने में एकाएक सफल नहीं होती हैं।

जब पनडुब्बे पानी के नीचे से ऊपर चढ़ता है तो वह धीरे धीरे रुकता हुआ चढ़ता है जिससे वह प्रत्येक स्थान के बदले हुये दबाव का अभ्यासी होता जावे और अपने शरीर के भीतर का नाइट्रोजन गैस को निकाल सके।

पनडुब्बे के लिये चढ़ने से पानी में तैरना अधिक सरल है। वह पानी के भीतर एक बार में ही तह तक जा सकता है। उसके ऊपर बहुत बोझ रहता है। यह नियम है कि जब पनडुब्बा पानी के भीतर जाने लगता है तो उसके प्रत्येक जूते के तले में १६ पौंड सीसा बांधा जाता है। पीठ पर और सीने पर चालीस चालीस पौंड का बोझ रहता है। यह बोझ उसे किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं देते जब कि वह तली में काम करता है क्योंकि उसे इन बोझों का ज्ञान ही नहीं रहता है। पनडुब्बे को लम्बी छलांग लगाने की मनाही रहती है, क्योंकि यदि वह छलांग मारता है तो बोझ के कारण वह पानी के भीतर बहुत दूर स्थान में चला जाता है। उसे पानी के नीचे काम करने में किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होता। वह शीघ्रता पूर्वक सरलता के साथ अपने कार्य को कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पञ्ज (समुद्रसोख) निकालने की प्राचीन कला

यद्यपि रबर का वस्त्र पहिनने वाले तथा लोहे का टोप लगाने वाले गोता खोर लोग समुद्र सोख निकालने का काम करते हैं तो भी अभी प्राचीन ढङ्ग समुद्र सोख निकालने के लिये प्रयोग किया जाता है। रूम सागर में प्राचीन ढङ्ग का प्रयोग अधिक होता है।

रूम सागर में जिन स्थानों पर समुद्रसोख पाया जाता है उन स्थानों पर छोटी छोटी नावें घूमती रहती हैं। नङ्गे गोताखोर उन नावों से पानी में गोता लगाते हैं और नीचे से समुद्रसोख एकत्रित कर के ऊपर ले आते हैं। यह कार्य उतना सरल नहीं है जितना कि हमें पढ़ने अथवा लिखने में प्रतीत होता है।

नंगे गोताखोर गोता लगाते समय सीधे दोनों हाथ अपने सिर के ऊपर करके खड़े हो जाते हैं। वह अपने हाथों में एक बड़ा चपटा पत्थर लिये रहते हैं। यह पत्थर एक रस्सी से बंधा रहता है। यह रस्सी एक छल्ले के बीच हो कर निकाली जाती है यह छल्ला गोताखोर की कलाई में बन्धे हुये छल्ले से एक पतली जञ्जीर द्वारा जुड़ा रहता है गोतेखोर के पीठ में समुद्रसोख रखने के लिये जाल का बना हुआ एक झोला रहता है। गोताखोर पानी में गोता लगाते हैं और पत्थर की सहायता से पानी की तली में पहुँचते हैं। तली में जाकर वे पत्थर को छोड़ देते हैं। उनका हाथ छल्ले से बाहर हो जाता है और वह स्वतंत्रता पूर्वक बैठ, लेट अथवा खड़े हो सकते हैं। पत्थर को केन्द्र मान कर वह चारों ओर समुद्र सोख ढूँढ़ते हैं और अपने झोले में डालते जाते हैं। उस के बाद वह पानी के ऊपर आते हैं। गोते खोर के ऊपर आने पर पत्थर ऊपर खींच लिया जाता है। इस प्रकार समुद्र सोख निकालने की विधि उन स्थानों पर की जाती है जहां पर समुद्र की तली बराबर नहीं होती और तली चट्टानदार होती है। ऐसे स्थानों पर गोताखोर वस्त्रों का प्रयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि चट्टानों से टकरा कर हवा वाली नलियों के कट जाने अथवा फट जाने का भय रहता है।

गोताखोरी के लिये एक दूसरे प्रकार के औजार का भी प्रयोग किया जाता है जो उल्लेखनीय है। इसमें गोताखोर के कमरे में एक पेटी बन्धी रहती है। पेटी के नीचे हवा का भरा हुआ एक झोला लटकता रहता है। हवा का यह झोला एक नली द्वारा बोट पर रक्खे हुये पम्प से जुड़ा रहता है। हवा के झोले के ऊपर एक मुलायम नली रहती है जो गोताखोर के पीठ के ऊपरी भाग को लम्बाकार जाती है। एक और दूसरी नली गोताखोर के गर्दन के एक ओर हो कर उसके मुँह को जाती है। गोताखोर इस नली को मज़बूती के साथ अपने दांतों और होंठों के बीच पकड़े रहता है इन नलियों को संभालने के लिये गले में एक पट्टी लगी रहती है। इस हथियार की सहायता से गोताखोर पानी के नीचे आसानी के साथ १० मिनट तक रह सकते हैं।

पानी के भीतर तार का लगाया जाना

पानी के नीचे मनुष्य ने जितने काम किये हैं उनमें पनडुब्बे तार का काम सब से अधिक प्रशंसनीय है। इँगलैंड से अमरीका को पानी के नीचे वाले तार से तार देना एक मामूली काम हो गया है। बहुत कम लोग अब इस बात का ध्यान देते हैं कि यह तार पहले पहल किस प्रकार बिछाया गया होगा और इसकी मरम्मत किस प्रकार होती है।

उन्नीसवीं सदी में इँगलैंड और योरुपीय देशों के बीच प्रथम पन-डुब्बा तार लगाया गया था। परन्तु बहुत कम लोग उस समय सोचते थे कि अटलांटिक सागर का पार करने के लिये भी तार पानी के भीतर लगाया जा सकता है यद्यपि यह बात लोगों को भली भांति विदित थी कि आयरलैंड न्यूफाउन्डलैंड से समुद्र की तली वाले एक पठार से जुड़ा है। उस समय के विज्ञान शास्त्र के विद्वानों का कहना था कि पहले तो इतना बड़ा तार बनाना ही कठिन है यदि तार बन भी गया तो उसे लगाने के लिये उतने बड़े जहाज का बनना कठिन है और यदि जहाज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया तो अटलांटिक सागर के प्रचण्ड तूफान में तार नहीं लगाया जा सकेगा।

उसी समय सीरस फील्ड नामक अमरीकन व्यापारी ने मोर्से (तार के नियम का बताने वाला) से मिलकर इस सम्बन्ध में परामर्श लिया और उसे मालूम हुआ कि अटलांटिक सागर के भीतर तार लगाना उतना कठिन न था जितना कि लोग ख्याल करते थे। सीरसफील्ड इँगलैंड पहुँचा और वहां चार्ल्स ब्राइट से मिला चार्ल्स ब्राइट कई एक तार पानी के भीतर लगा चुका था। इस सम्मेलन का यह फल हुआ कि १८५७ ई० में वेलेन्शिया (आयरलैंड) से हार्टस कानटेंट (न्यूफाउन्ड लैंड) तक तार लगाने का काम आरम्भ हुआ। यह दूरी १६४० मील की थी।

इस कार्य में इँगलैंड का ऐगमेन और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का न्याग्रा नामक जहाज दो एक छोटे जहाजों के साथ इस कार्य के लिये प्रस्तुत हुये। आधा तार अमरीकन जहाज में और आधा इँगलिश जहाज में लादा गया। वेलेन्शिया से ४०० मील की दूरी पर एकाएक तार टूट गया। तार वाले जहाज को विवश हो कर लौटना पड़ा। शीतकाल के व्यतीत होने पर उसी जहाज ने गर्मी के आरम्भ में फिर अपना कार्य आरम्भ किया। इस बार तार अटलांटिक सागर के मध्य से डाला गया। एक जहाज इंगलैंड की ओर और दूसरा न्यूफाउन्डलैंड की ओर गया परन्तु फिर तार टूट गया और दोनों जहाज क्वींस नगर लौट गये परन्तु एक ही सप्ताह में तीसरी बार प्रयत्न किया गया जिसमें सफलता प्राप्त हुई।

तीन महीने तक काम करने के बाद यह तार खराब हो गया। १८६५ ई० में ग्रेट ईस्टर्न नामक जहाज ने तार लगाया। इस बार तार ठीक से लग गया और उससे संतोषजनक काम लिया गया। उस के बाद और दूसरे तार डाले गये। आज योरुप और उत्तरी-अमरीका के मध्य इस प्रकार के तारों की २१ लाइनें हैं जिन से रात-दिन समाचार आते जाते रहते हैं।

इन तारों की मरम्मत के लिये खास तार वाले जहाज काम में लगे रहते हैं। डाकखाने और निजी तार वाली कम्पनियों के जहाज बन्दरगाहों पर खड़े रहते हैं जहां कहीं तार में किसी प्रकार की खराबी हुई शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच कर उसे ठीक करते हैं। तूफान के समय इन तारों के टूटने का बड़ा भय रहता है। टूटने पर शीघ्र से शीघ्र इनकी मरम्मत आवश्यक होती है क्योंकि इन्हीं तारों के सहारे उत्तरी अमरीका तथा योरुप का व्यापार चल रहा है।

तार वाले जहाजों के अगले तथा पिछले भाग में ढोल लगे रहते हैं। इन्हीं के ऊपर हो कर तार छोड़ अथवा निकाले जाते हैं। अगर कोई तार कहीं टूट जाता है तो मामूली तौर पर उसका अन्दाज लगाया जा सकता है। कोमल बिजली के यंत्रों का प्रयोग बाधा वाले स्थान को दूरी नापने के लिये किया जाता है। दूसरे तार से इंजीनियर लोग इन यंत्रों द्वारा पता लगाये गये स्थान का हिसाब लगाते हैं। बाधा के स्थान को एक चार्ट पर ठीक ठीक बना कर तार वाले जहाज को दे दिया जाता है। वह जहाज बाधा वाले स्थान के लिये प्रस्थान करता है। तार वाला जहाज लम्बवत तार लाइन के ऊपर से जाता है। जहाज के नीचे छोटे लङ्गर लगे रहते हैं जिस से तार को ऊपर कर के सरलता पूर्वक देखा जा सकता है। मरम्मत के समय तार काट दिया जाता है और उसकी सूचना दोनों ओर भेज दी जाती है। बाधा जिस ओर होती है उस ओर से सूचना का उत्तर नहीं मिलता वहीं पर तरेरी (पानी पर तैरने वाला चिन्ह) लगा दी जाती है। तार वाला जहाज तार को देखता हुआ खराबी वाले स्थान की ओर जाता है। ठीक स्थान का पता लगा कर खराबी वाला तार काट दिया जाता है। ठीक करने के बाद जहाज बन्दरगाह को लौट आता है। इस प्रकार तार वाले जहाज अपना कार्य करते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले बरमा सड़क की यात्रा बड़ी कठिन तथा खतरनाक थी। यह बड़ी संकेत थी और इसके बाहरी किनारों पर खतरनाक ऊँची दीवारें थीं। पर्वतों के ऊपर जमीन के टुकड़े बहुधा फिसला करते थे जिससे मनुष्य को बड़ा भय रहता था।

बरमा सड़क ७२६ मील लम्बी है। यह कूमिंग नगर से आरम्भ होती है। कूमिंग यूनान प्रान्त की राजधानी है। यह नगर चंगकिंग से एक सड़क द्वारा मिला हुआ है। चंगकिंग आजकल युद्ध के समय में चीन की राजधानी बना हुआ है। कूमिंग से सड़क चीन के दूसरे युद्ध सम्बन्धी केन्द्रों को जाती है और सड़क का अन्त लाशियो नगर में होता है। लाशियो रंगून जाने वाली रेलवे लाइन का अंतिम उत्तरी-पश्चिमी स्टेशन है। कूमिंग से बरमा सड़क की सीमांत ६१० मील है। लाशियो बरमा सड़क के छोर से ११६ मील है। बोहमो बरमा सड़क के छोर से ११० मील उत्तर की ओर है। बोहमो को जहाज द्वारा चीन के लिये युद्ध सामग्री जाती है।

बरमा सड़क ऐसे स्थान होकर जाती है जहाँ पर बस्ती तथा भोजन की कमी है। यह बहुत से पर्वतों के ऊपर (सबसे ऊँचा ८५०० फुट) होकर जाती है। सड़क के मार्ग में मीकांग और सालवीन दो बड़ी नदियाँ पड़ती हैं परन्तु फिर भी चीनी लोगों ने प्राचीन ढंग से इस सड़क को एक साल से कम काल में बनाया जिससे युद्ध सामग्री चंगकिंग पहुँच सके। मुख्य युद्ध सामग्री रंगून में उतारी जाती थी। जो २००० मील की दूरी पर था।

सड़क बनाने का काम दिसम्बर सन् १९३७ ई० में समाप्त हो गया। शीघ्र ही यह मार्ग काम में नहीं लाया गया प्रथम तीन महीनों में केवल २८ टन (लगभग ७६४ मन) सामान सड़क होकर भेजा गया। सामान लेकर न जाने का मुख्य कारण यह था कि सड़क की दशा ठीक न थी कूमिंग से लाशियो ७२६ मील है। यह यात्रा आज भी मोटर द्वारा ४ दिन में तै की जा सकती है जबकि मोटर चलाने वाला ड्राइवर मार्ग में बदला जावे और यात्रा वाली मोटर काफी मजबूत हो। इस सड़क पर अधिक से अधिक २० मील प्रति घंटे की चाल से मोटर जा सकती है। इससे अधिक चाल बरमा सड़क पर असम्भव नहीं तो खतरनाक अवश्य ही है। लारी तथा बसों को सड़क की यात्रा में ६ दिन लगते हैं और वे अधिक से अधिक १२ मील की चाल से चल सकती हैं बरमा सड़क के खुलने पर पहले जो बरमा सड़क होकर कम सामान गया उसका मुख्य कारण यह था कि चीन के पास कुछ भेजने के लिये सामान ही नहीं था फिर चीन में मोटर चलाने वालों की भी कमी थी। उसके पश्चात् ट्रंक मोल लिये गये और सड़क पर चलने के लिये १००० ट्रंकों का समूह एकत्रित हो गया। ट्रंकों को चलाने के लिये चीनी शान और बरमी लोग नौकर रक्खे गये। मार्च सन् १९३९ ई० तक सड़क अच्छी प्रकार चालू हो गई।

उसके पश्चात् ब्रिटिश बरमा से चीन को कम से कम १०० लारी (५६०० मन) युद्ध सामग्री रोजाना भेजी जाने लगी। युद्ध सामग्री के बदले लौटती बार यह ट्रंक चीन का रेशम, तथा टीन अंजन आदि धातुयें लाते थे। वर्षा मई के अंत में आरम्भ होती है और अक्टूबर के अन्त में बन्द हो जाती है। सड़क की कठिनाइयों के कारण वर्षा काल में केवल १० या २० लारियाँ आती जाती थीं। २० लारियों में दस हजार गैलन पिट्रौल रहता था। तीन महीने में चीन के अन्दर लगभग १० लाख गैलन पिट्रौल गया।

नवम्बर के पश्चात् सड़क में बहुत से परिवर्तन किये गये। चीन को राष्ट्रीय मार्ग बनाने वाली संस्था ने कुछ अमरीकन लोगों को बुलाया जिससे सड़क में सुधार हो गये।

इस सड़क के बनाने में २०० इंजिनियर तथा १६०,००० मजदूर लगाये गये थे। सड़क के तयार करने में १,६०,००,००० लाख चीनी डालर खर्च हुये थे। उसके पश्चात् सड़क के सुधार में ७० हजार लोगों ने हाथ बटाया है। चीन को मजबूरन यह सड़क तीन महाने तक बन्द रखनी पड़ी जिससे युद्ध के लिये सामान चीन नहीं पहुँचा सका। जब से फ्रांस ने इन्डोचीन की रेलवे लाइन को बन्द कर दिया है तब से बरमा सड़क ही केवल एक मार्ग चीन के लिये बच रहता है जिससे वह युद्ध सामग्री बाहर से अपने देश के अन्दर ले जा सकता है और अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूरवीरता के युद्ध को लड़ सकता है। एक दूसरा लम्बा मार्ग रूस से तुर्किस्तान होता हुआ चीन जाता है। परन्तु वह मार्ग बहुत लम्बा तथा दुर्गम है।

जिन समुद्रों होकर चीन युद्ध सामग्री अपने देश को मँगाता था उन सभों को जापान ने धीरे धीरे अपनी सेना के द्वारा अथवा धमकी से बन्द कर दिया है। चीन को सहायता मिलना कठिन हो गई है। चीनो रेड क्रास सोसायटी तथा डाक्टरी सहायता पहुँचाने वाले चीन के चार प्रान्तों को औषधि पहुँचाना चाहते हैं क्योंकि वहाँ पर मलेरिया ज्वर के कारण लाखों मनुष्यों का जीवन खतरे में है।

यदि हाँगकाँग में अँग्रेज जापान की सहायता न करते तो जापान के लिये चीन के समुद्र का ब्लाकेड (घेरा डालना) कठिन हो जाता। बरमा रोड के बन्द हो जाने से चीन को इँगलैंड, रूस और संयुक्त राष्ट्र से जो सहायता मिलती थी वह भी बन्द हो हो गई थी।

बरमा सड़क बर्षा ऋतु में तीन महीने के लिये बन्द थी उस समय सड़क पर आवागमन भी कम होने की सम्भावना थी। इँगलैंड ने तीन महीने के अंत में बरमा रोड फिर खोल दिया है। इससे जापान इंगलैंड से और अधिक असंतुष्ट हो गया है। यदि पहले हो इँगलैंड बरमा सड़क को न्याय के पक्ष में बन्द न करने में दृढ़ता रहता तो कदाचित् यह बात उत्पन्न न होती। जापान ने बरमा सड़क खुलने पर उस पर बम गिराया और आवागमन रोकने का भर सक प्रयत्न किया।

जापान में जो सामान जाता था उस पर इङ्गलैंड ने कोई रोक नहीं लगाई थी। अब भी इँगलैंड से पिट्रौल जापान को जाता है। परन्तु इँगलैंड चीन को पिट्रौल नहीं देता।

चीन इंगलैंड के इस कार्य को अमित्रता तथा क़ानून के विरुद्ध ख्याल करता है।

अक्तूबर सन् १९३७ ई० में राष्ट्रसंघ की बैठक में इङ्गलैंड ने वचन दिया था कि इङ्गलैंड चीन की सहायता आक्रमण होने पर करेगा। यह वचन १९३९ ई० में फिर दुहराया गया था। परन्तु फिर भी इंगलैंड ने चीन की क्या सहायता किया यह वही जाने।

इँगलैंड ने राय दी है कि चीन तथा जापान लड़ाई बन्द करने तथा सन्धि करने के लिये स्वयम् एक दूसरे से बात चीत करें इससे चीन और अधिक घबड़ा गया है। चियांग काई शेक ने कहा है कि इँगलैंड बरमा सड़क को बन्द कर के युद्ध को पूर्व की ओर शीघ्र ही अन्त करने की आशा करता है परन्तु इस कार्य से युद्ध और अधिक बढ़ेगा और अधिक समय तक टिकेगा। जब तक चीन को वह वस्तु नहीं मिल जावेगी जिसके लिये चीन लड़ रहा है। चीन अपना अस्त्र नहीं रख सकता है।

जापान के साथ जो सुलहनामा इँगलेंड ने किया है उसके विरुद्ध भारतवर्ष और अमरीका में बड़ी चर्चा हुई पत्रों ने विरोध किया और त्रुटियां दिखलाई।

अमरीका फिर भी जापान को उसकी आवश्यकता के आधे से अधिक युद्ध सामग्री दे रहा है। वह सामान देने में किसी प्रकार की कमी करने की इच्छा नहीं दिखा रहा है।

चर्चिल ने अगस्त सन् १९३९ ई० में लन्दन के एक पत्र में लिखा था कि "यह बात इङ्गलैंड और संयुक्त राष्ट्र के लिये बहुत आवश्यक है कि वह चीन के अपने निजी स्थानों में चीनियों का किसी प्रकार भी युद्ध करने में विरोध न करें और चीन की सहायता करें चाहे उन्हें इस कार्य में कुछ समय के लिये चीन से नाता तोड़ना पड़े और हानि उठानी पड़े।

चर्चिल के कथन के यह शब्द बड़े अच्छे तथा शूरवीरता के शब्द थे परन्तु उनपर पश्चिमी देश अपनी विजय के कारण फूल उठा है। इङ्गलैंड जितना ही उसे देता चला जाता है वह उतना ही और अधिक माँगता जाता है। टींटसिन के मामले में जब इङ्गलैंड ने जापान को स्वतंत्रता दे दिया तो जापान ने हांग कांग और ठीके पर वाली भूमि का ब्लाकेड कर दिया।

जापान के नवीन प्रधान मंत्री ने एक ऐसे व्यक्ति को विदेश मंत्री बनाया है जो १९३३ ई० में राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ के बाहर मंचूरिया के सम्बन्ध में निकल गया। वह इटली तथा जर्मनी से अधिक मित्रता रखना चाहता है।

इङ्गलैंड को जापान से कोई लड़ाई नहीं है परन्तु फिर भी याद रखनी चाहिये कि यदि इङ्गलैंड जापान को नहीं रोकता और उसे मनमानो करने देता है तो अवश्य ही जापान उसके सामने एक दिन भीषण माँग पेश करेगा जिसे इङ्गलैंड को अस्वीकार करना होगा।

इसलिये इङ्गलैंड के लिये आवश्यक है कि वह अभी से जापान की बढ़ती हुई बेजा शक्ति पर रोक लगा दे।

पेंगविन पक्षी

सुदुर दक्षिण के पशु पक्षियों में पेंगविन (एक प्रकार का समुद्री पक्षी) बड़ा ही अद्भुत होता है। यह दक्षिणी गोलार्द्ध में पाया जाता है। यह विश्वत रेखा के उत्तर कभी नहीं जाता है। यह गलापागोस द्वीपों तक जाता है। पेंगविन पक्षी कई प्रकार के होते हैं। सभी पेंगविन शारीरिक बनावट तथा स्वभाव में एक से होते हैं परन्तु उनके छोटाई बड़ाई और शरीर के चिन्हों में अन्तर होता है। इन पक्षियों के पंजे झिल्लीदार होते हैं। जब यह सीधे खड़े हो जाते हैं तो मनुष्य की भांति हो जाते हैं। उसके शरीर पर छोटे छोटे घने बाल होते हैं। छोटे घने बालों की बनावट अनोखी होती है। सिर में एक बड़ी चोंच रहती है। पेंगविन पक्षी के डैने बड़े अनोखे होते हैं। यह डैने सैकड़ों बर्षों से प्रयोग न होने के कारण कमजोर हो गये हैं। उनमें उड़ने वाले पखने नहीं रह गये हैं इसलिये पेंगविन उड़ने से असमर्थ है। पेंगविन के यह डैने उसके शरीर का भार समान रखते हैं और तैरने में बड़े सहायक होते हैं।

पेंगविन पक्षी जहाँ कहीं भी रहते हैं वहाँ समूह के समूह रहते हैं कहीं कहीं तो यह लाखों की संख्या में देखे गये हैं। यह बड़ा बातूनी पक्षी होता है। जब यह पक्षी चिल्लाने लगते हैं तो जहाँ कहीं भी इनके जाति के पक्षी होते हैं अपने जाति के पक्षी का शब्द सुनकर चिल्ला उठते हैं। उस समय इनका नाद बड़ा भीषण होता है। मादा एक बार में केवल एक अंडा देती हैं। सील मछली तथा दरियाई हाथी इनके समूहों को विध्वंस कर डालते हैं तोभी इनकी कमी नहीं होती हैं। यह इतनी बड़ी संख्या में होती हैं और मनुष्य से इतना कम भय खाती हैं कि फ्रांसिस ड्रेक जब मैगलन के संकरे समुद्र में पहुँचा तो उसके एक साथी ने एक दिन में ३००० पेंगविन पक्षियों का शिकार किया था।

पेंगविन पक्षी को स्थल से अधिक जल में आराम मिलता है। यह बड़े गोता खोर पक्षी होते हैं। गोताखोरी में इनका सामना कदाचित ही कोई पशु कर सकता है। गोता मार कर मछली पकड़ने में यह अद्वितीय होते हैं। इनका शिकार इनसे बच कर नहीं जा सकता है। यह पक्षी बड़े सुशील तथा मानवीय होते हैं। यह अजनबियों के साथ बड़े प्रेम के साथ सिर झुका कर मिलते हैं। उनकी शिष्टता विलक्षण होती है। यह पक्षी बड़ा जिज्ञासु होता है। यह भीषण तूफान में भी अपने झोंपड़े बड़ी शान के साथ बनाते हुये पाये गये हैं। परन्तु जब वे काम नहीं कर सके तो पीछे हट कर चट्टानों की आड़ में जा छिपे और अच्छे समय की प्रतीक्षा करते रहे। अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिये वह स्थल पर घूमते हुये भी देखे गये हैं। जिस समय यह पक्षी समुद्र की ओर लौटते हैं उस समय इनका दृश्य बड़ा सुहावना होता है। यह बड़ी फुरती से अपने सिर आगे करके बरफ पर फिसलते हुये दौड़ते हैं।

इन पक्षियों में सबसे सुन्दर अन्टार्किटक प्रान्त के पेंगविन पक्षी का राजा है। उसकी लम्बाई चार फुट और वजन लगभग १०० पौंड है। यह पक्षी अपना अकेला अंडा उस बर्फीले स्थान पर देता है जहाँ का ताप शून्य अंश से नीचे ६० या ७० अंश होता है। जमने से बचाने के लिये यह पक्षी अपने अंडे को पैर की झिल्ली में रखता है और अपने शरीर से ढके रहता है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी रक्षा शीत से इसी प्रकार की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका के शेर

अफ्रीका में कई प्रकार के शेर होते हैं। कुछ शेरों के अयाल होती है और कुछ के अयाल नहीं होती। झाड़ियों में रहने वाले शेर के अयाल नहीं होती है। शेर सुनहरे भूरे, धुँधले और पीले गदहों के रंग के होते हैं। शेर अकेले भी रहते हैं और समूह में भी भ्रमण करते हैं। दिन में शेर आराम करता और सोता है। वह दिन में अपने बच्चों की देख भाल बड़े चाव से करता है। जब बच्चा उसके सामने से चला जाता है तो वह घबड़ा सा उठता है। उसे मनुष्य का भय लगा रहता है। जब शेर का पेट भरा रहता है तो वह किसी ऊँचे स्थान पर सोता है या बच्चों के साथ खेलता है। जब वह सोता है तो उसके बच्चे खेलते सोते अथवा खाते रहते हैं।

शेरनी के अयाल नहीं होती है। शेर और शेरनी एक ही स्थान पर हफ्तों साथ साथ रहते हैं। यदि वह अपने स्थान से भगा दिये जाते हैं तो बहुधा लौट कर वह फिर उसी स्थान पर आ कर रहने लगते हैं। शेर बहुधा चट्टानों के बीच झाड़ झंकाड़ों में रहा करते हैं। वे पहाड़ी कंदाराओं में भी रहते हैं। शेरों के रहने का स्थान चरने वाले जानवरों के चरने के स्थान के समीप रहता है। जब तक शेर के बच्चे छोटे रहते हैं तब तक शेरनी घर से बाहर नहीं जाती परन्तु उनके बड़े होने पर वह बाहर शिकार की खोज में जाया करती है। शेरनी बहुधा अपने पति शेर के साथ बाहर शिकार के लिये जाती है। वह पानी पीने के लिये भी शेर के साथ जाती है। जब शेर शिकार मारता है तो शेरनी उसका कुछ भाग काट कर लाने में शेर की सहायता करती है।

आक्रमण करने में शेर बड़ा चतुर होता है। शेर तथा शेरनी दोनों जब शिकार को बीच में पा जाते हैं तो उसे अपनी गरज से ऐसा भयभीत करते हैं कि वह स्वयम् डर के मारे किसी न किसी के मुंह के समीप चला जाता है। कभी कभी जब पानी पीने वाले स्थान पर शेर जाता है तो वह जलाशय के समीप मार्गों पर अपना पेशाब पसीना, अथवा झाग गिरा देते हैं जिससे उसकी मौजूदगी पानी पीने के लिये जाने वाले जानवरों को मालूम हो जाने और वह उस मार्ग में न जावें। शेर इन मार्गों को छोड़ दूसरे मार्गों में जा छिपता है जब जानवर आते हैं तो शेर के चिन्हों को देख वह बिना चिन्ह वाले मार्ग हो कर जाते हैं और छिपे हुये शेर के शिकार बन जाते हैं। शेर रात के समय ही अपना शिकार करता है। जब शेर किसी जानवर को पकड़ लेता है तो फिर उसके बचाव की कोई आशा नहीं रह जाती है। कभी कभी जब जेब्रा आदि भागने को तयार होते हैं और उन पर पीछे से शेर आक्रमण कर बैठता है तो वह पीछे की टांगों से शेर को मारते हुये भागते हैं और घायल हो कर निकल जाते हैं। यह हिसाब लगाया गया है कि एक शेर साल में ३०० जानवरों को अकेले मारता है। कई एक शेर एक ही शिकार को खाते देखे गये हैं। शेर अपने शिकार को ताजा खाता है और खून को पी जाता है। खून पीने के पश्चात् शेर को प्यास लगती है तब वह पानी पीने के लिये जाता है। जब शेर पानी पीने जाता है तो वह गरजता है उसकी गरज सुन कर पास पड़ोस के जानवरों को पता चल जाता है कि शेर ने किसी जानवर को मार डाला है।

भोजन के पश्चात् वह अपने स्थान को चला जाता है परन्तु यदि उसने अधिक भोजन कर लिया तो वह अपने शिकार के समीप ही लेट कर सो जाता है। वह रात भर पड़ा सोता रहता है और सवेरे दिन निकलने पर अपने स्थान को शीघ्र ही चलाजाता है।

जब शेर भूखा अथवा वृद्ध होता है तो वह बड़ा खतरनाक होता है। ऐसी दशा में शेर अपनी शिकार गाह को छोड़ देता है और अफ्रीका निवासियों के वाड़ों की ओर शिकार की खोज में जाता है। अफ्रीका निवासी अपने पशुओं की रक्षा के लिये कँटीली झाड़ियों और डालियों के बनाते हैं। वे रात को शेरों को भयभीत करने के लिये आग जलाते हैं। जब कभी आग बुझ जाती है तो शेर आक्रमण कर बैठता है।

जब किसी शेर को किसी पशु अथवा मनुष्य के मांस का चस्का लग जाता है तो फिर वह पशु अथवा मनुष्य के ऊपर आक्रमण करता है। मनुष्य को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने वाला शेर मनुष्य पर बिना हिचकिचाहट आक्रमण कर बैठता है।

जब मनुष्य मनुष्य भक्षण करने वाले शेर के सामने आ जाता है तो शेर का आक्रमण मनुष्य पर दूरी के भाव से होता है। यदि वह ५० गज की दूरी पर होगा तो पेट के बल खिसकता हुआ आगे बढ़ेगा जब तक कि दबोचने के समीप नहीं आ जावेगा। यदि मनुष्य एकाएक उसके सामने पहुँच जाता है तो शेर एक सिकन्ड तक चुप खड़ा रहने के बाद आक्रमण करता है। जब शेर हमला करने को होता है तो उसकी अयाल और पूंछ खड़ी हो जाती है। उसका शरीर फूल कर दुगना सा प्रतीत होने लगता है। वह उस समय गरजता रहता है।

शेर शिकार के ऊपर ठीक बिल्ली की भांति झपटता है। वह घास के ऊपर पेट के बल खिसकता हुआ चलता है। दिन में शेर को शिकार करने में बहुत कम सफलता मिलती है। वर्षा ऋतु में शेर कन्दरा में छिप कर रहता है और बाहर वर्षा के भय से नहीं निकलता। यद्यपि दिन में शेर शिकार नहीं करता तो भी जब कभी वह जानवरों के झुण्ड को चरता हुआ देखता है तो वह लालचवश उस पर आक्रमण कर देता है। शेर एक फुट से कम ऊँची घास में छिप कर चल सकता है जब शेर छिपना चाहता है तो फिर उसका पता लगाना कठिन हो जाता है। वह इतनी चतुर्ता के साथ चुपके चुपके चलता है कि मनुष्य को उसके आवागमन का लेश मात्र शक नहीं हो सकता है। कहते हैं कि जब शेर पेट भर खा लेता है तो फिर चाहे मनुष्य उसके समीप हो कर भी चला जाय तो भी वह उस पर आक्रमण नहीं करता है परन्तु यह बात सदैव सत्य नहीं होती है।

शेर अविश्वसनीय पशु होता है। वह किस दशा में क्या करेगा ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता है। कभी कभी तो दूर से दौड़ कर शेर आक्रमण कर देता है और कभी कभी वह मारते मारते छोड़ कर चल देता है। मनुष्य का आहार करने वाले शेर को दूसरे शेरों से पहचानना कठिन है।

भूखे शेर की दशा पेट भरे हुये शेर में बिल्कुल भिन्न होती है उसी प्रकार बच्चे वाली शेरनी की दशा बिना बच्चे वाली शेरनी से भिन्न होती है। एक जंगल का शेर दूसरे जंगल में भी शेर की भांति व्योहार नहीं कर सकता है। दो शेर जब एक साथ किसी शिकार पर हमला करते हैं तो भी उनका भाव एक सा नहीं होता है। शेर में और दूसरे पशुओं से अधिक व्यक्तित्व पाया जाता है। वह स्वयम् अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता है। शेर एक ऐसा पशु है जिस पर कोई खास नियम लागू नहीं किया जा सकता है। जैसे कि यह मानी हुई बात है कि शेर मांस भक्षण करने वाला पशु है परन्तु अफ्रीका में कुछ स्थानों पर वह अपना जीवन मछली के ऊपर ही व्यतीत करता हुआ देखा गया है।

मनुष्य शेर की गरज का दृष्टान्त बहुधा दिया करते हैं। इससे पता चलता है कि शेर सदैव एक प्रकार से बोलता है परन्तु यह बात सत्य नहीं है। शेर की गरज तीन प्रकार की होती है। यह तीनों एक दूसरे से अलग हैं। पहली गरज वह है जब शेर शिकार करते समय बार बार गरजता है। दूसरा जब वह शिकार को जान से मारता रहता है तो क्रोध से भरी होती है। तीसरी प्रकार की गरज को हम सच-मुच ही गरज कह सकते हैं। यह उस समय होती है जब शेर भोजन करने के पश्चात् पानी पीता है और संतुष्ट हो जाता है। यह गरज धीरे धीरे ऊँची होती जाती है और फिर धीरे धीरे कम होती है। इस गरज से प्रतीत होता है कि शेर विजयी हुआ है और उसे संतुष्टता प्राप्त हो गई है।

जब शेर पर गोली लगती है तो शेरनी खूंख्वारी के साथ शीघ्र ही मनुष्य पर आक्रमण करती है परन्तु कभी कभी वह अपने प्राण बचाने के लिये भाग भी जाती है। शेर जब मनुष्य को मरा हुआ समझता है तो उसको वह छोड़ देता है। इसलिये, जब कभी शेर का सामना बन में हो तो चुपचाप ठहर जाना चाहिये, किसी प्रकार का शब्द न करना चाहिये या अपने को बिलकुल मुर्दा बना लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की प्रसिद्ध लाटें

इसके पहले कि हम संसार की प्रसिद्ध लाटों का वर्णन करें हमें देखना चाहिये कि लाट शब्द का क्या अर्थ है यह एक ऊँचा स्तम्भ होता है जो किले चर्च, भवन आदि से अलग अथवा मिला रहता है। नगर के चारों ओर जो दीवार होती है उसमें भी लाट अथवा मीनार बनी रहती है। लाटें, जेलखाने के लिये अथवा किलेबन्दी के लिये बनाई जाती हैं। अधिकतर मीनार (लाट) बनाने का मतलब प्राचीन समय में स्थान की रक्षा करना था। इसी कारण मीनार से कभी कभी समस्त किले का मतलब समझा जाता है लाट का अर्थ दुर्ग भी होता है।

लाट बनाने का सैनिक कारण अपनी रक्षा है। धार्मिक स्थानों में लाटों पर घंटा लगाया जाता है। जिससे घंटे का शब्द सुन कर लोग पूजा के लिये आ जावें। लाटों के बनाने का वैज्ञानिक कारण यह होता है कि इसके ऊपर चढ़ कर दूर की वस्तुएँ भली भांति देखी जा सकती हैं। यह किसी की स्मृति में भी बनाई जाती हैं। इसलिये लाट बहुधा स्मृति सूचक होती है। महाराज अशोक ने अपने धार्मिक नियम लाटों पर खुदवाये थे। कम स्थान तथा सजावट के ध्यान से भी लोग लाट बनाते हैं।

बेबेल की लाट बनाने वालों ने सोचा था कि वह अपने नगर तथा लाट को इतना ऊँचा बनावेंगे कि वह आकाश को स्पर्श कर ले। आसाम, अशान्ती, दक्षिणी अफ्रीका, मेक्सिको आदि में भी लाटें इसी ध्यान से बनाई गईं थीं। बेबिलान की एक लाट ६५० फुट से अधिक ऊँची थी और उसकी गोलाई आध मील थी। बेबेल की लाट को कुछ लोग बोरसीया अथवा वीर्स निमरुद कहते थे। यह बेबिलान नगर के बाहर थी। इसके खण्डहर शेष रह गये हैं। यह मेसोपोटामिया के जेगरूत पिरेमिडों की भांति फा हेरो डोटस ने बेबिलान के एक लाट की चर्चा लिखी है जिसमें उसने कहा है कि एक बड़ी लाट एक फर्लांग लम्बी तथा एक फर्लांग चौड़ी बनाई गई थी, उसपर एक दूसरी और फिर उस पर तीसरी लाट बनाई गई। इस प्रकार आठ लाटें एक दूसरे के ऊपर बनाई गईं। इस बड़ी लाट के ऊपर जाने का मार्ग बाहर की ओर से था और मार्ग सभी लाटों के भीतर से घूम कर जाता था। सबसे ऊपर वाली लाट पर एक बड़ा सुन्दर मन्दिर है। लाटें टेढ़ी क्यों बनाई जाती थीं इसका ठीक पता नहीं चलता।

बीस निमरुब की लाट में एक ऊँची छत मिली है जो १०० फुट लम्बी, ६ फुट चौड़ी और १२ फुट ऊंची है। लाट को अधिक ऊंचा बनाने का एक कारण यह भी था कि लोग इन ऊँचे स्थानों पर जाकर नक्षत्रों का ज्ञान करते थे।

खलीफा हारूँ रशीद के पुत्र का नाम खलीफा मुत्तासिम था। जब वह समारा में अपनी बड़ी मसजिद बनवाने लगा। समारा फराद नदी के किनारे पर है। उसने जान कर के लाट की बनावट को घुमावदार रखा है। यह लाट मालविया की है और इसकी उँचाई १६० फुट है।

सिकन्दरिया की फरोस लाट

इसको सोस्ट्रास ने २८० बी० सी० के बाद बनवाया था। यह श्वेत चूने के पत्थर की बनी हुई है। कहा जाता है कि यह ३६० या ३९० फुट ऊँची थी। यह संसार के सात अद्भुत् वस्तुओं में से थी। १३०३ ई० के भूचाल में इसका अधिकांश भाग गिर गया। जो कुछ शेष रह गया था उसे समुद्र ने साफ कर दिया।

डोवर हग की रोमन लाट बाहर को ओर अष्टभुजाकार और भीतर की ओर से चौकोर है। आज कल इसकी उँचाई अधिक नहीं है। यद्यपि टियूडर राजाओं ने इसे दोबारा बनवाया था। इसके दूसरे तट पर बलोने में कलीगूला ने सन् ४० में एक लाट बनवाई जो बाद में प्रकाश भवन बना दिया गया। यह पहले १४ तल्लों की लाट थी और एक पहाड़ी चोटी पर बनी थी।

मिस्र में लोगों ने एक दूसरे प्रकार की लाटें बनाई जिनका नाम संसार में पिरेमिड के नाम से प्रसिद्ध है। यह शुंडाकार बने हुये हैं।

रोमन साम्राज्य के अंत होने के पश्चात् पश्चिमी योरुप में रोमन कला का प्रचार लाटों, निवास स्थानों और चर्चों के बनाने में किया गया। परन्तु पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यों के मकान बनाने की कला पश्चिम की ओर भी फैल गई और उससे बैजेनटाइन कला का प्रदर्शन हुआ। इटली की लाटें इसी कला की बनी हुई हैं। रावेना की कम्पानिली नामक गोलाकार लाट प्रसिद्ध है।

इटली में घंटा वाली लाटें मामूली तौर पर और दूसरे भवनों से अलग रहती हैं। इन लाटों का आकार चौकोर होता है। यह बड़ी सादी बनी हैं। इनमें बीच बीच में तोड़ मरोड़ नहीं है। इनके अन्दर भीतर प्रकाश जाने के लिये काफी खिड़कियां लगी रहती हैं। ऊपर की ओर नीचे से अधिक खिड़कियां लगाई जाती हैं। पीसा की झुकी हुई लाट ११७२ ई० में बनी थी। इसका आकार गोला है। इसमें ७ तल्ले हैं। ऊपरी छः तल्ले एक दूसरे से बिलकुल मिलते जुलते हैं। रसकिन (अंग्रेज लेखक) ने कहा था कि यह लाट इटली की सबसे खराब लाट थी। इसकी समस्त ऊँचाई १८३ फुट है।

बोलोगना में दो लाटें ईंट की बनी हुई हैं। असीनेली की लाट ११०९ में और बनाई गई। यह ३२० फुट ऊँची है। टोरे गरीसेंडा की लाट पूरी समाप्त नहीं हो सकी थी। इसकी ऊँचाई १५८ फुट है।

नार्मन लाटें

नार्मन काल की लाटें अधिकाँश गिर गईं हैं। १३२२ ई० में एली कैथीड्रल की मध्यवर्ती लाट गिर गई। १७८६ ई० में हेरे फार्ड की पश्चिमी लाट गिर गई। फ्रान्स में यह नियम था कि चर्च के पश्चिम की ओर दो लाटें साथ साथ बनाई जाती थीं जैसा कि कान्करर्स अबे आक्स होम्स चर्च में है। जर्मनी के वर्म्स कैथीड्रल (बड़ा गिरजा) में प्रत्येक सिरे पर दोहरे वृताकार लाटें हैं। बेल्जियम के टाऊरनाइ नामक गिरजे में दोनों सिरों पर दोहरी-चौकोर लाटें बनी हुई हैं। वेंचिस्टर, नार्विच, टियुकेस बरी और सट अल्बन्स की मीनारें नार्मन काल तथा कला की बनी हुई हैं।

रक्षा करने वाली लाटें अथवा दुर्ग

जब सैनिक अस्त्रों की वृद्धि हुई तो संसार के सभ्य लोगों ने अपने रक्षा के लिये दुर्गों का बनाना आरम्भ किया। नगर के चारों ओर की दीवार तथा क़िलों की दीवार में जगह जगह पर दुर्ग बनाए जाते थे। यह दुर्ग रोमन अथवा बैज़नटाइन कला के बनाये गये। दुर्ग अकेले भी बहुत से योरुप में बनाये गये जो इतने ऊँचे तथा दृढ़ थे कि बारूद के प्रयोग के पहले उनका तोड़ना असम्भव था। फ्रान्स ऐसे दुर्गों का आकार गोल होता था और उसे डोनजोन कहते थे। चैटियूटन में बारहवीं सदी का बना हुआ १५० फुट ऊँचा एक दुर्ग है। अम्ब्वायसे, लोइरे क़िलों में भी दुर्ग हैं। यह दुर्ग स्वयम् एक बड़े क़िलों की भांति हैं। इनके भीतर सीढ़ी के स्थान पर चौड़ा ढालू मैदान है। यह मैदान इतना चौड़ा है कि चार घोड़ों की गाड़ी उसमें अच्छी तरह ऊपर जा सकती है। कोपेन हेगेन के ट्रिनिटी चर्च के बड़े गोलाकार दुर्ग में भी। ऐसा ही मार्ग बना है। यह चर्च १६०० ई० में बना था।

लओन के समीप काउची-ले कैच्यू का दुर्ग २१० फुट ऊंचा है। इसका व्यास १०० फुट है। व्यास दो तिहाई भाग दीवारों में चला गया है। यह बड़ा भारी दुर्ग है इसके सामने दूसरे दुर्ग मामूली मालूम होते हैं।

इङ्गलैंड के नार्मन लोगों के समय के बहुत से दुर्ग बने हैं। उनमें मुख्य केन्ट में डोवर, यार्कशायर में रिचमांड, नार्थम्बरलैण्ड में बमबर्ग, लन्दन दुर्ग (यह वार्विक का सीज़र का दुर्ग कहलाता है) आदि हैं। लन्दन का दुर्ग १०० फुट ऊँचा है। कोइंसबर्ग का दुर्ग भीतर की ओर से गोला परन्तु बाहर से कोणाकार बना है। ओपशायर में तेरहवीं सदी का बना हुआ कोइमबर्ग के किले का दुर्ग है। नार्थम्बरलैण्ड का वार्चवर्थ का दुर्ग लगभग १४०० ई० में बना था। इसकी बनावट बड़ी अच्छी तथा मजबूत है। विंडसर में एडवर्ड तृतीय का बनाया हुआ प्रसिद्ध दुर्ग है।

वेल्स में एडवर्ड प्रथम के बनवाये हुये तीन प्रसिद्ध दुर्ग हैं। आयरलैण्ड के अनोखे शुंडाकार दुर्ग पहले भाग कर प्राणों की रक्षा करने के लिये बनाये गये थे। वे घंटा बजाने के प्रयोग में भी कोई कोई आते थे। इनके द्वार ज़मीन से १० फुट या अधिक उंचाई पर बने हैं। यह दुर्ग छठवीं से तेरहवीं सदी तक के बने हुये हैं और इनका व्यास ५० फुट है। ग्लेंडलो का दुर्ग ११० फुट सेन्टरिम का दुर्ग ९२ फुट और क्लोन इरकिन के दुर्ग ८४ फुट ऊंचे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गोयथिक कला का संचार हुआ तो चर्चों के ऊपर घुमावदार मीनारें बनाई जाने लगीं। लोग चर्चों को इतना ऊँचा बनाने लगे कि उनके ऊपर दृगों का बनाना कठिन हो गया और लाट के स्थान पर छोटी छोटी मीनारें बनाई जाने लगीं।

चार्टरेस में मीनारों की उँचाई बहुत कर दी गई है। वहाँ की दक्षिणी पश्चिमी मीनार ३५० फुट और उत्तरी पश्चिमी मीनार ३७५ फुट ऊँची है।

लओन के गिरजाघर में चार लाटें हैं जो १८० फुट से १९० फुट तक ऊँची हैं।

फ्रान्स में चर्चों के मध्यवर्ती भाग में दृगों के बनाने का रिवाज था। यह बड़े सुन्दर लगते थे। रोबेन में सेंट ओवेन के चर्च के मध्यवर्ती भाग में एक दृग है। यह दृग चौदहवीं सदी का बना हुआ है। और २६० फुट ऊँचा हैं। इस चर्च के पश्चिमी दृग २८२ फुट ऊँचे हैं।। रोबेन के गिरजाघर दृग की शोभा वहां के लोहे के ४६५ फुट ऊँचे स्तूप से मारी गई है। रोवेन में सबसे अधिक सुन्दर स्तूप दक्षिण-पश्चिम की ओर का है। यह २५२ फुट ऊँचा है और इसके सिरे पर अष्ट भुजाकार एक बड़ी लालटेन लगी हुई है। इसको 'टावर डी व्यूरे' कहते हैं। यह १५२० ई० में बना था।

फ्रांस में टार्न नदी पर अल्बी में एक दृग है। यह १३वीं सदीं में बना था। वह दृग बिलकुल लाल ईंटों का बना हुआ है। यह दृग क़िले और चर्च दोनों का काम देने के लिये बनाया गया था।

योरुप के दृगों के बनाने के लिये पन्द्रहवीं सदी स्वर्ण काल थी। इस सदी में जर्मनी, हालैंड और बेल्जियम में बहुत से दृग बनाये गये। स्ट्रासबर्ग का पश्चिमी दृग ४६५ फुट है। यह १४३९ ई० में बन कर तयार हुआ था। इसी काल का बना हुआ वियना में सेंट स्टिफेन्स का पश्चिमी दृग है। यह ४४८ फुट ऊँचा है।

उन्नीसवीं सदी का बना हुआ कोलोन के गिरजा घर का दृग है। यह ५१५ फुट धरातल से ऊँचा है और ६५ फुट धरातल के नीचे है। डैनूब नदी पर अल्म स्थान के चर्च का दृग ५२८ फुट ऊँचा है। यह संसार के चर्चों के दृगों में सबसे अधिक ऊँचा है। बेल्जियम में मैलाइन्स स्थान पर १४५२ ई० में एक ऐसे दृग का बनना आरम्भ हुआ जो ईसाई संसार में सबसे अधिक ऊँचा बनने को था। परन्तु यह दृग केवल ३१८ फुट ऊँचा हो सका। इसके बढ़े हुये भाग की उँचाई मिलाकर समस्त उँचाई ५१५ फुट है। एंटवर्प के गिरजाघर का उत्तरी पश्चिमी दृग १३५२ ई० में बनना आरम्भ हुआ था। यह १५५९ई० में बन कर तयार हुआ था।

इटली के गोयथिक कला के घंटे वाले दृग

गोयथिक कला का प्रयोग इटली में बहुत कम समय तक किया गया। फ्लोरेन्स नगर में गिओटो का बनवाया हुआ भवन १३२४ ई० का है रसकिन अंग्रेज लेखक का कहना है कि इस भवन के बनाने में संसार की समस्त शिल्प कला का प्रदर्शन किया गया है। यह भवन २९२ फुट ऊँचा है। इसके दो मध्यवर्ती भाग बराबर ऊँचे हैं। लम्बार्डी के मैदान में क्रेमोना स्थान पर टोराजो का वर्गाकार दृग ३९७ फुट ऊंचा है। इसके ऊपरी सिरे पर दो अष्टभुजा लालटेनें हैं।

इंगलैंड में कैंटरबरी और ग्लासेस्टर के दृग बड़े सुन्दर हैं। यह लम्बाकार बने हैं। चिचेस्टर का दृग २७७ फुट, नार्विच का दृग ३१३ फुट, सैलिसबरी का ४०४ फुट ऊँचा है। यह तीनों लिचफील्ड में हैं। सेंट पाल का प्राचीन दृग लन्दन में था। यह ५०० फुट ऊँचा था और लकड़ी का बना था जिसके ऊपर सीसा लगाया गया था। इंगलैंड में यह दृग सबसे ऊँचा था। परन्तु यह नष्ट हो गया। इसके नष्ट होने से अब इंगलड भर में सबसे ऊँचा दृग सैलिसबरी का है।

ग्रैनथम का दृग २८१ फुट ऊँचा है इसमें जालियां बहुत बनाई गई हैं। लाउथ की मीनार ३०० फुट ऊँची है। यह १४ साल में लगभग ४५७५ रु० लगाकर बनी थी। सेंट मिकेल की मीनार लगभग ३०० फुट ऊँची है। इसकी मीनार और ऊपरी छोटे गुम्बदों के बीच में एक अष्ट भुजाकार लालटेन है।

नारफोक में क्रोमेर की मीनार है। नये काल के आरम्भ में रोमन तथा ग्रीक कला का अंत हो गया और उस समय भांति भांति की सजावट बनाने का प्रयत्न किया गया। रेन का दृग इसी काल का बना हुआ है। यह २१६ फुट ऊँचा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन में मूर (मुसलमान लोगों के समय में बहुत सी मीनारें भी बनाई गई थीं। सेवील की गिराल्ड मीनार ११९५ ई० में बनी थी। यह मीनार मूर लोगों ने अपने राज्य की स्मृति में बनाई थी। इस मीनार का व्यास ४५ फुट और दीवारों की चौड़ाई १० फुट है। इसका आरम्भिक भाग १८५ फुट ऊँचा है। इसमें नवयुग के आरम्भ काल (१५६८ ई०) की लालटीन लगी है जिस पर कुछ लेख खोदा हुआ है। इसके ऊपर १३ फुट की एक मूर्ति ईमान (धर्म) की बनी हुई है जिस पर एक वायु की दिशा बताने का यन्त्र लगा हुआ है। इस्तम्बूल में सुलेमान बादशाह की बनवाई हुई एक बड़ी सुलेमान मसजिद है। यह नमाज़ की अज़ान (प्रार्थना के समय की पुकार) देने के लिये इतनी ऊँची बनाई गयी थी। केरो में क्वैटबे की मसजिद से मिली हुई एक और मीनार इसी प्रकार की है।

भारतवर्ष में देहली में कुतुब मीनार है। यह मीनार १८०० ई० में बनी थी। इसकी उँचाई २३८ फुट है। इसका व्यास ४७ फुट है। परन्तु ऊपर जाकर यह केवल ९ फीट रह जाता है। इसमें पांच हैं। इसका ऊपरी भाग १८०३ ई० के भूकम्प में गिर गया था। मीनार के भीतर सीढ़ियाँ लगी हुई हैं।

फारस में अस्तराबाद से ५७ मील उत्तर-पूर्व गुनबाते काबूस की समाधि है। यह गुरगोन के प्राचीन नगर में है। यह खुरासान के अमीर काबूस की स्मृति में बनाई गई थी। यह भीतर की ओर गोलाकार परन्तु बाहर की ओर कोणीय है। इसके व्यास २०० फुट और उंचाई भी २०० फुट है। इसमें सीढ़ी के मार्ग का कुछ चिन्ह नहीं है। केवल सुण्डाकार छत की एक खिड़की से प्रकाश आने का मार्ग है। यह ईंटों की बनी है और अरबी में कुछ लेख ईंटों को बढ़ा कर लिखा गया है। इसका रंग सुनहरा है। यह पर्शियन कला द्वारा तयार किये हुये चार भवनों में से एक है।

पगोडा (बौद्ध मन्दिर)

बौद्ध धर्म में एक प्रकार के अनोखे गुम्बद तथा लाटों का निर्माण होता था। यह किसी भी स्थान पर भक्ति के लिये बनाए जा सकते थे। रंगून का स्वेड-गोन पगोडा बड़ा प्रसिद्ध है। यह ईंट का बना हुआ है। इसके ऊपर स्वर्ण-पत्र चढ़ा हुआ है। यह एक ऊँचे वेदिका पर बना हुआ है। इसकी समस्त ऊँचाई ३१२ फुट है। शिखा पर धातु का बना हुआ भाग है जिस पर मणि जड़े हुये हैं। वेदिका पर बहुत से गुम्बद हैं और पंक्तियों में छतें बनी हैं। प्रत्येक पंक्ति अपने नीचे वाली से कुछ छोटी है। छतों की पंक्तियां ही चीनी पगोडों में प्रधान हैं। यह छतें बहु कोणीय होती हैं। बौद्ध धर्म वाले अपने पगोडों में तीन से लेकर तेरह छतों तक बनाते हैं। कैंटन का पगोडा छठवीं सदी का बना हुआ है। यह अष्ट-भुजाकार है। इसमें ९ तल्ले हैं और २७० फुट ऊँचा है। नैनकिंग का पोर्सलेन टावर (मीनार) सब से अधिक सुन्दर था। यह १८५३ ई० में नष्ट हो गया। इसका व्यास ४० फुट और ऊँचाई २०० फुट थी। प्रत्येक छत की ओलती ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी और कोणें में घंटे लटकते थे। कुल १५० घंटे थे। यह ईंट का बना हुआ था और हरे रंग से रंगा हुआ था।

हेमबर्ग में सेंट निकोलस का टग ४८५ फुट है। यह १८७४ ई० में बना था। इसका ढांचा गिलवर्ट स्काट ने बनाया था जिसके पुत्र ने लिवरपूल के गिरजाघर मध्यवर्ती मीनार का ख़ाका बनाया था। १८४० से १८५० ई० के बीच वेस्ट मिनिस्टर के पार्लियामेन्ट भवन बनाये गये। उस समय सर चार्लस वैरी ने दो टग विक्टोरिया टावर और क्लाक टावर बनाये विक्टोरिया टग ३३६ फुट ऊँचा और ७५ फुट बर्गाकार है तथा क्लाक टावर ३२० फुट ऊँचा है। यह दोनों टग गोमथिक से सजाये गये हैं। इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट का टावर (मीनार) २८० फुट ऊँचा है। वेस्टमिनिस्टर गिरजाघर की मीनार २८४ फुट है। यह लम्बाकार रूप से ६ फुट झुकी हुई है। जब पहले यह १९०० ई० में बन कर तयार हुई तो इसे लोगों ने पसन्द नहीं किया परन्तु आज उसकी गणना संसार में लन्दन के प्रसिद्ध भवनों में की जाती है। आधुनिक टगों में स्टाक हाल्म में रगनार ओस्टबर्ग की मीनार है। इसके शिखा पर एक बड़ी लालटीन लगी हुई है।

ईफेल का प्रसिद्ध टावर अपनी इंजीनियरिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला के लिये प्रसिद्ध है। यह १८८९ ई० में बनकर तयार हुआ था। इसकी समस्त ऊँचाई ९८४ फुट है। इसमें चार स्तम्भ हैं जो ३० फुट से ४५ फुट तक भूमि के भीतर बने हुये हैं। इसमें धातु के १२ हज़ार टुकड़े लगे हैं और २५,००,००० रीवेट (मेंखें) लगाई गई हैं। आजकल इसमें बेतार के तार का स्टेशन है।

न्यूयार्क के टावर जिनको स्काई स्क्रैपर (आकाश को खुरचने वाले) कहते हैं. इञ्जीनियरिंग कला की आदरणीय उदाहरण है।

ट्यूरिन का मोल ऐण्टोनेलिआना नामक ४४ वर्गगज़ का बर्गाकार भवन है। इसमें कई तल्ले (कोठे) हैं। मध्यवर्ती भाग एक बड़ा चौकोर गुम्बद है। इसकी ऊँचाई ५३६ फुट है। इस प्रकार हम संसार के प्रसिद्ध टावरों का भ्रमण करके वापस आ गये।

हवाई हमले और उनसे बचने के उपाय

हवा से पाँच प्रकार से हमले किये जा सकते हैं

फूठ कर दगने वाले बम्ब ३ मन से लेकर ४० मन तक भारी होते हैं। बम्ब जितने अधिक भारी होंगे उतने ही कम वे हवाई जहाज़ पर लद सकेंगे। अधिकतर बम्ब छत, ज़मीन और दीवार से टकराते ही फूट पड़ते हैं। कुछ बम्ब इस प्रकार बनते हैं कि वे पहले भीतर धँस जाते हैं और फिर फटते हैं। इन बम्ब में बड़ी कड़ी नोकें लगी रहते हैं। जो बम्ब कई फुट की गहराई पर जा कर फटते हैं वे बड़े कीमती होते हैं। जिन शहरों में घर पास पास होते हैं और गलियाँ बहुत तङ्ग होती हैं उन पर बम्ब गिरने से अधिक हानि होती है।

कुछ बम्ब में दिसा का तार लगा रहता है कुछ इस से वे गिरने पर कुछ देर ठहर कर फटते हैं। यह बम्ब बड़े भयानक होते हैं। अक्सर इनको देखने के लिये अनजान लोग भीड़ लगा लेते हैं। भीड़ में फटने से बहुत मनुष्यों की जान जाती है। इसलिये तुरन्त न फटने वाले बम्ब के गिरने पर उससे दूर रहना चाहिये और होसके तो पास वाले पुलिस या फौज के अफसरों को इसकी सूचना दे देनी चाहिये।

बम्ब कड़ी छत या फर्श पर गिरते हैं तो इनके छोटे छोटे टुकड़े बड़े ज़ोर से इधर उधर टकराते हैं। इन में बड़ी हानि होती है। जो बम्ब मुलायम धरती पर गिरते हैं वे नीचे धँस कर सीधे ऊपर को फटते हैं। उन से इतनी अधिक हानि नहीं होती है।

जलने वाले (इन्सेन्डियरी) बम्ब—यह छोटे बम्ब होते हैं। इस कारण १ सेर से ३० सेर तक होता है। यह बम्ब जलाकर पास वाले घरों में आग लगा देते हैं। इन बम्बों में थर्माइट भरा रहता है कड़े पदार्थ से टकराने पर इसमें आग लग जाती है। आग लगने पर बम्ब के भीतर के पदार्थ जलाकर ३५०० अंश फारेन हाइट तापक्रम में बम्ब के ऊपर वाला धातु का ढकना भी गल जाता है। कुछ ढक्कन भी ऐसे बने होते हैं कि वे जलने लगते हैं। धातु को बचाने के लिये जर्मन लोग सीमेन्ट और कांक्रीट का ढक्कन बनाने लगे हैं। साधारण जलने वाले बम्ब खपरैल और पतली छत को तोड़कर नीचे आकर जलते हैं और घर का सामान जला देते हैं। पांच इञ्च मोटी पक्की कांक्रीट की छत १० सेर भार वाले बम्ब को रोक लेती है। १० सेर से अधिक भारी बम्ब मामूली छत को तोड़ कर नीचे आ जाते हैं और लकड़ी आदि सभी जलने वाली चीजों को भस्म कर देते हैं। ये बम्ब पानी से नहीं बुझते हैं। उल्टे भड़कते हैं।

गैस बम्ब सवा छः मन तक भारी होते हैं। बहुत से बम्ब प्रायः इनसे कहीं अधिक हलके होते हैं। इनमें कई तरह की गैसें भरी रहती हैं। क्षणिक गैसें (नान परसिस्टेन्ट) बम्ब से अलग होते ही हवा में मिल जाती हैं और शीघ्र ही विष से मुक्त हो जाती हैं। स्थायी (परसिस्टेन्ट) गैस अधिक समय तक विष से भरी रहती है। परसिस्टेन्ट गैस प्रायः द्रव रूप में होती है। इनके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं। ऐसी गैसों से भरे हुये बम्ब के फूटने का असर कई दिन और कभी कभी तो कई सप्ताह तक रहता है।

टियर गैस से आंखों पर असर होता है। उनसे आंसू बहने लगते हैं। कभी कभी उससे गले और छाती में भी जलन होती है। अधिक तेज़ गैस से फेफड़ों को भारी हानि होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैस स्प्रे या गैस का छिड़कना—कभी कभी हवाई जहाजों से द्रव गैस छिड़की जाती है। यह कार्य प्रायः १००० फुट की उँचाई से होता है। ३००० फुट से अधिक उँचाई से यह गैस नहीं छिड़की जा सकती। गरमी की ऋतु में या तेज़ धूप में यह गैस शीघ्र उड़ जाती है। अधिक सरदी की ऋतु में हवा के न चलने पर अधिक समय तक इसका असर रहता है।

मशीनगन फायर—इसका असर शहर के पक्के मज़बूत घरों पर बहुत कम होता है। गांव के कच्चे घरों की छतों को तोड़ कर भीतर रहने वालों को वे अधिक हानि पहुँचा सकती हैं।

हवाई हमलों से व्यक्तिगत और सामूहिक रक्षा की आवश्यकता है। व्यक्तिगत रक्षा में उन लोगों का ध्यान रखना है जो हवाई हमलों की सूचना शहर वालों को देते हैं। लिकिड (द्रव) गैस की सफाई करते हैं और आग बुझाते हैं। ऐसे लोगों की रक्षा के लिये उनके गस्त के मुहल्लों में ऐसे रक्षा के स्थान होने चाहिये जहां वे बम्ब वर्षा के समय छिप सकें।

इन लोगों को रबर के लम्बे बूट, रबर के लम्बे दस्ताने, हुड (कन्टोप) सांस लेने के यन्त्र (रेस्पिरेटर) आयलस्किन और गैस के असर से मुक्त कपड़े मिलने चाहिये।

सामूहिक रक्षा में शहर के लोगों, कारखाने, स्टेशन, बिजली घर और बड़े बड़े कारबार में कार्य करने वालों के लिये बम्ब से बचने के लिये स्थान बनाना पड़ता है। हवाई हमलों से बचने के लिये बड़े बड़े आदर्श स्थान बनाने में बहुत खर्च पड़ता है और उनके बनाने में बहुत समय लगता है। जैसे घर अपने प्रान्त में बने हैं वे बड़े विस्फोटक बम्ब से बचने के लिये अनुकूल नहीं हैं। फिर भी यदि घर के नीचे तहखाना है तो हमले के समय वह शरण लेने के लिये अधिक अच्छा स्थान है। लेकिन उसमें निकलने के लिये दो दरवाजे होने चाहिये। यह इस प्रकार बना हो कि उसमें गैस का असर न हो सके। इसकी छत मज़बूत होनी चाहिये जिससे वह हमले का भारी बोझ सह सके। ऊपर वाली छत पर बालू के बोरे या बालू की मोटी तह बिछा देनी चाहिये। बोरों में बम्ब के फटने से आग लग जाने का डर रहता है। तहखाने की छत के ऊपर मशीनरी आदि भारी सामान नहीं होना चाहिये।

यदि तहखाना न हो तो दोमंजिले घर का नीचे का कमरा काम में लाना चाहिये।

पड़ोस में गिरे हुये बम्ब के टुकड़े घर की दीवारों को हानि न पहुँचावें इसलिये बालू के बोरों की भारी दीवार खड़ी कर लेनी चाहिये। यदि बालू न मिले तो मिट्टी की कच्ची दीवार बना लेनी चाहिये। यह दीवार नीचे भाग में ४ फुट और ऊपर २ फुट मोटी हो। यह ८ फुट ऊँची हो और सभी दरवाज़ों और खिड़कियों को ढकले। वह कच्ची दीवार घर की असली दीवार को छूती रहे।

हवाई हमले से बचने के लिये जो कोठरी चुनी जावे उसका दरवाज़ा मुलायम ज़मीन की तरफ हो उसका दरवाज़ा और खिड़कियां उस ओर हों जिधर को हवा अक्सर चला करती है। इससे भूल से छूटी हुई दरारों से गैस कमरे के भीतर नहीं आ सकेगी।

खिड़कियों के शीशे के टुकड़े भीतर वालों के न लगे इसलिये उनके दोनों ओर मज़बूत कागज़ या कपड़ा लटका देना चाहिये। यदि इतना समय न हो तो भीतर की ओर कील गाड़ कर कम्बल या भारी कपड़ा टांग देना चाहिये। यदि खिड़की के भीतर की ओर आध इंच वाली लोहे का जाली लग सके तो और भी अधिक अच्छा हो।

यदि ऊपर वाले कमरे में हो तो सब खिड़कियों को खोल दो। अधिक ऊँचाई पर गैस का अधिक भय नहीं रहता है। सड़क पर भीड़ लगाना भयानक है। जहां तक हो तितर बितर हो जाओ। जब तक संकट के दूर होने की सूचना न मिले तब तक भीतर ही रहो।

अगर घर में रक्षा के लिये अनुकूल स्थान न हो लेकिन पास में खुला मैदान हो तो ७ फुट गहरी और ३ फुट चौड़ी टेढ़ी खाई खोद लो। यदि गैस या वर्षा का डर हो तो इसे ढक भी लो। इसमें बम्ब के टुकड़ों का कुछ भी भय न रहेगा। पास के घर से खाई इतनी दूर हो कि घर की दीवार टूटकर उसमें न गिर सके।

बम्ब से आग न लगे इस लिये जलने वाली सभी चीज़ें घर से दूर कर दो। दरवाज़े और खिड़कियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लकड़ी पर नमक, चूना और ठंडे पानी से मोटी पुताई कर दो। पहले लकड़ी को तीन इंच मोटी मिट्टी से लेप दो। आग बुझाने के लिये हर एक कमरे में पानी से भरे हुये घड़े और बाल्टी रख लो। गिरे हुये बम्ब को उठाने के लिये बालू भरी हुई बड़ी बाल्टी, लम्बा बेलचा एक गज लम्बी चमड़ी अस्बस्टास की चद्दर रहनी चाहिये।

पैरों को आग से बचाने के लिये गर्म रबर बूट न मिलें तो भीगा कपड़ा लपेट लेना चाहिये। गिरे हुये बम्ब के ऊपर पहले आधी बाल्टी बालू डाल दो फिर उसे बेल्चे से उठा कर बालू की बाल्टी में रख कर जल्दी से दूर रख दो। तेज़ आंच से आंखों को बचाने के लिये नीला चश्मा पहन लो।

गैस से बचने के लिये यदि गैस से सुरक्षित कमरा न हो तो ऊपरी छत या खुला मैदान अधिक अच्छा रहेगा। लड़ाई की सभी गैसें साधारण हवा से अधिक भारी होती हैं।

गैस से बचने के लिये कमरा का दरवाजा उस ओर को कभी न रक्खो जिधर से हवा आती है। यदि पूर्व से हवा आती है तो बाहर निकलने का दरवाजा पश्चिम की ओर होना चाहिये। यदि पश्चिम से हवा आती है तो दरवाजा पूर्व की ओर होना चाहिये। इससे गैस कमरे में न भरने पावेगी। कमरे में दो दरवाजे विरोधी (भिन्न भिन्न) दिशाओं में होने चाहिये। चिकनी मिट्टी से घर की सब दरारों को भर दो। यदि हमला अधिक समय तक रहे तो भोजन का सामान भी रख लो। कमरे में बहुत भीड़ न होने दो। भीतर लालटीन या दिया नहीं जलाना चाहिये।

बम्ब को ऊपर गिरने से बचाने के लिये कोई पूरा उपाय नहीं है। यह दैवयोग की बात है।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनाएँ

१६ नवम्बर—जर्मन हवाई जहाज़ों ने रात में सब से अधिक भीषण हमला किया। कवेन्ट्री में १००० व्यक्ति घायल हुये और मरे। बहुत से घर नष्ट हो गये।

यूनानी सेना ने इवान पर्वत पर हमला किया और कई अनुकूल स्थान ले लिये।

पांच ब्रिटिश माइन स्वीपर डुबा दिये गये।

१७ नवम्बर—लन्दन पर भारी हवाई हमला हुआ। २०० हवाई जहाज़ों ने बम्ब गिराये।

यूनान में एपिरस के निकट लड़ाई हुई। इटली के अधिकृत कसाला, असाब, दीरेदावा, बिरिडसी सीदी बारानी, सोलूम और बर्दी पर ब्रिटिश हवाई हमले हुये। जर्मनी के हेम्बर्ग बन्दरगाह पर भी ब्रिटिश हवाई हमले हुये।

१८ नवम्बर—ब्रिण्डिसी और हेम्बर्ग पर फिर हवाई हमले हुये।

जर्मनी एजेण्ट संयुक्तराष्ट्र अमरीका में प्रयत्न कर रहे हैं कि वहां से ब्रिटेन को फौजी सहायता न मिलने पावे।

१९ नवम्बर—बलगेरिया के राजा बोरिस ने बर्लिन में हर हिटलर से भेंट की। बर्लिन के समाचार से स्पेन जर्मनी और इटली का अनुसरण करने वाला है।

६०० इटेलियन सिपाही यूगोस्लैविया में घुस गये और निःशस्त्र कर लिये गये।

कोरिट्ज़ा के पास भीषण लड़ाई हुई।

२० नवम्बर—कोरिट्ज़ा के पूर्वी भाग में आग लग गई।

ब्रिटिश हवाई जहाज़ ने जर्मनी के सब से बड़े समुद्री जहाज़ यूरोचा पर बम्ब गिराया।

यूनान ने संयुक्तराष्ट्र अमरीका से हथियारों के लिये अपील की है।

२१ नवम्बर—हँगारी ने इटली, जर्मनी और जापान से सन्धि कर ली।

२२ नवम्बर—ब्रिटेन के भिन्न भिन्न भागों पर हवाई हमले हुये।

इटेलियन लोगों ने कोरिट्ज़ा खाली कर दिया। यह स्थान सेलोनिका पहुँचने के लिये मार्ग में पड़ता है।

२३ नवम्बर—यूनानी लोगों ने ९ दिन की लड़ाई के बाद कोरिट्ज़ा नगर छीन लिया। इस जीत से सारे यूनान में उत्सव मनाया गया। टर्की ने छः जिलों में घेरे की स्थिति घोषित कर दी है जिससे वहां फौजी शासन लागू हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ नवम्बर—जर्मन हवाई जहाजों ने ११ घंटे तक मिडलैण्ड के नगर पर बम्ब वर्षा की। इससे यहां भारी हानि हुई।

२५ नवम्बर—यूनान ने अलबेनिया के दो नगरों (पोग्रोडेट्ज़ और मोस्कोपोलिश) पर अधिकार कर लिया।

ब्रिटिश हवाई जहाजों ने मार्सेल्स पर बम्ब गिराये। फ्रांस की बिची सरकार ने इसका विरोध किया है।

२६ नवम्बर—डोवर प्रदेश पर जर्मन तोपों ने गोले छोड़े। जर्मन हवाई जहाज़ों ने पश्चिमी इङ्गलैंड के एक नगर पर बम्ब गिराये।

२७ नवम्बर—इङ्गलिश चैनल के एक ओर से जर्मन और दूसरी ओर से ब्रिटिश तोपों ने गोले बरसाये।

जर्मन हवाई जहाजों ने साउथम्पटन और ब्रिस्टल में बम्ब गिराये।

यूनानी फौजें दक्षिणी अलबेनिया में आगे बढ़ीं। इटेलियन सेना पीछे हटी। ब्रिटिश सरकार ने संयुक्तराष्ट्र अमरीका से जहाजों की सहायता मांगी।

एक जर्मन लड़ाका जहाज ने हिन्द महासागर में एक ब्रिटिश व्यापारी जहाज़ (पोर्ट आफ ब्रिस्बेन) को डुबा दिया।

२८ नवम्बर—दक्षिणी अलबेनिया में मोस्को पोलिस के पास इटेलियन लोग बीरता से लड़ रहे हैं। यूनानी फौजों ने आगे बढ़ कर पोग्रोडेट्ज़ में चेरावे नदी को पार कर लिया और चेरावेस गांव को छीन लिया।

फलोरीना के यूनानी हवाई स्टेशन पर इटेलियन हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये।

ब्रिटिश हवाई जहाजों ने बर्लिन पर और जर्मन हवाई जहाजों ने इङ्गलैण्ड पर बम्ब गिराये।

२९ नवम्बर—रूमानिया के भूतपूर्व पदाधिकारियों की हत्या से वहाँ असन्तोष और अशान्ति की लहर फैल रही है।

अलबेनिया में ताज़ी इटेलियन फौजों के आ जाने से यूनानी फौजों का बढ़ना रुक गया है।

ब्रिटेन के कुछ स्थानों पर जर्मन हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये।

३० नवम्बर—ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने ब्रिंडिसी (इटली) पर और जर्मन हवाई जहाज़ों ने लन्दन पर बम्ब गिराये।

अलबेनिया के पोग्रेडेट्ज़ नगर पर यूनानी फौजों ने अधिकार कर लिया। इटेलियन सुमालीलैंड के रास अलूला स्थान (गाडो फुई अन्तरीप के पास) ब्रिटिश जहाज़ों ने गोले बरसाये। कसाला के पास छिपे हुये सुसज्जित ब्रिटिश सिपाहियों ने इटेलियन सिपाहियों पर छापा मारा।

देश-दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

हर महीने किसी न किसी एक देश का आँखों देखा सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन पढ़िये। यात्रा के आधार पर लिखा हुआ विवरण होने से प्रत्येक पृष्ठ में सजीवता है। "देश-दर्शन" के प्रत्येक अङ्क आवश्यक चित्रों और नक़शों से सुसज्जित रहते हैं।

अब तक निम्नलिखित अंक प्रकाशित हो चुके हैं:—

लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे और जावा। प्रत्येक अंक का मूल्य ।≈), एक वर्ष के १२ अंकों का मूल्य ४) रु०।

दूसरे वर्ष का प्रथम अंक 'प्राचीन-जीवन' है। इसमें आर्य, एसीरियन, बेबिलोनियन, मिस्री, चीनी, ईरानी, यूनानी आदि प्राचीन रहन सहन पर पूरा प्रकाश डाला गया है। इस अंक का मूल्य ।।) है।

"देश-दर्शन" का वार्षिक मूल्य ४) रु० है। वार्षिक मूल्य ४) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jamuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

दिसम्बर १९४०

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी॰ ए॰

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/
Single Copy As. 5/-

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासमर परिशिष्टांक

"भूगोल" का महासमर अंक लोगों को कैसा पसन्द आया यह आपको विदित हो गया होगा। इस विशाल अंक के निकल जाने के बाद भी समर क्षेत्र में तरह तरह के परिवर्तन हुये हैं। जिन स्थानों को पहले बहुत कम लोग जानते थे उन्हें लड़ाई ने अपूर्व ख्याति दे दी। फिर भी अपने हिन्दी भाषा भाषियों को उनका ठीक ठीक ज्ञान न हो सका क्योंकि ये नाम शायद ही किसी पुरानी एटलस या भूगोल की पाठ्य पुस्तक में मिलते हैं।

इसी से जनवरी १९४१ में भूगोल का **'महासमर परिशिष्टांक'** निकाला जा रहा है। इसमें आकारादि क्रम से प्रायः सभी स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख वर्तमान लड़ाई के सम्बन्ध में आया है।

यू बोट आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका समझना साधारण पाठकों के लिये कठिन है। इन अज्ञात नामों पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी आपको अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद लेख मिलेंगे। आवश्यक चित्र और नकशे भी दिये गये हैं। इस अंक का मूल्य केवल ।।) है। भूगोल के वर्तमान ग्राहकों को यह उनके चन्दे में ही मिलेगा।

जो सज्जन ३१ दिसम्बर १९४० तक "भूगोल" का वार्षिक मूल्य ३) रु० भेजकर चालू वर्ष के ग्राहक बन जायँगे उनको भी यह अंक उसी चन्दे में मिलेगा। फुटकर अंक चाहने वालों को भी आठ आने के टिकट अथवा मनीआर्डर ३१ दिसम्बर १९४० तक भेज देना चाहिये।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—मेरी नार्वे-यात्रा	१
२ - सिंगापुर का बड़ा बन्दरगाह	५
३—भारतवर्ष की उत्पादक शक्ति	१०
४—संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जनसंख्या का विभाजन	१२
५—पनडुब्बों का पहनाव	१८
६—स्पञ्ज (समुद्रसोख) निकालने की प्राचीन कला	१९
७—पानी के भीतर तार का लगाया जाना	१९
८—बरमा सड़क	२१
९—पेंगविन पक्षी	२३
१०—अफ्रीका के शेर	२४
११—संसार की प्रसिद्ध लाटें	२६
१२—हवाई हमले और उनसे बचने का उपाय	३०
१३—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १७ | पौष, सं० १९९७, दिसम्बर, १९४० | अङ्क ८

मेरी नार्वे-यात्रा

नार्वे देश में मुझे दो बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली बार बर्लिन से गया था। जिस रेलगाड़ी पर मैं बर्लिन में सवार हुआ उसी में कुछ डब्बे ओस्लो नगर के लगे थे। बाल्टिक सागर को ये डब्बे किस प्रकार पार करेंगे यह प्रश्न मन में बार बार उठ रहा था। अन्त में स्थल भाग की यात्रा समाप्त हुई और समुद्र सामने दिखाई देने लगा। जहाज़ इस प्रकार लगता था कि वह स्थल की रेल को पटरियों को छूने लगा। फिर जहाज़ पर बिछी हुई रेल की पटरियां स्थल से मिल गई। इसके बाद जिस गाड़ी के डब्बे में मैं बैठा था वह जहाज़ पर चढ़ गया। मुझे गाड़ी से उतर कर जहाज़ पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं हुई। इस प्रकार मैं रेल गाड़ी पर सवार था और मेरी रेलगाड़ी जहाज़ पर सवार थी। कुछ ही घण्टों में यह यात्रा समाप्त हो गई। दूसरी ओर स्थल के इंजिन ने रेल के डब्बे को उतार लिया।

पहले स्वेडन देश में हो कर गुजरना पड़ा। गोटा या गोटेन बर्ग में काफी देर तक रेलगाड़ी ठहरी। रेलवे स्टेशन से शहर का कुछ भाग और विशेष कर बिजली का कारखाना भलीभांति दिखाई देता था। रास्ते का दृश्य बड़ा सुन्दर था। धूल का कहीं नाम न था। ज़मीन अक्सर पथरीली थी लेकिन फिर भी देवदारू और दूसरे पेड़ थे। ओस्लो के पड़ोस में पेड़ और घने हो गये। ओस्लो का स्टेशन बहुत बड़ा नहीं है। भीड़ भी रहती है। अधिकतर यात्री सीधे जलमार्ग से आते हैं। गरमी की ऋतु में यात्रियों की संख्या और अधिक बढ़ जाती है। यात्रियों की अधिकता से पास वाले होटल में स्थान न था। इसलिये मुझे कुछ दूर वाले होटल में ठहरना पड़ा।

होटल का प्रबन्ध एक महिला के हाथ में था। उसका प्रबन्ध बहुत अच्छा था। वह आगन्तुक के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करती थी। इससे अच्छा ही हुआ कि पास वाले होटल में भीड़ के कारण मुझे जगह न मिल सकी। उस होटल का प्रबन्ध करने वाली महिलायें कुछ बाज़ारू स्त्रियों की तरह मालूम पड़ती थीं। लेकिन इस होटल के पड़ोस में शराबियों का अड्डा था। इस लिये सावधानी के लिये कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मार्ग से और कभी दूसरे मार्ग से इधर आता जाता था।

दूसरे दिन शौचादि से निवृत्त हो समुद्र स्नान के लिये गया। स्नान के घाट पर पहुँचने के लिये स्टीमर का बहुत थोड़ा किराया लगता था। घाट पर कुछ फीस देने पर कपड़े रखनें के लिये एक अलमारी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और स्नान करने वाला कांपने लगता है।

यहां का अजायबघर ध्रुवों की सामग्री के लिये संसार प्रसिद्ध है। नार्वे ने ध्रुवों के यात्री और अन्वेषक तयार किये। वीर नानसेन और एमण्डसेन की स्मृति दिलाने वाली उनकी स्लेज गाड़ियां और कई

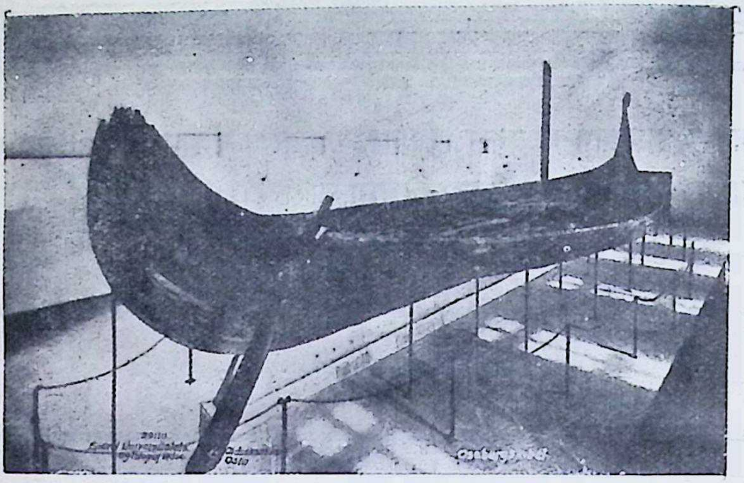

ओस्लो के अजायबघर में रक्खी हुई एक स्की बोट। यह बरफ और पानी दोनों पर चल सकती है।

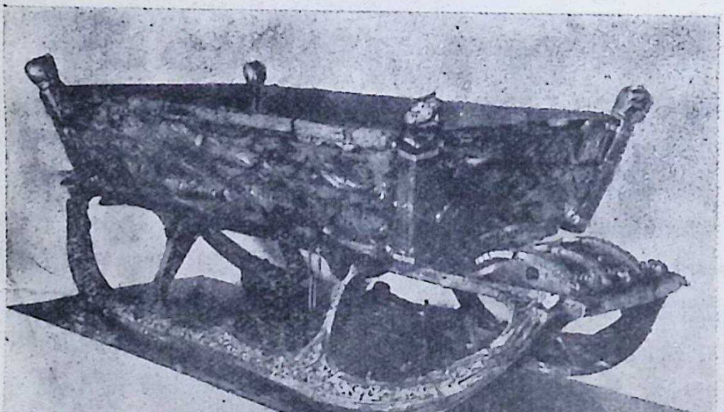

ओस्लो के अजायबघर की एक पुरानी स्लेज गाड़ी। पहिये न होने पर भी यह बरफ पर चलती थी।

और पहनने के लिये जांघिया मिलती है। यहां गरमी की ऋतु में भी बड़ा जाड़ा पड़ता है और हवा में नमी होने के कारण कपड़ा बहुत देर में सूखता है। इसलिये कोई नहाने वाला अपना कपड़ा भिगोना पसन्द नहीं करता है। कुछ ही देर स्नान करने पर

दूसरी चीजें रक्खी हुई हैं। आधा दिन ओस्लो के उस पार एक पुराने गिरजे और ग्राम्य जीवन के देखने में बिताया गया। लकड़ी से घिरा हुआ बाड़ा देवदारू का बन और शान्त वायु मंडल अपने गढ़वाल के पहाड़ी गांव की याद दिलाता है। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां की हृष्ट पुष्ट गायें, पढ़े लिखे और स्वाधीन किसान, बिजली से प्रकाशित स्वच्छ घर अपने देश के पहाड़ी भागों में बहुत कम देखने को मिलते हैं।

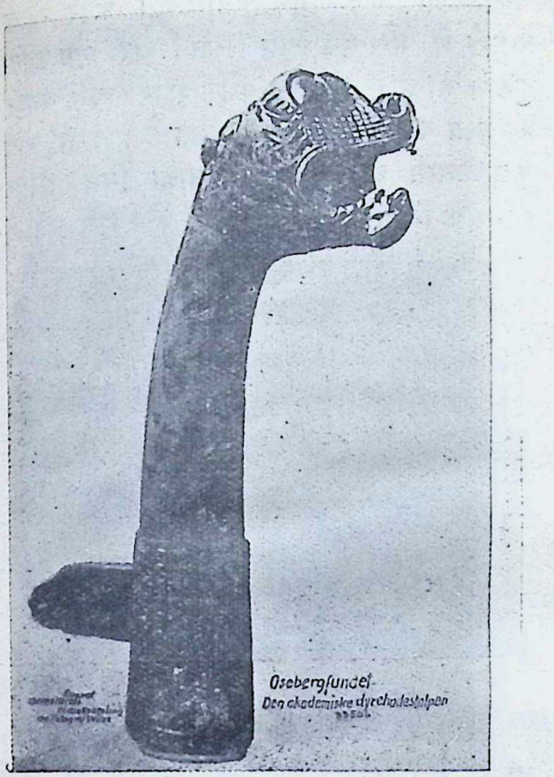

ओस्लो अजायबघर का एक विचित्र नमूना

ओस्लो का राष्ट्रीय भवन

ओस्लो के दर्शनीय स्थानों को देखने के बाद तीसरे दिन बर्गेन के लिये प्रस्थान किया। रेल के टिकट के अतिरिक्त यहां स्थान के लिये अलग टिकट लेना पड़ता है। जो लोग खिड़की के पास बैठते हैं उन्हें कुछ अधिक किराया देना पड़ता है। इस यात्रा के अद्भुत दृश्यों को देखने के लिये मैंने खिड़की के पास वाली ही जगह (सीट) ली। वह भी उस डब्बे में जहां सिगरेट पीने वाले न थे। यहां सिगरेट पीने वालों और न पीने वालों के लिये अलग अलग डब्बे रहते हैं।

ओस्लो में राष्ट्रीय भवन के सामने का दृश्य

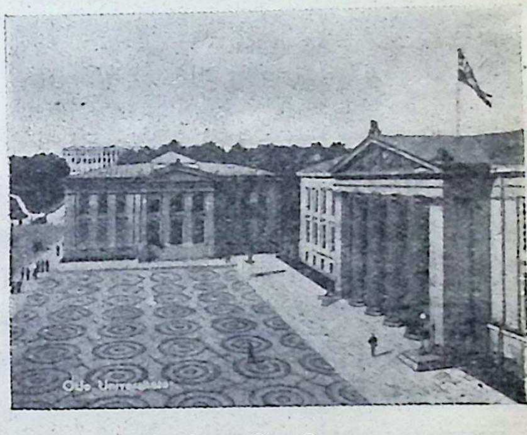

ओस्लो का विश्वविद्यालय

खिड़की के पास बड़ा लम्बा चौड़ा एक शीशा लगा था। इससे बाहर का एक दृश्य साफ दिखाई देता था। धूल से मुक्त स्वच्छ वायु मंडल में यहां की नङ्गी चट्टानें, हिमागार जंगली हिरण, लटकती हुई नदियाँ और हरे चरागाह बड़े सुहावने लगते थे। पहले गाड़ी चढ़ती गई। कुछ समय के बाद प्रायः समतल पठार मिला। स्टेशनों पर स्थानीय सुन्दर दृश्यों के चित्र बिकते थे। कहीं कहीं पर बरफ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेग को रोकने के लिये रेल की पटरी के दोनों ओर लकड़ी का विचित्र ढांचा बना हुआ था। शाम के समय गाड़ी बर्गेन के निकट पहुँची। लेकिन यहाँ की शाम कहीं दस बजे रात को होती है। बर्गेन के निकट फिर हरियाली का दृश्य मिला। एक अच्छे होटल का पता रास्ते में ही एक अँग्रेजी जानने वाली महिला ने बता दिया।

होटल में बड़ा आराम था। लेकिन रात के १२ बजे तक यहां नाच और गाना होता रहा। आज तैरने वालों का एक विशेष उत्सव था। तैरने के क्लब में लड़के और लड़कियाँ दोनों ही शामिल थे। बर्गेन नगर भी कई भागों में बसा है। समुद्र के पास वाले भाग में मछली का बाज़ार है। ऊपरी भाग में फर (नमदे) की दुकानें हैं। नमदे बड़े महँगे थे। लेकिन नमूने के लिये सील की खाल का बना हुआ जूता मैंने भी मोल लिया। दोपहर को यहाँ के पहाड़ी ट्रैम कार की यात्रा की।

ट्रैमगाड़ी के डब्बे मोटे मोटे फौलादी रस्सों से सधे रहते हैं और बिजली के जोर से चलते हैं। आने जाने के रास्ते एक हैं। जब एक ट्रैमगाड़ी ऊपर चढ़ती है तभी दूसरी गाड़ी नीचे उतरती है। नये लोगों को ऊपर चढ़ते समय डर लगता रहता है। ज़रा भूल हो तो डब्बा चकनाचूर हो जावे। लेकिन चलाने वाले बड़े अनुभवी होते हैं। ऊपर पहुँच कर ड्राइवर ने मेरा एक चित्र लिया। यहाँ एक छोटी सी दुकान भी है। चोटी से बर्गेन शहर और बन्दरगाह का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। इसी यात्रा में कुछ जर्मन और इटेलियन यात्री मिले जो उत्तरी भाग के निशाथ (आधी रात के) सूर्य को देखने जा रहे थे। कौन जानता है कि ऐसे ही लोगों ने नार्वे के फौजी भेद बाहर पहुँचाये हैं। कुछ बुड्ढे अँग्रेज़ मछली पकड़ने और सैर करने आये थे। नार्वे देश में मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों की अधिकता है। बहुत सी लड़कियों का व्याह नहीं हो पाता है। उन्हें अविवाहित जीवन बिताना पड़ता है। पर वे शिक्षा से सम्पन्न होती हैं।

तीसरे दिन स्टीमर द्वारा बर्गेन से न्यूकासेल (ब्रिटेन) के लिये प्रस्थान किया।

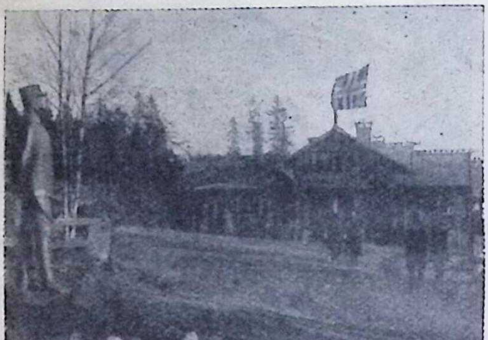

खेल का क्लब घर और स्टैचू (विशाल मूर्ति।)

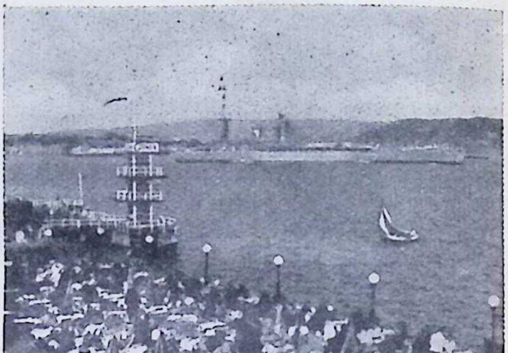

ओस्लो का समुद्र-तट

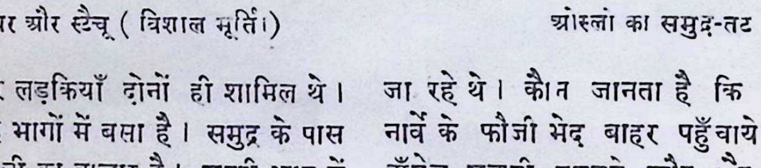

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंगापुर का बड़ा बन्दरगाह

एशिया के दक्षिणी सिरे पर स्थित होने के कारण सिंगापुर संसार का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र हो गया है। यह समुद्री मार्गों का चौराहा है। इस बन्दरगाह से दक्षिणी-पूर्वी एशिया डच पूर्वी द्वीपसमूह स्याम, फ्रान्सीसी, इण्डो चीन और बोरन्यू द्वीप की उपज दूसरे देशों को भेजी जाती है। इस बड़े बन्दरगाह पर भांति भांति के जहाज दिखाई पड़ते हैं। भारतवर्ष, योरुप, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान और अमरीका को जाने वाले बड़े जहाज इस बन्दरगाह पर ठहरा करते हैं। मछली मारने वाले और दूसरे छोटे जहाज भी बहुत बड़ी संख्या में यहाँ रहते हैं।

सिंगापुर का बन्दरगाह समुद्री द्वीपों से घिरा हुआ है। यह संसार के सर्वप्रसिद्ध तथा सुन्दर बन्दरगाहों में गिना जाता है। यहाँ आने वाला माल प्रधान घाटों पर जाने के पहले ही उतार लिया जाता है और तब सामान ले जाने वाले स्टीमरों तथा बोटों से गोदामों को पहुँचाया जाता है। सिंगापुर की नदी सिंगापुर नगर के बीच होकर बहती है, इसलिये छोटे बोटों तथा स्टीमरों द्वारा सामान जहाजों पर लादा उतारा जाता है। गोदाम में पहुँचाने और वहां से सामान लाने का काम सामान ढोने वाले स्टीमरों से ही लिया जाता है।

सिंगापुर बन्दरगाह का समुद्र काफी गहरा है, इसलिये ४० हजार टन (११,२०,००० मन) तक के जहाज प्रधान घाटों तक सुगमता पूर्वक जा सकते हैं। यहाँ ज्वारभाटा केवल ९ फुट ऊँचा आता है, इसलिये सभी समय जहाज घाटों को आ जा सकते हैं। ड्राई डाकों (सूखे घाटों) पर ही जाने के लिये जहाजों को नियत द्वार में होकर जाने की कठिनाई उठानी पड़ती है।

सिंगापुर का बन्दरगाह अपने नाम के द्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। यहाँ टेबराऊ नामक जल-संयोजक द्वारा मलय प्रायद्वीप से अलग है। जोहोर स्थान पर इस जलसंयोजक में पुल बना हुआ है। इस पुल द्वारा एक रेलवे लाइन तथा पक्की सड़क मलय प्रायद्वीप को जाती है।

सिंगापुर और उसके चारों ओर के द्वीपों का क्षेत्रफल मिला कर २१७ वर्गमील है। सिंगापुर के उत्तर-पूर्व की ओर मलक्का जल-संयोजक है। मलक्का जलसंयोजक प्रायद्वीप को सुमात्रा द्वीप से अलग करती है। पश्चिम की ओर हिन्द महासागर को चीन सागर से मिलाते हैं। सिंगापुर के दक्षिण की ओर बहुत से छोटे छोटे द्वीप तथा सुमात्रा द्वीप समूह हैं।

जब से स्टीमशिप जहाज चलने लगे और जापान चीन के कारखाने खुल गये, तब से सिंगापुर का स्वेज नहर के सुगम मार्ग ने भी इस में सहायता दी। पूर्वी द्वीप समूह का भी बहुत सा व्यापार यहां हो कर जाता है

चीन सागर तथा प्रशान्त महासागर में हिन्द महासागर होकर जाने वाले सभी जहाज सिंगापुर हो कर जाते हैं। सुन्दर जहाजी सुविधा होने के कारण सिंगापुर पूर्वी द्वीप समूह के सामान को बाहर भेजने का केन्द्र बन गया है।

छोटे छोटे द्वीपों चट्टानों की अधिकता और संकरे मार्गों के होने के कारण छोटे छोटे बोटों द्वारा पूर्वी द्वीप समूह का सामान एकत्रित किया जाता है और फिर स्टीमरों द्वारा सिंगापुर पहुँचाया जाता है।

प्राचीन समय में सिंगापुर का बन्दरगाह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था किन्तु जावा निवासियों ने इसे बर्बाद कर डाला, जो लोग शेष बच रहे उन्होंने जा कर मलक्का का द्वीप बसाया। पश्चिमी लोगों में पुर्तगाली लोग पहले पहल पूर्वी द्वीप समूह में आये और उन्होंने सिंगापुर बन्दरगाह पर अपना अधिकार जमाया।

उसके पश्चात् डच और अँग्रेज मलक्का में आये। मलक्का कभी तो अंग्रेजों के और कभी डच लोगों के अधिकार में रहा। जब अँग्रेजों और डच में संधि हो गई तो मलक्का डच लोगों को मिला। इस पर सर स्टैम्फोर्ड रैफिल्स ने ठीके पर सिंगापुर नदी पर जगह बन्दरगाह बनाने के लिये लिया जिससे उसका विचार चारों ओर के व्यापार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने हाथ में करने का था। इस प्रकार रैफिल्स ने १८१९ ई० में सिंगापुर के आधुनिक बन्दरगाह की नींव डाली।

रैफिल्स ने सिंगापुर को एक स्वतंत्र बन्दरगाह बनाया जिसके कारण हर एक प्रकार के व्यापारी शीघ्र ही यहाँ इकट्ठा हो गये। व्यापार की स्वतंत्रता होने के कारण यह बन्दरगाह शीघ्र ही उन्नति करने लगा। इसके उन्नति करने से डच लोगों को बहुत धक्का पहुँचा और रोहियो आर्चीपेलागो का बन्दरगाह नष्ट हो गया। १८५७ तक यह बन्दरगाह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ रहा। १८५७ के भारतीय ग़दर के बाद यह बन्दरगाह भारतीय सरकार के हाथ चला गया। इसके बाद यह अँग्रेजों की कालोनी बना लिया गया। यहाँ रैफिल्स के आने के पहले लुटेरे जहाज तथा मल्लाह रहते थे और वे व्यापारिक जहाजों को लूट लिया करते थे। बाद को वे डाकू जंगलों की ओर चले गये और लूट पाट बन्द हो गई।

सिंगापुर द्वीप की जन संख्या ५,६७,००० है। इसके तिहाई लोग चीनी हैं। मलय लोग कुल जनसंख्या के केवल आठवें भाग हैं,८२०० लोग योरुपीय हैं। लगभग मलय लोगों के बराबर हिन्दुस्तानी हैं। इसके अलावा अरब, जापानी, यूरेशियन और दूसरे लोग हैं।

यहां के मलय लोग मुसलमानी धर्म को मानते हैं, इसलिये अधिकतर यात्री सिंगापुर से जिद्दा बन्दरगाह को जाते हैं और वहाँ से हज्ज करने के लिये मक्का मदीना जाते हैं। इनके सिवा हिन्दुस्तानी, चीनी, जापानी और पूर्वी द्वीप समूह के निवासियों की भीड़ सिंगापुर के जहाजों में रहती है।

सिंगापुर में सब से पहला जहाज १८४० ई० में केप आफ गुड होप हो कर आया था। १८४५ ई० में पोस्ट आफिस वाला जहाज आया। सिंगापुर के जहाजी घाट टंजोंग पागर डाक कम्पनी के बनाये हुये हैं। यह कम्पनी १८६३ ई० में स्थापित हुई थी। १९०५ ई० में ब्रिटिश सरकार ने डाकों का प्रबन्ध अपने हाथ में लेकर सिंगापुर हार्बर बोर्ड को दे दिया।

सिंगापुर हार्बर का क्षेत्रफल ३६ वर्ग मील, बाहरी हार्बर ११.८ बर्गमील और पश्चिमी एंकोरेज २०.४ बर्ग मील है। भीतरी हार्बर को बचाने के लिये १ मील लम्बा एक टीला है। यह टीला पूर्व से बहने वाली प्रचण्ड वायु को बन्दरगाह में आने से रोकता है। इस टीले में १५० फुट से ३०० फुट लम्बे ४० जहाजों के रहने के लिये स्थान बने हैं।

पश्चिम की ओर द्वीपों में तेल रखने की टंकियां और दूसरे सामान रखने के लिये गोदाम बने हैं। इसी भाग से पिट्रौल दूसरे देशों को भेजा जाता है। वेस्ट सेन्ट जान द्वीप में कैरेन टाइन (रोके जाने वाले जहाज) स्टेशन है। हार्बर के पूर्व की ओर समुद्री तथा हवाई वायुयानों के ठहरने का सिविल एरोड्रोम (हवाई स्टेशन) है।

सिंगापुर के दक्षिण की ओर सिंगापुर नदी पर ऐन्डर्सन तथा और दूसरे पुल बने हुये हैं। इन पुलों में होकर लोग सिंगापुर जाते हैं। जहाजों पर आने वाले मुसाफिर बोटों द्वारा जान्स्टन पाएर और कोलरे घाटों को आते हैं। इसके दक्षिण की ओर घाट तथा बेसिन हैं। पश्चिम की ओर चलने पर केपेल हार्बर है। यह हार्बर द्वीपों से घिरा हुआ है। इसमें टंजोंग पागर का प्रधान घाट, पश्चिमी घाट, जार्डिन घाट और दूसरे घाट हैं। इसके सिवा सूखे घाट (ड्राई डाक) हैं जो भीतरी हार्बर तक फैले हुये हैं।

१९३६ ई० में इन घाटों की लम्बाई ११,१२९ फुट थी। घाटों को और बढ़ाने का काम चल रहा है। मेन (प्रधान) तथा पश्चिमी घाटों के पानी का गहराई शान्त दशा में ३३ फुट रहती है। इनमें ४४१२ फुट लम्बे बांध बने हैं। प्रधान और पश्चिमी घाट के बीच में होकर एम्पायर घाट को जाने का मार्ग है। इस घाट का क्षेत्रफल २५ एकड़ और गहराई ३० फुट है।

कारखाने वाले देशों के दूर स्थित होने के कारण सिंगापुर में ड्राई डाक (सूखे घाट) काफी और अच्छे और सुन्दर हैं। यहां जहाजों की मरम्मत करने का भी अच्छा प्रबन्ध है।

सूखे डाकों में किंग्स डाक सबसे बड़ा है, इसकी लम्बाई ८७९ फुट है। यह द्वार पर १०० फुट चौड़ा और ३४ फुट गहरा है। यह घाट दो भागों में बंटा है। पहला भाग ४८६ फुट और दूसरा ३२५ फुट है।

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे ३० टन (८४०मन) की बिजली से चलने वाली एक क्रेन है। दूसरे चार ड्राई डाकों की लम्बाई ३९६ फु० ६ इञ्च, ४६३ फुट, ४८४ फुट ९ इञ्च और ४६६ फुट ७ इञ्च है।

योरुप की भांति यहाँ क्रेनों का प्रयोग नहीं होता क्योंकि यहाँ के कुली शीघ्र ही सस्ते दामों में जहाजों का सामान लाद उतार सकते हैं। यहां पर लम्बवत् ठेले पाये जाते हैं जो ६० टन (१६८० मन) बोझ उठा सकते हैं। इसके अलावा स्टीम, पिट्रौल और बिजली से चलने वाली क्रेनें हैं जो १५ टन (४२० मन) बोझ उठा सकती हैं।

यहाँ के बन्दरगाह में कोयला ही ऐसा है जो अधिक उतारा और चढ़ाया जाता है। इसे कुली लोग उतारते और चढ़ाते हैं। दो कुली १६० पौंड कोयले की टोकरी बहंगी के सहारे ले जाते हैं। इस प्रकार शीघ्र ही थोड़े खर्च से कोयले का काम हो जाता है और जहाज को लंगर डालने की आवश्यकता भी नहीं होती।

सामान को उतारने और चढ़ाने वाले बोट ५० से १०० टन (१४०० से २८०० मन) तक बोझ ले जा सकते हैं। इसके सिवा भाप तथा मोटर बोट भी हैं। डूबते हुये जहाजों के बचाने के लिये भी बोट हैं जो समय पर काम देते हैं। इनमें वरुना और टूंडा प्रसिद्ध स्टीमर हैं जो आग बुझाने का काम करते हैं। वरुना ६०० टन (१६८००मन) और टूंडा ३०० टन (८४०० मन) प्रति घंटा पानी फेंक सकते हैं।

सभी घाटों पर पम्प बिछे हुये हैं, जिनके द्वारा गरी का तेल और दूसरे तेल जहाज में भरे तथा उतारे जाते हैं।

भिन्न भिन्न प्रकार का सामान इतना अधिक सिंगापुर में आता है, कि उसको अलग करने के लिये अलग नियमित स्थान बनाया गया है। भारतवर्ष, बर्मा और चीन से मटर सिंगापुर आती है और फिर वहां से सुमात्रा भेजी जाती है। सेंवई और खली चीन से आती है और डच पूर्वी द्वीप समूह में भेजी जाती है। चीनी लोगों के लिये एचिनोडेर्म (एक समुद्री जीव) फिलीपाइन से और शार्क मछली भारतवर्ष से चीनी लोगों के खाने के लिये आती है। चीन और भारतवर्ष से सूखे फल आते हैं और डच पूर्वी द्वीप समूह और स्याम को भेजे जाते हैं। मिस्र से अचार आता है और सुमात्रा भेजा जाता है। जेंजीबार से लौंग आती है और चीन तथा स्याम भेजी जाती है। मोरक्को से धनिया आती है और वह जावा भेजी जाती है। चावल फ्रान्सीसी इन्डो-चीन से, टीन स्याम से, पिट्रौल, रबर और टीन डच पूर्वी द्वीप समूह से बहुत बड़ी मात्रा में आते हैं और बाहर को भेजे जाते हैं।

मलाया का पिट्रौल, टीन, मोटर कार, सूती कपड़े लोहा, फौलाद, टायर और रसायन आदि भी काफी संख्या में बाहर भेजी जाती हैं।

सिंगापुर में स्ट्रेटस स्टीमशिप कम्पनी के समुद्री तटीय जहाजों का बड़ा बेड़ा है। ये जहाज ५० टन २००० टन तक के हैं। इस बेड़े का 'केदाह' नामक जहाज २४९९ टन का है। यह पिनांग को जाता है और लगभग २० घंटे में यात्रा समाप्त करता है।

वर्तमान परिस्थिति में लोगों का स्वाभाव हो गया है कि वह ब्रिटिश साम्राज्य के बेधनीय बिन्दों की चर्चा बहुत करते हैं। पूर्वी संसार में सिंगापुर की चर्चा बहुधा की जाती है। यह स्थान प्रशान्त तथा हिन्द महासागर के व्यापारिक मार्गों को अपने अधिकार में किये हुये है। यहाँ की रक्षा के लिये अँग्रेजों ने सभी प्रकार के प्रबन्ध किये हैं और भारतीय सैनिकों की मोर्चा बन्दी की है। सिंगापुर पर किसी प्रकार का आक्रमण क्यों नहीं हो रहा है इस का उत्तर संक्षिप्त रूप से इस लेख में दिया जा रहा है।

१९१४-१८ ई० का महासमर "सभ्यता" के लिये लड़ गया था। वर्तमान महासमर संसार की बची हुई स्वतंत्रता, स्वाधीनता, अधिकार और सभ्यता के लिये लड़ा जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय ठग लोग उन राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं जो संसार के प्राणी मात्र के बीच में शान्ति स्थापित रखना चाहते हैं। इंगलैण्ड ने दबाये हुये राष्ट्रों की ओर से युद्ध में हथियार उठाया है।

साम्राज्य के बेधनीय बिन्दों के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। इस लेख में हम उसका अध्ययन साधारण रूप में करते हैं। आर्थिक हानि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवा अँग्रेजी साम्राज्य के मध्यवर्ती भाग पर सामने से एक प्रधान आक्रमण किया जा सकता है अथवा साम्राज्य के किसी बगली हिस्से पर आक्रमण हो सकता है जिससे साम्राज्य को खण्ड-खण्ड कर देने की सम्भावना हो सकती है।

मध्यवर्ती भाग पर सामने की ओर से प्रधान आक्रमण करने की सम्भावना कम है क्योंकि इस प्रकार के आक्रमण में शत्रु को बड़ी भारी हानि उठानी पड़ेगी और शत्रु के विजय की आशा भी बहुत कम है इसलिये ऐसा आक्रमण करने के लिये कोई भी चतुर सेनापति तयार नहीं हो सकता। अँग्रेज लोग सारे प्रशान्त महासागर पर अधिकार जमाये हुये हैं। अँग्रेजी हवाई बेड़ा की वृद्धि भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है। वायुयान संहारिणी तोपों और दूसरे रक्षक अस्त्रों के सामने ऐसे आक्रमण का सफल होना कठिन है।

दूसरे प्रकार के आक्रमण के बारे में यह विचारणीय बात है कि यह आक्रमण किस स्थान पर किया जा सकता है। इसके लिये साधारण रूप से तीन स्थान माल्टा, जिब्राल्टर और मिस्र की गणना होती है। इन तीनों स्थानों में से किसी एक के निकल जाने से कुछ गड़बड़ी अवश्य ही पड़ सकती है परन्तु साम्राज्य छिन्न-भिन्न नहीं हो सकता। इस प्रकार के आक्रमण को सफलता में अँग्रेजों का समस्त समुद्र पर जो अधिकार है उससे रुकावट पड़ सकती है परन्तु अधिक हानि नहीं हो सकती तो फिर बगली आक्रमण कहां हो सकता है, शायद ऐसा आक्रमण सिंगापुर पर किया जाय।

पूर्वी जिब्राल्टर

सर स्टेम्फोर्ड रैफिल्स ने १८१९ ई० में लार्ड मिन्टो को लिखा था कि सिंगापुर पूर्व का द्वार है और यह एक बड़ा आवश्यक क़िला होगा। परन्तु आज १०० वर्षों के पश्चात् सिंगापुर एक प्रधान क़िला बना है।

आज नाज़ी जर्मनी ने ब्रिटेन की सामुद्रिक शक्ति का सामना करने के लिये बीड़ा उठाया है। सिंगापुर ब्रिटिश साम्राज्य का एक प्रधान स्थान है। यदि प्रशान्त महासागर और सुदूर पूर्व का अध्यन किया जाय तो मालूम होगा कि प्रशान्त महासागर से हिन्द-महासागर के समस्त व्यापारी मार्ग मलक्का के जलसंयोजक हो कर जाते हैं। दूसरे मार्ग अधिक लम्बे तथा ख़तरनाक हैं इसलिये व्यापारी लोग उनका प्रयोग नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार रूम सागर में घुसने से पश्चिम की ओर जिब्राल्टर रखवाली करता है उसी प्रकार पूर्व की ओर सिंगापुर रखवाली करता है।

युद्ध घोषणा के पश्चात् से अन्तर-राष्ट्रीय सम्बन्ध का काया पलट हो गया है। अँग्रेजों का सम्बन्ध जापान से युद्ध के पहले अधिक तना हुआ था परन्तु अब वह ढीला पड़ गया है। रूस की भविष्य नीति का अन्दाज़ अभी नहीं लगाया जा सकता है। वह आगे चल कर किस मार्ग का अनुसरण करेगा यह निश्चय करना कठिन है। रूस तथा जर्मनी एक दूसरे से समान रूप से भय खाते हैं और उन्होंने रूमानिया की सीमा पर अधिकार जमा लिया है।

यदि रूस और इँगलैण्ड से शत्रुता बढ़ गई तो रूस मिस्र अथवा पेलेस्टाइन पर आक्रमण करेगा। इस सम्बन्ध में बालकन राज्यों और टर्की का रूख जिधर होगा उसी ओर की विजय होनी सम्भव है यद्यपि युद्ध में बड़ी कठिनाई का सामना करना होगा।

कहा जाता है कि रूस का आक्रमण भारत पर भी हो सकता है परन्तु भारतीय सीमा की प्राकृतिक रूप से रक्षा है इसलिये उसपर आक्रमण करने वाले को भाषण कठिनाई का सामना करना होगा और बहुत अधिक हानि उठानी पड़ेगी। इसलिये भारत पर रूसी आक्रमण की सम्भावना हो ही नहीं सकती।

जापान ही पूर्वी परिस्थिति को सुलझाने के लिये शेष रह जाता है। यदि वह तटस्थता को त्याग देता है और युद्ध में कूद पड़ता है जिसकी सम्भावना बढ़ने के सिवा कम हो रही है।

यह बात मामूली तौर पर मानी जाती है कि बर्तमान समय में जापान सुदूर पूर्व के समुद्रों में अधिक शक्तिशाली बना हुआ है। उसके समुद्री जहाजों की संख्या तथा तोपों की शक्ति अधिक है। इस शक्ति के कारण ही जापान ने चीन सागर पर अधिकार जमा लिया परन्तु उसका यह अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़िसी भी समय अँग्रेज़ों द्वारा सरलता पूर्वक छीना जा सकता है।

यदि संयुक्त राष्ट्र अमरीका मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में कूद पड़ता है तो फिर अँग्रेज़ों की धाक प्रशान्त महासागर में जम जावेगी और अँग्रेज़ों की सामुद्रिक कठिनाई का प्रश्न हल हो जावेगा! यदि सिंगापुर में आक्रमण होता है और उस पर जापानी अधिकार हो जाता है तो इस कार्य में जापान को अवश्य ही किसो दूसरे की सहायता लेनी पड़ेगी और चीनसागर में जापान का अधिकार फिर अधिक समय तक रहेगा।

इस समय उपमा के रूप में यह बात देखनी आवश्यक है कि किन कारणों से १९१४ ई० में जापान ने टसिंगटाव पर अधिकार जमाया था।

यह स्थान जर्मनी के अधिकार में था। जर्मनी ने इस पर १८९८ ई० में अधिकार जमाया था। जर्मनी ने अपने प्रशान्त महासागर के जहाज़ी बेड़े का अड्डा इसे बना रक्खा था। वह इसे उत्तरी चीन में जर्मन प्रचार करने के लिये भी प्रयोग करता था। कहा जाता है कि जर्मनी ने टसिंगटाव के किले तथा अड्डे के बनाने में ८०,०००,००० पौंड (लगभग १,२००,०००,००० रु०) व्यय किया था। यह स्थान सुदृढ़ तथा सुरक्षित था और सभी वर्तमान रक्षक यंत्र वहां पर बर्तमान थे तो भी जापानी तथा अँग्रेज़ी सेना ने मेजर जनरल एफ० पी० नोस वर्धी, डी० एस० ओ०, एम० सी० की संरक्षता में उस पर अधिकार जमा लिया था।

इस क़िले पर रक्षा के लिये चार प्राकृतिक लाइनें थीं। क़िले में ५३ बड़ी तोपें ७७ छोटी तोपें और ४७ मशोनगनें लगी हुई थीं। कुल जर्मन सैनिकों की संख्या ६ हज़ार थी।

जापानी लोगों ने टसिंगटाव की दशा का भली भांति परिचय ले लिया था उन्हें यह बखूबी मालूम था कि उन्हें किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। ५० हज़ार सैनिक १२ हज़ार घोड़े, १०२ बड़ी तोपें, ४२ मैदान तथा पर्वत वाली तोपों के साथ जापानी आक्रमण हुआ। इस बड़ी सेना की सहायता के लिये ७० जहाजों का जापानी बेड़ा था। यह जहाजी बेड़ा तीन भागों में आक्रमण करने के लिये बांट दिया गया था। क़िले पर अधिकार करने में ७५ दिन लगे थे।

इस उदाहरण से हमारा मतलब यह है कि तटीय स्थानों की रक्षा क़िस प्रकार हो सकती है और उस पर विजय प्राप्त करना कितना कठिन होता है। सिंगापुर का वन्दरगाह सिंगटाव से कहीं अधिक सुदृढ़, मजबूत और सुरक्षित है।

१९१४ ई० में चीन सागर में जापान का पूरा अधिकार था। जापान की शक्ति जर्मन शक्ति की १२ गुनो थी। जापानी तोपें जर्मन तोपों से कहीं अधिक अच्छी थीं तो भी क़िले पर अधिकार करने में ७५ दिन लग गये थे और बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। आज जापान चीनी-युद्ध के कारण शक्तिहीन हो रहा है। वह चीन सागर का पूर्ण रूप से म लक भी नहीं है। इसलिये कोई भी चतुर-सुजान सेनापति सिंगापुर विजय करने के लिये तयार न होगा। इस प्रकार सिंगापुर भारत को रक्षा के लिये एक प्रधान रक्षक है।

यदि अँग्रेज़ों का मलक्का जलसंयोजक से अधिकार हट गया तो फिर अवश्य ही भारत पर भयानक खतरा हो जावेगा और पैन-नियम नीति एक अत्याचारी के रूप में प्रकट होगी।

हमारा कहना है कि जब तक इंगलैंड की समुद्री शक्ति का नाश नहीं होता तब तक सिंगापुर पर क़िसो भी विदेशी राज्य का अधिकार नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष की उत्पादक शक्ति

भारतवर्ष में मूङ्गफली, तिल, जूट-पाट और तेलहन की वस्तुएं बहुत पैदा होती हैं। भारत में जूट संसार भर के समस्त देशों से अधिक होता है। चावल, चाय और ईख की उपज में भारत का नम्बर संसार में सर्व प्रथम तथा रूई, तम्बाकू और मैगनीज में दूसरा नम्बर है। अल्सी की उपज में भारत का तीसरा स्थान है।

संसार में जितनी उपज होती है उसका ९ प्रतिशत गेहूँ, ४२ प्रतिशत चावल, ३० प्रतिशत पशु, ५ प्रतिशत भेड़, ७ प्रतिशत मछली और ३१ प्रतिशत रुई भारत में होती है। मैगनीज की उपज में रूस के पश्चात् भारत का ही स्थान है। जस्ते की उपज में भारत को ग्यारहवां स्थान है। पिट्रोल के निर्यात में भारत का तेरहवां और लकड़ी की उपज में पन्द्रहवां स्थान है। कोयले की उपज में भारत का स्थान नवां, बुझे हुये पत्थर के कोयले में ग्यारहवां, कच्चे लोहे में आठवाँ, फौलाद तयार करने में ग्यारहवां, रबर में सातवां, सोने में ग्यारहवां और चांदी की उपज में नवां भाग है।

ब्रिटिश साम्राज्य में भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयम् कर सकता है।

सुरमा

भारत में सुरमा तयार करने के लिये कच्चा सामान इतना नहीं है जिसका अर्थशास्त्र की दृष्टि से महत्व हो सके। बरमा और स्याम की सीमा में एक छोटी सुरमा की खान है।

आस्बेस्टास

भारत में भारतीय सिमेन्ट और विदेशी अस्बेटास से आस्बेस्टास सिमेन्ट के टुकड़े तथा खपड़े आदि तयार किये जाते हैं।

सिमेन्ट

भारतवर्ष में बड़ी अच्छी सिमेन्ट तयार की जाती है। यह ब्रिटिश द्वारा प्रमाणित सिमेन्ट से कहीं अच्छी होती है।

रसायन

कास्टिक सोडा और सज्जी तयार करने के लिये कारखाने खोले जा रहे हैं।

नारियल की जटा तथा सन

नारियल की जटा और पटसन की रस्सियाँ, चटाइयाँ, जाल आदि भारत में बहुत तयार किये जाते हैं और अधिक मात्रा में तयार किये जा सकते हैं।

तांबा

भारत में तांबे की एक खान तथा कारखाना है। कारखाने में भारतीय तांबा तयार किया जाता है। इस कारखाने का अधिकांश ताँबा घरेलू बर्तनों में प्रयोग किया जाता है।

बिजली बल्ब

भारतवर्ष में भी गैस तथा बिजली के सभी प्रकार के बल्ब तयार किये जा सकते हैं।

बिजली के तार

इस प्रकार के तार के तयार करने के लिये भारत में एक कारखाना है परन्तु तांबे का तार बाहर से आता है। कपड़े, कागज और रबर में भी इस कारखाने में तार तयार किया जाता है।

इन्सुलेटर (अलग करने वाली वस्तु)

इन्सुलेटर और दूसरे प्रकार के मिट्टी के सामान भारत में तयार किये जा सकते हैं। बहुत से कारखाने में किरणवक्रता की वस्तुएं बनाई जाती हैं।

कपोक

कपोक के स्थान पर एक दूसरी वस्तु भारत में प्रयोग करने के लिये तयार की जाती है।

लाह या लाख

भारतवर्ष में लाह बहुत होती है और संसार के सभी देशों में भेजी जाती है।

सीसा

भारतवर्ष में सीसा-बरमा से आता है। भारत से बाहर सीसा नहीं जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैगनीज़

भारतवर्ष में मैगनीज़ बहुत ज्यादा पाई जाती है।

तेल के इंजिन

भारत में मिट्टी के तेल से चलने वाले इंजिनों के बनाने का एक कारखाना है। एक दूसरी कम्पनी और इंजिनों के तयार करने के लिये खुल रही है।

लेप और वारनिश

भारत में इन वस्तुओं के तयार करने की बड़ी शक्ति है परन्तु यह शक्ति आयात वाली वस्तुओं पर निर्भर है।

नल तथा ट्यूब

लोहे के नल भारत में बहुत ज्यादा तयार किये जा सकते हैं। बिजली वाले तथा फौलाद के नल भी भारत में कुछ तयार किये जाते हैं।

गन्धक तथा गन्धकी तेज़ाब

गन्धक से गन्धकी तेजाब भारत में खूब तयार किया जा सकता है।

राल

भारत में भारतीय सामान से कई प्रकार की राल तयार की जा सकती है।

लकड़ी

गत (१९१४) महायुद्ध में भारत ने मैसोपोटामिया, मिस्र, पैलेस्टाइन, सेलोनीका आदि स्थानों की आवश्यकताओं को अपनी लकड़ी से पूरा किया था। बरमा में सख्त लकड़ी बहुत पाई जाती है। इस प्रकार की लकड़ी दक्षिणी भारत और अंडमान द्वीप में भी पाई जाती है।

टीन

स्ट्रेट सेटिलमेन्ट्स के ऊपर भारत टीन के लिये निर्भर करता है। वहां से मिलने पर भारत टीन का सामान तयार करता है।

भारतवर्ष को योरुप के व्यापार में बहुत बड़ा धक्का पहुँचा है भीषण हानि उठानी पड़ी है। भारतीय व्यापार की व्याख्या करने पर पता चलता है कि भारत को निर्यात में जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, इटली और चेकोस्लोवेकिया से हानि पहुँची है क्योंकि वह वर्तमान योरुपीय महासमर के कारण इन देशों को सामान नहीं भेज सका है। भारत को जर्मनी हालैण्ड, बेल्जियम, इटली, चेकोस्लोवेकिया और आस्ट्रिया से सामान मँगाने की भी हानि हुई है क्योंकि वहाँ से युद्ध के कारण सामान नहीं आ सका है। युद्ध के कारण कच्चा जूट, जूट का सामान, तेलहन, चमड़ा, चावल, चाय, खली आदि वस्तुएँ बाहर जानी बिलकुल बन्द हो गई हैं।

भारतीय सामान का अप्रैल से अगस्त तक का निर्यात

		सन् १९३९	१९४०	कमी
१	चाय	८४१ लाख	७२१ लाख	१२० लाख
२	चावल	१२५ ,,	११५ ,,	१० ,,
३	मैगनीज़	७२ ,,	५६ ,,	१६ ,,
४	खली	८१ ,,	४१ ,,	४० ,,
५	मूङ्गफली	३९२ ,,	२१२ ,,	१८० ,,
६	कच्चा जूट	४७० ,,	४४६ ,,	२४ ,,
७	कच्चा ऊन	१२९ ,,	६६ ,,	६३ ,,
८	चमड़ा (कच्चा)	३७ ,,	३५ ,,	२ ,,
९	पक्का चमड़ा	१११ ,,	७९ ,,	३२ ,,
१०	ऊनी दरी (कालीन)	४३ ,,	३७ ,,	६ ,,
११	नारियल की जटा	५२ ,,	३६ ,,	१६ ,,
		२३५३ लाख	१८४४ लाख	५०९ लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल से अगस्त तक का भारतीय आयात

	सन् १९३९	१९४०	कमी
१—तेल आदि और दूसरे सामान	७१ लाख	६८ लाख	३ लाख
२—मादक वस्तुयें तथा दवायें	१०७ ,,	९९ ,,	८ ,,
३—चाकू तथा दूसरे औज़ार	२४६ ,,	२०३ ,,	४३ ,,
४—शीशी तथा मिट्टी के बर्तन आदि	६५ ,,	५५ ,,	१० ,,
५—प्राइम मूवर्स (बिजली के छोड़ कर)	९० ,,	४४ ,,	४६ ,,
६—बिजली की कलें	१२४ ,,	८४ ,,	४० ,,
७—सूती कपड़े	१३५ ,,	१०४ ,,	३१ ,,
८—कागज़ तथा बिसातखाने का सामान आदि	१५४ ,,	१४९ ,,	५ ,,
३—गाड़ियाँ	११० ,,	७७ ,,	३३ ,,
	११०२ लाख	८८३ लाख	२१९ लाख

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जनसंख्या का विभाजन

सर्व प्रथम जनसंख्या की गणना संयुक्त-राष्ट्र की सन् १७९० में हुई उस समय वहां की जनसंख्या ४,०००००० से कुछ ही कम थी। १९२० ई० में जनसंख्या १०६,०००,००० हो गई थी। वहाँ की जनसंख्या जिस प्रकार बढ़ी है वह नीचे दिये टेबुल से साफ साफ स्पष्ट है।

साल	जनसंख्या	बढ़ती
१७९०	३,९२९,२१४	...
१८००	५,३०८,४८३	३५·१
१८१०	७,२३९,८८१	३६·४
१८२०	९,६३८,४५३	३३·१
१८३०	१२,८६६,०२०	३३·५
१८४०	१७,०६९,४५३	३२·७
१८५०	२३,१९१,८७६	३५·९
१८६०	३१,४४३.३२१	३५·६
१८७०	३८,५८८,३७१	२२·६
१८८०	५०,१५५,७८३	३०·१
१८९०	६२,९४७,७१४	२५·५
१९००	७५,९९४,५७५	२०·७
१९१०	९१,९७२,२६६	२१·०
१९२०	१०५,७[illegible]	[illegible]

ऊपर के नकशे से पता चलता है कि ६० वर्ष के पश्चात् १८५० ई० में संयुक्त राष्ट्र की जन संख्या लगभग २३,०००,००० थी और जनसंख्या इस काल में ६ गुना बढ़ी। १९०० ई० में जनसंख्या ७६,०००,००० हो गई थी जिससे पता चलता है कि ५० साल के भीतर ही ३ गुने से अधिक जनसंख्या की बढ़ती हुई। उसके बाद २० साल के भीतर ही ३ करोड़ की वृद्धि हुई। उस समय १७९० ई० में वहाँ ४ लाख वर्ग मील में ४० लाख जनसंख्या थी। अब वहाँ ४ लाख वर्ग मील में ४ करोड़ ५० लाख लोग रहते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका की शेष भूमि जो १७९० के पश्चात् हुई है वह २,९८८,००० वर्ग मील है और इसमें ६ करोड़ लोग रहते हैं।

जनगणना के देखने से यह प्रतीत होता है कि कुल जोड़ पर जितनी अधिक वृद्धि हुई है उतनी वृद्धि प्रति सैकड़े पर नहीं हुई है। जैसे जैसे जनसंख्या प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक संख्या में बढ़ती है उतनी ही जनसंख्या प्रतिशत में कम वृद्धि होती जाती है।

१८६० ई० तक जिस प्रकार जनसंख्या की वृद्धि हुई है उसी हिसाब से लोगों ने ख्याल किया था कि जनसंख्या बढ़ती [illegible] लिंकन ने अपने जीवन के अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सालों में संयुक्तराष्ट्र की कांग्रेस में कहा था कि १९३० ई० में संयुक्तराष्ट्र की जनसंख्या १८७,०००,००० होगी। और दूसरे लोगों ने भी इसी प्रकार हिसाब लगाया था। उन लोगों ने इस बात का ध्यान नहीं दिया। वृद्धि तो अवश्य होगी किन्तु उसमें कमी प्रत्येक जनगणना में होती जावेगी। इस समय भूमि भी बहुत हो गई है और कहीं भी भूमि खाली नहीं है। संयुक्तराष्ट्र में मशीनों के कारण उपज में वृद्धि हुई है और लोगों के रहन सहन में भी उन्नति होगई है।

सब से पहले जनसंख्या की बढ़ती में कमी १८७०ई० में गृहक्रान्ति के समय हुई थी, उसके पश्चात् १८८० से १९०० तक जो कमी हुई थी वह पूरी हो गई। १९०० से १९१० ई० तक जनसंख्या में खास वृद्धि इसलिये हुई कि अधिक संख्या में लोग बाहर से आकर बस गये। जिन दस सालों में महायुद्ध हुआ था उसमें घटती की जनसंख्या अधिक हो गई थी। इसका मुख्य कारण यह भी था कि संयुक्त राष्ट्र में लोग युद्ध के कारण न जा सके थे। योरुप के निवासी अपने देशों की स्वतंत्रता के लिये वहीं युद्ध के लिये रुके थे और जो लोग दूसरे देशों या अमरीका में भी थे वे भी घर वापस बुला लिये गये थे। युद्ध के पश्चात् विदेशी निवासियों को अमरीका में जाकर रहने पर रोक लगा दी गई थी। संयुक्तराष्ट्र उस समय अपनी स्थिति और आगे जो उसकी जनसंख्या होगी उसका हिसाब लगा रहा था, जिससे वह अपनी दशा को सदैव अच्छी तरह कायम रख सके।

महायुद्ध में अमरीका के बहुत कम लोग मारे गये थे और देश में दूसरे कारणों से भी बहुत कम लोग मरे थे। तो भी युद्ध के व्यय के कारण और ४० लाख सेना तयार करने और उसमें से २० लाख लड़ाई पर भेज देने के कारण पैदा होने वालों की संख्या में कमी हो गई थी।

जनसंख्या का विभाजन

जिन कारणों से लोग किसी स्थान पर रहना पसन्द करते हैं उनमें से कुछ तो बिलकुल साफ तथा खुले हुए हैं किन्तु सभी कारणों का जानना असम्भव है और न उनका कोई अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। भूमि, जलवायु प्राकृतिक दशा, खनिज सम्पत्ति, सामान तयार करने तथा आवागमन के साधन, जाति वर्ग और ऐतिहासिक घटनाएं आदि कारण स्पष्ट हैं जिनके कारण लोग किसी एक स्थान पर जाकर बसे हैं अथवा बस जाते हैं।

संयुक्तराष्ट्र के घने बसे प्रदेशों तथा कम बसे प्रदेशों की जनसंख्या में बहुत बड़ा अन्तर है। संयुक्तराष्ट्र की जनसंख्या का ९ भाग वर्षा वाले प्रदेशों में और दसवां भाग सूखे प्रदेश में बसा है। वर्षा वाले प्रदेश निचले तथा गर्म अधिक हैं वहां पर लोहे और कोयले की खानें भी बहुत हैं। इन भागों में बहुत पहले से ही लोग जाकर बस गये हैं और यह भाग योरुप के बहुत समीप है। मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर घने प्रदेश का ३/१० भाग है जिससे ७/१० जन संख्या का भाग बसा है। इस भाग से १७०० मील की दूरी पर प्रशांत महासागर के तट पर केवल १५ आदमी एक वर्गमील में निवास करते हैं।

मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर की उत्तरी रियास्तों की जनसंख्या सारे संयुक्तराष्ट्र की जन संख्या के आधी है किन्तु वहां का क्षेत्रफल कुल का केवल १/७ है। मिसीसिपी नदी के पूर्व की ओर दक्षिणी रियासतों की जनसंख्या कुल का १/७ और क्षेत्रफल १/२ है। मिसीसिपी के पश्चिम की ओर भूमि का २/३ भाग और जनसंख्या का १/३ भाग से भी कम है। पश्चिमी राज्य जो पहाड़ी तथा प्रशान्त महासागर के राज्य हैं वहां क्षेत्रफल २/५ है और जनसंख्या १/१८ है। पहाड़ी राज्यों की संख्या ८ है और क्षेत्रफल संयुक्तराष्ट्र का लगभग १/३ है किन्तु जनसंख्या केवल कुल का १/३१ है।

१९२१ ई० की जनगणना के हिसाब से सारे ग्रेटब्रिटेन में ३८९ आदमी प्रति बर्गमील और अमरीका में ३५५ आदमी प्रति बर्गमील में रहते थे। इंगलैण्ड में १९२१ ई० में एक बर्गमील में ७०१ आदमी और अमरीका के सबसे घने बसे राज्य रोडेद्वीप में प्रतिवर्ग मील में ५६६ आदमी रहते थे। १९२१ ई० में स्काटलैंड में १६० आदमी प्रति बर्गमील रहते थे। मध्यवर्ती अटलांटिक राज्यों की जनसंख्या उस समय २२२ मनुष्य प्रतिवर्ग मील थी।

१९२१ में वेल्स में २९५ आदमी प्रति वर्गमील में रहा करते थे। उस समय संयुक्तराष्ट्र में केवल ४ राज्य ऐसे थे जिनकी जनसंख्या वेल्स की जनसंख्या के हिसाब से थी। न्यूयार्क, बफ्फालो फिलाडेलफिया, पिट्सबर्ग और लगभग १२ राज्यों की जनसंख्या एक लाख से ५ लाख तक है।

संयुक्तराष्ट्र के पश्चिमी दो तिहाई भाग की जनसंख्या इनवर्नेस, रास और क्रोमार्टी की जनसंख्या में बहुत कम है। इङ्गलैंड के यह भाग संयुक्तराष्ट्र के पहाड़ी राज्यों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ½ हैं। नवादा राज्य में सबसे अधिक बिखरे लोग बसे हैं। वहां का क्षेत्रफल १०६००० वर्ग मील है और जनसंख्या ८० हजार है जो यूटीका, फोर्टवेने, या ओकलेहोमा या बोर्नमाउथ आदि नगरों की जनसंख्या से भी कम है। यह राज्य संयुक्तराष्ट्र के गृहयुद्ध के समय कांग्रेस की संख्या बढ़ाने के लिये सम्मिलित किया गया था। वहां पर सिंचाई के लिये पानी की बहुत कमी है। वहां की जनसंख्या वैसे की वैसी ही बनी रही या कारखानों की उन्नति तथा अवनति के साथ साथ घटती बढ़ती रही है। केवल ८ राज्यों की जनसंख्या ६० प्रति वर्गमील से अधिक है। इसमें दक्षिणी इँगलैण्ड, मध्य अटलांटिक राज्य, ओहियो, इलीनोएस आदि राज्य सम्मिलित हैं। इन भागों में अमरीका के अधिकांश कारखाने वाले प्रदेश हैं। शेष अधिकांश राज्य जो मिसीसिपी के पूर्व है वहां की जनसंख्या ४५ से ६० प्रतिवर्ग मील के हिसाब से है। टेक्साज़ राज्य की जनसंख्या का हिसाब १८ मनुष्य प्रति वर्गमील के हिसाब से है और वहां की जनसंख्या का जोड़ लगेरिया अथवा यूनान के बराबर है। कोलोरैडो को छोड़ कर सभी पहाड़ी राज्यों की जनसंख्या बहुत कम है और प्रति वर्गमील में केवल ६ आदमी रहते हैं।

शहरी तथा देहाती जनसंख्या

जनगणना के हिसाब से जहां २५०० से अधिक लोग रहते है वे नगर कारखाने वाले नगर गिने जाते हैं। नागरिकों में से बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अपनी जीविका खेती पर व्यतीत करते हैं। १७६० ई० में फिलाडेल्फिया नगर अमरीका का सब से बड़ा नगर था और वहां की जनसंख्या ४२,००० थी। उस समय अधिकांश लोग देहात में रहा करते थे किन्तु अब अधिकांश लोग नगरों में वास करते हैं। आवा-गमन के साधनों तथा कारखानों की उन्नति होने के कारण नगरों की जनसंख्या बढ़ गई हैं। यह बात १८८० ई० के पश्चात् हुई है।

१८८० ई०	२६·६	प्रतिशत शहरी
१६१० ई०	४५·८	,, ,,
१६२० ई०	५१·४	,, ,,

अब अमरीका निवासी अधिकतर नगरों में निवास करते हैं। सभी राज्यों में देहात की संख्या या तो घट रही है या उसमें बहुत धीरे धीरे बृद्धि हो रही है। इस कारण अमरीका में देहात में वापस जाकर रहने वाले आन्दोलन का जोर हो रहा है। देहात के अन्दर लोगों की सुविधाओं के लिये रैडियो, टेलीफोन, अच्छी सड़कों, गाड़ियों का अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया है। मशीन से चलने वाली गाड़ियों तथा मशीनों के प्रयोग करने के कारण देहात में अब लोगों को बहुत कम परिश्रम करना पड़ता है। लोगों को कृषि विभाग में ट्रेनिंग दी जाती है जिसके कारण लोगों ने खेती करने का पेशा फिर करना आरम्भ कर दिया है किन्तु खेती में मशीनों का प्रयोग होने से मजदूरों की बहुत कम आवश्यकता रह गई है। दक्षिणी प्रान्तों में लोग देहाती जीवन की लालसा से रहते हैं। जो लोग नगरों को नहीं त्यागना चाहते वे अपने समर हाउस (गरमी के घर) देहातों में बनाते हैं और वहां जाकर अपना गर्मी का समय व्यतीत करते हैं।

राज्यों की स्थापना होने तथा भूमि की कमी हो जाने के कारण अब लोग पहले से कम पश्चिमी प्रान्तों में जा कर बसे।

१६०० ई० के पश्चात् बहुत से स्थान खाली कर दिये गये और उनके स्थान पर नए स्थान बस गये हैं। यह परिवर्तन खेती की उन्नति तथा कारखानों के उन्नति के कारण हुआ है। ओकहामा की बस्ती का बसाया जाना, दक्षिण पश्चिम में मिट्टी के तेल के निकालने का काम होना, फ़्लोरीडा की खोज, बरमिङ्घम नगर का लोहे का केन्द्र बनना आदि बातें उदाहरण के रूप हैं जिसके कारण लोगों ने अपने निवास स्थान बदल दिये हैं।

नागरिक लोगों ने उत्तर की ओर अधिक संख्या में अपने निवास-स्थान का परिवर्तन किया है। इसका कारण यह है कि इस भाग में रेलों का जाल बिछा है, कारखाने बहुत हैं और नगरों में भी खेती का काम मशीनों द्वारा होता है। इस प्रदेश के आधे से अधिक नगरों की संख्या १ लाख से अधिक है और लगभग ३/४ हिस्से वाले नगरों की जनसंख्या २५ हज़ार से १ लाख तक है। उत्तर की ओर मज़दूरों की आवश्यकता पड़ जाने के कारण निगरो लोग उत्तर की ओर चले गये हैं। इस प्रकार निगरो लोग भी नगरों के निवासी हो गये हैं।

मेसेचुसेट्स राज्य बड़ा ही उन्नति शील तथा कारखाने वाला राज्य है। वहां की जनसंख्या ४० लाख है जिसमें मुश्किल से बीसवां भाग देहात में रहता है। १० सालों के भीतर ही वहां के नगरों की जनसंख्या १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख से अधिक हो गई जब कि देहाती जनसंख्या में कई हज़ार की कमी हो गई थी। रोडे आइलैण्ड में देहात में केवल चालीसवें भाग के लोग रहते हैं। न्यूयार्क की जन-संख्या एक करोड़ से अधिक है जिसमें से ८० लाख आदमी नगर में रहते हैं। बीस सालों के अन्दर नगरों की जन-संख्या में ३० लाख की वृद्धि और देहात में एक लाख पचहत्तर हज़ार की कमी हुई है। इस २० साल के समय में १ हज़ार नगरों में ३ नगरों को जनसंख्या कम हो गई है। न्यूयार्क नया होने के कारण अधिक उन्नति कर गया है। वहाँ की जनसंख्या बढ़ती गई क्योंकि वहां पर योरुप तथा इंगलैण्ड से लोग आकर बसते गये। न्यूयार्क के उन्नति का प्रभाव उत्तरी राज्यों के नगरों पर बहुत कम पड़ा है।

इल्लीनाइस (Illinois) राज्य को एक देहाती राज्य कहा जा सकता है, किन्तु वहां भी एक बहुत बड़ा नगर है और बहुत से कारखाने वाले केन्द्र हैं। वहाँ के नगरों की जन-संख्या देहात से दुगुनी है। आयोवा राज्य में कोई बड़ा नगर नहीं है। इस राज्य में कृषि का काम बहुत होता है और कोई भी राज्य इसका सामना खेती में नहीं कर सकता। यहाँ अधिकतर लोग देहात में रहते हैं। किन्तु पिछले २० सालों में, यहां के देहात की आबादी भी घट गई है।

उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों की तुलना दिखाने के लिये हम यहां पाठकों के सामने दो राज्यों की तुलना करते हैं। जार्जिया एक प्राचीन राज्य है। यह प्रथम १३ राज्यों में से एक राज्य है। वहां के प्रधान नगर की जन संख्या लगभग २½ लाख है और राज्य की ¾ आबादी देहात में है। पिछले २० साल में इस राज्य के नगरों की जन-संख्या दुगुनी और देहात की जन संख्या में भी कुछ वृद्धि हुई है। मिसीसिपी राज्य में नगर बहुत कम हैं और वह भी छोटे हैं उसमें राज्य की जन-संख्या का ⅘ भाग देहात में रहता है। देहात की जन-संख्या वहां भी बढ़ रही है किन्तु नगरों की जन-संख्या १९२० के बाद पहले से जार्जिया राज्य की भांति वहाँ भी दुगुनी हो गई है।

कैलेफोर्निया राज्य के शहरी निवासियों की संख्या देहाती निवासियों से दुगुनी है। नगरों तथा देहात दोनों स्थानों में जन-संख्या में वृद्धि हुई है। देहात की जन-संख्या १९०० से १९२० तक में २० प्रतिशत बढ़ गई है। इस राज्य में लोग स्थानों से अच्छी जलवायु, फल-फूल, दनदाने दार समुद्री तट, ऊँचे पर्वत तथा रोजगार के कारण आकर बस गये हैं। इस राज्य में लोग काम करने, अधिक परिश्रम से बचने, शराब पीने, आमोद प्रमोद करने के कारण देहात से नगरों में और नगरों से देहात में आकर बसे हैं। ओरेगान और वाशिंगटन राज्यों की दशा भी कैलेफार्नियां की भांति ही है।

केवल पहाड़ी राज्यों में ही देहात की जन-संख्या नगरों के मुकाबले अधिक बढ़ी है। पहाड़ी राज्य समुद्र से दूर हैं और कारखाने वाले नगरों से बहुत दूर हैं। उनमें और दूसरे राज्यों की अपेक्षा कम व्यापार भी होता है।

बड़े नगर

संयुक्त-राष्ट्र के अन्दर १९२० ई० में २५ नगर ऐसे थे जिनकी जन-संख्या २½ लाख से अधिक है किन्तु अब नगरों की संख्या सैकड़ों तक पहुँच चुकी होगी।

ये बड़े नगर नदियों, झीलों अथवा समुद्र के तटों पर स्थित हैं। अटलांटिक सागर के तट पर बोस्टन, न्यूयार्क जेरसी, नेवार्क फिलाडलफिया, बाल्टीमोर आदि नगर हैं। न्यू आर्लियन्स नगर खाड़ी से लगभग १०० मील पर स्थित है तो भी उसे खाड़ी वाला नगर कहा जाता है। प्रशान्त महासागर के तट पर लोस ऐंजलीस, सैनफ्रांसिस्को पोर्टलैंड नगर है। सीटले नगर नदी के किनारे बसा है।

न्यूयार्क नगर अपने सुन्दर हार्बर वाली स्थिति के कारण इतनी उन्नति कर गया है। नेमार्क और जर्सी नगर न्यूयार्क के एक भाग से है किन्तु सरकारी तौर पर यह नगर न्यूयार्क से प्राकृतिक सीमा होने के कारण अलग हैं। हडसन नगर और अपलेचियन पर्वत के दर्रे वाले नगर संयुक्त राष्ट्र के मध्यवर्ती भाग को चारों ओर से किले बन्दी किये हुये हैं। पेन्सिलवानिया नगर फिलाडेलफिया राज्य का एक प्रधान नगर है और सारे राज्य का भोजन देने का परिश्रम उठाता है। पेन्सिलवानिया रेलवे द्वारा संयुक्त राष्ट्र के भीतरी प्रदेश का अधिकतर व्यापार होता है। बाल्टीमोर नगर यद्यपि उत्तरी सीमा के समीप है तो भी वह दक्षिणी नगर कहा जाता है। यह नगर रेलों द्वारा ओहियो तथा मिसीसिपी की घाटियों से मिला हुआ है। पश्चिमी नगरों को पूर्वी नगरों से जो रेलवे लाइनें अथवा जलमार्ग मिलाते हैं उनके द्वारा संयुक्तराष्ट्र के मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भाग का माल बाहर को भेजा जाता है। न्यू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्लियन्स नगर के स्थानीय व्यापारिक मार्ग अच्छी उन्नति पर हैं और वह अपनी स्थिति के कारण ही मिसीसिपी नदी और उसके आस पास के मैदानों को सामान भेजने का द्वार बन जावेगा। प्रशान्त महासागर के तट के बन्दरगाह प्राचीन देशों से व्यापार करने में पूर्वी बन्दरगाहों का सामना करते हैं क्योंकि उत्तर की ओर वाले बन्दरगाह एशिया के बहुत समीप पड़ते हैं।

सीहले नगर एलासका के प्रधान मार्ग पर स्थित है। रहोडे आइलैंड का प्राविडेन्स नगर तथा कैलीफोर्निया का ओकलैंड नगर भी किसी समय में इसी प्रकार के बन्दरगाह हो जावेंगे।

अमरीका की बड़ी झीलों पर वहाँ के प्रधान नगरों में से ६ नगर स्थित हैं। ओंटारियो झील पर दक्षिण की ओर कोई नगर नहीं है इसका मुख्य कारण न्याग्रा प्रपात है। जो हडसन नदी को काट देता है। ह्यूरन की झील अमरीका की बड़ी झील वाले मार्ग में स्थित है तो भी वहां पर कोई प्रधान नगर नहीं हैं। सुपीरियर झील पर डियूलूथ नगर स्थित है। यह दुनिया के बड़े बन्दरगाहों में गिना जाता है। एरी झील पर तीन प्रधान नगर स्थित हैं। बफ़्फालो नगर झील के पूर्वी तट पर, टोलेडो पश्चिमी तट पर और क्लाइवलैंड दक्षिणी तट पर है। इन बन्दरगाहों से होकर उत्तर तथा दक्षिण की ओर कोयला और लोहा आता जाता है। यह नगर न्यूयार्क और शिकागो से जल तथा स्थल दोनों मार्गों द्वारा मिले हुये हैं। बफ़्फालो नगर में बिजली न्याग्रा प्रपात से पहुँचाई जाती है। डेट्राएट नगर एक छोटी नदी पर बसा है जो दो झीलों को मिलाती है। यह नगर व्यापारिक मार्गों के चौराहे पर स्थित है। यहां पर बड़ी झीलों का जल मार्ग तथा सारे अमरीका में जाने वाले मार्ग को काटता है। यह नगर अपने रोजगार के कारण अमरीका के बड़े नगरों में गिना जाने लगा है।

मिलवाकी (Milwaukee) नगर मिशीगन झील पर बसा है। यह नगर उत्तरी पश्चिमी तथा पूर्वी प्रान्तों को मिलाता है। शिकागो नगर की स्थिति भी मिशीगन झील पर है। यह नगर एक ऐसे स्थान पर बसा है जहां पर होकर पूर्व तथा पश्चिम को जाने वाला सामान अवश्य होकर गुजरता है। यह नगर जल तथा स्थल मार्गों द्वारा देश के धनी तथा उपजाऊ प्रान्तों से मिला हुआ है।

राचेस्टर नगर न्यूयार्क राज्य में जेनेसी नदी पर बसा है। न्याग्रा प्रपात के कारण यह नगर उन्नति कर गया है। कोलम्बस तथा इन्डियन अपोलिस नगर छोटी छोटी नदियों पर स्थित हैं। यह नगर अपनी मध्यवर्ती स्थिति तथा राज्यों की राजधानियां होने के कारण प्रसिद्ध हैं। मीनियापोलीस और सेन्ट पाल नगर मिसीसिपी नदी पर स्थित हैं। यह नगर नदी पर बसे होने के कारण प्रसिद्ध नहीं हुये हैं। पानी के गिरने से जो बिजली तयार होती है उसके तथा मिन्नेसोटा से मिलने और गेहूँ के व्यापार करने तथा योरुप के समीप होने के कारण यह नगर उन्नति कर गये हैं।

पिट्सबर्ग, सिन सिन्नाटी और लूईस विल्ले नगर ओहियो नदी पर स्थित हैं। सेन्ट लूइस और कानसाज़ नगर भी नदी पर बसे हैं और पूर्व का माल पश्चिम तथा पश्चिम का माल पूर्व की ओर भेजने के कारण यह नगर बड़े तथा धनी हो गये हैं। डेनेवर नगर नदी के किनारे पर बसा है। यह नगर अमरीका के बड़े पहाड़ों का द्वार है। यह नगर मिसौरी नदी और प्रशान्त महासागर के तटीय बन्दरगाहों के बीच में सब से बड़ा नगर तथा व्यापारिक केन्द्र है।

वाशिङ्गटन नगर एक ज्वार चढ़ने वाली नदी पर बसा है। इस नगर में कोई बड़ा कारखाना नहीं है। यह नगर कोई बड़ा व्यापारिक नगर भी नहीं है। यह नगर केवल फैडरल (संघशासन) सरकार का प्रधान नगर है और संयुक्तराष्ट्र की राजधानी है। आजकल यह नगर संसार की प्रधान राजधानियों में गिना जाता है।

प्रथम श्रेणी वाले नगरों में दो तिहाई नगर उत्तरी राज्यों में बसे हैं। एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले ४० नगर और हैं जिनमें से ३० नगर उत्तरी राज्यों में हैं।

मेट्रोपोलिटन प्रान्त

कितने ही नगर ऐसे हैं जो बड़े तथा प्रसिद्ध नगर हैं किन्तु उनकी गणना सरकारी तौर पर नहीं है। यह नागरिक भाग बड़े बड़े नगरों से मिले हुए दूर तक बसे हैं और सुबर्बन नगर कहे जा सकते हैं। न्यूयार्क, बोस्टन पिट्सबर्ग या सेनफ्रान्सिस्को आदि नगर ऐसे हैं जिन से मिले हुए नगर देहात के अन्दर दूर तक फैले हुए हैं और घने बसे हैं। इस प्रकार के सभी नगरों की गणना (जो बड़े नगर के १० मील के अन्दर है) मैट्रोपोलिटन प्रान्तों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग गिने जाते हैं। १९२० ई० में बोस्टन नगर की जनसंख्या ७५००० थी। उस समय बोस्टन के मेट्रोपोलिटन प्रान्त की जन-संख्या १७,७२,००० थी। सरकारी बोस्टन नगर से बाहर की जनसंख्या १० लाख से अधिक है। वहां के नागरिकों की जीविका बोस्टन नगर पर ही निर्भर है। बोस्टन नगर में लगभग ५० भाग हैं जो बोस्टन के केन्द्रीय भाग से बाहर की ओर फैले हुए हैं। इनमें लगभग ३० भागों की जनसंख्या १० हज़ार से एक लाख तक है। बोस्टन नगर के सभी निवासी वहां के असंख्य पुतलीघरों तथा कारखानों में काम करते तथा अपनी जीविका चलाते हैं। बोस्टन हार्बर के समीप काम करने वाले लोगों का भाग है।

बोस्टन की भांति ही न्यूयार्क नगर की जनसंख्या लगभग ६० लाख है। मैट्रोपोलिटन प्रान्त हडसन नदी, लॉंग आइलैण्ड और न्यूजेरसी तक फैला हुआ है। राज्य की सीमा होने के कारण न्यूजेरसी न्यूयार्क की म्युनिसिपैलिटी में सम्मिलित नहीं हो सकता उससे दो नेवार्क और जेर्सी प्रथम श्रेणी के नगर हैं। इनके सिवा और भी कितने नगर तथा कसबे हैं। इनके रहने वाले निवासी अपने न्यूयार्क का निवासी ही समझते हैं और न्यूयार्क नगर पर ही अपनी जीविका चलाते हैं। न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन प्रान्त की जनसंख्या लगभग ८,५००,००० है।

मुख्य फिलाडेलफिया की जनसंख्या १,८००,००० है। और वहां के मैट्रोपोलिटन प्रान्त की जनसंख्या २४ लाख है। पिट्सबर्ग में नगर के अन्दर से बाहर अधिक लोग रहते हैं और इस प्रकार वहां की जनसंख्या १२ लाख है। शिकागो के पड़ोस की जनसंख्या ५ लाख है। डेट्रियार की जनसंख्या वहां के कारखानों तथा रोजगारों के सहित की जाय तो वह १० लाख से कहीं अधिक बढ़ जावेगी। प्राविडेन्स नगर की जनसंख्या इसी भांति लगभग ५ लाख है।

कैलीफोर्निया में लास ऐंजलीस नगर समुद्र से १५ मील दूरी पर था कन्तु वह नहर काट कर समुद्र से मिला-दिया गया है और वहाँ पर एक सुन्दर हार्बर बन गया है। नगर के भीतरी भाग की जनसंख्या ६ लाख और बाहरी भाग की ३ लाख है। सैन्फ्रान्सिस्को, ओकलैण्ड और गोल्डगेट आदि नगर भी ऐसे ही हैं जहां की भीतरी तथा बाहरी जनसंख्या लाखों में है।

अमरीका के २० प्रथम श्रेणी वाले नगरों में जिनकी जनसंख्या भली भांति बढ़ रही है। अमरीका की जनसंख्या बढ़ने पर वहां के निवासियों को कोई अभिमान नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि शहरी आबादी बढ़ने के कारण अमरीका का जीवन अधिक संकटमय अथवा सुखी होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनडुब्बों का पहनाव

पनडुब्बों के पहनने के वस्त्र दो प्रकार के होते हैं। एक तो रबर का बना हुआ सूट होता है और दूसरा "शेल" (खोल) सूट होता है। सौ वर्ष से अधिक हुये प्रथम रबर का सूट अगस्टस सीबे ने तयार किया था। शेल सूट १९२३ ई० में तयार किया गया था।

पनडुब्बों का सूट रबर और ट्विल कपड़े से बनाया जाता है। यह पनडुब्बे को सिर से पैर तक समूचा ढके रहता है। पनडुब्बे का सिर लोहे के टोप में बन्द रहता है और कसे हुये रबर के कफ पानी को बांह के छिद्रों से अलग रखते हैं। सूट के भीतर हवा एक भीतरी द्वार द्वारा लोहे के टोप में पम्प की जाती है। 'लोहे के टोप में एक नली सांस ली हुई हवा को बाहर' निकालने के लिये भी लगी रहती है। यदि हेलमेट में बाहर से हवा जाने वाली नली न लगी रहे तो भीतरी दबाव अधिक हो जावे। उससे भीतरी दबाव हलका हो जाता है। सूट का ऊपरी भाग हवा से सदैव भरा रहता है क्योंकि पनडुब्बे के सोने के ऊपर का भार बाहर के पानी के भार के बराबर रखना आवश्यक है। लोहे के टोप में बाहर हवा निकलने के लिये जो नली लगी रहती है उससे पनडुब्बे को काम करते हुये झुकने, बैठने और लेटने में सहायता मिलती है। यदि यह लोहे के टोप के सिवा और किसी दूसरे स्थान पर लगाई जाती तो इससे खतरे का भय अधिक होता।

यह बाहर हवा निकालने वाली नली इस प्रकार बनी रहती है कि पनडुब्बे उसे अपनी इच्छा के अनुसार ठीक कर सकते हैं। जब पनडुब्बा पानी के भीतर दबी हवा में सांस लेता है तो उसे विवश होकर मामूली तौर से अधिक हवा सांस द्वारा खींचनी पड़ती है। उसे अधिक से अधिक आक्सीजन (प्राण प्रद) और नाइट्रोजन (विशेषतत्व) शरीर के अन्दर खींचना पड़ता है। अधिक दबाव में पनडुब्बा अधिक नाइट्रोजन नहीं पचा सकता इसलिये वह उसके खून में मिलकर समस्त शरीर में फैल जाती है। यदि पनडुब्बा पानी के भीतर अधिक समय तक नहीं रहता तो उसका प्रभाव नहीं मालूम पड़ता परन्तु अधिक समय तक पानी के भीतर रहने पर उसका प्रभाव भयङ्कर होता है। जब पनडुब्बा बाहर आता है तो नाइट्रोजन उसके शरीर से शीघ्र ही बाहर जाने का प्रयत्न करती है वह उसके खून में शीघ्रता से पचाई नहीं जा सकती है। यदि नाइट्रोजन गैस मनुष्य के खून में प्रवेश करके दिल में पहुँच जाती है तो मनुष्य मर जाता है। यदि नाइट्रोजन मेरुदंड में चली जाती है तो पनडुब्बे को पक्षाघात की बीमारी हो जाती है। और यदि यह शरीर के जोड़ों में प्रवेश कर जाती है तो गठिया की बीमारी हो जाती है और शरीर के जोड़ों में भीषण पीड़ा उत्पन्न हो जाती है।

इसी कारण नाइट्रोजन को बाहर निकालने के लिये हवा को बाहर निकालने वाली नली लगी रहती है परन्तु यदि पनडुब्बा शीघ्र ही पानी के बाहर आ जाता है तो यह नली पनडुब्बे को खतरे से बचाने में एकाएक सफल नहीं होती हैं।

जब पनडुब्बे पाने के नीचे से ऊपर चढ़ता है तो वह धीरे धीरे रुकता हुआ चढ़ता है जिससे वह प्रत्येक स्थान के बदले हुये दबाव का अभ्यासी होता जावे और अपने शरीर के भीतर का नाइट्रोजन गैस को निकाल सके।

पनडुब्बे के लिये चढ़ने से पानी में तैरना अधिक सरल है। वह पानी के भीतर एक बार में ही तह तक जा सकता है। उसके ऊपर बहुत बोझ रहता है। यह नियम है कि जब पनडुब्बा पानी के भीतर जाने लगता है तो उसके प्रत्येक जूते के तले में १६ पौंड सीसा बांधा जाता है। पीठ पर और सीने पर चालीस चालीस पौंड का बोझ रहता है। यह बोझ उसे किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं देते जब कि वह तली में काम करता है क्योंकि उसे इन बोझों का ज्ञान ही नहीं रहता है। पनडुब्बे को लम्बी छलांग लगाने की मनाही रहती है, क्योंकि यदि वह छलांग मारता है तो बोझ के कारण वह पानी के भीतर बहुत दूर स्थान में चला जाता है। उसे पानी के नीचे काम करने में किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होता। वह शीघ्रता पूर्वक सरलता के साथ अपने कार्य को कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पञ्ज (समुद्रसोख) निकालने की प्राचीन कला

यद्यपि रबर का वस्त्र पहिनने वाले तथा लोहे का टोप लगाने वाले गोता खोर लोग समुद्र सोख निकालने का काम करते हैं तो भी अभी प्राचीन ढङ्ग समुद्र सोख निकालने के लिये प्रयोग किया जाता है। रूम सागर में प्राचीन ढङ्ग का प्रयोग अधिक होता है।

रूम सागर में जिन स्थानों पर समुद्रसोख पाया जाता है उन स्थानों पर छोटी छोटी नावें घूमती रहती हैं। नङ्गे गोताखोर उन नावों से पानी में गोता लगाते हैं और नीचे से समुद्रसोख एकत्रित कर के ऊपर ले आते हैं। यह कार्य उतना सरल नहीं है जितना कि हमें पढ़ने अथवा लिखने में प्रतीत होता है।

नंगे गोताखोर गोता लगाते समय सीधे दोनों हाथ अपने सिर के ऊपर करके खड़े हो जाते हैं। वह अपने हाथों में एक बड़ा चपटा पत्थर लिये रहते हैं। यह पत्थर एक रस्सी से बंधा रहता है। यह रस्सी एक छल्ले के बीच हो कर निकाली जाती है यह छल्ला गोताखोर की कलाई में बन्धे हुये छल्ले से एक पतली जञ्जीर द्वारा जुड़ा रहता है गोतेखोर के पीठ में समुद्रसोख रखने के लिये जाल का बना हुआ एक झोला रहता है। गोताखोर पानी में गोता लगाते हैं और पत्थर की सहायता से पानी की तली में पहुँचते हैं। तली में जाकर वे पत्थर को छोड़ देते हैं। उनका हाथ छल्ले से बाहर हो जाता है और वह स्वतंत्रता पूर्वक बैठ, लेट अथवा खड़े हो सकते हैं। पत्थर को केन्द्र मान कर वह चारों ओर समुद्र सोख ढूँढ़ते हैं और अपने झोले में डालते जाते हैं। उस के बाद वह पानी के ऊपर आते हैं। गोते खोर के ऊपर आने पर पत्थर ऊपर खींच लिया जाता है। इस प्रकार समुद्र सोख निकालने की विधि उन स्थानों पर की जाती है जहां पर समुद्र की तली बराबर नहीं होती और तली चट्टानदार होती है। ऐसे स्थानों पर गोताखोर वस्त्रों का प्रयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि चट्टानों से टकरा कर हवा वाली नलियों के कट जाने अथवा फट जाने का भय रहता है।

गोताखोरी के लिये एक दूसरे प्रकार के औज़ार का भी प्रयोग किया जाता है जो उल्लेखनीय है। इसमें गोताखोर के कमरे में एक पेटी बन्धी रहती है। पेटी के नीचे हवा का भरा हुआ एक झोला लटकता रहता है। हवा का यह झोला एक नली द्वारा बोट पर रक्खे हुये पम्प से जुड़ा रहता है। हवा के झोले के ऊपर एक मुलायम नली रहती है जो गोताखोर के पीठ के ऊपरी भाग को लम्बाकार जाती है। एक और दूसरी नली गोताखोर के गर्दन के एक ओर हो कर उसके मुँह को जाती है। गोताखोर इस नली को मज़बूती के साथ अपने दांतों और होंठों के बीच पकड़े रहता है इन नलियों को संभालने के लिये गले में एक पट्टी लगी रहती है। इस हथियार की सहायता से गोताखोर पानी के नीचे आसानी के साथ १० मिनट तक रह सकते हैं।

पानी के भीतर तार का लगाया जाना

पानी के नीचे मनुष्य ने जितने काम किये हैं उनमें पनडुब्बे तार का काम सब से अधिक प्रशंसनीय है। इँगलैंड से अमरीका को पानी के नीचे वाले तार से तार देना एक मामूली काम हो गया है। बहुत कम लोग अब इस बात का ध्यान देते हैं कि यह तार पहले पहल किस प्रकार बिछाया गया होगा और इसकी मरम्मत किस प्रकार होती है।

उन्नीसवीं सदी में इँगलैंड और योरुपीय देशों के बीच प्रथम पनडुब्बा तार लगाया गया था। परन्तु बहुत कम लोग उस समय सोचते थे कि अटलांटिक सागर का पार करने के लिये भी तार पानी के भीतर लगाया जा सकता है यद्यपि यह बात लोगों को भली भांति विदित थी कि आयरलैंड न्यूफाउन्डलैंड से समुद्र की तली वाले एक पठार से जुड़ा है। उस समय के विज्ञान शास्त्र के विद्वानों का कहना था कि पहले तो इतना बड़ा तार बनाना ही कठिन है यदि तार बन भी गया तो उसे लगाने के लिये उतने बड़े जहाज का बनना कठिन है और यदि जहाज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया तो अटलांटिक सागर के प्रचण्ड तूफान में तार नहीं लगाया जा सकेगा।

उसी समय सीरस फील्ड नामक अमरीकन व्यापारी ने मोर्से (तार के नियम का बताने वाला) से मिलकर इस सम्बन्ध में परामर्श लिया और उसे मालूम हुआ कि अटलांटिक सागर के भीतर तार लगाना उतना कठिन न था जितना कि लोग ख्याल करते थे। सीरसफील्ड इँगलैंड पहुँचा और वहां चार्ल्स ब्राइट से मिला चार्ल्स ब्राइट कई एक तार पानी के भीतर लगा चुका था। इस सम्मेलन का यह फल हुआ कि १८५७ ई० में वेलेन्शिया (आयरलैंड) से हार्टस कानटेट (न्यूफाउन्ड लैंड) तक तार लगाने का काम आरम्भ हुआ। यह दूरी १६३० मील की थी।

इस कार्य में इँगलैंड का ऐगमेन और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का न्याग्रा नामक जहाज दो एक छोटे जहाजों के साथ इस कार्य के लिये प्रस्तुत हुये। आधा तार अमरीकन जहाज में और आधा इँगलिश जहाज में लादा गया। वेलेन्शिया से ४०० मील की दूरी पर एकाएक तार टूट गया। तार वाले जहाज को विवश हो कर लौटना पड़ा। शीतकाल के व्यतीत होने पर उसी जहाज ने गर्मी के आरम्भ में फिर अपना कार्य आरम्भ किया। इस बार तार अटलांटिक सागर के मध्य से डाला गया। एक जहाज इंगलैंड की ओर और दूसरा न्यूफाउन्डलैंड की ओर गया परन्तु फिर तार टूट गया और दोनों जहाज क्वींस नगर लौट गये परन्तु एक ही सप्ताह में तीसरी बार प्रयत्न किया गया जिसमें सफलता प्राप्त हुई।

तीन महीने तक काम करने के बाद यह तार खराब हो गया। १८६५ ई० में ग्रेट ईस्टर्न नामक जहाज ने तार लगाया। इस बार तार ठीक से लग गया और उससे संतोषजनक काम लिया गया। उस के बाद और दूसरे तार डाले गये। आज योरुप और उत्तरी-अमरीका के मध्य इस प्रकार के तारों की २१ लाइनें हैं जिन से रात-दिन समाचार आते जाते रहते हैं।

इन तारों की मरम्मत के लिये खास तार वाले जहाज काम में लगे रहते हैं। डाकखाने और निजी तार वाली कम्पनियों के जहाज बन्दर गाहों पर खड़े रहते हैं जहां कहीं तार में किसी प्रकार की खराबी हुई शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच कर उसे ठीक करते हैं। तूफान के समय इन तारों के टूटने का बड़ा भय रहता है। टूटने पर शीघ्र से शीघ्र इनकी मरम्मत आवश्यक होती है क्योंकि इन्हीं तारों के सहारे उत्तरी अमरीका तथा योरुप का व्यापार चल रहा है।

तार वाले जहाजों के अगले तथा पिछले भाग में ढोल लगे रहते हैं। इन्हीं के ऊपर हो कर तार छोड़ अथवा निकाले जाते हैं। अगर कोई तार कहीं टूट जाता है तो मामूली तौर पर उसका अन्दाज लगाया जा सकता है। कोमल बिजली के यंत्रों का प्रयोग बाधा वाले स्थान को दूरी नापने के लिये किया जाता है। दूसरे तार से इंजीनियर लोग इन यंत्रों द्वारा पता लगाये गये स्थान का हिसाब लगाते हैं। बाधा के स्थान को एक चार्ट पर ठीक ठीक बना कर तार वाले जहाज को दे दिया जाता है। वह जहाज बाधा वाले स्थान के लिये प्रस्थान करता है। तार वाला जहाज लम्बवत तार लाइन के ऊपर से जाता है। जहाज के नीचे छोटे लङ्गर लगे रहते हैं जिस से तार को ऊपर कर के सरलता पूर्वक देखा जा सकता है। मरम्मत के समय तार काट दिया जाता है और उसकी सूचना दोनों ओर भेज दी जाती है। बाधा जिस ओर होती है उस ओर से सूचना का उत्तर नहीं मिलता वहीं पर तरेरी (पानी पर तैरने वाला चिन्ह) लगा दी जाती है। तार वाला जहाज तार को देखता हुआ खराबी वाले स्थान की ओर जाता है। ठीक स्थान का पता लगा कर खराबा वाला तार काट दिया जाता है। ठीक करने के बाद जहाज बन्दरगाह को लौट आता है। इस प्रकार तार वाले जहाज अपना कार्य करते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरमा सड़क

पहले बरमा सड़क की यात्रा बड़ी कठिन तथा खतरनाक थी। यह बड़ी संकेत थी और इसके बाहरी किनारों पर खतरनाक ऊँची दीवारें थीं। पर्वतों के ऊपर ज़मीन के टुकड़े बहुधा फिसला करते थे जिससे मनुष्य को बड़ा भय रहता था।

बरमा सड़क ७२६ मील लम्बी है। यह कूमिंग नगर से आरम्भ होती है। कूमिंग यूनान प्रान्त की राजधानी है। यह नगर चंगकिंग से एक सड़क द्वारा मिला हुआ है। चंगकिंग आजकल युद्ध के समय में चीन को राजधानी बना हुआ है। कूमिंग से सड़क चीन के दूसरे युद्ध सम्बन्धो केन्द्रों को जाती है और सड़क का अन्त लाशियो नगर में होता है। लाशियो रंगून जाने वाली रेलवे लाइन का अंतिम उत्तरो-पश्चिमी स्टेशन है। कूमिंग से बरमा सड़क की सीमांत ६१० मील है। लाशियो बरमा सड़क के छोर से ११६ मील है। बोहमो बरमा सड़क के छोर से ११० मील उत्तर की ओर है। बोहमो को जहाज द्वारा चीन के लिये युद्ध सामग्री जाती है।

बरमा सड़क ऐसे स्थान होकर जाती है जहाँ पर बस्ती तथा भोजन की कमी है। यह बहुत से पर्वतों के ऊपर (सबसे ऊँचा ८५०० फुट) होकर जाती है। सड़क के मार्ग में मीकांग और सालवीन दो बड़ी नदियाँ पड़ती हैं परन्तु फिर भी चीनी लोगों ने प्राचीन ढंग से इस सड़क को एक साल से कम काल में बनाया जिससे युद्ध सामग्री चंगकिंग पहुँच सके। मुख्य युद्ध सामग्री रंगून में उतारी जाती थो। जो २००० मील की दूरी पर था।

सड़क बनाने का काम दिसम्बर सन् १९३७ ई० में समाप्त हो गया। शीघ्र ही यह मार्ग काम में नहीं लाया गया प्रथम तीन महीनों में केवल २८ टन (लगभग ७६४ मन) सामान सड़क होकर भेजा गया। सामान लेकर न जाने का मुख्य कारण यह था कि सड़क की दशा ठीक न थी कूमिंग से लाशियो ७२६ मील है। यह यात्रा आज भी मोटर द्वारा ४ दिन में तै की जा सकती है जबकि मोटर चलाने वाला ड्राइवर मार्ग में बदला जावे और यात्रा वाली मोटर काफी मज़बूत हो। इस सड़क पर अधिक से अधिक २० मील प्रति घंटे की चाल से मोटर जा सकती है। इससे अधिक चाल बरमा सड़क पर असम्भव नहीं तो खतरनाक अवश्य ही है। लारी तथा बसों को सड़क की यात्रा में ६ दिन लगते हैं और वे अधिक से अधिक १२ मील की चाल से चल सकती हैं बरमा सड़क के खुलने पर पहले जो बरमा सड़क होकर कम सामान गया उसका मुख्य कारण यह था कि चीन के पास कुछ भेजने के लिये सामान ही नहीं था फिर चीन में मोटर चलाने वालों की भी कमी थी। उसके पश्चात् ट्रक मोल लिये गये और सड़क पर चलने के लिये १००० ट्रकों का समूह एकत्रित हो गया। ट्रकों को चलाने के लिये चीनी शान और बरमी लोग नौकर रक्खे गये। मार्च सन् १९३९ ई० तक सड़क अच्छी प्रकार चालू हो गई।

उसके पश्चात् ब्रिटिश बरमा से चीन को कम से कम १०० लारी (५६०० मन) युद्ध सामग्री रोज़ाना भेजी जाने लगी। युद्ध सामग्री के बदले लौटती बार यह ट्रक चीन का रेशम, तथा टीन अंजन आदि धातुयें लाते थे। वर्षा मई के अंत में आरम्भ होती है और अक्टूबर के अन्त में बन्द हो जाती है। सड़क की कठिनाइयों के कारण वर्षा काल में केवल १० या २० लारियाँ आती जाती थीं। २० लारियों में दस हज़ार गैलन पिट्रौल रहता था। तीन महीने में चीन के अन्दर लगभग १० लाख गैलन पिट्रौल गया।

नवम्बर के पश्चात् सड़क में बहुत से परिवर्तन किये गये। चीन को राष्ट्रीय मार्ग बनाने वाली संस्था ने कुछ अमरीकन लोगों को बुलाया जिससे सड़क में सुधार हो गये।

इस सड़क के बनाने में २०० इञ्जिनियर तथा १६०,००० मजदूर लगाये गये थे। सड़क के तयार करने में १,६०,००,००० लाख चीनी डालर खर्च हुये थे। उसके पश्चात् सड़क के सुधार में ७० हजार लोगों ने हाथ बटाया है। चीन को मजबूरन यह सड़क तीन महीने तक बन्द रखनी पड़ी जिससे युद्ध के लिये सामान चीन नहीं पहुँचा सका। जब से फ्रांस ने इन्डोचोन की रेलवे लाइन को बन्द कर दिया है तब से बरमा सड़क ही केवल एक मार्ग चीन के लिये बच रहता है जिससे वह युद्ध सामग्री बाहर को अपने देश में बाहर ले जा सकता है और अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूरवीरता के युद्ध को लड़ सकता है। एक दूसरा लम्बा मार्ग रूस से तुर्किस्तान होता हुआ चीन जाता है। परन्तु वह मार्ग बहुत लम्बा तथा दुर्गम है।

जिन समुद्रों होकर चीन युद्ध सामग्री अपने देश को मँगाता था उन सभों को जापान ने धीरे धीरे अपनी सेना के द्वारा अथवा धमकी से बन्द कर दिया है। चीन को सहायता मिलना कठिन हो गई है। चीनो रेड क्रास सोसायटी तथा डाक्टरी सहायता पहुँचाने वाले चीन के चार प्रान्तों को औषधि पहुँचाना चाहते हैं क्योंकि वहाँ पर मलेरिया ज्वर के कारण लाखों मनुष्यों का जीवन खतरे में है।

यदि हाँगकाँग में अँग्रेज जापान की सहायता न करते तो जापान के लिये चीन के समुद्र का ब्लाकेड (घेरा डालना) कठिन हो जाता। बरमा रोड के बन्द हो जाने से चीन को इँगलैंड, रूस और संयुक्त राष्ट्र से जो सहायता मिलती थी वह भी बन्द हो हो गई थी।

बरमा सड़क वर्षा ऋतु में तीन महीने के लिये बन्द थी उस समय सड़क पर आवागमन भी कम होने की सम्भावना थी। इँगलैंड ने तीन महीने के अंत में बरमा रोड फिर खोल दिया है। इससे जापान इंगलैंड से और अधिक असंतुष्ट हो गया है। यदि पहले हो इँगलैंड बरमा सड़क को न्याय के पक्ष में बन्द न करने में दृढ़ता रहता तो कदाचित् यह बात उत्पन्न न होती। जापान ने बरमा सड़क खुलने पर उस पर बम गिराया और आवागमन रोकने का भर सक प्रयत्न किया।

जापान में जो सामान जाता था उस पर इङ्गलैंड ने कोई रोक नहीं लगाई थी। अब भी इँगलैंड से पिट्रौल जापान को जाता है। परन्तु इँगलैंड चीन को पिट्रौल नहीं देता।

चीन इंगलैंड के इस कार्य को अमित्रता तथा क़ानून के विरुद्ध ख्याल करता है।

अक्तूबर सन् १९३७ ई० में राष्ट्रसंघ की बैठक में इङ्गलैंड ने वचन दिया था कि इङ्गलैंड चीन की सहायता आक्रमण होने पर करेगा। यह वचन १९३९ ई० में फिर दुहराया गया था। परन्तु फिर भी इंगलैंड ने चीन की क्या सहायता किया यह वही जानें।

इँगलैंड ने राय दी है कि चीन तथा जापान लड़ाई बन्द करने तथा सन्धि करने के लिये स्वयम् एक दूसरे से बात चीत करें इससे चीन और अधिक घबड़ा गया है। चियांग काई शेक ने कहा है कि इँगलैंड बरमा सड़क को बन्द कर के युद्ध को पूर्व की ओर शीघ्र ही अन्त करने की आशा करता है परन्तु इस कार्य से युद्ध और अधिक बढ़ेगा और अधिक समय तक टिकेगा। जब तक चीन को वह वस्तु नहीं मिल जावेगी जिसके लिये चीन लड़ रहा है। चीन अपना अस्त्र नहीं रख सकता है।

जापान के साथ जो सुलहनामा इँगलेंड ने किया है उसके विरुद्ध भारतवर्ष और अमरीका में बड़ी चर्चा हुई पत्रों ने विरोध किया और त्रुटियां दिखलाईं।

अमरीका फिर भी जापान को उसकी आवश्यकता के आधे से अधिक युद्ध सामग्री दे रहा है। वह सामान देने में किसी प्रकार की कमी करने की इच्छा नहीं दिखा रहा है।

चर्चिल ने अगस्त सन् १९३९ ई० में लन्दन के एक पत्र में लिखा था कि "यह बात इङ्गलैंड और संयुक्त राष्ट्र के लिये बहुत आवश्यक है कि वह चीन के अपने निजी स्थानों में चीनियों का किसी प्रकार भी युद्ध करने में विरोध न करें और चीन की सहायता करें चाहे उन्हें इस कार्य में कुछ समय के लिये चीन से नाता तोड़ना पड़े और हानि उठानी पड़े।

चर्चिल के कथन के यह शब्द बड़े अच्छे तथा शूरवीरता के शब्द थे परन्तु उनपर पश्चिमी देश अपनी विजय के कारण फूल उठा है। इङ्गलैंड जितना ही उसे देता चला जाता है वह उतना ही और अधिक माँगता जाता है। टींटसिन के मामले में जब इङ्गलैंड ने जापान को स्वतंत्रता दे दिया तो जापान ने हांग कांग और ठीके पर वाली भूमि का ब्लाकेड कर दिया।

जापान के नवीन प्रधान मंत्री ने एक ऐसे व्यक्ति को विदेश मंत्री बना दिया है जो १९३३ ई० में राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ के बाहर मंचूरिया के सम्बन्ध में निकल गया। वह इटली तथा जर्मनी से अधिक मित्रता रखना चाहता है।

इङ्गलैंड को जापान से कोई लड़ाई नहीं है परन्तु फिर भी याद रखनी चाहिये कि यदि इङ्गलैंड जापान को नहीं रोकता और उसे मनमानी करने देता है तो अवश्य ही जापान उसके सामने एक दिन भीषण माँग पेश करेगा जिसे इङ्गलैंड को अस्वीकार करना होगा।

इसलिये इङ्गलैंड के लिये आवश्यक है कि वह अभी से जापान की बढ़ती हुई बेजा शक्ति पर रोक लगा दे।

पेंगविन पत्ती

सुदुर दक्षिण के पशु पक्षियों में पेंगविन (एक प्रकार का समुद्री पक्षी) बड़ा ही अद्भुत होता है। यह दक्षिणी गोलार्द्ध में पाया जाता है। यह विश्वत रेखा के उत्तर कभी नहीं जाता है। यह गलापागोम द्वीपों तक जाता है। पेंगविन पक्षी कई प्रकार के होते हैं। सभी पेंगविन शारीरिक बनावट तथा स्वभाव में एक से होते हैं परन्तु उनके छोटाई बड़ाई और शरीर के चिन्हों में अन्तर होता है। इन पक्षियों के पंजे झिल्लीदार होते हैं। जब यह सीधे खड़े हो जाते हैं तो मनुष्य की भांति ही जाते हैं। उसके शरीर पर छोटे छोटे घने बाल होते हैं। छोटे घने बालों की बनावट अनोखी होती है। सिर में एक बड़ी चोंच रहती है। पेंगविन पत्ती के डैने बड़े अनोखे होते हैं। यह डैने सैकड़ों बर्षों से प्रयोग न होने के कारण कमजोर हो गये हैं। उनमें उड़ने वाले पखने नहीं रह गये हैं इसलिये पेंगविन उड़ने से असमर्थ है। पेंगविन के यह डैने उसके शरीर का भार समान रखते हैं और तैरने में बड़े सहायक होते हैं।

पेंगविन पक्षी जहाँ कहीं भी रहते हैं वहाँ समूह के समूह रहते हैं कहीं कहीं तो यह लाखों की संख्या में देखे गये हैं। यह बड़ा बातूनी पक्षी होता है। जब यह पक्षी चिल्लाने लगते हैं तो जहाँ कहीं भी इनके जाति के पक्षी होते हैं अपने जाति के पक्षी का शब्द सुनकर चिल्ला उठते हैं। उस समय इनका नाद बड़ा भीषण होता है। मादा एक बार में केवल एक अंडा देती हैं। सील मछली तथा दरियाई हाथी इनके समूहों को विध्वंस कर डालते हैं तोभी इनकी कमी नहीं होती हैं। यह इतनी बड़ी संख्या में होती हैं और मनुष्य से इतना कम भय खाती हैं कि फ्रांसिस ड्रेक जब मैगलन के संकरे समुद्र में पहुँचा तो उसके एक साथी ने एक दिन में ३००० पेंगविन पक्षियों का शिकार किया था।

पेंगविन पक्षी को स्थल से अधिक जल में आराम मिलता है। यह बड़े गोता खोर पक्षी होते हैं। गोताखोरी में इनका सामना कदाचित ही कोई पशु कर सकता हो। गोता मार कर मछली पकड़ने में यह अद्वितीय होते हैं। इनका शिकार इनसे बच कर नहीं जा सकता है। यह पक्षी बड़े सुशील तथा मानवीय होते हैं। यह अजनवियों के साथ बड़े प्रेम के साथ सिर झुका कर मिलते हैं। उनकी शिष्टता विलक्षण होती है। यह पक्षी बड़ा जिज्ञासु होता है। यह भीषण तूफान में भी अपने झोंपड़े बड़ी शान के साथ बनाते हुये पाये गये हैं। परन्तु जब वे काम नहीं कर सके तो पीछे हट कर चट्टानों की आड़ में जा छिपे और अच्छे समय की प्रतीक्षा करते रहे। अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिये वह स्थल पर घूमते हुये भी देखे गये हैं। जिस समय यह पक्षी समुद्र की ओर लौटते हैं उस समय इनका दृश्य बड़ा सुहावना होता है। यह बड़ी फुरती से अपने सिर आगे करके बरफ पर फिसलते हुये दौड़ते हैं।

इन पक्षियों में सबसे सुन्दर अन्टार्कटिक प्रान्त के पेंगविन पक्षी का राजा है। उसकी लम्बाई चार फुट और वजन लगभग १०० पौंड है। यह पक्षी अपना अकेला अंडा उस बर्फीले स्थान पर देता है जहाँ का ताप शून्य अंश से नीचे ६० या ७० अंश होता है। जमने से बचाने के लिये यह पक्षी अपने अंडे को पैर की झिल्ली में रखता है और अपने शरीर से ढके रहता है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी रक्षा शीत से इसी प्रकार की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका के शेर

अफ्रीका में कई प्रकार के शेर होते हैं। कुछ शेरों के अयाल होती है और कुछ के अयाल नहीं होती। झाड़ियों में रहने वाले शेर के अयाल नहीं होती है। शेर सुनहरे भूरे, धुँधले और पीले गदहों के रंग के होते हैं। शेर अकेले भी रहते हैं और समूह में भी भ्रमण करते हैं। दिन में शेर आराम करता और सोता है। वह दिन में अपने बच्चों की देख भाल बड़े चाव से करता है। जब बच्चा उसके सामने से चला जाता है तो वह घबड़ा सा उठता है। उसे मनुष्य का भय लगा रहता है। जब शेर का पेट भरा रहता है तो वह किसी ऊँचे स्थान पर सोता है या बच्चों के साथ खेलता है। जब वह सोता है तो उसके बच्चे खेलते सोते अथवा खाते रहते हैं।

शेरनी के अयाल नहीं होती है। शेर और शेरनी एक ही स्थान पर हफ्तों साथ साथ रहते हैं। यदि वह अपने स्थान से भगा दिये जाते हैं तो बहुधा लौट कर वह फिर उसी स्थान पर आ कर रहने लगते हैं। शेर बहुधा चट्टानों के बीच झाड़ झंकाड़ों में रहा करते हैं। वे पहाड़ी कंदाराओं में भी रहते हैं। शेरों के रहने का स्थान चरने वाले जानवरों के चरने के स्थान के समीप रहता है। जब तक शेर के बच्चे छोटे रहते हैं तब तक शेरनी घर से बाहर नहीं जाती परन्तु उनके बड़े होने पर वह बाहर शिकार की खोज में जाया करती है। शेरनी बहुधा अपने पति शेर के साथ बाहर शिकार के लिये जाती है। वह पानी पीने के लिये भी शेर के साथ जाती है। जब शेर शिकार मारता है तो शेरनी उसका कुछ भाग काट कर लाने में शेर की सहायता करती है।

आक्रमण करने में शेर बड़ा चतुर होता है। शेर तथा शेरनी दोनों जब शिकार को बीच में पा जाते हैं तो उसे अपनी गरज से ऐसा भयभीत करते हैं कि वह स्वयम् डर के मारे किसी न किसी के मुंह के समीप चला जाता है। कभी कभी जब पानी पीने वाले स्थान पर शेर जाता है तो वह जलाशय के समीप मार्गों पर अपना पेशाव पसीना, अथवा झाग गिरा देते हैं जिससे उसकी मौजूदगी पानी पीने के लिये जाने वाले जानवरों को मालूम हो जावे और वह उस मार्ग में न जावें। शेर इन मार्गों को छोड़ दूसरे मार्गों में जा छिपता है जब जानवर आते हैं तो शेर के चिन्हों को देख वह बिना चिन्ह वाले मार्ग हो कर जाते हैं और छिपे हुये शेर के शिकार बन जाते हैं। शेर रात के समय ही अपना शिकार करता है। जब शेर किसी जानवर को पकड़ लेता है तो फिर उसके बचाव की कोई आशा नहीं रह जाती है। कभी कभी जब जेब्रा आदि भागने को तयार होते हैं और उन पर पीछे से शेर आक्रमण कर बैठता है तो वह पीछे की टांगों से शेर को मारते हुये भागते हैं और घायल हो कर निकल जाते हैं। यह हिसाब लगाया गया है कि एक शेर साल में ३०० जानवरों को अकेले मारता है। कई एक शेर एक ही शिकार को खाते देखे गये हैं। शेर अपने शिकार को ताज़ा खाता है और खून को पी जाता है। खून पीने के पश्चात् शेर को प्यास लगती है तब वह पानी पीने के लिये जाता है। जब शेर पानी पीने जाता है तो वह गरजता है उसकी गरज सुन कर पास पड़ोस के जानवरों को पता चल जाता है कि शेर ने किसी जानवर को मार डाला है।

भोजन के पश्चात् वह अपने स्थान को चला जाता है परन्तु यदि उसने अधिक भोजन कर लिया तो वह अपने शिकार के समीप ही लेट कर सो जाता है। वह रात भर पड़ा सोता रहता है और सवेरे दिन निकलने पर अपने स्थान को शीघ्र ही चलाजाता है।

जब शेर भूखा अथवा वृद्ध होता है तो वह बड़ा खतरनाक होता है। ऐसी दशा में शेर अपनी शिकार गाह को छोड़ देता है और अफ्रीका निवासियों के बाड़ों की ओर शिकार की खोज में जाता है। अफ्रीका निवासी अपने पशुओं की रक्षा के लिये कँटीली झाड़ियों और डालियों के बनाते हैं। वे रात को शेरों को भयभीत करने के लिये आग जलाते हैं। जब कभी आग बुझ जाती है तो शेर आक्रमण कर बैठता है।

जब किसी शेर को किसी पशु अथवा मनुष्य के मांस का चस्का लग जाता है तो फिर वह पशु अथवा मनुष्य के ऊपर आक्रमण करता है। मनुष्य को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने वाला शेर मनुष्य पर बिना हिचकिचाहट आक्रमण कर बैठता है।

जब मनुष्य मनुष्य भक्षण करने वाले शेर के सामने आ जाता है तो शेर का आक्रमण मनुष्य पर दूरी के भाव से होता है। यदि वह ५० गज की दूरी पर होगा तो पेट के बल खिसकता हुआ आगे बढ़ेगा जब तक कि दबोचने के समीप नहीं आ जावेगा। यदि मनुष्य एकाएक उसके सामने पहुँच जाता है तो शेर एक सिकन्ड तक चुप खड़ा रहने के बाद आक्रमण करता है। जब शेर हमला करने को होता है तो उसकी अयाल और पूंछ खड़ी हो जाती है। उसका शरीर फूल कर दुगना सा प्रतीत होने लगता है। वह उस समय गरजता रहता है।

शेर शिकार के ऊपर ठीक बिल्ली की भांति झपटता है। वह घास के ऊपर पेट के बल खिसकता हुआ चलता है। दिन में शेर को शिकार करने में बहुत कम सफलता मिलती है। वर्षा ऋतु में शेर कन्दरा में छिप कर रहता है और बाहर वर्षा के भय से नहीं निकलता। यद्यपि दिन में शेर शिकार नहीं करता तो भी जब कभी वह जानवरों के झुण्ड को चरता हुआ देखता है तो वह लालचवश उस पर आक्रमण कर देता है। शेर एक फुट से कम ऊँची घास में छिप कर चल सकता है जब शेर छिपना चाहता है तो फिर उसका पता लगाना कठिन हो जाता है। वह इतनी चतुर्ता के साथ चुपके चुपके चलता है कि मनुष्य को उसके आवागमन का लेश मात्र शक नहीं हो सकता है। कहते हैं कि जब शेर पेट भर खा लेता है तो फिर चाहे मनुष्य उसके समीप हो कर भी चला जाय तो भी वह उस पर आक्रमण नहीं करता है परन्तु यह बात सदैव सत्य नहीं होती है।

शेर अविश्वसनीय पशु होता है। वह किस दशा में क्या करेगा ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता है। कभी कभी तो दूर से दौड़ कर शेर आक्रमण कर देता है और कभी कभी वह मारते मारते छोड़ कर चल देता है। मनुष्य का आहार करने वाले शेर को दूसरे शेरों से पहचानना कठिन है।

भूखे शेर की दशा पेट भरे हुये शेर में बिल्कुल भिन्न होती है उसी प्रकार बच्चे वाली शेरनी की दशा बिना बच्चे वाली शेरनी से भिन्न होती है। एक जंगल का शेर दूसरे जंगल में भी शेर की भांति ब्योहार नहीं कर सकता है। दो शेर जब एक साथ किसी शिकार पर हमला करते हैं तो भी उनका भाव एक सा नहीं होता है। शेर में और दूसरे पशुओं से अधिक व्यक्तित्व पाया जाता है। वह स्वयम् अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता है। शेर एक ऐसा पशु है जिस पर कोई खास नियम लागू नहीं किया जा सकता है। जैसे कि यह मानी हुई बात है कि शेर मांस भक्षण करने वाला पशु है परन्तु अफ्रीका में कुछ स्थानों पर वह अपना जीवन मछली के ऊपर ही व्यतीत करता हुआ देखा गया है।

मनुष्य शेर की गरज का दृष्टान्त बहुधा दिया करते हैं। इससे पता चलता है कि शेर सदैव एक प्रकार से बोलता है परन्तु यह बात सत्य नहीं है। शेर की गरज तीन प्रकार की होती है। यह तीनों एक दूसरे से अलग हैं। पहली गरज वह है जब शेर शिकार करते समय बार बार गरजता है। दूसरा जब वह शिकार को जान से मारता रहता है तो क्रोध से भरी होती है। तीसरी प्रकार की गरज को हम सचमुच ही गरज कह सकते हैं। यह उस समय होती है जब शेर भोजन करने के पश्चात् पानी पीता है और संतुष्ट हो जाता है। यह गरज धीरे धीरे ऊँची होती जाती है और फिर धीरे धीरे कम होती है। इस गरज से प्रतीत होता है कि शेर विजयी हुआ है और उसे संतुष्टता प्राप्त हो गई है।

जब शेर पर गोली लगती है तो शेरनी खूंख्वारी के साथ शीघ्र ही मनुष्य पर आक्रमण करती है परन्तु कभी कभी वह अपने प्राण बचाने के लिये भाग भी जाती है। शेर जब मनुष्य को मरा हुआ समझता है तो उसको वह छोड़ देता है। इसलिये जब कभी शेर का सामना बन में हो तो चुपचाप ठहर जाना चाहिये, किसी प्रकार का शब्द न करना चाहिये या अपने को बिलकुल मुर्दा बना लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की प्रसिद्ध लाटें

इसके पहले कि हम संसार की प्रसिद्ध लाटों का वर्णन करें हमें देखना चाहिये कि लाट शब्द का क्या अर्थ है यह एक ऊँचा स्तम्भ होता है जो किले चर्च, भवन आदि से अलग अथवा मिला रहता है। नगर के चारों ओर जो दीवार होती है उसमें भी लाट अथवा मीनार बनी रहती है। लाटें, जेलखाने के लिये अथवा किलेबन्दी के लिये बनाई जाती हैं। अधिकतर मीनार (लाट) बनाने का मतलब प्राचीन समय में स्थान की रक्षा करना था। इसी कारण मीनार से कभी कभी समस्त किले का मतलब समझा जाता है लाट का अर्थ दुर्ग भी होता है।

लाट बनाने का सैनिक कारण अपनी रक्षा है। धार्मिक स्थानों में लाटों पर घंटा लगाया जाता है। जिससे घंटे का शब्द सुन कर लोग पूजा के लिये आ जावें। लाटों के बनाने का वैज्ञानिक कारण यह होता है कि इसके ऊपर चढ़ कर दूर की वस्तुएँ भली भांति देखी जा सकती हैं। यह किसी की स्मृति में भी बनाई जाती हैं। इसलिये लाट बहुधा स्मृति सूचक होती है। महाराज अशोक ने अपने धार्मिक नियम लाटों पर खुदवाये थे। कम स्थान तथा सजावट के ध्यान से भी लोग लाट बनाते हैं।

बेबेल की लाट बनाने वालों ने सोचा था कि वह अपने नगर तथा लाट को इतना ऊँचा बनावेंगे कि वह आकाश को स्पर्श कर ले। आसाम, अशान्ती, दक्षिणी अफ्रीका, मेक्सिको आदि में भी लाटें इसी ध्यान से बनाई गईं थीं। बेबिलान की एक लाट ६५० फुट से अधिक ऊँची थी और उसकी गोलाई आध मील थी। बेबेल की लाट को कुछ लोग बोर-सीया अथवा वीर्स निमरुद कहते थे। यह बेबिलान नगर के बाहर थी। इसके खण्डहर शेष रह गये हैं। यह मेसोपोटामिया के जेगरूत पिरेमिडों की भांति फा हेरो डोटस ने बेबिलान के एक लाट की चर्चा लिखी है जिसमें उसने कहा है कि एक बड़ी लाट एक फर्लांग लम्बी तथा एक फर्लांग चौड़ी बनाई गई थी, उसपर एक दूसरी और फिर उस पर तीसरी लाट बनाई गई। इस प्रकार आठ लाटें एक दूसरे के ऊपर बनाई गईं। इस बड़ी लाट के ऊपर जाने का मार्ग बाहर की ओर से था और मार्ग सभी लाटों के भीतर से घूम कर जाता था। सबसे ऊपर वाली लाट पर एक बड़ा सुन्दर मन्दिर है। लाटें टेढ़ी क्यों बनाई जाती थीं इसका ठीक पता नहीं चलता।

बीस निमरुब की लाट में एक ऊँची छत मिली है जो १०० फुट लम्बी, ६ फुट चौड़ी और १२ फुट ऊंची है। लाट को अधिक ऊंचा बनाने का एक कारण यह भी था कि लोग इन ऊँचे स्थानों पर जाकर नक्षत्रों का ज्ञान करते थे।

खलीफा हारूँ रशीद के पुत्र का नाम खलीफा मुत्तासिम था। जब वह समारा में अपनी बड़ी मस-जिद बनवाने लगा। समारा फराद नदी के किनारे पर है। उसने जान कर के लाट की बनावट को घुमाव-दार रखा है। यह लाट मालविया की है और इसकी उँचाई १६० फुट है।

सिकन्दरिया की फरोस लाट

इसको सोस्ट्रास ने २८० बी० सी० के बाद बनवाया था। यह श्वेत चूने के पत्थर की बनी हुई है। कहा जाता है कि यह ३६० या ३९० फुट ऊँची थी। यह संसार के सात अद्भुत् वस्तुओं में से थी। १३०३ ई० के भूचाल में इसका अधिकांश भाग गिर गया। जो कुछ शेष रह गया था उसे समुद्र ने साफ कर दिया।

डोवर दुर्ग की रोमन लाट बाहर को ओर अष्ट-भुजाकार और भीतर की ओर से चौकोर है। आज कल इसकी उँचाई अधिक नहीं है। यद्यपि टियूडर राजाओं ने इसे दोबारा बनवाया था। इसके दूसरे तट पर बलोने में कलीगूला ने सन् ४० में एक लाट बनवाई जो बाद में प्रकाश भवन बना दिया गया। यह पहले १४ तल्लों की लाट थी और एक पहाड़ी चोटी पर बनी थी।

मिस्र में लोगों ने एक दूसरे प्रकार की लाटें बनाई जिनका नाम संसार में पिरेमिड के नाम से प्रसिद्ध है। यह शुंडाकार बने हुये हैं।

रोमन साम्राज्य के अंत होने के पश्चात् पश्चिमी योरुप में रोमन कला का-प्रचार लाटों, निवास स्थानों और चर्चों के बनाने में किया गया। परन्तु पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यों के मकान बनाने की कला पश्चिम की ओर भी फैल गई और उससे बैजेनटाइन कला का प्रदर्शन हुआ। इटली की लाटें इसी कला की बनी हुई हैं। रावेना की कम्पानिली नामक गोलाकार लाट प्रसिद्ध है।

इटली में घंटा वाली लाटें मामूली तौर पर और दूसरे भवनों से अलग रहती हैं। इन लाटों का आकार चौकोर होता है। यह बड़ी सादी बनी हैं। इनमें बीच बीच में तोड़ मरोड़ नहीं है। इनके अन्दर भीतर प्रकाश जाने के लिये काफी खिड़कियां लगी रहती हैं। ऊपर की ओर नीचे से अधिक खिड़कियां लगाई जाती हैं। पीसा की झुकी हुई लाट ११७२ ई० में बनी थी। इसका आकार गोला है। इसमें ७ तल्ले हैं। ऊपरी छः तल्ले एक दूसरे से बिलकुल मिलते जुलते हैं। रसकिन (अंग्रेज लेखक) ने कहा था कि यह लाट इटली की सबसे खराब लाट थी। इसकी समस्त ऊँचाई १८३ फुट है।

बोलोगना में दो लाटें ईंट की बनी हुई हैं। असीनेली की लाट ११०९ में और बनाई गई। यह ३२० फुट ऊँची है। टोरे गरीसेंडा की लाट पूरी समाप्त नहीं हो सकी थी। इसकी ऊँचाई १५८ फुट है।

नार्मन लाटें

नार्मन काल की लाटें अधिकाँश गिर गईं हैं। १३२२ ई० में एली कैथीड्रल की मध्यवर्ती लाट गिर गई। १७८६ ई० में हेरे फार्ड की पश्चिमी लाट गिर गई। फ्रान्स में यह नियम था कि चर्च के पश्चिम की ओर दो लाटें साथ साथ बनाई जाती थीं जैसा कि कान्करर्स अबे आक्स होम्स चर्च में है। जर्मनी के वर्म्स कैथीड्रल (बड़ा गिरजा) में प्रत्येक सिरे पर दोहरे वृताकार लाटें हैं। बेल्जियम के टाऊरनाइ नामक गिरजे में दोनों सिरों पर दोहरी-चौकोर लाटें बनी हुई हैं। वेंचिस्टर, नार्विच, टियुकेस बरी और सट अलबन्स की मीनारें नार्मन काल तथा कला की बनी हुई हैं।

रक्षा करने वाली लाटें अथवा दुर्ग

जब सैनिक अस्त्रों की वृद्धि हुई तो संसार के सभ्य लोगों ने अपने रक्षा के लिये दुर्गों का बनाना आरम्भ किया। नगर के चारों ओर की दीवार तथा क़िलों की दीवार में जगह जगह पर दुर्ग बनाए जाते थे। यह दुर्ग रोमन अथवा बैज़नटाइन कला के बनाये गये। दुर्ग अकेले भी बहुत से योरुप में बनाये गये जो इतने ऊँचे तथा दृढ़ थे कि बारूद के प्रयोग के पहले उनका तोड़ना असम्भव था। फ्रान्स ऐसे दुर्गों का आकार गोल होता था और उसे डोनजोन कहते थे। चैटियूटन में बारहवीं सदी का बना हुआ १५० फुट ऊँचा एक दुर्ग है। अम्ब्रायसे, लोइरे क़िलों में भी दुर्ग हैं। यह दुर्ग स्वयम् एक बड़े क़िलों की भांति हैं। इनके भीतर सीढ़ी के स्थान पर चौड़ा ढालू मैदान है। यह मैदान इतना चौड़ा है कि चार घोड़ों की गाड़ी उसमें अच्छी तरह ऊपर जा सकती है। कोपेन हेगेन के ट्रिनिटी चर्च के बड़े गोलाकार दुर्ग में भी ऐसा ही मार्ग बना है। यह चर्च १६०० ई० में बना था।

लओन के समीप काउची-ले कैच्यू का दुर्ग २१० फुट ऊंचा है। इसका व्यास १०० फुट है। व्यास दो तिहाई भाग दीवारों में चला गया है। यह बड़ा भारी दुर्ग है इसके सामने दूसरे दुर्ग मामूली मालूम होते हैं।

इङ्गलैड के नार्मन लोगों के समय के बहुत से दुर्ग बने हैं। उनमें मुख्य केन्ट में डोवर, यार्कशायर में रिचमांड, नार्थम्बरलैण्ड में बमबर्ग, लन्दन दुर्ग (यह वार्विक का सीज़र का दुर्ग कहलाता है) आदि हैं। लन्दन का दुर्ग १०० फुट ऊँचा है। कोइसबर्ग का दुर्ग भीतर की ओर से गोला परन्तु बाहर से कोणाकार बना है। ओपशायर में तेरहवीं सदी का बना हुआ कोइसबर्ग के किले का दुर्ग है। नार्थम्बरलैण्ड का वार्चवर्थ का दुर्ग लगभग १४०० ई० में बना था। इसकी बनावट बड़ी अच्छी तथा मज़बूत है। विंडसर में एडवर्ड तृतीय का बनाया हुआ प्रसिद्ध दुर्ग है।

वेलस में एडवर्ड प्रथम के बनवाये हुये तीन प्रसिद्ध दुर्ग हैं। आयरलैण्ड के अनोखे शुंडाकार दुर्ग पहले भाग कर प्राणों की रक्षा करने के लिये बनाये गये थे। वे घंटा बजाने के प्रयोग में भी कोई कोई आते थे। इनके द्वार ज़मीन से १० फुट या अधिक ऊंचाई पर बने हैं। यह दुर्ग छठवीं से तेरहवीं सदी तक के बने हुये हैं और इनका व्यास ५० फुट है। ग्लेंडलो का दुर्ग ११० फुट सेन्टरिम का दुर्ग ९२ फुट और क्लोन इलकिन के दुर्ग ८४ फुट ऊंचे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गोयथिक कला का संचार हुआ तो चर्चों के ऊपर घुमावदार मीनारें बनाई जाने लगीं। लोग चर्चों को इतना ऊँचा बनाने लगे कि उनके ऊपर ट्गों का बनाना कठिन हो गया और लाट के स्थान पर छोटी छोटी मीनारें बनाई जाने लगीं।

चार्टरेस में मीनारों की उँचाई बहुत कर दी गई है। वहाँ की दक्षिणी पश्चिमी मीनार ३५० फुट और उत्तरी पश्चिमी मीनार ३७५ फुट ऊँची है।

लओन के गिरजाघर में चार लाटें हैं जो १८० फुट से १९० फुट तक ऊँची हैं।

फ्रान्स में चर्चों के मध्यवर्ती भाग में ट्गों के बनाने का रिवाज़ था। यह बड़े सुन्दर लगते थे। रोबेन में सेंट ओनेन के चर्च के मध्यवर्ती भाग में एक ट्ग है। यह ट्ग चौदहवीं सदी का बना हुआ है। और २६० फुट ऊँचा है। इस चर्च के पश्चिमी ट्ग २८२ फुट ऊँचे हैं।। रोबेन के गिरजाघर ट्ग की शोभा वहां के लोहे के ४६५ फुट ऊँचे स्तूप से मारी गई है। रोवेन में सबसे अधिक सुन्दर स्तूप दक्षिण-पश्चिम की ओर का है। यह २५२ फुट ऊँचा है और इसके सिरे पर अष्ट भुजाकार एक बड़ो लालटेन लगी हुई है। इसको 'टावर डी ब्यूरे' कहते हैं। यह १५२० ई० में बना था।

फ्रांस में टार्न नदी पर अल्बी में एक ट्ग है। यह १३वीं सदीं में बना था। वह ट्ग बिलकुल लाल ईंटों का बना हुआ है। यह ट्ग क़िले और चर्च दोनों का काम देने के लिये बनाया गया था।

योरुप के ट्गों के बनाने के लिये पन्द्रहवीं सदी स्वर्ण काल थी। इस सदी में जर्मनी, हालैंड और बेल्जियम में बहुत से ट्ग बनाये गये। स्ट्रासबर्ग का पश्चिमी ट्ग ४६५ फुट है। यह १४३९ ई० में बन कर तयार हुआ था। इसी काल का बना हुआ वियना में सेंट स्टिफेन्स का पश्चिमी ट्ग है। यह ४४८ फुट ऊँचा है।

उन्नीसवीं सदी का बना हुआ कोलोन के गिरजा घर का ट्ग है। यह ५१५ फुट धरातल से ऊँचा है और ६५ फुट धरातल के नीचे है। डैनूब नदी पर अल्म स्थान के चर्च का ट्ग ५२८ फुट ऊँचा है। यह संसार के चर्चों के ट्गों में सबसे अधिक ऊँचा है। बेल्जियम में मैलाइन्स स्थान पर १४५२ ई० में एक ऐसे ट्ग का बनना आरम्भ हुआ जो ईसाई संसार में सबसे अधिक ऊँचा बनने को था। परन्तु यह ट्ग केवल ३१८ फुट ऊँचा हो सका। इसके बढ़े हुये भाग की उँचाई मिलाकर समस्त उँचाई ५१५ फुट है। एंटवर्प के गिरजाघर का उत्तरी पश्चिमी ट्ग १३५२ ई० में बनना आरम्भ हुआ था। यह १५९२ई० में बन कर तयार हुआ था।

इटली के गोयथिक कला के घंटे वाले ट्ग

गोयथिक कला का प्रयोग इटली में बहुत कम समय तक किया गया। फ्लोरेन्स नगर में गिओटी का बनवाया हुआ भवन १३२४ ई० का है रसकिन अंग्रेज लेखक का कहना है कि इस भवन के बनाने में संसार की समस्त शिल्प कला का प्रदर्शन किया गया है। यह भवन २९२ फुट ऊँचा है। इसके दो मध्यवर्ती भाग बराबर ऊँचे हैं। लम्बार्डी के मैदान में क्रेमोना स्थान पर टोराजो का वर्गाकार ट्ग ३९७ फुट ऊंचा है। इसके ऊपरी सिरे पर दो अष्टभुजा लालटेनें हैं।

इंगलैंड में कैंटरबरी और ग्लासेस्टर के ट्ग बड़े सुन्दर हैं। यह लम्बाकार बने हैं। चिचेस्टर का ट्ग २७७ फुट, नार्विच का ट्ग ३१३ फुट, सैलिसबरी का ४०४ फुट ऊँचा है। यह तीनों लिचफील्ड में हैं। सेंट पाल का प्राचीन ट्ग लन्दन में था। यह ५०० फुट ऊँचा था और लकड़ी का बना था जिसके ऊपर सीसा लगाया गया था। इंगलैंड में यह ट्ग सबसे ऊँचा था। परन्तु यह नष्ट हो गया। इसके नष्ट होने से अब इंगलड भर में सबसे ऊँचा ट्ग सैलिसबरी का है।

ग्रैनथम का ट्ग २८१ फुट ऊँचा है इसमें जालियां बहुत बनाई गई हैं। लाउथ की मीनार ३०० फुट ऊँची है। यह १४ साल में लगभग ४५७५ रु० लगाकर बनी थी। सेंट मिकेल की मीनार लगभग ३०० फुट ऊँची है। इसकी मीनार और ऊपरी छोटे गुम्बदों के बीच में एक अष्ट भुजाकार लालटेन है।

नारफोक में क्रोमेर की मीनार है। नये काल के आरम्भ में रोमन तथा ग्रीक कला का अंत हो गया और उस समय भांति भांति की सजावट बनाने का प्रयत्न किया गया। रेन का ट्ग इसी काल का बना हुआ है। यह २१६ फुट ऊँचा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन में मूर (मुसलमान) लोगों के समय में बहुत सी मीनारें भी बनाई गई थीं। सेवील की गिराल्ड मीनार ११९५ ई० में बनी थी। यह मीनार मूर लोगों ने अपने राज्य की स्मृति में बनाई थी। इस मीनार का व्यास ४५ फुट और दीवारों की चौड़ाई १० फुट है। इसका आरम्भिक भाग १८५ फुट ऊँचा है। इसमें नवयुग के आरम्भ काल (१५६८ ई०) की लालटीन लगी है जिस पर कुछ लेख खोदा हुआ है। इसके ऊपर १३ फुट की एक मूर्ति ईमान (धर्म) की बनी हुई है जिस पर एक वायु की दिशा बताने का यन्त्र लगा हुआ है। इस्तम्बूल में सुलेमान बादशाह की बनवाई हुई एक बड़ी सुलेमान मसजिद है। यह नमाज की अज़ान (प्रार्थना के समय की पुकार) देने के लिये इतनी ऊँची बनाई गयी थी। कैरो में क्वैटबे की मसजिद से मिली हुई एक और मीनार इसी प्रकार की है।

भारतवर्ष में देहली में कुतुब मीनार है। यह मीनार १८०० ई० में बनी थी। इसकी उँचाई २३८ फुट है। इसका व्यास ४७ फुट है। परन्तु ऊपर जाकर यह केवल ९ फीट रह जाता है। इसमें पांच हैं। इसका ऊपरी भाग १८०३ ई० के भूकम्प में गिर गया था। मीनार के भीतर सीढ़ियाँ लगी हुई हैं।

फारस में अस्तराबाद से ५७ मील उत्तर-पूर्व गुनबातै काबूस की समाधि है। यह गुरगोन के प्राचीन नगर में है। यह खुरासान के अमीर काबूस की स्मृति में बनाई गई थी। यह भीतर की ओर गोलाकार परन्तु बाहर की ओर कोणीय है। इसके व्यास २०० फुट और उंचाई भी २०० फुट है। इसमें सीढ़ी के मार्ग का कुछ चिन्ह नहीं है। केवल सुण्डाकार छत की एक खिड़की से प्रकाश आने का मार्ग है। यह ईंटों की बनी है और अरबी में कुछ लेख ईंटों को बढ़ा कर लिखा गया है। इसका रंग सुनहरा है। यह पर्शियन कला द्वारा तयार किये हुये चार भवनों में से एक है।

पगोडा (बौद्ध मन्दिर)

बौद्ध धर्म में एक प्रकार के अनोखे गुम्बद तथा लाटों का निर्माण होता था। यह किसी भी स्थान पर भक्ति के लिये बनाए जा सकते थे। रंगून का श्वेड-गोन पगोडा बड़ा प्रसिद्ध है। यह ईंट का बना हुआ है। इसके ऊपर स्वर्ण-पत्र चढ़ा हुआ है। यह एक ऊँचे वेदिका पर बना हुआ है। इसकी समस्त ऊँचाई ३१२ फुट है। शिखा पर धातु का बना हुआ भाग है जिस पर मणि जड़े हुये हैं। वेदिका पर बहुत से गुम्बद हैं और पंक्तियों में छतें बनी हैं। प्रत्येक पंक्ति अपने नीचे वाली से कुछ छोटी है। छतों की पंक्तियां ही चीनी पगोडों में प्रधान हैं। यह छतें बहु कोणीय होती हैं। बौद्ध धर्म वाले अपने पगोडों में तीन से लेकर तेरह छतों तक बनाते हैं। कैंटन का पगोडा छठवीं सदी का बना हुआ है। यह अष्ट-भुजाकार है। इसमें ९ तल्ले हैं और २७० फुट ऊँचा है। नैनकिंग का पोर्सलेन टावर (मीनार) सब से अधिक सुन्दर था। यह १८५३ ई० में नष्ट हो गया। इसका व्यास ४० फुट और ऊँचाई २०० फुट थी। प्रत्येक छत को ओलती ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी और कोणों में घंटे लटकते थे। कुल १५० घंटे थे। यह ईंट का बना हुआ था और हरे रंग से रंगा हुआ था।

हेमवर्ग में सेंट निकोलस का दुर्ग ४८५ फुट है। यह १८७४ ई० में बना था। इसका ढांचा गिलवर्ट स्काट ने बनाया था जिसके पुत्र ने लिवरपूल के गिरजाघर मध्यवर्ती मीनार का खाका बनाया था। १८४० से १८५० ई० के बीच वेस्ट मिनिस्टर के पार्लियामेन्ट भवन बनाये गये। उस समय सर चार्लस वैरी ने दो दुर्ग विक्टोरिया टावर और क्लाक टावर बनाये विक्टोरिया दुर्ग ३३६ फुट ऊँचा और ७५ फुट वर्गाकार है तथा क्लाक टावर ३२० फुट ऊँचा है। यह दोनों दुर्ग गोमथिक से सजाये गये हैं। इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट का टावर (मीनार) २८० फुट ऊँचा है। वेस्टमिनिस्टर गिरजाघर की मीनार २८४ फुट है। यह लम्बाकार रूप से ६ फुट झुकी हुई है। जब पहले यह १९०० ई० में बन कर तयार हुई तो इसे लोगों ने पसन्द नहीं किया परन्तु आज उसकी गणना संसार में लन्दन के प्रसिद्ध भवनों में की जाती है। आधुनिक दुर्गों में स्टाक हाल्म में रगनार ओस्टबर्ग की मीनार है। इसके शिखा पर एक बड़ी लालटीन लगी हुई है।

ईफेल का प्रसिद्ध टावर अपनी इंजीनियरिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113726

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला के लिये प्रसिद्ध है। यह १८८९ ई० में बनकर तयार हुआ था। इसकी समस्त ऊँचाई ९८४ फुट है। इसमें चार स्तम्भ हैं जो ३० फुट से ४५ फुट तक भूमि के भीतर बने हुये हैं। इसमें धातु के १२ हजार टुकड़े लगे हैं और २५,००,००० रीवेट (मेंखें) लगाई गई हैं। आजकल इसमें बेतार के तार का स्टेशन है।

न्यूयार्क के टावर जिनको स्काई स्क्रैपर (आकाश को खुरचने वाले) कहते हैं इञ्जीनियरिंग कला की आदरणीय उदाहरण है।

ट्यूरिन का मोल ऐण्टोनेलिआना नामक ४४ वर्गगज का बर्गाकार भवन है। इसमें कई तल्ले (कोठे) हैं। मध्यवर्ती भाग एक बड़ा चौकोर गुम्बद है। इसकी ऊँचाई ५३६ फुट है। इस प्रकार हम संसार के प्रसिद्ध टावरों का भ्रमण करके वापस आ गये।

हवाई हमले और उनसे बचने के उपाय

हवा से पाँच प्रकार से हमले किये जा सकते हैं

फूठ कर दगने वाले बम्ब ३ मन से लेकर ४० मन तक भारी होते हैं। बम्ब जितने अधिक भारी होंगे उतने ही कम वे हवाई जहाज़ पर लद सकेंगे। अधिकतर बम्ब छत, ज़मीन और दीवार से टकराते ही फूट पड़ते हैं। कुछ बम्ब इस प्रकार बनते हैं कि वे पहले भीतर धँस जाते हैं और फिर फटते हैं। इन बम्ब में बड़ी कड़ी नोकें लगी रहते हैं। जो बम्ब कई फुट की गहराई पर जा कर फटते हैं वे बड़े कीमती होते हैं। जिन शहरों में घर पास पास होते हैं और गलियाँ बहुत तङ्ग होती हैं उन पर बम्ब गिरने से अधिक हानि होती है।

कुछ बम्ब में दिसा का तार लगा रहता है कुछ इस से वे गिरने पर कुछ देर ठहर कर फटते हैं। यह बम्ब बड़े भयानक होते हैं। अक्सर इनको देखने के लिये अनजान लोग भीड़ लगा लेते हैं। भीड़ में फटने से बहुत मनुष्यों की जान जाती है। इसलिये तुरन्त न फटने वाले बम्ब के गिरने पर उससे दूर रहना चाहिये और होसके तो पास वाले पुलिस या फौज के अफसरों को इसकी सूचना दे देनी चाहिये।

बम्ब कड़ी छत या फर्श पर गिरते हैं तो इनके छोटे छोटे टुकड़े बड़े जोर से इधर उधर टकराते हैं। इन में बड़ी हानि होती है। जो बम्ब मुलायम धरती पर गिरते हैं वे नीचे धँस कर सीधे ऊपर को फटते हैं। उन से इतनी अधिक हानि नहीं होती है।

जलने वाले (इन्सेन्डियरी) बम्ब—यह छोटे बम्ब होते हैं। इस कारण १ सेर से ३० सेर तक होता है। यह बम्ब जलाकर पास वाले घरों में आग लगा देते हैं। इन बम्बों में थर्माइट भरा रहता है। कड़े पदार्थ से टकराने पर इसमें आग लग जाती है। आग लगने पर बम्ब के भीतर के पदार्थ जलाकर ३५८० अंश फारेन हाइट तापक्रम में बम्ब के ऊपर वाला धातु का ढकना भी गल जाता है। कुछ ढक्कन भी ऐसे बने होते हैं कि वे जलने लगते हैं। धातु को बचाने के लिये जर्मन लोग सीमेन्ट और कांक्रीट का ढक्कन बनाने लगे हैं। साधारण जलने वाले बम्ब खपरैल और पतली छत को तोड़कर नीचे आकर जलते हैं और घर का सामान जला देते हैं। पांच इञ्च मोटी पक्की कांक्रीट की छत १० सेर भार वाले बम्ब को रोक लेती है। १० सेर से अधिक भारी बम्ब मामूली छत को तोड़ कर नीचे आ जाते हैं और लकड़ी आदि सभी जलने वाली चीज़ों को भस्म कर देते हैं। ये बम्ब पानी से नहीं बुझते हैं। उल्टे भड़कते हैं।

गैस बम्ब सवा छः मन तक भारी होते हैं। बहुत से बम्ब प्रायः इनसे कहीं अधिक हलके होते हैं। इनमें कई तरह की गैसें भरी रहती हैं। क्षणिक गैसें (नान परसिस्टेन्ट) बम्ब से अलग होते ही हवा में मिल जाती हैं और शीघ्र ही विष से मुक्त हो जाती हैं। स्थायी (परसिस्टेन्ट) गैस अधिक समय तक विष से भरी रहती है। परसिस्टेन्ट गैस प्रायः द्रव रूप में होती है। इनके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं। ऐसी गैसों से भरे हुये बम्ब के फूटने का असर कई दिन और कभी कभी तो कई सप्ताह तक रहता है।

टियर गैस से आंखों पर असर होता है। उनसे आंसू बहने लगते हैं। कभी कभी उससे गले और छाती में भी जलन होती है। अधिक तेज गैस से फेफड़ों को भारी हानि होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैस स्प्रे या गैस का छिड़कना—कभी कभी हवाई जहाज़ों से द्रव गैस छिड़की जाती है। यह कार्य प्रायः १००० फुट की उँचाई से होता है। ३००० फुट से अधिक उँचाई से यह गैस नहीं छिड़की जा सकती। गरमी की ऋतु में या तेज़ धूप में यह गैस शीघ्र उड़ जाती है। अधिक सरदी की ऋतु में हवा के न चलने पर अधिक समय तक इसका असर रहता है।

मशोनगन फायर—इसका असर शहर के पक्के मज़बूत घरों पर बहुत कम होता है। गांव के कच्चे घरों की छतों को तोड़ कर भीतर रहने वालों को वे अधिक हानि पहुँचा सकती हैं।

हवाई हमलों से व्यक्तिगत और सामूहिक रक्षा की आवश्यकता है। व्यक्तिगत रक्षा में उन लोगों का ध्यान रखना है जो हवाई हमलों की सूचना शहर वालों को देते हैं। लिकिड (द्रव) गैस की सफ़ाई करते हैं और आग बुझाते हैं। ऐसे लोगों की रक्षा के लिये उनके गस्त के मुहल्लों में ऐसे रक्षा के स्थान होने चाहिये जहां वे बम्ब वर्षा के समय छिप सकें।

इन लोगों को रबर के लम्बे बूट, रबर के लम्बे दस्ताने, हुड (कन्टोप) सांस लेने के यन्त्र (रेस्पिरेटर) आयलस्किन और गैस के असर से मुक्त कपड़े मिलने चाहिये।

सामूहिक रक्षा में शहर के लोगों, कारखाने, स्टेशन, बिजली घर और बड़े बड़े कारबार में कार्य करने वालों के लिये बम्ब से बचने के लिये स्थान बनाना पड़ता है। हवाई हमलों से बचने के लिये बड़े बड़े आदर्श स्थान बनाने में बहुत खर्च पड़ता है और उनके बनाने में बहुत समय लगता है। जैसे घर अपने प्रान्त में बने हैं वे बड़े विस्फोटक बम्ब से बचने के लिये अनुकूल नहीं हैं। फिर भी यदि घर के नीचे तहखाना है तो हमले के समय वह शरण लेने के लिये अधिक अच्छा स्थान है। लेकिन उसमें निकलने के लिये दो दरवाज़े होने चाहिये। यह इस प्रकार बना हो कि उसमें गैस का असर न हो सके। इसकी छत मजबूत होनी चाहिये जिससे वह हमले का भारी बोझ सह सके। ऊपर वाली छत पर बालू के बोरे या बालू की मोटी तह बिछा देनी चाहिये। बोरों में बम्ब के फटने से आग लग जाने का डर रहता है। तहखाने की छत के ऊपर मशीनरी आदि भारी सामान नहीं होना चाहिये।

यदि तहखाना न हो तो दोमंजिले घर का नीचे का कमरा काम में लाना चाहिये।

पड़ोस में गिरे हुये बम्ब के टुकड़े घर की दीवारों को हानि न पहुँचावें इसलिये बालू के बोरों की भारी दीवार खड़ी कर लेनी चाहिये। यदि बालू न मिले तो मिट्टी की कच्ची दीवार बना लेनी चाहिये। यह दीवार नीचे भाग में ४ फुट और ऊपर २ फुट मोटी हो। यह ८ फुट ऊँची हो और सभी दरवाज़ों और खिड़कियों को ढकले। वह कच्ची दीवार घर की असली दीवार को छूती रहे।

हवाई हमले से बचने के लिये जो कोठरी चुनी जावे उसका दरवाज़ा मुलायम ज़मीन की तरफ हो उसका दरवाज़ा और खिड़कियां उस ओर हों जिधर को हवा अक्सर चला करती है। इससे भूल से छूटी हुई दरारों से गैस कमरे के भीतर नहीं आ सकेगी।

खिड़कियों के शीशे के टुकड़े भीतर वालों के न लगें इसलिये उनके दोनों ओर मज़बूत कागज़ या कपड़ा लटका देना चाहिये। यदि इतना समय न हो तो भीतर की ओर कील गाड़ कर कम्बल या भारी कपड़ा टांग देना चाहिये। यदि खिड़की के भीतर की ओर आध इंच वाली लोहे का जाली लग सके तो और भी अधिक अच्छा हो।

यदि ऊपर वाले कमरे में हो तो सब खिड़कियों को खोल दो। अधिक ऊँचाई पर गैस का अधिक भय नहीं रहता है। सड़क पर भीड़ लगाना भयानक है। जहां तक हो तितर बितर हो जाओ। जब तक संकट के दूर होने की सूचना न मिले तब तक भीतर ही रहो।

अगर घर में रक्षा के लिये अनुकूल स्थान न हो लेकिन पास में खुला मैदान हो तो ७ फुट गहरी और ३ फुट चौड़ी टेढ़ी खाई खोद लो। यदि गैस या वर्षा का डर हो तो इसे ढक भी लो। इसमें बम्ब के टुकड़ों का कुछ भी भय न रहेगा। पास के घर से खाई इतनी दूर हो कि घर की दीवार टूटकर उसमें न गिर सके।

बम्ब से आग न लगे इस लिये जलने वाली सभी चीजें घर से दूर कर दो। दरवाज़े और खिड़कियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लकड़ी पर नमक, चूना और ठंडे पानी से मोटी पुताई कर दो। पहले लकड़ी को तीन इंच मोटी मिट्टी से लेप दो। आग बुझाने के लिये हर एक कमरे में पानी से भरे हुये घड़े और बाल्टो रख लो। गिरे हुये बम्ब को उठाने के लिये बालू भरी हुई बड़ी बाल्टी, लम्बा बेलचा एक गज लम्बी चमड़ी अस्बस्टास की चद्दर रहनी चाहिये।

पैरों को आग से बचाने के लिये गर्म रबर बूट न मिलें तो भीगा कपड़ा लपेट लेना चाहिये। गिरे हुये बम्ब के ऊपर पहले आधी बाल्टी बालू डाल दो फिर उसे बेल्चे से उठा कर बालू की बाल्टी में रख कर जल्दी से दूर रख दो। तेज आंच से आंखों को बचाने के लिये नीला चश्मा पहन लो।

गैस से बचने के लिये यदि गैस से सुरक्षित कमरा न हो तो ऊपरी छत या खुला मैदान अधिक अच्छा रहेगा। लड़ाई की सभी गैसें साधारण हवा से अधिक भारी होती हैं।

गैस से बचने के लिये कमरा का दरवाजा उस ओर को कभी न रक्खो जिधर से हवा आती है। यदि पूर्व से हवा आती है तो बाहर निकलने का दरवाजा पश्चिम की ओर होना चाहिये। यदि पश्चिम से हवा आती है तो दरवाजा पूर्व की ओर होना चाहिये। इससे गैस कमरे में न भरने पावेगी। कमरे में दो दरवाजे विरोधी (भिन्न भिन्न) दिशाओं में होने चाहिये। चिकनी मिट्टी से घर की सब दरारों को भर दो। यदि हमला अधिक समय तक रहे तो भोजन का सामान भी रख लो। कमरे में बहुत भीड़ न होने दो। भीतर लालटीन या दिया नहीं जलाना चाहिये।

बम्ब को ऊपर गिरने से बचाने के लिये कोई पूरा उपाय नहीं है। यह दैवयोग की बात है।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनाएँ

१६ नवम्बर—जर्मन हवाई जहाज़ों ने रात में सब से अधिक भीषण हमला किया। कवेन्ट्री में १००० व्यक्ति घायल हुये और मरे। बहुत से घर नष्ट हो गये।

यूनानी सेना ने इवान पर्वत पर हमला किया और कई अनुकूल स्थान ले लिये।

पांच ब्रिटिश माइन स्वीपर डुबा दिये गये।

१७ नवम्बर—लन्दन पर भारी हवाई हमला हुआ। २०० हवाई जहाज़ों ने बम्ब गिराये।

यूनान में एपिरस के निकट लड़ाई हुई। इटली के अधिकृत कसाला, असाब, दीरेदावा, बिण्डिसी सीदी बारानी, सोलूम और बर्द्दी पर ब्रिटिश हवाई हमले हुये। जर्मनी के हेम्बर्ग बन्दरगाह पर भी ब्रिटिश हवाई हमले हुये।

१८ नवम्बर—ब्रिण्डिसी और हेम्बर्ग पर फिर हवाई हमले हुये।

जर्मनी एजेण्ट संयुक्तराष्ट्र अमरीका में प्रयत्न कर रहे हैं कि वहां से ब्रिटेन को फौजी सहायता न मिलने पावे।

१९ नवम्बर—बल्गेरिया के राजा बोरिस ने बर्लिन में हर हिटलर से भेंट की। बर्लिन के समाचार से स्पेन जर्मनी और इटली का अनुसरण करने वाला है।

६०० इटेलियन सिपाही यूगोस्लैविया में घुस गये और निःशस्त्र कर लिये गये।

कोरिट्ज़ा के पास भीषण लड़ाई हुई।

२० नवम्बर—कोरिट्ज़ा के पूर्वी भाग में आग लग गई।

ब्रिटिश हवाई जहाज़ ने जर्मनी के सब से बड़े समुद्री जहाज़ यूरोचा पर बम्ब गिराया।

यूनान ने संयुक्तराष्ट्र अमरीका से हथियारों के लिये अपील की है।

२१ नवम्बर—हँगारी ने इटली, जर्मनी और जापान से सन्धि कर ली।

२२ नवम्बर—ब्रिटेन के भिन्न भिन्न भागों पर हवाई हमले हुये।

इटेलियन लोगों ने कोरिट्ज़ा खाली कर दिया। यह स्थान सेलोनिका पहुँचने के लिये मार्ग में पड़ता है।

२३ नवम्बर—यूनानी लोगों ने ८ दिन की लड़ाई के बाद कोरिट्ज़ा नगर छीन लिया। इस जीत से सारे यूनान में उत्सव मनाया गया। टर्की ने छः जिलों में घेरे की स्थिति घोषित कर दी है जिससे वहां फौजी शासन लागू हो जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113726

२४ नवम्बर—जर्मन हवाई जहाजों ने ११ घंटे तक मिडलैण्ड के नगर पर बम्ब वर्षा की। इससे यहां भारी हानि हुई।

२५ नवम्बर—यूनान ने अलबेनिया के दो नगरों (पोग्रोडेट्ज़ और मोस्कोपोलिश) पर अधिकार कर लिया।

ब्रिटिश हवाई जहाजों ने मार्सेलस पर बम्ब गिराये। फ्रांस की विची सरकार ने इसका विरोध किया है।

२६ नवम्बर—डोवर प्रदेश पर जर्मन तोपों ने गोले छोड़े। जर्मन हवाई जहाज़ों ने पश्चिमी इङ्गलैंड के एक नगर पर बम्ब गिराये।

२७ नवम्बर—इङ्गलिश चैनल के एक ओर से जर्मन और दूसरी ओर से ब्रिटिश तोपों ने गोले बरसाये।

जर्मन हवाई जहाजों ने साउथम्पटन और ब्रिस्टल में बम्ब गिराये।

यूनानी फौजें दक्षिणी अलबेनिया में आगे बढ़ीं। इटेलियन सेना पीछे हटी। ब्रिटिश सरकार ने संयुक्तराष्ट्र अमरीका से जहाजों की सहायता मांगी।

एक जर्मन लड़ाका जहाज ने हिन्द महासागर में एक ब्रिटिश व्यापारी जहाज़ (पोर्ट आफ ब्रिस्बेन) को डुबा दिया।

२८ नवम्बर—दक्षिणी अलबेनिया में मोस्को पोलिस के पास इटेलियन लोग बीरता से लड़ रहे हैं। यूनानी फौजों ने आगे बढ़ कर पोग्रोडेट्ज़ में चेरावे नदी को पार कर लिया और चेरावेस गांव को छीन लिया।

फलोरीना के यूनानी हवाई स्टेशन पर इटेलियन हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये।

ब्रिटिश हवाई जहाजों ने बर्लिन पर और जर्मन हवाई जहाजों ने इङ्गलैण्ड पर बम्ब गिराये।

२९ नवम्बर—रूमानिया के भूतपूर्व पदाधिकारियों की हत्या से वहाँ असन्तोष और अशान्ति की लहर फैल रही है।

अलबेनिया में ताज़ी इटेलियन फौजों के आ जाने से यूनानी फौजों का बढ़ना रुक गया है।

ब्रिटेन के कुछ स्थानों पर जर्मन हवाई जहाजों ने बम्ब गिराये।

३० नवम्बर—ब्रिटिश हवाई जहाज़ों ने ब्रिंडिसी (इटली) पर और जर्मन हवाई जहाज़ों ने लन्दन पर बम्ब गिराये।

अलबेनिया के पोग्रेडेट्ज़ नगर पर यूनानी फौजों ने अधिकार कर लिया। इटेलियन सुमालीलैंड के रास अलूला स्थान (गाडी फुई अन्तरीप के पास) ब्रिटिश जहाज़ों ने गोले बरसाये। कसाला के पास छिपे हुये सुसज्जित ब्रिटिश सिपाहियों ने इटेलियन सिपाहियों पर छापा मारा।

देश-दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

हर महीने किसी न किसी एक देश का आँखों देखा सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन पढ़िये। यात्रा के आधार पर लिखा हुआ विवरण होने से प्रत्येक पृष्ठ में सजीवता है। "देश-दर्शन" के प्रत्येक अङ्क आवश्यक चित्रों और नक़शों से सुसज्जित रहते हैं।

अब तक निम्नलिखित अंक प्रकाशित हो चुके हैं:—

लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे और जावा। प्रत्येक अंक का मूल्य ।≈), एक वर्ष के १२ अंकों का मूल्य ४) रु०।

दूसरे वर्ष का प्रथम अंक **'प्राचीन-जीवन'** है। इसमें आर्य, एसीरियन, बेबिलोनियन, मिस्री, चीनी, ईरानी, यूनानी आदि प्राचीन रहन सहन पर पूरा प्रकाश डाला गया है। इस अक का मूल्य ।।) है।

"देश-दर्शन" का वार्षिक मूल्य ४) रु० है। वार्षिक मूल्य ४) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.) and Printed by K.P. Misra at the Bhugol Press; 243, Jamuna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar